



श्री समरादित्यकेवलीनो रास.

पंडित श्री उत्तमविजय शिष्य पंडितप्रवर
श्री पद्मविजयजी विरचित.

आ रासना नवे खंडमां समरादित्यनो जीव जुदा
जुदा मुनिओना समागममां आवे छे. दरेक प्रसं-
गनां मुनिओनां वृत्तांत घणां रसिक अने वै-
राग्यमय भावनावाळां होवाथी स-
मस्त श्रीसंघने वांचवा भणवा माटे
उपयोगी जाणीने

छपावी प्रसिद्ध करनार
श्रावक भीमसिंह माणेक
जैनपुस्तक वेचनार तथा प्रसिद्ध करनार;
मांडवी, शाकगली, मुंबई.
कालबादेवी कोलभाट लेनमां आवेला निर्णयसागर प्रेसमां छाप्यो.
आसो सुदि पूर्णीमा संवत् १९७०
सने १९१४

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya-sagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.
Published by Bhanji Maya for Bhimsi Maneck, 226-231, Mandvi, Sackgalli, Bombay.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya-sagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.

Published by Bhimsi Maneck, Mandvi, Sackgalli, Bombay.

॥ प्रस्तावना ॥

आ "समरादित्य केवलीनो" रास बुद्धिनो विकास करनार सुबोधक ग्रंथ छे. तेमां वैराग्य भावनाने प्रधानता आपवामां आवी छे. बुद्धिना सर्व अंशुओ वैराग्य उपर महान् प्रकाश पामी शके एवी चमत्कारी योजनाओनोज आ रासमां संग्रह करेल छे. मनुष्यनी जींदगीरूप नौका अनेक संसाररूपी समुद्रनां तोफानोमांथी जीपलावी क्यां पहोंचे छे अने कर्मरूपी पवन ते नौकाने क्यां लइ जाय छे तेनां असरकारक दृष्टांतोनो संग्रह आ ग्रंथमां दाखल करेल छे. हृदयनी वृत्तिओ बहु प्रबल अने वेगवाली छे, तेने न्यायमार्गे दोरवानां अने तेनो विस्मयकारक संयम करवानां अनेक उदाहरणो आ ग्रंथमां आपवामां आव्यां छे.

कर्मोने वश थयेला आत्माओनां हृदय उपर केवा कठोर प्रहार पडे छे ! आटलुं छतां आत्माओ तेने सहन करी केवी स्थितिमां आवे छे ! एवां चमत्कारी चरित्रोथी आ ग्रंथ घणो अलंकृत करेल छे.

आ ग्रंथमां श्री समरादित्य केवली केवा प्रकारना जीवनमांथी केवी जातना उच्च जीवनने प्राप्त थया अने दरमीयान तेना आगलना भवोमां कइ कइ जातना फेरफारो थया तेनुं चरित्र एटलुं बधुं रसमय बनाववामां आव्युं छे के ते वांचवाथीज वांचकोने खात्री थशे. आ रासना नव खंड करवामां आव्या छे अने ते दरेक खंडमां महात्मा समरादित्यना एक एक भवनुं वर्णन करवामां आवेल छे.

प्रथम खंडमां शरुआतथी बे नायकोनां चरित्र आलेखवामां आवेल छे. तेमां एकनुं नाम गुणसेन छे अने बीजानुं नाम अग्निशर्मा छे. आ उभय आत्माओ दरेक भवमां सहचारीरूपे चाल्या आवे छे. ज्यारे गुणसेनना आत्मानुं चरित्र निर्मल छे तेथी करी उच्च श्रेणीए चढतो जाय छे त्यारे बीजा आत्मानुं चरित्र मलिन अने दूषित छे तेथी नीच श्रेणीए उतरतो जाय छे.

बीजा खंडमां गुणसेन अने अग्निशर्माना जीव अनुक्रमे सिंह अने आनंद नामे पिता अने पुत्र थाय छे.

त्रीजा खंडमां तेओ बंने अनुक्रमे शिखिकुमार अने जालिणी नामे पुत्र अने माता थाय छे.

चोथा खंडमां तेओ धन अने धनश्री नामे पति पत्नी थाय छे.
पांचमा खंडमां तेओ जय अने विजय नामे जाइ थाय छे.
छठा खंडमां तेओ धरण अने लक्ष्मी नामे पति पत्नी थाय छे.
सातमा खंडमां तेओ सेन अने विषेण नामे पितराइ जाइ थाय छे.
आठमा खंडमां तेओ गुणचंद्र अने वाणमंतर विद्याधर थाय छे.
नवमा खंडमां तेओ बंने अनुक्रमे समरादित्य अने गिरिसेन थाय छे.

आ रासना नवे खंडमां समरादित्यनो जीव जुदा जुदा मुनिओना समागममां आवे छे. दरेक प्रसंगनां मुनिओनां वृत्तांत घणां रसिक अने वैराग्यमय जावनावालां होवाथी समरादित्य महात्मानो जीव वैराग्यनी उच्च जावनाने प्राप्त थतो जाय छे. समरादित्यना जवमां बाल्यवयथीज तेने वैराग्य आवे छे. समरादित्यना पिता तेने संसारनो स्वाद चखाडवा घणो प्रयत्न करे छे, पण ते महात्मा पोतानी वैराग्यमय जावनामां अडग रहे छे. विवाहित थयेला महात्मा समरादित्ये पोतानी बे नव वधूओने विषय रागमांथी मुक्त करी पोतानी अनुरागिणी बनावी ए प्रसंग उत्तम उपदेशरसथी जरपूर छे.

ते पछी महात्मा समरादित्य प्रजासाचार्य गुरुना हाथथी चारित्र ग्रहण करे छे. महात्मा समरादित्यनी प्रशंसा सांजलीने गिरिसेन ईर्षालु थाय छे. ते महात्मा हवे विहार करता करता अयोध्या नगरीमां आवे छे. त्यांथी रेकवाहपुरमां आवीने अशोक वनमां काउस्सग्गध्याने रह्या छे. त्यां जवपरंपरानो वैरी गिरिसेन आवी चडे छे. ते महात्माने जोइने कोपथी प्रज्वलित थाय छे. पछी ते दुष्ट महात्माना शरीर पर लुगडां वींटालीने तेना पर तेल रेडीने अग्नि लगाडे छे. ध्यानमां लीन थयेला आ महात्मानुं आ समयनुं चिंतवन एवुं उंचा प्रकारनुं थतुं जाय छे के ते क्षपकश्रेणी पर आरूढ थइ पोताना आत्माने निर्मल करी तेने योगमां स्थापन करे छे के तरतज तेने "केवलज्ञान" थाय छे अने तेथी करी "आ महात्मा समरादित्य केवली" कहेवाय छे. ते महात्माना महिमाथी वेलंधरकुमारनुं आसन चलायमान थाय छे, तेथी ते अवधिज्ञानथी जोइने

कुसुम वगेरे लइने अनेक देव सहित त्यां आवे छे अने महात्माना शरीर उपरथी वींटालेलां लुगडां काढी नाखे छे. ते जोइने गिरिसेन क्रोध पामे छे. आ अवसरे मुनिचंद राजा पोतानी राणीओ सहित त्यां आवे छे अने वेलंधर देवने पूछवाथी आ सघली हकीकत कहे छे. आ वखते केवलज्ञानना महिमा माटे सोहमइंद्र पण देव सहित आवे छे अने केवलीनी स्तवना करे छे. लोको पण आ हकीकत सांभली वंदनार्थे त्यां आवे छे. गिरिसेनना मनमां अकार्य कर्यानुं चिंतवन थाय छे अने कुशल पक्षनुं बीज रोपाय छे अने ते घर भणी जाय छे. त्यारबाद महात्मा समरादित्य केवली धर्मदेशना आपे छे, त्यारबाद इंद्र पोताने स्थानके जाय छे. पछी मुनिचंद राजा समरादित्य केवलीने गिरिसेने करेला उपसर्गनो संबंध पूछे छे, तेथी ते गुणसेन अने अग्निशर्माना भवथी मांडीने सघली हकीकत कहे छे. ते सांभलीने राजा, सामंत, वेलंधर देव वगेरेने संवेग आवी जाय छे. वेलंधर गिरिसेनने आनुं परिणाम शुं आवशे ते केवलीने पूछे छे, तेथी केवली कहे छे के ते नारकीमां जशे अने त्यां तीव्र वेदना भोगवशे अने त्यांथी अनंतो संसार रऊलशे. ते वखते मुनिचंद राजानी राणी नर्मदा नारकीनी वेदनानुं वर्णन, सुलसमंजरी देवतानां विमानोनुं वर्णन, अने बीजी राणी सुलोचना सिद्धनां सुखनुं वर्णन पूछे छे. आ वर्णन अद्भुत अने रसिक वाणीथी कहीने केवली श्रोताओनां हृदयने आर्द्र बनावी दे छे, त्यारबाद वेलंधरे केवलीने सिद्धनुं स्वरूप पूछवाथी तेनुं वर्णन पण एक उत्तम दृष्टांतथी आपे छे.

आ बधी हकीकत सांभलीने राजा राणी वगेरे परम आनंद पामे छे, अने केवलीनी पासे चारित्र ग्रहण करवा अभिलाषा देखाडे छे अने तेमना शिष्य शीलदेवनी पासे व्रत ग्रहण करे छे.

आ समये वेलंधर देव केवली महाराजने पूछे छे के जे गिरिसेने आपने उपसर्ग करेल छे ते भव्य छे के अभव्य छे, ते बीज पाम्यो के नथी पाम्यो अने ते पामशे के नहीं. तेना उत्तरमां केवली महाराज कहे छे के ते भव्य छे पण हजी बीज पाम्यो नथी. असंख्य पुद्गलपरावर्त थया पछी ते शार्दूलसेन राजानो अश्व थशे त्यारे बीज (समकित) पामशे. त्यार-

पछी असंख्याता नव नमीने शंख नामे ब्राह्मण थशे अने ते नवमां ते केवलज्ञान पामशे. आ हकीकत सांजलीने वेलंधर पोताने स्थानके जाय छे अने केवली महाराज विचरता विचरता सिद्धगिरि आवे छे. त्यां केवली समुद्घात करी लोकाग्रे जाय छे. आ प्रमाणे महात्मा समरादित्य केवलीनुं चरित्र संपूर्ण थाय छे. एकंदर आध्यात्मिक रसनो उत्तेजक अने वैराग्य नावनानो दर्शावनार आ महान् ग्रंथ आदरपूर्वक वांचवा लायक छे. दरेक प्रसंगे दर्शावेला विचारो निर्दोष, गहन अने बोधक छे. समय समयनां चित्रो उत्कृष्ट नावथी नरपूर छे. केटलाएक प्रसंगोमां स्वानाविकपणे उपजेला वैराग्यना विचारोनो निर्णय धार्मिक तेमज व्यावहारिक विषयमां ग्रंथकारना उत्कृष्ट ज्ञाननी प्रतीति आपे छे. आ ग्रंथमां वैराग्य दर्शावनारा विषयो प्रसंगोपात घणा आवे छे. तेउ दया, प्रेम, वैराग्य अने शांतिनी उत्तमोत्तम नावनानुं दर्शन करावे छे.

अज्ञानता के बुद्धिनी अपूर्णता नूलोनुं कारण छे. जगतमां सद्गुणो हमेशां जय पामे छे, कर्मोना संयोगथी स्वनाव घमाय छे, स्वनाव प्रमाणे कार्यों थया करे छे, दुर्गुणो माणसोने दुर्मार्गे दोरी जाय छे, मन अने शरीरना स्वानाविक वेगो तृप्ति पाम्या वगर विरमता नथी तेमज प्रेम, नय, काम, क्रोध, लोन, नाव अने अनाव वगेरे अंतःकरणनी स्वानाविक वृत्तिउनो तेना सम्यग्योगमां उपयोग थाय छे इत्यादि धार्मिक अने नैतिक तत्त्वोनुं स्वरूप आ ग्रंथमां आवे छे; तेथी आ ग्रंथ जैन विद्वान् अन्यासी, वांचनोत्साही अने धार्मिक पुरुष के स्त्रीने संपूर्ण वांचवा योग्य छे.

आवा उपयोगी ग्रंथोना आविर्नावथी जैनसाहित्य पूर वेगथी वृद्धि पाम्या वगर रहेशे नहीं. आ महान् ग्रंथना रचनार महानुनाव श्रीपद्मविजय गणिए पोतानी सुबोधक कृतिथी सकल जैन संघने नारे उपकार करेलो छे. आवा निःस्वार्थ परोपकारी महात्माना चारित्रजीवनने जेटलो धन्यवाद आपीए तेटलो थोमो छे. एवा महात्माउ आ सृष्टि उपर पुनः प्रगट थाय एवीज अंतरनी प्रार्थना छे.

विज्ञप्ति.

सुज्ञ जैन बंधुओने जणाववानुं के आ समरादित्य केवलीनो रास अगाउ अमारा तरफथी प्रगट करवामां आव्यो हतो. तेनी तमाम नकलो घणा वखत पहेलां खपी जवाथी तेमज तेनी मागणी वारंवार आववाथी आ बीजी आवृत्ति यथामति संशोधन करीने अमोए बहार पाडी छे.

क्षमापना.

आ ग्रंथनी अंदर मतिदोषथी कांइ पण भूलचुक रही होय अगर सिद्धांत विरुद्ध लखायुं होय तो ते सर्व वांचनार श्री संघनी समक्ष मिच्छा दुक्कड हो, अने वांचनारा सज्जनोए ते भूलो सुधारी वांचवी एवी अमारी भलामण छे.

मुंबई, मांडवी, शाकगली.
आसो सुदि पूर्णीमा १९७०
ता. ४ ऑक्टोबर १९१४

श्रावक भीमसिंह माणकेना
कार्यप्रवर्तको.

जाहेरखबर.

पांडव चरित्र. (श्री पांच पांडव तथा नेमीश्वर भगवान् अने श्री कृष्णादिकनुं सविस्तर गुजराती भाषांतर.) आ ग्रंथमां श्री नेमीश्वर भगवान्, बलभद्र, वासुदेव जे श्रीकृष्ण, प्रतिविष्णु जे जरासंध, पांडव, कौरव, भीष्मपितामह, कर्ण, द्रोणाचार्य अने कृपाचार्यादिक अनेक वीर पुरुषोनां चरित्रो आवेलां छे. तेमज जिनधर्माभिलाषी शुद्ध श्रद्धावान् सम्यक्दृष्टि विवेकी सज्जनोनां मनने आनंद उत्पन्न करनारी कथाओ वैराग्य, नीति तथा सत्य प्रतिज्ञा प्रमुखनो बोध करे छे. आ ग्रंथ पहेलां गुजराती अक्षरोमां छपायेलो हतो. ते खपी जवाथी हमणां शास्त्री अक्षरमां छपाव्यो छे, अने तेनी साथे मन रंजन करे तेवां रंगीन चित्रो पण नाख्यां छे. किमत रु० ५-०-०

जाहेरखबर.

<u>वैराग्य कल्पलता पूर्वार्ध.</u> (श्री यशोविजयजी उपाध्याय कृत.)—आ ग्रंथ एटलो तो रसिक तथा जैनवर्गना श्रावको अने साधु साध्वीउने माटे उपयोगी छे के ते सर्वेने आदिथी ते अंत सुधी वांचवा जलामण करीए छीए.

आ ग्रंथनी रचना काव्यरूपे गुंथेली छे अने तेमां जीवने संसारज्र-मणथी केवी केवी विटंबनाउ जोगववी पडे छे तेनो कथाउ द्वाराए आबे-हुब चितार आप्यो छे. तेम आ ग्रंथ रसिक बनाववा माटे साहित्यनो सार लइ तेमां रसालंकारोने पण घणीज उत्तम रीतथी प्रदर्शित करेला छे. आ ग्रंथ जणवाथी काव्योनो बोध थवा साथे जैन दर्शननां तत्त्वोनो घणोज बोध थाय छे एटलुंज नहीं, पण आ ग्रंथना अज्यासथी अमारा स्वधर्मी बंधुउने जवनाटकनुं स्वरूप केवुं छे तेनो खरेखर ख्याल थाय छे. वली आ ग्रंथ मुनिराजो आदिकने व्याख्यानमां उपयोगी थइ पडे तेवो छे, माटे दरेक जैन बंधु आ ग्रंथनो लाज लेशे. (पानांआकारे.) किमत रु० ३—०—०

<u>जैन कुमारसंजव महाकाव्य.</u> (श्री जयशेखसूरि कृत.)—आ नामनुं अति अद्भुत तथा काव्यचमत्कृतिवालुं अने साहित्यना सारथी जरेलुं रमणिक काव्य अमोए तेना गुजराती अर्थ सहित छपावी प्रसिद्ध कीधुं छे.

आ ग्रंथनां काव्यनी रचना एटली तो मधुर अने विद्वत्ता जरेली छे के ते वांचवाथी दरेक विद्वानना मनने आश्चर्य थया विना रहेतुं नथी. आ काव्यमां श्री ऋषजदेव प्रजुनुं जरतकुमारना जन्म पर्यंत वर्णन आपेलुं छे अने तेम करीने आ काव्यनुं नाम "जैन कुमारसंजव" एवुं नाम सफल कर्युं छे. वली आज दिन सुधीमां जैन जाइउने तथा मुनिराजो वगेरेने संस्कृत जाषानुं व्याकरण जणी अन्यदर्शनीउनां जे काव्यो जणवानी जरुर परुती हती, ते अमोए गुजराती अर्थ साथे छपावी प्रसिद्ध करेला आ काव्यग्रंथथी दूर थइ छे. वली आ काव्यग्रंथ बीजा काव्यग्रंथो क-रतां कवित्वशक्तिमां चरुीआतो होवाथी जैन बंधुउने उपयोगी छे.

किमत रु० १—१२—०

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ अथ ॥

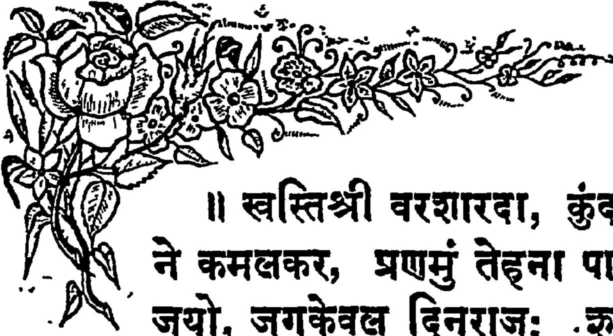
पंडित श्रीउत्तमविजयशिष्य पंडितप्रवर श्रीपद्मविजयजी विरचित

॥ श्रीसमरादित्य केवलीनो रास प्रारंभः ॥



॥ तत्र प्रथम खंडस्य प्रारंभोऽयं ॥

॥ दोहा ॥



॥ स्वस्तिश्री वरशारदा, कुंद चंद सम काय; कमलमुखी ने कमलकर, प्रणमुं तेहना पाय ॥ १ ॥ जगचूडामणि जग जयो, जगकेवल दिनराज; ऋषभगति गति राजती, आदिदेव नमुं आज ॥ २ ॥ समन समन ने समण जे, समजो वली समान; समणपदे चउ अतिशया, वंदुं श्रीवर्द्धमान ॥ ३ ॥

॥ अत्र व्याख्या—श्रमण भगवान् महावीरे, इहां प्राकृते समणपदे चार अतिशय सूचव्या छे, ते एम के रोगादिक उपद्रव शमावे माटे समन कहीये ॥ इति अपायापगमातिशय ॥ १ ॥ तथा अनुत्तर विमानना देवताना संशय टालवाने अर्थे द्रव्यमन प्रवर्त्तावे छे, माटे मन सहित वर्त्ते, ते माटे समन कहीये ॥ इति ज्ञानातिशय ॥ २ ॥ तथा सम्यक् एटले रूडी पेरे, सिद्धांत अविरोधिपणे अणति कहेतां बोले ते समण कहीये ॥ इति वचनातिशय ॥ ३ ॥ तथा "सहमानेन वर्त्तते" माने करी सहित, एटले सुर असुरनी पूजारूप माने वर्त्ते छे, तेहने समान कहीये. प्राकृत माटे ऱ्हस्व थाय ॥ इति पूजातिशय ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ परिसह सहता जे प्रभु, संख्या पण तस शेष; केवलज्ञान दिवाकरु, नमुं अजितादि जिनेश ॥ ४ ॥ गौतम पमुहा गणहरा, सूरि नमुं

सुजगीश; अनुक्रमे जिणथी आवीउं, श्रुत ए विसवावीश ॥ ५ ॥ मुखर अलिश्रेणी मिली, कुसुमवुष्टि सुर कीद्ध; तीर्थप्रवर्त्तन समय ते, नद्र करो नव सिद्ध ॥ ६ ॥ गुणदायक श्रुत आगला, वंदु गुरु गुणवंत; जिणे वचने करी जाणीये, तत्त्वातत्त्व महंत ॥ ७ ॥ समरादित्य सुसाधुनुं, चरित्र अछे सुविचित्र; हरिनद्रसूरे नाखीयुं, वचनविचार पवित्र ॥ ८ ॥ अल्प निदान उदये अति, बहु संबंध बनाव; सुणतां सुख उपजावशे, जेहथी सना जमाव ॥ ए ॥ नव खंडे करी निर्मलो, रास रचुं सुखकार; सत्तर नव सोहामणा, कहुं विचित्र प्रकार॥ १० ॥ अपराधी नर उपरे, करीये नहीं कांइ क्रोध; तिणे ए समरादित्य तणुं, चरित्र सुणो शुन नोध ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ पहेली ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ गुण अनंत आतमना कह्या, तेहमां पण दोय मुख्यज लह्या ॥ दर्शन ने वली बीजुं ज्ञान, तेहमां पण ज्ञानज परधान ॥ १ ॥ यद्यपि ज्ञान छे पंच प्रकार, मति श्रुत अवधि नाण अवधार ॥ मनःपर्याय तेम केवलज्ञान, पण श्रुतनाण इहां बहुमान ॥ २ ॥ कालादिक जे आठ आचार, ते श्रुतज्ञान तणा निर्धार ॥ श्रुतज्ञाने चउ नाण जणाय, प्रथम लान पण एहनो प्राय ॥ ३ ॥ आहार अशुद्ध पण शुन उपयोग, श्रुतज्ञानी लाव्या शुन जोग ॥ पण ते केवली करे आहार, एम श्रुतज्ञान सहु शिरदार ॥ ४ ॥ उक्तं च उघनिर्युक्तौ "उहोसुत्तोव उत्तो, सुअनाणी जइ हुगिएहइ असुद्धं ॥ तं केवली विभुंजइ, अपमाणं नवेसुअं इहरा ॥ १॥ चोपाइ ॥ ज्ञाने सवि आदेय गहवाय, ज्ञाने सयल ते हेय तजाय ॥ इह नव परनव पण हित थाय, साध्य साधन ज्ञानथी जणाय ॥ ५ ॥ मंत्र यंत्र आराधन करे, ज्ञाने देवता आपद हरे ॥ अज्ञाने आवस्यो सदैव, हिताहित नवि जाणे जीव॥ ६ ॥ विण उद्यमनो दीवो एह, नित्य उग्यो सूरज छे जेह ॥ त्रीजुं लोचन ज्ञान उदार, चोरी न करे चोर केवार ॥ ७ ॥ पाप थकी दूरे रहे सदा, कुशल पक्षमां वरते तदा ॥ विनयनी प्रतिपत्ति सुहाय, ज्ञाने जेह असाध्य सधाय ॥ ८ ॥ श्रद्धा पण ज्ञाने स्थिर थाय, जाण्या विण श्रद्धा न कराय ॥ ते श्रुतज्ञान आराधन करो, जिम नवसायर लीला तरो ॥ ए ॥ नणवानो नवि करो अन्यास, जो तुम्ह होये ज्ञान पिपास ॥ दिवसे एक पद पक्षमां दोय, जो शिखे उद्यम

करी तोय ॥ १० ॥ यतः पुष्पमालायां "जइ विहु दिवसेण पयं धरिज्ज पक्केण वासिलोगकं ॥ उद्योयं मामुंचसु, जइ इच्छसि सिक्खिउं नाणं ॥१॥"
॥ चोपाइ ॥ व्याकरण छंद काव्य अलंकार, नाटक तर्क गणित निर्धार ॥ सम्यग्दृष्टि जीवे ग्रह्युं, ते सवि ज्ञान नंदीमां कह्युं ॥ ११ ॥ ए बोले आचारप्रदीप, तिणे तुमे ज्ञान जणो जवि खिप्प ॥ अज्ञानी ते करशे किशुं, पुण्य पापशुं लहेशे इस्युं ॥ १२ ॥ मास मासने पारणुं करे, पण अज्ञान हैयामां धरे ॥ मायावी जमे गर्ज अनंत, किम पामे जवजलनो अंत ॥ १३ ॥ यतः सूयगडांगे ॥ जइ वियणिगिणे किसे चरे, जइवि य जुंजिय मासमंतसो ॥ जे इह मायाइ मिज्जइ, आगंतागप्रायणंतसो ॥३॥ चोपाइ ॥ सूगडांगे ए बे अधिकार, दृष्टांत अग्निशर्म वृत्तिकार ॥ तिणे अग्निशर्मानी वात, जोडे सांजलजो विख्यात ॥ १४ ॥ चरित्रमां वली जाख्युं एम, धर्म्म करो तुमे जविका प्रेम ॥ धर्मे सुकुल रूप संपदा, धर्मे नासे सवि आपदा ॥ १५ ॥ धर्मे कीर्ति वाधे घणी, तिणे करो धर्म बीजुं अवगणी ॥ जे जे इंद्रिय मन अजिराम, ते ते धर्म तणां सहु काम ॥१६॥ अर्थ सयण ने वली शरीर, मरण काल मूके लही पीर ॥ धर्म एक होये सुसहाय, परजव देव मनुज वली थाय ॥ १७ ॥ शिवसुख पामे तिहांथी वली, धर्मकथा तिणे कहे केवली ॥ आराधक ने विराधक जेह, गुण-दोष कारक कहीये तेह ॥ १८ ॥ सांजली होये परम वैराग, तिणे ए समरादित्यनो लाग ॥ नव जव बिहुनो जिम संजोग, तिम जाखुं तुम्हे सुणो जविलोग ॥ १९ ॥ मुनिचंद राय राणी नर्मदा, वेलंधर सुरनी पर्षदा ॥ ते आगल जिम केवल लही, निज पूरव जव वातज कही ॥२०॥ संक्षेपे कहेशुं ते चरी, सांजलो सहुये हर्षज धरी ॥ समरादित्य चरित्र रसाल, पद्मविजय कहे पहेली ढाल ॥२१॥ सर्व गाथा ॥३४॥ इति प्रथम ढाल ॥

॥ दोहा ॥

॥ संग्रहणी गाथा सुणो, नरसुरजवनां नाम; इम नगरी ने आउखां, आचारज कहे आम ॥ १ ॥ चरित्रे यतः ॥ "गुणसेण अग्गिसम्मा ॥ १ ॥ सिहाणंदायतहपियाउत्ता ॥ २ ॥ सिहिजालिणीमाइ सूया ॥ ३ ॥ धण धणसिरिमायप्रइजवा ॥ ४ ॥ १ ॥ जय विजयायसहोदर ॥ ५ ॥ धरणो लबी य तहपइजवा ॥ ६ ॥ सेणवीसेणापित्ती, अउत्ताजम्मंमीसत्तमए

॥ ७ ॥ २ ॥ गुणचंद वाण मंतर ॥ ८ ॥ समराइच्च गिरीसेण पाणोउ ॥ए॥ एक्कस्सतउ मुक्को, णंतो बीअस्स संसारो ॥ ३ ॥ णगराईखिइपइठं, ॥१॥ जयपुर २ कोसं ३ सुसम्मनयरं च ४ ॥ कायंदी ५ मायंदी,६ चंपा ७ उ-स्साय ८ उज्वेणी ॥ए ॥ ४ ॥ गुणसेणस्सुववाउ ॥ सोहम्म १ सणंकुमार २ बंजेसु ३ ॥ सूक्का ४ णया ५ रणेसु, ६ गेविज्ञा ७ णुत्तरेसु च ॥ ८ ॥ ५ ॥ इयरस्सुववाउ, विद्युकुमारेसु होइ नायवो ॥ सेसो अणंतरोउण, रयणाइसु अह क्कमसो ॥६॥ सागरमेगं पंचय, नव पनरसेय तहय अहारा ॥ वीसं तीसं तित्तीसं, बीअस्स ठिइउणरएसु" ॥७॥ श्रीहरिजद्रसूरीश्वरे, चौदशे चउ-च्यालीश; ग्रंथ आलोअणमां ग्रह्या, जगमां वहोत जगीश ॥२॥ प्रथम ग्रंथ प्रारंजीउ,क्रोधनिरासने काम; एह गुरु आम्नाय ठे,समतासंग सुठाम॥३॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं ॥ ए देशी ॥

जंबूद्वीप सोहामणो, पढीम महाविदेह ॥ लाल रे ॥ खितिप्रतिष्ठ नामे जलुं, नगर अनोपम जेह ॥ लाल रे ॥ १ ॥ गढ मढ मंदिर मालीआं, मानुं सुरेंद्रविमान ॥ लाल रे ॥ जिहां महिला जन मोहती, रूपे रंज समान ॥ लाल रे ॥ जं० ॥ २ ॥ वदने कमल कोईल स्वरे, नयणे कुवलयपत्र ॥ ला० ॥ राजहंसगतिये करी, जीते रमणीय यत्र ॥ ला० ॥ जं० ॥ ३ ॥ जिहां विद्याव्यसनी जना, पापजीरु जस लोज ॥ ला० ॥ धनबुद्धि धर्मे करी, राखे थइ स्थिर थोज ॥ ला० ॥ जं० ॥ ४ ॥ पूग मंमल परगमो, जन मन नयणाणंद ॥ ला० ॥ मयकलंके हीणमो, नर-पति पूरणचंद ॥ ला० ॥ जं० ॥ ५ ॥ कुमुदीनी नामे कामिनी, अंतेउर शिरदार ॥ ला० ॥ मदन धरे रतिवल्लहा, जोगवे जोग उदार ॥ ला० जं०॥ ६ ॥ गुणसेन कुंवर ठे तेहने, गुणगण रयण जंडार ॥ ला० ॥ क्रीमा-प्रिय बालकपणे, व्यंतरसुर परे सार ॥ ला०॥ जं०॥७॥ अल्पारंज परिग्रही, तिहां पुरोहित एक ॥ला०॥ धर्मशास्त्र पाठक वली, यज्ञदत्त सुविवेक ॥ ला० ॥ जं० ॥ ८ ॥ सोमदेवा गर्जे थयो, अग्निशर्मा पुत्त ॥ ला० ॥ महोटुं त्रिकोण मस्तक सही, पिंगल नयण ते वृत्त ॥ ला० ॥ जं० ॥ ए ॥ चीपरुं नाक बेसी गयुं, बिलमातर जस कान ॥ ला० ॥ दंत दंतोशलनी परे, देह ते बीजत्सवान ॥ ला० ॥ जं० ॥ १० ॥ लंबोदर कोट वांकडी, वांका

टूंका हाथ ॥ ला० ॥ एक पासुं ऊंचुं वली, मानुं पापनो साथ ॥ ला० ॥ जं० ॥ ११ ॥ ॥ स्थूल कठिन लघु जेहनी, जंघ ने पोहला पाय ॥ ला० ॥ विषम ऊरू केश काबरा, विषम कटीतट थाय ॥ ला० ॥ जं० ॥ १२ ॥ गुणसेन कुंवर कौतुक थकी, ताल कंसाल मृदंग ॥ ला० ॥ नाटक नित्य करावतो, अग्निशर्मा संग ॥ ला० ॥ जं० ॥ १३ ॥ हसतो हस्त ताली दीये, गर्दन्ने करी आरोप ॥ ला० ॥ बालकवृंदे परवस्यो, उपजावे तस कोप ॥ ला० ॥ जं० ॥ १४ ॥ फाटुं त्रुटुं सूपडुं, छत्र करे शिरठाय ॥ ला० ॥ डिंडिम फूटा ढोल ज्युं, कहे ए जाय महाराय ॥ ला० ॥ जं० ॥ १५ ॥ राजपंथे उतावलो, नित्य हींमावे तेह ॥ ला० ॥ इम करतो ते कदर्थना, उपजावे तस देह ॥ ला० ॥ जं० ॥ १६ ॥ इम खमतां हवे उपनी, वराग्यज्ञावना चित्त ॥ ला० ॥ चिंतवे एणी परे चित्तमां, पुण्य कर्युं न पवित्त ॥ ला० ॥ जं० ॥ १७ ॥ तो धिःकार बहु जन करे, पर पराज्ञवनुं ठाम ॥ ॥ ला० ॥ हांसी करतां लोकनुं, सहीये सहुए आम ॥ ला० ॥ जं० ॥१८॥ धर्म न कीधो परज्ञवे, तिणे ए पामुं विवाग ॥ ला० ॥ देखी न करुं इणे ज्ञवे, तो किम लहुं दुःखत्याग ॥ ला० ॥ जं ०॥ १९ ॥ तिणे करीये हवे धर्मने, जिम नवि पामुं दुःख ॥ ला० ॥ दुर्जन जनथी विडंबना, नवि लहीये लहुं सुख ॥ ला० ॥ जं० ॥ २० ॥ एम चिंती वैराग्यथी, मूक्यो नयरीसंग ॥ ला० ॥ संक्लेशस्थानक वर्जीये, एम जाणी एकंग ॥ ला० ॥ जं० ॥ ॥ २१ ॥ देशअंते सीमा लगे, हींमतां थयो एक मास ॥ ला० ॥ तिहां तपोवन दीठुं हवे, नामशुं परितोष जास ॥ ला० ॥ जं० ॥ २२ ॥ चंपक बकुल अशोक तिहां, नाग अने पुन्नाग ॥ ला० ॥ मग मृगपति रमे एकठा, गरुम तथा वली नाग ॥ ला० ॥ जं० ॥ २३ ॥ धूमपटल घृतहोमनो, उपजे ताप संतोष ॥ ला० ॥ गिरि नदी नीऊरणां वहे, पाम्यो सुखनो पोष ॥ ला० ॥ जं० ॥ २४ ॥ विसामो एणे इंहां कर्यो, देखी जागि विशाल ॥ ला० ॥ पद्मविजये बीजी कही, ढाल अति सुरसाल ॥ ला० ॥ जं० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ६० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ करी विसामो तिहां कणे, खेद थयो जब खीण; तव उठ्यो उतावलो, तापसशुं ते लीण ॥ १ ॥ नयणे लागो नीरखवा, आर्जव कोमीन्न

एह; नामे ते ध्याने रह्यो, कदलीहर कर्युं गेह ॥ २ ॥ लेइ रुद्राक्ष माला करे, जपतो बेठो जाप; वांकलुं पहेर्युं वृक्षनुं, प्रगट नहीं आलाप ॥ ३ ॥ जटाजूट जोगीसरो, नूति लगावी जाल; कमंडल मूक्युं कने, सोमदृष्टि संजाल ॥ ४ ॥ कमलपत्र उपरे कर्युं, आसन अतिहि उदार; जोग पटे आसन सज्युं, वर्ज्यो शेष व्यापार ॥ ५ ॥ नासाये जोड्यां नयन, दृष्टि हरष्यो देखी; रोमांचित थइ हरखशुं, प्रणम्यो धरती पेखी ॥ ६ ॥ उत्तमांग अवनीतले, थापी थयो सनाथ; माने धन्य निज आतमा, पार लह्यो नवपाथ ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ त्रीजी ॥

॥ राग विहागडो ॥ मुऊ घर आवजो रे नाथ ॥ ए देशी ॥

॥ कर जोडीने कहे एणी परे, प्रनु पार पाम्यो आज ॥ तुम्ह दीठे डुःख सवि विसर्यां, मुऊ नहीं अवरशुं काज ॥ १ ॥ गुरुजी विनति मुऊ एह, मुऊ करो पावन देह ॥ गुरु० ॥ ए आंकणी ॥ एम सांजली तापस हवे, देखी ते अति बहुमान ॥ स्वागत पूछे इम तेहने, मूकी पोतानुं ध्यान ॥ २ ॥ गुरु० ॥ दीये तापस आसन एहने, कहे बेस इणही ठाय ॥ तव बेठो कुशने आसने, कहे किहांथी आयो नाय ॥ ३ ॥ गुरु० ॥ जब कह्युं निज वीतक सवे, तव कहे तापस एम ॥ वत्स पूर्वकृत कर्में करी, सहु क्लेश पामे नेम ॥ ४ ॥ गुरु० ॥ तिणे नूपे पीड्या प्राणीआ, वली दरिद्री डुहव्या जेह ॥ दोनाग कलंके दूषीआ, होय त्राण वियोगीने एह ॥ ५ ॥ गुरु० ॥ इह नवे परनवे सुख करे, ए परम शीतल ठाण ॥ परसंगे डुःख नवि पामीये, लोकथी नहीं अपमान ॥ ६ ॥ गुरु० ॥ डुर्गति नवि जइये वली, तिणे धन्य छे वनवास ॥ इम कहे बोल्यो तेहवे, स्वामी कह्युं ते खास ॥ ७ ॥ गुरु० ॥ जो होय मुऊ उपरे कृपा, जो जाणो व्रतने जोग ॥ तो व्रत देइ अनुग्रह करो, तव बोल्या तपसी लोग ॥ ८ ॥ गुरु० ॥ तुम विना बीजो कूण होये, तुऊने घणो वैराग ॥ पण मार्ग अमचो समऊीने, तुम व्रत लीउ महानाग ॥ ए ॥ गुरु० ॥ एम कही समऊाव्यो नलो, हतो जेह निज आचार ॥ रही केइक दिनने व्रत दीयो, शुन तिथि नक्षत्रे वार ॥ १० ॥ गुरु० ॥ कोइ डुःखगर्जित वैराग्यथी, दीक्षादिने कहे एम ॥ मास मासने करुं पारणुं, मुऊ महाप्रतिज्ञा प्रेम ॥ ११ ॥ गुरु० ॥

पारणादिने पहेले घरे, शुभ अशुभ जे मले आहार ॥ अथवा मिले नहीं तोहि पण, फिरी जाउं आपणे ठार ॥ १२ ॥ गुरु० ॥ पण जावुं नहीं बीजे घरे, सहु सांभलो ए नेम ॥ पालतां प्रतिज्ञा वही गयां, बहु लाख पूर्व एम ॥ १३ ॥ गुरु० ॥ इण अवसरे वन ढूंकडुं, एक वसंतपुर इण नाम ॥ तस लोक गुणरागी थयो, बहु भक्तिवंतो ताम ॥ १४ ॥ गुरु० ॥ अहो महातपस्वी एह छे, आ लोकनी नहीं आश ॥ निज शरीरनो प्रतिबंध नहीं, एहनो सफल जीवितवास ॥ १५ ॥ गुरु०॥ एम बहु प्रशंसा ते करे, हवे पूर्णचंद जे राय ॥ गुणसेनने परणावीउं, वली कीधलो महाराय ॥१६॥ गुरु० ॥ तपोवने तापस नृप थयो, राणी सहित शुभ चित्त ॥ गुणसेन राज्यने पालतो, त्रण वर्ग साधे नित्य ॥ १७ ॥ गुरु० ॥ बहु राय सामंत पद नमे, साध्या ते बहुला देश ॥ दश दिशे निर्मल जश वधे, निज देश ने परदेश ॥ १८ ॥ गुरु० ॥ वसंतसेना नामथी, पटराणीशुं एक दिन्न ॥ वसंतपुर आव्यो वही, तपोवनने आसन्न ॥ १९ ॥ गुरु० ॥ पेठो महा मंगल करी, विमानछंद प्रासाद ॥ पाउसनी लीला सूचवे, नाटिक गाजतो नाद ॥ २० ॥ गुरु० ॥ रयणावलीउं विजली, धूपघटी मेघ अंधार ॥ चमरश्रेणी बगपंक्तिउं, मुक्तावली जलधार ॥ २१ ॥ गुरु० ॥ पंचवरणी पटांशुक जिके, लटके ते इंद्रधनुष ॥ सुगंधे पृथवी महमहे, देखी न लागे भूख ॥ २२ ॥ गुरु० ॥ मोहनिंदमां जे धारीआ, तेणे सुपन सरीखुं थाय ॥ सहु नगर लोक विसर्जीआ, सुखमां ते दिवस गमाय ॥ २३ ॥ गुरु० ॥ जब सूर्य उदयो तब करे, गोसकृत्य ते भूपाल ॥ कहे पद्म त्रीजी ढाल ए, सुणतां ते मंगलमाल ॥ २४ ॥ गुरु० ॥ सर्व गाथा ॥ ८१ ॥

॥ दोहा ॥

नरपति रमवा नीकल्यो, खेलावे बहु खास; आस अति उतावलो, पामे तेहथी प्यास ॥ १ ॥ तेहनो खेद उतारवा, बेठो सहसंबवन्न; इण समे तापस आवीआ, नरपतिने आसन्न ॥ २ ॥ नारीगान वरंगना, आपी दे आशीष; भूपति पण उभो थइ, साचुं नामे शीश ॥ ३ ॥ आपे आसन आदरे, तव भाखे रीषि तेह; अम गुरु मोकलीआ इहां, दुःख सुख पूछन देह ॥ ४ ॥ कहे नरपति किहां कुलपति, तापस बोले ताम; इण तपोवनमां आवीये, देखो दरीस उद्दाम ॥ ५ ॥ कौतकनो

लीधो थको, तपोवन पहोतो तेह; तापस बहु वली कुलपति, नमीउं आणी नेह ॥ ६ ॥ कुलपति जूपतिने कहे, सांजल धर्म सनाथ; विनये सांजली विनति, जाखे हवे जूनाथ ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ श्रीरूषजानन गुणनिलो ॥ ए देशी ॥

॥ नरपति कर जोमी कहे, मुऊ उपरे करो सुपसाय हो ॥ मुणींद ॥ ल्यो आहार माहारे घरे, सहु तापसनो समुदाय हो ॥ मु० ॥ आवो गुरु मुऊ मंदिरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कुलपति कहे सुण जूपति, आवशुं पण टाली एक हो ॥ मु० ॥ अग्निशर्मा ते नामथी, तेहने मास मासनी टेक हो ॥ मु० ॥ २ ॥ आ० ॥ ते वात सुणी कहे राजीउं, कीधो मुऊने उपगार हो ॥ मु० ॥ पण किहां तपसी वरूजागीउं, करुं दर्शन पामुं पार हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ आ० ॥ कहे कुलपति उद्याने रह्यो, जिहां श्रेणी अछे सहकार हो ॥ मु० ॥ जइ दीठो पद्मासन रह्यो, प्रशांतचित्त व्यापार हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ आ० ॥ बहु हर्ष धरी पुलकित थइ, प्रणमे तेहना वर पाय हो ॥ मु० ॥ तव दीए आशीष तापस तिहां, सुखे आव्या तुमे इण ठाय हो ॥ मु० ॥ ५ ॥ आ० ॥ तुम्हे बेसो इहां इण स्थानके, तव बेसी तेह नरींद हो ॥ मु० ॥ कहे किम डुक्कर ए आदर्युं, तव बोल्यो ते योगींद हो ॥ मु० ॥ ६ ॥ आ० ॥ एक दारिद्र डुःख ने विरूपता, वली परपरिजव पण हेतु हो ॥ मु० ॥ तिम गुणसेन वली नृपसुत जलो, कल्याणमित्र शुज चेत हो ॥ मु० ॥ ७ ॥ आ० ॥ निज नामे शंक्यो नरपति, कहे ते कहो कारण केम हो ॥ मु० ॥ जूपतिसुत तुम हेतु थयो, तव अग्निशर्मा कहे एम हो ॥ मु० ॥ ८ ॥ आ० ॥ जे जे उत्तम नर होय ते, पामे प्रतिबोध स्वयमेव हो ॥ मु० ॥ पर प्रेर्या मध्यम नर लहे, जघन्य लहे न सदैव हो ॥ मु० ॥ ए ॥ आ० ॥ प्रेरे जे संसारी जीवने, धर्मे कोइक नयेण हो ॥ मु० ॥ काढ्यो तिणे कारागारथी, कल्याणमित्र कहुं तेण हो ॥ मु० ॥ १० ॥ आ० ॥ निज वीतक संजारी मने, लज्जा अवनत करी वयण हो ॥ मु० ॥ कहे किम प्रेर्या तुमने तिणे, किम ते थयो धर्ममां सयण हो ॥ मु० ॥ ११ ॥ आ० ॥ कहे ते अग्निशर्मा हवे, प्रेरणा तो छे अनेक हो ॥ मु० ॥ तिणे कोइ निमित्ते प्रेरीउं, म्हें धरीउं

तेहथी विवेक हो ॥ मु० ॥ १२ ॥ आ० ॥ तव चिंते चित्तमां नृपति, अहो अहो एहनो परिणाम हो ॥ मु० ॥ माने ए उपगारने, ढे जेह पराभव ठाम हो ॥ मु० ॥ १३ ॥ आ० ॥ न करे ए निंदा केहनी, पण में तो कीध अकाज हो ॥ मु० ॥ पाप कर्युं ते प्रकाशीए, एम चिंतवी ते महाराज हो ॥ ॥ मु० ॥ १४ ॥ आ० ॥ महापापकारी हुं तुम प्रभु, तुमने कीधो संताप हो ॥ मु० ॥ हुं तेअ गुणसेन जाणजो, कीधुं घोर में अति पाप हो ॥ ॥ मु० ॥ १५ ॥ आ० ॥ एम नहीं तपसी कहे सांभलो, तुं मुज धर्म सखाय हो ॥ मु० ॥ नृप कहे गुणग्राहक तुमे, चंद्रथी अग्नि न झराय हो ॥ मु० ॥ १६ ॥ आ० ॥ हवणां इण वाते तो सर्युं, पण पारणुं तुम केवार हो ॥ मु० ॥ तपसी कहे पांच दिवस पछे, पृथवीपति भाखे ते वार हो ॥ मु० ॥ १७ ॥ आ० ॥ माहरे घरे पारणुं कीजीये, जो कीजे मुज सुपसाय हो ॥ मु० ॥ तुम प्रतिज्ञा विधिजीके, में जाणी कुलपति पाय हो ॥ मु० ॥ १८ ॥ आ० ॥ तिणे अनागत हुं विनवुं, तव बोले तपसी वाणी हो ॥ मु० ॥ ते दिन आवे तव हा कहुं, बे घमी ते विघ्ननी खाण हो ॥ मु० ॥ ॥ १९ ॥ आ० ॥ जीवलोक स्वपना समो, जीव चिंतवे आज ने काल हो ॥ मु० ॥ काम करशुं पण जाणे नहीं, कालने तो हाथ ढे काल हो ॥ मु० ॥ २० ॥ आ० ॥ तव नरपति बोले एम फरी, निर्विघ्ने आवे ते दिन्न हो ॥ मु० ॥ पारणे प्रभु आववुं मुज घरे, आग्रहथी तिणे प्रतिपन्न हो ॥ मु० ॥ २१ ॥ आ० ॥ हवे राजा हरखे प्रणमीउं, गयो नयरमां निज आवास हो ॥ मु० ॥ भक्ति करी कुलपतिनी घणी, गया पांच दिवस पण तास हो ॥ मु० ॥ २२ ॥ आ० ॥ कही चोथी ढाल एणी परे, सहु धर्मना अर्थी जीव हो ॥ मु० ॥ कहे पद्मविजय समजी करो, तो पामो सुख अतीव हो ॥ मु० ॥ २३ ॥ आ० ॥ सर्व गाथा ॥ १२१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पारणुं करवा पहोंचीउं, गुणसेन रायने गेह; शिरवेदन अतिशय थइ, जालिम नृपने जेह ॥ १ ॥ आकुल व्याकुल सहु थया, आव्या वैद्य अशेष; वैदकशास्त्र वदे घणा, पण गइ पीमा न लेश ॥ २ ॥ रयण विचित्र चूरण करी, लेप लगाया लक्क; बुद्धिमंत बलीआ वहु, विबुहा मति विलक्क ॥ ३ ॥ होम हवन पुरोहित करे, शांतिकर्म संभाल; अंतेउर आंसुं झरे,

म्लान थइ फुलमाल ॥ ४ ॥ कुमलायुं मुखकमल ते, कन्या कंडुक कील; चित्रकर्म परिचय तज्यो, लागी न नाटिक लील ॥ ५ ॥ पनिहारा गत प्राण जिम, कंचूइक तजे काम; सूपकार सुख नवि करे, सामंत शोक विश्राम ॥ ६ ॥ तापस देखी तेहबुं, वलीउं चित्त विचार; पाछुं नवि कोइ पूछीयुं, पाहोतो तपोवन पार ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ जोगीशर चेलानी देशी ॥

॥ केम आव्या पाछा फरी रे, तापस पूछे वात रे ॥ जोगीसर ॥ क्षीण शरीर तुमारडुं रे लाल ॥ अग्निशर्मा बोलीउं रे, सांजलो कहुं अवदात रे ॥ जो० ॥ राय तणे घर हुं गयो हो लाल ॥ १ ॥ रायशरीरे शाता नहीं रे, लोक करे उद्वेग रे ॥ जो० ॥ देखी न शक्यो हुं सही हो लाल ॥ तुरत तिहांथी पाछो वल्यो रे, सहु कहे धरी विवेक रे ॥ जो० ॥ साचुं शाता न तेहने रे लाल ॥ २ ॥ अन्यथा जक्तिवंतो घणो रे, किम न होवे सावधान रे ॥ जो० ॥ गुण तुमचा जाणे घणा रे लाल ॥ कुलपति आगल बहु कस्या रे, इण तुमचा गुणग्यान रे ॥ जो० ॥ अग्निशर्मा तव बोलीउं रे लाल ॥ ३ ॥ नहीं प्रयोजन आहारनुं रे, पण एहने थाउं शात रे ॥ जो० ॥ एम करी मास कस्यो वली रे लाल ॥ कोइक जावि जावथी रे, शाता थइ नृपगात रे ॥ जो० ॥ पूछे तपस्वी वातमी रे लाल ॥ ४ ॥ पारणदिवस ते आज छे रे, आव्या के नहीं तेह रे ॥ जो० ॥ आदर दीधो के नहीं रे लाल ॥ तव परिजन बोल्यो तदा रे, आवीने गया जेह रे ॥ नरेसर ॥ सहुने विकल्प जाणी करी रे लाल ॥ ५ ॥ राय कहे धिःक मुजने रे, चूक्यो लाज अपार रे ॥ जो० ॥ अनरथ थयो पीड्या मुनि रे लाल, बीजे दिन विहाणे गयो रे ॥ लाजतो राय अपार रे ॥ जो० ॥ कुलपतिपाय जइ नम्यो रे लाल ॥ ६ ॥ आशीष देइ बेसामीउं रे, पूछे वात शरीर रे ॥ जो० ॥ नीचुं जोइ नृप बोलीउं रे लाल ॥ निशासो नाखे वली रे, कुलपति कहे थाउं धीर रे ॥ नरे० ॥ कहो उद्वेग कारण तुमे रे लाल ॥ ७ ॥ नृप कहे कहेवाये नहीं रे, कुलपति कहे कहो तोहि रे ॥ न० ॥ तव नरपति कहे इणी परे रे लाल ॥ निर्दयी चरित्र कहेतां थका रे, चित्त न चाले मोहि रे ॥ जो० ॥ पण तुम आणाथी कहुं रे

लाल ॥ ८ ॥ मात पिताने सारिखा रे, कुलपति कहे अम लोग रे ॥ न० ॥ तिहां लज्जा करवी कीसी रे लाल ॥ दुःख कहेतो विचारीये रे, टालणनो उपयोग रे ॥ न० ॥ तव नरपति कहे वातमी रे लाल ॥ ए ॥ मुऊ निमित्ते तापस थयो रे, में अविचारित कीध रे ॥ जो० ॥ वली हमणां पण एम बन्युं रे लाल ॥ बीजो मास थयो एहने रे, में अपयश बहु लीध रे ॥ जो० ॥ तव कुलपति एणी परे जणे रे लाल ॥ १० ॥ तुं तो धर्मकारण थयो रे, पहेलां ने वली आज रे ॥ न० ॥ कहे तें शुं हीणुं कर्युं रे लाल ॥ नरपति कहे निमंत्रणा रे, कीधी आहारने काज रे ॥ जो० ॥ मस्तक थइ मुऊ वेदना रे लाल ॥ ११ ॥ पारणुं में न करावीयुं रे, उलटो कर्यो अंतराय रे ॥ जो० ॥ धर्ममां विघनकारी थयो रे लाल ॥ कुलपति कहे वञ सांजलो रे, तुऊ अपराध न कांय रे ॥ न० ॥ रोगी कृत्याकृत्य नवि लहे रे लाल ॥ १२ ॥ अंतराय तुमे नवि कर्यो रे, उलटो कीधो सहाय रें ॥ न० ॥ खेद न करो मनमां तुमे रे लाल ॥ आहार न लीधो मुऊ घरे रे, तेहनो खेद मुऊ थाय रे ॥ जो० ॥ जूपति एणी परे विनवे रे लाल ॥ १३ ॥ माहारो खेद ते किम टले रे, लीधा विण गुरु आहार रे ॥ जो० ॥ तव कुलपति कहे रायने रे लाल ॥ मासखमणनुं पारणुं रे, आवशे एहने जे वार रे ॥ न० ॥ तव तुऊ घरे करशे हवे रे लाल ॥ १४ ॥ अग्निशर्मा बोलावीउं रे, कही नरेंद्रनी वात रे ॥ जो० ॥ अपराध एहनो म चिंतवे रे लाल ॥ एहनो खेद निवारवा रे, वली करवा सुखशात रे ॥ जो० ॥ पारणुं एहने घरे करो रे लाल ॥ १५ ॥ एह जक्ति न उवेखीये रे, महारुं वचन पण मान रे ॥ जो० ॥ तव ते तापस बोलीयो रे लाल ॥ स्वामी खेद ए शे करे रे, मुऊ तुम वचन प्रमाण रे ॥ जो० ॥ मुऊ उपकार कर्यो इणे रे लाल ॥ १६ राजा बहुमाने करी रे, प्रणमी पोहोतो गेह रे ॥ जो० ॥ इम करतां वली आवीउं रे लाल ॥ पारणा केरो दिन्न रे ॥ जो० ॥ इण अवसर चर आवीआ रे लाल, जाखे नृपने वचन्न रे ॥ न० ॥ मानजंग नृप आवीउं रे लाल ॥ १७ ॥ रातिवासो देइ मारीआ रे, आपणा सैन्यना लोक रे ॥ न० ॥ हवे जिम जाणो तिम करो रे लाल ॥ तव राजा रीसे चढ्यो रे, आणी मनमां शोक रे ॥ न० ॥ कोपानलपणे दीपतो रे लाल ॥ १८ ॥ निर्दय जरणी पछाऊतो रे, अमर्षे

बलनां वयण रे ॥ न० ॥ तूर वजमावे प्रयाणनां रे लाल ॥ गयबल हयबल सज करे रे, करी विकराल ते नयण रे ॥ न० ॥ रहवर जम सन्नद्ध हुआ रे लाल ॥ १ए ॥ चामर छत्र धरावतो रे, वाजंते वर तूर रे ॥ न० ॥ बंदी बिरुद बोली जते रे लाल ॥ मंगलकलश चलावीउं रे, अग्निशर्मा तप नूरि रे ॥ जो० ॥ पारणाने इण अवसरे रे लाल ॥ २० ॥ आवीने देख्यो तिहां रे, सहु जन सज्ज संग्राम रे ॥ जो० ॥ देखीने पाछो वल्यो रे लाल ॥ कोइए उलख्यो पण नहीं रे, आव्यो ते निज गम रे ॥ जो० ॥ ज्योतिषी इण अवसरे जणे रे लाल ॥ २१ ॥ लगन आवेलुं छे जलुं रे, कीजे तुरत प्रयाण रे ॥ रा० ॥ राजा कहे तव वातमी रे लाल ॥ अग्निशर्मा आव्या नहीं रे, मानी छे मुज वाणी रे ॥ जो० ॥ आव्या पछी जइये सहु रे लाल ॥ २२ ॥ तव एक नर बोल्यो तिहां रे, आवी गया इण वार रे ॥ रा० ॥ हजीअ हशे पुरमां सही रे लाल ॥ तव राजा विलखो थइ रे, चाल्यो तेहनी व्हार रे ॥ रा० ॥ दीठो नीकलतां थका रे लाल ॥ २३ ॥ उतरी रथथी पाये पडे रे, विनति करे महाराय रे ॥ जो० ॥ करीय पसाय पाछा वलो रे लाल ॥ महारे जावुं घणुंये हतुं रे, पण नवि गयो ऋषिराय रे ॥ जो० ॥ वाट तुम्हारी जोवतां रे लाल ॥ २४ ॥ तुम्हे अणजाण्या पाछा वल्या रे, तिणे चालो मुज गेह रे ॥ जो० ॥ अग्निशर्मा तव बोलीउं रे लाल ॥ तुं जाणे सवि वारता रे, म्हारे प्रतिज्ञा जेह रे ॥ रा० ॥ सत्यसंधा तपसी होये रे लाल ॥ २५ ॥ लाजालाज सम त्रेवडे रे, हवे बोले नरराय रे ॥ जो० ॥ म्हारा प्रमाद चरित्रथी रे लाल ॥ लाजुं छुं स्वामी घणो रे, ते मुखथी न कहेवाय रे ॥ जो० ॥ तुम्ह तप शरीर पीमा थकी रे लाल ॥ २६ ॥ मुज अति पीमा उपजे रे, उपजे हैये संताप रे ॥ जो० ॥ बोली न शकुं वयणथी रे लाल ॥ हैये दुःख खमाय नहीं रे, म्हें कीधुं महा पाप रे ॥ जो० ॥ दुःख उपशम मुज चिंतवो रे लाल ॥ २७ ॥ तव तापस मन चिंतवे रे, राय बहु खेदाय रे ॥ रा० ॥ गुरुजक्तो ए अतिघणो रे लाल ॥ पारणुं न करुं एहने घरे रे, तो दुःख एहनुं न जाय रे ॥ रा० ॥ एम चिंती तपीउं कहे रे लाल ॥ २८ ॥ करशुं तुज घर पारणुं रे, निर्विघ्न दिन तेह रे ॥ रा० ॥ तव राजा हरख्यो घणुं रे लाल ॥ नृप कहे विमल नाणी तुम्हे

रे, प्रणमे आणी नेह रे ॥ जो० ॥ प्रभु मुजने निस्तारीउं रे लाल ॥ २ए ॥ समरादित्यना रासमां रे, ए कही पांचमी ढाल रे ॥ रा० ॥ विहु जन मन राजी थया रे लाल ॥ पद्मविजय कहे सांभलो रे, आगले वात रसाल रे ॥ रा० ॥ गुण पक्षपाती राजा घणो रे लाल ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ १५७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तपसीने कहे भूपति, तुम्हे जाउं तपोवन्न; कुलपति पासे किम-हिके, नहीं आवणनुं मन्न ॥ १ ॥ मुख देखावी माहरुं, न शकुं नाथ निदान; एम कही राजा घर गयो, तपसी गयो ते रान ॥ २ ॥ कुलपतिने सघलुं कह्युं, कुलपति कहे वर काम; कीधुं एम परशंसीउं, मास त्रीजो कस्यो ताम ॥ ३ ॥ वधते परिणामे वली, तप पूरुं तस थाय; राय तणे घर पारणे, पुत्रजनम प्रगटाय ॥ ४ ॥ प्रतिहारी मुखे पामीउं, अवल पुत्र अवतार; आपे आभूषण अंगनां, पूर्ण करी प्रतिहार ॥ ५ ॥ गुणसेन रायने अंगणे, उत्सव अतिहि उदार; मांड्यो ते महामोदथी, परिगल पुएय प्रकार ॥ ६ ॥

॥ ढाल ठ्ठी ॥

॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ राय हुकम फरमावीउं रे, मूको कारागार ॥ उद्घोषणा करी दीजीये रे, दान अनेक प्रकार ॥ १ ॥ भविक जन भावि भाव ते होय ॥ भावि न टाले कोय ॥ भवि० ॥ भावि भाव ते होय ॥ ए आंकणी ॥ जितशत्रु मुख रायने रे, कहेवरावो ए वात ॥ नयरमां सहु संभलावीये रे, जिणे बहु महोत्सव थात ॥ भवि० ॥ २ ॥ जे कह्युं ते सवे कस्युं रे, नाचे पगे पगे पात्र ॥ वर चीवर धरी रमणीउं रे, गावे ते वाली गात्र ॥ भवि० ॥ ३ ॥ दाने संतोषित बोलतां रे, वंदी जय जय सद्द ॥ ताल वीणा मादल तणा रे, सांभलीये बहु नद्द ॥ भवि० ॥ ४ ॥ वधामणां आवे घणां रे, राजभवन संकीर्ण ॥ इण अवसर तापस तिहां रे, हुउं प्रतिज्ञा तिन्न ॥ भवि० ॥ ॥ ५ ॥ पारणा निमित्त ते आवीउं रे, राजकुले ते आय ॥ सहु ते हर्षे प्रमोदमां रे, नवि कोयने चित्त भाय ॥ भवि० ॥ ६ ॥ आडुं अवलुं जोइने रे, वलीउं ते ततकाल ॥ अशुभ करम उदये करी रे, चिंतवे आलपंपाल ॥ भवि० ॥ ७ ॥ आर्त्तध्यान वशे चिंतवे रे, अहो अहो एह राजान ॥

मुज उपर बालनावथी रे, वैरनाव असमान ॥ नवि० ॥ ७ ॥ जूर्ज माया करे केटली रे, गूढाचार चरित्त ॥ सहु शाखे करे विनति रे, आचरे अति विपरीत ॥ नवि० ॥ ए ॥ एम चिंतवतो नीकळ्यो रे, पुर बाहिर ते जाम ॥ दोष आज्ञाने आकरे रे, क्रोध तणे वली धाम ॥ नवि० ॥ १० ॥ वासित जैनमार्गे नहीं रे, धर्मश्रद्धा गइ तास ॥ परलोकनी वासना तजी रे, आवी अमैत्री जास ॥ नवि० ॥ ११ ॥ नूखे कलकली देहमी रे, आकर्ष्यो वली नूख ॥ द्वेष जाग्यो नृप उपरे रे, शुद्धि न रही तिल तुष ॥ ॥ नवि० ॥ १२ ॥ तपनुं फल जो माहरुं रे, तो एहनो वधकार ॥ करे नियाणुं एहवुं रे, नव नव कुःख दातार ॥ नवि० ॥ १३ ॥ शत्रुने कुःख दीधुं नहीं रे, वाल्हाने सुख नवि दीध ॥ मात विमंबी ते नरे रे, जन्म लही शुं कीध ॥ नवि० ॥ १४ ॥ एम नियाणुं तिणे कर्युं रे, आलोयुं नहीं ते ठाण ॥ क्रोधानल बलतो करे रे, कोमी विकल्प अजाण ॥ नवि० ॥ ॥ १५ ॥ पहोतो तपोवन तेहवे रे, कुलपति मूक्या दूर ॥ परिहारी शेष तापस वली रे, दीसंतो महाक्रूर ॥ नवि० ॥ १६ ॥ जइ सहकारश्रेणी रह्यो रे, चिंतवे वली एम चित्त ॥ अहो राजा मुज उपरे रे, प्रत्यनीक नली रीत ॥ नवि० ॥ १७ ॥ हांसी योग्य मुजने कर्यो रे, तापस सर्व मजार ॥ जाणी प्रतिज्ञा माहरी रे, कीधो माया प्रकार ॥ नवि० ॥ १७ ॥ करीय निमंत्रणा एणी परे रे, नवि आप्यो मुज आहार ॥ इण वेला खलना करी रे, शो एहने अहंकार ॥ नवि० ॥ १ए ॥ तपसीने किम ए करे रे, शत्रु मित्र सम जास ॥ अथवा न तज्यो मूलथी रे, आहार तो पाम्यो विषास ॥ नवि० ॥ २० ॥ ते माटे हवे मुज सर्युं रे, जाव जीव लगे आहार ॥ न करुं एम व्रत आदर्युं रे, छांमी सर्व व्यापार ॥ नवि० ॥ २१ ॥ दीठो तापसे इण समे रे, जाएयुं ध्यान अशुद्ध ॥ पूछे किम नवि पामीया रे, कुसुम विलेपण शुद्ध ॥ नवि० ॥ २२ ॥ गुणसेन राय तणे घरे रे, शुं न गया प्रनु आज ॥ पारणुं किम नवि नीपनुं रे, ते नाखो महाराज ॥ नवि० ॥ २३ ॥ अग्निशर्मा तव बोलीउं रे, हुं गयो नृपने गेह ॥ शत्रु बालपणा थकी रे, आज लगी हजी एह ॥ नवि० ॥ २४ ॥ मीठे वचने बोलतो रे, करतो विनय अपार ॥ वैर न टल्युं मुज उपरे रे, जाएयुं में निर्धार ॥ नवि० ॥ २५ ॥ पण ए मायावी खरो रे, कीधुं महारुं हा-

स ॥ कीधो पराभव एणी परे रे, एह अनार्य विलास ॥ भवि० ॥ २६ ॥ सहसा उछव मांकीउं रे, जाणी पारण दिन्न ॥ आदर दीठो न केहनो रे, वलीउं विलखित मन्न ॥ भवि० ॥ २७ ॥ कहे तापस नवि संभवे रे, एह नरींद्र गुणवंत ॥ अथवा विचित्र परिणाम छे रे, शुं न कषाये हुंत ॥ भवि० ॥ २८ ॥ जिनवर मत वासित विना रे, उत्तमता नवि होय ॥ तिणे जिनमत अंगीकरो रे, ज्ञान श्रद्धा सहु कोय ॥ भवि० ॥ २९ ॥ छठी ढाल एणी परे रे, भाखी कर्मनिदान ॥ पद्मविजय कहे सांभलो रे, दुःखदाइ अज्ञान ॥ भवि० ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ १९४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुलपति पासे जइ कह्युं, अग्निशर्मा आज; पारण विण पाछा वल्या, महातपसी महाराज ॥ १ ॥ कुलपति आव्या तिहां कने, तपसीए पूज्या ताम; बछ पारणुं नवि कर्युं, कीधुं दुःक्कर काम ॥ २ ॥ राये शुं ए आचर्युं, असरिस जन आचार; अग्निशर्मा एम कहे, रायप्रमाद प्रकार ॥ ३ ॥ आहार तज्यो नहीं आदरे, पाम्यो आपद पेखी; जाव जीव हवे वर्जीउं, आशा देह उवेखी ॥ ४ ॥ विनति हवे हुं विनवुं, कहेशो हवे न कांय; तव कुलपति कहे तेहने, एहमां हानि न कांय ॥ ५ ॥ काल जतां बारज कीसी, तपसी बोले तथ्य; पण नररायने उपरे, क्रोध न करो ए कथ्य ॥ ६ ॥ यतः ॥ “सबो पूवकयाणं, कम्माणं पावए फल विवागं ॥ अवराहेसु गुणेसुअ, निमित्तं मित्तपरो होइ ॥ १ ॥” दोहा ॥ एम शिखामण देइने, सेवाकाज सकास; तापस मूकी कुलपति, पहोतो आसन पास॥७॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ नानो के नानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ पारणवेला अतिक्रमी रे, सांभर्युं रायने ताम ॥ लागी वेदना रे ॥ अहो महारी अधन्यता रे, उत्सवमां थयुं आम ॥ लागी० ॥ १ ॥ आज पण पारणुं नवि थयुं रे, हैं हैं प्रगट्युं पाप ॥ ला० ॥ पूछे पासेना मनुजने रे, आव्या न आव्यानी छाप ॥ ला० ॥ २ ॥ खोली करी नर ते कहे रे, आवी गया निज ठोर ॥ ला० ॥ जन्मउछव धामधूममां रे, चाल्युं न एहनुं जोर ॥ ला० ॥ ३ ॥ राय कहे में पापीए रे, तपसीने कर्यो अंतराय ॥ ला० ॥ उदय आपद भणी मुज थयो रे, ए दुःख में न खमाय

॥ ला० ॥ ४ ॥ अल्प पुण्य घरे नवि होये रे, वृष्टि नली वसुधार ॥ ला० ॥ हुं तो तिहां नवि जइ शकुं रे, मुख न देखावुं लगार ॥ ला०॥ ५ ॥ सोमदेव पुरोहितने रे, नाखे इणी परे वाण ॥ ला० ॥ अणजाण्यो थइ तुं तिहां रे, जइने जो तिण गण ॥ ला० ॥ ६ ॥ तेहनी खबर करो तुमे रे, श्यो कीधो व्यवसाय ॥ ला० ॥ जोइ कहे मुज नीपनुं रे, तव ते गयो तिण गाय ॥ ला० ॥ ७ ॥ बहु तापसथी परिवस्यो रे, माज संथारे बेठ ॥ला०॥ अमर्ष नर्यो नृपनी कथा रे, करतो तेणे दीठ ॥ ला० ॥ ८ ॥ गिरि नदी पासे तेहने रे, विनये करी प्रणमंत ॥ ला० ॥ नाम देइ बेसारीयो रे, दीये आशीष महंत ॥ ला० ॥ ए ॥ पूछे पुरोहित तेहने रे, किम प्रन्नु खीण शरीर ॥ ला० ॥ तापस कहे सुणी डुबला रे, तपसी होये धीर ॥ला०॥ ॥ १० ॥ पुरोहित कहे साचुं प्रन्नु रे, होय तपस्वी निरीह ॥ ला० ॥ धन धान्यादिक सहु तज्यां रे, पण नहीं धर्मनी देह ॥ ला० ॥ ११ ॥ आहारमात्र लेवो घटे रे, धर्म सधाये जेण ॥ ला० ॥ इण नगरीमां उत्तम वसे रे, आहार दीये हरषेण ॥ ला० ॥ १२ ॥ तृण मणि पत्थर कनकमां रे, शत्रु मित्र सम नाव ॥ ला० ॥ मोक्षमार्ग तुमे आदर्यो रे, नवजलपोत स्वन्नाव ॥ ला० ॥ १३ ॥ तुमने आहार कमी कशी रे, तापस बोल्यो ताम ॥ ला० ॥ वात कही साची तुम्हे रे, पण नरपति डुःख ठाम ॥ ला० ॥ ॥ १४ ॥ धर्मी राजा सांनल्यो रे, तुमे किम नाखो एम ॥ ला० ॥ तपसी बोल्यो त्रटकीने रे, एहवा धर्मी न केम ॥ ला० ॥ १५ ॥ जीति देशने आवीउं रे, तपसी मारण काज ॥ ला० ॥ सोमदेव चिंते तदा रे, क्रोध चढ्यो अति आज ॥ ला० ॥ १६ ॥ बेठो संथारे देखीये रे, राय तणे निर्वेद ॥ ला० ॥ होशे अणसण आदर्युं रे, पामी अतिशय खेद ॥ ला० ॥ ॥ १७ ॥ पूछ्यो बोले वांकडुं रे, तिणे नहीं पूछण लाग ॥ ला० ॥ प्रणमी उठ्यो तिहां थकी रे, वातनो काढवा ताग ॥ ला० ॥ १८ ॥ फूल करे नदी उतरे रे, तापस एक तिवार ॥ ला० ॥ तेहने पूछे एणी परे रे, कहो ए कीस्यो विचार ॥ ला० ॥ १ए ॥ आंसुं नरी ते बोलीउं रे, जे थइ वात विस्तार ॥ ला० ॥ सांनली निज स्थानक गयो रे, सोमदेव तिणवार ॥ ला० ॥ २० ॥ संनलावे सवि रायने रे, नूपति अधिक खेदाय ॥ ला० ॥ चिंतवे जइ प्रसन्न करुं रे, ए तपसी ऋषिराय ॥ ला० ॥ २१ ॥

धर्मनो अर्थी राजवी रे, बाल तपस्वी तेह ॥ ला० ॥ सातमी ढाल सोहामणी रे, पद्म कहे ससनेह ॥ ला० ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ २२३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप अंतेउर लेइने, परिजन साथे प्रधान; पयचारी तपोवन प्रते, तपसी मेलन ताम ॥ १ ॥ पोहोतो ते परिवारथी, जाएयुं तापस जाम; कह्युं अग्निशर्मा कने, आव्यो नूपति आम ॥ २ ॥ क्रोधानल वलतो कहे, तेड्यो कुलपति तात; तव आव्या कहे तेहने, विनयनी मूकी वात ॥ ३ ॥ जो जो कुलपति हुं जणुं, सुणजो साची वात; एह अधम राजा इहां, तरु श्रेणी आयात ॥ ४ ॥ मुख न देखावे मुजने, करीये एहवुं काम; जिम पाछो ए जाय तेम, रुडुं थाये राम ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ रामचंदके वाग ॥ ए देशी ॥

॥ कुलपति चिंते एम, एह कषाये हस्यो री ॥ दृष्टिए न होये राय, तो वर काम कस्यो री ॥ १ ॥ सन्मुख चाल्यो जाम, कुलपति राय तणे री ॥ तव परिवारशुं राय, दीठो खेद घणे री ॥ २ ॥ विनये प्रणमी पाय, आशीष शीश लहे री ॥ लह्यो आणंद जब राय, कुलपति ताम कहे री ॥ ३ ॥ आवो चंपकश्रेणी, बेसीये तिहां सुमना री ॥ एम कही तिहां लेइ जाय, आसन कुश तणां री ॥ ४ ॥ विमल शिला पट ठाम, कुलपति बेठा जीशे री ॥ नरपति बेठो नूमि, आणा लहीय तिशे री ॥ ५ ॥ कुलपति पूछे एम, किम पयचारी तुमे री ॥ आव्या एवडी नूमि, अचरिज पामुं अमे री ॥ ६ ॥ वली साथे परिवार, तव बोल्यो नूपति री ॥ पुरुष अधमनी वात, कहेवी नहीं जुगति री ॥ ७ ॥ धर्म मांहि अंतराय, तपसीने में कस्यो री ॥ पाप जराणुं घोर, हवे किम जव उतस्यो री ॥ ८ ॥ अग्निशर्मा स्वामी, किहां छे तेह कहो री ॥ देखाडो नमुं आज, पातिक सर्वे दहो री ॥ ९ ॥ कुलपति बोले ताम, मत संताप करो री ॥ तुम माटे नवि कीध, अणसण एह खरो री ॥ १० ॥ अमचो एह आचार, अणसणे देह तजे री ॥ चरमवये अम लोक, तिणे अणसण ए जजे री ॥ ११ ॥ तव बोले नरराय, शुं बहु तमने कहुं री ॥ दरिशण तेहनुं स्वामि, एक वार हुं लहुं री ॥ १२ ॥ कुलपति कहे सुण राय, ए घणी वात

नहीं री ॥ म करो तस अंतराय, ध्यानमां बेठा सही री ॥ १३ ॥ वली अवसर लही कोइ, दरिशण तास करो री ॥ सांजली बोले राय, जे तुमे आण धरो री ॥ १४ ॥ वली आवी शहुं स्वामि, उठ्यो एम कही री ॥ आसण डुमणो तेह, अवसर एह लही री ॥ १५ ॥ प्रणमी कुलपति पाय, चाल्यो नयर जणी री ॥ तव एक तापस आय, वय तस बाल घणी री ॥ १६ ॥ धरतो पश्चात्ताप, वात ते सर्व कहे री ॥ अग्निशर्मा अजिप्राय, तव परमार्थ लहे री ॥ १७ ॥ हवे आवी शुं होय, कुलपति कष्ट करे री ॥ तिणे नवि घटतुं मुऊ, रहेवुं इण नयरे री ॥ १८ ॥ वली तपसीनी वाणी, श्रवणे सुणवी पडे री ॥ जिम तिम बोले तेह, ए पण वात नडे री ॥ १९ ॥ पूछे लगननो दिन्न, निज आवास जइ री ॥ जोशी शुज अज्यास, कहे तुं सुण नरवइ री ॥ २० ॥ कालमुहूर्त्त ते खास, खितिप्रइठ जणी री ॥ जाखी सर्वने वात, कालप्रयाण तणी री ॥ २१ ॥ सेना करी चतुरंग, चाल्या प्रयाण करी री ॥ महीने पोहोता ठेठ, आव्या तिण नयरी री ॥ २२ ॥ शणगारी सवि शहेर, पहोतो निज जुवने री ॥ उब्रव महोब्रव कीध, नहीं विकल्प मने री ॥ २३ ॥ सर्वतोजद्र आवास, मांहि केलि करे री ॥ दीन डुःखी जन जेह, ते सहुने उद्धरे री ॥ २४ ॥ समरादित्यनो रास, आठमी ढाल कही री ॥ पद्म कहे सुरसाल, आगल वात वही री ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ २५३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर उद्यानमां, मासकल्प मर्याद; मुनिवर विहारे महालता, पालंता अप्रमाद ॥ १ ॥ शिष्यसमूहे श्रमण ते, सुंदर सर्व शरीर; चौनाणी चारित्रीउं, धोरी परिसह धीर ॥ २ ॥ वय जोबन आव्या व्रती, गुणरयणागर जेह; कुलगर खंती तणुं कह्युं, निलय धर्मनो तेह ॥ ३ ॥ विजयसेन मुनिवर तिहां, जूपतिकुल संजूत; कुशल पद्म मानुं ढग कर्यो, आचारिय अद्भुत ॥ ४ ॥ अशोकदत्त शेठनुं अजब, दीसे चैत्य उद्दाम; मागी अवग्रह मुनिवरु, उतर्या तिहां आराम ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ तोरणथी रथ फेरीउं रे हां ॥ ए देशी ॥

॥ जिहां सहकार सोहामणां रे हां, डुर्लज विवर जणाय ॥ जविजन

सांजलो ॥ नीतिवंता नरपति जस्या रे हां, तेहवा सदल सजाय ॥ जवि० ॥ १ ॥ रूंख ते वावि कांठे रह्या रे हां, शोजे अधोमुख तेह ॥ जवि० ॥ परस्त्री देखणने यथा रे हां, उत्तम पुरुष सनेह ॥ जवि० ॥ २ ॥ विषय प्रसक्त पाखंमीआ रे हां, लिंबन सोहे तेम ॥ जवि०॥ वृक्ष अशोक शोजे यथा रे हां, कुसुंज-वस्त्र वर जेम ॥ ज० ॥ ३ ॥ जीवलोक मनोरथ परे रे हां, बहुविध पादप होय ॥ ज० ॥ हिमगिरि शिखर परे सही रे हां, जिनवरचैत्य ते जोय ॥ ज० ॥ ४ ॥ चरणकरणनी सित्तरी रे हां, पाले संजम जार ॥ ज० ॥ इण अवसर राजा हवे रे हां, पूठे वात उदार ॥ ज० ॥ ५ ॥ कौतुक दीठुं तो कहो रे हां, तव नामे कब्याण ॥ ज० ॥ एक अठेरुं जे कहुं रे हां, राय सुणो वर जाण ॥ ज० ॥ ६ ॥ अशोकवन उद्यानमां रे हां, पाउधास्या ऋषिराय ॥ ज० ॥ जोवने जीत्यो मारने रे हां, सोवनवरणी काय ॥ ज० ॥ ७ ॥ जो पण संग सहु तज्यो रे हां, सहुने करे उपकार ॥ ज० ॥ धर्ममूरति धरी आवीयो रे हां, विजयसेन गणधार ॥ ज० ॥ ८ ॥ गंधार देशनो अधिपति रे हां, समरसेन राजान ॥ ज० ॥ तेहनो नत्तुउ जाणीये रे हां, लक्ष्मीसेन सुत जाण ॥ ज० ॥ ए ॥ में वांद्या हर्षे करी रे हां, तव बोले नरराय ॥ ज० ॥ ताहारो जव सफलो थयो रे हां, तुं कृतपुण्य जणाय ॥ज०॥ १० ॥ हुं पण काले वांदशुं रे हां, एम हर्षे गइ रात ॥ ज० ॥ आमंबरथी वंदीआ रे हां, साधु सवे परजात ॥ ज० ॥ ११ ॥ देखी देखी हरखतो रे हां, पुलकित थाये तन्न ॥ ज० ॥ आणंदवाह जल पूरीआं रे हां, नयणविकस्वर मन्न ॥ज०॥१२॥ लली लली प्रणम्यो प्रेमशुं रे हां, माने धन्य अवतार ॥ ज० ॥ धर्मलाज दीधो गुरु रे हां, शाश्वत सुख दातार ॥ ज० ॥ १३ ॥ चिंता सिद्धिवधू तणी रे हां, तिणे डुर्बल थयुं तन्न ॥ ज० ॥ अढार सहस शीलजारथी रे हां, नवि खेदायुं मन्न ॥ ज० ॥ १४ ॥ एहवा मुनिवर प्रणमीउ रे हां, बेठो गुरुने पाय ॥ ज० ॥ रूप चरित्र देखीकरी रे हां, मनमां विस्मित थाय ॥ ज० ॥ १५ ॥ पूठे राज्य ठोमी करी रे हां, किम लीधो व्रतजार ॥ ज० ॥ श्यो वैराग्य ते उपनो रे हां, किम ठांड्यो संसार ॥ ज० ॥१६॥ मुनिवर कहे सुण नरपति रे हां, शुं पूठे वैराग ॥ ज० ॥ जे संसारमां देखीये रे हां, ते वैराग्य महाजाग ॥ ज० ॥ १७ ॥ ठाम ठाम निर्वेद ठे

रे हां, चिहुं गतिमां संचाल ॥च०॥ जन्म मरण नहीं केहने रे हां, सघलाने शिर काल ॥च०॥१८॥ लखमी अथिर नवि सुख दीये रे हां, आव्यो शुं करी पुण्य ॥ च० ॥ जावुं किण ठामे वली रे हां, ए ज्ञाने पण शून्य ॥ च० ॥ १९ ॥ वली मानवनो नव नलो रे हां, रयणचिंतामणि तुल ॥ च० ॥ डानअणी जल जेहवुं रे हां, जीवित हारे थूल ॥ च० ॥ २० ॥ कुपित भुजंगम सारिखा रे हां, कामभोग संसार ॥ च० ॥ गजकर्ण वीज चंचल यथा रे हां, ऋद्धि शरद् जलधार ॥ च० ॥ २१ ॥ तप चारित्र न आदरे रे हां, ते नर डुर्गति जाय ॥ च० ॥ पामे विपाक बीहामणा रे हां, नारक तिरि गति थाय ॥ च० ॥ २२ ॥ बहु डुःखे करी वली रह्यो रे हां, रोग शोक विप्रयोग ॥ च० ॥ नवनाटक नाटक समुं रे हां, रीझी करे मूढ लोग ॥ च० ॥ २३ ॥ मोक्षसाधन तिणे साधीये रे हां, ए डुःख टालणहार ॥ ए मुझ निमित्त वैराग्यनुं रे हां, सामान्ये संसार ॥ च० ॥ २४ ॥ वलीअ विशेष सुण माहरुं रे हां, जेह चारित्र निमित्त ॥ च० ॥ नवमी ढाले पद्म कहे रे हां, मुनिवर चरित्र पवित्र ॥ च० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ २०३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जंबूद्वीप इण विजयमां, देश गंधार उद्दाम; निवसुं गंधार नयरीए, तिण पूरीए मुझ ताम ॥ १ ॥ मित्र एक तिहां माहरे, सोमवसु सुत सार; विभावसु घणुं वालहो, पुरोहित प्राणआधार ॥२॥ एक दिन ते आर्तकथी; दैवे दीधो दंरु; मरण लह्यो मुझ देखता, डुःख ते दीध प्रचंरु ॥३॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ झांझरीआ मुनिवर धन धन तुम्ह अवतार ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसर तिहां आवीया जी, विचरता मुनिवर चार ॥ चोमासुं रहेवा नणी जी, करतां उग्र विहार ॥ १ ॥ नवि नाव धरीने वंदो ए अणगार ॥ ए आंकणी ॥ गंधार पर्वतनी गुफा जी, तिहां आवीने ठाय ॥ मुनि मुझने वहाला घणा जी, चरपुरुषे कह्युं आय ॥ २ ॥ नवि० ॥ हुं पण शीघ्र गयो तिहां जी, दीठा करतां सझाय ॥ वंदीया में हर्षे करी जी, आणंद अंग न माय ॥ ३ ॥ नवि० ॥ धर्मलान दीधो तिणे जी, पूछी में सुखशात ॥ वंदीने हुं घरे गयो जी, नित्य करुं ए अवदात ॥४॥

॥ ज्ञवि० ॥ मासखमणने पारणुं जी, करे चारे मुनिराय ॥ नित्य वधते परिणामथी जी, मुऊ तिहां समकित थाय ॥ ५ ॥ ज्ञवि० ॥ चार मास ते वही गया जी, रयणीए चिंतव्युं एम ॥ काले महा तपसी जशे जी, तव करशुं कहो केम ॥ ६ ॥ ज्ञ० ॥ वंदन निमित्ते चालीउं जी, चार घमी लेइ रात ॥ थोमी ज्रूमि गयो जेटले जी, आव्यो सुरजित वात ॥ ७ ॥ ॥ ज्ञवि० ॥ अजुआलुं गगने थयुं जी, गाज्यो गिरि गंधार ॥ प्रचली तिहां वसुंधरा जी, जय जयरव विस्तार ॥ ८ ॥ ज्ञवि० ॥ अधिक हर्ष तव मुऊ थयो जी, आगले जाउं जाम ॥ पृथवी सम करीने तिहां जी, काढ्यां तृणादिक ताम ॥ ए ॥ ज्ञवि० ॥ गंधोदक वरसे तिहां जी, पुष्पवृष्टि वली थाय ॥ थोके थोके देवता जी, आवी स्तवनां कराय ॥ १० ॥ ज्ञवि० ॥ मानवज्ञव ज्ञले पामीया जी, क्षय कस्या राग ने दोष ॥ कर्म सैन्य ऊीत्युं तुमे जी, ज्ञवसायर कस्यो शोष ॥ ११ ॥ ज्ञवि० ॥ एम सांज्ञली में चिंतव्युं जी, गुरु लह्या केवलज्ञान ॥ जन्म मरण फुःख कापीयां जी, पाम्या शाश्वत थान ॥ १२ ॥ ज्ञवि० ॥ रयण सिंहासन सुर रचे जी, बेठा शांत स्वरूप ॥ मूर्त्तिमंत गुणगण तणा जी, मूक्यो ज्ञवज्ञय कूप ॥ १३ ॥ज्ञवि०॥ में कीधो देखी करी जी, निश्चय नहीं संदेह ॥ रोमांचित थइ प्रणमीउं जी, हर्ष न माये देह ॥ १४ ॥ ज्ञ० ॥ केवलीए तिहां देशना जी, दीधी करी विस्तार ॥ निज निज संदेह पूछता जी, सुर नरना बहु वार ॥१५॥ ॥ ज्ञवि० ॥ में पण मनमां चिंतव्युं जी, पूछुं मुऊ संदेह ॥ विज्ञावसु किहां उपनो जी, बोले जे मुऊ देह ॥ १६ ॥ ज्ञवि० ॥ पूछ्युं एम में चिंतवी जी, स्वामी थयो केइ काल ॥ म्हारो मित्र मुऊ देखतां जी, ततक्षण थयो विसराल ॥ १७ ॥ ज्ञवि० ॥ किहां जइने ते उपनो जी, हमणां अनुज्ञवे कांय ॥ जिनमत जाणुं हुं खरो जी, पण मुऊ फुःख किम थाय ॥ १८ ॥ ज्ञवि० ॥ केवली कहे तुमे सांज्ञलो जी, एहना ज्ञव विकराल ॥ धर्म कस्या विण प्राणीया जी, किम लहे सुख असराल ॥ १ए ॥ज्ञवि०॥ समरादित्यना रासमां जी, ज्ञाखी ए दशमी ढाल ॥ पद्मविजय कहे सांज्ञलो जी, केवली वचन रसाल ॥ २० ॥ ज्ञवि० ॥ सर्व गाथा ॥ ॥ ३०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रजक एक इण नयरमां, उसद्दिन्न इण नाम; श्वानी मधुपिंगा

वसे, तेहने गर्ने ताम ॥ १ ॥ उपनो श्वानपणे इहां, रज्जुए बांध्यो रह; नूख्यो तरश्यो रासन्नी, निकटे करतो नद ॥ २ ॥ रासन्नी पादप्रहारथी, नय पामे अति नीत; हमणां अनुनवे एहवुं, पण तुज पूरव प्रीति ॥३॥ पुष्करअर्द्ध कुसुमपुरे, नरतक्षेत्रमां नाव; कुसुमसार तुं तिहां कणे, शेठ सवे शिरदाव ॥ ४ ॥ श्रीकांता ए स्त्री हती, नमीउं तेह सनेह; पोताना जे पुरुष ते, तेऋण मूके तेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥

॥ दास अरदास शीपरे करे जी ॥ ए देशी ॥

॥ तेह चाकर उसदिन्न घरे जी, जइने मुकावीउं श्वान ॥ आहार ने पान दीधुं वली जी, लेइ आव्या तिण थान ॥ १ ॥ जुउं जुउं कर्म विचित्रता जी ॥ ए आंकणी ॥ कृमिकुले व्यापित देहनी जी, बहु रे चांदां पड्यां तास ॥ क्षीण तनु रुधिर अंगे करे जी, गति अति मंद छे जास ॥ २ ॥ जुउं० ॥ नजरे आवे ते दंतावलि जी, काढतो जीन्न विकराल ॥ देखी संवेग मुज उपनो जी, अहो अहो नवचक्रवाल ॥ ३ ॥ जुउं० ॥ श्वान पण पुछ हलावतो जी, वाह जल नरीय ते नयण ॥ देखी मुजने ते उन्हाइउं जी, नवि कहेवाये ते वयण ॥ ४ ॥ जुउं० ॥ ज्ञानीने पूछ्युं तव ते कहे जी, पूर्वनवनो ए प्रेम ॥ वात विशेष जाणे नहीं जी, पण ए सामान्यथी एम ॥ ५ ॥ जुउं० ॥ एह स्वनाव संसारनो जी, आवे जे कीधो अभ्यास ॥ कोइक काल अनानोगथी जी, पहोंचे पूर्व तणी वास ॥ ६ ॥ जुउं० ॥ पूछ्युं म्हें स्वामी कुण कर्मथी जी, पामीउं एह विवाग ॥ जातिमदथी केवली कहे जी, पूछीयुं म्हें धरी लाग ॥ ७ ॥ जुउं० ॥ कोण अनिमान एणे कर्युं जी, बोलीआ तव गुणवंत ॥ अनंतर नवे गणिका तणां जी, वृंद रमवा निकसंत ॥ ८ ॥ जुउं० ॥ तरुणजन वृंदशुं परवरी जी, अनुनवे वसंतनी क्रीम ॥ इण समे रजकनी चच्चरी जी, नीकली थइ तस पीम ॥ ए ॥ जुउं० ॥ जाति कुल बल गर्वे करी जी, किम जाये नीच अम पास ॥ दोष अज्ञानथी चिंतवे जी, कीधी कदर्थना तास ॥ १० ॥ जुउं० ॥ उसदिन्न मुख्य तेहमां अछे जी, ऋकमी बांध्यो दृढ बंध ॥ बंदीखाने मोकलावीउं जी, एम कर्यो बहुल तिणे धंध ॥ ११ ॥ जुउं० ॥ मान परिणामना वश थकी जी, बांधीयुं अशुन्न तिहां आय ॥ न-

परलोके उसदिन्नने जी, जोरूव्यो करी सुपसाय ॥ १२ ॥ जुर्ज० ॥ वेश्या ते कर्मथी कूतरो जी, उपनो इण जव एह ॥ सांजली में तिहां चिंतव्युं जी, अहो संसार डुःख गेह ॥ १३ ॥ जुर्ज० ॥ में कर जोमीने पूछीयुं जी, कब एह कर्मनो अंत ॥ जव्य अजव्य के किम प्रजु जी, जाखीये मुऊ जगवंत ॥ १४ ॥ जुर्ज० ॥ पामीर्ज वीज कें ए नहीं जी, तव कहे गुरु गुणवंत ॥ सांजलो तेह विस्तारथी जी, जिम एह कर्मनो अंत ॥ १५ ॥ जुर्ज० ॥ उसदिन्न घर एक रासजी जी, तेहनी कुखे ए श्वान ॥ उपजशे ए गर्द्दजपणें जी, जार वहतो अप्रमाण ॥ १६ ॥ जुर्ज० ॥ क्लेश खमतो बहु तिहां कणे जी, काल करीने तस गेह ॥ नाइदिन्न चंमाल जार्या जी, अणहिंगा कुखे रह्यो एह ॥ १७ ॥ जुर्ज० ॥ तेह नपुंसक नीपनो जी, रूप दौर्जाग्य देखाय ॥ सिंहे मार्यो वली तेहने जी, कुखे चंडालणी थाय ॥ १८ ॥ जुर्ज० ॥ नाग मसीर्ज वाल कालमां जी, मरी वली उसदिन्न धाम ॥ दत्तिआ दासी कुखे थयो जी, जातिअंध नपुंसक ताम ॥ १९ ॥ जुर्ज० ॥ वामणो ने सहु परिजवे जी, इण समे नयरनो दाह ॥ तेहमां मरी वली तेहनी जी, कुखे स्त्रीजव तणो लाह ॥ २० ॥ जुर्ज० ॥ राजमार्गे हण्यो हाथीए जी, तिणे कर्यो तिहां थकी काल ॥ हवे तेह रजकनी जारजा जी, कालंजणी नामे निहाल ॥२१॥ जुर्ज० ॥ तास कुखे थइ पुत्रिका जी, पामी हवे जोवनवेद ॥ उसरक्षित नामे रजकने जी, दरिद्रीने दीधी महाखेद ॥ २२ ॥ जुर्ज० ॥ गर्जवंती थइ अनुक्रमे जी, प्रसवनी वेदना तास ॥ पंचत्व पामी निज मातनी जी, कुखे उपनो सुत खास ॥ २३ ॥ जुर्ज० ॥ तेहवे वालक कालमां जी, गंधार सरिताने तीर ॥ रमतो रमतो गयो तिहां किणे जी, जेहमां उंमां बहु नीर ॥ २४ ॥ जुर्ज० ॥ उसदिन्न शत्रु एक तिण समे जी, आवीर्ज नाम चिलात ॥ कोटे शिल्ला बांधी खेपवी जी, नदीअ करशे ते घात ॥२५॥ जुर्ज० ॥ जातिमदथी इणी बांधीजं जी, कर्मनुं ए अवसान ॥ जव्य ने सिद्धिगामी खरो जी, पण न लह्यो बीजतान ॥ २६ ॥ जुर्ज० ॥ बांधतां कर्म दीसे नहीं जी, जोगवतां महा डुःख ॥ ढाल अग्यारमी एम कही जी, पद्म कहे धर्म्मथी सुख ॥ २७ ॥ जुर्ज० ॥ सर्व गाथा ॥ ३३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ आचारिय कहे पूछीउं, में केवलीने ताम; जलमरणे जाशे नहीं, कब समकित किण ठाम ॥ १ ॥ केवली कहे सुण तिहां थकी, पामी शुज परिणाम; सुरवर व्यंतर थायशे, आगम काले आम ॥ २ ॥ तिणे जवमां तीरथपति, आणंद इण अजिधान; पासे समकित पामीउं, सुरतरु सिद्धि समान ॥ ३ ॥ चउगइं ज्रमण जमी करी, सांजली जवसंख्यात; इण गंधारह जणवये, थाशे पृथवीनाथ ॥ ४ ॥ विद्याधर वैरागीआ, अमर तेज अणगार; तेहने पासे व्रत लेइ, पालशे प्रीति अपार ॥ ५ ॥ केवलज्ञान लही करी, पामशे जवनो पार; सांजलीने हुं समऊीउं, राग गयो संसार ॥ ६ ॥ ए वैराग्ये आदर्युं, पूछी मात पिताय; चारित्र चोखे चित्तशुं, इंद्रदत्त गुरुपाय ॥ ७ ॥ विजयसेन गुरु वर्णव्यो, वारु निज वैराग; साचुं कहे गुणसेन सुणी, जला तमे महाजाग ॥ ८ ॥ पण तुम्हे जाख्युं पूरवे, मोक्षनुं साधन मुऊ; मोक्षनुं साधन कहो मुने, जेह होये अविरुऊ ॥ ए ॥

॥ ढाल बारमी ॥ हंसलानी देशी ॥

॥ मोरा साहिब हो, श्री शीतलनाथ के ॥ ए देशी ॥

सूरि जाखे हो, सांजल नरनाह के ॥ मोक्ष थानक शाश्वत कहुं ॥ जरा मरण ने हो, नहीं जनम ने रोग के ॥ शोकादिक उपद्रव सहु ॥ १ ॥ नाण दरिशण हो, छे जास सरूप के ॥ चौद राज्य शिर जे रह्या ॥ हवे सांजल हो, कहुं तास उपाय के ॥ नाण दर्शन चरणज कह्या ॥ २ ॥ बिहुं जेदे हो, साधु श्रावक धर्म्म के ॥ बार प्रकार गृही तणो ॥ पांच अणुव्रत हो, त्रण गुणव्रत सार के ॥ चार शिक्षाव्रत एम गणो ॥ ३ ॥ मुनिराजनो हो, दशविध यतिधर्म के ॥ दोयनुं मूल दर्शन जणो ॥ ते डुर्लज हो, प्राणीवश कर्म के ॥ तेह कर्म आठज सुणो ॥ ४ ॥ ज्ञानावरण ने हो, वली दर्शनावरण के ॥ वेदनी मोह आयु वली ॥ नाम गोत्र ने हो, अंतराय ए आठ के ॥ एहनो हेतु कहे केवली ॥ ५ ॥ मिछ अन्नाण हो, अविरति ने प्रमाद के ॥ वली कषाय जोग जाणीये ॥ ठिइ डुविहा हो, उक्कोस जंहन्न के ॥ एक परिणामे ते आणीये ॥ ६ ॥ तीव्र परिणामे हो, उत्कृष्ट बंधाय के ॥ आदि त्रणने अंतरायनी ॥ त्रीश सागर हो,

कोमाकोमी जाण के ॥ तेत्रीश सागर आयनी ॥ ७ ॥ सीत्तेरनी हो, मोहनी कोमाकोमी के ॥ वीश कोमाकोमी शेषनी ॥ मध्यमना हो, होय बहु परकार के ॥ थिति परिणाम विशेषनी ॥ ८ ॥ आठ आठनी हो, नाम गोत्र मुहूर्त्त के ॥ वेदनीयनी वार ते, शेषनी भिन्न हो ॥ मुहूर्त्त जहन्न के ॥ थिति बांधे एक वार ते ॥ ए ॥ घंसना ने हो, घोलना परकार के ॥ यथाप्रवृत्ति करणे करी ॥ बहु क्षय करे हो, आयु विण सग कर्म के ॥ कोमाकोमी एकज धरी ॥ १० ॥ इत्यादिक हो, विधि ग्रंथीभेद के ॥ रागद्वेषनी आकरी ॥ पामे समकित हो, करी अनिवृत्ति करण के ॥ गेमवे मोहनी चाकरी ॥११॥यतः॥ "जागंठिता पढमं, गंठि समइछ्उं भवे बीयं॥ अनिअट्टिकरणं पुण, समत्त पुरक्कमे जीवे ॥ १ ॥" सम संवेद हो, निर्वेद अनुकंप के ॥ इत्यादि विस्तार बहु ॥ त्रण करणनो हो, कह्यो बहु अधिकार के ॥ कर्मपयमीथी जाणो सहु ॥ १२ ॥ अपराधी हो, उपर पण क्रोध के ॥ न करे जाणी विपाकने ॥ चक्री शक्रनां हो, सुख ते दुःख रूप के ॥ जाणे तुब्य किंपाकने ॥ १३ ॥ शिवसुख विण हो, नवि इछे अन्य के ॥ अनुकंपा दुःखीनी करे ॥ द्रव्य भावथी हो, होय शुभ परिणाम के ॥ शंकादिक दूषण हरे ॥ १४ ॥ वली जाणे हो, सत्यने निश्शंक के ॥ जे जिनवर भाखी गया ॥ थोमा कालमां हो, एहवा जे जीव के ॥ अव्याबाध सुखी थया ॥ १५ ॥ तेह समकिती हो, अनुक्रमे देशविरति के ॥ तव थूल व्रत अंगी करे ॥ वार व्रतने हो, तेहना अतिचार के ॥ वधबंधादिक नवि धरे ॥ १६ ॥ व्रत भंगा हो, कोड्यो गमे थाय के ॥ तेह सवि देशविरति गणो ॥ तेह वातो हो, बहु शास्त्र मजार के ॥ इहां थाये ग्रंथज घणो ॥ १७ ॥ हलवो थइ हो, अनुकरमे जीव के ॥ संख्य सागर क्षय जव करे ॥ तव संजम हो, कोइ उपशम श्रेणी के ॥ कोइ क्षपक श्रेणी करे ॥ १८ ॥ यतः ॥ भणीयं च ॥ "समत्तंमिउलद्धे, पलिअ पुहुत्तेण सावउ होज्जा ॥ चरणोवसमरकयाणं, सागरसंखंतरा हुंती ॥ १ ॥ पूरी क्षपकनी हो, थाये जब श्रेणी के ॥ घातिक्षये केवल लहे ॥ अघाति हो, करी कर्मनो घात के ॥ सादि अनंत सुखमां रहे ॥ १ए ॥ एम सांभली हो, गुणसेन राजन्न के ॥ शुभ परिणाम अनले दहे ॥ कर्म्म इंधणां हो, बाली समकित के ॥ देशविरति भावे लहे ॥ २० ॥ कर जोमी हो,

कहे हुं प्रभु धन्य के ॥ जिणे तुम्ह वयणां सांजल्यां ॥ रागविषनुं हो, जे टालणहार के ॥ पापपंक जल सम मल्यां ॥ २१ ॥ ढाल बारमी हो, समरादित्य रास के ॥ जाखी एह सोहामणी ॥ पद्मविजये हो, समकित देशविरति के ॥ पामवा जिम होय सुरमणि ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ३६ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर जोमी नरपति कहे, विजयसेनने वाणी; गृहस्थधर्म्म गुणसेनने, उच्चरावो प्रभु आणी ॥ १ ॥ अणुव्रत तस उच्चरावीयां, सांचां समकित मूल; बहुविध तास बतावीउं, नरपतिने अनुकूल ॥ २ ॥ प्रणमी गुरु परिवारशुं, गयो ते आपण गेह; जोजन करी वली जावशुं, पोहोतो गुरु पाय तेह ॥ ३ ॥ वली सेवा करी आवीउं, उजय काल नित्य एम; सांजले गुरुवाणी सदा, मास गयो एम क्षेम ॥ ४ ॥ समज्यो धर्म सारी पठे, विजयसेन करे विहार; धर्म्म करे धरणीपति, पूरे पुण्य प्रकार ॥५॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ मुनिमनसरोवर हंसलो ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिने हवे तेह नरपति, बेठो जुवे तमासो रे॥ देखे तिहां शब नर तणुं, पामे अति अविश्वासो रे॥ १ ॥ अथिर संसार एणी परे ॥ ए आंकणी ॥ चार जणे ते उपामीउं, बंधुजन परिवार रे ॥ करे आक्रंद अति घणो, पण नवि करे कोइ सार रे ॥ २ ॥ अथि० ॥ संवेगजावित जीवने, उपजे सहु इंद्रजाल रे ॥ मृतकनुं किंकिम वाजतुं, जगावे बाल गोपाल रे ॥ ३ ॥ अथि० ॥ देखीने नरपति चिंतवे, धर्म ध्यान जस चित्तो रे ॥ अम्ह पण इण परे होयशे, ए संसार विचित्तो रे ॥ ४ ॥ अथि० ॥ मरणधर्मा सहु प्राणीआ, हा हा जव गयो आले रे॥ नरपति सुरपति सहु जना, नवि दीसे कोइ काले रे ॥ ५ ॥ अथि० ॥ धन्य ते शेठ सेनापति, चिंतामणि सम जाणी रे ॥ घर बांमी व्रत आदरे, धन्य धन्य तास कमाणी रे ॥ ६ ॥ अथि० ॥ दीक्षा लेइ व्रत पालतां, शुद्धमान लीये आहार रे ॥ दोष बेंतालीश टालतां, धन्य तेहनो अवतार रे ॥ ७ ॥ अथि० ॥ संयोजनादिक दोष जे, पांच कह्या जिनराजे रे ॥ दोष न लगावे तेहमां, जगमां सहु शिर गाजे रे ॥ ८ ॥ अथि० ॥ पांच समिति सुमता रहे, वली त्रण गुप्तिने धारे रे ॥ अणसण प्रमुख तप

करे, नित्य प्रमादने वारे रे ॥ ए ॥ अथि० ॥ पंच महाव्रत ज्ञावना, जे ज्ञाखी पण वीश रे ॥ ईर्यासमिति मुख ते सवे, पाले जे गतरीश रे ॥१०॥ अथि० ॥ मासादिक पमिमा वहे, अणहाण ने वली लोच रे ॥ लाज्ञ अलाज्ञे जे सम रहे, तेहमां हर्ष न शोच रे ॥ ११ ॥ अथि० ॥ निःप्रतिकर्म शरीर जे, सम तृण मणि शत्रु मित्र रे॥ धारे अज्ञिग्रह नवनवा, द्रव्यादिक जे विचित्र रे ॥ १२ ॥ अथि० ॥ अढार सहस शीलांगना, धोरी सम रस ऊीले रे ॥ उपमा नहीं जस जगतमां, एम नित्य कर्मने पीले रे ॥ १३ ॥ अथि० ॥ ग्राम नगर पुर पाटणे, नव कल्पी करे विहार रे ॥ पृथिवीने जे पावन करे, टाले विषय विकार रे ॥ १४ ॥ अथि० ॥ मिथ्यात्व कचरामां खूंचीआ, तेहने देइ उपदेश रे ॥ रवि परे कादव शोषवी, आपे गुण सुविशेष रे ॥ १५ ॥ अथि० ॥ संलेषणा तप आदरी, अणसण करे मुनिराय रे ॥ पादपोपगमनादिके, ठंमे जे निज काय रे ॥१६॥ ॥ अ० ॥ धन्य धन्य ते जग नरवरा, धन्य धन्य तेहनी माय रे ॥ धन्य धन्य वंश दीपावीउं, जे एहवा रुषिराय रे ॥ १७ ॥ अ० ॥ हुं पण एणी विधिए करी, देह तणो करुं त्याग रे॥ मुऊ गुरु कल्पपादप समो, विजयसेन महाज्ञाग रे ॥ १० ॥ अ० ॥ सयल लोकमां सूरज समो, शाश्वत सुखनो दातार रे॥ लख्खो ज्ञवे पण दोहिलो, उतारे ज्ञवपार रे ॥१ए॥ ॥ अ० ॥ निरुपम चिंतामणि समो, धर्मनो सारथी जेह रे॥ आदरुं संजम शुज्ञ परे, ठांमी राज्य ने गेह रे ॥ २० ॥ अ० ॥ सुबुद्धि प्रमुख मंत्रीश्वरा, तेमावी एम ज्ञाखे रे ॥ निज अज्ञिप्राय जे उपनो, ते सघलो कही दाखे रे ॥ २१ ॥ अ० ॥ ते पण राय संगे करी, जाणे जिनवच सार रे ॥ हर्ष धरीने वोलीआ, धन तुमचो अवतार रे ॥ २२ ॥ अ० ॥ अहो अहो तुम्ह विचारने, महोटा पुरीस सरीसो रे ॥ पवनाहत जल चंदलो, जीवित चपल नरीसो रे ॥ २३ ॥ अ० ॥ तिणे करी कृत्य ते एह बे, सुखदायक एह जाणो रे॥ एहमां न प्रतिबंध कीजीये, जेह करे ते अजाणो रे ॥ २४ ॥ अ०॥ बलती आगथी नीकले, तेहने कहो कोण वारे रे ॥ कोपि कदापि वारे जिके, ते शत्रुपणुं धारे रे ॥ २५ ॥ अ० ॥ तिणे अमे बहु राजी थया, अममां बुद्धि घणेरी रे ॥ पण अम्हे मरण वारी शकुं, एहवो नहीं को ज्ञलेरी रे ॥ २६ ॥ अ०॥ हर्ष लह्यो सुणी नरपति, ज्ञाखी

तेरमी ढाल रे ॥ पद्मविजय कहे सांभलो, आगल वात रसाल रे ॥ १७॥ ॥ अ० ॥ इति सर्व गाथा ॥ ४०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय कहे मंत्री प्रत्ये, मुझने कोण कहे आम; हितुउं तुम टाली नहीं, माहरी राखी माम ॥ १ ॥ एम अतिशय आदर करी, देवरावे महा दाण; भक्ति करे जिनभुवनमां,जिनपडिमा जिन जाण ॥ २ ॥ अठाइ महोछव आदरे, लेहीने संतोष; पुत्र चंद्रसेन थापीउं, प्रजाने करवा पोष ॥ ३ ॥ विजयसेन जिहां विचरता, कालि जवुं तह कीक; प्रवर्ज्याभावे पडिवजी, गयो धर्मे ठीक ॥ ४ ॥ जोइ एकांतवर जायगा, पडिमा तेह पवन्न; सर्व राई सुसमाधिथी, धर्मी एहज धन्न ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ आसणरा जोगी ॥ ए देशी ॥

॥ हवे अग्निशर्मा ते तपसी, तप करतां पड्यो ते लपसी रे ॥ क्रोधानल बलीयो ॥ बहुलख पूरव तप परजलीयुं, पण सघलुं धूलिमां मलीयुं रे ॥ १ ॥ क्रो० ॥ सुरमणि दरिद्र घरे नवि छाजे, मातंग घरे गज किम राजे रे ॥ क्रो० ॥ मरुधरणी कल्पवृक्ष न होय, किम रांक घरे राज्य ते जोय रे ॥ २ ॥ क्रो० ॥ अंध घरे किम पद्मणी नारी, किहांथी भिल्ल घरे चित्र सारी रे ॥ क्रो० ॥ अग्निकुंडे किहां कमलनो वासो, नागचित्तमां उपशम खासो रे ॥ ३ ॥ क्रो० ॥ अज्ञानी घरे तप जे एहवो, केम छाजे चिंतामणि जेहवो रे ॥ क्रो० ॥ तपनुं अजीर्ण क्रोध ते भाख्यो, ज्ञाननुं अहंकार ते दाख्यो रे ॥ ४ ॥ क्रो० ॥ क्रिया अजीर्ण पारकी निंदा, आहारनुं वमन करंदा रे ॥ क्रो० ॥ जो मुझ तपफल होय तो सार, थाजो भव भव मारणहार रे ॥ ५ ॥ क्रो० ॥ करीय नियाणुं ने तपफल हार्यो, न रह्यो कुलपतिनो वार्यो रे ॥ क्रो० ॥ वेच्यो हाथी ने कीडी मागी, उलटी दुःखशूली जागी रे ॥ ६ ॥ क्रो० ॥ अणपडिकमतो तेह नियाण, जैन वासना विणु अन्नाण रे ॥ क्रो० ॥ काल करी विद्युतकुमार, आयु दोढ पल्योपम धार रे ॥ ७ ॥ क्रो० ॥ दीधो तिणे उपयोग शुं दीधुं, शुं होम हवन वली कीधुं रे ॥ क्रो० ॥ देव तणी ऋद्धि जिणथी पाम्यो, मुझ पुण्य पूर्वनो जाम्यो रे ॥ ८ ॥ क्रो० ॥ विभंगज्ञाने पूर्वभव दीठो, तव

गुणसेन लाग्यो अनिगो रे ॥ क्रो० ॥ गुणसेन नरपति उपरे कोप्यो, क्रोधने अज्ञाने लोप्यो रे ॥ ए ॥ क्रो० ॥ पमिमा रह्यो मुनिवर परे राय, आवी देखीने क्रोध नराय रे ॥ क्रो० ॥ नरक अग्नि समी वलती धार, धूलिवृष्टि करे ते वार रे ॥ १० ॥ क्रो० ॥ ते वेलुथी दाऊतो अंग, करी शमताशुं अति रंग रे ॥ शमतारस नरीयो ॥ चित्ते गुरु सत्त्वे संपत्तो, जिनप्रणीत धर्ममां रत्तो रे ॥ ११ ॥ शमता० ॥ शरीर मानस दुःख जिहां लहीये, संसारे सुलन दुःख कहीये रे ॥श०॥ दुक्कर धर्म तणी पमिवत्ति, जेहथी सुख लहीये ऊत्ती रे ॥ १२ ॥ श० ॥ नवसायर नमतां नवलक्खे, दुर्लन धर्मरयण जे रक्खे रे ॥ श० ॥ जास प्रनावे पालतां राज्य, नवि लहीये दुःख समाज रे ॥ १३ ॥ श० ॥ नव अनादिमां धर्म में लहीउं, अनाशरण दोषे करी रहीउं रे ॥ श०॥ एहज सफल थयुं सहु जगमां, विजयसेन आचार्यनी वगमां रे ॥ १४ ॥ श० ॥ पण मुऊ हृदय मांहि घणुं साले, दुःख दीधुं पूर्वकाले रे ॥ श० ॥ अग्निशर्माने वली अंते, करी तपमां कदर्थना नंते रे ॥ १५ ॥ श० ॥ आदस्यो मैत्रीनाव में तेहशुं, सहु जीवथी विशेषे एहशुं रे ॥ श० ॥ शुन परिणाम वधारो करतां, तिणे पापीए रजशुं नरता रे ॥ १६ ॥ श० ॥ आयु पूरे कीधो विनिपात, पण न थयो धर्म व्याघात रे ॥ श० ॥ चंद्रानन विमानमां जाय, सौधर्मे सागर एक आय रे ॥ १७ ॥ श० ॥ उत्पत्ति देव तणी इंहां कहीये, जेम सूत्रसिद्धांते लहीये रे ॥ श० ॥ ते विधि संक्षेपे सुणो सयणां, जिनवर नाषित जे वयणां रे ॥ १० ॥ श० ॥ चौदमी ढाले चातुर पुरुषे, सज्यो दृढ परिणामज हर्षे रे ॥ श० ॥ पद्मविजय कहे गुणसेन राजा, जाणो समरादित्य जीउ ताजा रे ॥ १ए ॥ श० ॥ सर्व गाथा ॥ ४२५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ संक्षेपे करी सुर तणी, वात कहुं विस्तार;
श्रुतसायरथी समऊजो, अधिको जे अधिकार ॥ १ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

पुण्य प्रशंसीये ॥ ए देशी ॥

इंद्रधनुष जिम विजली रे, जिम गगने घनवात ॥ तिम क्षण मांहे सुर तणो रे, शय्यामां उत्पातो रे ॥ १ ॥ पुण्य प्रशंसीये ॥ शय्याये तेह

उपजे रे, मूकी इह नवदेह ॥ दिव्य ते अंतरमुहूर्त्तमां रे, सुरनव शक्ति एह रे ॥ २ ॥ पु० ॥ गीत गाये देवांगना रे, कुसुमवृष्टी करे तेह ॥ वीणानाद विनोदथी रे, नाटक करती जेह रे॥ ३ ॥ पु० ॥ सिंहनाद सुरवर करे रे, हरखे देखी रे तास ॥ सुरनव दुर्लन पामीआ रे, जाणी होय उल्लास रे ॥ ४ ॥ पु० ॥ अनुनवतो पंच विषयने रे, हरख्यो उठे रे देव ॥ देवदूष्य जे वस्त्र छे रे, ते मूके ततखेव रे ॥ ५ ॥ पु० ॥ परिकर प्रेम पमाम्तो रे, दिव्यरूप धर जेह ॥ पूरो शारद शशी परे रे, सहु जय जय तें करेह रे ॥ ६ ॥ पु० ॥ देव देवांगना सहु नमे रे, जय जय शब्द करंत ॥ शुणतां सुर सुरी देखीने रे, एम चित्त मांहि धरंत रे ॥ ७ ॥ पु०॥ शुं होम्युं शुं दीधलुं रे, पाम्यो ए फल जास ॥ दीये उपयोग अवधि तणो रे, परनव जाणी ते खास रे ॥ ८ ॥ पु० ॥ पूछे सामानिक सुर प्रत्ये रे, कहो मुज करणी जेह ॥ जिनप्रतिमा दाढा तणी रे, पूजा करो कहे तेह रे ॥ ए ॥ पु० ॥ वांची पुस्तक रत्ननां रे, लेइ धर्म व्यवसाय ॥ सुरवरवृंदे परिवस्यो रे, सिद्धायतने जाय रे ॥ १० ॥ पु० ॥ पूजा करे जिनराजनी रे, फूलपगर वर धूप ॥ काव्य शक्रस्तवथी स्तवी रे, नक्ति दिखावे अनूप रे ॥ ११ ॥ पु० ॥ दाढ तणी पूजा करे रे, टाले अशातना त्यांहि ॥ सूर्यान सुरवरनी परे रे, रायपशेणी मांहि रे ॥ १२ ॥ पु० ॥ विजयदेव अधिकार छे रे, जीवानिगमे प्रसिद्ध ॥ जंबुद्वीपपन्नत्तिए रे, बहु सुरे पूजा कीध रे ॥ १३ ॥ पु० ॥ नंदीसर मेरु तणी रे, प्रतिमा नमीआ रे होय ॥ इहां नमी तेह अशाश्वती रे, चारण मुनिवर दोय रे ॥ १४ ॥ पु० ॥ नगवती वीशमा शतकमां रे, नाख्यो ए अधिकार ॥ तेम दशमे दाढा तणी रे, आशातन पण वार रे ॥ १५ ॥ पु० ॥ एम बहु सुर अधिकार छे रे, तिम मानवना रे सार ॥ तिणे जिनपूज माने नहीं रे, एले तस अवतार रे ॥ १६ ॥ पु० ॥ हवे जे जागी मनोहरु रे, देखावे सुर तास ॥ देवांगना हावनावने रे, करती करे विलास रे ॥ १७ ॥ पु०॥ पंच विषय सुख नोगवे रे, ते वर दिव्य विमान ॥ वली तीरथयात्रा करे रे, वंदे प्रनु विहरमान रे ॥ १८ ॥ पु० ॥ समकितदृष्टि सुर तणी रे, नाखी करणी एह ॥ चंद्रानन विमानमां रे, सुख नोगवे सुर तेह रे ॥ १ए ॥ पु० ॥ सुरसुंदरी साथे नला रे, पूरण सागर एक ॥ संपूरण सुख नोगवे

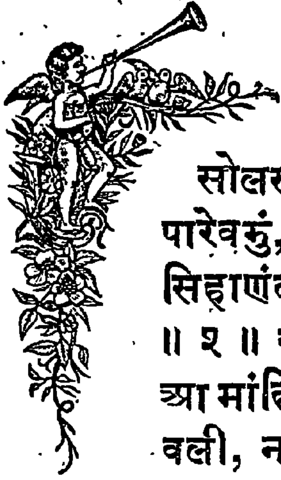
रे, धारे अतिहि विवेक रे ॥ २० ॥ पु० ॥ इणी परे प्रथमज नव कह्यो रे, सुरजव सहित रसाल ॥ श्रीसमरादित्य रासनी रे, पन्नरमी ए ढाल रे ॥ २१ ॥ पु० ॥ श्रीविजयसिंह सूरींदना रे, सत्यविजय पन्यास ॥ कपूर-विजय तस पाटवी रे, खिमाविजय तस खास रे ॥ २२ ॥ पु० ॥ तास शिष्य जिनविजयजी रे, उत्तमविजय तस शिष्य ॥ लींबमी नगर प्रारंजीउं रे, रास ए विसवावीस रे ॥ २३ ॥ पु० ॥ संवत् जाणी अढारसें रे, वली उंगणचालीश ॥ मांड्यो आशो वदि त्रीज दिने रे, पद्मविजय सुजगीश रे ॥ २४ ॥ पु० ॥ कार्त्तिक सुदि आठम दिने रे, संपूरण थयो खंड ॥ संघ अखंमपणे सुण्यो रे, पामी पुण्य प्रचंड रे ॥२५॥पु०॥ सर्व गाथा ॥४५१॥

॥ इति श्रीसंविज्ञपक्षीयपंमितप्रवरश्रीमडुत्तमविजयशिष्यपंडितपद्मवि-जयाविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे गुणसेनाग्निशर्माजिधानयोः प्रथमजवः समाप्तः ॥ १ ॥

॥ इति श्रीसमरादित्यचरित्रे प्रथमः खंमः संपूर्णः ॥ १ ॥



॥ अथ द्वितीयखंम प्रारंजः ॥



॥ दोहा ॥

सोलसमा जिन समरीये, शांतिनाथ सुखकार; परजव जिणे पारेवकुं, जगास्युं उपकार ॥ १ ॥ गुणसेन अग्निशर्मा गया, सिहाणंद हवे सार; पिता पुत्र प्रेमे करी, वर्णवशुं विस्तार ॥ २ ॥ सांजलजो श्रोता सवे, आलस अंग उतार; तेर काठीआ मांहि ते, प्रथम आलस परकार ॥ ३ ॥ विकथा वर्जो तेम वली, न करो विकथा जेण; वितथा ते विकथा वदे, स्वपर न सांजले तेण ॥ ४ ॥ तेम निद्रा न करो तुमे, निद्राथी श्रुतनाश; सूतानुं श्रुत पण सुवे, श्री सिद्धांते जास ॥ ५ ॥ तिणे निद्रा विकथा तजो, आलस न करो अंग; सांजलतां जे समजशे, ते लहे ज्ञानतरंग ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ ललनानी देशी ॥

जंबूद्वीप सोहामणो, तेहमां खेतर सात ॥ ललना ॥ जरत ने हिमवंत जाणीये, वली हरिवर्ष विख्यात ॥ ल० ॥ १ ॥ जं० ॥ महाविदेह रम्यग तथा, बठुं ऐरण्यवत धार ॥ ल० ॥ ऐरवत खेतर सातमुं, मेरु विदेह मजार ॥ ल० ॥ २ ॥ जं० ॥ महाविदेह दोय जेदथी, पूर्व पश्चिम जाण ॥ ल० ॥ पश्चिम महाविदेहमां, जयपुर नगर वखाण ॥ ल० ॥ ३ ॥ जं० ॥ सुरपुरी सम नगरी तिहां, आराम ने उद्यान ॥ ल० ॥ गुण जेहना न गणी शकुं, जूतलतिलक समान ॥ ल० ॥ ४ ॥ जं० ॥ रूपाली रमणी जिहां, महिला गुण असमान ॥ ल० ॥ परद्रव्य लेवा नर जिहां, संकोचे निज पाणि ॥ ॥ ल० ॥ ५ ॥ जं० ॥ परछिद्र जोवाने आंधला, परस्त्री उपर क्लीब ॥ ॥ ल० ॥ पर अपवादने बोलवा, जाणे मूक अतीव ॥ ल० ॥ जं० ॥६॥ पर उपगार परायणा, एहवा जन समवाय ॥ ल० ॥ पुरुषदत्त तिहां राजीउ, प्रजालोक सुखदाय ॥ ल० ॥ ७ ॥ जं० ॥ राणी श्रीकंता तेहने, जोगवे जोग रसाल ॥ ल० ॥ एणे अवसर ते देवता, चवीउ आउने काल ॥ ल० ॥ ८ ॥ ॥ जं० ॥ श्रीकंता उरे अवतर्यो, दीठुं स्वपन ते रात ॥ ल० ॥ सिंहकिशोर सोहामणो, वदने उदर आयात ॥ ल० ॥ ए ॥ जं० ॥ निर्धूम अग्नि-

ज्वाला समो, केशरनो आटोप ॥ ल० ॥ स्फटिक हंस सम उजलो, पिंगनेत्र विण कोप ॥ ल० ॥ १० ॥ जं० ॥ मध्यभाग जस पातलो, पहोलुं वक्षस्थल जास ॥ ल० ॥ दीर्घ कुंभलित पूंछडुं, कटितट कठिन विशाल ॥ ल० ॥ ११ ॥ जं० ॥ एम हरि स्वपने देखीने,जागी कहे भरतार ॥ल०॥ पुत्र पराक्रमी होयशे, संपद् होशे अपार ॥ ल०॥ १२ ॥ जं०॥ सांभली हर्ष ते पामती, सुखमां काढे काल ॥ ल० ॥ गर्भप्रभावे दोहला, उपजे पुण्य-विशाल ॥ ल० ॥ १३ ॥ जं० ॥ अभयदान सहु सत्त्वने, मुनिने उपष्टंभ दान ॥ ल० ॥ दीन अनाथ कृपण प्रत्ये, संपदा देउं अमान ॥ ल० ॥ १४ ॥ जं० ॥ जिनवर सघले देहरे, पूजा करुं बहु भक्ति ॥ ल० ॥ वात सुणावी कंतने, ते पूरे निज शक्ति ॥ ल० ॥ १५ ॥ जं० ॥ ते देखी प्रजा सवे, हर्ष घणो पामंत ॥ ल०॥ धर्मकार्य करतां थका, नव महीना वोलंत ॥ ल० ॥ १६ ॥ जं० ॥ शुभ लग्ने सुत जनमीउं, कर पद कोमल काय ॥ ल० ॥ सयल प्रजा मन सुख थयुं, मातने हर्ष न माय ॥ ल० ॥ १७ ॥ ॥ जं० ॥ शुभंकरा दासी हवे, नृपने वधाइ खाय ॥ ल० ॥ पुत्रजन्मथी हरखीउं, हवे दीये दान ते राय ॥ ल० ॥ १८ ॥ जं० ॥ बंधन मोचनादिक तिहां, उच्छव वली नरींद ॥ ल० ॥ नगर मार्ग शणगारीआ, उपज्यो ठे आणंद ॥ ल० ॥ १९ ॥ जं० ॥ शणगारी हाट शेरीउं, मंगल तूर वाजंत ॥ ल० ॥ कुंकुमजले पंथ सिंचीआ, कुसुम सर्वत्र धरंत ॥ ल० ॥२०॥ ॥ जं० ॥ एम महोछव करतां थका, मास थयो तव नाम ॥ ल० ॥ सिंहकुमार सोहामणो, थापे तस अभिराम ॥ ल० ॥ २१ ॥ जं० ॥ पुण्ये प्रणयी लोकने, नयण मने आणंद ॥ ल० ॥ देतो जोवन पामीउं, सकल कला गुणवृंद ॥ ल० ॥ २२ ॥ जं० ॥ एम समरादित्य रासमां, बीजे खंडे ढाल ॥ ल० ॥ पहेली पन्ने कही भली, सुणतां मंगलमाल ॥ ल० ॥ ॥ २३ ॥ जं० ॥ सर्व गाथा ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आव्यो वंसत ते अन्यदा, रति देखावी नारी; मदन शिलीमुख मूकतो, विंधे लोक तिवार ॥ १ ॥ कोयल कोलाहल करे, जय जय शब्दने काज; विरह अनल धूमज वमो, भ्रमर आम्र मानुं भ्राज ॥ २ ॥

मित्रे परिवर्यो मोदशुं, क्रीडा करण संकेत; क्रीडा सुंदर काननें, आव्यो अचरिज देत ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

कोइलो परवत धूंधलो रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसर दीठी तिहां रे लो, कन्या कुसुमावली नाम रे ॥ रंगीली ॥ वनदेवीशी विराजती रे लो, कामक्रीडानुं धाम रे ॥ छबीली ॥ १ ॥ पुण्य तणां फल पेखजो रे लो ॥ ए आंकणी ॥ कुसुमगर्जित वेणी नली रे लो, कोमल करकज पान रे ॥रं०॥ अधर प्रवाला रंग ज्युं रे लो, चंपक सम तनुवान रे ॥ छ० ॥ २ ॥ पु०॥ लक्ष्मीकंत नरपति तणी रे लो, पुत्री पावनअंग रे ॥ रं०॥ सखीजनशुं ते परिवरी रे लो, क्रीडा वसंतनी चंग रे ॥ छ० ॥ ३ ॥ पु० ॥ माउल पुत्री तेह छे रे लो, तेहशुं उपनो राग रे ॥ रं० ॥ नव अनंत अभ्यासथी रे लो, पंचबाण थयो लाग रे ॥ छ० ॥ ४ ॥ पु० ॥ तेणीए दीठो तेहने रे लो, सा मन चिंते एम रे ॥ रं० ॥ मकरध्वज इहां आवीउ रे लो, क्रीडा करण के केम रे ॥ छ० ॥ ५ ॥ पु० ॥ चिंतवी पग उसारती रे लो, चेटी प्रियंकरा ताम रे ॥रं०॥ उसरो नहीं नृपपुत्रथी रे लो, ए सिंहकुमर छे नाम रे ॥ छ० ॥ ६ ॥ पु०॥ तुम्ह फइकुखे उपनो रे लो, आव्या प्रथमथी आप रे ॥ रं० ॥ उसरतां रुडापण नहीं रे लो, करशे एहवी छाप रे ॥ छ०॥ ७ ॥ पु० ॥ तिणे एहने तुमे करो रे लो, कन्या उचित उपचार रे ॥ रं० ॥ सा कहे तुं कहे तिम करुं रे लो, तव ते कहे सुविचार रे ॥ छ० ॥ ८ ॥ पु० ॥ आसन देइ आदर करो रे लो, फूल आभरण तंबोल रे ॥ रं० ॥ कुमरी कहे न करी शकुं रे लो, रंग लागो मुझ चोल रे ॥ छ० ॥ ए ॥ पु० ॥ तेहवे कुमर ते आवीउ रे लो, आप्युं आसन सार रे ॥ रं० ॥ रति विरहित पंचबाणने रे लो, स्वागत छे रे कुमार रे ॥ छ० ॥ १० ॥ पु० ॥ एम पूछे प्रियंकरा रे लो, तव ते बोले कुमार रे ॥ रं० ॥ रति विरहित दिन एटला रे लो, पण नहीं संप्रति वार रे ॥ छ० ॥ ११ ॥ पु० ॥ एम कही बेठो ते आसने रे लो, फूल आभरण वली पान रे ॥ रं० ॥ दीधुं ते लीधुं तिणे रे लो, मनमां धरी बहुमान रे ॥ छ० ॥ १२ ॥ पु० ॥ इण अवसर आव्यो तिहां रे लो, कन्यानो रखवाल रे ॥ रं० ॥ करतां दीठां विनोदने रे लो,

मन चिंते तिणे काल रे ॥ ठ० ॥ १३ ॥ पु० ॥ रतिने कंदर्प मल्यो खरो रे लो; जो सहेशे किरतार रे ॥ रं० ॥ आवी तिहां आदर करे लो, कुमरने अति सत्कार रे ॥ ठ० ॥ १४ ॥ पु० ॥ वछ जननी तुऊ एम कहे रे लो, खेद थशे तुऊ देह रे ॥ रं० ॥ बहु वेला थइ आवीये रे लो, मुक्तावली कहे एह रे ॥ ठ० ॥ १५ ॥ पु० ॥ उठी एम नाखी हवे रे लो, मातनी आण प्रमाण रे ॥ रं० ॥ चिंतवती कुमर प्रत्ये रे लो, मूके तेह उजाण रे ॥ ठ० ॥ १६ ॥ पु० ॥ दीर्घ निशासा नाखती रे लो, पहोती निज आवास रे ॥ रं० ॥ जइ पल्यंके वेठी तिहां रे लो, संजारे गुण तास रे ॥ ठ० ॥ १७ ॥ पु० ॥ सखीउने विसर्जती रे लो, मदन नेदाणी तेइ रे ॥ रं० ॥ चित्रकर्म न करे हवे रे लो, शुक सारिकाशुं न नेह रे ॥ ठ० ॥ १८ ॥ पु० ॥ अंगराग न करे किमे रे लो, आहारनो नहीं अभिलाष रे ॥ रं० ॥ नवन सयण कोइ नवि गमे रे लो, नवि कलहंसशुं नाख रे ॥ ठ० ॥ १९ ॥ पु० ॥ वाव्यमां मज्जन नवि करे रे लो, नवि सारे कांय वीण रे ॥ रं० ॥ कंडुकक्रीडा परिहरी रे लो, नूषण न धरे खीण रे ॥ ठ० ॥ ॥ २० ॥ पु० ॥ यूथभ्रष्ट जिम हरणली रे लो, क्षणमां नयण मिलाय रे ॥ रं० ॥ क्षण निशासा नाखती रे लो, क्षणमां चेष्टा जाय रे ॥ ठ० ॥ ॥ २१ ॥ पु० ॥ इण अवसर धावी पुत्रिका रे लो, निज जननी लही आणी रे ॥ रं० ॥ मदनलेखा आवी तिहां रे लो, तालवृंत लेइ पाणी रे ॥ ठ० ॥ ॥ २२ ॥ पु० ॥ वीडां कपूरशुं पाननां रे लो, परिश्रम क्रीडानो जाण रे ॥ रं० ॥ नेउर पाये रणझणे रे लो, हर्ष ते धरती अमान रे ॥ ठ० ॥ ॥ २३ ॥ पु० ॥ चिंतातुर दीठी तिणे रे लो, शय्यागत शून्यभाव रे ॥ रं० ॥ वगर बोलती देखीने रे लो, पूछे तव सद्भाव रे ॥ ठ० ॥ २४ ॥ पु० ॥ केम उद्वेग करी रही रे लो, शुं न विनीत परिवार रे ॥ रं० ॥ के देव गुरु नवी पूजीआ रे लो, के गुरुजन अपकार रे ॥ ठ० ॥ २५ ॥ पु० ॥ के अर्थी न संतोषीआ रे लो, के सखीउनो न राग रे ॥ रं० ॥ के समीहित नवी नीपन्युं रे लो, कहो तुमे कहेवा लाग रे ॥ ठ० ॥ २६ ॥ पु० ॥ अलक समारी हाथशुं रे लो, बोली कुसुमावली वाण रे ॥ रं० ॥ कुसुम वीणंतां उपनो रे लो, खेद घणो दुःख खाण रे ॥ ठ० ॥ २७ ॥ पु० ॥ तिणे आलस अरति घणी रे लो, अन्य न कारण कोय रे ॥ रं० ॥ मदन-

लेखा तव बोलती रे लो, सांजलजो सहु कोय रे ॥ ढ० ॥ १८ ॥ पु० ॥ बीजे खंडे एम कही रे लो,बीजी ढाल रसाल रे ॥ रं०॥ पद्म कहे श्रोता सुणो रे लो, सुणतां मंगलमाल रे ॥ ढ० ॥ १९ ॥ पु० ॥ सर्व गाथा ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मदनलेखा कहे माननी, ल्यो कर मुऊ तंबोल; विश्रामण करुं तुऊ वपु, तब बोले ते बोल ॥ १ ॥ इण अवसर मुऊ अवरशुं, काम नहीं सुण कांय; कदली घर जइए करो, सचा तिहां शुन्न गाय ॥ २ ॥ कुसुमावली घर केलीने, सूती कुमर संन्नारी; कपूरबीडुं कर दीउं, मदनलेखा सुकुमारी ॥ ३ ॥ कथा कहे कौतुक करी, विजणे विंजती वाय; शून्य हुंकारो सांजली, चिंतवे ते चित्त लाय ॥ ४ ॥ अढे विकार चित्त एहने, तेणे पूढुं हुं वात; एम चिंती पूढ्युं इणे, सुणी बहेनी सुखशात ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वाडी फूली अति जली मनन्नमरा रे ॥ ए देशी ॥

॥ मदनलेखा कहे एणी परे ॥ सुण बेहेनी रे ॥ वसंत क्रीडा गयां आज ॥ तुमे सुणो बेहेनी रे ॥ अचरिज कांइ दीतुं तिहां ॥ सु० ॥ तव बोली धरी लाज ॥ तु० ॥ १ ॥ क्रीडा सुंदर उद्यानमां ॥ सु० ॥ रति विरहित पंचबाण ॥ तु० ॥ रोहिणी विरहित चंद्रमा ॥ सु० ॥ मानुं दीठो तिणे ठाण ॥ तु० ॥ २ ॥ शचि विरहित जिम हरि होये ॥ सु० ॥ मंदिरा विनु कामपाल ॥ तु० ॥ सोवन वरण शरीर छे ॥ सु० ॥ पाय अंगुली सुकमाल ॥ तु० ॥ ३ ॥ गूढशिरा पिंडी हती ॥ सु० ॥ मणहर मोरशी जंघ ॥ तु० ॥ गूढजानु सुंदर अति ॥ सु० ॥ पण पर नारी डुलंघ ॥ तु० ॥ ४ ॥ संगत उरुयुग शोन्नतां ॥ सु० ॥ विपुल कटितट न्नाग ॥ तु० ॥ मध्यम न्नाग अति पातलो ॥ सु० ॥ हृदय विशाल विन्नाग ॥ तु० ॥ ५ ॥ वर्तुल लांबी बांहडी ॥ सु० ॥ पहोंचा ते अतिपुष्ट ॥ तु० ॥ शुन्न रेखाए शोन्नता ॥ सु० ॥ जानु प्राप्त कर लष्ट ॥ तु० ॥ ६ ॥ कांइक राता नख न्नला ॥ सु० ॥ अधर प्रवाली रंग ॥ तु० ॥ सम श्रेणी दंत ते उज्जला ॥ सु० ॥ नासा वंश उत्तंग ॥ तु० ॥ ७ ॥ दीर्घ विशाल मांहि रक्तता ॥ सु० ॥ अष्टमीचंद ज्युं न्नाल ॥ तु० ॥ श्रवण सुसंगत जेहना ॥ सु० ॥ पहेरी मुक्ताफल माल ॥ तु० ॥ ८ ॥ कृष्ण कुटिल कुंतल न्नला ॥ सु० ॥ चंदन च-

र्युं अंग ॥ तु० ॥ निर्मल वस्त्र सूक्ष्म घणां ॥ सु० ॥ चूमारयण उत्तमांग ॥ तु० ॥ ए ॥ शुं कहीये घणुं तेहनुं ॥ सु० ॥ जाणीये रूपनुं रूप ॥तु०॥ लावण्यनुं लावण्य मानुं ॥ सु० ॥ तरुणनुं तरुण अनूप ॥ तु० ॥ १० ॥ मनोरथनो मनोरथ जाणुं ॥ सु० ॥ नृपसुत सिंहकुमार ॥ तु० ॥ मदनलेखा सुणी चिंतवे ॥ सु० ॥ राग ए जुगते ठार ॥ तु० ॥ ११ ॥ अथवा कमलाकर विना ॥ सु०॥ लक्ष्मी न करे वास ॥ तु०॥ कुसुमायुधने रति विना ॥ सु० ॥ नहीं कोइ योग्य ते खास ॥ तु० ॥ १२ ॥ सुबुद्धि रायशुं मंत्रतो ॥ सु० ॥ सांजल्यो आज विचार ॥ तु० ॥ कुसुमावली कहे ते कह्हो ॥ सु० ॥ मदनलेखा कहे सार ॥ तु० ॥ १३ ॥ देवी प्रेषणने हुं गइ ॥ सु० ॥ तिहां सांजली ए वात ॥ तु० ॥ सुबुद्धि कहे रायने ॥ सु० ॥ पुरुषदत्त नृप ख्यात ॥ तु० ॥ १४ ॥ काजे सिंहकुमारने ॥ सु० ॥ कुसुमावली दीठे अम्ह ॥ तु० ॥ बहु बहु आग्रहथी कह्युं ॥ सु० ॥ मुजने ते कह्युं तुम्ह ॥ तु० ॥ १५ ॥ वली एम मुजने जाखीयुं ॥ सु० ॥ ए वरवधू संजोग ॥ तु० ॥ अन्य अन्यने योग्य बे ॥ सु० ॥ एह प्रशंसे लोग ॥ तु० ॥ १६ ॥ अलिक कोप करी लाजती ॥ सु० ॥ कुसुमावली कहे ताम ॥ तु० ॥ हर्षे धरी मनमां कहे ॥ सु० ॥ शुं असंबंध कहे आम ॥तु०॥ ॥ १७ ॥ मदनलेखा कहे जूठ शुं ॥ सु० ॥ हंसी हंसने लाग ॥ तु० ॥ जुत वात बे नृप कहे ॥ सु० ॥ सुण मंत्री महाजाग ॥ तु० ॥ १८ ॥ इण अवसरे आवी तिहां ॥ सु० ॥ कुसुमावलीने पास ॥ तु० ॥ पल्लविया दासी जली ॥ सु० ॥ उद्यानपाली ते खास ॥ तु० ॥ १९ ॥ राये कह्युं तुम मातने ॥ सु० ॥ मात कहावे तुज ॥ तु० ॥ जवन उद्यान शोजा करो ॥ सु० ॥ ए आणा बे मुज ॥ तु० ॥ २० ॥ राजकुमर सिंह नाम जे ॥सु०॥ आवशे रमवा आज ॥ तु० ॥ कुसुमावली तेह सांजली ॥ सु० ॥ कहे धन्य दिन थयो आज ॥ तु० ॥ २१ ॥ बीजे खंमे एम कही ॥ सु० ॥ त्रीजी ढाल रसाल ॥ तु० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो ॥ सु० ॥ आगल प्रीति विशाल ॥ तु० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ८८ ॥

॥ दोहा ॥

सांजली जाख्युं सत्य ते, उठी सज्युं उद्यान; तेड्यो कुमर निमंत्रीने, माए मेल्युं तान ॥ १ ॥ जोजनविधि कर्यो जलो, जवन उद्यान गयो

भाय; द्राक्षामंरूप देखीउं, सारिकाए सुख सुणाय ॥ २ ॥ रक्त अशोके रीझीउं, भवनदीर्घिका भाली; नलिनीवनखंरू नीपन्युं, लवे कोकिल अंबझाली ॥ ३ ॥ भ्रमर भमे भणकारशुं, माधवीलता मंरूाण; नागवल्लीना निवहनें, पूगी आलिंगे पाणि ॥४॥ कुसुम गुंछ परिमल करे, मोह्युं देखी मन्न; महाविलता मांहे रह्यो, राजे पुरुष रतन्न ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ राय कहे राणी प्रत्ये, भरी दीर्घ निशासा ॥ ए देशी ॥

॥ कुसुमावलीने मदनलेखा, कहे एणी परे वात ॥ पूर्व संबंध थयो जीके, हवे परगट थात ॥ १ ॥ सांभलो बेहेनी माहरी, एक वात सनूरी ॥ ए आंकणी ॥ फूल तंबोल ते आपीये, पूछो वात शरीर ॥ आप कला देखावीये, राग काननीर ॥ २ ॥ सां० ॥ कुसुमावली कहे जिम गमे, तेम तुमे करो आपे ॥ मयणलेखा चित्रपट्टिका, तव लावी आपे ॥ ३ ॥ ॥ सां० ॥ सामान सर्व देइ कहे, एक हंसी आलेखो ॥ हंसी विरहिणी हंसने, जोवा उत्सुक पेखो ॥ ४ ॥ सां० ॥ कुसुमावलीए चीतरी, ते हंसली तेहवी ॥ मदनलेखाए डुपदी, लखी उपरे एहवी ॥ ५ ॥ सां० ॥ हंसलीनी अवस्था तणो, तेहमां भाव समाये ॥ मदनलेखा हवे लेइने, गइ कुमर पाये ॥ ६ ॥ सां० ॥ कुसुमावलीनी प्रिय सखी, जाणी आदर कीध ॥ प्रणमी जे लावी हती, ते कुमरने दीध ॥ ७ ॥ सां० ॥ भाखे एणी परे कुमरने, तुम्हे चित्तना रागी ॥ राजकुमरीए जे मोकल्युं, निज चित्त सोभागी ॥ ८ ॥ सां० ॥ प्रियंगुमंजरी ए वली, वली नागरवेली ॥ कंकोल फल तंबोल ए, मोकलीआं केलि ॥ ए ॥ सां० ॥ इष्टने दीजे ए सहु, तिणे मोकल्यां तुझ ॥ हंसी सुख लहो तुम्हथी, एह भाख्युं गुझ ॥ १० ॥ ॥ सां० ॥ काने प्रियंगुमंजरी, मुखे लीध तंबोल ॥ राजहंसी जोइ हरखीउं, वांच्यो डुपदीबोल ॥ ११ ॥ सां० ॥ मदनविकारथी बोलतो, वाणी मधुर खलाती ॥ चित्र कौशल घणुं रूअडुं, वात जाणीये ज्ञाती ॥ १२ ॥ ॥ सां० ॥ पण डुपदीनुं काम शुं, पुनरुक्त जणावे ॥ मदनलेखा कहे में लखी, देखी डुपदी भावे ॥ १३ ॥ सां० ॥ कहे कुंअर रूडुं कर्युं, सखीभाव जणाव्यो ॥ नागरवेल ते कातरे, हंस रूप सोहाव्यो ॥ १४ ॥सां०॥ हंसली सरिखो हंस ते, वली श्लोक ते लखीउं ॥ आप्यो तेहने हाथमां,

वली एणी परे नखीउं ॥ १५ ॥ ॥ सां० ॥ कहेजो कुसुमावली नणी, रूकुं कीधुं विनाण ॥ फरी फरी एहवुं कहावजो, निज सखीशुं जाण ॥ १६ ॥ सां० ॥ मुक्तावली वली दानमां,आप्युं कुमरे तास ॥ ए संतोष खुशी तणुं, लक्षण सुविलास ॥ १७ ॥ सां० ॥ मदनलेखा हवे नीकली, करीने परणाम ॥ कुसुमावली पासे गइ, कही वात ते ताम ॥ १८ ॥ ॥सां०॥ सांजली रोमांचित थइ, हवे नित्य नित्य एम ॥ मदनवशे नव नव करे, बहु चेष्टा प्रेम ॥ १ए ॥ सां०॥ ए सवि वात चरित्रमां, ठे बहु विस्तार थोमा दिन गया जेटले, तव थाय प्रकार ॥२० ॥ सां० ॥ प्रियंकरा दासी हवे, कुसुमावली पासे ॥ तुम्ह ताते सिंहकुमरने, तुम्ह आप्यां एम नासे ॥ २१ ॥ सां० ॥ बहु प्रमोद लह्या अनुक्रमे, परणाव्यां राये ॥ तेह विस्तार कह्यो नहीं, बहु विस्तार थाये ॥ २२ ॥ सां० ॥ तेह चरित्रथी जाणजो, हवे फेरा फरतां ॥ दान आप्युं जे कुमरने, सहु नजरे करतां ॥ २३ ॥ सां० ॥ पहेले फेरे वधूपिता,सोवन लाख चार ॥ वगर घड्युं दीधुं वली, बीजे घड्युं सार ॥ २४ ॥ सां० ॥ कुंमल कंदोरो वली, बाजुबंध ने हार ॥ सार सार नूषण जीके, देवे मनोहार ॥ २५ ॥ सां० ॥ त्रीजे थाली वाटका, नाजन बहुनांति ॥ चोथे महर्घ्य चीवर दीये, मनमां घणी खांति ॥ २६ ॥ सां० ॥ पुरुषदत्त पण राजीये, निज संपद सारु ॥ बहुमूलां बहूने दीआं, नूषण घणुं चारु ॥ २७ ॥ सां० ॥ बहु उत्सव महोत्सव करी, एम परण्यां बेहु ॥ चरित्रकार जे वर्णवे, ते कहीये केहुं ॥ २८ ॥ सां० ॥ एम बीजे खंमे कही, चोथी वर ढाल ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी, होय मंगलमाल ॥ २ए ॥ सां० ॥ सर्व गाथा ॥ १२२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंचविषय सुख पुण्यथी, नोगवे स्त्री नरतार; वधते राग विशेषथी, दंपती वली दातार ॥१॥ लाख अनेक वरष लगे, क्रीमा करतां काल; सुखमां नवि जाणे सही, तेह गयो तिण ताल ॥ २ ॥ अश्व खेलाववा अन्यदा, सिंहकुमर गया सार; नागदेव उद्यानमां, परवस्यो निज परिवार ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ माली केरे बागमां, दोय नारिंग पके रे लो ॥ अहो दोय० ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसरे दीठा तिहां, एक वर अणगार रे लो ॥ अहो एक० ॥

धर्मघोष नामे जला, बहु मुनि परिवार रे लो ॥ अहो बहु० ॥ १ ॥ प्रासुक जायगे उतर्या, रूप गुण असमान रे लो ॥ अहो रूप० ॥ यौवन वयमां वरतता, शत्रु मित्र समान रे लो ॥ अहो शत्रु० ॥ २ ॥ खंती मद्दव अद्यव मुत्ती, तव संजम गाणे रे लो ॥ अहो तव० ॥ सत्य शौच अकिंचन वली, ब्रह्मचर्य निधाने रे लो ॥ अहो ब्रह्म० ॥ ३ ॥ द्वादशांगीधर वाचना, सूत्र अर्थनी देता रे लो ॥ अहो सूत्र० ॥ निर्जरा अर्थी उद्यमी, निज शिष्यने कहेता रे लो ॥ अहो निज० ॥ ४ ॥ आचारिय पदना धणी, देखीने विचारे रे लो ॥ अहो देखी० ॥ सकल संग त्यागी मुनि, ए जवजल तारे रे लो ॥ अहो ए० ॥ ५ ॥ धन्य ए एहनी मावडी, तज्यो सारो संसार रे लो ॥ अहो त० ॥ बहुमाने करी चिंतवे, करे पर उपगार रे लो ॥ अहो क० ॥ ६ ॥ एहने संगे जइ हवे, पूछुं एह वात रे लो ॥ अहो पू० ॥ मनोजव लक्षित समय अछे, किम जोग आयात रे लो ॥ अहो किम० ॥ ७ ॥ दूरथी उतरे अश्वथी, जइ मुनिवर पासे रे लो ॥ अहो जइ० ॥ वंदे मुनिवर विनयशुं, धरी हर्ष उल्लासे रे लो ॥ अहो धरी० ॥ ८ ॥ अजिनंद्यो धर्मलाजथी, वंद्या शेष मुणींद रे लो ॥ अहो वं० ॥ बेठो गुरुचरणे जइ, लहे परम आणंद रे लो ॥ अहो ल० ॥ ए ॥ पूछे धर्मघोष मुनि, गुरुजी मुझ जासो रे लो ॥ अहो गु० ॥ संपदा कुल घर स्वामी जी, निर्वेद अज्यासो रे लो ॥ अहो नि०॥ १० ॥ एइ अकाले आदर्युं, संयम शुं विचारी रे लो ॥ अहो सं० ॥ तव गुरु बोले सांजलो, श्रावक एण वारी रे लो ॥ अहो श्रा० ॥ ११ ॥ काल संजमनो एह छे, नथी तास अकाल रे लो ॥ अहो न० ॥ मृत्युपराजवे सर्वदा, जुर्ज तेह संजाली रे लो ॥ अहो जु० ॥ १२ ॥ सुर असुरा सहुने हरे, वज्र मनोरथ शैल रे लो ॥ अहो व० ॥ करे विजोग वाल्हा तणो, एम करे जगकेलि रे लो ॥ अहो ए० ॥ १३ ॥ वली श्रावक तुं सांजले, रूडो जाणी धर्म रे लो ॥ अहो रू० ॥ चरमवये ते आदरे, लहेवा शुज शर्म रे लो ॥ अहो ल० ॥ १४ ॥ रूडुं ते आगेथी कीजीये, तेहमां शी हाणी रे लो ॥ अहो ते० ॥ कुंवर कहे खरुं ए कह्युं, एह वात विन्नाण रे लो ॥ अहो ए० ॥ १५ ॥ तोपण वगर निमित्त ए, न चारित्र लेवाय रे लो ॥ अहो न० ॥ गुरु कहे एह संसार ते, निर्वेदनो गाय रे लो ॥ अहो

नि० ॥ १६ ॥ शुं संसारमां सार छे, ते चित्त विचारो रे लो ॥ अहो ते०॥ वलीअ विशेषे सांजलो, माहरो अधिकार रे लो ॥ अहो मा० ॥ १७ ॥ अवधिज्ञानीए जाखीयुं, निज चरित्र रसाल रे लो ॥ अहो नि० ॥ ते मुझ हेतु वैराग्यनुं, सांजली जूपाल रे लो ॥ अहो सां० ॥ १८ ॥ कुंवर कहे प्रजु दाखीए, अवधिमुनि चरित्त रे लो ॥ अहो अ० ॥ गुरु कहे सांजल नरपति, कहुं तेह पवित्त रे लो ॥ अहो क० ॥ १९ ॥ बीजे खंडे पांचमी, कही उत्तम ढाल रे लो ॥ अहो क० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो, घणी वात रसाल रे ॥ अहो घ० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ १४५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणहिज विजयमां रायपुर, हुं तिहांनो रहेनार; जवस्वरूप में जाणीउं, न लहुं रति निर्धार ॥ १ ॥ विरक्त रहुं वैरागीउं,आव्या तव अणगार; साधु बहु शिरोमणि, विचरता करे विहार ॥ २ ॥ अमरगुप्त आचार्यने, उपनुं अवधिज्ञान; थोडा दिन तेहने थया, धरतां धर्मनुं ध्यान ॥ ३ ॥ वात लोकमां विस्तरी, अहो तपस्वी एह; आश्रव कस्या अलगा इणे, ज्ञान तणो ते गेह ॥ ४ ॥ धर्मदेशना लद्धीआ, जाणे जूपति जाम; नगरलोकशुं नरपति, आवे वंदन आम ॥ ५ ॥

॥ ढाल छठी ॥

गेव सागररी पाल उजी दोय नागरी ॥ म्हारा लाल ॥ ए देशी ॥

॥ अरिमर्दन नरपतिने धर्मलाज दीउं ॥ मारा लाल ॥ नरपति नगरलोक सहु चित्त आणंदीउं ॥ मा० ॥ गुरुवच सुणवानो हर्ष घणो मनमां धरे ॥ मा० ॥ पूछे सुखविहार मुनिने शुज परे ॥ मा० ॥ १ ॥ फरी पूछे नृप जाण नाण तुम अति घणुं ॥ मा० ॥ त्रण काल ग्राहक उहिनाण ते तुम तणुं ॥ मा० ॥ करी उपकार कहो गुरु समकित कब लह्यां ॥ मा० ॥ शाश्वत सुख तरुबीज परिणाम तेहनां कह्यां ॥ मा० ॥ २ ॥ देशविरति पाम्या इणे जव के परजवे ॥ मा० ॥ साधुपणुं पण कब लह्या किम लह्या जव नवे ॥ मा० ॥ चंपावास पुरी एह विजयमां मुनि कहे ॥ मा० ॥ सुधणुं नाम गाथापति अतीतकाले रहे ॥ मा० ॥ ३ ॥ धणसिरी नामे घरणी तेहनी हुं सुता ॥ मा० ॥ तेह नयर निवासी नंदसथवा हुंता ॥ मा० ॥ तेहनो सुत रुद्रदेव आपी मुझ तेहने ॥ मा० ॥ यौवनवय अनु-

रूप विषयसुख गेहने ॥ मा० ॥ ४ ॥ एणे अवसर तिहां विहार अनु-क्रमे आवीया ॥ मा० ॥ तप संयमथी आतम जली परे जावीआ ॥ मा० रूप थकी मानुं शासनदेवता देखीए ॥ मा० ॥ श्रुतरले करी शोजित गुरुणी पेखीए ॥ मा० ॥ ५ ॥ बालचंद्रा नामे चंद्रातप शीतल घणुं ॥ मा० ॥ दीठां शमसुख पुंज मानुं तेहनुं तणु ॥ मा० ॥ सासरेथी पीयर जातां मुऊ एम थयुं ॥ मा० ॥ ते देखी मुऊ मोदथी तनु पुलकित जयुं ॥ मा० ॥ ६ ॥ लोयण थयां विकस्वर पाप नासी गयां ॥ मा० ॥ उल्लस्युं अंग धर्म चित्त उल्लस्युं धन्य थयां ॥ मा० ॥ करकज जोमी विनय थकी पाये पमी ॥ मा० ॥ दीधो तेणीए धर्मलाज मानुं सफली घमी ॥ मा० ॥ ७ ॥ जक्तिप्रीतिथी तेहनुं आलय पूढीयुं ॥ मा० ॥ ते साहुणीए ब-ताव्यो तिहां चित्त मूर्गीयुं ॥ मा० ॥ उचित विधे हुं एहनी सेवा नित्य करुं ॥ मा० ॥ जाणुं जिम तिम हुं जवसायर निस्तरुं ॥ मा० ॥ ८ ॥ ते जगवतीए धर्म कह्यो जिन जाखीउं ॥ मा० ॥ शिवसुख फल वृक्ष चिंता-मणि परे दाखीउं ॥ मा० ॥ कर्मनो क्षय उपशम थयो समकित पामीउं ॥ मा० ॥ जाव्यो जिनधर्म जव चारक चित्त वामीउं ॥ मा० ॥ ए ॥ हवे मुऊ पति कर्मदोषथी द्वेष करे घणो ॥ मा० ॥ कहे तुं धर्म ए गंमी विषय विघ्न कारणो ॥ मा० ॥ में कह्युं विषयसुखे सर्युं दारुण फल कह्यां ॥ मा० ॥ ते कहे दृष्ट मूकी अदृष्ट कोणे लह्यां ॥ मा० ॥ १० ॥ में कह्युं पशु साधारण विषयमां शुं लह्युं ॥ मा० ॥ प्रत्यक्ष सुख फल धर्म अ-दृष्ट ते किम कह्युं ॥ मा० ॥ एम कह्याथी अधिक द्वेष मुऊशुं करे ॥ मा० ॥ जोग तज्यो मुऊ साथ विवाह बीजो मन धरे ॥ मा० ॥ ११ ॥ नाग-देवधूआ नागसिरी कन्या जली ॥ मा० ॥ पण तस ताते न दीधी मुऊ पिया जय कली ॥ मा० ॥ रुद्रदेव मन चिंतवे जीवतां एहने ॥ मा० ॥ नवि दीए बालिका कोइ करुं शुं तेहने ॥ मा० ॥ १२ ॥ मायाचरित्र करी मारुं एहने हवे ॥ मा० ॥ एम चिंती घट मांहि आशीविष संठवे ॥ मा० ॥ घर एक खूणे ठोमी जणे रयणी समे ॥ मा० ॥ ए नव घटमांथी कुसुममाल लावो तुमे ॥ मा० ॥ १३ ॥ हुं अणजाणती तेह लेवा गइ जेटले ॥ मा० ॥ हाथ घाल्यो तिहां नाग डस्यो मुऊ तेटले ॥ मा० ॥ संभ्रमथी ते नांखी दीठे आवीने एम कहे ॥ मा० ॥ करड्यो नाग ते

सांजली रुद्रदेव लवे ॥ मा० ॥ १४ ॥ नियमीथी आकुलव्याकुल थइ कोलाहल करे ॥ मा० ॥ मुजने विषना वेग अति दुःखमां धरे ॥ मा० ॥ परवश थइने हुं तो तिहां धरणी ढली ॥ मा० ॥ परम अवाच्य अवस्था पामी चेतना चली ॥ मा० ॥ १५ ॥ समकितना परजावथी काल करी तिहां ॥ मा० ॥ सोहमे लीलावतंस विमान अछे जिहां ॥ मा० ॥ पल्योपमस्थिति देवपणे हुं उपनो ॥ मा० ॥ अप्सरा परिवृत दिव्य जोग मुज निपनो ॥ मा० ॥ १६ ॥ रुद्रदेव परण्यो हवे नागदत्तधूआ ॥ मा० ॥ जोगवी विषयने काल करी नरके हुआ ॥ मा० ॥ रत्नप्रजाए खरूषमा नरकावासमां ॥ मा० ॥ पल्योपमने आयुखे दुःख आवासमां ॥ मा० ॥ १७ ॥ देवलोकमांथी चवी हुं थयो गजवरु ॥ मा० ॥ एहज विजयमां सूसमार रण सुंदरु ॥ मा० ॥ सूसमार तिहां परवत मांहि क्रीमा करुं ॥ मा० ॥ नरकमांथी रुद्रदेव आव्यो अनंतरु ॥ मा० ॥ १८ ॥ तेहज नगवरमां थयो सूडो सोहामणो ॥ मा० ॥ बालअवस्था गये थयो जनमन कामणो ॥ मा० ॥ नलवनमां विचरंतो गजवर तिण समे ॥ मा० ॥ बहु करिणीशुं आवीउं ते शुक जिहां रमे ॥ मा० ॥ १९ ॥ मुजने रमतो देखीने द्वेष ते आवीउं ॥ मा० ॥ पूर्वजव अज्यासथी वैरशुं जावीउं ॥ मा० ॥ चिंतवे ए करी एहवुं सुख किम जोगवे ॥ मा० ॥ वंचावुं ए सुख थकी तो दुःख जोगवे ॥ मा० ॥ २० ॥ खोले उपाय घणा पण तेहने नवि जमे ॥ मा० ॥ लीलारति विद्याधर एहवे आवी चमे ॥ मा० ॥ मृगांकसेन विद्याधरनी जगिनी हरी ॥ मा० ॥ चंद्रलेखा इण नामे तेहनो जय धरी ॥ मा० ॥ २१ ॥ गिरि निकुंजमां रहीश हुं एम शुकने कहे ॥ मा० ॥ एक विद्याधर आवशे ते जिम नवि लहे ॥ मा० ॥ तिम करजे मुजने नवि दाखजे तुं खरो ॥ मा० ॥ कहेजे आवीने मुज तेह गये परो ॥ मा० ॥ २२ ॥ हुं पण तुज उपगार करीश इण अवसरे ॥ मा० ॥ तें जलुं काम कर्युं मुज जाणीश एणी परे ॥ मा० ॥ छठी ढाल ए बीजा खंम मांहि कही ॥ मा० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो आगल गहगही ॥ मा० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ १७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम कही विद्याधर गयो, महानिकुंज मजार; उतरीने अध अव-

नीए, रह्यो ते सुख आधार ॥ १ ॥ नारिंगपादपे नीमरमां, शुक रहे छे सुसमाधि; विद्याधर हवे आवीउं, मृगांकसेन असमाधि ॥ २ ॥ जोयुं चिहुं दिश जेटले, नवि दीठुं तस नाम; गयो एण अवसरे गयवरु, आव्यो हथणीशुं आम ॥ ३ ॥ मुफ देखी चिंत्युं मने, अवसर छे ए आज; समीहित माहरुं साधवा, करुं मायाए काज ॥ ४ ॥ सूरीशुं समजण सवे, करी आव्यो मुफ कान; सूडीने कहे सांजले, ज्ञानीए जाख्युं ज्ञान ॥५॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ मोरा आतम राम कुण दिन शेत्रुंजे जाशुं ॥ ए देशी ॥

॥ सूसमार ए पर्वतमां छे, सर्व कामित इण नामे ॥ झंपापात करे तिहां जइने, जे वांछे ते पामे ॥ मोरी सांजल वात ॥ अवसर एह छे रूडो ॥१॥ ॥ ए आंकणी ॥ तव पूछे सूडी सुणो स्वामी, तेह बतावो ठाम ॥ शुक कहे शीतल ए तरुवरथी, जइये पासे वाम ॥ २ ॥ मो० ॥ तिणे कारण सुणी आपण थइए, विद्याधर मन धारी ॥ तिर्यंचना जवथी हवे सरीयुं, चालो तमे शुज नारी ॥ ३ ॥ मो० ॥ जइने झंपापात ते करीये, सूडीए वात स्वीकारी ॥ एम करी झंपापात ते कीधो, गजवरे पण चित्त धारी ॥ ४ ॥ मो० ॥ जइने कह्युं लीलारति खगने, आवी गयो तुफ वैरी ॥ तव लीलारति नीकळ्यो तिहांथी, चंद्रलेखा लेइ खयरी ॥ ५ ॥ मो० ॥ आकाशे जातो ते दीठो, मनमां धार्युं साचुं ॥ जुउ सूडो सूडी लह्यां नरजव, ए तीरथ नहीं काचुं ॥६॥ मो० ॥ ए तिर्यंचनां विद्याधर थयां, जोतां वार न लागी ॥ ते कारण ए तीरथ साथे, म्हारी पण लय लागी ॥ ७ ॥ मो० ॥ देव तणी प्रणिधि करी मनमां, अमे पण इहां पडीये ॥ ए तिर्यंचनो जव छांडीने, देव तणी गति चढीये ॥ ८ ॥ मो० ॥ एम चिंतीने तिहां अमे पडीयां, शुकयुग तिहां चाल्युं ॥ कपटे करीने अमे छेतरीआं, पण नवि नयणे जाळ्युं ॥ ए ॥ मो० ॥ चूरण थयां अमे अंग उपांगे, पाम्यां बहु तिहां क्लेश ॥ पण अकामनिर्जराए खपीआं, कर्म घणां सुविशेष ॥ १० ॥ मो० ॥ कुसुमशेखर नामे व्यंतर पूरे, पल्योपम जणुं देशे ॥ एहवो व्यंतर सुर हाथी थयो, अध्यवसाय विशेषे ॥ ११ ॥ मो० ॥ उदार जोग जोगवुं तिहां हुं पण, सूडो पण तिहां मरीने ॥ लोहितमुख नामे रत्नप्रजाए, उपनो नीयरडी करीने ॥ १२ ॥ मो० ॥ पल्यो-

पम देशे जणी स्थिति, हवे हुं व्यंतरदेव ॥ एहवी देहे अन्य विजयमां, चक्रवालपुर देव ॥ १३ ॥ मो० ॥ अप्रतिहत चक्र सार्थवाहने, सुमंगला नामे नार ॥ तेहनी कुखे पुत्र हुं हुउं, विनयी गुणजंमार ॥ १४ ॥ मो० ॥ चक्रदेव मुज अनिधा ठवीउं, पाम्यो बालकनाव ॥ उदवर्त्यो नारक शुक एहवे, आयुक्तये तिहां ताव ॥ १५ ॥ मो० ॥ तेह नयरमां एक पुरोहित, सोमशर्मा तस नारी ॥ नंदिवर्द्धना तेहनी कुखे, उपनो सुत अवतारी ॥ १६ ॥ मो० ॥ कालक्रमे यज्ञदेव ठव्युं अनिधा, कुंवरनाव ते पाम्यो ॥ म्हारे तेहने प्रीति बनी तव, हुउं अति विश्रामो ॥ १७ ॥ मो० ॥ पण घणी प्रीति म्हारे सद्भावे, एह तो कपटे राखे ॥ पूर्वना अज्यास कर्मना, दोष ए नजरे दाखे ॥ १८ ॥ मो० ॥ सरल घणो हुं पण ए वांको, म्हारी संपदा देखी ॥ मत्सर धरे वली वंचे बलथी, छिद्र तणो वली पेखी ॥ १९ ॥ मो० ॥ यतः ॥ " खलः सत्क्रियमाणोऽपि, ददाति कलहं सतां ॥ दुग्धधौतोऽपि किं याति, वायसः कलहंसतां ॥ १ ॥ " न जड्युं छिद्र विचारे तिवारे, एम ए ठली नवि शकीये ॥ तेणे इहां एह उपाय ते कीजे, जिम इणे इहां नव टकीये ॥ २० ॥ मो० ॥ चंदन सारथवाहना घरथी, लावुं द्रव्य हुं मूषी ॥ मूकवा आपुं एहना घरमां, राखशे ए पण हुंशी ॥ २१ ॥ मो० ॥ नूपतिने संजलावीश जइने, राजा दंम ते देशे ॥ मारशे कूटशे ने वली एहनुं, घर पण लूंटी लेशे ॥ २२ ॥ मो० ॥ जेम चिंतव्युं तेम कामज कीधुं, लावी द्रव्य मुज पासे ॥ मित्र सुणो ए द्रव्य मुज राखो, गोपवजो सुज आसे ॥ २३ ॥ मो० ॥ कुवेलाए लाव्यो तेणे शंक्यो, द्रव्य न राख्युं जाम ॥ तोपण दाक्षिण्यता घणी आणी, द्रव्य गोपव्युं ठाम ॥ २४ ॥ मो० ॥ सज्जन तेहज सज्जन होवे, खल ते दुर्जन थाय ॥ काक ते काला सघले देखो, शुक नीला सुखदाय ॥ २५ ॥ मो० बीजे खंडे सातमी ढाले, पद्मविजय एह दाख्यो ॥ कस्तूरी ने हिंग पटंतर, नविजने चित्तमां राख्यो ॥ २६ ॥ मो० ॥ सर्व गाथा ॥ २०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नयरमां जनरव नीकल्यो, शेठ चंदन सथवाह; घर मूष्युं तेहनुं घणुं, हरीयुं द्रव्य अथाह ॥ १ ॥ सांजली मुज चित्त शंकीयुं, गयो यज्ञदेव गेह; पूछ्युं में परपंचीने, ए किम एणी परे एह ॥ २ ॥ यज्ञदेव

बोल्यो जटो, श्यो मुझमां संदेह; तातजये घर ताहरे, आणी मूक्युं एह ॥ ३ ॥ परनुं द्रव्य आपुं नहीं, शंका गइ तव साल; नृपने वात सुणावतो, चंदन चतुर वाचाल ॥ ४ ॥ मुझ घर कोइ मूषी गयो, जणे तदा नूपाल; शुं शुं गयुं ते जाखीये, कहे शेठ ततकाल ॥ ५ ॥ द्रव्य लिखाव्युं दफतरे, हवे हुकम करे हाल; ढंडेरो वजडावीये, सघले करो संजाल ॥६॥

॥ ढाल आठमी ॥

हांडानी देशी ॥

॥ डंढेरो फेरवे ताम रे, सांजलजो लोका ॥ मली थोके थोका, दंड रोके रोका, दे बे नृप अन्यायीने रे ॥ १ ॥ चंदन सत्रवाह गेहथी, गयो द्रव्य घणेरो ॥ कोइ लह्यो तस केरो, जेह होय जलेरो, नेरो रे आवी कहो मुझ प्रत्ये रे ॥ २ ॥ आव्यो होय व्यापारमां जो द्रव्यनो देश ॥ अथवा ते अशेष, कहो तेह नरेश, क्लेश लहो रे रखे बापडा रे ॥ ३ ॥ चंडशासन ए राय बे, जो नहीं कोइ जाखे ॥ दंड तेहने दाखे, नहीं राखे सराखे, धन लेइ शरीरने दंडशे रे ॥ ४ ॥ ढंडेरो फेरी रह्या, पबे दिन गया पंच ॥ मूकी खल खंच, जइ कहे परपंच, यज्ञदेव नरपति जणी रे ॥ ५ ॥ रे नरपति तुम्ह जाखवुं, ते जुगतुं नांहि ॥ मित्रनुं बिद्र आंहि, रायदरबार मांहि, केम नवि कहुं तुम्ह हित जणी रे ॥ ६ ॥ आ लोक ने परलोकनो, विरुद्ध आचार ॥ सेवे निरधार, दुःखनो दातार, निज आतमनो पण जीको रे ॥ ७ ॥ तेह मित्रने शुं करुं, केम राय उवेखुं ॥ अन्याय हुं देखुं, नजरे करी पेखुं, तिणे तुमने ए जणावीये रे ॥ ८ ॥ राय कहे कहो वात रे, जे तुम्ह मन जाइ ॥ खरी वात जे कांइ, मज्जबपणे आंइ, न्यायीने अन्यायी न जाखजो रे ॥ ए ॥ यज्ञदेव कहे सांजलो, में सुणीयुं काने ॥ तुमने कहुं साने, चक्रदेव जो माने, बानेशुं एहनुं घर जोइये रे ॥ १० ॥ पासेना परिजन पास रे, में सांजल्युं एम ॥ चक्रदेवे प्रेम, चंदनघर नेम, क्षेमे रे गोपव्युं निज घरे रे ॥ ११ ॥ हवे मन माने तिम करो, तुमे महोटा राय ॥ माफी पण थाय, माहारुं शुं जाय, जाइ बे माहारो ए मोटिको रे ॥ १२ ॥ नृप कहे नवि संजवाय रे, एहनी एम वात ॥ उत्तम कुल जात, विरुद्ध अवदात, थात न एहथी एहवुं रे ॥ १३ ॥ यज्ञदेव कहे सांजलो, तुम्हे कह्युं ते साचुं ॥

पण शुं हुं राचुं, लोने होये काचुं, जाचुं होय रे मन जेहनुं रे ॥ १४ ॥ एहमां कुलनो शो वांक रे, सुरनी होय फूल ॥ कीटक प्रतिकूल, ते मेले धूल, बगण मांहि रे वींछी उपजे रे ॥ १५ ॥ एहनुं घर जोवरावीये, कोइ करी प्रकार ॥ सुणी वात विचार, वात युगति धार, चंद्रशासन हवे राजीउं रे ॥ १६ ॥ कारणिआ तेमी कहे, हवे एणी परे राजा ॥ महाजन सहु साजा, जे होय अतिब्राजा, ऊजा रे न्याय करे जीके रे ॥ १७ ॥ चंदन सबवाह गेहनो, भंडारी लीजे ॥ सहु मिलीअ गमीजे, चक्रदेव घरे कीजे, नाठी जे लखमी तेहनी खोजना रे ॥ १८ ॥ कारणिआ तव चिंतवे, श्यो रायनो बोल ॥ न करे कांय तोल, ए राजे अमोल, चोल मजीठरंग धर्मनो रे ॥ १ए ॥ अथवा आपणे कांय रे, आणाना करता ॥ एम चित्तमां धरता, कांय आंसुं ऊरतां, करता रे भेला सहुने तिहां गया रे ॥२०॥ पोहोर दिवस रह्यो पाछलो, तव सहुए आव्या ॥ मुऊ मन सोहाव्या, बेठा सहु भाया, माया रे मुऊ उपरे घणी रे ॥ २१ ॥ बीजे खंडे एह रे, कहे आठमी ढाल ॥ गुरु उत्तम बाल, घणी वात रसाल, माला मंगलनी पामो सहु जना रे ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ २२ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ महाजन कारणिआ मली, मुऊने पूछे एम; सार्थवाह सुत सांभलो, पूछुं नियमे प्रेम ॥ १ ॥ कोइ व्यवहार करतां थका, किमहिक लाव्यो कोय; तो अमने भाखो तुम्हे, हमणां वात जे होय ॥ २ ॥ सहुने कह्युं निःशंकथी, नवि कांइ जाणुं नेम; तव कारणिआ तेहने, जलपे सांभलो जेम ॥ ३ ॥ कोप न करजो को मने, आणा नरपति एम; तुम घर जोवुं ततपरे, कहो तिणे करीये केम ॥ ४ ॥ हुं बोल्यो हमणां नहीं, कोपनो अवसर कांय; प्रजापरीक्षा परगडो, नरपति होवे न्याय ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ लालननी देशी ॥

॥ नगरना वृद्ध पुरुष लेइ साथे, रायपुरुषे जोयुं निज हाथे ॥ लालन ॥ जोयुं निज हाथे ॥ द्रव्य दीठुं तिहां बहु प्रकार, मूक्युं प्रयत्न करीने अपार ॥ ला० ॥ क० ॥ १ ॥ भांड चंदन नामांकित सार, हिरण्य

केरां मुख्य उदार ॥ ला० ॥ मु० ॥ बाहेर लावी सहुने देखाड्युं, चंदन-नंडारी पुर गाड्युं ॥ ला० ॥ री० ॥ २ ॥ जोइने दुःखीआनी परे बोल्यो, संजवे बे एहवुं चित्त डोल्यो ॥ ला० ॥ ए० ॥ पण संशय मुज चित्तमां आवे, तव कारणिआ कहे इण दावे ॥ला०॥ क०॥३॥ पत्र वांचो जे लख्यो बे आप, तेहमां बे के नहींअ आलाप ॥ ला० ॥ न० ॥ दीतुं रे लखीयुं पत्रमां जेह, सहुए थरहरूया देखीने तेह ॥ ला० ॥ दे० ॥४॥ कारणिआ कहे सांजल नाइ, ए ऋद्धि तुज घर किहांथी आइ ॥ ला० ॥ कि० ॥ में मन चिंतव्युं मित्रनुं नाम, किम नाखुं सहुमां इण गाम ॥ ला० ॥ स० ॥ ५ ॥ चोर कदाचित् एहने नाखे, तो मुज सज्जनता किम दाखे ॥ ला० ॥ ता० ॥ पर प्राण केम हणुं निज उगारी, हुं बोल्यो तिहां एम विचारी ॥ ला० ॥ ए० ॥ ६ ॥ ए सवि नाजन माहरा घरनां, तव कहे नाम ए केम बे परनां ॥ ला० ॥ के० ॥ में कह्युं खबर नथी मुज कांय, फेरफार थयो होशे ते प्राय ॥ ला० ॥ हो० ॥ ७ ॥ कारणिआ कहे शी संख्या बे, हिरण्यनी पण कहो जेह लख्या बे ॥ ला० ॥ जे० ॥ में कह्युं नवि मुज सांजरे तेह, पोतानी मेले जुउ ते एह ॥ ला० ॥ जु० ॥ ८ ॥ कारणिए वंचाव्यो पत्त, दिनार सहस ते दश तिहां उत्त ॥ ला० ॥ द० ॥ पत्र ने वस्तु बे समोवके मेलीआं, नागर कारणिआ मन चलीआं ॥ ला० ॥ आ० ॥ ए ॥ विस्मय पाम्या ए केम होय, चक्रदेवने केम एम जोय ॥ ला० ॥ के० ॥ पश्चिम सूर्य जो कदि उगे, परद्रव्य हरण न करे कोइ जुगे ॥ ला० ॥ क० ॥ १० ॥ फरी पूबे कहो परगट वात, श्यो ए वात तणो अवदात ॥ ला० ॥ त० ॥ फिर फिर पूबुं ए रायनी आण, में कह्युं तेहज उत्तरदाण ॥ ला० ॥ उ० ॥ ११ ॥ धिक् हो दैवने एम वि-चारी, फरी पूबे कांइ कहो निरधारी ॥ ला० ॥ क० ॥ तोहि न तेहने में कांइ नाख्युं, कोप्यो कोटवाल एम विमास्युं ॥ ला० ॥ ए० ॥ १२ ॥ लेइ चालो हवे नृपने पासे, एम करी चाल्या राय सकाशे ॥ ला० ॥ रा० ॥ वात सुणावी रायने तेह, राय कह्युं मुज सांजली एह ॥ला०॥सां०॥ ॥ १३ ॥ उजय लोकनी वात ते जाणो, एहवुं काम न थाये तुम गाणो ॥ ला० ॥ था० ॥ एहवुं असाधु असंजव किम बे, कहो परमारथ नि-पनो जिम बे ॥ ला० ॥ नि० ॥ १४ ॥ आंखमां आंसुं ने कांय न बोल्यो,

पूर्वे परे चिंतवी नवि मोल्यो ॥ ला० ॥ चिं० ॥ मुज उपरे शंका नृप आवी, पण मुज तातनो आदर लावी ॥ ला० ॥ आ० ॥ १५ ॥ मुज नवि कांइ हीणुं जाख्युं, कदर्थना न करी बहु राख्युं ॥ ला० ॥ क० ॥ देशनिकाल कस्यो मुज राय, नयरथी काढ्यो मुज तिण ठाय ॥ ला० ॥ मु० ॥ १६ ॥ नगर देवता वननी पासे, मूक्यो मुजने रायने दासे ॥ ला० ॥ रा० ॥ रायपुरुष गया निज निज ठाम, तत्र मुज चिंता उपनी आम ॥ ला० ॥ उ० ॥ १७ ॥ एवमा पराजव जाजन मुजने, जीववुं न घटे जीवमा तुजने ॥ ला० ॥ जी० ॥ वमनुं वृक्ष ते देवल पासे, मरवा चाल्यो गले देइ फांसे ॥ ला० ॥ ग० ॥ १७ ॥ इण अवसर जूवे वनदेवी, अवधिज्ञाने करी वात ते एहवी ॥ ला० ॥ वा० ॥ उपनी मुज उपरे अनुकंपा, चिंतवे चित्तमां थइ अजंपा ॥ ला० ॥ थ० ॥ १ए ॥ एह अघटतुं मोहोटुं थावे, रायनी मातना दिलमां आवे ॥ ला० ॥ दि० ॥ रायने वात जथारथ जाखी, जेह अनीति ते सघली दाखी ॥ ला० ॥ स० ॥२०॥ नगरने बाहिर अमुक उद्यान, चक्रदेव मरवाने ध्यान ॥ ला० ॥ म० ॥ दीए गले फांसो ते जइने निवारो, देइ सन्मानने नयरे पेसारो ॥ ला० ॥ न० ॥ २१ ॥ क्रोध नेह दोय रस अनुजवतो, राय कहे दुःखथी टलवलतो ॥ ला० ॥ दुः० ॥ रे यज्ञदेव अहो दुराचार, आणा देइ गयो नयरने बार ॥ ला० ॥ न० ॥ २२ ॥ छोडे साथे पहोतो राय, दूरथी देखी आव्यो पलाय ॥ ला० ॥ आ० ॥ गलफांसो देखी करे सोर, मां साहस कस्य तुं इण ठोर ॥ ला० ॥ तुं० ॥ २३ ॥ आवी दूर कस्यो मुज पास, हाथ पकमी बेसास्यो खास ॥ ला० ॥ बे० ॥ जूपति बहु आदर करे तास, देखी पामे चित्त उल्लास ॥ ला० ॥ चि० ॥ २४ ॥ नवमी ढाल ए बीजे खंम, जस कीरति सज्जननी अखंम ॥ ला० ॥ ज० ॥ पद्मविजय कहे चढतो रंग, सज्जन होय जिम कनकतरंग ॥ ला० ॥ क० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ २५ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूब्युं में तुज परपरे, तुजने ए सवि वात; जूपति कहे नवि जाखीयुं, तें एहनो अवदात ॥ १ ॥ सार्थवाहसुत सत्य तुं, जाण्युं सघलुं काज; देवीए मातना दिलमां, आवी जाख्युं आज ॥ २ ॥ यज्ञदेव जूठो

कह्यो, साचो तुं तुज साख; म्हें चिंत्युं मातुं थयुं, नृपनी सांजली जाख ॥ ३ ॥ क्षितिपति कहे तुम्ह स्वामीये, खमवुं करी मन खांत; परमारथ न पिछाणीउं, धमधम्यो क्रोधे ध्वांत ॥ ४ ॥ करी कदर्थना आकरी, नाख्युं कष्ट अयाण; म्हें सांजली चिंत्युं मने, अहो अनरथ अचान ॥५॥ व्यसन यज्ञदेव आवीयुं, एह थयो अनरब्ब; कहे नृपने काढो खरो, यज्ञदेव निज हब्ब ॥ ६ ॥ प्रजा तणा तुमे पालकु, किम तुम दोष कहाय; मूलशुद्धि काढी अमे, ए सज्जन दुःखदाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ मोहन मोकलोने मोशाळुं, तथा शीतल जिन सहजानंदी ॥ ए देशी ॥

॥ चक्रदेव कहे सुणो राय, एहथी अकार्य न थाय, यज्ञदेव मित्र अम्ह जाय, तेणे बूरी न कराय ॥ १ ॥ सज्जन एम जाणीए जली रीति ॥ धुर छेह लगे धरे प्रीति ॥ स० ॥ ए आंकणी ॥ न होये होय तो थोमो काल, घणो रहे तो निष्फल जाल, एम सज्जन क्रोध संजाल, दुरजननो नेह निहाल ॥ २ ॥ स० ॥ राय कहे अम जाख्युं माय, जगवती ते अलिक न थाय, कही वात ते सघली राय, यज्ञदेव जे पूर्वे कहाय ॥ ३ ॥ स० ॥ में चिंतव्युं एह शी वात, केम यज्ञदेव मुज भ्रात, करे एहवुं काम विख्यात, नवि संजव एहवो थात ॥ ४ ॥ स० ॥ एहवे रायपुरुषे आणयो, यज्ञदेव बांधीने ताणयो, राये हुकम कस्यो तिणे ठाणो, जीज छेदन करो सब जाणयो ॥ ५ ॥ स० ॥ वली आंख्यो दोय उपामो, एहना घरनो ल्यो जामो, यष्टि मुष्टि प्रहारे ते तामो, एहने देशथी वली निरधामो ॥ ६ ॥ स० ॥ तव हुं नृप पाये पमीयो, रायनी उलगमां अमीउं, ए दोष ते मुज आफमीउं, एम हुं नृपशुं घणुं जिडीउं ॥ ७ ॥ स० ॥ यज्ञदेवने मूको स्वामी, बीजी वस्तुनो हुं नहीं कामी, यज्ञदेवे जो आपदा पामी, तो मुजमां आवशे खामी ॥ ८ ॥ स० ॥ राय कहे नहीं जुगती वात, एह दुष्ट छे साते धात, ए तो करे विश्वासनो घात, एहने राखे शुं थात ॥ ए ॥ स० ॥ कांय माग्य तुं बीजुं आपुं, शिरदार करी तुज थापुं, पण यज्ञदेवने नापुं, बीजां ताहरां दुःख कापुं ॥ १० ॥ स० ॥ में कह्युं जो मुज बहुमान, द्यो एहने जीवितदान, नृप कहे शुं करुं इण ठाण, एहनुं खमीउं सहु तोफान ॥ ११ ॥ स० ॥ में कह्युं कीधो सुपसाय,

पसीउं नरपतिने पाय,यज्ञदेव मूकाव्यो जाय, नरपति आदर बहु दाय ॥१२॥ ॥ स० ॥ बहु ऋद्धि मुज बोलाव्यो, सज्जन चित्तमां घणुं जाव्यो, राहनो जल राहे आव्यो, एम लोकवचने सोहाव्यो ॥ १३ ॥ स० ॥ यज्ञदेव जघन्यता जूउं, ए जीवतो जाणीए मूउं, चक्रदेव केणी परे हुउं, गंभीर ज्युं ऊंडो कूउं ॥१४॥ ॥ स० ॥ सवैउं ॥ " बहिरे गीत नहु सुएयो, जमर चंपे नहुं दीठो ॥ सोल कला संपूर्ण चंद, अंधले न दीठो ॥ करहीणे पांगुले, कठिन को बाण न ताण्यो ॥ जुवतीकंठ विलग्ग, मुग्धरस जेद न जाएयो ॥ कुणही पूत कपूत रस, गीतनाद चित्त नवि धस्यो ॥ कवि गंग कहे रे ठकुरो, तो गुणवंता हिगुण गस्यो ॥ १ ॥" ढाल पूर्वली ॥ मुजने उपनो निर्वेद, एहवा मित्रने एम खेद, कर्म परिणतिना बहु जेद, संसार असारता वेद ॥ १५ ॥ स० ॥ परचित्तनो पार न लहीए, जो मित्त ते डोही कहीए, कोण देखी चित्त गहगहीए, एहने त्यागे सुखमां रहीए ॥ १६ ॥ स० ॥ यतः ॥ श्लोक ॥ " वरं न राज्यं न कुराजराज्यं, वरं न मित्रं न कुमित्रमित्रं ॥ वरं न दारा न कुदारदारा, वरं न शिष्यो न कुशिष्यशिष्यः ॥ १ ॥" ढाल पूर्वनी ॥ इण अवसर मुनिवर आया, अग्निभूति गणधरराया, संजम जोगे अतिहि सोहाया, उद्यान मांहि ते ठाया ॥ १७ ॥ स० ॥ में बाहिर गया थका दीठा, मुज मनमां लाग्या मीठा, म्हारां दूर गयां सव रीठां, प्रणम्या धरी राग उकीठा ॥ १८ ॥ स० ॥ धर्मलाज दीधो गुरुराय, बेठो गुरु केरे पाय, पूछ्यो में धर्म उपाय, जेहथी सवि दुःखडां जाय ॥ १९ ॥ स० ॥ कह्यो खंति प्रमुख मुनि धर्म, सांजली उपन्युं घणुं शर्म, दीधां मुज विवर ते कर्म, तजीउं मिथ्यामत जर्म ॥ २० ॥ स० ॥ थयो देशविरति परिणाम, वधते संवेग उद्दाम, वैराग्य तणो थयो धाम, करे आतममां आराम ॥ २१ ॥ स० ॥ बीजे खंडे दशमी ढाल, जाखी अतिहि सुरसाल, कहे उत्तमविजयनो बाल, सुणतां होय मंगलमाल ॥ २२ ॥ स० ॥ सर्व गाथा ॥ २०० ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुण्यउदय मुज पाधरो, कर्म ते गल्यां कठोर; वीर्यउल्लास घणो वध्यो, चंद ज्युं देखी चकोर ॥ १ ॥ बंधस्थिति त्रूटी बहु, व्रतपरिणाम विशेष; जगवंतने जाख्युं तदा, अनुग्रह कीध अशेष ॥ २ ॥ विरम्यो चित्त

नववासथी, करो आण करुं तेह; श्रुतज्ञानी ते सांजली, एहवुं बोल्या एह ॥ ३ ॥ साधुपणुं तुम्हे संग्रहो, योग्य जीव तुं जाणी; पूर्व पुरुषे पखी-वज्युं, संजमसुखनी खाणी ॥ ४ ॥ गुरुवयणां सुणी ज्ञानथी, चारित्र चोखे चित्त; आदरीउं अति आदरे, पाल्युं तेह पवित्त ॥ ५ ॥ आराध्युं आयु लगे, कालमासे करी काल; देह तजी देवलोकमां, वाध्यो पुण्य विशाल ॥ ६ ॥ नव सागर निर्जर थयो, पंचम कल्प ते पाम; बीजो बीजी नरगमां, यज्ञदेव गयो जाम ॥ ७ ॥ ताम नरकपाले तिहां, दीधुं महा तस दुःख; चक्रदेव लहे चतुर नर, सुरजवमां महा सुख ॥ ८ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ जीहो जाणुं अवधि प्रयुंजीने ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो एहज महाविदेहमां, लाला विजयगंधिलावइ सार ॥ जीहो रयणपुरे एक शेठीउं, लाला नाम तेहनुं रयणसार ॥ १ ॥ जविकजन, म करो माया लगार ॥ जीहो जास विपाक अपार ॥ जवि० ॥ ए आंकणी ॥ जीहो श्रीमती तेहनी जार्या, लाला उदरे उपनो हुं तास ॥ जीहो देवलोकमांथी चवी, लाला मानवजव लह्यो खास ॥ २ ॥ जवि० ॥ जीहो यज्ञदेव हवे नरगथी, लाला थयो आहेडी रे श्वान ॥ जीहो पाप करी तिहांहीज गयो, लाला त्रण सागर आयु मान ॥ ३ ॥ जवि० ॥ जीहो तिहांथी नीकलीने वली, लाला जमीउं तिरिगति मांहि ॥ जीहो अनुक्रमे रतनपुरे हवे, लाला कहुं जिहां उपजे त्यांहि ॥ ४ ॥ ज० ॥ जीहो तातनी घरदासी जीका, लाला नर्मदा तस अजिधान ॥ जीहो तेहना पुत्रपणे थयो, लाला कर्मनी गति असमान ॥ ५ ॥ ज० ॥ जीहो जन्म लह्या अमे अवसरे, लाला नाम ठव्यां अम तात ॥ जीहो चंद्र-सार महारुं वली, लाला अणहग एहनुं विख्यात ॥ ६ ॥ ज० ॥ जीहो जोबन पाम्या अनुक्रमे, लाला परणाव्यो वली ताय ॥ जीहो विषय आसक्त अम्हे रहुं, लाला काल गयो न जणाय ॥ ७ ॥ ज० ॥ जीहो पूर्व जव अज्यासथी, लाला मुऊ उपरे परिणाम ॥ जीहो वंचनानो न गयो किमे, लाला एहनो नीयडी काम ॥ ८ ॥ ज० ॥ जीहो एण अवसर तिहां आ-वीआ, लाला विजयवर्द्धन सूरिराय ॥ जीहो मासकल्प विहारी गुरु, लाला प्रणम्या में तस पाय ॥ ए ॥ ज० ॥ जीहो श्रावकधर्म अंगीकर्यो,

लाला एक दिन हुं गयो गाम ॥ जीहो अमचो राय गयो वली, लाला मूलकगिरिने काम ॥ १० ॥ ज० ॥ जीहो इण अवसर तिहां आवीउं, लाला सबर सेनापति नाम ॥ जीहो विंध्यकेतु आवी करी, लाला हत-विहत कर्युं गाम ॥ ११ ॥ ज० ॥ जीहो केइक लोकने लइ गयो, लाला अमे सांजल्युं तेणी वार ॥ जीहो आवी जोयुं नयरमां, लाला दीठुं मसाण आगार ॥ १२ ॥ ज० ॥ जीहो घर माणस खोलावीआं, लाला न जमी माहारी रे नारी ॥ जीहो चंद्रकांता मुज अपहरी, लाला उपनुं डुःख अपार ॥ १३ ॥ ज० ॥ जीहो चिंता थइ मुज चित्तमां, लाला अहो नवि दीठ वियोग ॥ जीहो किम जीवित धरती हशे, लाला तपस्वीनी अ-बलालोग ॥ १४ ॥ ज० ॥ जीहो देवशर्मा विप्र एणी समे, लाला गरढे जाख्युं एम ॥ जीहो कल्पना म कर ए वातमां, लाला सांजली कहुं तुज प्रेम ॥ १५ ॥ ज० ॥ जीहो पूर्वे श्रीथल नगरने, लाला एणी परे सबरे रे कीध ॥ जीहो शील अखंमित आपीउं, लाला पुनरपि लोक प्रसिद्ध ॥ १६ ॥ ज० ॥ जीहो डव्य लेइ लेइ आपीआं, लाला सहु मा-णस तिणे ताम ॥ जीहो सांजली केइक दिन रह्यो, लाला पहोतो सबर निज ठाम ॥ १७ ॥ ज० ॥ जीहो अणहग साथे लेइने, लाला डव्य लीउं सार सार ॥ जीहो स्निग्ध स्निग्ध जातुं घणुं, लाला पंथे करवा आ-हार ॥ १८ ॥ ज० ॥ जीहो चंद्रकांता मूकाववा, लाला चाल्यो धरी अ-ति राग ॥ जीहो इण अवसरे मुज नारी ते, लाला नासणनो धरे लाग ॥ १९ ॥ ज० ॥ जीहो मन चिंते मुज शीलनी, लाला करशे खंमणा एह ॥ जीहो मुज विजोग कायर घणी, लाला डुःख तणी मानुं रेह ॥ २० ॥ ज० ॥ जीहो साथ ते सबर पल्ली तणो, लाला शून्यगामने आसन्न ॥ जीहो पासे जीरण कूपने, लाला उतरी उच्चासन्न ॥ २१ ॥ ज० ॥ जीहो पाछली रात परोमीए, लाला मंको दीध प्रयाण ॥ जीहो कामव्यग्र सहु चालवा, लाला उठ्या सघला ठाण ॥ २२ ॥ ज० ॥ जीहो जीवित आशा नवि धरी, लाला पमी ते जीरण कूप ॥ जीहो जलमें पमी तिणे उ-गरी, लाला दीठो तिहां प्रतिकूप ॥ २३ ॥ ज० ॥ जीहो बेठी ते प्रति-कूपमां, लाला कंष्टे धरती प्राण ॥ जीहो इण अवसरे आव्या अमे, लाला चालता तिणहिज ठाण ॥ २४ ॥ ज० ॥ जीहो अणहग पूर्वे अभ्यासथी,

लाला द्रव्य देखी परिणाम ॥ जीहो मुज उपरे करे वंचवा, लाला करे विकल्प बहु ताम ॥ २५ ॥ ज० ॥ जीहो जातुं द्रव्य परस्परे, लाला उलट पालट लेय ॥ जीहो ते दिन जातुं मुज करे, लाला द्रव्य एहने कर देय ॥ २६ ॥ ज० ॥ जीहो ते स्थानक आव्या जिशे, लाला अर्क अस्तंगत थाय ॥ जीहो सांज पखी तव चिंतवे, लाला अणहग धरी मन मांय ॥ २७ ॥ ज० ॥ जीहो द्रव्य बे म्हारा हाथमां, लाला वली ए बे एकांत ॥ जीहो पाताल परे ऊंमो वली, लाला कूपक ए निर्भ्रांत ॥ २८ ॥ ज० ॥ जीहो ढांके सवि अपराधने, लाला एहवो बे अंधकार ॥ जीहो नाखुं कूआमां एहने, लाला वलुं पाबो इण वार ॥ २९ ॥ ज० ॥ जीहो एम चिंती अणहग कहे, लाला तरश्यो बुं तिणे नाल ॥ जीहो कूपमां जल बे के नहीं, लाला तव में जोयुं निहाल ॥ ३० ॥ ज० ॥ जीहो नाख्यो हरूशेली मुने, लाला पमीउं उदक मजारी ॥ जीहो नीकली प्रतिकूपे गयो, लाला तव फरसी में नारी ॥ ३१ ॥ ज० ॥ जीहो नयकायर स्त्रीनावथी, लाला थइ नयभ्रांत ते जोर ॥ जीहो नमो अरिहंताणं कहे, लाला शब्द उंलख्यो तिणे गेर ॥ ३२ ॥ ज० ॥ ॥ जीहो हरख्यो हुं हृदये घणुं, लाला मुखथी म्हें कही वाणी ॥ जीहो जिनशासनमां रक्तने, लाला अनय अनय इण ठाण ॥ ३३ ॥ ज० ॥ जीहो शब्दथी उंलख्यो मुजने, लाला रोवा लागी ताम ॥ जीहो तव आसासना में करी, लाला शे डुःख धरे हवे आम ॥ ३४ ॥ ज० ॥ जीहो बीजे खंडे इणी परे, लाला ए अग्यारमी ढाल ॥ जीहो पद्मविजय कहे धर्मथी, लाला डुःख थाये विसराल ॥ ३५ ॥ ज० ॥ सर्व गाथा ॥ ३३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूब्युं में प्रेमे करी, किम तुं कूप मजार; तिमहिज पूब्युं तेणीए, वात अन्योऽन्य विचार ॥ १ ॥ नारी कहे नरतुं कह्युं, अणहगे एह अकाज; म्हें कह्युं एहवुं मत कहो, ए उपगारी आज ॥ २ ॥ तुज संजोग कस्यो तिणे, किम कहो खोटुं काम; अल्प निद्राए इणी परे, रात गइ आराम ॥ ३ ॥ एहवे सूरज उगीउं, खावा आप्युं खांति; नारी पण मुज नेहथी, नखीउं नहीं कोइ नांति ॥ ४ ॥ तव में पण आग्रहे तदा, आरोग्यो वर आहार; तिणे पण वावरीउं तदा, धरतां धर्म विचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ देशी विंछीआनी ॥ एक दिन एक परदेशीउं ॥ ए देशी ॥

॥ हवे में मन मांहि चिंतव्युं, अहो केम थाशे उद्धार रे ॥ जवसायरनी परे कूपथी, नवि सूझे कोइ विचार रे ॥ १ ॥ जवि पुण्य तणां फल पेखजो ॥ ए आंकणी ॥ एम चिंतवतां केइ दिन गया, पाथेय थयुं हवे क्षीण रे ॥ तव त्रूटी आशा जीववा तणी, आहार विना होय क्षीण रे ॥ २ ॥ जवि० ॥ यतः ॥ "खस्यफस्यं च काव्येन, काव्यं गीतेन हीयते ॥ गीतं तु स्त्रीविलासेन, स्त्रीविलासो बुजूक्षया" ॥ १ ॥ ढाल ॥ तव मनमां चिंता उपनी, अहो जिनमत पामी शुद्ध रे ॥ नवि जिनवर दीक्षा आदरी, एमहीज मरशुं अविशुद्ध रे ॥ ३ ॥ ज० ॥ दाहिण मुज लोयण फुरकीउं, वामानुं फुरकीयुं वाम रे ॥ मुज व्यतिकर जाख्यो नारीए, में पण जाख्यो तस ताम रे ॥ ४ ॥ ज० ॥ में चिंतव्युं एणी परे चित्तमां, तव शकुन थयां इणी रीति रे ॥ तेणे जाणुं सुंदरी सांजलो, नवि आपदनी चिर थिति रे ॥ ५ ॥ ज० ॥ तेणे चिंता मत करजो तुमे, तव तहत कह्युं मुज वयण रे ॥ अहोरात्र वस्यां अम्हे तिहां कणे, तव आव्यो कोइक सयण रे ॥ ६ ॥ ज० ॥ आव्यो सबर राजधानी थकी, नंदीवर्द्धन सबवाह रे ॥ वासी ते रयणपुरी तणो, जाये निज पुर साथ अथाह रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ तेहना तिहां पुरुष ते आवीआ, जल लेवा मूक्या दोर रे ॥ तव दोर झाली में जणावीउं, कीधो वली कांयक सोर रे ॥ ८ ॥ ज० ॥ ते पण जइ कहे सारथपति, ते पण आवी ततकाल रे ॥ मंचिका मूकी अम्ह काढीआं, उलखी पूछे तिणे ताल रे ॥ ए ॥ ज० ॥ कह्युं मूल वृत्तांत में माहरुं, धुरथी सवि करी विस्तार रे ॥ सांजली विस्मय बहु पामीउं, अम्हे चाल्यां तास आधार रे ॥१०॥ज०॥ गयां पांच प्रयाणां जेटले, साथ आगल चाल्यो जाय रे ॥ राजमारगथी कांय वेगला, दीठा कंकाल ते ठाय रे ॥११॥ज०॥ वाम पासे द्रव्यनी गांठडी, केसरीए हणीउं तास रे ॥ एहवो अणहग दीठो तिहां, द्रव्ये उलख्यो तातनो दास रे ॥ १२ ॥ज०॥ तस देखी विपाकने उपनो, मुज मनमां अतिहि विवेक रे ॥ थयो चारित्रमोहनीनो तथा, क्षय उपशम मुज अतिरेक रे ॥१३॥ज०॥ जीवलोकमां जे दुर्लज कह्यो, उपनो मुज चारित्रजाव रे ॥ वधते परिणामे आवीउं, क्षेमे निज

नगरे ताव रे ॥१४॥ ज० ॥ तिहां विजयवर्द्धन सूरि आवीया, दीक्षा तस पासे लीध रे ॥ विधिपूर्वक पाल्युं शुद्ध मने, आयु पूर्ण अनुक्रमे कीध रे ॥ १५ ॥ ज० ॥ महाशुक्र कल्पमां उपनो, सागरोपम सोलने आय रे ॥ महर्द्धिक वैमानिक थयो, गयो काल जिहां न जणाय रे ॥ १६ ॥ ज० ॥ एम बीजे खंडे बारमी, ढाल जाखी अतिहि रसाल रे ॥ कहे पद्मविजय पुण्ये करी, होये घर घर मंगलमाल रे॥ १७ ॥ ज० ॥ सर्व गाथा ॥३५३॥

॥ दोहा ॥

॥ अणहग हवे इण अवसरे, कुमरणे करी काल; त्रीजी नरके तुरत ते, उपनुं दुःख असराल ॥ १ ॥ आउखुं सात अयर तणुं, दश वेदन दीए जोर; खड्ग अन्योन्यने क्षेत्र तिम, कर्म जोगवे कठोर ॥ २ ॥ जंबूद्वीप जंबू तरु, शोजित जारह वास; रथवीरपुर अति राजतुं, सुरपुर परे सुखवास ॥ ३ ॥ नंदीवर्द्धन नामथी, गाथापतिने गेह; सुरसुंदरी सोहामणी, दीपे अद्भुत देह ॥ ४ ॥ पुत्रपणे हुं प्रगटीउं, अणहगनो अवतार; नरक मांहिथी नीकली, पाम्यो पाप प्रकार ॥ ५ ॥ विंध्यगिरि पर्वतवने, सत्त्व तणो संहार; करतो सिंह पराक्रमी, उपनो तिरि अवतार ॥ ६ ॥ वालुप्रजाए गयो वली, सागर आयु सात; तिहांथी बहु जव तिरि तणा, सहीउं दुःख संघात ॥ ७ ॥ तेहज नयरमां तिणे समे, सोम नाम सबवाह; नंदीमती नारी नवल, उपनो कुखे उत्साह ॥ ८ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ देशी रसीआनी ॥ धर्मजिनेशर गाउं रंगशुं ॥ ए देशी ॥

॥ अनुक्रमे जन्म थया अम्ह बिहु तणा, थाप्यां नाम उदार ॥ कुंवरजी ॥ म्हारुं अनंगदेव सोहामणुं, धनदेव एहनुं रे सार ॥ कुं० ॥ १ ॥ पापस्थानक आठमुं तुम्हे परिहरो ॥ ए आंकणी ॥ बाल थकी अम प्रीति थइ घणी, पण माहारे सद्भाव ॥ कुं० ॥ एह तो कपट थकी चाले घणो, कुमरजाव लह्या ताव ॥ कुं० ॥२॥ पा० ॥ देवसेन गुरु पासे पामीउं, वीतरागनो रे धर्म ॥ कुं० ॥ वली यौवन पाम्यो हुं जागतो, करुं व्यवहारनां कर्म ॥ कुं० ॥ ३ ॥ पा० ॥ बापदादानुं धन घरमां घणुं, पण अजिमान अत्यंत ॥ कुं० ॥ पूर्वपुरुष अर्जित नहीं कामनुं, अर्जुं निज कर तंत ॥ कुं० ॥ ४ ॥ पा० ॥ द्रव्य कमावण रयणद्वीपे गया, अर्ज्यां रयण अनेक ॥ कुं० ॥

अनुक्रमे निज देशे जावा भणी, वेहु जणे चिंतव्युं छेक ॥ कुं० ॥ ५ ॥ पा० ॥ पूरवकृत कर्मे करी चिंतवे, धनदेव पंथे रे एम ॥ कुं० ॥ ठगीए कोइ उपाये एहने, तो द्रव्य आवे ए नेम ॥ कुं० ॥ ६ ॥ पा० ॥ केइक विकल्प मिथ्या कलपीआ, पण कोइ नाव्यो रे दाय ॥ कुं० ॥ मार्या विण नवि एह ठगी शकुं, एम सिद्धांत कराय ॥ कुं० ॥७॥ पा० ॥ चिंतवे भोजनमां विष आपीए, आव्या शक्तिमती गाम ॥ कुं० ॥ चौटे धनदेव गयो कपटे करी, अवसरे भोजन काम ॥ कुं० ॥ ८ ॥ पा० ॥ भोजन कर्युं तैयार तिणे समे, एक लाडुमां रे झेर ॥ कुं० ॥ बीजो लाडु शुद्ध लेइ हवे, चित्तमां आवे न महेर ॥ कुं० ॥ ९ ॥ पा० ॥ पंथे चित्त विकल्प करे घणा, एहवे थयो विपर्यास ॥ कुं० ॥ विषलाडु लीधो पोते तदा, मुझ आप्यो जेह खास ॥ कुं० ॥ १० ॥ पा० ॥ यतः ॥ " लंघनैः पच्यते रोगः, फलं कालेन पच्यते ॥ कुमित्रैः पच्यते राजा, पापी पापेन पच्यते ॥ १ ॥" लाडु खाधो ने झेर ते परिणम्युं, उपनो मुझ मन खेद ॥ कुं० ॥ ए शुं वात बनी केम नीपनुं, नवि जाणुं तस भेद ॥ कुं० ॥ ११ ॥ पा० ॥ एहवे कर्म विचित्रता कारणे, विष पण उग्र अत्यंत ॥ कुं० ॥ मरण लह्युं मुझ चिंता उपनी, मित्रनो किणे कर्यो अंत ॥ कुं० ॥१२॥पा०॥ नवि कोइ खबर पडी एह वातनी, आव्यो निज पुर ताम ॥ कुं० ॥ संभलाव्युं तस माणसने सवे, आप्यो अधिक तस दाम ॥ कुं० ॥ १३ ॥ पा० ॥ शेष रह्युं ते पुण्यमां वावर्युं, मुझ ते दिनथी वैराग ॥ कुं० ॥ विषय प्रसंग न कीधो ते पछी, नित्य नवलो करुं त्याग ॥ कुं० ॥ १४ ॥ पा० ॥ देवसेन सूरि एक दिन आवीआ, दीक्षा तेहने रे पास ॥ कुं० ॥ आदरी विधिपूर्वक पाली भली, अणसण कीधुं रे खास ॥ कुं० ॥ १५ ॥ पा० ॥ प्राणतकल्पे उपनो हुं तिहां, उगणीश सागर आय ॥ कुं० ॥ विष मरणे धनदेव मरी करी, उपनो नारक ठाय ॥ कुं० ॥ १६ ॥ पा० ॥ पंकप्रभाए सागर नव तणुं, आउखुं अति दुःखदाय ॥ कुं० ॥ एणे अवसरे जंबूद्वीपमां, ऐरवत क्षेत्र सुठाय ॥ कुं० ॥ १७ ॥ पा० ॥ हथिणाउर नयरे अति शोभतो, शेठ हरिनंदी नाम ॥ कुं० ॥ लखमीमती तस नारीनी कुखमां, उपनो सुत गुणधाम ॥ कुं० ॥ १८ ॥ पा० ॥ धनदेव नरग मांहिथी नीकली, ते थयो फणिधर नाग ॥ कुं० ॥ हिंसा करी केइ जीव

संतापीआ, थयो दावानल दाग ॥ कुं० ॥ १९ ॥ पा० ॥ मरीने पंकप्र- जाएं फरी गयो, दश सागर काय जाण ॥ कुं० ॥ तिहांथी नीकली तिरि- भव बहु भम्यो, दुःख न लहे कर्म कुंण ॥ कुं० ॥ २० ॥ पा० ॥ तेहज हथिणापुर मांहि वसे, इंद्रनाग वरु शेठ ॥ कुं० ॥ भार्या नंदिमती तस कुखमां, पुत्रपणे हुउं नेठ ॥ कुं० ॥ २१ ॥ पा० ॥ समये जनम्या बिहुं निज निज घरे, थाप्यां नाम विशेष ॥ कुं० ॥ वीरदेव वर थाप्युं माहरुं, द्रोणक इतरनुं देख ॥ कुं० ॥ २२ ॥ पा० ॥ पाम्या कुंवरपणुं हवे अनु- क्रमे, बीजे खंडे रे ढाल ॥ कुं० ॥ तेरमी पद्मविजये सोहामणी, सुणतां मंगलमाल ॥ कुं० ॥ २३ ॥ पा० ॥ सर्व गाथा ॥ ३०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सोंप्या अमने शीखवा, प्रगट पंडित पास; प्रीति थइ पूरव परे, अम्हे बिहुं कर्यो अभ्यास ॥ १ ॥ मानभंग गुरु मुज मल्या, तेहनी पासे ताम; जिनवरजीए जे कह्यो, धर्म लह्यो गुणधाम ॥ २ ॥ द्रव्य थकी द्रोणक थयो, मुज वंचवा निमित्त; धर्मराग हुं धारीने, तिहांथी अधिकी प्रीति ॥ ३ ॥ थिरतर प्रीति घणी थइ, दीधुं एहने द्रव्य; निंद्य व्यापार करशो नहीं, भाख्युं इणी परे भव्य ॥ ४ ॥ सइआरे सोंप्युं सवे, करे व्यापार कलंठ; अर्ज्यु द्रव्य उतावलुं, गरथ घणो करे गंठ ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ जीरे मारे जाग्यो कुंअर जाम ॥ ए देशी ॥

॥ जीरे मारे पाम्यो द्रव्यविशेष, तव चिंते चित्त एणी परे जीरे जी ॥ जीरे मारे पूर्वकृत जे कर्म, तास अभ्यास मने धरे जीरे जी ॥ १ ॥ जीरे० ॥ भाग लेशे वीरदेव, वेंहची ए द्रव्यने माहरो जीरे जी ॥ जीरे० ॥ में मुखथी न कहाय, नवि आपुं भाग ताहरो जीरे जी ॥ २ ॥ जीरे० ॥ वंचुं कोये उपाय, जिम नवि जाणे ए मने जीरे जी ॥ जीरे० ॥ माहरा व्यापारनी वात, में नवि भाखी कोइ कने जीरे जी ॥ ३ ॥ जीरे० ॥ उलवुं सघलो लाभ, अथवा कोइ माने नहीं जीरे जी ॥ ते कारण करुं घात, बीजो उपाय इहां नहीं जीरे जी ॥ ४ ॥ जीरे० ॥ पछे कहीश हुं जेह, ते सवि वात वरे पडे जीरे जी ॥ जीरे० ॥ एम धारीने उपाय, करवा मांड्यो मन वडे जीरे जी ॥ ५ ॥ जीरे० ॥ महोटो एक प्रासाद,

उपर जाग करे इस्यो जीरे जी ॥ जीरे० ॥ रमणिक अति सुविशाल, देखवा ने जोवा जीस्यो जीरे जी ॥ ६ ॥ जीरे० ॥ किलक अनियमित, निर्यूथक सवि खलजले जीरे जी ॥ जीरे० ॥ जोवा तेडुं घेर, चढशे जोवा हलफले जीरे जी ॥ ७ ॥ जीरे० ॥ पमशे ए प्रासाद, तव ए यम- नृपघर जशे जीरे जी ॥ जीरे० ॥ मुज नहीं कांय अपवाद, कारय पण सघलुं थशे जीरे जी ॥ ८ ॥ जीरे० ॥ तेड्यो मुजने घेर, जमीआ विहु साथे वली जीरे जी ॥ जीरे० ॥ तेमी गयो प्रासाद, आरोह्या अमे विहु मली जीरे जी ॥ ए ॥ जीरे० ॥ देखारुवा लप उप, करतां मति तेहनी चली जीरे जी ॥ जीरे० ॥ चढीउं आगे आप, अजिअ न हुं चढीउं वली जीरे जी ॥ १० ॥ निर्यूथक आरोह, कीधो तव एणी परे थयुं जीरे जी ॥ जीरे० ॥ हाहारव थयो ताम, सघलुं तेह पडी गयुं जीरे जी ॥ ११ ॥ जीरे० ॥ उसरीउं हुं तब, जोउं तो द्रोणक मरी गयो जीरे जी ॥ जीरे० ॥ उपनो मुज निर्वेद, धिक् मुज जव अहेले गयो जीरे जी ॥ १२ ॥ जीरे० ॥ धिक् संसार असार, मरवुं सहुने एणी परे जीरे जी ॥ जीरे०॥ मृतकारय कस्र्यां तास, पण चित्त मुज न रमे घरे जीरे जी ॥ १३ ॥ जीरे० ॥ मानजंग गुरु पास, श्रमणपणुं में आदस्रुं जीरे जी ॥ जीरे० ॥ पाली चारित्र शुद्ध, अणसण वली अंगीकस्रुं जीरे जी ॥ १४॥ जीरे० ॥ हेठिम उवरीम नाम, ग्रैवेयक त्रीजे गयो जीरे जी ॥ जीरे० ॥ पणवीश सागर आय, कांयक ऊण माहरो थयो जीरे जी ॥ १५ ॥ जीरे० ॥ द्रोणक हवे करी काल, रौद्रध्याने मरी उपन्यो जीरे जी ॥ जीरे० ॥ बार सागरने आय, धूमप्रजाए नीपन्यो जीरे जी ॥ १६ ॥ जीरे० ॥ एहज जंबूद्वीप, एहज विजये पुर जलुं जीरे जी ॥ जीरे० ॥ सुंदर चंपा- वास, सुरपुर सम चित्त अटकलुं जीरे जी ॥ १७ ॥ जीरे० ॥ माणिजद्र तिहां शेठ, हारिणी जार्या गुणवती जीरे जी ॥ जीरे० ॥ सुरजवथी चवी तास, कुखे उपनो शुजमति जीरे जी ॥१८॥ जीरे० ॥ उचित समये थयो जन्म, नाम पूर्णजद्र थापीउं जीरे जी ॥ जीरे० ॥ घोष उच्चरतां आदि, अमर एहवुं उल्लापीउं जीरे जी ॥ १ए ॥ जीरे० ॥ अमरगुप्त थयुं नाम, बीजुं अति सोहामणुं जीरे जी ॥ जीरे० ॥ श्रावकघर पर- जाव, बालथी जैनधरमी घणुं जीरे जी ॥२०॥ जीरे० ॥ बीजे खंडे ढाल, चौ-

दमी नाखी सोहामणी जीरे जी ॥ जीरे० ॥ पद्मविजय कहे एम, सांभलो वात ड्रोणक तणी जीरे जी ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ४१० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नारकनवथी नीकली, बेहले सायर मत्स; पाप करी पोहुं तिहां, बीजी वार विनत्स ॥ १ ॥ पांचमी नरके पापथी, अयर बारनुं आय; तिहांथी नीकली तिरि तणा, नव बहु लगे नमाय ॥ २ ॥ एहज नयरमां इण समे, नंदावर्त्त इण नाम; शेठ घणुं सोहामणो, रुद्धि तणो विशराम ॥ ३ ॥ श्रीनंदा सोहामणी, नारी रूपनिधान; कुखे तेहनी कुंअरी, उपनी अप्सरवान ॥ ४ ॥ जनम थयो तस जेटले, नंदा थाप्युं नाम; आवी यौवन अनुक्रमे, आपी मुऊने आम ॥ ५ ॥ पाणिग्रहणे परणीआ, श्यामा उपरे स्नेह; मुऊने उपनो मूलथी, आणुराग अछेह ॥ ६ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥

॥ निंडली वेरण हुइ रही ॥ ए देशी ॥

॥ पंच विषय सुख नोगवुं, तेह साथे हो गयो केइ काल के ॥ पूर्वकर्म दोषे करी, नारी गुंथे हो मन आलजंजाल के ॥ १ ॥ कर्म तणी गति सांनलो ॥ ए आंकणी ॥ घर सार सोंप्युं सवि एहने, पण न गयो हो माया परिणाम के ॥ कपटे वात सवे करे, हुं जाणुं हो ए सत्यनुं धाम के ॥ २ ॥ परिजन सयण आवी कहे, तुऊ नारी हो कपटी शिरदार के ॥ पण हुं कांय मानुं नहीं, सरल नावे हो वली रागने धार के ॥ ३ ॥ क० ॥ एक दिन मायाए कह्युं, गयां कुंमल हो जुग जे घर सार के ॥ पोते उलवी एम कह्युं, आकुल व्याकुल हो वली थाय असार के ॥ ४ ॥ क० ॥ खेद म कर तुं सुंदरी, गयो अंगनो हो मल ताहरो आज के ॥ कुंमलजुगल करुं नवां, पछी आवशे हो ड्रव्य शे मुऊ काज के ॥ ५ ॥ क० ॥ एम कही नविन करावीयां, वेला एक दिन हो अन्यंगन जाणी के ॥ नामांकित निज मुड्रिका, आपी नारीने हो राखवा निज पाणि के ॥ ६ ॥ क० ॥ निज आनरण करंमीए, मूकी तेणे हो मुड्रा बहु मोल के ॥ न्हाण नोयणं करी इण समे, अंगरागने हो वली लीध तंबोल के ॥ ७ ॥ क० ॥ शंका रहित करंमीउं, उघामी हो मुड्रा में लीध के ॥ कुंमलयुगल दीठुं तिहां, गयुं पूर्वे हो जस सार न कीध के ॥ ८ ॥

क० ॥ चिंता मुझने ऊपनी, जव्यां कुंमलहो दीसे छे नारी के ॥ आवी नंदा एण समे, दीठी मुद्रा हो मुझ हाथे उदार के ॥ ए ॥ क० ॥ विलखी थइ निज चित्तथी, में जाएयो हो एहनो तव नाव के ॥ नीकव्यो हुं घर मांहिथी, चित्त चिंतव्युं हो हमणां एह दाव के ॥ १० ॥ क० ॥ नारी विचारे चित्तमां, मुझ लघुता हो थइ इण ठाम के ॥ कुंमलजुगल दीठां इणे, हवे करवुं हो एह किणी परे काम के ॥ ११ ॥ क० ॥ ए पण नासीने गयो, हवे सयणमां हो ज्यां नवि करे वात के ॥ लघुता सयणमां नवि होये, आगलथी हो मारुं करी घात के ॥ १२ ॥ क० ॥ कामणयोग करुं जिणे, मरे वहेलो हो वहेलुं थाय काम के ॥ द्रव्य संजोग बहु कस्यो, तिणे एकली हो कूम कपटनी धाम के ॥ १३ ॥ क० ॥ एकांत प्रदेशे दाटवा, जाये जेटले हो तेटले तिहां नाग के ॥ करव्यो कर्मवशे करी, जिहां जाये हो तिहां कर्मनो लाग के ॥ १४ ॥ क० ॥ वरष लगे अन्न नवि मव्यां, जिन रुषनजी हो कस्यां कर्म न जाय के ॥ गोपे खीला ठोकीआ, जिन वीरने हो अतिहे दुःखदाय के ॥ १५ ॥ क० ॥ षट् महीना लगे नवि मव्यो, आहार ढंढणा हो कीधो अंतराय के ॥ पंचनर्त्तारी द्रौपदी, सीताने हो कलंक ते आय के ॥ १६ ॥ क० ॥ कलावती कर कापीआ, खंधकनी हो उतारी खाल के ॥ तिम एहने नागे रुशी, वीवानी हो पडे नांतिने ख्याल के ॥ १७ ॥ क० ॥ यतः ॥ "कृतकर्मक्षयो नास्ति, कल्पकोटिशतैरपि ॥ अवश्यमेव नोक्तव्यं, कृतं कर्म शुनाशुनं" ॥ १ ॥ रुद्रदेव पुरोहिते कह्युं, तुझ नारीने हो करव्यो छे साप के ॥ हुं पण गयो उतावलो, एम जाणुं हो केम आव्युं पाप के ॥ १८ ॥ क० ॥ थइ अचेत दीठी तदा, श्याममंमल हो थयां तास शरीर के ॥ आंसुपात करतो थको, न खमाये हो में तेहनी पीर के ॥ १ए ॥ क० ॥ धिक् संसार असारने, जिम स्वपनुं हो माया इंद्रजाल के ॥ गद्‌गद् वाणीए में कह्युं, तुझने किम हो थयुं एम अकाल के ॥ २० ॥ क० ॥ शी तुझने पीमा अछे, एम पूछ्युं हो पण न दीए बोल के ॥ तव मुझ खेद घणो थयो, गइ जीवित हो आशा दूर बोल के ॥ २१ ॥ क० ॥ गारुमी तेव्यां तिण समे, करी खेदने हो कहे इणी परे तेह के ॥ काले रुशी ए नारीने, नहीं चारो हो नरमात्रनो एह के ॥ २२ ॥ क० ॥ इम कही गारुडी

घर गया, नवि मंत्रनी हो कांय चाली शक्ति तो ॥ काल करी परजव गइ, सहु विलखे हो करे आक्रंद ऊक्ति के ॥ २३ ॥ क० ॥ मृतकारज करी तेहनां, तेह निमित्ते हो वधते परिणाम के ॥ क्लेशकारण संग ठांमीउं, संसार ते हो जाणी दुःखठाम के ॥ २४ ॥ क० ॥ लीधी दीक्षा में गुरु कने, छठी नरके हो पोहोती तेह नारी के ॥ एकवीश सागर आउखे, एह माहरुं हो चरित्र अवधारी के ॥ २५ ॥ क० ॥ राय नयरजन सांजली, गुरु जाखो हो हवे आगले वात के ॥ निपजशे शुं एहने, तुमचो पण हो जाखो अवदात के ॥ २६ ॥ क० ॥ अमरगुप्त गुरु बोलीआ, एहने तो हो छे अनंत संसार के ॥ मुक्ति जशे अंते सही, हुं तो इण जव हो पामीश जवपार के ॥ २७ ॥ क० ॥ ए जव मुनिना सांजली, तेहु पासे हो में लीधी दीख के ॥ बहु जने नगरमां आदरी, मुऊ साथे हो धरी गुरुनी शीख के ॥ २८ ॥ क० ॥ ए मुऊ हेतु विशेष छे, वैराग्यनुं हो सुणी सिंहकुमार के ॥ बीजे खंडे पनरमी, ढाल जाखी हो पद्म मनोहार के ॥ २९ ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ ४४५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिंहकुमार ते सांजली, कहे रुडुं कर्युं काम; हवे जाखो गुरु हित करी, गुरु तुम्हे गुणगणधाम ॥ १ ॥ कति गति रूप गुरु कह्यो, ए संसार अपार; सुख दुःख मनने शरीरनां, श्यां श्यां होय संसार ॥ २ ॥ जवअटवी जमतां थका, धर्म कीउ आधार; गुरु कहे सुण संसार ए, चिहुं गातरूप विचार ॥ ३ ॥ नरक तिरि सुर नरगति, संसारे नहीं सुख; जरा मरण ने जन्मथी, दुःखीआने नित्य दुःख ॥ ४ ॥ रागद्वेष रागे करी, वेदन विषय विषाद; सुख तो नहीं तस स्वपनमां, पामे दुःख प्रमाद ॥ ५ ॥ ते उपरे दृष्टांत तुं, सांजल चतुर सुजाण; मधुबिंदु मानव तणो, वीरे कीध वखाण ॥ ६ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ एकवीशानी तथा त्रुटकनी देशी ॥

॥ ढाल ॥ एक नर कोइ रे दारिद्र दुःख संतापीउ ॥ मूकी देशने रे परदेशे गयो पापीउ ॥ गाम आगल रे पाटण बहु जमतां हवे ॥ जूलो पंथथी रे एक अटवीमां एहवे ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ शाल ताल तमाल निं-

वड, कुटज न्यग्रोध खेर ए ॥ सल्लकी अर्जुन वकुल अंकोल, अंब जंबू केर ए ॥ वंजूल तिलक कदंब रायण, तिणीस धव ने पलाश ए ॥ जिहां सिंह चित्ता फाल देता, जीववा शी आश ए ॥ २ ॥ ढाल ॥ वाघ जंबुक रे रोझ शरज बहु जय करे ॥ वनजेंसा रे युद्ध करे ते परपरे ॥ जलचर जीव रे पाणी उछाले वेगशुं ॥ तेह नरने रे चिंता न माय उद्वेगशुं ॥ ३ ॥ त्रु० ॥ जूख्यो तरश्यो खमे वेदन, श्वापदना सुणे साद ए ॥ उत्रस्तलोचन स्वेद गलतो, करे वहु विषवाद ए ॥ दीर्घ पंथे थाक पाम्यो, विषम मार्ग खलाय ए ॥ इण समे गजवर एक दीठो, पूठे आवे धाय ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ महा डुर्दंत रे पंथीलोकने मारतो ॥ गाजतो वली रे शुंरु थकी फूंकारतो ॥ शुंढाडंरु रे ऊंचो करीने चालतो ॥ चालतो नग रे दीसे मेघ ज्युं म्हालतो ॥ ५ ॥ त्रु० ॥ तेमज एक राक्सी देखे, महा डुष्ट कराल ए ॥ महाकाय विकराल वयणे, निशित कर करवाल ए ॥ जीम अट्टहास मूके, वरण अति तस श्याम ए ॥ देखी बीहीनो मरणजयथी, जुवे दश दिश ठाम ए ॥ ६ ॥ ढाल ॥ पूर्व दिशे रे देखे वरु एक ताम रे ॥ उदयाचल रे शिखर परे अजिराम रे ॥ सिद्ध गंधर्व रे मारग रोक्या तास रे ॥ मन चिंते रे किमहिक जाउं ए पास रे ॥ ७ ॥ त्रु० ॥ उगरुं तो एह जयथी, चढुं वरु उपरे जइ ॥ एम चिंतवीने शीघ्र चाल्यो, पद जेदाये कुशसुइ ॥ पहोतो वरुनी पास तव ते, देखी मनमां चिंतवे ॥ गगन गोचरथी न लंघाये, केम करुं एहने हवे ॥ ८ ॥ ढाल ॥ आरोही रे न शके हवे ते कोइ परे ॥ गज देखी रे तेहनुं तन वहु थरहरे ॥ एम करतां रे दीठो जीरण एक रे ॥ कूपक तिहां रे ऊंमो ते अति छेक रे ॥ ए ॥ त्रु० ॥ जीववानी क्षणिक आशा, धरी मरणनो जय मने ॥ निरालंबन आत्म मूक्यो, नवि आधार को तिहां कने ॥ जीति उग्यो सरनो थंजो, वलगो तेहने उल्लसी ॥ पमणाजीयांते हेठ फणिधर, चार कोप्या धसमसी ॥ १० ॥ ढाल ॥ चार कांठे रे तेह रहे कोपाकुला, फणाटोपे रे करडवाने थया व्याकुला ॥ एक अजगर रे दिग्गज सम दीसे खरो ॥ आंख राती रे कृष्णकाय मुख मोकरो ॥ ११ ॥ त्रु० ॥ चिंते मनमां एह थंजो, तिहां लगे जीवित वहुं ॥ ऊंचे मुखे जव जोइउं तव, दीठुं ते सुणजो कहुं ॥ एक धवल ने एक कृष्ण ए वे, उंदरा महोटा हवे ॥ दाढ

तिखी मूल छेदे, हस्ती पण जूउ ते हवे ॥ १२ ॥ ढाल ॥ नवि पहोंचे रे ते नरने हवे हाथीउ, धंधोले रे कोपे वम उन्माथीउ ॥ तेणे हाल्यो रे मधपूमो एक उपरे ॥ मधुभ्रमरी रे उडी ते चिहुं दिशि संचरे ॥ १३ ॥ त्रु० ॥ भ्रमरी समूहे तास गात्रे, दीये चटका अति घणा ॥ मधुजाल पडीउ कूपमां तिणे, गणगणाटनी नहीं मणा ॥ एक बिंडु मधुनो तिहां पमीउ, शीश उपर तास ए ॥ आलोटतो ते किमके आव्यो, तास मुख आवास ए ॥ १४ ॥ क्षण इछे रे वली एक बिंडु आवतो ॥ पण न गणे रे जे डुःख एवमां पावतो ॥ करी मुसा रे अजगर ने वली साप रे ॥ कूउ भ्रमरी रे एवडा न गणे संताप रे ॥ १५ ॥ त्रु० ॥ मधुबिंडुरस आस्वाद गिर धर, हरष पामे बहु तदा ॥ सुणो उपसंहार एहनो, मोहधूम जाये कदा ॥ पुरुष ते ए जीव जाणो, चार गति अटवी कही ॥ वनवारण ते कीनास जाणो, जरा राक्षसणी लही ॥ १६ ॥ ढाल ॥ वमवृक्ष ते रे मोक्ष अपूरव जाणीये ॥ मृत्यु गजवर रे भय जेह स्थानक नाणीये ॥ विषयातुर रे नर आरोही नवि शक्या ॥ पापस्थानक रे परिग्रह मांहि जे छक्या ॥ १७ ॥ त्रु० ॥ सर्प्प चार कषाय समजो, कूउ नरभव जाणीये ॥ जे मनुजने ए नाग करड्या, घोर डुःख विष खाणीये ॥ कार्याकार्य न लहे ते नर, जीवित सरथंभो गणो ॥ दोय पक्ष जे बहुल अर्जुन, तेह उंदर सम भणो ॥ १० ॥ ढाल ॥ करमे भ्रमरीउ रे व्याधि विविध बहु सत्त रे ॥ क्षण मातर रे सुख नवि लहे कोइ वत्त रे ॥ घोर अजगर रे नरग ते अति डुःखदाय रे ॥ विषे मोहित रे नरके गयां डुःख थाय रे ॥ १ए ॥ त्रु० ॥ मधुबिंडु सम ए भोग जाणो, तुछ ने दारुण कहे ॥ एह व्यसनमां कहो कोण प्राणी, भोगववाने उमहे ॥ तेणे कारणे करो धर्म मानव, भव ते कुशबिंडु समो ॥ चंचल विजली सम समागम, सज्ज-नना जाणो तुमो ॥ २० ॥ ढाल ॥ संध्याराग रे सरिखुं यौवन जाणीये, करो आदर रे धर्म सदा सुख खाणीये ॥ बीजे खंमे रे सोलमी ढाल सोहामणी, मानवभव रे जाणजो जेम चिंतामणि ॥ २१ ॥ त्रु० ॥ चिं-तामणि सम धर्म कीजे, एह उपनय सांभली ॥ कहे पद्म ए दृष्टांत भाख्युं, बीजो पाठांतर वली ॥ ग्रंथांतरथी तेह जाणो, इहां चरित्रप्रकार ए ॥ सिंह पूछे हवे गुरुने, धर्म वात उदार ए ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ४७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिंहकुमर कहे सांभलो, कतिविध धर्म कहाय; धर्मी कहे दश-विध धर्म, मुनिनो ए निरमाय ॥ १ ॥ यतः ॥ " खंति मद्दव अज्जव, मुत्ति तव संजमेय बोधवे ॥ सच्चं सोयं आकिं, चणं च बंभं च जइधम्मो ॥ १ ॥ " सम्यक् वस्तुस्वभावनो, अंतर करी आलोच; क्रोध तणो अणु-दय करे, करे उदये संकोच ॥ २ ॥ मद्दव पण एम माननो, अनुदय वि-फल अपार; अद्यव माया अणउदय, उदये विफल अविकार ॥ ३ ॥ मुत्ति ते लोभ तणो मुणो, अनुदय उदय अभाव; उदय लह्यार्थी करे अफल, प्रभुने वचन प्रभाव ॥ ४ ॥ तप ते दुविध परे तपे, बाह्य अभ्यं-तर बाह्य ॥ षटविध ने अंतरंग षट, जेहमां कोइ न साह्य ॥ ५ ॥ यतः॥ "अणसण मूणोअरिया, वित्तीसंखेवणं रसच्चाउ ॥ कायकिलेसो संली-, णया य बझो तवो होइ ॥ १ ॥ पायच्छित्तं विणउं, वेयावच्चं तहेव स-झाउं ॥ झाणं उस्सग्गोऽवि य, अभिंतरउं तवो होइ ॥ २ ॥ " सत्तर भेद संजम सुणो, सत्य ते निरवद्य भाष; शौच ते निर्लेपी सदा, आठमो पूरे आश ॥ ६ ॥ आकिंचन ते एणी परे, धरमोपगरण धार; परिग्रहने राखे परो, बंभ ते षटने वार ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

चंद्रावलानी अथवा ध्रुवाख्याननी देशी ॥

॥ ए यतिधर्मने सांभली रे, बोले सिंहकुमार ॥ शोभनधर्म ए साधुनो रे, भाख्यो तुम्हे अणगार ॥ १ ॥ भाख्यो तुम्हे ते में नवि थाय, हुं तो समर्थ नहि मुनिराय ॥ मुजने योग्य होय जे कांय, ते भाखो मुज करी सुपसाय ॥ २ ॥ जीमोहनजी जीरे ॥ ए आंकणी ॥ धर्मघोष मुनि बो-लीआ रे, श्रावक थाउं महाभाग ॥ सिंह कहे ते केहवो रे, श्रावकध-र्मनो लाग ॥ ३ ॥ श्रावकधर्म कह्यो मुनिराय, द्रव्य भावथी अंगीकराय ॥ माने कृत्याकृत्य आतमराय, मुनिवर सेव करे सुखदाय ॥ ४ ॥ जीमो० ॥ वंदना विनय थकी करी रे, पोहोता नयरी मांहि ॥ कुसुमावलीने जइ कहे रे, ते पण धरे उत्साहि ॥ ५ ॥ ते पण धरी उत्साहने पामे, कर्मक्षयो-पशमे मिथ्यात वामे ॥ समकित अणुव्रत लहे गुणधाम, नित नित गुरु-सेवा सुखकाम ॥ ६ ॥ जीमो० ॥ मास कल्प एम वही गयो रे, गुरुजीए

कीध विहार ॥ जैनधर्मे दृढ ते थयो रे, तत्त्वातत्त्व विचार ॥ ७ ॥ तत्त्वातत्त्व विचार ते थाय, एक दिन पुरुषदत्त ते राय ॥ अमिततेज गुरुजीने पाय, धर्म्मदेशना सुणी सुखदाय ॥ ८ ॥ जीमो० ॥ सिंहकुमर राज्ये ठवी रे, आप थयो मुनि नूप ॥ राणी श्रीकांता सह वली रे, लहे शिवमार्ग अनूप ॥ ए ॥ लही शिवमार्ग अनूप ते पाले, सिंहराय निज कुल अजुआले ॥ कर्म अन्याय अरिने टाले, त्रण वर्ग पाले निज काले ॥ १० ॥ जीमो० ॥ सहु लोकने आणंद करे रे, सामंतमंडल आणि ॥ शिर वहे चंपकमाल ज्युं रे, करे उपकार सुजाण ॥ ११ ॥ करे उपकार सुजाण वैरागी, राजऋषि कहेवाये त्यागी ॥ काढे काल ए रीति सोजागी, चारित्रधर्म तणो बहुरागी ॥ १२ ॥ जीमो० ॥ अगनिशर्मा तापसो रे, विद्युतकुमर जे देव ॥ तिहांथी चवीने बहु जम्यो रे, तिरिगतिनी करे सेव ॥ १३ ॥ तिरिगतिनी करी सेवने आव्यो, अनंतर जवे बाल तपसी सोहाव्यो ॥ तिहांथी मरी कर्मवासना जाव्यो, कुसुमावलीने कुखे ठाव्यो ॥ १४ ॥ जीमो० ॥ दीठो स्वपनमां तेणीए रे, उदरमां पेसतो नाग ॥ बाहिर नीकली रायने रे, करड्यो ते लही लाग ॥ १५ ॥ करड्यो तिणें ते पमीउं जूप, सिंहासनथी एह सरूप ॥ देखी स्वपनुं एह विरूप, जागी अमंगल जाणी अनूप ॥ १६ ॥ जीमो० ॥ नवि संजलाव्युं रायने रे, गर्न ते वधतो जाय ॥ तेह तणा परजावथी रे, नवि बहु माने राय ॥ १७ ॥ स्नेह धरे बहु राजा तास, परिजन कहे राणीने उल्लास ॥ एम न घटे तुम करवुं खास, तव राणी तेहने कहे जास ॥ १८ ॥ जीमो० ॥ शुं करुं तव परिजन कहे रे, जूपने आदर दीजे ॥ तव जाण्युं इम राणीए रे, गर्जनो दोष कहीजे ॥ १ए ॥ गर्जना दोष विना नवि होय, अन्यथा रायशुं रीस न कोय ॥ दोहद उपनो एक दिन जोय, हवे सांजलो ते जाखुं सोय ॥ २० ॥ जीमो० ॥ रायनां आंतरमां जखुं रे, राणी विचारे ताम ॥ गर्ज ए पापकारी घणो रे, एहनुं नहीं मुऊ काम ॥ २१ ॥ काम नहीं मुऊ चिंते नारी, जर्त्ता स्नेह ते चित्त विचारी ॥ नारी स्वजाव कायर निर्धार, पाडुं गर्न हुं ए एणी वार ॥ २२ ॥ जीमो० ॥ तास उपाय बहु कस्या रे, पण ते निकाचित कर्म ॥ कोइ प्रकारे पड्यो नहीं रे, वैरजावना मर्म ॥ २३ ॥ पाडवा कारण उषध पीधां, तिणे डुर्बल तस अं-

गज कीधां ॥ दोहलानां पण कार्य न सीधां, कर्म कर्यां ते गांठे लीधां ॥ २४ ॥ जीमो० ॥ डुबली देखी पूछतो रे, राय राणीने एम ॥ शुं तुजने नवि संपजे रे, अथ जणो मुज प्रेम ॥ २५ ॥ अथवा कोइए आणा खंमी, दीसे तुं जिम दैवे दंमी ॥ पाणी रहित जिम माछली खंमी, अथवा कुमुदिनी उदके छंमी ॥ २६ ॥ जीमो० ॥ रायरागे राणी कहे रे, मुज मनमां एम आवे ॥ मरण लहुं इण अवसरे रे, तो मुजने सुख थावे ॥ २७ ॥ शुं निमित्त पूछे तस ताम, देवी कहे मुज दैव छे वाम ॥ एम कही आंसुं रेडे तिण ठाम, राजा चिंते नव पूछण काम ॥ २८ ॥ जीमो० ॥ वात कथा बीजी करी रे, आक्षेप्युं मन तास ॥ तेमी परिजनने कहे रे, वात सुणो उल्लास ॥ २९ ॥ वात कहे हवे राजा सारी, ढाल सत्तरमी ए मनोहारी ॥ बीजे खंडे मनमां धारी, पद्मविजय कहे सुणो सुखकारी ॥ ३० ॥ जीमो० ॥ सर्व गाथा ॥ ५१० ॥

॥ दोहा ॥

॥ देवी केम ए डुबली, उवेखी केम एह; बहुल पक्षना चंदवल, सरिखी दीसे केह ॥ १ ॥ सारभूत सवि विश्वमां, राणी रयणसरूप; प्राण धरंते न निपजे, एहवुं शुं छे अनूप ॥ २ ॥ मदनलेखा तव माननी, बोली एहवा बोल; राजन कहो छो ते खरुं, तोपण स्त्री इये तोल ॥ ३ ॥ अविवेकीपणुं अंगमां, पण सांभल एक भूप; कही शकीये एहवी कथा, राजन नहीं सरूप ॥ ४ ॥ अन्य उपाय नहीं एहमां, तिणे कहुं सांभल तुज; संभलाव्युं एम कही सवे, गर्भ दोहदनुं गुज ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ सुणी बहेनी पीउमो परदेशी ॥ ए देशी ॥

॥ भूपति चिंते रागविलुध्धो, जुर्ज राणी शुं कहे छे रे ॥ पुत्रजनम पण नवि बहु माने, राग ए एम वहे छे रे ॥ १ ॥ भूप० ॥ जो दोहद नवि पूरुं एहनो, थाये गर्भ विनाश रे ॥ विसरज्यो राणीनो परिकर, चिंते उपाय हवे तास रे ॥ २ ॥ भूप० ॥ मतिसागर महामंत्री तेड्यो, संभलाव्युं वृत्तांत रे ॥ करीय विचार भूपने भाखे, सांभलो कहुं अवदात रे ॥ ३ ॥ भूप० ॥ बुध्धिहित रही उदरे बांधो, अंत्र कृत्रिम करी वेसो रे ॥ कोइ प्रकारे लक्षण करी सुंदर, पण कोइने मत कहेशो रे

॥ ४ ॥ नूप० ॥ राणी देखतां कापी देशुं, पछे मनमान्युं करशुं रे ॥ वात सुणी नरपति बहु हरख्यो, एम प्रतिज्ञा तरेशुं रे ॥ ५ ॥ नूप० ॥ राणीने कहे तुम्ह सुख करशुं, राणी गरन अनुनावे रे ॥ अंगीकार करी अण-घटती, करे उपाय शुन दावे रे ॥ ६ ॥ नूप० ॥ दोहद संपूर्ण थयो एहनो, तव विशाद बहु पामी रे ॥ मंत्रीए राय देखाड्यो अनुक्रमे, हवे नहीं हर्षनी खामी रे ॥ ७ ॥ नूप० ॥ मंत्री कहे जब जन्म ते थाये, तब मत कहेजो राय रे ॥ मुफ कहेजो हुं योग्य करीश ते, सांनली अंगीकराय रे ॥ ८ ॥ नूप० ॥ अनुक्रमे जन्म थयो ते सुतनो, मति-सागरने दीधो रे ॥ मतिसागर कहे गर्न थकी पण, रायने डुःख बहु कीधो रे ॥ ए ॥ नूप० ॥ तेणे ए गर्ने नांहि प्रयोजन, राणी चित्त पण वशीउं रे ॥ रायने मत ए वात प्रकाशो, एम कही लेइ नीकसीउं रे॥ १० ॥ नूप० ॥ रायने कहे मृतबालक आव्यो, एम कही दासी माथे रे ॥ देइ अशोक वाडीमां जातां, दीठी पृथवीनाथे रे ॥ ११ ॥ नूप० ॥ कहे दासीने शुं ए माथे, संन्रमथी कहे दासी रे ॥ कांय नथी एम कहेतां रोयो, राये जोयुं चकाशी रे ॥ १२ ॥ नूप० ॥ बालक देखी ठपको दीधो, फट नूंमी एम न कीजे रे ॥ तुछ हृदय स्त्री कायर नावे, सघली वात कहीजे रे ॥ १३ ॥ नूप० ॥ लीधो राये बालक ऊरूफी, चिंतवे आपुं न एहने रे ॥ एहने हाथे पूरण थाये, आपुं पाले तेहने रे ॥१४॥नूप०॥ अन्य धावीने पालवा आप्यो, कहे एहने कांय थाशे रे ॥ तो मुफ हाथे विनाश लहेशो, लोकमां नलपण जाशे रे ॥ १५ ॥ नूप०॥ बहु निर्नंछा करी राणीने, तेमज मंत्रीने जाणो रे ॥ देवी मंत्री अनु-रोधे छानो, पुत्रउंछव करे राणो रे ॥ १६ ॥ नूप० ॥ आणंद नाम ठव्युं बालकनुं, मोहोटो जब ते थाय रे ॥ कलाकलाप ग्रह्यो तिणे बहुलो, मनमां हर्ष न माय रे ॥ १७ ॥ नूप० ॥ पूर्व कर्मदोषे नृप उपरे, चित्त विषम बहु राखे रे ॥ नरपतिए जुवराज कर्यो वली, राजकुलीनी साखे रे ॥ १८ ॥ नूप० ॥ इण अवसर एक अटवीवासी, डुर्मति नाम सामंतो रे ॥ डुर्गबले नवि गणे लेखामां, जाणे सिंह नूकंतो रे ॥ १ए ॥ नूप०॥ सैन्य मूक्युं ते रायने उपर, ते पण तेहथी हार्या रे॥ कोप करी हवे सिंह नरेशर, बहुबलथी परिवार्या रे ॥ २० ॥ नूप० ॥ करीय प्रयाणने चाल्यो

सन्मुख, जब थयां त्रण्य प्रयाणो रे ॥ इण अवसरे सिंधु नदीकांठे, वहेते प्रयाण ते ठाणो रे ॥ २१ ॥ जूप० ॥ समरादित्यना रासमां जाखी, बीजे खंडे ढाल रे ॥ एह अधिक उह्लासे अढारमी, पद्मविजय सुरसाल रे ॥ २२ ॥ जूप० ॥ सर्व गाथा ॥ ५३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नदीकांठे तिहां निरखीउं, अचरिज एक उदार; गजशिर वेठा गेलशुं, मनुष्यवृंद मनोहार ॥ १ ॥ अहो कष्ट अहो कष्ट ए, बोले एम बहु लोय; राजा पोहोतो रीझशुं, जइने तिहां एम जोय ॥ २ ॥ जीर्ण नाग दीठो यदा, कृष्णदेह महाकाय; मंडुकग्रास ते मोटिको, लीधो वदन लपाय ॥ ३ ॥ पोहोले वदने पेखीये, डुःखथी धूजे देह; महोटे कूररे मुखमां, नाग ग्रस्यो न संदेह ॥ ४ ॥ अजगर दिग्गज कर समो, नयन रक्त नहीं सोम; ग्रस्यो कूरर वली अजगरे, राजी थयो रोम रोम ॥ ५ ॥ अजगर जिम जिम आहारतो, तिम तिम नागने तेह; मंडुक रोतो अहिमुखे, जातो देखे जेह ॥ ६ ॥ अचरिज देखी एहवुं, जय पाम्यो जूपाल; देखी ए दृष्टांतने, चिंते चित्त विचाल ॥ ७ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ वाहालो महारो वाय छे वांसली रे ॥ अथवा शीतल जिनवर सांजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ नरपति मन मांहि चिंतवे रे, ए संसार असार ॥ मत्स गलागल थइ रह्युं रे, कोहनो कोण आधार ॥ १ ॥ वाल्हो मारो जावे छे जावना रें ॥ ए आंकणी ॥ मूढ हैयामां आणंद लहे रे, सत्पुरुषां निर्वेद ॥ देखीने पामे एम चिंतवी रे, राय थयो बहु खेद ॥ २ ॥ वा० ॥ राय विचारे करवुं किशुं रे, अजगरे बहु ग्रस्यो एह ॥ कूररे जुजंगम बहु गल्यो रे, नागे मंडुक देह ॥३॥ वा०॥ कंठगत प्राण थया सहु रे, पण न मूके कोय ॥ अधिक अधिक गलवा करे रे, एह विषम गति जोय ॥ ४ ॥ वा० ॥ एक विनाशीने छोडवुं रे, पण नवि जीवे कोय ॥ नवि उपाय ए वातमां रे, जावी जाव ते होय ॥ ५ ॥ वा० ॥ हवे जोवुं ते जुगतुं नहीं रे, गजवर प्रेर्यो ताम ॥ कटकसंयुत आवासीउं रे, करे उचित निज काम ॥ ६ ॥ वा० ॥ राति गइ अरधी जिशे रे, तव जाग्यो नरराय ॥ दीठुं

वृत्तांत ते सांजल्युं रे, अजगर मुख चित्त लाय ॥ ७ ॥ वा० ॥ विरस विपाक छे जेहना रे, फल किंपाक समान ॥ विषय आपात मात्र मीठमा रे, मूरख करे बहु मान ॥ ८ ॥ वा० ॥ वरजे पंमित एहने रे, वली ए विषयने काज ॥ लोक करे बहु पापने रे, करतां बहुत अकाज ॥ ए ॥ वा० ॥ शाश्वत धर्म छांमी करी रे, थइ सुखइछक जीव ॥ जीवित अर्थी खाय फेरने रे, तेम करे पाप सदैव ॥ १० ॥ वा० ॥ दुःख ते पापनुं फल अछे रे, दुःखीआ म करो पाप ॥ सुखीआ पण करो धर्मने रे, धर्मनुं फल लही आप ॥ ११ ॥ वा० ॥ मंमुक सम तुछ लोक छे रे, सर्प सरिखा जेह ॥ तेह ग्रसी जाये तेहने रे, तेहने कूरर सम तेह ॥ १२ ॥ वा० ॥ कूररने पण अजगर समा रे, अजगर सम पण आप ॥ नहीं निज वश जिनकारणे रे, यमदेवे संताप ॥ १३ ॥ वा०॥ एह अनर्थजर्या लोकमां रे, जे करे विषय प्रसंग ॥ ते महा मोहविलास छे रे, तेणे श्यो करीए रंग ॥ १४ ॥ वा० ॥ दुःख अनेक तरुबीज छे रे, राज्य अनर्थनी खाण ॥ पाताल परे पूराये नहीं रे, एहवी जिनवरवाण ॥ १५ ॥ वा० ॥ विवर सुलज्ज जीर्ण घर परे रे, खलसंगति परे जास ॥ विरसा वसाण ते पेखीये रे, राज्यथी नरकमां वास ॥ १६ ॥ वा० ॥ वेश्याहृदय परे वालहो रे, द्रव्य अनेक प्रकार ॥ जुजंग बहु वल्मीक परे रे, दुःखदायक दुःखकार ॥ १७ ॥ वा० ॥ जीवलोक परे जाणीये रे, काम न पूरां थाय ॥ सर्पकरंमकनी परे रे, यत्ने पाल्युं जाय ॥ १८ ॥ वा० ॥ अजिलाषा बहु जन करे रे, वेश्या यौवन रीति ॥ नवि विश्वास कोयनो होय रे, होय घणी जो प्रीति ॥ १ए ॥ वा० ॥ परजवनुं तो साधन नहीं रे, तिणे तजी राज्यप्रसंग ॥ धीर पुरुषे सेवित आदरुं रे, दीक्षा मन धरी रंग ॥२०॥वा०॥ इह जव परजव सुख करुं रे, श्रमणपणुं जग सार ॥ केम करुं प्रस्तुत कामने रे, लघुता होय एणी वार ॥ २१ ॥ वा० ॥ अथवा एह लघुता कशी रे, एक जन्मनो श्यो जार ॥ जव जवनां दुःख उपशमे रे, लेउं संजम जार ॥ २२ ॥ वा० ॥ एम करतां रजनी गइ रे, बीजे खंमे ढाल ॥ उंगणीशमी पदमे कही रे, थयो उद्योत विशाल ॥२३॥वा०॥ सर्व गाथा ५६७

॥ दोहा ॥

॥ बेठो आसन बांधीने, करी द्रव्य आवश्यक काज; मंत्रिमंमल सहु

प्रणमीउं, जब उदयो दिनराज ॥ १ ॥ विजया प्रतिहारी वरा, प्रणमी नरपतिपाय; वेगे एणी परे विनवे, माने जो महाराय ॥ २ ॥ सुणी चंड शासन घणुं, कसुं प्रयाण मुज काज; सिंह राय एम शंकीउं, आव्यो डुर्मति आज ॥ ३ ॥ आणा तुमची अतिक्रमी, तस थयो पश्चात्ताप; कंधे ते परशु करी, परवस्यो केइ नर आप ॥ ४ ॥ दर्शन इछे डुर्मति, उनो आंगण आय; करो हुकम एहने कशो, एम सुणी हवे महाराय ॥ ५ ॥ मतिसागर जे मंत्रवी, सनमुख जोयुं तास; अंगित आकार उलखी, मंत्री कहे विमास ॥ ६ ॥ शरणागत वत्सल सवे, नूपति होय एम नाल; दोष न एहमां देखीये, तेडो इहां इण ताल ॥ ७ ॥ आणा करी तव आवीउं, अवनीपतिने एम; कहे कूहाडने कोटिये, तुम्ह मन होय करो तेम ॥ ८ ॥ कहीने चरणकमल नम्यो, दान अजय तव दीध; करी आदर सत्कारीउं, करवुं ते सवि कीध ॥ ए ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ घरे आवोजी आंवो मोरीउं ॥ ए देशी ॥

॥ निज नयरे वली आवीउं, सिंह नरपति जयपुर मांहि ॥ निज आशय मंत्रिमंडल प्रत्ये, जाख्यो अति अंग उत्साह ॥ १ ॥ गति कर्म तणी विचित्र ठे ॥ ए आंकणी ॥ कहे मंत्रिमंडल सुण साहिवा, तुम्ह कृत्य ते एहज सार ॥ तुम्ह वंश थया जे राजवी, ते एमहिज पाम्या पार ॥ २ ॥ गति० ॥ सहु जीवने ए करवुं घटे, तो तुमची केही वात ॥ जिनवयण जावितमति तुम्ह तणी, तुमचो उत्तम अवदात ॥ ३ ॥ गति० ॥ सफलो मानवजव तुम्ह तणो, वनदव सरिखा ए जोग ॥ जिम जिम इंधण दीपीये, तिम तिम वधतो जाये रोग ॥ ४ ॥ गति० ॥ किंपाकनां फल सम जेहना, ग्रंथे जाख्या ठे विपाक ॥ वली मृत्यु अकाले आवी अडे, जेहनो सुर असुरमां लाग ॥ ५ ॥ गति० ॥ एम सांजली हर्ष वध्यो घणो, नृपे दीधुं अति बहुमान ॥ कुंअर अजिषेकने कारणे, राये जोशी तेड्या जाण ॥ ६ ॥ गति० ॥ कहे कहो अजिषेक दिवस हवे, तव लगन जोइ कहे एम ॥ आजथी पांचमे दाहाडे, कीजे अजिषेक ते प्रेम ॥ ७ ॥ गति० ॥ मंगल मेल्यां तस कारणे, मलजुगल प्रमुख बहु जेद ॥ नरपति मनमां एम चिंतवे, आणी चित्तमां निर्वेद ॥ ८ ॥ गति०॥

राज्यनो अभिषेक करी चलो, राज्य थापी आणंद कुमार ॥ पछे जाशुं दीक्षाकारणे, जिहां धर्मघोष अणगार ॥ ए ॥ गति० ॥ एम चिंतवी लगन लगे रहे, इण अवसर तेह कुमार ॥ नृपनो अभिप्राय अजाणतो, पूर्वकृत कर्मविकार ॥ १० ॥ गति० ॥ डुर्मतिशुं इम ठरावीउं, आपणे हणवो ए राय ॥ वली सांभली अभिषेक वारता, तव चिंता इणी परें थाय ॥ ११ ॥ गति० ॥ मिथ्याभिनिवेशे चिंतवे, डुष्ट चित्ते विपरीत वात ॥ जुउ ए अभिषेकना मिष थकी, करशे मुझने एम घात ॥ १२ ॥ गति० ॥ एम छलीउं हुं जाउं किमे, अथवा हो साची वात ॥ पण एहनुं आप्युं लेवुं नहीं, एहमां शो जस अम थात ॥ १३ ॥ गति० ॥ जो रायने मारी लीजीए, बलथी तो जस बहु थाय ॥ एण अवसरे राय बोलावीउं, तुम्हे आवो तुम्ह करुं राय ॥ १४ ॥ गति० ॥ पण इछे नहीं ते आववुं, तव साथे लेइ प्रतिहार ॥ नृप चाल्यो कुमर भवन जिहां, उभो जइ सह-साकार ॥ १५ ॥ गति० ॥ तव आणंद मनमां चिंतवे, आ छे सुंदर प्र-स्ताव ॥ ईर्ष्याए करीने बोलीउं, मार मार तणो आराव ॥ १६ ॥ गति० ॥ लेइ तरवारने मारीउं, जे पासे हतो प्रतिहार ॥ पछे आव्यो नरपति उपरे, कीधो वली गाढ प्रहार ॥ १७ ॥ गति० ॥ तिहां कोलाहल बहु उछल्यो, नृपसैन्ये कर्यो संक्षोभ ॥ आणंदकुमरने वींटीउं, मांड्यो सं-ग्राम अथोभ ॥ १७ ॥ गति० ॥ निज देहद्रोह शपथे करी, भाखे निज सैन्यने एम ॥ मुझ व्यापद न थयुं देखजो, हवे एहने मारो केम ॥१ए॥ गति० ॥ करो राज्याभिषेक ते एहने, ए जाणजो तुमचो राय ॥ इणे अवसरे कुमरे हुकम कर्यो, डुर्मतिने तिहां बोलाय ॥ २० ॥ गति० ॥ बांधो निबद्ध बंधने करी, तव आव्यो रायने पास ॥ कुलपुत्र पासीने बांधीउं, नृप एकाकी कर्यो पास ॥ २१ ॥ गति० ॥ विश्वासी पुरुषने सोंपीउं, पुरलोक निभ्रंछी ताम ॥ ठवी सर्व व्यवस्था राज्यनी, पोते थयो रायने ठाम ॥ २२ ॥ गति० ॥ एम समरादित्यना रासमां, पभ्रे वर वी-शमी ढाल ॥ कही बीजे खंडे ए सांभली, म करो कोइ कर्म जंजाल ॥ २३ ॥ गति० ॥ सर्व गाथा ॥ ५एए ॥

॥ दोहा ॥

॥ सामंतमंडल वश करी, रायने चारक मांहि; नाख्या ते चारक

हवे, वर्णवशुं दुःख ज्यांहि ॥ १ ॥ अशुचि मयतां आकरी, दाखे जिम दुर्गंध; सरीसृप फूटी जीतमां, देखाडे बहु धंध ॥२॥ माखी मसा मच्छर घणा, जणजणना जणकार; रज उकेरी मूसा करे, अधिको जिहां अंधकार ॥ ३ ॥ शिर पर कांचली सर्पनी, घणी लटके लंबायमान; लूतातंतु जाला घणी, सीमंत नरय समान ॥ ४ ॥ विषम कालनुं वासघर, सयल दुःखनो सखाय; अधर्मनी लीला अवनी, कुलघर दुःख कहाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ जीव जीवन प्रभु किहां गया रे ॥ ए देशी ॥

॥ कर्म तणी गति सांजलो रे, करजो विचारी कर्म रे ॥ एक पखे वयरे लहे रे, दुःख तो अन्यनो जर्म रे ॥ १ ॥ कर्म० ॥ राणी एणी परे सांजली रे, चारक मूक्या राय रे ॥ आक्रंद जैरव मूकती रे, म्लान थइ जस काय रे ॥ २ ॥ कर्म० ॥ महोटा मुक्ताफल सारिखां रे, आंसु झरे तेणी वार रे ॥ हार उपम पामे तदा रे, रोके चोकीदार रे ॥ ३ ॥ कर्म० ॥ मणिवलये करी रणझणे रे, एहवे करे करी जेह रे ॥ दुःखआवेश बले करी रे, ठेली काढ्या तेह रे ॥ ४ ॥ कर्म० ॥ कूटे हृदय त्रोडे केशने रे, मुखमां सास न माय रे ॥ नयन केशे करी ढांकीयां रे, रखे पतिअवस्था देखाय रे ॥ ५ ॥ कर्म० ॥ कुसुमावली परमुख सहु रे, पोहोतुं अंतेउर तब रे ॥ लोहनिगडे पूर्यो नरपति रे, दीठो चारक जब रे ॥ ६ ॥ कर्म० ॥ अनुचित सेव्युं बहु अमे रे, मानुं देखावती एम रे ॥ हारपणुं मानुं दुःखथी रे, अधिक कूटे धरी प्रेम रे ॥ ७ ॥ कर्म० ॥ नरपति देखी एहवुं रे, रक्षकपुरुषनी पास रे ॥ कहेवरावे ए शुं करो रे, निःफल एह प्रयास रे ॥ ८ ॥ कर्म० ॥ जेहथी अधर्म परंपरा रे, ते केम करीये शोक रे ॥ लक्ष्मी चंचल ज्युं विजली रे, माने स्थिर मूढ लोक रे ॥ ९ ॥ कर्म० ॥ स्वप्न समा संगम कह्या रे, नवि समजे एह जीव रे ॥ बेहुना रागविलासना रे, एहवा एम सदैव रे ॥ १० ॥ कर्म० ॥ अविवेकी जन आचरे रे, तेम करीये न विलाप रे ॥ सुख दुःख सहुये अनुजवे रे, केवल कीधां आप रे ॥ ११ ॥ कर्म० ॥ जीवलोकमां सार जे रे, श्रीजिनवयण रसाल रे ॥ जवसायर तरीये जिणे रे, पामीये सुख विसाल रे ॥ १२ ॥ कर्म० ॥ ते पाम्यां जो जाग्यथी रे, आदरो तेहज

सार रे ॥ एह टाली बीजो नहीं रे, दुःख भोगावणहार रे ॥ १३ ॥ कर्म० ॥ नृपतिए एम जे कह्युं रे, सांभळ्युं सहुये तेह रे ॥ एह एमज एम मानतां रे, नहीं अन्यथा कांइ एह रे ॥ १४ ॥ कर्म० ॥ नृपतिनी आणा लही रे, आणंदनी वली एम रे ॥ बलात्कारे आणा लही रे, धारी धर्मशुं प्रेम रे ॥ १५ ॥ कर्म० ॥ गंधर्वदत्ता विद्याधरी रे, आव्यां श्रमणी शुद्ध रें ॥ पासे प्रव्रज्या आदरे रे, तत्त्वजाण अति बुद्ध रे ॥ १६ ॥ कर्म० ॥ धन्य ए राणी एहनी रे, धन्य ए राय सुजाण रे ॥ जाएयुं पण एहनुं खरुं रे, एहनुंज तत्त्वविन्नाण रे ॥ १७ ॥ कर्म० ॥ बीजे खंडे निरमली रे, एकवीशमी ए ढाल रे ॥ समरादित्यचरित्रनी रे, पद्म कहे सुरसाल रे ॥ १८ ॥ कर्म० ॥ सर्व गाथा ॥ ६२२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर आणंद अति, कदर्थना करे नित्य; उपशम नृप अति आदरे, क्रोध न करे कुमित्त ॥ १ ॥ मन चिंते नहीं माहरुं, आयु अधिक ए वार; अणसण हुं हवे आदरुं, पामुं जिम भवपार ॥ २ ॥ एम करी अणसण आदर्युं, आणंद अवनीपाल; सांभली अणसण सिंहनुं, कोप्यो कपुत कराल ॥ ३ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ हांरे म्हारे जोवनीयानो लटको दहाडा चार जो ॥ ए देशी ॥

॥ हांरे म्हारे देवशर्मा नामे कोइ पुरुष महंत जो, तेहने रे एम वात शिखावे जइ कहो रे लो ॥ हांरे० ॥ भोजन कक्ष्य के नहींतर मारीश हाथ जो, एम सांभलीने गयो नृप पासे दुःख ग्रह्युं रे लो ॥ १ ॥ हांरे० ॥ जइने दीठो राय बेठो शुभ ठाय जो, बोले रे एम वाणी सुजाण सोहामणी रे लो ॥ हांरे० ॥ दैववशे प्राणीने सुख दुःख होय जो, एह दैव सहु अवगुणग्राही शिरोमणि रे लो ॥ २ ॥ हांरे० ॥ विनय थकी पण नवि आराधवा योग्य जो, इङ्गित अवसर पण उलखे ए कदा रे लो ॥ हांरे० ॥ केवल जनने अनरथ केरुं ठाण जो, मत्त हस्ती परे स्वेच्छाचारी ए सदा रे लो ॥ ३ ॥ हांरे० ॥ गंगप्रवाह परे ऋजु वक्र सदाय जो, अंधकार परे करे निपात सहु तणो रे लो ॥ हांरे० ॥ विषग्रंथि परे सर्व स्वाद प्रतिकूल जो, अनुकूल ए तो जाणो असमीहित

तणो रे लो ॥ ४ ॥ हांरे० ॥ यद्यपि एम छे तोपण पुरुषाकार जो, नवि छोमीजे सत्पुरुषे क्षण मातथी रे लो ॥ हांरे० ॥ पूर्व उपार्जित कर्म परिणाम ते दैव जो, ते पुरुषाकारे जींताये जातिथी रे लो ॥ ॥ ५ ॥ हांरे० ॥ ते कारण अवलंबो पुरुषाकार जो, आहार ग्रहण करीये जिम धरीये देहने रे लो ॥हांरे०॥ जीवता प्राणी आपद् आणी अंत जो, पामे रे संपद् जाये आपद् तेहने रे लो ॥ ६ ॥ हांरे० ॥ राजा बोले साचां वयण रसाल जो,देवशर्मा शुजकर्मा सांजल माहरी रे लो॥ हांरे०॥ वात सुजात न मूक्यो पुरुषाकार जो,देश काल संजाली वात में आचरी रे लो ॥७॥हांरे०॥ लीधी दीक्षा जावथी शिक्षा धारी जो,संपद् अजिलाषा नहीं जाषा शी कहो रे लो ॥ हांरे० ॥ उचित काल संजाली में अणसण कीध जो, आहार ग्रहण नवि करीये कोइ परे लहो रे लो ॥ ८ ॥हांरे०॥ तव ते बोल्यो चित्त नवि डोल्यो तुम जो, आहार लेवामां पण तुम सुत ते कोपशे रे लो ॥ हांरे० ॥ राजा कहे ए लहे अकारण कोप जो, एह कोपी शुजलोपी शुं आरोपशे रे लो ॥ ए ॥ हांरे० ॥ सच्च पइन्ना किन्ना ते नवि जाय जो, तव ते कहे तुमे सुत वृत्तांत जाणो सवे रे लो॥ हांरे० ॥ तुम्ह शरीरने पीम करे रखे एह जो, इवणां वयण कटुक टुक मुखथी ते चवे रे लो ॥ १० ॥ हांरे० ॥ चिंतवे कैतवे इण अवसर नृप-पुत्र जो, केम नवि आव्यो जाव्यो मनसां जूपति रे लो ॥ हांरे० ॥ अ-मर्ष जरी उदीरीउं क्रोध कषाय जो, खड्ग लेइ आव्यो जाव्यो निज रूपथी रे लो ॥ ११ ॥ हांरे० ॥ आहार ग्रहण करव नहींतर छेडुं शीश जो, इणे करवाल कराल उपम जमजीहनी रे लो ॥ हांरे० ॥ राय कहे कोण बीक लहे छे एह जो, काया माया प्राहुणी कोइक दीहनी रे लो ॥ १२ ॥ हांरे० ॥ मरण शरण तो अवश्य करे ए जीव जो, जाणे जेह अशाश्वत नाणे ते खेदने रे लो ॥ हांरे० ॥ गर्जसमयथी समय समय मरे नित्य जो, जीवंतो किम कहीये ए पण वेदीने रे लो ॥ १३ ॥ हांरे० ॥ परलोकनो बहु लोक तणे ए साथ जो, चालंतां वर म्हालंतां कोइ आगले रे लो ॥ हांरे० ॥ पोहतो वहेलो कहो तो श्यो जय तब जो, आयु अनित्य व्यतीत थये सागर गले रे लो ॥ १४ ॥ हांरे० ॥ सूना हाटे वाटे आव्यो जीव जो, तेहने जीवन आशा शी एम जाणीये रे लो ॥

हांरे० ॥ जन्म मरणमां नहीं को शरण विचार जो, व्रत आदरता धरता चित्त जिनवाणीए रे लो ॥ १५ ॥ हांरे० ॥ जरा मरण ने रोग शमण जिनवयण जो, एह रसायण अमयसुसायण सार छे रे लो ॥ हांरे० ॥ पीधुं कीधुं काम तिणे नहीं नीति जो, जन्म मरणनी जाणुं तिणे मुऊ पार छे रे लो ॥ १६ ॥ हांरे० ॥ शोध्यो आतम पापमेल सवि धोय जो, स्वजन कुटंब निगम्द ते नांगी लोहनी रे लो ॥ हांरे० ॥ मरण काल विकराल करे शुं तास जो, जेह मनुष्ये पयम्ही जींती मोहनी रे लो ॥१७॥ हांरे० ॥ एह कलेवर घरमां पण न पीपास जो,तप धन जेहने तेहने शरीरसंलेषीउं रे लो ॥ हांरे० ॥ सुविहित विहित मरण विधिपूर्वक जेण जो, तेहनुं रे वर मरण ते उत्सव देखीशुं रे लो ॥ १८ ॥ हांरे० ॥ तप पाथेय ग्रह्युं जिणे साथे शुद्ध जो, मरण समाधे निर्बाधे मार्गे मुनि रे लो ॥ हांरे० ॥ जे मरणे करी स्वर्ग के होय अपवर्ग जो, तेहवुं मरण तो उत्सवनूत मागे गुणी रे लो ॥ १९ ॥ हांरे० ॥ एणी परे नरपति शुज्ञमति बोले बोल जो, बीजे खंडे ढाल ए बावीशमी कही रे लो ॥ हांरे० ॥ धीरज रायनुं वीर्य अतिशय देखी जो, पद्मविजय कहे एम राखो दृढता सही रे लो ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ६४५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कालो सर्प कृतांत छे,रोग व्यसन विषराशि; दीर्घ दाढी ते देखीये, पूंठी न मूके पास ॥ १ ॥ जालमशुं जुद्ध नवि होये, नासी शकाये नांहि; सुर असुरा नहीं आशरो, जरा रोग नहीं जाहि ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

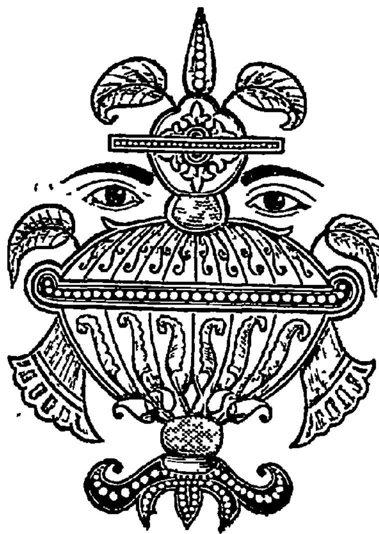
॥ करकंडूने करुं वंदना हुं वारी लाल ॥ ए देशी ॥

॥ रोग शोक मानव घणा ॥ हुं वारी लाल ॥ व्याधि जरा ने वियोग रे ॥ हुं० ॥ तेहनो शो आशरो हुए ॥ हुं० ॥ तेणे ए धर्म संयोग रे ॥ हुं० ॥ १ ॥ जिनवयणे एम दृढ रहो ॥ हुं० ॥ ए आंकणी ॥ पण एक निमेष जे जीवीये ॥ हुं० ॥ ते जमराय प्रमाद रे ॥ हुं० ॥ कायर सेवित मत दीउं ॥ हुं० ॥ मुऊ अपयशनो वाद रे ॥ हुं० ॥ २ ॥ जि० ॥ मृत्युदाढे जे आवीउं ॥ हुं० ॥ होय जो इंद्र नरींद्र रे ॥ हुं० ॥ पण ते नीकली नवि शके ॥ हुं० ॥ एणी परे यमनृपफंद रे ॥ हुं० ॥ ३ ॥ जि० ॥ मृतमा-

रण मात्रे करी ॥ हुं०॥ लागे निज कुल लाज रे ॥हुं०॥ ए तुऊ चिंता मुऊ घणी ॥ हुं० ॥ नहीं मुऊ जीवित काज रे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ जि० ॥ आहार-त्याग निज वयणथी ॥ हुं० ॥ ते केम लेउं आज रे ॥ हुं० ॥ मरण रुडुं नहीं जीववुं ॥ हुं० ॥ व्रत खंमी सुण राज रे ॥ हुं०॥ ५ ॥ जि०॥ यतः ॥ " वरमग्गिमि पवेसो, वरं विसुद्धेण कम्मुणा मरणं ॥ मा गहियवयन्नंगो, मा जीयं खलियसीलस्स ॥१॥" एणी परे वयण ते सांजली ॥हुं०॥ कोपानले ज्वल्यो तेह रे ॥हुं०॥ नयन कस्यां अति रातमां ॥हुं०॥ खड्गप्रहार करेह रे ॥हुं०॥ ६ ॥जि०॥ मारुं कीधुं मूरखे ॥हुं०॥ कीधो शिर पर घाय रे ॥हुं०॥ नमो जिणाणं कहे मुदा ॥ हुं० ॥ तत्त्वज्ञानी तेह राय रे ॥ हुं० ॥७॥जि०॥ कर्म कस्यां जे जे नरे ॥ हुं० ॥ ते ते न्नोगवे आप रे ॥ हुं० ॥ न्नोगवतां नय शुं करे ॥ हुं० ॥ करतां न बीये पाप रे ॥ हुं० ॥ ७ ॥ जि० ॥ परतो निमित्ते मल्यो तने ॥ हुं० ॥ नहीं एहनो अपराध रे ॥हुं०॥ गुण अपराध पोते कस्या ॥ हुं० ॥ आवे तेह अगाध रे ॥ हुं० ॥ ए ॥ जि० ॥ यतः ॥ "सव्वो पुव्वकयाणं, कम्माणं पावए फलविवागं ॥ अवराहे सुगुणेसु य, निमित्तमेत्तं परो होइ ॥ १ ॥ अप्पा अरिहो अणवठियस्स, अप्पा जसो सीलमउ नरस्स ॥ अप्पा ऽुरप्पा अणवठियस्स, अप्पा जीअप्पा सरणं गइय ॥ २ ॥" एम चिंतवतां रायने ॥ हुं० ॥ कीधो बीजो घाय रे ॥ हुं० ॥ पापीए पाप कस्युं घणुं ॥ हुं० ॥ कलुषित अध्यवसाय रे ॥ हुं० ॥ १० ॥ जि० ॥ मरण लही ते महातमा ॥ हुं० ॥ अध्यवसाय शुन्न जास रे ॥ हुं० ॥ सनत्कुमारमां उपना ॥ हुं० ॥ कांति द्युति वर खास रे ॥ हुं० ॥ ११ ॥ जि० ॥ पांच सागरने आउखे ॥ हुं० ॥ लीलाराम विमान रे ॥ हुं० ॥ सुखसागरमां ऊीलतां ॥ हुं० ॥ काढे काल अमान रे ॥ हुं० ॥ १२ ॥ जि० ॥ आणंद राज्य पाली करी ॥ हुं० ॥ मरीने नारकी थाय रे ॥ हुं० ॥ एक सागरने आउखे ॥ हुं० ॥ रतनप्रन्नाने ठाय रे ॥ हुं० ॥ १३ ॥ जि० ॥ सिंह आणंद पूरा थया ॥ हुं० ॥ बाप बेटा संबंध रे ॥ हुं० ॥ खंम बीजो पूरण थयो ॥ हुं० ॥ ढाल त्रेवीश प्रबंध रे ॥ हुं० ॥ १४ ॥ जि० ॥ पटधर सिंह सूरीशना ॥ हुं० ॥ सोन्नागी शिरदार रे ॥ हुं० ॥ सत्यविजय गुरु संयमी ॥ हुं० ॥ कपूरविजय व्रतधार रे ॥हुं० ॥ १५ ॥ जि० ॥ तास अंतेवासी नला ॥ हुं० ॥ खिमाविजय जस नाम

रे ॥ हुं० ॥ गीतारथ गुण आगला ॥ हुं० ॥ जिनविजय तस नाम रे ॥ हुं० ॥ १६ ॥ जि० ॥ तेहना शिष्य सोहामणा ॥ हुं० ॥ ज्ञानी गुणभंडार रे ॥ हुं० ॥ उत्तमविजय ए नामथी ॥ हुं० ॥ उत्तम चरित्र विचार रे ॥ हुं० ॥ १७ ॥ जि० ॥ अढार उंगणच्यालमां ॥ हुं० ॥ संवत्सर गुरुवार रे ॥ हुं० ॥ उत्सव महोत्सव अति घणा ॥ हुं० ॥ तिणे वरसे तपकार रे ॥ हुं० ॥ १८ ॥ जि० ॥ पोष शुक्ल तेरश दिने ॥ हुं० ॥ लींबडी नगर मझार रे ॥ हुं० ॥ बीजो खंड पूरण कर्यो ॥ हुं० ॥ संघआग्रह सुखकार रे ॥ हुं० ॥ १९ ॥ जि० ॥ ते गुरु उत्तमविजयनी ॥ हुं० ॥ सान्निध्य लही सुरसाल रे ॥ हुं० ॥ पद्मविजय कह्यो प्रेमशुं ॥ हुं० ॥ सुणतां मंगलमाल रे ॥ हुं० ॥ २० ॥जि०॥ इति श्रीसंविज्ञपक्षीय पंडितप्रवर श्रीमदुत्तमविजयगणिशिष्यपंडित श्रीपद्मविजयगणिविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे सिंहनृपानंदकुमारयोः संगतयोः द्वितीयो नरभवः समाप्तः ॥ द्वितीयखंडे सर्व गाथा (६६७) उक्त गाथा (११)

॥ इति श्री समरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे द्वितीयः खंडः संपूर्णः ॥ २ ॥



॥ अथ ॥

॥ तृतीय खंडस्य प्रारंभोऽयं ॥

॥ दोहा ॥



॥ शांति जिनेसर सोलमा, दान अभय दातार; ग्रही व्रत उपम भव गएया, वंडु वारंवार ॥ १ ॥ अहि अहिपति कीधो अधिक, अवलपुरुष आदेय; कमठ हठी हठ काढीउं, वंडु श्री वामेय ॥ २ ॥ वामा संगथी वेगला, वामेतर गुणवंत; गुरु गुरुगुणगण आगला, महिमावंत महंत ॥ ३ ॥ वीजो भव एम बोलीउं, बाप बेटा संबंध; मावभी तसु मत्सर मने, धारे अतिशय धंध ॥ ४ ॥ तेह शिखि जाविणी तणो, कहुं रुडो अधिकार; त्रीजे खंडे ते सुणो, आणी हर्ष अपार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

आठे लालनी देशी ॥

॥ जंबूद्वीप अनुप, बसें सीत्तेर एक ऊण ॥ आठे लाल ॥ पाढ तेहमां षट कुलगिरि जी ॥ १ ॥ वृत्त वैताढ्य ते चार, चोत्रीश दीरघ सार ॥ आ० ॥ दो चित्र विचित्र दो जमग बे जी ॥ २ ॥ गजदंता वर चार, सोल कह्या वखार ॥ आ० ॥ दो शय कंचनगिरि वली जी ॥ ३ ॥ मेरु पर्वत एक, वचमां ते सुविवेक ॥ आ० ॥ तेहथी पश्चिम दिशे जइ जी ॥ ४ ॥ नगरी नामे कोश, जेहनो सबलो जोश ॥ आ० ॥ लोक बहु वासे वसे जी ॥ ५ ॥ व्याधि वेदन नहीं रोष, नहीं परचक्रनो शोष ॥ आ० ॥ सुरपुर सम शोभा मली जी ॥ ६ ॥ नारीनो सरल स्वभाव, स्थिरस्नेही गत पाव ॥ आ० ॥ राजधानी पंचवाणनी जी ॥ ७ ॥ लोक वोले सत्य वाच, नहीं कोइ होय जिम काच ॥ आ० ॥ राजा अजितसेन तिहां किणे जी ॥ ८ ॥ संग्रामे जयवाद, पाम्यो ते अविवाद ॥ आ० ॥ भूप घणा पाये नमे जी ॥ ९ ॥ तेहने ब्राह्मण एक, ते परधान विवेक ॥ आ० ॥ इंद्रशर्मा नामे थयो जी ॥ १० ॥ शुभंकरा तस नारी, तेहनी कूख मझारी ॥ आ० ॥ आणंद नारकी उपन्यो जी ॥ ११ ॥ काय करी

सागर आय, वली संसार नमाय ॥ आ० ॥ ऊणा चार सागर पछी जी ॥ १२ ॥ पुत्रीपणे ते आय, जालिणी नाम ते ठाय ॥ आ० ॥ आवी यौवनवय तदा जी ॥ १३ ॥ ते नृपनो परधान, बुद्धिसागर अ-निमान ॥ आ० ॥ तेहनो ब्रह्मदत्त सुत नलो जी ॥ १४ ॥ तेहने दीधी तेह, सुख जोगवे ससनेह ॥ आ० ॥ काल गयो वही केटलो जी ॥१५॥ इण अवसरे सिंहदेव, जालिणी कूखे हेव ॥ आ० ॥ उपनो कर्मशक्ति घणी जी ॥ १६ ॥ देखे सुपने ताम, कनककलश अनिराम ॥ आ० ॥ पूर्ण मुखमां पेसतो जी ॥ १७ ॥ मातने नवि संतोष, नीकलीउं निज जोष ॥ आ० ॥ नागो ते पण किमहीके जी ॥ १८ ॥ जागी स्वपनुं देख, नवि कह्युं पतिने रेख ॥ आ० ॥ शुन अशुन संकीर्णथी जी ॥ १९ ॥ गर्न ते वधतो जाय, देह मन पीमा थाय ॥ आ० ॥ जाणे पाडुं ए गर्नने जी ॥ २० ॥ करे उपाय अनेक, कर्मविपाक अतिरेक ॥ आ० ॥ गर्न कुशल क्षेमे रह्यो जी ॥ २१ ॥ जाणी ब्रह्मदत्ते वात, परिजनने समजात ॥ आ० ॥ जालवजो तुमे गर्नने जी ॥ २२ ॥ प्रसवसमय जिम एह, मारी न नाखे जेह ॥ आ० ॥ सावचेत रहेजो सहु जी ॥ २३ ॥ जब ए जन्म ते थाय, कहेजो मुजने आय ॥ आ० ॥ जेम नवि जाणे ब्राह्मणी जी ॥ २४ ॥ उपनो दोहद तास, जिन पूजुं सुविलास ॥ आ० ॥ तपसीनी नक्ति करुं जी ॥ २५ ॥ प्राणीने देउं दान, धर्म सांनलीये कान ॥ आ० ॥ ते नरतारे पूरीया जी ॥ २६ ॥ गर्नप्रनावे एम, उत्तम वस्तुनो प्रेम ॥ आ० ॥ जन्मसमय जणयो पुत्रने जी ॥ २७ ॥ चिंतवे तेहनी माय, मिलीउं ए समुदाय ॥ आ० ॥ केम मारी शकीये इहां जी ॥ २८ ॥ जाणी तस अनिप्राय, बंधुजीवा सखी थाय ॥ आ० ॥ नाखे एम तस वयणमां जी ॥ २९ ॥ एह गर्न छे पाप, दीये तुमने संताप ॥ आ० ॥ एह गर्नने परठवो जी ॥ ३० ॥ अंतर नरीउं कषाय, बोली शुनंकरा माय ॥ आ० ॥ लाजती कहे जाणो तुमे जी ॥ ३१ ॥ लीधो बालक तेह, कह्युं ब्रह्मदत्तने एह ॥ आ० ॥ छानो पाले तेहने जी ॥ ३२ ॥ लोकमां काढी वात, बालक मृत आयात ॥ आ० ॥ एम करतां केइ दिन गया जी ॥ ३३ ॥ थापे तेहनुं नाम, शिखिकुमार अनिराम ॥ आ० ॥ वधतो कला ग्रहतो थको जी ॥ ३४ ॥ समरादित्यनो रास, त्रीजे खंडे उल्लास

आ० ॥ ढाल प्रथम पन्ने कही जी ॥ ३५ ॥ सर्व गाथा ॥ ४०॥

॥ दोहा ॥

॥ जाण्यो विचार निज जननीनो, वास्यो अति वैराग; जननीए पण जाणीयो, एह संबंध अन्नाग ॥ १ ॥ क्रोध थकी ते कलकली, न्नाखे पतिने न्नाख; जो तुऊ एहवुं काज बे, तो हवे मुऊ मत राख ॥ २ ॥ सयल काम तज्यां सामटां, पाणी न करे पान; शिखिकुमर एहवुं सुणी, उद्वेग करे अमान ॥ ३ ॥ घरथी नीकलीउं घणुं, चिंते चातुर चित्त; माता पण मातुं करे, अघ आव्युं अपवित्त ॥ ४ ॥ इणे व्यतिकरथी डुःखीउं, तात अति खेदात; जुगतुं नवि रहेवुं जरा, एम चिंती अवदात ॥ ५ ॥ नीकलीउं पूछ्या विना, अशोकवन उद्यान; पोहोतो तव तिहां पेखीया, मुनिवरजी महिराण ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीजी ॥

॥ मोहनगारा हो राज रुमा म्हारा सांन्नल सुगुणा सुमा ॥ ए देशी ॥ अथवा शालिन्नद्र न्नोगी रह्यो, ए देशीमां पण चाले बे ॥

॥ वहु शिष्ये करी परिवस्या जी, गुणमणि रयणन्नंमार ॥ एक असंजम टालता जी, दोय ध्यान परिहार के ॥ १ ॥ मुनिवर वारु हो राज वंदो, तुमे न्नव न्नव पाप निकंदो ॥ मु० ॥ ए आंकणी ॥ त्रण दंमथी विरमीया जी, न करे चार कषाय ॥ पांच इंद्रिय निग्रह करे जी, पाले जे षटकाय के ॥ २ ॥ मु० ॥ मूकाणा न्नय सातथी जी, टाव्यां अम मदगण ॥ नव ब्रह्मचर्य गुप्ति धरे जी, टाले पाप नियाण के ॥ ३ ॥ मु० ॥ दशविध संयम पालता जी, अंग अग्यारना जाण ॥ वारे न्नेदे तप करे जी, एम गुणरयणनी खाण के ॥ ४ ॥ मु० ॥ विजयसिंह नामे गणी जी, देखी लह्यो आणंद ॥ चिंतवे धन्य ए मुनिवरु जी, सेवे धर्म अमंद के ॥ ५ ॥ मु० ॥ अथिर संसारसनेह बे जी, केम कीधो ए त्याग ॥ पूबुं कारण एहने जी, केम उपन्यो वैराग्य के ॥ ६ ॥ मु० ॥ जइ प्रणम्या मुनिराजीया जी, मुनिए दीउं धर्मलाह ॥ बेठो मुनिचरणे हवे जी, सांन्नलवा धरे चाह के ॥ ७ ॥ मु० ॥ पूबे केम तमे पामीया जी, एणी परे न्नवउद्वेग ॥ सर्वांगे सुंदर तुमे जी, लावण्य अतिहि विवेक के ॥ ८ ॥ मु० ॥ तनुसुंदरता सूचवे जी, विन्नव तणो प्राग्न्नार ॥ विन्नवविस्तर वली

सूचवे जी, स्वजन कुटुंब विस्तार के ॥ ए ॥ मु० ॥ स्वजनवर्ग छांमी करी जी, थया निर्मम निःसंग ॥ कहो कारण गुरु तेहनुं जी, सुणवानो मुऊ रंग के ॥ १० ॥ मु० ॥ गुरु जाखे ए शरीरमां जी, शुं दीठुं तें सार ॥ हाम चाम शोणित जर्युं जी, अशुचि तणो जंमार के ॥११॥ मु० ॥ अर्थ अनर्थनुं मूल छे जी, तेहमां श्यो प्रतिबंध ॥ श्यो प्रतिबंध सुपन समो जी, सयण तणो संबंध के ॥ १२ ॥ मु० ॥ सयण वच्चे रह्यो टलवले जी, रोग लह्यो जब आप ॥ वहेंची न लीये रोगने जी, सयण करे संताप के ॥ १३ ॥ मु० ॥ मरी जाय वली एकलो जी, सयण जोइ रहे ताम ॥ रोवे नयण आंसु ऊरे जी, सयण कुटुंबनो ग्राम के ॥ १४ ॥ मु० ॥ बांधे कर्म ते एकलो जी, जोगवे तस फल एक ॥ कोण स्वजन परजन कहो जी,चिंतवो धरीय विवेक के ॥ १५ ॥ मु०॥ वैरी थाये मावमी जी, पुत्र ते वैरी थाय ॥ अनवस्थित ए जावमां जी, सयणमां किम मुंऊाय के ॥ १६ ॥ मु० ॥ इहां दृष्टांत ते माहरो जी, सांजल थइ सावधान ॥ इणहिज विजयमां नीपन्यो जी, लछीनिलयपुर जाण के ॥१७॥ मु० ॥ सार्थवाह नामे तिहां जी, सागरदत्त सुजाण ॥ श्रीमती तेहनी जार्या जी, हुं तस पुत्र वखाण के॥ १८ ॥ मु० ॥ कुमर अवस्थाए वर्त्ततो जी, गयो ते नगर आसन्न ॥ लक्ष्मी पर्वत उपरे जी, क्रीमा करवा मन्न के ॥ १ए ॥ मु० ॥ तिहां दीठी एक स्थानके जी, नालीएरी सुविशाल ॥ ।स्निग्ध पत्र संचय मल्यो जी, दीये कौतुक ते जालि के ॥२०॥ मु० ॥ एक पाद ते नीकली जी, पेठो पृथवी मांहि ॥ कौतुकथी जोतो थको जी, चिंते ते मन मांहि के ॥ २१ ॥ मु० ॥ एवमो वृक्ष एवडे थकी जी, उतरीउं ए पाद ॥ धरतीमां पेठो वली जी, कारण कोइ आववाद के ॥ २२ ॥ मु० ॥ त्रीजे खंमे एणी परे जी, बेठो करे विचार ॥ वीजी ढाल पदम कहे जी, पुण्ये जय जयकार के ॥२३॥ मु०॥ सर्व गाथा ॥६ए॥

॥ दोहा ॥

॥ एणे अवसर मुऊ उपनो, मनमां अति प्रमोद; वाया सुरजि वायरा, आवे अति आमोद ॥ १ ॥ सहज वैर विसारीने, सावज प्रमुख सनेह; षट्ऋतु कुसुम फूल्यां खरां, ज्रमर गुंजत जमेह ॥ २ ॥ लक्ष्मी पर्वत लहकीउं, देतो अति आणंद; ताप विना सूरज तपे, पाम्यो पर-

माणंद ॥ ३ ॥ हुं चिंतुं अहो एहशुं, भुवन अठेरा भूत; इणे अवसर तिहां आवीउं, देवसमूहे दित्त ॥ ४ ॥ रविमंमल परे राजतुं, जय जय-रवथी जोर; कुसुमवृष्टि वहु कीजतें, रयण मंमित तिणे ठोर ॥ ५ ॥ पश्चिम दिशिथी परिवस्युं, देवसमूहे दीठ; धर्मचक्र धर्मधोरीनुं, आव्युं अति उक्किठ ॥ ६ ॥ श्वेतांवर वहु साधुजी, पाउ धास्या परिवार; आव्या हवे इणे अवसरे, प्रज्जुजी परम कृपाल ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

करेलमां घमी दे रे ॥ए देशी ॥

॥ चक्र चले आकाशमां, छत्र चले आकाश ॥ देवडुंडुजि वली वाजती, गाजी रह्युं आकाश ॥ १ ॥ जविक जन हरखो रे; जगतमां जोतां देव नहीं एह सरिखो रे ॥ ज० ॥ ए आंकणी ॥ गगने चामर चालतां, सिंहासन पायपीठ ॥ कनककमल उपर ठवे, पादकमल में दीठ ॥ २ ॥ ज० ॥ अजितदेव तिर्थंकरु, सुर नर वहु गुण गाय ॥ धूपघटी महके वली, पाउ धास्या तिणे ठाय ॥ ३ ॥ ज० ॥ जवसायर तरीया जीके, परीया तास्या जेण ॥ सरीयां कारज आपणां, दीठा जव नयणेण ॥ ४ ॥ ज० ॥ हर्ष थयो मुजने घणो, नाठो रोग मिथ्यात ॥ समकित अमृत पामीयो, हरख्यो साते धात ॥ ५ ॥ ज० ॥ चिंत्युं चित्तमां एहवुं, धन्य थयो हुं आज ॥ जगचिंतामणि सारिखा, दीठा श्री जिनराज ॥ ६ ॥ ज० ॥ रजत कनक रयणां तणा, देव रचे प्राकार ॥ कनक रयण मणिमय तणां, कोसीसां सुप्रकार ॥ ७ ॥ ज० ॥ केतु पताका सोहती, तोरण विचित्र प्रकार ॥ वृक्ष अशोक वारस गुणो, द्वादश छत्र उदार ॥८॥ज०॥ दिव्य वैडूर्य सिंहासणे, चामर चोवीश जोमी॥ धर्मध्वज मंमित वली, सहस जोयण नहीं जोमी ॥ ए ॥ ज० ॥ समवसरण वेठा प्रज्जु, अजितदेव जगवान ॥ धर्मकथा प्रारंजता, जवजल नाव समान ॥ १० ॥ ज० ॥ वें पासे दोय देवता, वेणु वजावे सार ॥ प्रज्जु वाणीने पूरता, दिव्य ध्वनि परकार ॥ ११ ॥ ज० ॥ वीजां पण वाजां सवे, देशना राग प्रमाण ॥ उतरे एम अतिशय प्रज्जु, श्यां श्यां करुं वखाण ॥ १२ ॥ ज० ॥ देशनामां हवे जाखीउं, एह अथिर संसार ॥ मुजने पण ते परिणम्यो, उपनो हर्ष अपार ॥ १३ ॥ ज० ॥ पूब्युं में प्रणमी करी, जाखो करुणा-

वंत ॥ एक अचरिज मुझ मोटकुं, केम होशे नगवंत ॥ १४ ॥ न० ॥ पाद नालीएरी केरमो, केम उतरीयो एह ॥ एहनी हेठल द्रव्य छे, के नहीं मुझ संदेह ॥ १५ ॥ न० ॥ छे तो श्ये परिमाण छे, कोणे थाप्युं एह ॥ तेहनो किश्यो विपाक छे, परनवे नोगवे जेह ॥१६॥न०॥ परमेश्वर नाखे हवे, उतरीउ एह पाय ॥ लोनदोषथी जाणजो, द्रव्य अछे इण ठाय ॥ १७ ॥ न० ॥ सोनश्या सात लाख छे, तुम्हे ने पादनो जीव ॥ बिहु जणे मली दाटीउं, तास विपाक अतीव ॥ १८ ॥ न० ॥ धर्मसाधक विपाक छे, एम बोल्या जव स्वामी ॥ तव में फरीने पूछीउं, विनये करी परणाम ॥ १९ ॥ न० ॥ किम म्हें ने नालीएरीए, दाट्युं धन ए एम ॥ विपाकमां अंतर पड्यो, एह थइ गयुं केम ॥ २० ॥ न० ॥ प्रनुजी कहे विस्तारथी, एह विपाकनी वात ॥ देखीतुं होय थोमलुं, पण बहु उदये आयात ॥ २१ ॥ न० ॥ समरादित्यना रासमां, त्रीजे खंडे एह ॥ ढाल त्रीजी पन्ने कही, मधुर सितार्थी जेह ॥२२॥ न० ॥ सर्व गाथा ॥९७॥

॥ दोहा ॥

॥ एह विजयमां अमरपुर, अमरदेव अनिधान; गाथापति तस गुणनरी, सुंदरी स्त्री शुनवान ॥ १ ॥ दोय पुत्र तुमे दीपता, आदि गुणचंद एक; वालचंद बीजो वली, कही न जाये टेक ॥ २ ॥ यौवन पाम्या जेटले, नरी करीयाणां नाय; इणहिज देशे आवीया, वेगे करी व्यवसाय॥३॥ आव्यो लान मन इछीउं, इणे अवसर एक राय; विजयवर्म नामे वमो, आवे रण करणाय ॥ ४ ॥ ते नगरीनो अधिपति, सूरतेज निज साथ; सार सार निज साथ ल्ये, इण पर्वत करी आथ ॥ ५ ॥ चढीउं नरपति चोंपशुं, परबलनो नय पामी; तुमे पण बिहु पोतातणो, दोड्या लेइ दाम ॥ ६ ॥ इणे थानक आवी करी, बिहु जणे करी विचार; द्रव्य नूमिमां दाटीयुं, सुपरे कीधी सार ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥

॥ कोइक दिन हवे गुणचंद चिंतवे, लोनदोषथी एम जी ॥ नाग ए लेशे रे नाइ माहरो, मरण लहे करुं तेम जी ॥ १ ॥ गतिपरिमाणे रे मति एम उपजे ॥ ए आंकणी ॥ जेरप्रयोगे मार्यो नातने, स्वारथीया

सवि लोक जी ॥ लोजदोषथी रे न गएयो जाइने, करवो मोह ते फोक जी ॥ २ ॥ ग० ॥ शुद्ध स्वजावे रे तुमे तिहांथी मरी, व्यंतरमां थया देव जी ॥ नाग ते करज्यो रे गुणचंदने तिहां, मरण लह्युं ततखेव जी ॥ ३ ॥ ग० ॥ इव्य न जोगव्युं रे कर्म बंधाइउं, रलप्रजाए जाय जी ॥ तुमे पण देशे रे ऋणुं पल्यनुं, चवीया जोगवी आय जी ॥ ४ ॥ ग० ॥ इणहिज विजये रे ढंकणापुरवरे, हरिनंदी सबवाहो जी ॥ वसुमती जार्या रे कुखे उपनो, मातने हर्ष अथाहो जी ॥ ५ ॥ ग० ॥ देवदत्त तुऊ नाम ते थापीउं, हवे नारक गुणचंदो जी ॥ कालथी उपनो निहाणने ढूंकज्यो, नाग कषायनो वृंदो जी ॥ ६ ॥ ग० ॥ इव्यपरिग्रह करी बेठो तिहां, तव तिहां उत्सव थाये जी ॥ लक्ष्मी पर्वतवासी देवीनो, तुं पण तेणे समे जाय जी ॥ ७ ॥ ग० ॥ देवता पूजी रे दीन अनाथने, दीधुं करुणाए दान जी ॥ करी रसोइनी सामग्री सवे, करी जोजन वली पानो जी ॥ ८ ॥ ग० ॥ पूर्वजवना रे स्नेहथी जोयवा, रमणिक पर्वत तेहो जी ॥ जमतो जमतो रे आव्यो तिहां कने, दीठो नागे तेहो जी ॥ ए ॥ ग० ॥ लोजे जाण्युं रे इव्य ए लेइ जशे, करज्यो चरणने देश जी ॥ विष अति उग्रे रे पमीउं धरणीए, नहीं कोइ संज्ञाविशेषो जी ॥ १० ॥ ग० ॥ ताहरे लोके रे मास्यो नागने, उपनो इणहिज गमो जी ॥ सिंहपणे ते रे पूर्वअज्यासथी, इव्यपरिग्रह तामो जी ॥ ११ ॥ ग० ॥ तुं पण काल करी एह विजयमां, कयंगला पुरी सारो जी ॥ शिवदेव नामे रे कुलपुत्रक वसे, यशोधरा तस नारी जी ॥ १२ ॥ ग० ॥ तेहनी कुखे रे इंद्रदेव थयो, पाम्यो यौवन वेदो जी ॥ काल गयो केइ हवे तुऊ जूपति, वीरदेव नामे नरेंदो जी ॥ १३ ॥ ग० ॥ लच्छीनिलयनो रे स्वामी जाणीए, मानजंग नामे रायो जी ॥ मोकलीउं तुऊ ते नरपति कहे, केइ पुरिस समुदायो जी ॥ १४ ॥ ग० ॥ अनुक्रमे आव्यो रे इणहिज स्थानके, नींबपादपने हेठ जी ॥ जव तुं बेठो रे तव दरीमुख रह्यो, सिंह ते सावज जेठ जी ॥ १५ ॥ ग० ॥ लोजथी संज्ञा रे धरीने मारीउं, एह अनादि अज्यासो जी ॥ तुमे पण मास्यो रे सिंहने दोय मरी, उपना एहज वासो जी ॥ १६ ॥ ग० ॥ श्रीपुलक पाटण मांहि वसे, जक्ऋदास चंडालो जी ॥ माइ जख्का जस नारी चंडालिनी, तस

कुखे थया वालो जी ॥ १७ ॥ ग० ॥ अनुक्रमे जन्म्या रे नाम ते था-पीयां, कालसेन ताहरुं थाय जी ॥ चंमसेन नालीएरी जीवनुं, अनुक्रमे यौवन पाय जी ॥ १८ ॥ ग० ॥ एक दिन लही रे पर्वते ते गया, आ-हेमाने काम जी ॥ कोल ते मार्यो रे आव्या इण देशे, ज्वलने पचाव्यो तामो जी ॥१९॥ग०॥ नक्षण करवा रे बेठा ते विहु, तव एक लेइ कटारो जी ॥ अनरथदंडे रे धरती खोदतो, चंडसेन ते तिवारो जी ॥२०॥ ग० ॥ द्रव्यकलशनी कीनारि ते देखतो, गोपन लागो तेह जी ॥ तें पण दीठो रे पण तुऊ मारीउं, द्रव्यलोन्न ए अछेहो जी ॥२१॥ग०॥ काल करीने रे त्रीजी नरकमां, पांच सागरने आय जी ॥ तुं तिहां उपनो रे एह तो इहां रह्यो, मूके न द्रव्यनो ठाय जी ॥२२॥ग०॥ एम तिहां रहेतां रे केइ वरस गयां, पण द्रव्यनो नहीं न्नोग जी ॥ वयरी चंमाले रे आवी मारीउं, सर्व अथिर संजोग जी ॥ २३ ॥ ग० ॥ अष्टादश सागरने आउखे, छठी नरके जाय जी ॥ तुं हवे नीकली रे श्रीमती गाममां, पुण्ये नरन्नव पाय जी ॥ २४ ॥ ग० ॥ श्री समरादित्य रासमां ए कही, त्रीजे खंमे ढाल जी ॥ पद्मविजय कहे चोथी सांन्नलो, आगल वात रसाल जी ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥१३०॥

॥ दोहा ॥

॥ शालिन्नद्र तिहां शेठीउं, नंदणी नामे नारी; सुत तेहनो सोहामणो, जन्म ते थयो तिवार ॥ १ ॥ बालसुंदर नामे वली, यौवन पाम्यो जाम; शीलदेव सोहामणा, मलीआ मुनिवर ताम ॥ २ ॥ सांन्नली तेहनी देशना, तथा न्नव्यपणुं तास; पक्क थयुं तिणे पामीउं, श्रद्धाधर्म सुवास ॥ ३ ॥ श्रावकव्रत पण सेवीआं, अणसण विधि आराधी; उपनो लांतक अमर ते, अलगी गइ उपाधि ॥ ४ ॥ तेर सागर ऊणांतके, पूरण आयु पाली; उपजे ते कहुं आगले, सांन्नलजो संन्नाली ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ साहेलां हे पहेलुं पेडुं ताम, नाचवा उठे आपणी हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ साहेलां हे इणहिज विजय मझार, हत्थिणाउर नयरे वसे हो लाल ॥ सा० ॥ सुहस्ती इण नाम, नयरशेठ सहु मन वसे हो लाल ॥ १ ॥ सा० ॥ कांतिमती तस नारी, तेहनी कूखे उपन्यो हो लाल ॥

सा० ॥ छठी नरगथी आय, वीजो जाइ हवे नीपन्यो हो लाल ॥ २ ॥ सा० ॥ तुऊ पिताने गेह, सोमिला दासी सोहामणी हो लाल ॥ सा० ॥ तेहनी कुखे पुत्र, जनम्या तव होंशज घणी हो लाल ॥ ३ ॥ सा० ॥ ताहरुं समुद्रदत्त नाम, दासनुं मंगल थापीउं हो लाल ॥ सा० ॥ अनु- क्रमे थया कुमार, अंगे यौवन व्यापीयुं हो लाल ॥ ४ ॥ सा० ॥ इण अवसर अणगार, अनंगदेव सूरि मळ्या हो लाल ॥ सा० ॥ तेनीह पासे धर्म, पाम्यो दुःख जवनां गळ्यां हो लाल ॥ ५ ॥ सा० ॥ पाम्यो देशविरति, श्रावक शुद्ध थयो घणो हो लाल ॥ सा० ॥ लक्ष्मीनिलयपुर गाम, घर तिहां छे श्रावक तणो हो लाल ॥ ६ ॥ सा० ॥ नामे अचल सछवाह, जिनमती नाम तेहनी धूआ हो लाल ॥ सा० ॥ परण्यो तुं ते नारी, मंगल उछव बहु हुआ हो लाल ॥ ७ ॥ सा० ॥ एक दिन मंगल साथ, जिनमती तेरूवाने गया हो लाल ॥ सा० ॥ आव्या इणहिज गाम, प्रयाणां केइक थयां हो लाल ॥ ८ ॥ सा० ॥ कीधो तिहां विश्राम, पत्रलता वहुली मली हो लाल ॥ सा० ॥ दीठो तव तिहां पोआरू, देखी लखमी अटकली हो लाल ॥ ए ॥ सा० ॥ मंगलने वोलावी, जाख्युं कौतुकथी तुमे हो लाल ॥ सा० ॥ कांइक द्रव्य इण ठाम, होशे निश्चय कहुं अमे हो लाल ॥ १० ॥ सा० ॥ मंगल वोल्यो ताम, जोउं इण स्थानक जइ हो लाल ॥ सा० ॥ तें कह्युं म कर ए काम, वात कौतुकथी ए जइ हो लाल ॥ ११ ॥ सा० ॥ पण नहीं मुऊ मन लोज, तव मंगल कहे माहरे हो लाल ॥ सा० ॥ कौतुक अ- धिक ते थाय, तिणे जोउं वच ताहरे हो लाल ॥ १२ ॥ सा० ॥ अणग- मतुं तुऊ तोहि, तीक्ष्ण काष्ठथी खोदीउं हो लाल ॥ सा० ॥ तुरत दीठो कुंजकंठ, मंगले निश्चय वेदीउं हो लाल ॥ १३ ॥ सा० ॥ महा निधान ए एथी, लेइ शकुं एहने ठगी हो लाल ॥ सा० ॥ इणे अवसरे ते दीठ, दृष्टि कलशकंठे लगी हो लाल ॥ १४ ॥ सा० ॥ मंगलने कह्युं एम, चाल्य नगरमां जाइए हो लाल ॥ सा० ॥ द्रव्यनी न कर तुं केमी अर्थथी अनरथ पाइए हो लाल ॥ १५ ॥ सा० ॥ पूरी खारू तिण ठाम, हर्षित परे थइ चालीउं हो लाल ॥ सा० ॥ तें कह्युं कोइने ए वात, कहेशो नहीं जे जालीउं हो लाल ॥ १६ ॥ सा० ॥ अधिकरण थाये

एह, कर्म बंधाये तेहनुं हो लाल ॥ सा० ॥ मंगल चिंतवे ताम, चित्त चव्युं जुर्ज एहनुं हो लाल ॥ १७ ॥ सा० ॥ मुझ विण लेशे एह, नहीं तो एम केम नाखीये हो लाल ॥ सा० ॥ चिंतवी बोल्यो एम, कोयनें नहीं अमे दाखीये हो लाल ॥ १८ ॥ सा० ॥ एम कही चिंतवे मुझ, केम ठगशे एह जाणतां हो लाल ॥ सा० ॥ जाण्यो ग्रह नरे केम, तास उपाय मन आणतां हो लाल ॥ १९ ॥ सा० ॥ न लीये जब ए दाम, पहेलांथी हणुं एहने हो लाल ॥ सा० ॥ पहोता नयर समीप, आरामे तें कह्युं तेहने हो लाल ॥ २० ॥ सा० ॥ सांजल मंगल वात, जाउं सासरे माहरे हो लाल ॥ सा० ॥ लावो खबर तस गेह, पछे जइए वच ताहरे हो लाल ॥ २१ ॥ सा० ॥ चाल्यो मंगल ताम, अवलुं चित्तमां धारतो हो लाल ॥ सा० ॥ सज्जन मन नहीं कांय, खल मन वैर वधारतो हो लाल ॥ २२ ॥ सा० ॥ परिग्रह पापनुं मूल, पांचमुं स्थानक पापनुं हो लाल ॥ सा० ॥ डुर्गतिमां लेइ जाय, पण खोवरावे आपनुं हो लाल ॥ २३ ॥ सा० ॥ त्याग करे तस जेह, धन धन तेहनी मातने हो लाल ॥ सा० ॥ पूछे विजयसिंह ताम, आगल हवे जगतातने हो लाल ॥ २४ ॥ सा० ॥ पांचमी त्रीजे खंड, ढाल रसाल इहां कही हो लाल ॥ सा० ॥ उत्तम गुरु सुपसाय, पद्मविजय एणी परे लही हो लाल ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ १६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ चाल्यो मंगल चिंतवे, अहो ए कपट अच्यास; ग्रहशे सुखे रही नगरमां, वेची मुझ विश्वास ॥ १ ॥ तिणे कारण करुं तेहवुं, रहे न नयरमां ठार; पाछां वलतां हुं पछे, मारीश रणइ मझार ॥ २ ॥ कालक्षेप करी केटलो, पेसी नयर प्रकार; मायाचरित्रे मुंझीर्ज, आव्यो हर्ष उतार ॥ ३ ॥ निशासो धूरे नाखीने, बोल्यो एहवा बोल; आचरीउं अवलुं अति, नारीजाति निटोल ॥ ४ ॥ वासे कोइ नरशुं वशी, तिणे सहु डुःखीउं तेह; वली आपणुं आववुं, सांजलीउं ससनेह ॥ ५ ॥ लाज्यां तिणे लज्जालुआं, अधिक अधिक आलोच; तिणे न घटे जावुं तिहां, करो इहांथी संकोच ॥ ६ ॥

॥ ढाल ७मी ॥

॥ आघा आम पधारो पूज्य, अम घर वोहोरण वेला ॥ ए देशी ॥

॥ एम सांजली तुं मन खेदाणो, चित्तमां चिंतवे एहवुं ॥ श्रावककुलमां उपनी श्राविका, काम करे जुउ केहवुं ॥ १ ॥ जिनमत शुद्धज जाणी हो लाल, न करे काम ए एहवुं ॥ आंकणी ॥ जिनमत सार जाण्यो युवतीए, इह परलोक विरुद्ध ॥ किम आचरण करे विपरीतह, जस वर समकित शुद्ध ॥२॥जिन०॥ अथवा डुःकर मोही जीवने, कांय नहीं एम जाणुं ॥ तिणे हवे घरवासे मुज पोहोतुं, हवे प्रव्रज्या टाणुं ॥ ३ ॥ जिन० ॥ स्नेहबंधना एहज ठेमा, तिणे घरे पण नवि जइये ॥ अनंगदेव गुरु पासे जइने, श्रमणधर्म आदरीये ॥ ४ ॥ जिन० ॥ मंगल घर जाउ सुखे इहांथी, क्लेश श्याने देउं एहने ॥ एम विचारी मंगलने कहे, हुं नहीं डुःख देउं केहने ॥ ५ ॥ जिन० ॥ तव मंगल हवे चित्त विचारे, मुजशुं ए करे माया ॥ पण मायाए हुं न वंचाउं, एम चिंती कहे जाया ॥ ६ ॥ जिन० ॥ तुमने नवि मूकुं अधविचमां, जिहां लगे घेर न जाउं ॥ तव तें कह्युं जो तुज आग्रह बे, तो चालो घरे आउं ॥ ७ ॥ जिन० ॥ तिहां जइ पूठीश कोइ साधुने, अनंगदेव गुरु केरी ॥ वात चिंती चाल्या एम विहु जण, मंगल जुवे हवे हेरी ॥ ८ ॥ जिन० ॥ केइक दिन एम वही गया वाटे, आव्या अटवी मांहि ॥ शून्य स्थानक देखी मध्याह्ने, चिंते चित्त उछाहि ॥ ९ ॥ जिन० ॥ महा साहस धरी क्षुद्र हृदयथी, लोजदोष चित्त धारी ॥ मंगल लेइ ढुरी पूठेथी, क्रूर चित्तथी मारी ॥ १० ॥ जिन० ॥ मंगल नामे पण अपमंगल, जाव थकी ए दीसे ॥ जिम मंगल ग्रह तिम वली जद्रा, शीतलिका कहे जीसे ॥ ११ ॥ जिन० ॥ टाढा दीधा कणनी वृद्धि, आंखे आवी वली जाखे ॥ तेम ए मंगल नाम मात्रथी, शुं कीजे गुण पाखे ॥ १२ ॥ जिन० ॥ इण अवसर तिहां विहार करंता, अनंगदेव गुरु आव्या ॥ दीठो अग्रगामी मुनिराजे, समतासंग सोहाव्या ॥ १३ ॥ जिन० ॥ मंगल ढुरिका मूकी नाठो, तें मन मांहि विचार्युं ॥ चोर माहरे शुं पूठे आव्या, एम करी पूठे धार्युं ॥ १४ ॥ जिन० ॥ तव नासंतो मंगल दीठो, चोर न दीठो कोइ ॥ मन चिंते तुं शुं ए अचरिज, ढुरी

दीठी तव जोइ ॥१५॥ जिन०॥ रुधिरे खरडी लीधी करमां, देखी चिंते एम ॥ चोर नथी कोइ ए महा रणमां, नासे मंगल केम ॥१६॥ जिन०॥ छुरी पण उलखी पोता केरी, तव तें निश्चे जाएयुं ॥ काम मंगलीए कीधुं तोपण, कारण नविअ पिछाएयुं ॥ १७ ॥ जिन० ॥ तिणे बोलावुं मंगलीआने, कहेशे वात जे होइ ॥ एम करी मंगलने बोलाव्यो, दोडे तव अति सोइ ॥ १८ ॥ जिन० ॥ तव सघलो विकल्प ते शमीउं, काम ते कीधुं एणे ॥ जिनमतीनी पण वात कही ते, नवि दीठी में नयणे ॥ १९ ॥ जिन० ॥ जिणे जिनवयणां सुधां जाण्यां, महोटा कुलमां आइ ॥ उभय लोकनुं विरुद्ध करे ते, किम संभवीये भाइ ॥ २० ॥ जिन० ॥ एम करतां मुनिवर पण पासे, आवी उलख्यो तुज ॥ तें वंद्या धर्म्मलाभ दीउं तेणे, पूछ्युं ताहरुं गुज ॥ २१ ॥जिन०॥ इण थानिक तुं आ अवस्थाए, किहांथी आव्यो केहने ॥ तव तें मूलथी सघलुं भाख्युं, आशासन करी तेहने ॥ २२ ॥ जिन० ॥ अनंगदेव पण गुरुजी आव्या, आशासना करी सुधी ॥ अशरण शरण गुरु ते साचा, आपे धर्मनी बुद्धि ॥ २३ ॥ जिन० ॥ गुरु साथे हवे तिहांथी चाल्यो, थाणेसरपुर ठाणो ॥ मास कल्प गुरु रह्या तिहां तहारे, प्रहार पण रुजाणो ॥ २४ ॥ जिन० ॥ जिनमतीनी पण वात लही तें, तव चिंत्युं तें चित्ते ॥ अहो प्रकार मंगलनो देखो, अहो अहो मोह विचित्ते ॥ २५ ॥ जिन० ॥ जो पण शील अखंडित नारी, तोपण हवे एणे सरीउं ॥ उभय लोक साधन हवे करशुं, मंगले रुडुं करीउं ॥ २६ ॥ जिन० ॥ जिनमतीपणे जिन सार लह्युं छे, परिणामे मुज सरखी ॥ म्हारो व्यतिकर सांभली ए पण, दीक्षा लेशे हरखी ॥ २७ ॥ जिन० ॥ एम करी में तेहने तारी, भवसायरथी नारी ॥ बहु दुःखभरीउं ए संसारह, दीक्षा शिवसुखकारी ॥ २८ ॥ जिन० ॥ विण दीक्षाए जो घर जाउं, विघन चरणमां आवे ॥ एम चिंती अनंगदेव पासे, दीक्षा लीधी भावे ॥ २९ ॥ जिन० ॥ त्रीजे खंडे छठी ढाले, कहे आजारज शिखिने ॥ तीर्थंकर कहे आचारजने, सुण हवे जे थयुं रुषिने ॥ ३० ॥ जिन० ॥ सर्व गाथा ॥ १९६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ काल गयो हवे केटलो, जिनमतीए हवे जाम; वात सुणी कोइ

वयणथी, तरुणी चिंते ताम ॥ १ ॥ अहोअहो कहुं एहने, कीधुं मोहोटुं काम; यौवनेकामने जीतीए, माम न राखे ताम ॥२॥ खेद ठामे खमीउं घणुं, मूक्यो माहरो मोह ॥ मंगलीउं माठो मव्यो, दीधो स्वामीद्रोह ॥३॥ संवेगे चिंते इस्युं, आर्यपुत्र इण वार; कारय कीधुं कामनुं, सयल संसार असार ॥ ४ ॥ क्लेशायास बहु कह्यो, डुल्लहि मानवदेह; संयोग होय वियोगशुं, सहित तिणे स्यो सनेह ॥ ५ ॥ विषयविपाक वारु नहीं, तेणे करुं आतम हित; उन्नय लोक आराधीये, चतुरा चिंते चित्त ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ देशी हमिरीयानी ॥ संनव जिनवर विनति ॥ ए देशी ॥

॥ मात तातने पूछीने, आज्ञा पामी तास ॥ सनेही ॥ आवी खो-लती आवी खोलती, सुंदरी ताहरी पास ॥ स० ॥ १ ॥ जिनवचने मन दृढ करो ॥ ए आंकणी ॥ मोक्षमार्गमां चालतो, देखी नाखे एम ॥ स० ॥ आर्यपुत्र रुडुं कर्युं, मुजने तारी नेम ॥ स० ॥ २ ॥ जि० ॥ छेदी मोहनी वेलडी, उत्तम पुरुषनो पंथ ॥ स० ॥ आदरीउं आदर करी, नावथी थया निग्गंथ ॥ स० ॥ ३ ॥ जि० ॥ नवसायरथी आतमा, ज-तार्यो तें पार ॥ स० ॥ एम प्रशंसा करी घणी, आतम कीधो उद्धार ॥ स० ॥ ४ ॥ जि० ॥ दीक्षा एणी परे आदरी, अनंगदेव गुरु पास ॥ स० ॥ काल गयो हवे केटलो, चारित्रने अन्यास ॥ स० ॥ ५ ॥ जि० ॥ चारित्र पाली तुं हवे, कालक्रमे करी काल ॥ स० ॥ पचवीश सागर आउखे, सुर हुउं सुखरसाल ॥ स० ॥ ६ ॥ जि० ॥ ग्रैवेयके ते उपन्यो, हवे मंगल गयो तब ॥ स० ॥ तिहां जइ तेहने जालवे, ढांके शीला लेइ हब ॥ स० ॥ ७ ॥ जि० ॥ ते धनने ममते करी, नवि मूके तेह ठाण ॥ स० ॥ मांस आहार क्लेशे करी, पाम्यो तिहां यम ठाण ॥ स० ॥ ८ ॥ जि० ॥ मरी छठी नरगें गयो, बावीश सागर आय ॥ स० ॥ महा दुःख सही तिहांथी वली, आयु पूरुं जव थाय ॥ स० ॥ ए ॥ एहज विज-यमां उपन्यो, रथवर्द्धनपुर गाम ॥ स० ॥ वेल्लिक चांमालने घरे, छगल-पणे थयो ताम ॥ स० ॥ १० ॥ जि० ॥ एक दिन रथवर्द्धन थकी, बहु छगलशुं तेह ॥ स० ॥ लेइ जातां जयथलपुरे, द्रव्यस्थानक आव्यो एह ॥ स० ॥ ११ ॥ जि० ॥ पूरव अन्यासे करी, जातिसमरण पामी ॥ स०

वेढिक खेंचे पण नवि, मूके तेहज ठाम ॥ स० ॥ १२ ॥ जि० ॥ हांके पण पाछो वले, फरी फरी आवे ठाय ॥ स० ॥ चंमाले क्रोधे हण्यो, पूरण कीधुं आय ॥ स० ॥ १३ ॥ जि० ॥ उंदरपणे ते उपन्यो, उंघ संज्ञाए एण ॥ स० ॥ तेह द्रव्य परिग्रह कस्यो, पाव्युं कर्मवशेण ॥ स० ॥ १४ ॥ जि० ॥ एक जुवटीउं एक दिने, सोमचंड जस नाम ॥ स० ॥ नमतो न-मतो आवीउं, शालिपादपने ठाम ॥ स० ॥ १५ ॥ जि० ॥ बेठो पासे निधानने, लोह अन्नाणने दोष ॥ स० ॥ मूसो नमे अमरख नस्यो, उ-पन्यो तेहने रोष ॥ स० ॥ १६ ॥ जि० ॥ मास्यो ते मरी उपन्यो, एहनी नारीने कुख ॥ स० ॥ डुरगिला नाम छे तेहनुं, कुखमां रहे बहु नूख ॥ स० ॥ १७ ॥ जि० ॥ कान नाक गयां जेहनां, तेणीए जनम्यो पुत्त ॥ स० ॥ अनुक्रमे नाम ते थापीयुं, रुडचंद ते युत्त ॥ स० ॥ १८ ॥ जि० ॥ पाम्यो यौवन अनुक्रमे, बहु जीवने डुःखदाय ॥ स० ॥ विषवृक्षनी परे वाधीउं, सेवे अकार्य सदाय ॥ स० ॥ १९ ॥ जि० ॥ चोरी करतां एकदा, खात्रमुखे ग्रहेवाय ॥ स० ॥ समरनासुर रायनो तदा, मारवा हूकम ते थाय ॥ स० ॥ २० ॥ जि० ॥ शूलिए दीधो तिहां कणे, कोटवाले करी सोर ॥ स० ॥ मरी बीजी नरके गयो, वंशामां डुःख घोर ॥ स० ॥ २१ ॥ जि० ॥ त्रण सागर कांय हीणक्कां, आयु पाली करी काल ॥ स० ॥ इण विजये हवे उपन्यो, लछीनिलये सुरसाल ॥ स० ॥ २२ ॥ जि० ॥ एणी परे त्रीजा खंडमां, सांजलो सातमी ढाल ॥ स० ॥ पद्मविजय नाखी इसी, लोनथी बहु जंजाल ॥ स० ॥ २३ ॥ जि० ॥ सर्व गाथा ॥ २२५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लछीनिलय मांहे वसे, अशोकदत्त अनिधान; शेठघरे सोहामणी, सुहंकरा शुनवान ॥ १ ॥ तेहनी कुखे तेहवे, उपन्यो नारक आय; पुत्रीपणे तस थापीयुं, अनिधा सिरिया ताय ॥ २ ॥ यौवन पामी जेटले, दीधी सागरदेव; समुद्रदत्त सुत सुगुणने, विवाह वर्त्यो हेव ॥ ३ ॥ नोग नली परे नोगवी, नर्त्ताशुं नली नांत; ग्रैवेयक सुर गर्नमां, आठ्यो आयु अंत ॥ ४ ॥ पुत्रपणे ते उपन्यो, सागरदत्त श्रीकार; नाम ठव्युं निरतुं तदा, यौवन पाम्यो ज्यार ॥५॥ धर्माचारज धारीआ, देवशर्म्म दयाल; श्रावक-

व्रत पाले सखर, प्राणीनो प्रतिपाल ॥ ६ ॥ इसरखंध श्रावक अवल, ते-
हनी पुत्री ताम; नंदिनी नामे परणीउं, कमनीय जोगवे काम ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ सुण मेरी सजनी रजनी न जाय रे ॥ ए देशी ॥

॥ जोग जोगवतां सुत एक आयो रे, सुतनो महोत्सव करवा तायो रे ॥
सगां संबंधी लेइ परिवार रे, ऊजाणी करवा सुखकार रे ॥ १ ॥ सांजल-
जो सहु कर्मनी वातो रे, कर्मथी बलीउं कोइ न थातो रे ॥ तेह निधा-
ननी पासे आव्यो रे, पुत्र झोलीका करवा जाव्यो रे ॥ २ ॥ खोदे खारु
ते कारण जाणी रे, ड्रव्यकलशनो कंठ पिछाणी रे ॥ पाछी खारु जली
परे पूरी रे, बीजी खोदी खाड सनूरी रे ॥ ३ ॥ जोजन करी हवे गयो
निज घेर रे, तव तें चिंतवीशुं एणी पेर रे ॥ पूबुं मातने के नवि पूबुं
रे, जो नवि पूबुं तो मानशे उंबुं रे ॥ ४ ॥ एम जाणीने कही सवि वात
रे, करवुं एहनुं कशुं कहो मात रे ॥ तव ते बोली मुऊ देखाको रे, मुऊ
देख्या विण तुम्हे मत काढो रे ॥ ५ ॥ जोइने जुगताजुगतुं कहेशुं रे,
तें पण दाख्यो जइ निज करशुं रे ॥ अन्नाण दोषे तेणे एम धार्युं रे,
कोइ उपाय करी पुत्रने मारुं रे ॥ ६ ॥ एम विचारी कह्युं सुण पुत्त रे,
हमणां काढवुं बे नहीं जुत्त रे ॥ काढतां जाणे जो नरराय रे, तो उलटुं
घरमांथी जाय रे ॥ ७ ॥ अवसरे लेशुं आपण जाइ रे, उतावल मत
करो तुमे जाइ रे ॥ तव तुं बोल्यो एम प्रमाण रे, एम करी पोहतां ते
निज गण रे ॥ ८ ॥ केइ दिन काढ्या तें पछी सुखमां रे, तुऊ माताए
काढ्या डुःखमां रे ॥ लोजदोष पूर्व जव अभ्यास रे, तुज मारणनुं चित्त ते
तास रे ॥ ए ॥ तेह डुःखे नित्य नित्य रहे बलती रे, मनमां एम उपाय
चिंतवती रे ॥ पोसह उपवास पारणुं जिहारे रे, जोजनमां विष देशुं
तिहारे रे ॥ १० ॥ ते उपवासथी होय लघु शरीर रे, शीघ्र होये विषनी
तिहां पीर रे ॥ दीधुं विष पोतानी माय रे, जेहनुं शरण ते मारवा धाय
रे ॥ ११ ॥ विषप्रयोगे तुं लेवाणो रे, नंदिनी नारी जाणे तिणे गणो रे ॥
कोलाहल कर्यो तिणे आवी रे, मा पण रुवे कपटे जावी रे ॥ १२ ॥
लोक मल्या जोवा सहु कोय रे, सिद्धपुत्र एक तेहमां होय रे ॥ श्रावक
श्रद्धावंत प्रमाण रे, मंत्र यंत्रना तेह सुजाण रे ॥ १३ ॥ सिद्धपुत्र ते

कहीये तेह रे, मनमां चिंतवे एहवुं जेह रे ॥ जीवाडुं हुं मंत्रनी शक्ति रे, साधर्मिकनी करुं एम नक्ति रे ॥ १४ ॥ मंत्रनी शक्ते जीव्यो जेह रे, चिंता उपनी तुऊने एह रे ॥ मनुज जीवितमां बहु अपाय रे, घरवासे रह्या हवे शुं थाय रे ॥ १५ ॥ वली कोइक दिन एम बनी जाय रे, व्रत पच्चरकाण विना नव जाय रे ॥ ते कारण हवे लेउं दीक्षा रे, पालुं पामी गुरुनी शिक्षा रे ॥ १६ ॥ देवशर्मा गुरु पासे लीधी रे, उचित विधिए दीक्षा हवे सुधी रे ॥ निरतिचार ते चारित्र पाली रे, उपन्यो ग्रैवेयके ऽुःख गाली रे ॥ १७ ॥ त्रीश सागरने आउखे जाणो रे, ग्रैवेयक सुर थयो सपराणो रे ॥ तुऊ माताए कर्युं काम नूंरुं रे, पीठ बांध्युं धन उपर रुडुं रे ॥ १० ॥ पुत्रना वधनो जे परिणाम रे, ऽव्यलोन पण अति उद्दाम रे ॥ ऽव्य न नोगव्युं बांध्युं पाप रे, धूमप्रनाए पहोती आप रे ॥ १ए ॥ पन्नर सागर तेहनुं आय रे, तिहांथी मरी तिर्यंचमां जाय रे ॥ तिर्यंच मांहि नाना नव करीया रे, तिहां बहु नोगव्या ऽुःखना दरिया रे ॥ २० ॥ पूर्व नव अन्यासनो दोष रे, नालीएरी एह लोनविशेष रे ॥ तुं चवी सागरदत्त शेठघेर रे, सिरिमति कुखे पुत्र एणी पेर रे ॥ २१ ॥ इण नवमां तुम्ह बिहु इणी रीत रे, तीर्थंकर कहे मुऊ जे अतीत रे ॥ वात सुणी मुऊ थयो वैराग रे, शिखिकुमर सुण तुं महानाग रे ॥२२॥ नरपतिए सुणी आणा दीधी रे, काढी लखमी तेह वहेंची दीधी रे ॥ दीन अनाथने करी उपगार रे, विजयधर्म गणधर अणगार रे ॥ २३ ॥ तेहुनी पासे दीक्षा लीधी रे, माहरी वात हती ते कीधी रे ॥ विचरंतो आव्यो हुं आंही रे, तिणे जगमां कोय कोयनुं नांही रे ॥ २४ ॥ शिखिकुमर कहे नगवन साचुं रे, जिणे तुम्हे जाएयुं सघलुं काचुं रे ॥ पण दीक्षा लेवी प्रनु दोहेली रे, वातो करवी सहुने सोहेली रे ॥ २५ ॥ त्रीजे खंमे आठमी ढाल रे, मुनिगुण गातां मंगलमाल रे ॥ श्रीगुरु उत्तमविजयनो शिष्य रे, पद्मविजय कहे विशवावीश रे ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ २५० ॥

॥ दोहा ॥

॥ शिखिकुमार कहे सुणो, नाखो धर्मना नेद; दानादिक जे दाखीआ, नेदना बहु प्रनेद ॥ १ ॥ चार नेद सांनल चतुर, दान शील तप दाख;

नावना चोथी नावीये, सर्वज्ञ केरी शाख ॥ २ ॥ त्रण नेद दानज तणा, पहेलुं ज्ञान प्रधान; अनय धर्मउपग्रह अधिक,नाण सुणो हवे दान ॥ ३ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ कर्म न बूटे रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञाननुं दान देतां थकां, जाणे बंध ने मोख ॥ शिवसुखसंपद बीज बे,उपजें अतिघ्र संतोष ॥१॥ धर्म ए सेवो रे नवि जना ॥ ए आंकणी ॥ जे दाने लहे पुण्यने, जाणे पाप अशेष ॥ जाणी पुण्यने आदरे, पापने टाले विशेष ॥ २ ॥ धर्म० ॥ यतः ॥ "सुच्चा जाणई कल्लाणं, सुच्चा जाणई पावगं ॥ उनयंपि जाणई सुच्चा, जं बेयं तं समायरे ॥ १ ॥ " पुण्य करंतो रे प्राणीउ, पामे नर सुर सुख ॥ पापथी दूरे थातां थका, तिरि नारक टले दुःख ॥ ३ ॥ धर्म० ॥ जिनवर नाषित नाणनुं, दीधुं दान विशाल ॥ इह परलोकनां सुख घणां, दीधां तिणे सुरसाल ॥ ४ ॥ धर्म० ॥ राग द्वेष मोह टालीने, पामे केवलनाण ॥ अनुक्रमे सिद्धि वरे तिको, जे दीये नाणनुं दाण ॥ ॥ ५ ॥ धर्म० ॥ दाण नाण एणी परे कह्युं, संक्षेपे करी एम ॥ दाता ग्राहक ए दोयने, एकांते हित प्रेम ॥ ६ ॥ धर्म० ॥ पृथवी पाणी अगनि वली, वायु वनस्पति काय ॥ बि ति चउ पंचिंदिय जीवने, हणतां हित नवि थाय ॥ ७ ॥ धर्म० ॥ मन तनु वचने ए जीवने, हणवो नांही लगार ॥ दान अनय एह जाणीये, सेव्युं मुनिजने सार ॥ ८ ॥ धर्म० ॥ अति दुःखीयापणे जीववुं, इछे सर्व सदाय ॥ तिणे कारण मुनिराजीया, राखे बे षट काय ॥ ए ॥ धर्म० ॥ यतः ॥ "सव्वेवि जीवा इछंति, जीविउं न मरिज्जीउं ॥ तम्हा पाणवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं ॥ १ ॥ " नरपति पण मरवा पड्यो,आपे जीववा राज्य ॥ राज्य थकी पण जीववुं, अधिकुं कहे जिनराज ॥ १० ॥ धर्म० ॥ जे सहु जीवने इष्ट बे, देवुं तेहज सार ॥ इंद्र कीटक दोय जीववुं, सरिखुं इछे उदार ॥ ११ ॥ धर्म० ॥ आयु दीरघ पामीये, रूप सुरूप नीरोग ॥ परनव पण ते प्रशंसीये, अनयदानी जे लोग ॥ १२ ॥ धर्म० ॥ यतः ॥ " आयुर्दीर्घतरं वपुर्वरतरं गोत्रं गरीयस्तरं, वित्तं नूरितरं बलं बहुतरं स्वामित्वमुच्चैस्तरं ॥ आरोग्यं विगतांतरं त्रिजगतः श्लाघ्यत्वमल्पेतरं, संसारांबुनिधिः करोति सुतरां चेतः कृपार्द्रांतरं ॥ १ ॥" अनयदान एणी परे कह्युं, सांनल श्राव-

क तुं वाण ॥ धर्मउपग्रह दान जे, जाख्युं तेह विन्नाण ॥ १३ ॥ धर्म० ॥
अशन पान खादिम वली, स्वादिम ने वस्त्र पात्र ॥ उषध जेषज योग्य ते,
दीजे मुनिवर पात्र ॥ १४ ॥ धर्म० ॥ सजायध्यानमां मग्न जे, जे वहे
संजमजार ॥ कर्मे हलका ते मुनि तरे, उतारे पर पार ॥ १५ ॥ धर्म० ॥
कर्मे गुरु पोते बूडतो, केम तारे पर तेह ॥ तिणे चउकारण शुद्ध जे, दी-
जीये धरी ससनेह ॥ १६ ॥ धर्म० ॥ दायक ग्राहक शुद्ध जे, काल जावे
करी शुद्ध ॥ दायक शुद्ध जाखुं हवे, सांजली थाउ विबुध ॥ १७ ॥ धर्म०
॥ दाता ज्ञानी होये जलो, नहि अरु मद अहंकार ॥ श्रद्धा आदर अति
घणो, रोमांचित ने उदार ॥ १८ ॥ धर्म० ॥ न्याये आव्यो जे द्रव्य ते,
प्रासुक ने शुद्धमान ॥ अविरोधी जेह लोकमां, करतो निर्जराध्यान ॥१ए॥
धर्म० ॥ इहलोक ने परलोकनी, न धरे कांय आशंस ॥ शुज क्षेत्रे बीजनी
परे, बहु फल पामे असंश ॥ २० ॥ धर्म० ॥ नर सुर शिव सुख संपदा,
आपे एहज दान ॥ जे हवे श्रद्धा विना दीये, जस कीरति मन आण
॥ २१ ॥ धर्म० ॥ अजिमाने अथवा दीये, एह दीये बे जो एम ॥ हुं
केम उंगो बुं एहथी, नवि आपुं कहो केम ॥ २२ ॥ धर्म० ॥ श्रद्धाजल
विनु बीज ते, न फले तास लगार ॥ दान बहु पण दुःखीउं, कलुषित
चित्त अपार ॥ २३ ॥ धर्म० ॥ प्राणनो वध करी जे दीये, धर्मश्रद्धा
मन राख ॥ चंदन बाली अंगारनो, करे व्यापार निज साख ॥ २४ ॥
धर्म० ॥ लोकविरुद्ध जे आपतो, धर्मविरुद्ध वली जेह ॥ पोते ग्राहक बिहु
जणा, पडे संसारे तेह ॥ २५ ॥ धर्म० ॥ ग्राहक शुद्ध हवे जाखीये, धारे
महाव्रतजार ॥ गुरुनी शुश्रूषा जे करे, जोग समाधिमां सार ॥ २६ ॥
धर्म० ॥ खंति मद्दव अज्जवा, लोहनो कीधो रे त्याग ॥ त्रण गुप्ते गुपतो
रहे, सजायध्याननो लाग ॥ २७ ॥ धर्म० ॥ पंचेंद्रियनो निग्रह करे,
पाले साधुनो मग्ग ॥ चरणकरणनी रे सित्तरी, परजावेशुं अलग्ग ॥२८॥
धर्म० ॥ इह जव ने वली परजवे, होये अप्रतिबंध ॥ मेरु परे जे चले
नहीं, उपसर्ग वायुने धंध ॥ २ए ॥ धर्म० ॥ एहवा जे मुनिराजने, रागे
दीजे जे दान ॥ ग्राहक शुद्ध ते जाणीये, जेद ए बीजो अमान ॥ ३० ॥
धर्म० ॥ नवमी त्रीजा ए खंमनी, ढाल कही सुपवित्र ॥ उत्तम पद्मवि-
जये जली, समरादित्यचरित्र ॥ ३१ ॥ धर्म० ॥ सर्व गाथा ॥ २ए२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शीलरहित जे साधुने, दीये कुपात्रे दान; अशुन्न फल पामे अधिक, सर्पने जिम विषपान ॥ १ ॥ रुधिरे खरड्युं रुधिरथी, वस्त्र धुवे विण नीर; तिम कुपात्रे आपतां, न्नांजे केम तस नीर ॥ २ ॥ थोडुं पण जे सुपात्रथी, पामे सुख नरपूर; तरणां गौ आहारे तुरत, डुध ज्युं दीये अविडूर ॥ ३ ॥ पात्रविशेषे आपीशुं, एकज दान अमान;एकज जल गावि उरग, यथा पीये फल जान ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

आदर जीव क्षमागुण आदर जीव ॥ ए देशी ॥

कालशुद्ध हवे दान कहीजे, तपसीने दीये काले जी ॥ देहने उपगारी जिम होवे, तो फल तस बहु आले जी ॥ १ ॥ सेवो रे न्नविआ धर्म ए वारु ॥ ए आंकणी ॥ जिम काले जो करषण कीजे, तो बहु फल तस थाय जी ॥ एम काले जो दान दीये तो, फल बहु लीये अमायो जी ॥ २ ॥ सेवो० ॥ तप पारण ने उत्तर वारण, वली कीधो होय लोच जी ॥ थाका विहार थकी वली ग्लान जे, कारणनो आलोच जी ॥ ३ ॥ सेवो० ॥ ज्ञानान्यास करे बाल साधु, एहवा काल विचारी जी ॥ आहार घृतादिक बहु आपीजे, तो होय तस सुखकारी जी ॥ ४ ॥ सेवो०॥ काल विना जो बीज वावीजे, तो होये बीजनी हाणि जी ॥ दायक ग्राहकने एम जाणो, काल ते शुन्न गुण खाणी जी ॥ ५ ॥ सेवो० ॥ न्नावशुद्ध ते दान कहीजे, श्रद्धापूर्वक आपे जी ॥ रोमांचित थइ मानें कृतज्ञता, ते न्नावशुद्धपणुं थापे जी ॥ ६ ॥ सेवो० ॥ आर्त्तवशे नवि दान देइजे, कलुषित चित्त नवि कीजे जी ॥ आशंसा नवि कांइ करीये, न्नावशुद्ध ए लीजे जी ॥ ७ ॥ सेवो० ॥ यतः " अनादरो विलंबश्च, वैमुख्यमप्रियं वचः ॥ पश्चात्तापश्च पंचामी, सद्दानं दूषयंत्यहो ॥ १ ॥ अत्यादरोऽविलंबश्चौ,-दार्यं च प्रियवाक्यता ॥ सन्मुखत्वं च पंचामी, सद्दानं न्नूषयंत्यपि ॥ २ ॥ " मोक्षने अर्थे दान जे दीये, तेहनो ए विधि जाणोजी ॥ अनुकंपा जे दानज न्नाख्युं, तेहनो निषेध चित्त माणो जी ॥८॥ सेवो० ॥ डव्यहाणि होये दान देयंता, एम मनमां मत आणो जी ॥ कूप आराम गवादिक देखो, देतां संपद् ठाणो जी ॥ ए ॥ सेवो० ॥

घरकुइ सम कृपणनी लक्ष्मी, नगरवावि व्यवहारी जी ॥ अधिकारीनी सरोवर सरिखी, नृपनी नदी अनुहारी जी ॥ १० ॥ सेवो० ॥ दान न्नोग ने नाश ए त्रण गति, ऽव्य तणी जग न्नाखी जी ॥ नवि दीधी नवि न्नोगवी जेणे, तस त्रीजी गति दाखी जी ॥ ११ ॥ सेवो० ॥ यतः ॥ "मोरकडं जं दाणं; पञ्एसो विहिमुणेयवो ॥ अणुगं पादाणं पुण, जिणेहिं न कहिं विपकी सिद्धं" ॥ १ ॥ दानधर्म संक्षेपे न्नाख्यो, शील सुणो न्नवि प्राणी जी ॥ प्राणिवधादिक पंच महाव्रत, पालवां बहु हित आणी जी ॥ १२ ॥ सेवो० ॥ क्रोधादिकनो निग्रह करवो, अज्जव मद्दव खंति जी ॥ श्रद्धा संवेग संतोष फरसन, निरीह चित्त वली मैत्ति जी ॥ १३ ॥ सेवो० ॥ एह शीलमय धर्म आराधी, मानव सद्गति पामे जी ॥ बारणां ऽुर्गतिनां ते देवे, रमे ते आतमरामे जी ॥ १४ ॥ सेवो० वलीअ विशेष जे ब्रह्मचर्य पाले, ते पण शील कहीजे जी ॥ ते पण आ न्नव परन्नव केरां, सुख शाश्वत वली लीजे जी ॥ १५ ॥ सेवो० ॥ यतः ॥ "व्याघ्रव्यालजलानलादिविपदस्तेशां व्रजंति क्षयं, कल्याणानि समुल्लसंति विबुधाः सान्निध्यमध्यासते ॥ कीर्तिः स्फूर्तिमियर्त्ति यात्युपचयं धर्मः प्रणश्यत्यघं, स्वर्निर्वाणसुखानि सन्निदधते ये शीलमाबिभ्रते ॥ १ ॥" शील संक्षेप कह्युं हवे न्नाखुं, तप नामे हवे त्रीजुं जी ॥ तेह ऽुन्नेदे बाह्य प्रथम तिहां, अन्यंतर तप बीजुं जी ॥ १६ ॥ सेवो० ॥ बाह्य तणा षट न्नेद प्रकाश्या, अणसण पहेलो न्नेदो जी ॥ ऊणोदरी व्रतसंक्षेपण, रसत्यागे नवि खेदो जी ॥ १७ ॥ सेवो०॥ कायक्लेश ने संलीनता ए,षट्विध बाह्य कहाय जी ॥ अन्यंतर प्रायश्चित्त ने विनयो, वैयावच्च सज्जाय ॥ १८ ॥ सेवो० ॥ ध्यान ने उत्सर्ग ए षट लहीये, अन्यंतर निरमाय जी ॥ जी ॥ विशेषे बहुविध तप एहना, न्नेद पचाश कहाय जी ॥ १९ ॥ सेवो० ॥ वलीअ विशेषें तप बहु न्नेदे, न्नाख्या आगम मांहि जी ॥ वर्द्धमानश्रेणी तप नामे, परतर तप उच्छाहि जी ॥ २० ॥ सेवो० ॥ कनकावली रतनावली जाणो, मुगतावली मनोहार जी ॥ लघुसिंह ने वृद्धसिंह निःक्रीमित, जव मध्यवज्र मध्यसार जी ॥ २१ ॥ सेवो० ॥ प्रतिमान्नद्र महान्नद्र कहीये, सर्वतोन्नद्र मन आणी जी ॥ पंच कल्याणक तप वली स्थानक, सिद्धचक्र गुण खाणी जी ॥ २२ ॥ सेवो० ॥ सत्त स-

त्तमीआ अठ अठमीआ, नव नवमीआ होय जी ॥ दसमी एकादसी वली बारसी, भिक्षुप्रतिमा जोय जी ॥ २३ ॥ सेवो० ॥ इंद्रियजय ने संसारतारण, कषायजय तप नाम जी ॥ जोगजय ने वली करमसूदण, पंचमी तप गुणधाम जी ॥ २४ ॥ सेवो० ॥ दर्शन ज्ञान चरण आराधन, दश पच्चरकाणनी ढली जी ॥ समवसरण ने नंदीश्वर तप, करीये शक्तिने तोली जी ॥ २५ ॥ सेवो० ॥ अक्षयनिधि पुंडरिक रोहिणी तप, अंबिका तप सुविचारो जी ॥ सर्व सुख संपत्ति अभिधा, परमभूषण तप सारो जी ॥ २६ ॥ सेवो० ॥ श्रुतदेवता तप सर्वांग सुंदर, अदुःख देखी श्रीकार जी ॥ सौभाग्यकल्प वृक्ष ए नामे, एकादशी मन धारो जी ॥ २७ ॥ सेवो० ॥ चंद्रायण तप आठम चौदश, आंबिल वर्द्धमान मोहोटुं जी ॥ अशोकवृक्ष ने मुकुट सप्तमी, माणिक्यप्रभा नहीं खोटुं जी ॥ २८ ॥ सेवो० ॥ अखंड दशमी वली अमृत तप, तप वली एकादशांग जी ॥ दवदंती तप दीक्षानुं तप, निर्वाण तप वली चंग जी ॥२९॥ सेवो० ॥ गौतम पडघो ने स्वर्गदंडो, पद्मोत्तर तप जाण जी ॥ जिनपूजा ने हारज तप वली, ऊणोदरी अभिधान जी ॥ ३० ॥ सेवो० ॥ धर्मचक्रवाल तप वली भाख्युं, क्रमचक्रवाल होय जी ॥ बत्रीश विजयनुं तप घणुं सुंदर, मेरुमंदर जोय जी ॥ ३१ ॥ सेवो० ॥ सूरायण ने वली पडवा तप, घन तप कमल उदार जी ॥ अष्टापद पावडीआ नामे, वर्ग तपस्या विचार जी ॥ ३२ ॥ सेवो० ॥ गुणरतन संवत्सर जाणो, भद्रोत्तर अवधार जी ॥ अभिग्रह तपनो पार न लहीये, तेह अनेक प्रकार जी ॥३३॥ सेवो० ॥ द्रव्य क्षेत्र ने काल भावथी, भाख्या ग्रंथ मझार जी ॥ तपावलिथी विधि सहु जाणो, इहां थाये विस्तार जी ॥ ३४ ॥ सेवो० ॥ एम तपधर्म संक्षेपे भाख्यो, आराधी भवि प्राणी जी ॥ इह भव परभवनुं सुख लहीने, परणे शिववधू राणी जी ॥ ३५ ॥ सेवो० ॥ त्रीजे खंडे ढाल ए दशमी, पद्मविजय कहे एम जी ॥ सांभलीने श्रोता जन धर्मे, करजो अविहड प्रेम जी ॥ ३६ ॥ सेवो० ॥ सर्व गाथा ॥ ३३२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ भावधर्म चोथो भलो, सम्यग्दर्शन साच; नाण चारित्रनी भावना, सत भावन विनु माच ॥ १ ॥ वैराग्यभावना तेम वली, तीर्थभक्ति तत-

काल; साधुजननी सेवना, कंदर्पजय विकराल ॥ २ ॥ अतिचार जो आवीउं, निंदा गर्हा नाद; मोक्षनां सुखमां माचतो, आयतने आह्लाद ॥ ३ ॥ एह धर्म अरिहंतनो, नाख्यो चोथो नाव; नवनय नावठ नंजणो, वलीउं एह बनाव ॥ ४ ॥ चार प्रकारे सुणी चतुर, सेवी धर्म सुबुद्ध; जीव अनंता जिहां गया, शाश्वत सुख सुविशुद्ध ॥ ५ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ सोनानी झारी हे ॥ ए देशी ॥

॥ एणी परे सांनली हे ॥ साहिबाजी मारा ॥ जिनवरधर्म ॥ शिखिकुमरने ताम ॥ बोध थयो जिनधर्मनो जी ॥ बोले एणी परे हे ॥ सा० ॥ नाख्युं सत्य ॥ एहमां नहीं संदेह ॥ कोण कहे नेद मर्मनो जी ॥ १ ॥ पण एक सांनलो हे ॥ सा० ॥ धर्म अशेष ॥ नवि करी शकीये कोय ॥ दान विना घरमां रही जी ॥ तिण कारण हे ॥ सा० ॥ चारित्रधर्म्म ॥ योग्य होये ते कोण ॥ नाखो नगवन् मुझ सही जी ॥ २ ॥ गुरुजी बोले हे ॥ सा० ॥ सांनल जोग्य ॥ उपनो आर्य देश ॥ कुल ने जातिविशेषिउ जी ॥ हलूकरमा हे ॥ सा० ॥ निर्मलबुद्धि ॥ जाणे संसारस्वरूप ॥ वरणवुं एहवो पेखीउं जी ॥ ३ ॥ जन्म ते मरण निमित्त ॥ सा० ॥ चपल ते द्रव्य ॥ संजोग अंते विजोग ॥ मानवनव दुर्लन घणो जी ॥ विषय ते दुःखनो हेतु ॥ सा० ॥ मरवुं सहुने नित्य ॥ दारुण तास विपाक ॥ कोइ आधार न तेह तणो जी ॥ ४ ॥ एम जाणीने विरक्त ॥ सा० ॥ थोमो कषाय ॥ थोमो करतो हास ॥ जाण कस्या गुणनो वली जी ॥ नहि कौतुकी ने विनीत ॥ सा० ॥ बहुजन मान्य ॥ दोषकारी नवि होय ॥ श्रद्धा करे कह्युं केवली जी ॥ ५ ॥ वली थिर श्रद्धावंत ॥ सा० ॥ एहवो जोग्य ॥ जे उपसंपन्न होय ॥ तव कुंअर एणी परे नणे जी ॥ रुडो नाख्यो हे ॥ सा० ॥ साधुने योग्य ॥ पण उपसंपन्न आज ॥ आव्यो चरणे तुम्ह तणे जी ॥ ६ ॥ विजयसिंह गुरु हे ॥ सा० ॥ करे विचार ॥ एह महा नाग्यवंत ॥ प्रश्न करे जुउ केहवा जी ॥ ठे अति शांत स्वरूप ॥ सा० ॥ लखीये तेण ॥ महा कुले उपनो एह ॥ वचन बोले ते जेहवां जी ॥ ७ ॥ एहने कहीये हे ॥ सा० ॥ एहवां वयण ॥ जणे उपसंग्रह थाय ॥ एम चिंती हवे गुरु कहे जी ॥ सुण तुं श्रावक हे ॥ सा० ॥ तुं गुणवंत ॥

ए संसार असार ॥ तेहमां कोण एणी परे लहे जी ॥ ७ ॥ दुःकर जाणो हे ॥ सा० ॥ लेवुं जेह ॥ श्रमणपणुं जग सार ॥ शत्रु मित्र सम जाणवा जी ॥ नवि हणवो कोइ जीव ॥ सा० ॥ कहेवुं साच ॥ दंतशोधन मात्र कांय ॥ पच्चख्खवुं अदत्त आणवा जी ॥ ए ॥ त्रिविधे पच्चख्खवुं हे ॥ सा० ॥ अब्रह्मचर्य ॥ उपगरण वस्त्र ने पात्र ॥ उपर पण मूर्छा नहीं जी ॥ रात्रिभोजननो त्याग ॥ सा० ॥ लेवो आहार ॥ बेंतालीश दोष शुद्ध ॥ आगममां भाख्यो सही जी ॥ १० ॥ संयोजनादिक हे ॥ सा० ॥ टालवा पंच ॥ मितकाले लेवो आहार ॥ सुमति गुपति वर पालवी जी ॥ ईर्यामुख पचवीश ॥ सा० ॥ भाववी होय ॥ बाह्य अभ्यंतर भेद ॥ तप करवुं क्रोध जालवी जी ॥ ११ ॥ प्रतिमा वहेवी हे ॥ सा० ॥ मुनिनी अनेक ॥ विचित्र अभिग्रह जेह ॥ द्रव्यादिक जे भाखीआ जी ॥ भूये सूवुं हे ॥ सा० ॥ केशनो लोच ॥ कायक्लेश अनेक ॥ करतां शमरस चाखीआ जी ॥ १२ ॥ निःप्रतिकर्मा हे ॥सा०॥ जास शरीर ॥ वहेवी गुरुनी आण ॥ सर्व काल प्रभुआणथी जी ॥ परिषह जींतवा बावीश ॥ सा० ॥ उपसर्ग जेह ॥ दिव्यादिक बहु भेद ॥ जय करवो गुण खाणथी जी ॥ १३ ॥ लाधे अलाधें हे ॥सा०॥ सम चित्त राख ॥ अढार शीलांग सहस ॥ भार ते वहेवो नित्य पडे जी ॥ तिणे तरवो ए समुद्र ॥ सा० ॥ चरम कहेवाय ॥ बांहि करीने तेह ॥ तोलवो मेरु निज कर वडे जी ॥ १४ ॥ भखवो कोलीउं हे ॥सा०॥ स्वादरहित ॥ वेलु तणो जे असार ॥ खड्गधारा परे चालवुं जी ॥ पीवी अग्निनी ज्वाल ॥ सा० ॥ गंगप्रवाह ॥ चालवुं साहमे पूर ॥ निज आतम सुखे मालवुं जी ॥ १५ ॥ कोथलो पवननो हे ॥ सा० ॥ भरवो हाथ ॥ चतुरंग बल संघात ॥ जींतवुं एकले प्राणीये जी ॥ साधवो राधावेध ॥ सा० ॥ जयनी पताक ॥ ग्रहेवी अग्रही पूर्व ॥ दुःकर मुनिपणुं जाणीये जी ॥ १६ ॥ एम सांभली हे ॥ सा० ॥ हरख्यो कुमार ॥ कर जोडी कहे एम ॥ गुरु भलुं साधुपणुं कह्युं जी ॥ दुःकर कह्युं तिम तेह ॥ सा० ॥ पण नहीं मुज ॥ जाण्युं संसारनुं गुज ॥ जाणुं हवे एह कब लहुं जी ॥ १७ ॥ गुरु तव भाखे हे ॥ सा० ॥ साचुं एह ॥ जाणे संसारस्वरूप ॥ पण बहु भव भावना थकी जी ॥ मुंझावे बहु जीव ॥ सा० ॥ थाये

मूढ ॥ तेणे न विचारे स्वरूप ॥ न गणे अनागत बुद्धि थकी जी ॥१८॥ कुल नवि देखे हे ॥ सा० ॥ न करे धर्म ॥ नवि माने उपदेश ॥ मूर्ख न गणे गुरु प्रत्ये जी ॥ न करे अपजश बीक ॥ सा० ॥ आचरे तेह ॥ आलोक ने परलोक ॥ क्लेशनुं भाजन जिण गते जी ॥ १९ ॥ तिण कारण सुणी हे ॥ सा० ॥ हणवो मोह ॥ कुमर कहे प्रभु साच ॥ पण ए उपाय हणवा तणो जी ॥ कार्य साधे तेह ॥ सा० ॥ कारण सेव ॥ जे करे प्रगटे तास ॥ साध्य तणुं पूरणपणुं जी ॥ २० ॥ ते तुम्ह पासे हे ॥ सा० ॥ तुम पसाय ॥ पामुं भवजल पार ॥ जिम सांयरनिर्यामके जी ॥ अल्प पुण्य होये जास ॥ सा० ॥ कुशल न बुद्धि ॥ गुणवंता गुरुलाभ ॥ न होये नवि पामी शके जी ॥ २१ ॥ तेणे मुझ उपरे हे ॥ सा० ॥ करो उपगार ॥ गुरु बोले तव वाणी ॥ अम स्थिति ए आगम तणी जी ॥ संभलावी सवि मग्ग ॥ सा० ॥ केताक दिन्न ॥ शिखवीये आवश्यक ॥ पछी दीक्खीजे शिष्य भणी जी ॥ २२ ॥ बोले कुमरजी हे ॥ सा० ॥ कस्यो उपगार ॥ दीक्षा पण लेइ मुझ ॥ पालवी आगमस्थिति भली जी ॥ तेणे एमज हो स्वामी ॥ सा० ॥ एम कह्युं जाम ॥ बहु परिजनशुं ताहिं ॥ कुमर पिता आव्यो सांभली जी ॥ २३ ॥ हाथणीए बेठो हे ॥ सा० ॥ ते ब्रह्मदत्त ॥ उतरी प्रणमे पाय ॥ धर्मलाभ गुरुए दीउं जी ॥ त्रीजे खंडे ढाल ॥ सा० ॥ थइ अगीआर ॥ पद्मविजय कहे एम ॥ बेठो चित्त सुणवा कीउं जी ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ३६१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर तातने एम कहे, काम करो मुझ एक; तात कहे जे कहो तुम्हे, करीये तुम सुविवेक ॥ १ ॥ ए संसारस्वरूप एम, मानवभव मुशकल्ल; संग अनित्य चपला सिरी, एहमां नहीं अवल्ल ॥ २ ॥ यौवन जाये चोपशुं, अनंग करे अकल्याण; मृत्यु तो मूके नहीं, जाणो छो तुम्हे जाण ॥ ३ ॥ द्यो आणा लेउं दीखरुी, सफल करुं संसार; सुतस्नेहे गद्गद स्वरें, पुत्रने कहे प्रकार ॥ ४ ॥ बालक तुं बोले किशुं, काल न दीक्षा कोय; कुमर कहे नवि काल छे, जमनो एणी परे जोय ॥ ५ ॥ बोल्यो एक बंभदत्तना, परिवारमां पुरुष; पिंगक नामे पाप पुण्य, नवि छे जुउ निरख ॥ ६ ॥ बहु चर्चा ते बोलीउं, पण गुरु बेठां प्राय; नवि

बोलवुं ए ज्ञानथी, कुंवर न बोल्या कांय ॥ ७ ॥ समजाव्यो शुभ्र जुक्तिथी, ते कहेतां विस्तार; ग्रंथ वधे तिणे नवि ग्रह्यो, परगट एह प्रकार ॥ ८ ॥ समज्यो श्रावकव्रत ग्रहे, साथे ब्रह्मदत्त शुऊ; दीक्षानी अनुमति दीये, बंभदत्त अतिबुऊ ॥ ए ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ तट जमुनानुं रे अति रलिआमणुं रे ॥ ए देशी ॥

पुत्रनी साथे रे आव्या नयरमां रे, घोषणापूर्वक दान ॥ देतो करतो जिनवर चैत्यमां रे, अठाइ महोत्सव ज्ञान ॥१॥ धन धन एहने रे जाएयुं एणे खरुं रे ॥ ए आंकणी ॥ शुभ्र तिथि करणे रे मुहूर्त्त जोगे भले रे, शिबिकारूढ तिवार ॥ महा हर्षे करी बहु परिवारशुं रे, देतो दान अंवार ॥२॥ धन० ॥ मंगल तूर वजावते नीकल्यो रे, बिरुदावली रे बोलाय ॥ लोकप्रशंसा देखी बहु करे रे, पोहोता गुरुने रे पाय ॥ ३ ॥ धन० ॥ शिबिकाथी उतरी गुरु वंदीया रे, गुरुए दीक्षा रे दीध ॥ साधुवेष लीधो हरखे करी रे, आतम कारज कीध ॥ ४ ॥ धन० ॥ केइक दिन रही मास कलप थये रे, गुरु साथे करे विहार ॥ लाख अनेक वरस एम वही गयां रे, पालतां निरतिचार ॥ ५ ॥ धन०॥ इण अवसर जे जालिणी मावमी रे, थयो तस पश्चात्ताप ॥ काम हीणुं कर्युं जिणे मार्यो नहीं रे, गयो मुऊ देइ संताप ॥ ६ ॥ धन० ॥ तेण कारण कांय मोकलुं भेटणुं रे, संदेशो मीठी वात ॥ जो कांइ करतां फिरी आवे इहां रे, पछे करशुं सुखे घात ॥ ७ ॥ धन० ॥ जिम चिंत्युं तिम कीधुं तेणीए रे, मोकल्युं कंबलरत्न ॥ संदेशो बहु शिखवी मोकल्यो रे, सोमदेव करी घणुं जत्न ॥ ८ ॥ धन० ॥ देशविख्यात प्रवृत्ति आचार्यनी रे, पूछी पोहतो ते गाम ॥ शिखिकुमार साधुने भणावता रे, देखी वंद्या ते ठाम ॥ ए ॥ धन० ॥ धर्मलाभ देइ पूछे उलखी रे, किहांथी आववुं तुम्ह ॥ तिणे पण व्यतिकर सघलो भाखीउ रे, जालिणी मोकल्या अम्ह ॥ १० ॥ धन० ॥ पश्चात्तापे दाधी देहमी रे, तुम्ह प्रवृत्ति निमित्त ॥ ऋषि कहे पश्चात्ताप शो एहनो रे, तव ते बोल्यो सुचित्त ॥ ११ ॥ धन० ॥ तुम्हे दीक्षा लीधी ते कारणे रे, सुणी चिंते मुनिराय ॥ स्नेहकायर परमार्थ देखे नहीं रे, जुउ एम किम करे माय ॥ १२ ॥ धन० ॥ प्रत्युपकार न करी शकीये किमे

रे, मातपितानो रे कोय ॥ एम चिंती कहे सोमदेवने सुणो रे, मुज न-वनिर्वेद होय ॥ १३ ॥ धन० ॥ तिणे दीक्षा लीधी एम जाणजो रे, पण नहीं माय निरवेद ॥ तव ते कहे खरुं पण तुम मातने रे, उपजे छे अति खेद ॥ १४ ॥ धन० ॥ कहेवराव्युं छे इणी परे सांजलो रे, तुच्छ हृदय होय नारी ॥ चपल स्वजाव ने अविवेकज घणो रे, कामकरु अविचार ॥ १५ ॥ धन० ॥ होय कदाग्रह स्त्रीमां अति घणो रे, पछे होये पश्चात्ताप ॥ पुरुष तो महा गंजीर होये घणा रे, कोयने न करे संताप ॥ ॥ १६ ॥ धन ० ॥ म्हारो जाव जाण्या विण शुं कह्युं रे, आदर्यो परलोक मग्ग ॥ पण एकवार वंदाववा आवजो रे, नहींतर केम होय सग्ग ॥१७॥ धन० ॥ कंबलरत्न लेजो मुज हित करी रे, बोल्या शिखि अणगार ॥ उत्तर म्हें तुज सघलो जाखीउं रे, अने गुरु आधीन विहार ॥ १८ ॥ धन० ॥ हुं म्हारे आधीन नहीं कदा रे, पालवी श्रीगुरुआण ॥ मुनिने कंबलरत्न घटे नहीं रे, वली गुरु कहे ते प्रमाण ॥ १९ ॥ धन० ॥ तव कोइ मुनिए गुरु देखावीआ रे, जइ कह्युं सकल वृत्तांत ॥ कुमर तणा बहुमानथी वोहरीउं रे, कंबलरत्न ते खांति ॥ २० ॥ धन० ॥ वर्त्तमान-योगे वली आवशे रे, मांड्युं जणवा जे सुत्त ॥ ते संपूरण थाशे जब सही रे, तव ए आवशे पुत्त ॥ २१ ॥ धन० ॥ ए सांजलीने घणुं राजी थयो रे, त्रीजे खंडे ए ढाल ॥ समरादित्यना रासमां बारमी रे, कही पद्मे सुरसाल ॥ २२ ॥ धन० ॥ सोरठा ॥ सोमदेव गुरु पास, काल केतोइक रही करी ॥ आव्यो निज आवास, तप संजम मुनिवर तपे ॥ १ ॥ सर्व गाथा ॥ ३०२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अन्य दिने गुरु आवीआ, नयरकोश आसन्न; कोइक नरना मुख थकी, सांजले गुरु जासन्न ॥ १ ॥ परलोके पहोतो पिता, शिखिकुमरनो साच; मुनि साथे केइ मोकले, शिखिकुमर शुज वाच ॥ २ ॥ पोहोता को-श नयर पछे, उतरीआ उद्यान; वात लोकमां विस्तरी, सांजलजो साव-धान ॥ ३ ॥ शिखिकुमर साधु जिके, आव्या अहो अणगार; राय नगर-जन परिवर्या, वंद्या वारो वार ॥ ४ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ हवे नहीं जाउं मइ वेचवा रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ वंदना करी गुरुरायने रे लो, वेठा सुणवा धर्म ॥ मारा वाल्हाजी हो ॥ गुरु पण आक्षेपिणी कथा रे लो, कहेतां दीये शिवशर्म ॥ १ ॥ मा० ॥ एहवा गुरु रे फिरी नहि मले रे लो ॥ ए आंकणी ॥ आवर्ज्यां सवि लोकने रे लो, गया सहु निज निज गेह ॥ मा० ॥ हवे वीजे दिन मुनिवरु रे लो, शिखिकुमर सस्नेह ॥ २ ॥ मा० ॥ एह० ॥ गया निज मात पासे हवे रे लो, विधवारूप ते तास ॥ मा० ॥ ब्रह्मदत्त जेह मरी गया रे लो, अतिडुर्वल डुःखवास ॥ ३ ॥ मा० ॥ एह० ॥ तेणे निज मात न उंलखी रे लो, तेणे उंलख्यो मुनिराय ॥ मा० ॥ मायास्वन्नावे रोती थकी रे लो, अश्रुपात वहु थाय ॥ ४ ॥ मा० ॥ एह० ॥ आशासना मुनिवर करे रे लो, देशना देवे ताम ॥ मा० ॥ मातजी खेद न कीजीये रे लो, ए संसार डुःखधाम ॥ ५ ॥ मा० ॥ एह० ॥ इव्ये सयणे पराक्रमे रे लो, वल चतुरंगे जोय ॥ मा० ॥ देव असुर पमुहा मिले रे लो, मरण न जींते कोय ॥ ६ ॥ मा० ॥ एह० ॥ मरण हरि जगमां नमे रे लो, आपदाशत नखजाल ॥ मा० ॥ व्याधिज्वर दृढ दांत वे रे लो, वहु जनने करे काल ॥ ७ ॥ मा० ॥ एह० ॥ एम जाणीने आदरे रे लो, धर्मनो अर्थी जीव ॥ मा० ॥ राज्य छांमी व्रतन्नारने रे लो, पण नवि आदरे क्लीव ॥ ८ ॥ मा० ॥ एह० ॥ तिणे माता तुम्ह नवि घटे रे लो, मोहरूप विषपान ॥मा०॥ धर्मअमृत वर पीजीये रे लो, जगतमां सार निधान ॥ ए ॥ मा० ॥ एह० ॥ मायावंती माननी रे लो, जालिणी कहे कर जोमी ॥ मा० ॥ पुत्र ए धर्म मुजने गमे रे लो, नहि जेहनी जग जोडी ॥ १० ॥ मा० ॥ एह० ॥ मारी अवस्था देखीने रे लो, व्रत आपो मुज जोग ॥ मा० ॥ तव अणगार आलोचीने रे लो, काढवा नवनो रोग ॥ ११ ॥ मा० ॥ एह० ॥ सर्वविरतिनी योग्यता रे लो, नवि दीठी तेह मांहि ॥ मा०॥ देशविरति विस्तारथी रे लो, संन्नलावे उत्साह ॥ १२ ॥ मा० ॥ एह० ॥ दीधां अणुव्रत मातने रे लो, तिणीए कर्यां अंगीकार ॥ मा० ॥ तस विश्वास पमामवा रे लो, कूमकपटन्नंडार ॥ १३ ॥ मा० ॥ एह० ॥ यतः ॥ " अनृतं साहसं माया, मूर्खत्वमतिलोन्नता ॥ अशौचं निर्दयत्वं च, स्त्रीणां

दोषाः स्वजावजाः ॥ १ ॥" एहने मारी तो शकुं रे लो,जो पामे विश्वास ॥ मा० ॥ एम चिंती अंगीकस्यां रे लो, देखीये जक्तिआवास ॥ १४ ॥ मा० ॥ एह० ॥ हवे मुनिवर जव उठीआ रे लो, तव विनवे मुनि माय ॥ मा० ॥ आज जोजन तुम्हे इहां करो रे लो, तव वोल्या ऋषिराय ॥ १५ ॥ मा० ॥ एह० ॥ मातजी अमने घटे नहीं रे लो, जाख्यो ठे अणाचार ॥ मा० ॥ मधुकरवृत्ति ढांमीने रे लो, मुनिवर नवि करे आहार ॥ १६ ॥ मा० ॥ एह० ॥ तव जालिणी बोली तिहां रे लो, तुमे जाणो वठ एह ॥ मा० ॥ मुनिवर निज स्थानक गयो रे लो, एम प्रतिदिन ससनेह ॥ १७ ॥ मा० ॥ एह० ॥ हवे चित्त चिंतवे जालिणी रे लो, मारवा एहने उपाय ॥ मा० ॥ सूक्षम नवि जड्यो मुफने रे लो, करीये हवे कहो कांय ॥ १८ ॥ मा० ॥ एह० ॥ चउदशी दिन हवे आवीउं रे लो, सहुए कस्या उपवास ॥ मा० ॥ गोचरी कोइ न नीकल्या रे लो, करतां ध्यान अज्यास ॥ १९ ॥ मा० ॥ एह० ॥ जालिणी जाणी चिंतवे रे लो, मारुं नहि जो काल ॥ मा० ॥ तो हवे एह जाशे सही रे लो, पक्खसंधी थयो काल ॥ २० ॥ मा० ॥ एह० ॥ वीजो उपाय इहां नहीं रे लो, काल करुं कंसार ॥ मा० ॥ तालपुट विषजुत्त लाडुउं रे लो, आपुं काल सवार ॥ २१ ॥ मा०॥ एह०॥ मुनिवर संजम म्हालता रे लो, न लहे डुर्जन वात ॥ मा० ॥ परमां ते पेसे नहीं रे लो, धर्मे रंगाणी धात ॥ २२ ॥ मा० ॥ एह० ॥ त्रीजे खंके तेरमी रे लो, पद्मविजय कहे ढाल ॥ मा० ॥ मुनिगुण गातां मोदशुं रे लो, पामे मंगलमाल ॥ २३ ॥ मा० ॥ एह० ॥ सर्व गाथा ॥ ४२० ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम करतां जो नवि लीये, आग्रहथी दीउं आहार; हाथे आपुं हर्षे जिम, ते मोदक तइयार ॥ १ ॥ मारुं इणी परे मोदशुं, कस्युं ते सघलुं काम; जोजन लेइ जली जांतशुं, जालिणी चाली जाम ॥ २ ॥ ताम प्रजात थयो तिहां, पोहोती उपवन पास; दीठी मुनिए दृष्टिथी, जणे ते एहवी जास ॥ ३ ॥ माता किम आव्यां तुम्हे, एकाकी ए वार; अणघटतो कांइ आहारने, लेइ आव्यां ठो व्हार ॥ ४ ॥ जटिणी बोली जालिणी, सांजलो साची वात; पोते पुण्य उपायवा, जोजन लावी जांत ॥५॥

॥ ढाल चौदमी ॥
चित्रोडा राजा रे ॥ ए देशी ॥

॥ सांजलो तुमे मात रे, अणाचार ए ख्यात रे ॥ निपजात ए आहार अम्हारे कारणे रे ॥ १ ॥ साहमो वली आयो रे, तेणे अम्ह न सोहायो रे ॥ संजलायो सघलो विधि मुनिरायनो रे ॥ २ ॥ तव बोली तेह रे, देखाडे सनेह रे ॥ वत्र एह परे मुऊ शाता नवि होये रे ॥ ३ ॥ जो न लीउं आहार रे, म्हारो धिक् अवतार रे ॥ तुम्ह विहार ते अम पुरे निष्फल मन लहुं रे ॥ ४ ॥ तेणे अवश्य ए करवुं रे, बीजुं वयण न धरवुं रे ॥ भरवुं अन्यथा मुऊ ताहरा नेहथी रे ॥ ५ ॥ पगे पडी एम जाखी रे, सहु मुनिवर साखी रे ॥ माखी जिम मध उपर तिम उठे नवि किमे रे ॥ ६ ॥ मुनि सरल स्वजाव रे, चिंते एम ताव रे ॥ जूउ सद्भाव मातानो केहवो रे ॥ ७ ॥ धर्मश्रद्धा केहवी रे, पुत्र स्नेही न एहवी रे ॥ रखे जेहवी ए थाय जल विण पोयणी रे ॥ ८ ॥ बोले मुनिराय रे, सांजलो तुम्हे माय रे ॥ नवि थाय ए आहार दोषीलो अम थकी रे ॥ ए ॥ गुरु लाघव दोष रे, चिंतवी गतरोष रे ॥ शुज पोष कारण कहे मातने एणी परे रे ॥ १० ॥ तुम आग्रहे एह रे, लेशुं गतनेह रे ॥ मुनि माटे रेह आरंज न कीजीये रे ॥ ११ ॥ जालिणी तव जंपे रे, कोण तुम्हने लुंपे रे ॥ हमणां तो संपे अहार करो सहु रे ॥ १२ ॥ बोले मुनि तुम्हे आपो रे, सहु ऋषिने थापो रे ॥ करी जापो ने हुं पण लेशुं आहारने रे ॥ १३ ॥ जालिणी कहे वारु रे, मात वात्सल्य चारु रे ॥ कह्युं काम दिदारु राखी मुज जीवती रे ॥ १४ ॥ मुज हारे कीजे रे, पारणुं मानीजे रे ॥ जवतुं फल लीजे मानी मुज कह्युं रे ॥ १५ ॥ शिखिकुमरने वयणे रे, बेठा सहु मुनि जयणे रे ॥ जायणे जोजन कंसार ते पीरस्यो रे ॥ १६ ॥ सहुए कीधो आहार रे, हवे शिखि अणगार रे ॥ जाजने कंसार शेष ते पीरस्यो रे ॥ १७ ॥ तालपुट विष घाल्यो रे, ते लाडुउ आल्यो रे ॥ जोजनमां चाल्यो ते पण अनुक्रमे रे ॥ १८ ॥ विष वेगे घास्यो रे, शिखिकुमरे विचास्यो रे ॥ केम ए मुऊ धास्यो चित्तमां एणी परे रे ॥ १ए ॥ मुनिवर सहु जोया रे, सावधान पलोया रे ॥ अंगित आकार गोपाया एहवे रे ॥ २० ॥ थइ वेला जाम रे, गइ वाचा ताम रे ॥ मन चिंते आम हवे नवि जीववुं ॥ २१ ॥ पड्यो धरणीपीठ रे, मुनिए तव दीठ रे ॥ देखी तव

रिंठ आकुल व्याकुल थया रे ॥ २२ ॥ जालिणी पण एम रें, मुनि चिंते केम रे ॥ जननी थइ प्रेम मूकी करे एहवुं रे ॥ २३ ॥ जाणी फेर विशेष रे, अणशण उद्देश रे ॥ करे लेश न खेद ते शिखि मुनि कोयशुं रे ॥ २४ ॥ मन चिंते एह रे, थइ वात ए केह रे ॥ संसारसनेह धिक् हो एम कहे रे ॥ २५ ॥ चिंत्युं हतुं एम रे, मातने जइ नेम रें ॥ धरी प्रेमने धर्म पमाडशुं जली परे रे ॥ २६ ॥ क्लेशथी मूकावुं रे, जली धर्ममां ठावुं रे ॥ एम मन लावुं पण हवे शुं करुं रे ॥ २७ ॥ अपजश बहु थाशे रे, शंका सहु लाशे रे ॥ पण एम न विमासे माता ए किम करे रे ॥२८॥ वात पूर्वली जाणे रे, लोक कहे अन्नाणे रे ॥ धिक् मुज इण टाणे जननी डुःख दीउं रे ॥ २९ ॥ संसार ए रीति रे, नवि करीये अनीति रे ॥ पण अप्रीते अपजश विस्तरे रे ॥ ३० ॥ केइक करे दोष रे, पण जशनो पोष रे ॥ एहमां नहीं रोष कर्यां सहु जोगवे रे ॥३१॥ कर्यां कर्म ते आव्यां रे, ए कारण जाव्यां रे॥ मुज डुःखथी धाव्यां माता किणी परे रे ॥३२॥ अथवा श्यो शोक रे, शिवबीज ते रोक रे ॥ धर्म जे उंकनो तेह पमाडीउं रे ॥३३॥ तेणे चिंता न कीजे रे, नवपद समरीजे रे ॥ लीजें एम लाहो नरजव केरडो रें ॥ ३४ ॥ शुज जावना युत्त रे, नवकार संजुत्त रे ॥ निज आतम गुत्त करी करी कालने रे ॥ ३५ ॥ ब्रह्मलोकमां जायो रे, नवसागर आयो रे ॥ देव पायो लब्धी समागम विमानमां रे ॥ ३६ ॥ जालिणी पण मुइ रे, अनुकरमे हुइ रे ॥ अंधारी कुइ सम शर्करा नरगमां रे ॥ ३७ ॥ त्रण सागर आयो रे, ए तो महा डुःख पायो रे ॥ मुनिरायनी हिंसातुं फल एहवुं रे ॥ ३८ ॥ त्रीजो जव एम रे, सुरजवशुं प्रेम रे ॥ नरजव सुखे खेमे समरादित्यनो रे ॥ ३९ ॥ खंड त्रीजे जाखी रे, ढाल चौदमी दाखी रे ॥ इहां साखी ते समरादित्यचरित्र छे रे ॥ ४० ॥ माहा सुदि दिन त्रीजे रे, संपूरण कीजे रे ॥ गाम लिंबडी मांहि वदीजे हेजशुं रे ॥ ४१ ॥ गुरु खिमाविजयो रे, जिनविजयो सुजयो रे ॥ तस शिष्य थयो उत्तमविजय मनोहरु रे ॥ ४२ ॥ सिद्धांत अच्यासी रे, तस अंतेवासी रे ॥ वचन विलासी पद्मविजय कहे रे ॥ ४३ ॥ इति श्रीसंविज्ञपक्षीय पंडितप्रवरश्रीमडुत्तमविजयगणिशिष्यपंडित पद्मविजयगणिविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे शिखिकुमारजालिण्योः संगत्योस्तृतीयो नरजवः समाप्तः ॥ सर्व गाथा तृतीय खंडे (४६८) उक्त गाथा (८) ॥

॥ अथ ॥

॥ चतुर्थ खंडस्य प्रारंभोऽयं ॥



॥ दोहा ॥

॥ श्री सीमंधर साहिबा, विचरंता वीतराग; समवसरणमां शोभता, सबलुं जस सोभाग ॥ १ ॥ श्रीगुरु ने वली शारदा, प्रणमुं प्रेमे पाय; समरादित्यना रासमां,चोथो खंड चित्त लाय ॥ २ ॥ धनकुमार ने धनसिरि, दंपती थाये दोय; सज्जन सुणजो ते सवे, हवे ते केणी परे होय॥३॥सुणशे ते मुणशे सखर, समरादित्यनो स्वाद; जास प्रमादे जायशे, लहेशे न ते आह्लाद ॥ ४ ॥ वरजो विकथा वेगशुं, सहुने टले संताप; विकथाथी वारु वडो, उंघ्यो न सुणे आप ॥ ५ ॥

॥ढाल पहेली॥

॥ प्रथम गोवाला तणे जी ॥ ए देशी ॥

॥ जुंबूद्वीपना भरतमां जी, सुशर्म नयर उदार ॥ नित्य उत्सव आणंदमां जी, देवलोक अनुहार ॥ १ ॥ भविकजन सुणीये चरित्र रसाल ॥ पापनियाणां टाल ॥ भ० ॥ जेहथी होय जंजाल ॥ भवि० ॥ सु० ॥ ए आंकणी ॥ नित्य नाटक ते नयरमां जी, गुणिजन गुण गवराय ॥ रूप वेश रति आगली जी, नारी तणो समुदाय ॥ २ ॥ भ० ॥ परउपगार परायणो जी, महाजन निवसे अपार ॥ अरि गजशुं केसरी समो जी, सुधनु भूभरतार ॥ ३ ॥ भ० ॥ नगरशेठ ते नयरमां जी, राज्यमान गुणवंत ॥ दीन अनाथ जन वल्लु जी, वेसमण नाम कहंत ॥ ४ ॥ भ० ॥ पण वैश्रमण विभवे करी जी, हलको हुउं निदान ॥ त्रण वर्ग नित्य साचवे जी, सार्थवाह सुजाण ॥ ५ ॥ भ० ॥ कुल रूप विभवे सारिखी जी, सिरिया नामे नारी ॥ पंच विषय सुख भोगवे जी, स्नेहे स्त्री भरतार ॥ ६ ॥ भ० ॥ लखमीनुं लेखुं नहीं जी, पण संतान न

कोय ॥ आय उपाय घणा करे जी, पण नवि कारय होय ॥ ७ ॥ ज० ॥ इण अवसर ते नयरमां जी, जक्ष नामे धनदेव ॥ सान्निध्य करतो लोकनी जी, इणे पण कीधी सेव ॥ ८ ॥ ज० ॥ पूजा करी एम जाखीउं जी, जो मुज तुज अनुजाव ॥ पुत्र होशे तो नयरशुं जी, पूजा करुं शुज जाव ॥ ९ ॥ ज० ॥ नाम तुमारुं थापशुं जी, सुतनुं हुं निरधार ॥ मध्यम वये ते वर्त्ततां जी, दंपती इण समे सार ॥ १० ॥ ज० ॥ ब्रह्मलोकथी देवता जी, चवी लीधो अवतार ॥ जीव शिखिकुमारनो जी, सिरिया कुखे मजार ॥ ११ ॥ ज० ॥ स्वपने गजवर पेखती जी, उज्जल उंची रे काय ॥ मद जरतो मोहे घणुं जी, मधुकरने समुदाय ॥ १२ ॥ ज० ॥ शुंढारूंरू चपल घणो जी, रक्त तालु चउदंत ॥ कनक सांकले सोहतुं जी, घंटाजुगल महंत ॥ १३ ॥ ज० ॥ लोचन जेहनां घूमतां जी, रक्त चमरे सोहे वयण ॥ कुंजस्थले अंकुश रही जी, प्रातसमे ने रयण ॥ १४ ॥ ज० ॥ वदने उदरमां पेसतो जी, देखी जागी जाम ॥ संजलावे जरतारने जी, सुणी हरख्यो ते ताम ॥ १५ ॥ ज० ॥ सयल सयण गणनायको जी, पुत्र ते होशे रतन्न ॥ हरखे सुणी आदर घणे जी, करती गर्ज जतन्न ॥ १६ ॥ ज० ॥ शुज मुहूर्त्ते अनुक्रमे हवे जी, जन्म्यो तेह कुमार ॥ दासीए दीध वधामणी जी, सार्थवाहने सार ॥ १७ ॥ ज० ॥ संतोषी दासी प्रत्ये जी, देवरावे महा दाण ॥ जन्ममहोत्सव ते कुमारनो जी, करतो शेठ सुजाण ॥ १८ ॥ ज० ॥ एक मास एम वही गयो जी, हवे सहु नयर संघात ॥ बहु आडंबरशुं गयो जी, बालक लेइ निज हाथ ॥ १९ ॥ ज० ॥ धनदेव जक्षने देहरे जी, उत्सव करीय अपार ॥ पाय नमाडी थापीउं जी, नाम ते धनकुमार ॥ २० ॥ ज० ॥ कुमरजाव अनुक्रमे लह्यो जी, चोथे खंडे रे एम ॥ प्रथम ढाल पद्मे कही जी, सांजलजो धरी प्रेम ॥ २१ ॥ ज० ॥ सर्व गाथा ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नारकीमांथी नीकली, जालिणीनो हवे जीव; संसरतां संसारमां, अनुजवे दुःख अतीव ॥ १ ॥ अनंतरजवे अज्ञानथी, आदरी कष्ट अत्यंत; वसे ते नयरे वाणीउं, पूर्णजद्र पुण्यवंत ॥ २ ॥ गोमती नामे गेहिनी, तस कुखे अवतार; पुत्रीपणे ते प्रगटीउं, जनमी तेह जिवार ॥ ३ ॥ धण-

सिरि नाम ते दीधलुं, यौवन पामी जाम; दीठी धनकुमरे तदा, रतिरूपे अभिराम ॥ ४ ॥ पूर्वमैत्रीना गुणपणे, अभिलाषाए एम; दृष्टिविकारे देखतो, पूरण आणी प्रेम ॥ ५ ॥ पूरवना मत्सरपणे, धणसिरि जुए ते धन्न; सोमदेव पुरोहितशुं ते, तेह कुमरनुं तन्न ॥ ६ ॥ भाव लख्यो तिणे भली परे, वैशमणे जाणी वत्त; पूर्णभद्रने प्रार्थीउं, धणसिरि धण निमित्त ॥ ७ ॥ जाएयुं परस्पर बिहु जणे, वरत्यो तिहां विवाह; हरख्यो धन निज हैयफले, वाध्यो धणसिरि वाह ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ मुनिवर आर्यसुहस्ती रे ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसर एक दास रे ॥ घरदासी जएयो ॥ नंद नामे सोहामणो ए ॥ १ ॥ अग्निशर्मा भव तेह रे ॥ मित्र तापस हतो ॥ गुरुवैयावच्च कारणो ए ॥ २ ॥ धणसिरिशुं लगवाफी रे ॥ थइ ते नंदने ॥ स्त्रीसंगे सुख अनुभवे ए ॥ ३ ॥ भोगविटंबणा प्राय रे ॥ भोगवतां थकां ॥ शरद समय एक दिन हवे ए ॥ ४ ॥ रमवाने उद्यान रे ॥ धन्नकुमर गया ॥ साथे बहु परिवारशुं ए ॥ ५ ॥ समृद्धदत्त इण नाम रे ॥ सार्थवाह सुत ॥ दीठो दान देतां थकां ए ॥ ६ ॥ निज कर अर्जित ऋद्धि रे ॥ जे परदेशथी ॥ लावीने सफली करे ए ॥ ७ ॥ चिंते धण धन्न एह रे ॥ परउपकारीउं ॥ एणी परे लखमी वावरे ए ॥ ८ ॥ आमण डुमणो एम रे ॥ नंद देखी कहे ॥ शे डूभाणा स्वामी जी ए ॥ ९ ॥ भाख्यो निज अभिप्राय रे ॥ नंद कहे तदा ॥ शी ऊणीम छे तुम्ह घरे ए ॥ १० ॥ तुम्ह घरे द्रव्य अनंत रे ॥ दान आपो तुम्हे ॥ एह थकी सुविशेषथी ए ॥ ११ ॥ धन कहे ए शी वात रे ॥ पूर्व पुरुष रख्या ॥ ते देतां किम शोभीये ए ॥ १२ ॥ करी कमाइ हाथ रे ॥ जे दीये दानने ॥ तस कीर्त्ति वाधे घणी ए ॥ १३ ॥ तिणे विनवो तुम्हे ताय रे ॥ परदेशे जवा ॥ करुं कमाइ हाथशुं ए ॥ १४ ॥ काल उचित करे जेह रे ॥ जीववुं तेहवुं ॥ सफलुं भाख्युं शास्त्रमां ए ॥ १५ ॥ त्रण वर्गनुं मूल रे ॥ अर्थ उपार्जशुं ॥ तातने कहो किरपा करो ए ॥ १६ ॥ नंदे विनव्यो शेठ रे ॥ शेठ कहे तुम्हो ॥ भाखो वत्सने एणी परे ए ॥ १७ ॥ शेठ सहुथी अर्थ रे ॥ बहु ताहरे घरे ॥ मनइच्छित द्यो वावरो ए ॥ १८ ॥ नंद कहे सुणो तात

रे ॥ एह कह्युं खरुं ॥ पण एहनी एम रुचि नहीं ए ॥ १९ ॥ शेठ कहे जिम सुख रे ॥ उपजे तिम करो ॥ नंदे कह्युं सवि धन प्रत्ये ए ॥ २० ॥ आणा पामी ताय रे ॥ हरख्यो धन हवे ॥ करे सामग्री तेहनी ए ॥२१॥ करियाणां बहु लीध रे ॥ उद्घोषणा हवे ॥ नगर मांहि करावतो ए ॥ २२ ॥ सार्थवाहसुत धन्य रे ॥ तामलिप्ती जशे ॥ जावुं होये तो साथ छे ए ॥ २३ ॥ जेहने जोइये तास रे ॥ देशे रीझशुं ॥ वस्त्र अन्न औषध सहु ए ॥ २४ ॥ सांजली सोंध्यो लोक रे ॥ तामलिप्ती जवा ॥ धनसिरि चित्त हरखी घणुं ए ॥ २५ ॥ जाशे धन परदेश रे ॥ तब रुडुं थशे ॥ स्वेछाए अमे विचरशुं ए ॥ २६ ॥ गमनदिवस आसन्न रे ॥ आव्यो तव सुएयुं ॥ नंद पण साथे जायशे ए ॥ २७ ॥ सुणो स्वामी परदेश रे ॥ तुम्हे तो जायशो ॥ माया करी धनवती कहे ए ॥ २८ ॥ शी गति थाशे मुझ रे ॥ हुं हवे शुं करुं ॥ तव धनकुमर ते बोलीया ए ॥ २९ ॥ सासु ससरा सेव रे ॥ तुम्हे करजो इहां ॥ हुं पण वेहलो आवशुं ए ॥ ३० ॥ माया जल जरी नयण रे ॥ बोली धनसिरि ॥ गुरुजन मुझ हृदये वसे ए ॥ ३१ ॥ पण मुझ मूकी जाउ रे ॥ जो तुम्हे स्वामी जी ॥ तो हुं प्राण अवश्य तजुं ए ॥ ३२ ॥ नहीं मुझ जीवन काम रे ॥ तुम्ह विजोगथी ॥ एम कही उच्च स्वरे रूए ए ॥ ३३ ॥ आवी जननी ताम रे ॥ धन॰ कुमारनी ॥ आदरथी उजा थया ए ॥ ३४ ॥ धनसिरि गइ निज धाम रे ॥ शिखामण दीये ॥ जाव वहूनो जाणीउ ए ॥ ३५ ॥ देशांतर होय दीर्घ रे ॥ संगम दोहिला ॥ सुलज विजोग ते निपजे ए ॥ ३६ ॥ क्लेश घणो होये पुत्त रे ॥ अर्थ उपार्जतां ॥ मूल विषादनुं एह छे ए ॥ ३७ ॥ सकल गुणे संपूर्ण रे ॥ तुं छे यद्यपि ॥ तोपण तुझने जाखीये ए ॥ ३८ ॥ क्षमा ते करजो नित्य रे ॥ खबर कहावजो ॥ वाट जोउं छुं ताहरी ए ॥ ३९ ॥ मात प्रमाण तुझ आणी रे ॥ धनकुमर कहे ॥ आशीष देजो इच्छी ए ॥ ४० ॥ धनसिरि पीयर पास रे ॥ मागी आगना ॥ धन साथे मोकलाववा ए ॥ ४१ ॥ धनसिरि हरखी ताम रे ॥ सामग्री करी ॥ साथ रिद्धे जरपूरीउ ए ॥ ४२ ॥ बीजी चोथे खंडे रे ॥ ढाल पञ्चे कही ॥ उत्तमविजय कृपा थकी ए ॥ ४३ ॥ सर्व गाथा ॥ ७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ साथ सोंढ्यो हवे सामटो, पहोतो नित्य प्रयाण; तामलिप्ती नगरे तुरत, मास दोय परिमाण ॥ १ ॥ नरपति मलीउं नेहशुं, राये कस्यो सत्कार; वेची सरवे वस्तु ते, पाम्यो न इछित पार ॥ २ ॥ चिंते तव ते चित्तमां, लह्यो न इछित लाह; जाउं घर किम जाणीने, अर्णव चढुं अथाह ॥ ३ ॥ लखमीथी सहु लोकमां, आदर लहे अपार; ते विण जीवन तुछ छे, चित्त एम करे विचार ॥ ४ ॥ नंद ने धनसिरी नारीशुं, इण परे करी आलाप; नाहवा वेला जाणीने, उठे जब हवे आप ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ पुण्य प्रगट थयुं ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसर एक आवीउं रे ॥ सूरिजन ॥ जयकायर जस काय ॥ पुण्य प्रगट थयुं ॥ दोय हाथनुं पहेरीयुं रे ॥ सू० ॥ जीरण चीवर पाय ॥ १ ॥ पु० ॥ हाथ घसे थया उजला रे ॥ सू० ॥ मस्तके कुमलाणी माल ॥ पु० ॥ नखथी शरीर विलुरीउं रे ॥ सू० ॥ अधर तंबोले लाल ॥ २ ॥ पु० ॥ जुवटीए घणे प्रेरीउं रे ॥ सू० ॥ आव्यो जुवटीउं एक ॥ पु० ॥ शरणे आव्यो ताहरे रे ॥ सू० ॥ राख्य तुं धरीय विवेक ॥ ३ ॥ पु० ॥ एह जुआरी दुःख दीये रे ॥ सू० ॥ धन कहे सांभल वात ॥ पु० ॥ तुझ उपद्रव शे कारणे रे ॥ सू० ॥ कहे ताहरो अवदात ॥ ४ ॥ पु० ॥ ते कहे नवि बोली शकुं रे ॥ सू० ॥ महारुं नीच चरित्त ॥ पु० ॥ धन कहे खेद न कीजीये रे ॥ सू० ॥ नवि होये सम दशा नित्य ॥ ५ ॥ पु० ॥ भद्र कहो तुम्ह वातडी रे ॥ सू० ॥ तव जलभरीयां नयण ॥ पु० ॥ गद्गद वयणे बोलीउं रे ॥ सू० ॥ सांभल रे तुं सयण ॥ ६ ॥ पु० ॥ वाणीउं निज कुल फंसणो रे ॥ सू० ॥ सेवुं लोक विरुद्ध ॥ पु० ॥ पंडितजन बहु निंदीउं रे ॥ सू० ॥ नित्य रहुं चित्तथी क्रुद्ध ॥ ७ ॥ पु० ॥ महेसरदत्त माहरुं रे ॥ सू० ॥ नाम कुसुमपुर वास ॥ पु० ॥ दोषनिधान जे जुवटुं रे ॥ सू० ॥ वर्जित पुण्यविलास ॥ ८ ॥ पु० ॥ तेणे ए अवस्था पामीउं रे ॥ सू० ॥ धन चिंते अहो एह ॥ पु० ॥ आ वेला पण जाणतो रे ॥ सू० ॥ निज अपराध अछेह ॥ ९ ॥ पु० ॥ महोटो पुरुष कोइ एह छे रे ॥ सू० ॥ चिंतवी बोले ताम ॥ पु० ॥ कहो शुं करीये तुम्हने रे ॥

सू० ॥ तव नवि बोले जाम ॥ १० ॥ पु० ॥ चिंतवे धन कांइ हारीउं रे ॥ सू० ॥ मागी शके नहीं तेण ॥ पु० ॥ एम जाणी कहे नंदने रे ॥ सू० ॥ पूछो जइ एह कोण ॥ ११ ॥ पु० ॥ बाहिर जुवटीआ ए फिरे रे ॥ सू० ॥ श्यो एहनो अपराध ॥ पु० ॥ नंदे नीकली पूछीउं रे ॥ सू० ॥ श्यो अपराध अगाध ॥ १२ ॥ पु० ॥ सोल सोनैया हारीउं रे ॥ सू० ॥ वचने अमशुं एह ॥ पु० ॥ रोक्यो पण छिद्र पामीने रे ॥ सू० ॥ आवी पेठो इहां जेह ॥ १३ ॥ पु० ॥ नंदे कह्युं धनकुमरने रे ॥ सू० ॥ तव बोल्या ते कुमार ॥ पु० ॥ सोल सुवन्न आपो एहने रे ॥ सू० ॥ तव आप्या तेणी वार ॥ १४ ॥ पु० ॥ गया जुआरी ते सहु रे ॥ सू० ॥ कुंअर नाखे तास ॥ पु० ॥ मूको विषाद उठो तुम्हे रे ॥ सू० ॥ उद्यम करो सुविलास ॥ १५ ॥ पु० ॥ खेद करे नारी बहु रे ॥ सू० ॥ किम करे पुरुष प्रधान ॥ पु० ॥ उठो स्नान करो तुम्हे रे ॥ सू० ॥ तव लाव्यो असमान ॥ १६ ॥ पु० ॥ नाह्यो धन साथे हवे रे ॥ सू० ॥ खौमजुगल दीयुं तास ॥ पु० ॥ नोजन करी हवे उठीआ रे ॥ सू० ॥ नाखे वचन विलास ॥ १७ ॥ पु० ॥ एक वणिक कुल उपन्यो रे ॥ सू० ॥ वली सज्जन शिरदार ॥ पु० ॥ द्रव्य साधारण जाणीये रे ॥ सू० ॥ एह अथिर निरधार ॥ १८ ॥ पु० ॥ एहमांथी कांइ लीजीये रे ॥ सू० ॥ करो व्यवसाय उपाय ॥ पु० ॥ बुधनिंदित केम कीजीये रे ॥ सू० ॥ जेहथी थाय अपाय ॥ १९ ॥ ॥ पु० ॥ इह नव परनव दुःख दीये रे ॥ सू० ॥ तुम्ह पण न गमे एह ॥ पु० ॥ ते जुहारीपणुं ढांकीये रे ॥ सू० ॥ सुणी चिंते हवे तेह ॥ २० ॥ पु० ॥ हुं अधन्य ए पिता समो रे ॥ सू० ॥ करतो परउपकार ॥ पु० ॥ बोल्यो करी प्रणामने रे ॥ सू० ॥ धन्य महारो अवतार ॥ २१ ॥ पु० ॥ तुमे दरिशण दीवुं जिणे रे ॥ सू० ॥ मानी तुमची शिख ॥ पु० ॥ पामी सुरतरु परगडो रे ॥ सू० ॥ कोण मागे नर निख ॥ २२ ॥ पु० ॥ करुं हवे मुऊ कुल सारिखुं रे ॥ सू० ॥ मूक्यो अलछे आज ॥ पु० ॥ तुम प्रनावे सफल करुं रे ॥ सू० ॥ तुम्ह उपदेश महाराज ॥ २३ ॥ पु० ॥ तुम्हने मलशुं अवसरे रे ॥ सू० ॥ सज्जन एम जणाय ॥ पु० ॥ ढाल त्रीजी चोथा खंडनी रे ॥ सू० ॥ पद्मविजय गवराय ॥ २४ ॥ पु० ॥ सर्व गाथा ॥ १०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ महेसरदत्त चिंते मने, लखमी विण नहीं लाज; कीर्ति पण को नवि करे, सज्जन नहीं समाज ॥ १ ॥ परउपकार न संपजे, तरीये सायर तेण; अथवा जमजोरो अति, खेरू करे खणेण ॥ २ ॥ धर्म करुं तिणे धसमशी, उजय लोक सुख थाय; सार्थवाहसुत हरखशे, सांजली ए सुखदाय ॥ ३ ॥ एम चिंतीने आदरे, कापालिक व्रतकार; जोगीश्वर नामे जिके, तिण पासे व्रतजार ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ नारायणानी देशी ॥

॥ नंद ने धनसिरी आगले रे, जाखे निज अजिप्राय रे ॥ साजनीआ ॥ तव ते कहे सुणो साहेबा रे, नवि करीये अंतराय रे ॥ सा० ॥ १ ॥ कर्म कस्यां बूटे नहीं रे ॥ ए आंकणी ॥ तुम मन इछित कीजीये रे, अम्हे तुम्ह आणाकार रे ॥ सा० ॥ तव सवि जांम्ड ग्रह्यां हवे रे, परतिरगामी सार रे ॥ सा० ॥ २ ॥ क० ॥ जिहाज गवेषीने जस्युं रे, तव नंदने कहे नारी रे ॥ सा० ॥ मारीये आपण एहने रे, जइये बीजे ठार रे ॥ सा० ॥ ३ ॥ क० ॥ पापिणीनी सुणी वातडी रे, बोल्यो सज्जन नंद रे ॥ सा० ॥ अहो एहवुं मत जाखजे रे, एह तो सुरतरुकंद रे ॥ सा० ॥ ४ ॥ क० ॥ एह ते स्वामी आपणो रे, तुम्ह उपर बहु राग रे ॥ सा० ॥ मायावी नहीं ए कदा रे, ए महोटो वडजाग रे ॥ सा० ॥ ॥ ५ ॥ क० ॥ स्वपने पण मत चिंतवो रे, एहनी विरूइ वात रे ॥ सा० ॥ तव चिंते ते सुखणी रे, एह तो न करे घात रे ॥ सा० ॥ ६ ॥ क० ॥ कोय उपाय करी मारशुं रे, एहने हुं निज हाथ रे ॥ सा० ॥ नागदत्ता परिव्राजिका रे, मेल कस्यो ते साथ रे ॥ सा० ॥ ७ ॥ क० ॥ डुःख पामी कालांतरे रे, मरण लहे ए उपाय रे ॥ सा० ॥ कामणयोग शिखी तिहां रे, हीणा अध्यवसाय रे ॥ सा० ॥ ८ ॥ क० ॥ जिहाज तैयार कस्युं हवे रे, जांम्ड जस्यां ते अपार रे ॥ सा० ॥ रुडे लग्ने करी नीकल्यां रे, आव्यां जलधि किनार रे ॥ सा० ॥ ए ॥ क० ॥ सायरनी पूजा करी रे, दीधां दान अनेक रे ॥ सा० ॥ यान पात्र पूजा करी रे, बेठा धरीय विवेक रे ॥ सा० ॥ १० ॥ क० ॥ नांगर हवे उपमावीआं रे, पूस्यो सढ

पवंणेण रे ॥ सा० ॥ चाव्युं वहाण वेगशुं रे, वरणव्युं जाये केण रे ॥ सा० ॥ ११ ॥ क० ॥ नक्र चक्र कछप घणा रे, मगर ने पाठीन पीठ रे ॥ सा० ॥ जलचर तिहां बहु जातिनां रे, सहुए नयणे दीठ रे ॥ सा० ॥ १२ ॥ क० ॥ कामण कीधुं एण समे रे, सापिण पापिणी नारी रे ॥ सा० ॥ थोमा दिन मांहि थयो रे, रोग तणे ते विकार रे ॥ सा० ॥ १३ ॥ क० ॥ कांय उपाय कस्यो नहीं रे, वाध्यो अति घण व्याधि रे ॥ सा० ॥ हाथ सुका जिम दोरमी रे, जलोदर वधीउं अगाध रे ॥ सा० ॥ १४ ॥ क० ॥ वदन सोजी थयुं तुंबडुं रे, जंघाउं गली जाय रे ॥ सा० ॥ कर पद फाट्या तेहना रे, नोजनरुचि नवि थाय रे ॥ सा० ॥ १५ ॥ क० ॥ तरषानी पीमा घणी रे, पेटमां न टके नीर रे ॥ सा० ॥ खेद करी धन चिंतवे रे, एह अकाले पीर रे ॥ सा० ॥ १६ ॥ क० ॥ अथवा पाप विलासनो रे, काल तणो नहीं नीम रे ॥ सा० ॥ शुं करीये इण अवसरे रे, कोइ मिले न हकीम रे ॥ सा० ॥ १७ ॥ क० ॥ परिजन दूहवाये घणो रे, धनसिरी करे उद्वेग रे ॥ सा० ॥ मुख कुमलायुं नंदनुं रे, करुं ऊंपा अतिवेग रे ॥ सा० ॥ १८ ॥ क० ॥ एम करतां सहु डुःख धरे रे, वली कायरनुं ए काम रे ॥ सा० ॥ खेद न करवो आपदा रे, तिणे वली चिंते आम रे ॥ सा० ॥ १९ ॥ क० ॥ एह उचित ठे माहरे रे, आव्युं ए परकूल रे ॥ सा० ॥ डव्य धणी करुं नंदने रे, ए हवणां अनुकूल रे ॥ सा० ॥ २० ॥ क० ॥ विधिविलास विचित्र ठे रे, निपजशे किशुं कालि रे ॥ सा० ॥ नंद ते मुऊ नाइ समो रे, सोंपुं सहुए संनाली रे ॥ सा० ॥ २१ ॥ क० ॥ धनसिरी सोंपुं एहने रे, पोंचामशे मुऊ गेह रे ॥ सा० ॥ चिंतवी नंद बोलावीयो रे, धणसिरी पण ससनेह रे ॥ सा० ॥ २२ ॥ क० ॥ नंद सुणो मुऊ वातडी रे, महारी अवस्था एह रे ॥ सा० ॥ इछित कुल पण ढूकडुं रे, जीवित विजली रेह रे ॥ सा० ॥ २३ ॥ क० ॥ अम्ह सरिखा जे रोगीया रे, तेहने तो सुविशेष रे ॥ सा० ॥ डव्यनायक तुम्हे आजथी रे, योग्य नहीं कोइ शेष रे ॥ सा० ॥ २४ ॥ क० ॥ एह सायर पार उतरी रे, करजो रोग उपाय रे ॥ सा० ॥ जो जाशे तो रुअमुं रे, जो कदि रोग न जाय रे ॥ सा० ॥ २५ ॥ क० ॥ तो मुऊ नाइना स्नेहथी रे, पहोंचावजो सहु गाम रे ॥ सा० ॥ धनसिरी ए पतिवब्लना रे, तातने सों-

पजो ताम रे ॥ सा० ॥ २६ ॥ क० ॥ सुंदरी सुणो ए नंदने रे, टाली पापविकार रे ॥ सा० ॥ मुज परे जाणजे एहनुं रे, वयण न लोपजे सार रे ॥ सा० ॥ २७ ॥ क० ॥ तेह सुणी बहु दुःख धरे रे, रोयो मूकी पोक रे ॥ सा० ॥ धणसिरी पण कपटे रुवे रे, धन कहे न करो शोक रे ॥ सा० ॥ २८ ॥ क० ॥ नहीं अवसर ए विषादनो रे, अवसर उचित विचार रे ॥ सा० ॥ क्लीबपणुं केम आदरो रे, आदरो पुरुषाकार रे ॥ सा० ॥ २९ ॥ क० ॥ राजधानी रमणी रीदे रे, करतो जे नित्य शोक रे ॥ सा० ॥ तेह तजो तमे सुंदरी रे, हवे विलवो मत फोक रे ॥ सा० ॥ ३० ॥ क० ॥ पुरुष नारी तेहज खरी रे, जाणे काल अकाल रे ॥ सा० ॥ उद्यमे आपद् लंघीये रे, पामीये ऋद्धि विशाल रे ॥ सा० ॥ ३१ ॥ क० ॥ धनशिक्षा अंगीकरी रे, मान्युं नंदे एह रे ॥ सा० ॥ महा कमाहद्वीपे गया रे, कुशले खेमे तेह रे ॥ सा० ॥ ३२ ॥ क० ॥ चोथी चोथा खंडमां रे, भाखी उत्तम ढाल रे ॥ सा० ॥ समरादित्यना रासमां रे, पद्म कहे सुरसाल रे ॥ सा० ॥ ३३ ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ १४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नंद लेइ हवे भेटणुं, आव्यो नरपतिपाय; राये बहु आदर दीउं, आप्यो रहेवा ठाय ॥ १ ॥ भांम उतार्यां भली परे, वैद्य बोलाव्या वार; औषध भेषज आदरे, कीधा कोडि प्रकार ॥ २ ॥ व्याधि गयो नहि वेगलो, तव चिंते तिहां नंद; निज देशे पोहोंच्या विना, किम जाये दुःखकंद ॥ ३ ॥ कालक्षेप करवो नहीं, एम चिंतवतो एह; भांम वेची प्रतिभांम ले, यान पात्र सजे जेह ॥ ४ ॥ भूपतिने मलीउं भलो, ते पण करे सत्कार; निज देशे जावा भणी, तुरत ते थया तैयार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ नदी जमुनाके तीर उडे दोय पंखीआं रे ॥ उमे० ॥ अथवा ॥ देखी कामिनी दोय के कामे व्यापीउं रे ॥ के कामे० ॥ ए देशी ॥

॥ बेठा वाहाण मांहि के जलकौतुक जुए रे के ॥ जल० ॥ धनने जीवतो देखी के धनसिरी मन रुवे रे के ॥ धन० ॥ मरण लह्युं नहीं एह के चित्त एम चिंतवे रे के ॥ चित्त० ॥ पहोता जब निज देश के तव पछे किम हुवे रे के ॥ तब० ॥ १ ॥ जीवतो शाल समान के ए मुज नित्य दहे रे

के ॥ ए मु० ॥ नाखुं सायर मांहि के तो मन सुख लहे रे के ॥ लो म० ॥ उठे शौच निमित्त के रयणीए ए जदा रे के ॥ रय० ॥ अंधकारमां एह के नाखुं हुं तदा रे के ॥ नाखुं० ॥ २ ॥ वाहाण चपल स्वनाव के किहांए वही जशे रे के ॥ किहां० ॥ ए पण माहरे नंद के स्थिर नावे थशे रे के ॥ स्थिर० ॥ चिंतवी एह उपाय के तिम निपजावीउं रे के ॥ तिम० ॥ रात्री प्रहर रही शेष के तव एह नावीउं रे के ॥ ३ ॥ काल थोमो रही ताम के बुंबारव कस्यो रे के ॥ बुंबा० ॥ नंद उठी कहे एम के स्वामिनी थरहस्यो रे के ॥ स्वामि० ॥ त्रामती हृदय सडुःख के अतिशय रोवती रे के ॥ अति० ॥ हा आर्यपुत्र नणंती के धरणीए सोवती रे के ॥ धर० ॥ ॥ ४ ॥ नंद शंका लही जाम के धनशय्या जूवे रे के ॥ धन० ॥ तव नव दीठा तेह के पूबतो वहु रुवे रे के ॥ पूब० ॥ कहे धणसिरी परमादे के पमीआ सायरे रे के ॥ पमि० ॥ पमवा मांड्युं नंदे के हृदयथी कायरे रे के ॥ हृद० ॥ ५ ॥ परिजन सर्वे मली धरी राख्यो वहु परे रे के ॥ रा-ख्यो० ॥ वाहाण रखाव्युं तिण समे खोल ते बहु करे रे के ॥ खोल० ॥ प्रातसमे उपमावीयां नांगर डुःख धरी रे के ॥ नांग० ॥ सज्जन नंद समान के कोइनुं नहीं चरी रे के ॥ कोइ० ॥ ६ ॥ डुर्जन धनसिरी जोमी के जगमां नवि जमे रे के ॥ जग० ॥ चित्तथी हर्ष उमाह के वाहिर एम रमे रे के ॥ वाहि० ॥ हवे धनकुमर ते जेह के पमीया जेटले रे के ॥ पमी० ॥ फलक लहे एक तेह के पुण्यथी तेटले रे के ॥ पुण्य० ॥ ७ ॥ सात रात्रि रही त्यांहि के कांठे नीकल्यो रे के ॥ कांठे० ॥ लवणनीर सेवनाथी के पेटमां खलनल्यो रे के ॥ पेट० ॥ कामए नीकल्यां ताम के पुण्यउदय थयो रे के ॥ पुण्य० ॥ जन्म थयो फरी मुज के एणी परे मन नयो रे के ॥ एणी० ॥ ८ ॥ तिमिरपादपने पास के बेठो चिंतवे रे के ॥ बेठो० ॥ अहो एह माया बहुल के शुं कस्युं कैतवे रे ॥ शुं क० ॥ अहो निर्दयपणुं नारी के वयर केवुं वहे रे के ॥ वय० ॥ अहो मुख मीठी एह के कुल खपण लहे रे के ॥ कुल० ॥ ९ ॥ यतः ॥ "अनृतं साहसं माया, मूर्खत्वमतिलोजता ॥ अशौचत्वं, निर्दयत्वं स्त्रीणां दोषाः स्वनावजाः ॥ १ ॥" जल मज्जे मह्रिपयं, आगासे पक्खिआण पयपंती ॥ महिलाहिययाण-मग्गो, तिन्नि विविरला पयासंती ॥ २ ॥ यतः सवैउ ॥ कबहुं विनता मृड

वाच वदे, कवहुं तिनसूं कटु वाच कहे ॥ कवहुं मनरंग विरंग धरे, कवहुंज विरागिन हूई रहे ॥ कवहुं एक वोल सहे न जलो, कबहुं कटु बोल अनेक सहे ॥ मुनि धन्न कहे जगदीस विना, त्रियकी करनी कहो कोन लहे ॥ १ ॥ कबहुंज खुसी विखुसी मनमें, वहु जांति कपट्ट करे तरुनी ॥ कबहुंज दयाल उदार चित्ते, कवहुं लहु चित्त होये लरनी ॥ कबहुं सव जान अजान होवे, कवहुं हगनीर झरे झरनी ॥ मुनि धन्न कहे जगदीस विना, कहो कोन लहे त्रियकी करनी ॥ २ ॥" कीधो ए व्यवसाय के कहो कारण किशे रे ॥ कहो० ॥ अथवा विवेक रहित के कारण शुं हशे रे के ॥ कार० ॥ दोष निवास निमित्त के ए साहस तणुं रे के ॥ ए सा० ॥ कपटनी उत्पत्ति एह के क्षेत्र मृषा जणुं रे के ॥ क्षेत्र० ॥ १० ॥ उन्मारगनुं द्वार के आपद् गेह छे रे के ॥ आप० ॥ नरकसोपान ने स्वर्गनी अर्गला एह छे रे के ॥ अर्ग० ॥ अहवा एह विचार के करण समय नहीं रे के ॥ कर० ॥ हमणां उद्यम साध्य के करे माहरुं सही रे के ॥ करे० ॥ ११ ॥ वस्तु अतीतनी चिंत के मुझने नवि घटे रे के ॥ मुझ० ॥ उठ्यो एम अवधारी के चाल्यो सायरतटे रे के ॥ चाल्यो० ॥ इण अवसर सावत्थी के नयरीनो धणी रे के ॥ नय० ॥ सिंहलद्वीपे जाय के दीकरी तेह तणी रे के ॥ दीक० ॥ १२ ॥ वाहाण जांग्युं तास के दासी तेहनी रे के ॥ दासी० ॥ मरण लही ते चेटी के कांति घण देहनी रे के ॥ कांति० ॥ कांठे काढी कल्लोले के दीठी तिण समे रे के ॥ दीठी० ॥ रयणावली तस देहमे के दीठां मन गमे रे के ॥ दीठां० ॥ १३ ॥ त्रिलोकसारा नाम के हार तणुं जलुं रे के ॥ हार० ॥ लेवी घटे नहीं मुझ के एम मन अटकलुं रे ॥ एम० ॥ पण इण द्रव्य वसाय के करीने आपशुं रे के ॥ करी० ॥ वारंवार उद्देशे के शुज पखे थापशुं रे के ॥ शुज० ॥ १४ ॥ लीधी रयणावली तेह के चाल्यो तव मल्यो रे के ॥ चाल्यो० ॥ महेसरदत्त कापालिके कुमरने अटकल्यो रे के ॥ कुम० ॥ सायरकांठे मंत्र के साधन ते करे रे के ॥ साध० ॥ रे सब्बवाहसुत तुझ के आववुं इणी परे रे के ॥ आव० ॥ १५ ॥ एह अवस्था तुझ के देखी दुःख दीये रे के ॥ देखी० ॥ घरछिद्र नवि कहुं एम के कुमर चिंते हैये रे के

॥ कुम० ॥ कहे मुक जांग्युं जहाज के सयण वियोगीउं रे ॥ सय० ॥ तिणे ए अवस्था एम के वली तनु रोगीउं रे के ॥ वली० ॥ १६ ॥ कहे कापालिक ताम के ए विधि वक्र छे रे के ॥ एवि० ॥ चंचल लखमी अनित्य के संसार चक्र छे रे ॥ संसा० ॥ कल्पवृक्ष सम तुक के आपद् एहवी रे के ॥ आप० ॥ तो पामर जन अन्य के वात ते केहवी रे के ॥ वात० ॥ १७ ॥ पण सुणी वात ए मुज्ज के हृदय कठिन करो रे के ॥ हृद० ॥ इण समे सयण के दुष्टनों आवे पटंतरो रे के ॥ आवे० ॥ जाग्य तणी एम खबर के निःसंशय पके रे के ॥ निःसं० ॥ अगर सुगंधनी खबर के अनले जव चढे रे के ॥ अन० ॥ १८ ॥ एम एह आपद् जाणो के बहु उपगारिणी रे के ॥ बहु० ॥ पण हवे थोको काल के तुक सहचारिणी रे के ॥ तुक० ॥ लक्षण ताहरां देखी के जाणीये एणी परे रे के ॥ जाणी० ॥ साधारण तुक दुःख के मुक संपद् परे रे के ॥ मुक० ॥ १९ ॥ तजीउं धण कण संग के शुं तुक उपगरुं रे के ॥ शुं तु० ॥ पठित सिद्ध देउं मंत्र के तुकने हित करुं रे के ॥ तुक० ॥ तक्षक जातिना सर्प के तस पण विष हरे रे के ॥ तस० ॥ ए पण होय के मंत्र के बहुने सुख करे रे के ॥ बहु० ॥ २० ॥ चिंते धन्नकुमार के मुनि उपगारीउं रे के ॥ मुनि० ॥ करी मुकने शुज्ज दृष्टि के मुकने तारीउं रे के ॥ मुक० ॥ कहो केम लेउं मंत्र के विण कांय उपगरे रे के ॥ विण० ॥ धन कहे मंत्रना देव के ग्रहीने दुःख करे रे के ॥ ग्रही० ॥ २१ ॥ तव कापालिक बोले के नहीं मंत्र आकरो रे के ॥ नहीं० ॥ धन कहे नहीं मुक काम के मुक किरपा करो रे के ॥ मुक० ॥ पांचमी चोथे खंडे के ढाल ए मन धरो रे के ॥ ढाल० ॥ पद्म कहे उपगार के इणी परे सहु करो रे के ॥ इणी० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ १२० ॥

॥ दोहा ॥

॥ महेसरदत्त मन थकी, चिंते एम विचार; इणे मुकने नवि उलख्यो, न लीये तिणे निरधार ॥ १ ॥ एम कही प्रगट कह्युं इणे, सुण सत्थवाह सुजाण; जुवटीउं मुक जाणजे, पूरव ए पहिचाण ॥ २ ॥ अवर विकल्प न आदरो, मंत्र ए ल्यो महाराज; नहिंतर पीका मुक घणी, उपजशे सुण आज ॥ ३ ॥ सघलुं ते संजारीने, चित्तमां करे विचार; एहने पीका

उपजे, तिणे ए लेउं तैयार ॥ ४ ॥ कुमर कहे किरपा करो, तव दीधो तिणे मंत; लीधो तव लाजे करी, गया तपोवन एगंत ॥ ५ ॥ खाधां फणसादिक खरां, एक दिन रह्या उछाह; प्रणमी वहुले प्रेमशुं, चाल्यो निज घर चाह ॥ ६ ॥ रत्नावली राखे गुपत, जाये आगल जाम; सावछीने परिसरे, मारग पोहोतो ताम ॥ ७ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ लाल सुरंगा रे प्राणीया अथवा सहेजानंदी रे आतमा ॥ ए देशी ॥

॥ विचारधवल तिहां राजीउ, फाड्यो तास भंमार रे ॥ चोरे चोरी करतां थका, पकडे लोक तिवार रे ॥ जोगी जंगम जार रे ॥ कमी कापमी निरधार रे ॥ लावे मंत्रीने द्वार रे ॥ १ ॥ कर्म न छूटे रे आतमा ॥ मंत्री तेहनी परीक्षा करी, मूकी दीये ततकाल रे ॥ धन ते सांभली वातने, वलीउ तिणहीज ताल रे ॥ चोकी पुरुषे नीहाल रे ॥ जातां पकड्यो संभाल रे ॥ उपनी मनमां ते झाल रे ॥ २ ॥ कर्म० ॥ कहे भद्र किहांथी आव्या तुम्हे, तव बोल्यो तेह एम रे ॥ सुसम्म नयरथी आवीयो, कहे किहां जावानो प्रेम रे ॥ आगे गया हुता जेम रे ॥ पाछा जाशुं घरे तेम रे ॥ मुझ पकमो तुम्हे केम रे ॥ ३ ॥ कर्म० ॥ राय विचारधवल घरे, चोरी चोरे ते कीध रे ॥ तिणे अम जोवाने मूकीआ, बीजां काम निषेध रे ॥ अमने आणा ए दीध रे ॥ तुम्हे तो पुण्यथी इद्ध रे ॥ पण पकड्या इणविध रे ॥ ४ ॥ कर्म० ॥ मंत्री पासे चालो तुम्हे, कोप न करशो निज चित्त रे ॥ धन कहे दोष न म्हें कस्यो, हुं श्ये आवुं कहो मित्त रे ॥ तव ते कहे कहुं हित रे ॥ अम्हे आणाकारी नित रे ॥ अवश्य जवानी छे रीत रे ॥ ५ ॥ कर्म० ॥ विण इछा पण चालीउ, दीठो मंत्रीए तेह रे ॥ पूछे किहांथी आव्या तुम्हे, पूरवनी परे एह रे ॥ वात कही सवि जेह रे ॥ मंत्री कहे तुझ देह रे ॥ संवल पासे छे केह रे ॥ ६ ॥ कर्म० ॥ तव तेह लोभ अज्ञानथी, बोल्या वगर विचार रे ॥ मुझ पासे तो कांइ नथी, मंत्री भाखे तिवार रे ॥ कहेजे होय जे निरधार रे ॥ धन कहे नहीं फेरफार रे ॥ जूठनो इहां नहीं चार रे ॥ ७ ॥ कर्म० ॥ मंत्रीसर कहे जाउ सुखे, तव जातां घरबार रे ॥ घोटकशालाने घोमले, ताण्युं वस्त्र जे सार रे ॥ फाटुं तेह जिवार रे ॥ माला पडीअ तिवार रे ॥ सप्तऋषि श्रेणी

धार रे ॥ ७ ॥ कर्म० ॥ दीठो मंत्रीए तेटले, लीधो रयणावली हार रे ॥ ऊलखी मनमां रे चिंतवे, राजधूआ थयो मार रे ॥ पूछे हार अधिकार रे ॥ तव लज्जा मन धार रे ॥ बोले धन्नकुमार रे ॥ ए ॥ कर्म० ॥ महा कराहाधिपे गयो, जहाजे बेसीने जब रे ॥ लीधी रयणावली मूलथी, पाछां वलता मुज तब रे ॥ जहाज जांग्युं गयो अब रे ॥ एक रयणावली हब रे ॥ नीकल्यो आव्यो हुं इब रे ॥ १० ॥ कर्म० ॥ तुम्हे क्यारे लीधी मूल्यथी, तव बोल्यो धन वाण रे ॥ एक वरस मुजने थयुं, मंत्री चिंते सुजाण रे ॥ लीधी आपणे गुणखाण रे ॥ मास त्रण थया ताण रे ॥ दीधी कुमरीने पाण रे ॥ ११ ॥ कर्म० ॥ बे मास गया थया तेहने, ए तो बोले छे एम रे ॥ वात कहो एह किम मले, बोले जूठुं ए नेम रे ॥ कुमरी मारी एणे एम रे ॥ कह्युं नृपने थयुं जेम रे ॥ नृप क्रोधे थयो जेम रे ॥ १२ ॥ कर्म० ॥ रयणावली जोइ भूपति, तेड्यो जंमारी जाम रे ॥ तिणे कह्युं एह ते आपणी, चिंते भूप उद्दाम रे ॥ मारी कुमरीने ठाम रे ॥ नहीं तो ए किम आम रे ॥ क्रोध घणो थयो ताम रे ॥ पण न्याये अन्निराम रे ॥ १३ ॥ कर्म० ॥ वारे वारे पूछावीउं, पण नवि कहे फेरफार रे ॥ तेहनो तेह उत्तर दीये, चढीउं क्रोध अपार रे ॥ हुकम कस्यो वध त्यार रे ॥ डिंमिम वाजे असार रे ॥ चोपमीका मष छार रे ॥ १४ ॥ कर्म० ॥ लोक जणावण कारणे, साथे राखी तें माल रे ॥ वधस्थानक लेइ जायतां, हाटे शेरी सुविशाल रे ॥ माल ते मांस नीहाल रे ॥ लावक पंखी तिण ताल रे ॥ हार लेइ चाल्यो ततकाल रे ॥ १५ ॥ कर्म० ॥ निज मालामां माला धरी, हवे धनकुमर मशाण रे ॥ ॥ लाव्या तिहां वध कारणे, बोलाव्यो तिहां पाण रे ॥ चंमाल पाडे समशाण रे ॥ राजा पुरुषे जमराण रे ॥ सोंपी वलीआ ते ताण रे ॥ १६ ॥ कर्म० ॥ थोडी भूमि ते लेइ गयो, जोयुं तास नीहाल रे ॥ एहवुं रूप ने आकृति, दीसे पुण्य विशाल रे ॥ करे न अकारज बाल रे ॥ किम मारुं हुं अकाल रे ॥ इणी परे चिंते चंमाल रे ॥ १७ ॥ कर्म० ॥ अथवा आणाकारी अम्हे, एम विचारे शुं थाय रे ॥ कहे जाइ बेस तुं समीप रे ॥ हवे तुज आवीउं आय रे ॥ सांजल वात तुं जाय रे ॥ मुज श्रावक मित्र थाय रे ॥ तास संगति सुखदाय रे ॥ १८ ॥ कर्म० ॥ क्रूर दृष्टि

नहीं माहरी, पण चाकर थया राय रे ॥ तिणे अम्हे विनव्यो रायने, मारीए जेहने जाय रे ॥ शुन परिणामी जो थाय रे ॥ तो सङ्गति मांहि जाय रे ॥ तिणे मारशुं परूखाय रे ॥ १ए ॥ कर्म० ॥ एक मुहूर्त्त परूखी करी, पछे करशुं तुम्ह आण रे ॥ राये पसाय अम्हने कस्यो, तिणे तुं वोल सुजाण रे ॥ कहे ते करीये विन्नाण रे ॥ धन चिंते अहो पाण रे ॥ किणी परे वोले ठे वाण रे ॥ २० ॥ कर्म० ॥ चोथे खंडे बठी कही, इणी परे उत्तम ढाल रे ॥ पद्मविजये सोहामणी, उत्तमविजयनो वाल रे ॥ उत्तम जननो ए ढाल रे ॥ सांनलो वात रसाल रे, सुणतां मंगलमाल रे ॥ २१ ॥ कर्म० ॥सर्व गाथा ॥ १ए० ॥

॥ दोहा ॥

चिंते धन एम चित्तमां, परउपगारी पाण; अनुकंपा जुर्ड आकरी, संगति फल असमाण ॥ १ ॥ सज्जन संगति सेवीये, कुमति मोह करे दूर; नीति विवेक नव नव होचे, पुण्य तणो होय पूर ॥२॥ श्रावकनी संगे सखर, किम ए कर्मचंमाल; जाति चंमाल ए जाणीये, केहवुं दरिस अकाल ॥३॥ निःशासो हवे नाखीने, वोले इणी परे वोल; रायशासन कस्य तुं सुखे, करवो नहीं कांइ तोल ॥ ४ ॥ धीरज देखी धन तणी, परखी पुरुष प्रजाव; निरअपराधी नर अठे, पण मारण प्रस्ताव ॥ ५ ॥ चतुर चंमाल गद्गद चवे, आंसूडे जरी आंख; इष्टदेव संजारीये, खेद ते दूरे नाख ॥ ६ ॥ धरजे ध्यान तुं धर्मनुं, सन्मुख करजे सग्ग; धन चिंते धिग् माहरो, जन्म गयो इण जग्ग ॥ ७ ॥ जमजिह्वा सरिखी जुर्ड, काढी इणे करवाल; वाही निज कर इसी वली, वचन कहे विकराल ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ नणदल विंदली दे ॥ ए देशी ॥

॥ सुणजो सहु लोका वाणी ॥ रायकुमरी वंची इण प्राणी हो ॥ सुणजो सहु लोका ॥ त्रिलोक सारा रयणमाला ॥ अपहरी एणे थइ उजमाला हो ॥१ ॥ सुणजो सहु लोका ॥ तिणे एह ते मास्यो जाय; एम जे करशे तस थाय हो ॥सु०॥ वाही एम कही करवाल ॥ करुणाशून्य जाव विशाल हो ॥ २ ॥ सु० ॥ नवि लागो तेह प्रहार ॥ पड्यो पृथवी उपर त्यार हो ॥ सु० ॥ करवाल त्रूटी ततकाल ॥ धनकुमर कहे सुरसाल हो ॥ ३ ॥ सु० ॥ कर आण तुं नृपति केरी ॥ तुं चाकर शुं कहुं फेरी हो ॥ सु० ॥

न करी शकुं तुम पर घाय ॥ चंमाल कहे सुण जाय हो ॥ ४ ॥ सु० ॥ कांयक करुं तुज उपकार ॥ तुं मुखथी जाख्य प्रकार हो ॥ सु० ॥ इण अवसर रायनो पुत्र ॥ सुमंगल राखे घरसूत्र हो ॥ ५ ॥ सु० ॥ गयो तेह उद्यान मकार ॥ अहि मशीउ केर अपार हो ॥ सु० ॥ व्याप्युं ते सघले अंग ॥ थयो काष्ठ परे तस रंग हो ॥ ६ ॥ सु० ॥ आएयो ते नरपति पासे ॥ गारुमी बोलाव्या उल्लासे हो ॥ सु० ॥ आव्या ते देखी तास ॥ गारुमी थया सर्व निराश हो ॥ ७ ॥ सु० ॥ मंत्र औषध कीधां तेणे ॥ पण गुण न थयो कांय इणे हो ॥ सु० ॥ राजा लही खेद विचारे ॥ अचिंत्य शक्ति नर धारे हो ॥ ८ ॥ सु० ॥ सिद्ध गारुम मंत्रको होय ॥ आवी जीवाडे कोय हो ॥ सु० ॥ इणी परे डिंडिम वजमावे ॥ कोइ आवी कुमर जीवावे हो ॥ ए ॥ सु० ॥ ते जे मागे ते दीजे, त्रिक चोक चाचरे वदीजे हो ॥ सु० ॥ एक डिंडिम फिरतो आयो ॥ जिहां धनवध केरो ठायो हो ॥ १० ॥ सु० ॥ सुएयो शब्द ते धनकुमारे ॥ कोइ राजकुमर उगारे हो ॥ सु० ॥ तेहने मागे ते आपे ॥ वली प्राणजीवन तस थापे हो ॥ ११ ॥ सु० ॥ कहे धन चंमालने एम ॥ तुज आग्रह बे अति प्रेम हो ॥ सु० ॥ तो ए मुज कीजे काम ॥ रायसुत सुमंगल नाम हो ॥ १२ ॥ सु० ॥ करज्यो जे एहने साप ॥ जइ जीवाडुं हुं आप हो ॥ सु० ॥ पढे मारजो एम सुणी हरख्यो ॥ चंमाल चिंते मन सरिखो हो ॥ १३ ॥ सु० ॥ जे नरपतिसुत जीवाडे, तस नृप किम दुःख पमाडे हो ॥ सु० ॥ नूपति गुणनो पक्षपाती ॥ दाक्षिण्यसायर नहीं घाती हो ॥ १४ ॥ सु० ॥ ए जीव्यो हवे अथवा एह ॥ किम इणी परे मरण लहेह हो ॥ सु० ॥ ते पमहवादकने तेड्यो ॥ कह्युं सर्व वृत्तांत रही नेडो हो ॥ १५ ॥ सु० ॥ ते कहे एह साचुं केम ॥ तव धन बोल्या धरी प्रेम हो ॥ सु० ॥ बे मंत्र तो जालिम जोर ॥ पढे जाग्य फले इणे ठोर हो ॥ १६ ॥ सु० ॥ एहमां नवि आपणुं चाले ॥ पण जोउं ए मंत्र जो हाले हो ॥ सु० ॥ एम सांजली सहुए विचारे ॥ अहो गिरुउ निरहंकारे हो ॥ १७ ॥ सु० ॥ ए निश्चय कुमर जीवावे ॥ नरपति पासे लेइ आवे हो ॥ सु० ॥ नूपने सवि वात सुणावे ॥ नृप देखी इणी परे जावे हो ॥ १८ ॥ सु० ॥ परद्रव्य लीये किम एह ॥ आकृति सौजाग्यनुं गेह हो ॥ सु० ॥ करशुं पढे वात विचारी ॥ विषम गति विषनी धारी हो

॥ १९ ॥ सु० ॥ रोवंतो नरपति बोले ॥ जइ मस्तक तुमचे खोले हो ॥ ॥ सु० ॥ कहे धन मूको विषवाद ॥ जुर्ज मंत्रशक्ति अविवाद हो ॥ २० ॥ ॥ सु० ॥ संजारे मंत्र सुजाण ॥ चिंतामणि मंत्र समाण हो ॥ सु० ॥ निद्रामांथी जिम जागे ॥ तिम बेठो थयो नृपजागे हो ॥ २१ ॥ सु० ॥ जसवाद थयो ठाम ठाम ॥ नृप पाम्यो अति विशराम हो ॥ सु० ॥ खंम चोथे ए सातमी ढाल ॥ कही पद्मविजय सुरसाल हो ॥ २२ ॥ सु० ॥ सर्व गाथा ॥ २२० ॥

॥ दोहा ॥

॥ राये कंदोरो दीर्ज, अंतेजरे आजरण; वरसे तिहां वारु परे, कोइ कुंमल दीये कर्ण ॥ १ ॥ धरणीपतिने धन कहे, ए शुं एणी वार; राय कहे वली कहे अपंर, करीये शो जपकार ॥ २ ॥ कहे चंमाल ते कीजीये, धन बोले एम धन्न; चिंते राय अहोचरी, अहो गुरुता ए अगन्य ॥ ३ ॥ कहो अकार्य ए किम करे, एहने पूछुं आम; पूछीश अथवा हुं पछे, करी एहनुं काम ॥ ४ ॥ पूछो कहे पमिहारने, कहो खप ताहरे कांय; पमिहारे जइ पूछीजं, रे तुऊ तूठो राय ॥ ५ ॥ जीवाड्यो नृपसुत जिणे, तूठो अथवा तेह; खंगिल तुं खांते करी, मागे वुठा छे मेह ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ वारि मोरा साहिवा ॥ ए देशी ॥

॥ खंगिल चिंते खांतिशुं हो राज, महापुरुष कोइ एह ॥ वारि मोरा साहिवा ॥ काम थयुं नररायनुं हो राज, दिसे छे निःसंदेह ॥ १ ॥ वा० ॥ पूछे किम ए जीवीआ हो राज, तव बोले प्रतिहार ॥ वा० ॥ एहमां शो संदेह छे हो राज, कांयक माग्य जदार ॥ २ ॥ वा० ॥ बोल्यो खंगिल हरखतो हो राज, जो मुऊ तूठो राय ॥ वा० ॥ तो ए पाप अजीविका हो राज, जनय लोक दुःखदाय ॥ ३ ॥ वा० ॥ तेह निवारो माहरी हो राज, बोल्यो तव प्रतिहार ॥ वा० ॥ शुं माग्युं ए ते इहां हो राज, माग्य तुं ड्रव्य विचार ॥ ४ ॥ वा० ॥ खंगिल कहे ए जपरे हो राज, नहीं कोइ जगमां सार ॥ वा० ॥ सांजली जइ कह्युं रायने हो राज, राये कीध विचार ॥ ५ ॥ वा० ॥ अहो विवेक अलोजता हो राज, धन कहे जाति चंमाल ॥ वा० ॥ कर्मचंमाल न एह छे हो राज, कहे ते करो जूपाल ॥ ६ ॥ वा० ॥ राय कहे ए नीपन्युं हो राज, पण एहने निज हाथ ॥ वा० ॥

लाख सोवन आपो तुम्हे हो राज, तुम्हे अमचा थया नाथ ॥ ७ ॥ वा० ॥ सहस चंमाल कुटुंब जीके हो राज, विंझवासी वली जेह ॥ वा० ॥ पाटण पश्चिम बाहिरे हो राज; अग्रगामी करो तेह ॥ ८ ॥ वा० ॥ सहुए ते नीपजावीउं हो राज, रायने वचने थाय ॥ वा० ॥ काम मने देवता करे हो राज, शेठ ते धन खरचाय ॥ ए ॥ वा० ॥ खंगिल हरख्यो चित्तथी हो राज, उगस्या धन्नकुमार ॥ वा० ॥ तेहवो धने हरख्यो नहीं हो राज, सज्जन एह आचार ॥ १० ॥ वा० ॥ राय कहे धनने हवे हो राज, देखी तुम्ह चरित्त ॥ वा० ॥ जाएयो जन्म जले कुले हो राज, पण जाखो सुपवित्त ॥ ११ ॥ वा० ॥ किहांना वासी नाम शुं हो राज, जाखो उलखुं आज ॥ वा० ॥ तव धन चित्तमां चिंतवे हो राज, आणी अति घणी लाज ॥ १२ ॥ वा० ॥ म्हें रयणावली पारकी हो राज, लीधी ते सांजरी ताम ॥ वा० ॥ निःशासों नाखी घणो हो राज, चिंते उत्तम कुल आम ॥ १३ ॥ वा० ॥ धन कहे शुं पूछो तुम्हे हो राज, माहरा कुलनी वात ॥ वा० ॥ महा अकारज म्हें कस्युं हो राज, तेहनो श्यो अवदात ॥ वा० ॥ १४ ॥ अथवा कुलनो दोष श्यो हो राज, कमले ते लखमी निवास ॥ वा० ॥ तिहां पण कीडो उपजे हो राज, पालक हरिकुल खास ॥ १५ ॥ वा० ॥ जाति मात्रे हुं वाणीउ हो राज, पण वाणिक न आचार ॥ वा० ॥ सुसम नयरवासी वली हो राज, नाम ते धन्नकुमार ॥ १६ ॥ वा० ॥ राय चिंते धन्य हुं थयो हो राज, एहवा रतननो नाश ॥ वा० ॥ न कस्यो म्हें तिणे कारणे हो राज, हवे कहे नृपति तास ॥ १७ ॥ वा० ॥ किशुं अकारय आचस्युं हो राज, ते परमारथ जाख ॥ वा० ॥ किम रयणावली पामीआ हो राज, इणे अवसरे सहु साख ॥ १८ ॥ वा० ॥ उद्यानपालिका नामथी हो राज, मनोरमा अजिराम ॥ वा० ॥ अरज कहे तुमची धूआ हो राज, आवी विनयवती नाम ॥ १ए ॥ वा० ॥ वात सुणी हरख्यो घणुं हो राज, सेना लेइ चतुरंग ॥ वा० ॥ पेसारा महोत्सव करे हो राज, वाध्यो अति उछरंग ॥ २० ॥ वा० ॥ घर लावीने पूछीयुं हो राज, रयणावली अवदात ॥ वा० ॥ सा कहे जहाजमां चालतां हो राज, प्रचंम वायरा वात ॥ २१ ॥ वा० ॥ दासी करे म्हें आपीउ हो राज, रयणावली तव हार ॥ वा० ॥ तिणीए

वांध्यो बेरूले हो राज, सायर मध्य मकार ॥ २२ ॥ वा० ॥ फूटुं जहाज तिणे समे हो राज; शुक हृदय जिम नारी ॥ वा० ॥ दैवयोगे एक पाटीउं हो राज, पाम्युं जीवदातार ॥ २३ ॥ वा० ॥ अनुक्रमे आवी हुं इहां हो राज, तव चिंते भूपाल ॥ वा० ॥ उत्सव उपरे आवीउं हो राज ॥ उत्सव ए सुरसाल ॥ २४ ॥ वा० ॥ पुत्र पुत्री जीव्यां जुउ हो राज, कुंअर गयो अपराध ॥ वा० ॥ पुण्यवशे आवी मिले हो राज, पामे सुख अगाध ॥ २५ ॥ वा० ॥ चोथे खंडे ए कही हो राज, अचरिज आठमी ढाल ॥ वा० ॥ श्रीगुरु उत्तमनो कहे हो राज, पद्म ते वात रसाल ॥ २६ ॥ वा० ॥ सर्व गाथा ॥ २६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय कहे धणकुंमरने, खरी कहो ए खांति; लीधी किहां रयणावली, जाखो ते जली जांति ॥ १ ॥ सायरतीरे म्हें सही, धन्न कहे म्हें लीध; नृप कहे शब दीठुं कने, कुंअरे हा तव कीध ॥ २ ॥ तेहज कारण आतमा, कहुं अकार्य करनार; पारकुं द्रव्य में अपहर्युं, शोच करुं संजार ॥ ३ ॥ न पले एह गृहस्थने, मनथी मूको खेद; हवे शुं करीये तुम्हने, जाखो तेहनो जेद ॥ ४ ॥ मनवंछित दीधुं मने, कर्युं चंड़ालनुं काम; नृप कहे थोका एहने, दीधा छे अमे दाम ॥ ५ ॥ काम विचारी ए करे, एहनो बहु उपकार; माग्य तुं कांयक मुक कने, तव बोल्यो ते कुमार ॥ ६ ॥ तुम दरिसण पाम्यो तिके, अधिकुं कांय न अन्य; राजा तव निज आजरण, आपत बहु अगन्य ॥ ७ ॥ हवे जे विश्वासी हुये, तेह पुरुष संघात; नयर सुसम जणी नरपति, पेसवीआ प्रख्यात ॥ ८ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ तुम्हे पीतांबर पहेरो जी मुखने मरकलरे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे केइक दिवसे पोहोता जी ॥ कर्मविटंबणा ॥ गिरियल पाटण सम होता जी ॥ क० ॥ तिहां चंद्रसेन नरराय जी ॥ क० ॥ तेहना जंडारमां चोरी थाय जी ॥ क० ॥ १ ॥ खोले कोटवाल ते चोर जी ॥ क० ॥ त्रिक चोक एकांत वली ठोर जी ॥ क० ॥ कमी कापमी जोगी संन्यासी जी ॥ क० ॥ परीक्षा करी दीये स्यावासी जी ॥ क० ॥ २ ॥ रायपुरुषे पकड्या एह जी ॥ क० ॥ कहे कोप न करशो रेह जी ॥ क० ॥ चोरी थइ

रायभंभार जी ॥ क० ॥ तिणे पकड्या छे निरधार जी ॥ क० ॥ ३ ॥ ते कहे श्यो कोपनो लाग जी ॥ क० ॥ कहो तिहां जइये दाखो माग जी ॥ क० ॥ पंचाती थाये तिहां लावे जी ॥ क० ॥ चोवटीआ पूछे भावे जी ॥ क० ॥ ४ ॥ किहांथी आव्या तुम्हे भाइ जी ॥ क० ॥ आव्या सावत्थीथी आंइ जी ॥ क० ॥ पंचाती कहे किहां जावो जी ॥ क० ॥ कहे सुसम नयर अम ठावो जी ॥ क० ॥ ५ ॥ पंचोली कहे शुं काम जी ॥ क० ॥ तव ते नर बोल्या आम जी ॥ क० ॥ ए कुंमरने मूकवा काज जी ॥ क० ॥ अम नरपति मोकल्या साज जी ॥क० ॥६॥ कारणीआ पूछे तास जी ॥ क० ॥ द्रव्य कांय अछे तुम्ह पास जी ॥ क० ॥ तव ते कहे छे अम्ह पासे जी ॥ क० ॥ कारणीआ कहे सुविलासे जी ॥ क० ॥ ७ ॥ अम्ह देखाको होय जेह जी ॥ क० ॥ तव देखाडे सहु तेह जी ॥ क० ॥ अम्ह राजाए तुषीने दीधां जी ॥ क० ॥ तव कारणीए कर लीधां जी ॥ क० ॥ ८ ॥ भंभारीए ओलख्यां तेह जी ॥ क० ॥ अम्ह राय आभूषण एह जी ॥ क० ॥ गयां काल बहु थयो एहने जी ॥ क० ॥ क्षोभना थइ तव सहु केहने जी ॥ क० ॥ ए ॥ कारणीआ फरी फरी पूछे जी ॥ क० ॥ खरी वात कहो ए शुं छे जी ॥ क० ॥ ते कहे खोटुं नवि कहीये जी ॥ क० ॥ एहमां शो जश अम्हे लहीये जी ॥ क० ॥ १० ॥ तव कारणीआ निज राय जी ॥ क० ॥ संभलावे नृप दुःख थाय जी ॥ क० ॥ जुओ सावत्थी नरराय जी ॥ क० ॥ ए चोरना शांगु थाय जी ॥ क० ॥ ११ ॥ घाल्या सहु बंदीखाने जी ॥ क० ॥ सघलुं जणशे ए बाने जी ॥ क० ॥ तिहां दुःख पामे रहे तेह जी ॥ क० ॥ इण समे एक सुणो थइ जेह जी ॥ क० ॥ १२ ॥ एक परिव्राजक वेषधारी जी ॥ क० ॥ तस पकडे नृप आणाकारी जी ॥ क० ॥ चोरयुं ते द्रव्य वली पास जी ॥ क० ॥ राति समये लाव्या तास जी ॥ क० ॥ १३ ॥ लिंगधारी मंत्रीसर देखी जी ॥ क० ॥ मन चिंते सर्व उवेखी जी ॥ क० ॥ चोरी करे जो लिंगधारी जी ॥ क० ॥ शुं न करे अकार्य अवधारी जी ॥ क० ॥ १४ ॥ ते कारण मारण आणा जी ॥ क० ॥ करता कुरायंपुरुषने राणा जी ॥ क० ॥ मष गेरु विभूति लगाइ जी ॥ क० ॥ कणयर माला पहेराइ जी ॥ क० ॥ १५ ॥ ॥ त्रूटुं सुपडुं छत्रने ठाम जी ॥ क० ॥ रासभ बेसाड्यो वाम जी ॥ क० ॥ डिंडिम वाजे अति विरसो जी

॥ क० ॥ लोक सांजली आवे सरसो जी ॥ क० ॥ १६ ॥ दक्षिण दिश नयरने बाहिर जी ॥ क० ॥ लाव्या नहीं कोइ एहनी वाहर जी ॥ क० ॥ तव नाखी दीर्घ निःश्वास जी ॥ क० ॥ जोइ आडुं अवलुं पास जी ॥ क० ॥ १७ ॥ लोकना मुख साहमुं जोइ जी ॥ क० ॥ कहे मुनिवच अलिक न होइ जी ॥ क० ॥ हमणां पण जेहनुं द्रव्य जी ॥ क० ॥ तेहनुं हुं आपुं सर्व जी ॥ क० ॥ १८ ॥ रह्युं पृथवीमां शो लेखे जी ॥ क० ॥ नृप नर सन्मुख तेह देखे जी ॥ क० ॥ म्हें नयर ते मूक्युं एह जी ॥ क० ॥ बीजे पुरुषे नहीं रेह जी ॥ क० ॥ १९ ॥ आराम गिरि नदी तीर जी ॥ क० ॥ प्रमुखे दाट्युं थइ धीर जी ॥ क० ॥ ते लेइ सहु सहुनुं आपो जी ॥ क० ॥ पछे मारवा मुजने थापो जी ॥ क० ॥ २० ॥ कही तेह मंत्रीने वात जी ॥ क० ॥ मंत्री पण तिहां आयात जी ॥ क० ॥ जे जे कह्युं ते ते थान जी ॥ क० ॥ जोइ नीकल्युं तेह प्रमाण जी ॥ क० ॥ २१ ॥ सहु हरख्या द्रव्य ते पामी जी ॥ क० ॥ चोथे खंडे अभिरामी जी ॥ क० ॥ ढाल नवमी पद्मे जाखी जी ॥ क० ॥ गुरु उत्तमविजय छे साखी ज़ी ॥ क० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ २९० ॥

॥ दोहा ॥

॥ दीठुं सरवे द्रव्य ते, विण आजरण नरदेव; चिंता मंत्री चित्त थइ, हुउं विपरीत ए हेव ॥ १ ॥ केम आजरण वीजा कने, सवलो ए संदेह; परिव्राजकने पाय पडी, तुरतज पूछे तेह ॥ २ ॥ वेष स्वजाव विरुद्ध किम, विस्मयकारी वात; परिव्राजक वोल्यो पछे, वेगे निज अवदात ॥ ३ ॥ विषयीने कहो शुं विरुद्ध, मंत्री बोले ताम; न होये ज्ञानी जे नरा, करे ते एहवां काम ॥ ४ ॥ पण तुम सरिखा पुरुषने, न घटे एह निदान; अवितथ मुजने आखीये, महेर करी महेरबान ॥ ५ ॥ सावधान थइने सुणो, परिव्राजक कहे प्रेम; आप्यो अवधिज्ञानीए, मूल थकी ते नेम ॥ ६ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ लाल रंगावो वरनां मोलीयां ॥ ए देशी ॥

॥ इणे जरते पुंड्र देशमां, पुंड्रवरधन नयरी नाम रे ॥ सोमदेव नामे व्राह्मण वसे, अग्निवेसायण गोत्र अजिराम रे ॥ १ ॥ कर्यां कर्म न छूटे प्राणीआ ॥ ए आंकणी ॥ तस पुत्र नारायण नाम हुं, हिंसाए सरग ते

जाखुं रे ॥ एक चोरने मारवा लेइ जतां, मारो चोर ए हुं मुखे दाखुं रे ॥ २ ॥ क० ॥ एक साधुए ते वच सांजल्युं, ताजुं उपनुं अवधिज्ञान रे ॥ ते ढुकडेथी सुणी बोलीआ, अहो कष्ट जे जीवने अज्ञान रे ॥ ३ ॥ क० ॥ सुणी चिंता मुऊने उपनी, अहो शांत स्वरूपी एह रे ॥ मुऊ उदेशी एम जाखीउं, जइ पूबुं कारण तेह रे ॥ ४ ॥ क० ॥ म्हें पाय पडीने पूबीउं, जगवन् कहो शुं अन्नाण रे ॥ तव मुनि कहे आल जे देयवुं, वली विरुद्ध उपदेश दाण रे ॥ ५ ॥ क० ॥ म्हें पूब्युं आल किशुं कहो, वली विरुद्ध श्यो उपदेश रे ॥ मुनि कहे ए कर्मविपाकथी, लह्यो नर आपद् सुविशेष रे ॥ ६ ॥ क० ॥ ए निरपराधी पुरुषने, तुम्हे चोर कहीने दाख्युं रे ॥ ए अबतुं आल पीडा करे, एहवुं बोलवुं नवि जाख्युं रे ॥ ७ ॥ क० ॥ अबतुं आल तो नवि दीजीये, पण चोरने चोर न कहीये रे ॥ वली जीवघाते स्वर्ग बोलतां, विरुद्ध उपदेश पण लहीये रे ॥ ८ ॥ क० ॥ सघले दर्शनमां जाखीउं, जीवघात न कीजे प्राणी रे ॥ सुख सौजाग्य वली आरोग्यता, जनमांतरे होये सुखखाणी रे ॥ ए ॥ क० ॥ "यतः ॥ सव्वेवि जीवा इछंति, जीविउं न मरीज्जिउं ॥ तम्मा पाणवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंतिणं ॥ १ ॥ आयुर्दीर्घतरं वपुर्वरतरं गोत्रं गरीयस्तरं, वित्तं जूरितरं बलं बहुतरं स्वामित्वमुच्चैस्तरं ॥ आरोग्यं विगतांतरं त्रिजगति श्लाघ्यत्वमल्पेतरं, संसारांबुनिधिः करोति सुतरां चेतः कृपार्द्रांतरं ॥ २ ॥" जनमांतरे आल जे दीधलुं, तेहनुं फल बे हजी शेष रे ॥ ते जोगववुं थोडा कालमां, आवशे उदरे सुविशेष रे ॥ १० ॥ क० ॥ तव पूब्युं म्हें प्रजु केहवुं, जन्मांतरे दीधुं आल रे ॥ केंहवुं तस फल में जोगव्युं, मुनिवर बोल्या किरपाल रे ॥ ११ ॥ क० ॥ इण जरते उत्तरा पंथमां, पाटण नगर जनक नाम रे ॥ आषाढ नामे वाडव तिहां, रबुआ जारया अजिराम रे ॥ १२ ॥ क० ॥ पांचमे जवे तेहनो सुत हतो, चंद्रदेव ताहरुं अजिधान रे ॥ शास्त्र सांजल्यां वेद पढावीउं, तुऊने उपन्युं अति मान रे ॥ १३ ॥ क० ॥ वीरसेन राजा ते नयरनो, तिणे आजीविका घणी आपी रे ॥ नित्य नृपनी पासे बेसी रहे, मनगमती वात आलापी रे ॥ १४ ॥ क० ॥ एम करतां एक दिन तिण पुरे, विनीत शेठनी धूआ रे ॥ तस नाम ते वीरमती अबे, तेहना शील आचार ते जूआ रे ॥ १५ ॥ क० ॥ अविवेक बहुल होय

नारीने, वली दुर्जय मोह वखाण्यो रे॥ यौवन ते विकारनुं घर अछे, तिणे निज कुल पण न पिछाएयो रे ॥ १६ ॥ क० ॥ अभिलाष योग्य विषय कह्या, न विचार्यो अनागत काल रे ॥ सिंहल नामे माली समागमे, रमतां बहु काढती काल रे ॥ १७ ॥ क० ॥ वीरमतीनो पूज्य एक जाणीये, पाले नित्य निज आचार रे ॥ परिव्राजक नाम जोगातमा, निःसंगपणुं वली धारे रे ॥ १८ ॥ क० ॥ थाणेशर गयो एक दिन हवे, लोकवाद थयो एम चावो रे ॥ जोगातमाशुं वीरमती वशी, ते सांजल्यो एह आरावो रे ॥ १९ ॥ क० ॥ तें पण निश्चय करी राखीडं, एक दिन राजकुले थइ वात रे ॥ सहु लोक कहे ए केम हशे, तें कह्युं ए खरुं अवदात रे ॥ ॥ २० ॥ क० ॥ एह वात हुं जाणुं छुं खरी, एहमां नहीं कांय संदेह रे ॥ निज कुल आचार लोपी कह्युं, तव राय कहे सुणी एह रे ॥ २१ ॥ क० ॥ निज नारीनो त्याग कर्यो इणे, तव उत्तर ते एम दीधो रे ॥ ते कारण परस्त्री खोलतां, पाखंरूपणुं तिणे लीधो रे ॥ २२ ॥ क० ॥ एहमां कांय धर्म न जाणजो, एम सुणी केइ पाम्या अधर्म रे॥ सहु परिव्राजके पण सांजली, काढ्यो टोलेथी लही मर्म रे ॥ २३ ॥ क० ॥ बहु पाम्यो विटंबणा लोकमां, तुऊ कर्म निविड बंधाणुं रे ॥ एम जाणी आल न दीजीये, जेहथी लहे नरकनुं ठाणुं रे ॥ २४ ॥ क० ॥ दशमी ए चोथा खंमनी, जाखी एम ढाल रसाल रे॥ कहे पद्मविजय सुणतां होये, श्रोता घर मंगलमाल रे ॥ २५ ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ ३२१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आयुक्षये हवे उपन्यो, आरंज करी अनेक; माया बहुल करमवशे, धर्म आराध्यो न एक ॥ १ ॥ कोल्लाग सन्निवेशे कह्यो, एलगनो अवतार; काल गयो तस केटलो, आव्यां कर्म अपार ॥ २ ॥ जीन सकी वेदन जकी, आयुनो थयो अंत; मरी शीआल ते कर्मथी, उपन्यो कर्म अनंत ॥ ३ ॥ इणहीज गामनी अटवीए, फिरतां तुं फल खाय; तेहथी जीन सकी तथा, खें खें करे न खवाय ॥ ४ ॥ अनुक्रमे मरण ते आवीयुं, तेहज कर्म तहत्ति; साकेतपुर स्वामी तणी, विलासिणी वरगत्ति ॥५॥ मदनलतानी कूखमां, पुत्रपणे प्रगटाय;जीवन पाम्यो जेटले,नृपवल्लन निरमाय ॥६॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥

॥ राग मारुणी ॥ श्रीसीमंधर साहिब आगे विनति रे ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन मदिरा पीधी कर्मदोषे करी रे, मदिरामत्त थयो तेह ॥ आइ रे ॥ आइ रे नृप साइ आक्रोशतो रे ॥ १ ॥ वात सुणी नृपपुत्रे तस वार्यो घणुं रे ॥ तेहने पण आक्रोश ॥ करतो रे ॥ करतो रे धरतो नृपने क्रोधमां रे ॥ २ ॥ कोप करीने जीन्न छेदावी नृपवरे रे ॥ मद उतर्यो तव तुझ ॥ वाते रे ॥ वाते रे निज अवदाते लाजीर्ड रे ॥ ३ ॥ अणसण कीधुं मास एकतुं तें तदा रे ॥ उपन्यो माहण अत्र ॥ तिहांथी रे ॥ तिहांथी रे किहांथी कर्म छूटे कर्यां रे ॥ ४ ॥ वचन मुनिनां सांन्नली संवेग उपन्यो रे ॥ वली पूछ्युं म्हें तास ॥ शेष रे ॥ शेष रे कहो विशेष शुं आवशे रे ॥ ५ ॥ ज्ञानी गुरु तव बोल्या करुणा आणीने रे ॥ महा विटंबणा थाय ॥ लोक रे ॥ लोक रे थोक थोक तुझ देखशे रे ॥ ६ ॥ मुनिवयणे हुं बीहनो दीक्षा आदरी रे ॥ गुरुमरणांते मुझ ॥ आपी रे ॥ आपी रे बे विद्या न्नली रे ॥ ७ ॥ गगनगामिनी तालुग्घाडणी नामथी रे ॥ गुरु कहे सांन्नल्य वात ॥ धर्मे रे ॥ धर्मेरे कर्म होय तो फोरवे रे॥८॥ विषय असार निमित्ते ए मत फोरवे रे ॥ वली सुण बीजुं एह ॥ मीठुं रे ॥ मीठुं रे जूठुं कदिय न बोलजे रे ॥ ए ॥ हांसीमां पण जूठुं जो बोलाय तो रे ॥ करजे तुं ए रीति ॥ पाणी रे ॥ पाणी रे नान्नी प्रमाण जाणी तिहां रे ॥ १० ॥ उंची बांह नयण अनिमेष तिहां करी रे ॥ एक सहस आठ वार ॥ जपजे रे ॥ जपजे रे खपजे पातिक आपणुं रे ॥ ११ ॥ हवे एक दिन हुं जूठुं बोल्यो पापथी रे, इह परलोकविरुद्ध ॥ कीधुं रे ॥ कीधुं रे सीधुं अवलुं माहरे रे ॥ १२ ॥ काल संध्याए वसती पास आराममां रे ॥ बकुल वृक्षने हेठ ॥ बेठो रे ॥ बेठो रे हेठो तिहां जूठुं लव्यो रे ॥ १३ ॥ मंत्री कहे शुं बोल्या जूठुं ते कहो रे ॥ तव बोल्यो तिहां आय ॥ तरुणी रे ॥ तरुणी रे मनहरणी टोले मली रे ॥ १४ ॥ जल अवगाहन करीने छूटे केशथी रे ॥ देवदर्शनने काज ॥ आवी रे ॥ आवी रे मन न्नावी मुझने कहे रे ॥ १५ ॥ हे न्नगवन् जोबन वय तुमची देखीये रे ॥ सार विषय संसार ॥ लोके रे ॥ लोके रे थोके सहु सेव्या खरा रे ॥ १६ ॥ हरि हर ब्रह्मा सेवित किम छांड्यां तुम्हे रे ॥ डुक्कर व्रत करो केम ॥ स्वामी

रे ॥ स्वामी रे कामी वयण कह्यां घणां रे ॥ १७ ॥ हांसी गर्भित वयण सुणीने म्हें तदा रे ॥ हास्य तणुं नहीं शील ॥ तोहि रे ॥ तोहि रे मोही हुं एम बोलीउं रे ॥ १८ ॥ दीर्घ निःश्वासो नाखी म्हें जाखीउं रे ॥ तेह कालने जोग्य ॥ जाखुं रे ॥ जाखुं रे दाखुं अलिक जाणी करी रे ॥ १९ ॥ मन माहरुं महिला विरहे संतापीउं रे ॥ मांड्युं तप म्हें एम ॥ जाखी रे ॥ जाखी रे गुरुदाखी विधि नवि करी रे ॥ २० ॥ मध्यराते हुं चोरी करवा नीसर्यो रे ॥ सूतां पुरनां लोक ॥ ज्यारे रे ॥ ज्यारे रे त्यारे हुं पकमाइउं रे ॥ २१ ॥ सागर शेठना घरथी ए ड्रव्य लीधलुं रे ॥ जाण्यो नरसंचार ॥ जणतो रे ॥ जणतो रे गणतो पण निःफल थइ रे ॥ २२ ॥ तव नासंतां पकड्यो तुम्ह डुर्द्धर नरे रे ॥ वात कही रह्यो मौन ॥ तेहने रे ॥ तेहने रे नेह आणी मंत्री जणे रे ॥ २३ ॥ चोथे खंडे ढाल अग्यारमी ए कही रे ॥ सुणतां मंगलमाल ॥ थाय रे ॥ थाय रे इणी परे गाय पद्म मुनि रे ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ३५१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुणो एक दिननो संहर्यो, अलंकार नरराय; दीसे नहीं कहो किण दिशा, अमने अचरिज थाय ॥ १ ॥ परिव्राजक कहे आपीउं, सावडी शिरदार; मंत्री कहे श्या निमित्तथी, तव कहे तास विचार ॥ २ ॥ सावडी नगरी वसे, जीवथी अधिको जाणी; मित्र गंधर्वदत्त नामथी, माहरो ते मन आणी ॥ ३ ॥ इंड्रदत्त शेठनी धूआ, कन्या नाम कहंत; वासवदत्ता वेगशुं, तात अन्यने दित ॥ ४ ॥ पगरण मांड्युं परणवा, तव माहरो तिहां मित्त; कन्या विण करीये किशुं, चिंतवतो एम चित्त ॥ ५ ॥ मरवुं अंते ए विना, अपहरुं चिंती एम; अपहरी परण्यो आपथी, नरपति जाणी नेम ॥ ६ ॥ रुषिकन्याने अपहरी, करे एहवुं कहो केम; एम चिंती अवनीपति, नयरथी काढे नेम ॥ ७ ॥ जीविक नामे मित्र जे, तेहने साथे ताम; आव्यो मुज पासे अधिक, इछा धरतो आम ॥ ८ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ म्हें पूछ्युं ते मित्रने रे, आव्या तुम्हे शे हेत ॥ मनना मान्या ॥ वात सवे धुरथी कही रे, सांजली ते संकेत ॥ मन० ॥ १ ॥ आवो आवो रे

सित्ता भले आव्या, तुम आवे सवि सुख थाय ॥ मन० ॥ ए आंकणी ॥ तेहनां दुःखने कापवा रे, दीधो नृप अलंकार ॥ मन० ॥ जीविकने तिहां मोकल्यो रे, विनव्यो नृप सुखकार ॥ म० ॥ २ ॥ देखी ते अलंकारने रे, भूपति परसन्न थाय ॥ म० ॥ मोकले महर्द्धिक पुरुषने रे, हेत धरी नरराय ॥ म० ॥ ३ ॥ उत्सव महोत्सव लावीआ रे, गंधर्वदत्त पुर मांहि ॥ ॥ म० ॥ मात पिता वली सयणने रे, मलीया धरी उछाह ॥ म० ॥ ४ ॥ वासवदत्ताने मल्या रे, भांग्यां दुःख विछोह ॥ म० ॥ मंत्री कहे रुडुं कर्युं रे, ए तुम्ह गुण संदोह ॥ म० ॥ ५ ॥ मंत्री कहे मित्र वत्सलु रे, तुम्ह सम पुरुष जे होय ॥ म० ॥ चिंते पूर्व पुरुष जिके रे, ते अपराधी न कोय ॥ म० ॥ ६ ॥ मूक्या सहु धन प्रमुखने रे, परिव्राजकने एम ॥ म० ॥ कहे मंत्री तम्हे पालवुं रे, आप विवेक सम नेम ॥ म० ॥ ७ ॥ परिव्राजकने विसर्जीउ रे, हवे धनकुमरे ताम ॥ म० ॥ विसर्ज्या सावळीए रे, आप चाल्या निज गाम ॥ म० ॥ ८ ॥ वयराड नयर आव्या यदा रे, कापडी मिलीया ताम ॥ म० ॥ तेहमां पोते चालीआ रे, सायर तीरने ठाम ॥ म० ॥ ए ॥ जूथ घणुं गजराजनुं रे, उठ्युं ते मारण धाय ॥ म० ॥ कापडी सहु दिशो दिश गया रे, धन पूठे गज थाय ॥ म० ॥ १० ॥ पकड्यो धन पाड्यो धरा रे, मार्यो नहीं देवयोग ॥ म० ॥ उछाल्यो आकाशमां रे, उपन्यो मनमां शोग ॥ म० ॥ ११ ॥ दंतोशले डरुपुं हवे रे, इणी अवसरे वड एक ॥ म० ॥ तस शाखा पडतां थकां रे, आलंब्यो धरी टेक ॥ म० ॥ १२ ॥ इण अवसर निज हाथिणी रे, अन्य मतंगज आय ॥ म० ॥ पीडा करी तिणे रोवती रे, सांभली गयो तिहां धाय ॥ ॥ म० ॥ १३ ॥ वडशिखरे चढ्यो धन हवे रे, देखे तिहां एक तीड ॥ ॥ म० ॥ लावक मूकी रयणावली रे, देखी गइ तस पीड ॥ म० ॥ १४ ॥ उलखीने लीधी तिणे रे, मन चिंते एम धन्न ॥ म० ॥ आपुं जइ नृपने मुदा रे ॥ सावळी शुद्ध मन्न ॥ म० ॥ १५ ॥ पछे जाशुं निज स्थानके रे, उतर्यो तिहांथी तेह ॥ म० ॥ चाल्यो सावळी भणी रे, इण अवसर जुउ एह ॥ म० ॥ १६ ॥ चाकर नर गया जे हता रे, तिणे कह्यो अवदात ॥ म० ॥ राय कोप्यो ते उपरे रे, अधविच मेहेली आयात ॥ म० ॥ ॥ १७ ॥ तेहनो दंड तुम्ह ए कर्यो रे, धनकुमर लेइ साथ ॥ म० ॥ पे-

सजो माह्रा नयरमां रे, सांजली ते गयो साथ ॥ म० ॥ १० ॥ खोले ध-नकुमारने रे, प्रियमेलके इणे नाम ॥ म० ॥ सार्थवाह सुत नीरखीउं रे, मलीआ सहु तिणे गाम ॥ म० ॥ १ए ॥ वात कही साथे थया रे, म-लीआ हवे जूपाल ॥ म० ॥ राजा हरख्यो हियरुडे रे, कह्युं वृत्तांत रसाल ॥ म० ॥ २० ॥ देखाडी रयणावली रे, विस्मित मन नरराय ॥ म० ॥ कर्म परिणाम विचित्रता रे, चिंतवी करे सुपसाय ॥ म० ॥ २१ ॥ ए आपी म्हें तुऊने रे, म करीश प्रार्थनाजंग ॥ म० ॥ अथवा राज्य ए ताहरुं रे, तुऊ गुण निर्मल गंग ॥ म० ॥ २२ ॥ साथ करी हवे मोटिको रे, आप्यां रयण मणि सार ॥ म० ॥ आजूषण वली बहु दीआं रे, वाणिग वेश उ-दार ॥ म० ॥ २३ ॥ सुसम नयरे मोकल्या रे, मलीआं माय ने ताय ॥ ॥ म० ॥ साह्मो पुरजन नीकल्यो रे, मात पिता पड्यो पाय ॥ म० ॥ ॥ २४ ॥ पेसारा महोत्सव कस्यो रे, दीधां वली महा दान ॥ म० ॥ सर्व चैत्ये पूजा करी रे, आव्या निज घरठान ॥ म० ॥ २५ ॥ चोथे खंडे बा-रमी रे, समरादित्यने रास ॥ म० ॥ सुंदर पद्मविजय कही रे, सुणतां सुख सुविलास ॥ म० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ३०५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एकांते एणे अवसरे, पूछे मात पिताय; कहो तुम्ह तरुणी किहां गइ, तव जाखे सुणो ताय ॥ १ ॥ सर्व वात सोंपी जदा, मात पिता कहे ताम; अनुचित ए तुमने अछे, इणशुं नहीं अम्ह काम ॥ २ ॥ कल्पवृक्ष कौ-अच किहां, तिणे मूको संताप; कहे धनकुमर ए केहवो, इण अवसर आलाप ॥ ३ ॥ मात पिता महिमा करे, धनदेव जक्षनी धन्न; मानंता निज आतमा, स्नेही मली सज्जन्न ॥ ४ ॥ नयर बाहिर ते यक्षनी, पूजा करी प्रमाण; मित्रशुं गया प्रमोदशुं, नाम सिद्ध उद्यान ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

हरणी जव चरे ॥ लालनां ॥ ए देशी ॥

॥ तिहां अशोकतरु तले ॥ लालनां ॥ लला हो ॥ बहु मुनिने परिवार ॥ ए गुरु वारु रे लालनां ॥ अढार सहस सीलांगना ॥ ला० ॥ ल० ॥ धोरी ते अणगार ॥ ए गुरु० ॥ १ ॥ कोशल देशनो नरपति ॥ ला० ॥ ल० ॥ विनयंधर नरराय ॥ ए गु० ॥ तेहना सुत जशोधर गणी ॥ ला० ॥

ल० ॥ निर्मम चित्त सदाय ॥ ॥ ए गु० ॥ २ ॥ पंच समिते समिता रहे ॥ ॥ ला० ॥ ल० ॥ गुप्तइंद्रिय निर्ग्रंथ ॥ ए गुप्त ब्रह्मचारी अकिंचनो ॥ ला० ॥ ल० ॥ साधंता शिवपंथ ॥ ए गु० ॥ ३ ॥ श्रमणसिंह देखी करी ॥ ला० ॥ ल० ॥ हैयडे हर्ष न माय ॥ ए गु० ॥ धर्मे मन तस उल्लस्युं ॥ ला० ॥ ॥ ल० ॥ चिंतवे इम निरमाय ॥ ए गु० ॥ ४ ॥ अहो अहो रूप अहो चरी ॥ ला० ॥ ल० ॥ अहो लावण्य विलास ॥ ए गु० ॥ अहो सौम्यता अहो उद्यमी ॥ ला० ॥ ल० ॥ अहो जौवन सुप्रकाश ॥ ए गु० ॥ ५ ॥ अनंग विजय अहो एहनो ॥ ला० ॥ ल० ॥ अहो अहो निरहंकार ॥ ए गु० ॥ अहो देखवा योग्य एह छे ॥ ला० ॥ ल० ॥ अहो सेववा योग्य सार ॥ ए गु० ॥ ६ ॥ पासे जइ करी वंदना ॥ ला० ॥ ल० ॥ आचारय मुनिराय ॥ ॥ ए गु० ॥ धर्मलाभ मुनिवर दीउं ॥ ला० ॥ ल० ॥ बेठा गुरुने पाय ॥ ॥ ए गु० ॥ ७ ॥ करकज जोडी पूछतो ॥ ला० ॥ ल० ॥ किम उपन्यो निर्वेद ॥ ए गु० ॥ रूप मनोभव सारिखुं ॥ ला० ॥ ल० ॥ किम जीत्या तुम्हे वेद ॥ ए गु० ॥ ८ ॥ किम दीक्षा प्रभु आदरी ॥ ला० ॥ ल० ॥ तव बोल्या सूरिराय ॥ ए गु० ॥ ए संसार असारमां ॥ ला० ॥ ल० ॥ निर्वेद श्यो पूछाय ॥ ए गु० ॥ ए ॥ धन कहे गुरुजी साचलुं ॥ ला० ॥ ल० ॥ एह तो सहुने समान ॥ ए गु० ॥ पूछुं विशेष कारण तिणे ॥ ला० ॥ ल० ॥ भाखो ए भगवान् ॥ ए गु० ॥ १० ॥ मुनि कहे माहरुं चरित्र जे ॥ ला० ॥ ल० ॥ ते निर्वेदनुं हेत ॥ ए गु० ॥ धन कहे प्रभु अनुग्रह करो ॥ ॥ ला० ॥ ल० ॥ कहेवे ए संकेत ॥ ए गु० ॥ ११ ॥ तव जशोधर मुनि चिंतवे ॥ ला० ॥ ल० ॥ दीसे सौम्य आकार ॥ ए गु० ॥ पामे वैराग्य कदापि जो ॥ ला० ॥ ल० ॥ भाखुं निज अधिकार ॥ ए गु० ॥ १२ ॥ सूरि कहे तुं सांभले ॥ ला० ॥ ल० ॥ एकमना सावधान ॥ ए गु० ॥ इहांहीज विशाला पुरी ॥ ला० ॥ ल० ॥ अमरदत्त राजान ॥ ए गु० ॥ १३ ॥ सुरेंद्रदत्त नामे हुं हतो ॥ ला० ॥ ल० ॥ मात जशोधरा जाण ॥ ए गु० ॥ नयणावली मुज भारया ॥ ला० ॥ ल० ॥ नवमे भवे सुप्रमाण ॥ ए गु० ॥ १४ ॥ ताते चारित्र आदर्युं ॥ ला० ॥ ल० ॥ राज्यभार मुज थापी ॥ ए गु० ॥ हुं पण समकित पामीउं ॥ ला० ॥ ल० ॥ अंतर आतमव्यापी ॥ ए गु० ॥ १५ ॥ नयणावलीशुं मोहीउं ॥ ला० ॥ ल० ॥ पालुं राज्य महंत ॥ ए

गु० ॥ पलितछले दूत आवीउं ॥ ला० ॥ ल० ॥ धर्मरायनो तंत ॥ ए गु० ॥ १६ ॥ नयणावलीनी दासीए ॥ ला० ॥ ल० ॥ सारसीआ इण नाम ॥ ॥ ए गु० ॥ दाखव्यो देखी चिंतवे ॥ ला० ॥ ल० ॥ पुज्गलनो परिणाम ॥ ए गु० ॥ १७ ॥ अहो अहो चपलता लोकनी ॥ ला० ॥ ल० ॥ मनुष्य-पणुं ए असार ॥ ए गु० ॥ अहो अहो मोह पराजवे ॥ ला० ॥ ल० ॥ सार न कांय संसार ॥ ए गु० ॥१८॥ आयु नीर जलेछतां ॥ ला० ॥ ल० ॥ रात्री दिवस घमी माल ॥ ए गु० ॥ चंद्रमा सूरज बलदीआ ॥ ला० ॥ ॥ ल० ॥ फेरवे अरहट काल ॥ ए गु० ॥ १९ ॥ तिणे हवे परमादे सखुं ॥ ला० ॥ ल० ॥ लेउं चारित्र उदार ॥ ए गु० ॥ नयणावली निज ना-रीने ॥ ला० ॥ ल० ॥ संजलाव्यो ए विचार ॥ ए गु० ॥ २० ॥ नयणा-वली कहे सांजलो ॥ ला० ॥ ल० ॥ जे तुम्हने मन जाय ॥ ए गु० ॥ पण तुम साथे आदरुं ॥ ला० ॥ ल० ॥ श्रमणपणुं सुखदाय ॥ ए गु० ॥२१॥ में चिंत्युं जुउं केटलो ॥ ला० ॥ ल० ॥ मुज उपर अनुराग ॥ ए गु० ॥ अहो विवेक एहनो जुउं ॥ ला० ॥ ल० ॥ चित्त अनुजायी अथाग ॥ ए गु० ॥ ॥ २२ ॥ संविजागी सुखदुःखमां ॥ ला० ॥ ल० ॥ अहो एक पत्नी एह ॥ ॥ ए गु० ॥ अहो छंदे मुज चालती ॥ ला० ॥ ल० ॥ मुज उपर घण नेह ॥ ए गु० ॥ ॥ २३ ॥ चोथे खंडे तेरमी ॥ ला० ॥ ल० ॥ जाखी पदमे ढाल ॥ ए गु० ॥ गुरु कहे आगले सांजलो ॥ ला० ॥ ल० ॥ माहरी वात रसाल ॥ ए गु० ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ४१४ ॥

॥ दोहा ॥

अर्क अनुक्रमे आथम्यो, म्हें चिंत्युं मन मांहि; एवडी आपद एहने, अम सम श्यो उब्राह ॥ १ ॥ सोममंमल हवे संचस्यो, दीपक जुवन उ-द्योत; वासजुवन वेगे सज्युं, जिहां मणिरयणनी ज्योति ॥ २ ॥ कस्तूरी कर्दम करी, जिंति लगाइ जार; प्रवर तलाइ पाथरी, शय्या कस्यो शि-णगार ॥ ३ ॥ कुसुमदाम वर लटकतां, धूमघटा थइ धूप; मयण पूजीने माननी, चित्तथी करी अति चूंप ॥ ४ ॥ वासजुवनमां वेगथी, आव्यो अवनीपाल; पल्यंके बेठो प्रगट, काढ्यो कांयक काल ॥ ५ ॥ राणीनो परिवार जे, नीकली गयो निज स्थान; राणी सूती रंगशुं, नरपति मन

शुक्ल ध्यान ॥ ६ ॥ मनमां एणी परे मानतो, सर्व ढांकवुं सेल; पण राणी परिणामथी, ढंकाये किम हेल ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ एहनी गति एहज जाणे, रखे कोइ संदेह आणे रे ॥ ए देशी ॥ अथवा विनयपद दशमुं प्रकाश्युं ॥ ए देशी पण चाले छे ॥

॥ तुमे जोज्यो नारीचरित्र रे ॥ जेहनां छे चरित्र विचित्र रे ॥ ए आंकणी ॥ सूतो नरपति जाणीने, उठी नयणावली राणी रे ॥ मूकी ढोलीउं उतरी हेठी, नृपति चमक्यो जाणी रे ॥ १ ॥ तुमे० ॥ शंका सहित द्वार उघाडी, नीकली रमझम करती रे ॥ में चिंत्युं मुझ विरहनी कायर, रखे जइने मरती रे ॥ २ ॥ तुमे० ॥ नीकलवानी आ वेला नहीं, लेइ कर करवाल रे ॥ एम चिंती नीकलीउं पूठे, गइ जिहां प्रासादपाल रे ॥ ३ ॥ तुमे० ॥ ते कुब्जक उठाव्यो करथी, तव म्हें चिंत्युं एम रे ॥ एहने संभलावीने मरशे, नहीं तो उठावे केम रे ॥ ४ ॥ तुमे० ॥ घूमते नयने कुबज उठ्यो, पूछे किम इणी वेला रे ॥ आवी आज तदा में चिंत्युं, आज कह्युं केम हेला रे ॥ ५ ॥ तुमे० ॥ अथवा आज उचित नहीं वेला, तिणे कारणे एम बोले रे ॥ पण सांभलुं एहनो हवे उत्तर, इशो मनमांथी खोले रे ॥ ६ ॥ तुमे० ॥ राणी कहे नृप धात विषम छे, मोडा सूता राय रे ॥ तिणे एटली वेला थइ मुझने, जाणजो ए अंतराय रे ॥ ७ ॥ तुमे० ॥ एटले कुब्जे देवीशुं रे, आलिंगनादिक दीधां रे ॥ चुंबनने विषय सीत्कारादिक, सहु परे परे कीधां रे ॥ ८ ॥ तुमे० ॥ क्रोधानल संधुकण माहरुं, विषय सेवन इणे मांड्युं रे ॥ अविवेक पवन थकी मुंझ लागो, खड्ग ते म्यानथी काढ्युं रे ॥ ९ ॥ तुमे० ॥ वली मुझ चिंता एम थइ, जिणे जीत्या बहु राजान रे ॥ तो कुशीलिणी देवी कुबज ए, छे सारमेय समान रे ॥ १० ॥ तुमे० ॥ अहो अहो नारीचरित्रने, जुउ मुझ किणी परे राखे रे ॥ आचरणा केहवी छे एहनी, एवडुं कपट ते दाखे रे ॥ ११ ॥ तुमे० ॥ यतः ॥ "अन्यं मनुष्यं हृदये निधाय, अन्यं नरं दृष्टिभिराह्वयंति ॥ अन्यस्य दत्वा वचनावकाशं,—मन्येन सार्द्धं रमयंति रामाः ॥ १ ॥ जलमज्झे मच्छिपयं, आगासे पंखिआण पयपंती ॥ महिला हियाण मग्गो, तिन्निवि विरला पयपंती ॥ २ ॥ दोहो ॥ "स्त्री प्राये

सवि वंकमी, केण पतीजे तास; साथे घमो चमाय करी, पछे दीये गल-पास ॥१॥ "बाल कालथी जोगवीने, सुत पण एहनो काल रे ॥ राज्य वेसारवो माहरे, तिणे हलकाइ जूपाल रे ॥ १२ ॥ तुमे० ॥ अविवेक वहुल नारी होये, एहमां अचरिज कांय नांहि रे॥ आदरवुं चारित्रने, अंतराय थाये ते मांहि रे ॥ १३ ॥ तुमे० ॥ प्राये जोता सरिता परे, कांय नीचगामी होये नारी रे ॥ एहवुं वचन माने जे कोइ, तेहना मुख उपर धारी रे ॥ १४ ॥ तुमे० ॥ यतः ॥ सवैयो ॥ "कामिनीकी वात माने ताके मोरे धूर ज्युं ॥ कपट निपट बोले हियाकी न वात खोले, मनथे उठाय कर कहे सब कूर ज्युं ॥ जेसोही पतंगरंग तेसोही त्रियाको संग, विछुरत बार नांही जैसो नदीपूर ज्युं ॥ कहे कवि मुनिचंद सुणो हो सज्जनजन, कामिनीकी बात माने ताके मोरे धूर ज्युं॥ १ ॥ "अविवेक वहुल नारी तणो ए छे, वली कुमर तणी हलकाइ रे ॥ विघन वली चारित्रमां होशे, नरपति इम चित्तमां लाइ रे ॥ १५ ॥ तुमे० ॥ मारवुं न घटे मुजने ए इम, वाल्यो निज परिणाम रे ॥ म्यान करी करवालने आव्यो, निज सज्जाए तव ठाम रे ॥ १६ ॥ तुमे० ॥ उतर्युं चित्त राणी थकी, वली वाध्यो धर्मव्यापार रे ॥ शय्याए बेठो चिंतवे, अहो नारीशिरे धिःकार रे ॥१७॥ ॥ तुमे० ॥ जूमि विना विषवेलमी, अग्नि विहूणी चूडेल रे ॥ जोजन विना विशूचिका अहो, ए तो नवो कोइ खेल रे ॥ १८ ॥ तुमे० ॥ सचेतना मूर्छा कही वली, विण उपसर्गे मारी रे॥ राशमी विण ए पासलो, विण हेतु मरण डुवारी रे ॥ १९ ॥ तुमे० ॥ बेमी विणा गुप्ति कही छे, ए नारी संसार रे ॥ अथवा चिंता शी करुं, ए छे संसार असार रे ॥ ॥ २० ॥ तुमे० ॥ जाणी असार ए कारणे, छांडुं हुं ए परिवार रे ॥ एम कांय शुन परिणामथी, रहुं करतो एम विचार रे ॥ २१ ॥ तुमे० ॥ आवी राणी एणे समे, हुं सूतो एहवुं जाणी रे ॥ राणी पण सूती खरी, मनमां कांय ज्रांति न आणी रे ॥ २२ ॥ तुमे० ॥ आलिंगन मुजने कर्युं, म्हें पण नवि दाख्यो विकार रे ॥ पूर्व परे वरत्यो तदा, एम करतां थइ सवार रे ॥ २३ ॥ तुमे० ॥ रयणी अनर्थनी खाणी गइ, करे करणी निज परजाते रे ॥ बेठा आस्थानिकामंरुपे, मली राजकचेरी विख्यात रे ॥ ॥ २४ ॥ तुमे० ॥ चोथे खंडे चौदमी, कही पद्मविजय एम ढाल रे ॥ श्रो-

ताजन सुणजो सवे वली, आगल वात रसाल रे ॥ २५ ॥ तुमे० ॥ सर्व गाथा ॥ ४४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मंत्रीमंमल नेलुं मल्युं, वारु करे विचार; विमलमति मुखने वली, पन्नएयुं निज परकार ॥ १ ॥ पन्नणे मंत्री एणी परे, अवसर नहीं महा राय; गुणधर कुमर प्रगुण नहीं, राज्यन्नारने ठाय ॥ २ ॥ परजाने जे पालवी, ते पण धर्म कहंत; कहे नरपति अम कुल तणी, एहवी स्थिति आवंत ॥ ३ ॥ डूत धर्मनो देखीने, रहेवुं नहीं घर मांहि; मंत्री कहे तुम्ह मन रुचि, आदरीये उत्साहि ॥ ४ ॥ अनुक्रमे दिवस गयो वही, रात्री पमी तव राय; वासन्नुवन मांहि मन वगर, सूतो चित्त सुखदाय ॥ ५ ॥ सेज रमंतां कवण गुण, जास न मन्न इमन्न; प्रीति विहूणो प्रेम रस, जाणे अलूणुं अन्न ॥ ६ ॥ नयणे आवी नीडमी, जामिनी पाछिले जाम; आव्युं सुपनुं एहवे, नाखुं ते अन्निराम ॥ ७ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ देशी नट्टिआणीनी ॥

॥ देखे स्वपनुं एम, उज्ज्वल घरने माथे हो वली बेठो सिंहासन उपरे ॥ आवी यशोधरा माय, प्रतिकूल नाखी पाड्यो हो गयो सातमी नूमिने परिसरे ॥ १ ॥ आवी पूछे माय, आलोटतो आलोटतो हो वली हुं उठी मेरु चड्यो ॥ इण समे जाग्यो जाम, तव म्हें मनमां चिंत्युं हो ए स्वप्नुं विषम आवी अड्युं ॥ २ ॥ पण परिणामे सार, शुं निपजशे एहथी हो तेहनी खबर पडे नहीं ॥ पण साधन परलोक, करवा मांड्युं रुडुं हो वली जे थानार थाउं सही ॥ ३ ॥ धरमध्यानथी एम, रात गइ हवे बेठो हो आस्थाने जइने मुदा ॥ जोमी कचेरी ताम, आवी यशोदा माता हो विनये उठ्यो हुं तदा ॥ ४ ॥ मुज पूछे सुखशात, म्हें कीधो परणाम हो पीठिकाए बेसारीआं ॥ एह थयुं नलुं काम, कहेशुं निज अन्निप्राय हो माता जिणे इहां आवीआं ॥ ५ ॥ न कहुं संजमवात, स्नेहे मुजने माता हो संजम लेवा नवि दीये ॥ स्वप्न जणावे वात, अंबाथी अंतराय हो आशंका माहरे हिये ॥ ६ ॥ वचन न मात ठेलाय, डुःप्रतिकार ते नाख्या हो मात पिता ठाणंग-

मां ॥ विरम्युं चित्त वली मुज, तिणे रहेवाय न इहां हो वलती चयनी आगमां ॥ ७ ॥ तिणे कहुं एहवी वात, जिणे मुज आणा आपे हो स्वप्न कहुं ते रीतशुं ॥ बोल्यो एम विचारी, माता स्वपनुं लाधुं हो सांजलजो परतीतशुं ॥ ७ ॥ कुमरने थापी राज्य, मस्तक मुख मुंमावी हो सयल संग त्यागी थयो ॥ श्रमण थइ शुज संग, घर उपर जब बेठो हो तिहांथी वली पमी गयो ॥ ए ॥ रात्रीने पाछले पहोरे, देखीने हुं जाग्यो हो ते सांजलीने खलजली ॥ थू थूकार करंत, माबा पगशुं चांपे हो पृथवीमंमल वली वली ॥ १० ॥ अपमंगल थाउ दूर, चिरंजीवो तुम्हे पुत्ता हो निर्विघ्ने मही पालजो ॥ स्वपनने घातनिमित्त, जाखे मोशी मुजने हो पुत्रवचन मुज पालजो ॥ ११ ॥ स्वप्नशास्त्रनी जाण, कहे एम आपो सुतने हो राज्य तुम्हे घरमां रहो ॥ ल्यो तुम्हे साधुवेष, इत्वर कालनी दीक्षा हो घरमां बेठा तुम्हे ग्रहो ॥ १२ ॥ म्हें कर्युं वचन प्रमाण, तव वली बोली परीक्षा हो तास उपाय हवे सांजलो ॥ जल थल खहचर जीव, हणी कुलदेवी पूजो हो विघ्न सवे दूरे टलो ॥ १३ ॥ शांतिकरम करो एम, वेदमां जाख्या विधिथी हो म्हें कह्युं ढांकी कानने ॥ माताशी कहो वात, शांतिकर्म हिंसाए हो करतां लेवा प्राणने ॥ १४ ॥ धर्म अहिंसा मूल, जाख्यो बे सहु शास्त्रे हो तेहने वाधा किम करो ॥ मनथी हणीये जीव, तोपण जवमां जमीये हो जवसायर थाये डुस्तरो ॥ १५ ॥ जे करें परने डुःख, पामे पोते तेहवुं हो अफल कर्म जाये नहीं ॥ शांतिकरम पण तास, परने पाप न चिंते हो इह परजव सुखीउं सही ॥ १६ ॥ "यतः ॥ तेणे जहा संधि मुहे गहीए, सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ॥ एवं पयापेच्च इहं च लोए, कमाण कम्माण न मुक्ख अछी ॥ १ ॥ कृतकर्मक्षयो नास्ति, कल्पकोटिशतैरपि ॥ अवश्यमेव जोक्तव्यं, कृतं कर्म शुजाशुजं ॥ २ ॥" निज पर आतम जीव, जे सरिखा करी जाणे हो तेणे मोक्षमार्गने साधीये ॥ माता बोली ताम, पुण्य पाप परिणामे हो होये वेद ते एम आराधीये ॥ १७ ॥ यतः ॥ जस्स न लिप्पई बुद्धी, हंतु ण इमं जगं निरवसेसं ॥ पावेण सो न लिप्पइ, पंकयकोसोव सलिलेण ॥ १ ॥ अथवा जो होये पाप, तोपण कीजे तनुने हो नीरोगताने

कारणे ॥ कारणे करीये पाप, तोपण दोष न लागे हो वली होये विघ्न निवारणे ॥ १७ ॥ तव म्हें कह्युं हे मात, किहांथी परिणाम रुडो हो अकारज करवुं बे जिहां ॥ हालाहल विष खाय, ते नर किहांथी जीवे हो जो अमृत बुद्धि करे तिहां ॥ १ए ॥ पाप नहीं जग अन्य, हिंसा उपर नाख्युं हो जिणे सहुए जीववुं इछता ॥ तिणे जे वेदवचन, ते पण खोटुं जाणो हो वली जेहथी दोष न प्रीछता ॥ २० ॥ यतः ॥ "न धम्म कज्जा परमत्थि कज्जं, न पाणहिंसा परमं अकज्जं ॥ न पेमरागा परमत्थि बंधो, न बोहिलाभा परमत्थि लाभो ॥ १ ॥" वली नीरोगी थाय, रूप आउखुं पामे हो जे अभयदान दाता सदा ॥ सौभागी शिरदार, परभव पण जो जावे हो पण दुःख न पामे ते कदा ॥ २१ ॥ यतः ॥ "दीहाउर्ज सुरूवो, नीरोगो होइ अभयदाणेण ॥ जम्मंतरेवि जीवो, सयलजणसलाहणिज्जोय ॥ १ ॥ "तिणे व्रत पालवुं श्रेय, देह आरोग्यने काजे हो वली पाप करी देह शुं करुं ॥ तिणे मूको विखवाद, घोर पाप जिणे होय हो ते हिंसामां चित्त नहीं धरुं ॥ २२ ॥ चोथे खंडे ढाल, पन्नरमी ए भाखी हो पण कोशीनी एम मति खसी ॥ धन धन ए नरराय, जीवहिंसा नवि कीधी हो इम पद्मविजय मुनिए इसी ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ ४७७ ॥ -

॥ दोहा ॥

॥ माय कहे सुण माहरुं, वचन करे किम व्यर्थ; मातवचन जिहां मानवुं, नहीं तिहां शास्त्रनो अर्थ ॥ १ ॥ एम कहीने मुज पाये पडी, तव में चिंत्युं एम; इत ठे वाघ ने इत नई, कष्ट थयुं करुं केम ॥ २ ॥ एक दिशा अंबावयण, अन्य दिशा वयभंग; गुरु विपाक व्रतभंग थे, सुणीयुं बे गुरुसंग ॥ ३ ॥ एम चिंतवतो अंबने, कहे सुणो एक वात; जो तुम्ह वाहलो जीवथी, तो मूको ए धात ॥ ४ ॥ जेहथी दुर्गति जाइये, ते किम करीये मात; अथवा हुं मुज आतमनो, घणुं तो करशुं घात ॥ ॥ ५ ॥ पछे मुज मांसे पूजजो, कुलदेवीने काज; एम कही खड्ग ते काढीउं, लाव्यो नहीं मन लाज ॥ ६ ॥ आस्थानमंडपमां थयो, कोलाहल तिणे काल; हाहाकार सहुए कहे, काम न करो विकराल ॥ ७ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ तुंगीश्रा गिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥

॥ उठी अंबा कहे म करो, साहस एवडुं एम रे ॥ कर फाली कहे अहो तुऊने, मात उपरे प्रेम रे ॥ १ ॥ अहो नावि नाव वलीउं ॥ ए आंकणी ॥ तुऊ मुवे में जीववुं केम, ते कारण सुण पुत्त रे ॥ प्रकारांतरे मात मारी, एह तुऊने जुत्त रे ॥ २ ॥ अहो० ॥ बोल्यो कुकुट इण अवसरे, शब्द सुण्यो तस मात रे ॥ मात कहे सुण पुत्र श्रुतिमां, नाखीयुं विख्यात रे ॥ ३ ॥ अहो० ॥ एह एहनो कल्प नाख्यो, जो ए अवसर जास रे ॥ शब्द सुणीये तेहनो अथ, करीये वध वली तास रे ॥ ४ ॥ अहो० ॥ तेह कारण एह कुकुट, मारय तुं शुन्न काज रे ॥ तव कह्युं में मात सुणजो, न करुं एह अकाज रे ॥ ५ ॥ अहो० ॥ जीवहिंसा करुं नांहि, तुम्ह आणा जो होय रे ॥ तो मरुं हुं एह निश्चय, अवर न हणुं कोय रे ॥ ६ ॥ अहो० ॥ मात कहे तुं कहे जो एम, तो सुण माहरी वाणी रे ॥ पीठमय कुकुट बनावी, मारय तुं निज पाणि रे ॥ ७ ॥ अहो० ॥ एटलुं मुऊ वचन माने, एम कही तरवार रे ॥ फूंटी लेइने पडी पाये, मुऊ बीजी वार रे ॥ ८ ॥ अहो० ॥ एम सुणी मुऊ मात नेहे, नाण नेत्र विलीन रे ॥ मातनुं म्हें वचन मान्युं, मति थइ मुऊ दीन रे ॥ ए ॥ अहो० ॥ ज्ञान बहु पण आतम अर्थे, कांय नावे काज रे ॥ दूर देखे नयन पण निज, रूप देखे न आज रे ॥ १० ॥ ॥ अहो० ॥ लेप्पकारने हुकम कीधो, कुकडानो ताम रे ॥ तेह पीठनो करी कुकुट, लावीउं तिण ठाम रे ॥ ११ ॥ अहो० ॥ मात कुलदेवी समीपे, लेइ मुऊने जाय रे ॥ कुकडो आगल ते थापी, कहे मुऊने माय रे ॥ १२ ॥ अहो० ॥ म्यानथी ए खड्ग काढ्युं, तव कह्युं म्हें तेम रे ॥ माता कहे कुलदेवीने हवे, धरी मुऊशुं प्रेम रे ॥ १३ ॥ अहो० ॥ खप्न माठुं पुत्रे दीठुं, तस निवारण थाय रे ॥ एह कुकडो पुत्र मारे, कुशल करजो माय रे ॥ १४ ॥ अहो० ॥ एम कही मुऊ शान कीधी, एह कुकुट मारी रे ॥ मारीउं म्हें कुकडो जब, पूजा कीधी तिवार रे ॥ १५ ॥ अहो० ॥ सिद्धकर्मा सूपकारने, कहे देव निःशेष रे ॥ रांध्य तुं ए मांस लेइ, हरखीये जेह देखी रे ॥ १६ ॥ अहो० ॥ म्हें कह्युं रे

भात ए शुं, मांस खाधे थाय रे ॥ दान ध्यान तप नियम मंत्रह, औषध विलये जाय रे ॥ १७ ॥ अहो० ॥ झेर खाधे रुअडुं जे, मारे एकज वार रे ॥ मांस जवजव नरक घाले, दुःख दौर्जाग्य अपार रे ॥ १८ ॥ अहो० ॥ वैद्य औषधे मांस आपे, ते पण एहनी देहार रे ॥ बिजत्स दुर्गंध इंद्रिय मलथी, उपन्युं ए असार रे ॥ १९ ॥ अहो० ॥ मांस वर्जे सांजलो गुण, चोर शकुन पिशाच रे ॥ जूत ग्रह ने अग्नि ए सवी, तृण समां होय साच रे ॥ २० ॥ अहो० ॥ सुखे जीवे सद्गति होय, ए जिनशासन नीति रे ॥ सुणो परदर्शने जाख्युं, तेह सघली रीति रे ॥ २१ ॥ अहो० ॥ विष परे जे मांस वर्जे, स्वर्गलोके जाय रे ॥ मुनि वशिष्ठ कहे इणी परे, महाजारत गाय रे ॥ २२ ॥ अहो० ॥ "यतः ॥ यावज्जीवं च यो मांसं, विषवत्परिवर्जयेत् ॥ वशिष्ठो जगवानाह, स्वर्गलोकस्य संस्थितिः ॥ १ ॥ यावंती पशुरोमाणि, पशुगात्रेषु जारत ॥ तावद्वर्षसहस्राणि, पच्यंते नरके नराः ॥ २ ॥ आकाशगामिनो विप्राः, पतंति मांसजक्षणात् ॥ विप्राणां पतनं दृष्ट्वा, त्याज्यं मांसं विवेकिजिः ॥ ३ ॥ शुक्रशोणितसंजूतं, मांसं यः खादते नरः ॥ स जनः कुरुते शौचं, हसंति तेन देवताः ॥ ४ ॥ किं जापहोमनियमैः, तीर्थस्नानैश्च जारत ॥ यदि खादति मांसानि, सर्वमेतन्निरर्थकं ॥ ५ ॥ तिलसर्षपमात्रं तु, यो मांसं जक्षते नरः ॥ स याति नरकं घोरं, यावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ ६ ॥ इत्यादि महाजारते " अंबा बोली पुत्र न करो, एहमां कांय विचार रे ॥ वचन माहरुं सर्व मान्युं, करो एहनो आहार रे ॥ २३ ॥ अहो० ॥ सत्य मांस न एह कल्पित, तेहमां शो दोष रे ॥ एम कहे में वचन मान्युं, कीधो पापनो पोष रे ॥ २४ ॥ अहो० ॥ जेह जाख्युं तेह कीधुं, अशुज कर्म बंधाय रे ॥ सानुबंधी बंध तिणे समे, पड्यो ततक्षण राय रे ॥ २५ ॥ ॥ अहो० ॥ बीजे दिन हवे कुंअर थाप्यो, राज अजिषेक कीध रे ॥ प्रव्रज्या हवे ग्रहणहेते, उद्यम सबलो लीध रे ॥ २६ ॥ अहो० ॥ खंम चोथे सोलमी ए, पद्मविजये ढाल रे ॥ जाखी समरादित्य केरा, रासमां सुरसाल रे ॥ २७ ॥ अहो० ॥ सर्व गाथा ॥ ५११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपने कहे नयणावली, आर्यपुत्र सुणो एक; पुत्र राज्य सुख पेखीने,

करशुं काल विवेक ॥ १ ॥ में चिंत्युं मन मांहि एम, वात ए केम विरु-द्ध ॥ रात्रिने हमणां केरमी, अहो अहो चरित्र अशुद्ध ॥ २ ॥ अथवा एम पण देखीये, जीवतो मूके जाण; मुआ साथे कोइक मरे, नारीचरित्र पिठाण ॥ ३ ॥ नीचगति नारी होय, विषहर गति परे वंक; मूढ न जाणे मांहिलो, नेदने नजे निःशंक ॥ ४ ॥ एह विचार एण अवसरे, करवो न घटे कोय; एम चिंतवतो बोलीउं, इमहीज करवुं होय ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ राग खंनाती ॥ हवे श्रीपाल कुमार ॥ ए देशी ॥

॥ चिंते राणी एम, एह नूपति दीक्षा लीये जी ॥ हुं नवि जाउं साथ, तो लोके निंदीजीये जी ॥ १ ॥ मरण लहे जो राय, तो पठे मुऊ चिंता नहीं जी ॥ न मरुं जो रायने पीठ, तोपण मिष काढुं अहीं जी ॥२॥ पालवुं बालनुं राज्य, वली मंत्री मुख ना कहे जी ॥ एहवा जेह निमित्त, तेह कलंक सवे दहे जी ॥ ३ ॥ मारण करुंअ उपाय, विष नोजनमां आपीये जी ॥ वेगो नोजन काम, तव सविय आहार ते थापीये जी ॥ ४ ॥ नासा मुखने ढांकी, आहार कराववा आवीआ जी ॥ चतुर पुरुष सुजाण, राणी पण तेमावीआ जी ॥ ५ ॥ नोजन अंते जाम, उठे राय चलू करी जी ॥ वंची सहुनी दृष्टि, तंबोलमां तव विष धरी जी ॥ ६ ॥ नखीउं ते तंबोल, वासनुवन मांहि गयो जी ॥ आवत्रा मांड्युं घेन, विषविकार सबलो थयो जी ॥ ७ ॥ जम थइ जीन अत्यंत, लोचन मीचाणां तदा जी ॥ नख थया शामल वान, मुख कुमलाणुं मुऊ जदा जी ॥ ८ ॥ दुःख अनुनवतो ताम, पडीयो सिंहासन थकी जी ॥ खेद लहे पमिहार, जोवे मुऊ साहमुं चकी जी ॥ ए ॥ हाहा शुं थयुं एह, एम कही ढूकमो आवीउं जी ॥ शुं थयुं रे महाराय, तव मुऊ उत्तर नावीउं जी ॥ १० ॥ जाण्यो ऊेरविकार, बुंबारव तिणे कस्यो जी ॥ धाउं रे लोको धाउं, राय सिंहासनथी पड्यो जी ॥ ११ ॥ तेड्यो वैद्य सुजाण, विषविकार उतारवा जी ॥ चिंते राणी ताम, रायने पूरो मारवा जी ॥ १२ ॥ जो आवे इहां वैद्य, तो जीवाडे नृप नणी जी ॥ एम चिंतवती तेह, हाहाकार मुखे नणी जी ॥ १३ ॥ ताणी घूंघट पूर, मुऊ उपर आवी पमी जी ॥ करती बहु आक्रंद, आंसुधारा नवि अमी जी ॥ १४ ॥ गलुं दाब्युं तिणी वार,

मर्मपीडाए मरी गयो जी ॥ आव्युं आरतध्यान, जव सघलो अहिले थयो जी ॥ १५ ॥ सिलिंद्र नामे पाढ, दक्षिण दिशि मोरडी तणी जी ॥ कुखे उपनो मोर, एक दिन मोरफीने हणी जी ॥ १६ ॥ लेइ व्याध जुवान, दीधो गाम तलारने जी ॥ नवि आवी मुऊ पांख, वेदना सहु ते कारणे जी ॥ १७ ॥ खमतो जूख अपार, कीडा खाउं हु नित्य प्रत्ये जी ॥ तिणे पापे मुऊ देह, पामी विस्तार कालज जते जी ॥ १८ ॥ पिह्न तणो थयो जार, नाटिक मुऊने शीखव्युं जी ॥ रूमो जाणी तेह, राय जणी जइ दाखव्युं जी ॥ १९ ॥ गुणधर जे मुंऊ पुत्र, जेट जाणीने राखीउ जी ॥ पूर्वजवनी माय, जेणे प्राणीवध दाखीउ जी ॥ २० ॥ ते मुऊ मरणने दिन्न, आर्त्तध्यानवश ते मरी जी ॥ करहाम देशे गाम, धान्यपुरक नामे पुरी जी ॥ २१ ॥ कुतरी गर्जे आय, उपनी ते कुतरापणे जी ॥ जन्म थयो जब तास, महोटो थयो ते तिहां किणे जी ॥ २२ ॥ जाणे मननी वात, मोकव्यो गुणधर नृप जणी जी ॥ साथे आव्या दोय, आस्थान सजा जूपज तणी जी ॥ २३ ॥ नयरी विशालाए तेह, रायने प्रीति घणी थइ जी ॥ प्रशंसा अम्ह दोय, राख्याथी शाता जइ जी ॥ २४ ॥ चोथे खंरु ढाल, सत्तरमी सोहामणी जी ॥ पद्मविजय कहे एह, जविजन मन सुख कामणी जी ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ५४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अकालमृत्यु नामे अछे, श्वानाधिपशिरदार; श्वान ते तेहने सोंपीउ, आणी हर्ष अपार ॥ १ ॥ नीलकंठ नररायनो, पालक पंखी जाति; मुऊने आप्यो मोदशुं, जाख्युं वली इणी जाति ॥ २ ॥ प्रजापालण वली पारधी, अति वल्लज मुऊ एह; श्वानने यतने साचवे, जीवघात करे तेह ॥ ३ ॥ वचन प्रमाण करी वव्यो, केतोहिक गयो काल; पालंतां अम्ह प्रेमशुं, वात सुणो विकराल ॥ ४ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ कुंमखफानी देशीमां ॥

॥ एक दिन प्रासाद उपरे, इंद्रनील जिहां गोष ॥ जुउ गति कर्मनी ॥ नयणावली चित्रशालिमां, करती कूब्जशुं जोष ॥ १ ॥ जु० ॥ गोषथी मोरे माननी, देखी उपन्युं ज्ञान ॥ जु० ॥ जातिसमरण जेहने, आव्युं

आरतध्यान ॥ २ ॥जु० ॥ क्रोधवशे तिहां कलकल्यो, चंचु नखे करे चोट ॥ जु० ॥ लोह लाठी लेइ कूब्जनी, मुज उपर करे दोट ॥ ३ ॥ जु० ॥ राणी प्रहारे विह्वल थयो, पडीउं मार्ग सोपान ॥ जु० ॥ जुवटुं खेले राजीउं, लूंटतो गयो तिणे नाथ ॥ ४ ॥ जु० ॥ राणीना अनुचर आवीया, अहो अहो कहेता वाण ॥ जु० ॥ तेह कोलाहल सांभली, आव्यो जननी श्वान ॥ ५ ॥ जु० ॥ पकड्यो मुजने कूतरे, देखी तेह भूपाल ॥ ॥ जु० ॥ हाहारव करतां हण्यो, तेह श्वान विकराल ॥ ६ ॥ जु० ॥ तेह प्रहारथी लोही वम्युं, मूक्यो मुजने ताम ॥ जु० ॥ धरणीपीठ पड्या बिहुं, शोक लह्यो भूस्वामी ॥ ७ ॥ जु० ॥ मरणसमय अम्ह बिहुं तणो, जाणी बोले राय ॥ जु० ॥ आर्यिकाने जिम तातनो, शोक होये तिम थाय ॥ ८ ॥ जु० ॥ कृष्णागरु चंदन वली, काष्ठ लविंगनां आणी ॥ जु० ॥ दहन दीउं दीउं दानने, सर्ग पमाडवा जाणी ॥ ९ ॥ जु० ॥ सांभली मोर ते चिंतवे, अहो इणे तातने काज ॥ जु० ॥ दानादिक दीधां घणां, पण मुज वेलाए आज ॥ १० ॥ जु० ॥ कीडा खाउं भूखे मरुं, वली श्वाने मुज खद्ध ॥ जु० ॥ कर्मगुरुताए करी, तिरजंचनी गति लीद्ध ॥ ११ ॥ जु० ॥ प्राण गया इणी अवसरे, हवे उत्पत्तिनुं ठाम ॥ जु० ॥ सूवेलनग पश्चिम दिशे, दुःप्रवेश वन नाम ॥ १२ ॥ जु० ॥ कंटकवृक्ष बहुल जिहां, तिहां एक कपइ जीव ॥ जु० ॥ तेहनी कूखे उपन्यो, दुःख लहेतो सदैव ॥ १३ ॥ जु० ॥ मा काणी बाप कुंटलो, दुःख सहेतां मुज जोय ॥ जु० ॥ कालप्रसव विना जनमीउं, कर्मने शरम न होय ॥ १४ ॥ जु० ॥ भूख थकी नासी गयुं, जननी स्तनमां दूध ॥ जु० ॥ हुं भूखे खाउं गोखरु, अनुकरमे थयो वृद्ध ॥ १५ ॥ जु० ॥ इणी अवसर माय कूतरो, मूउं आरतध्यान ॥ जु० ॥ तिणहीज वनमां उपन्यो, नाग ते विषनुं थान ॥ ॥ १६ ॥ जु० ॥ विद्रुममणि परे लोयणां, अंधकारनो राशि ॥ जु० ॥ चपल जीभ दोय लपलपे, दीसंतो कालपाश ॥ १७ ॥ जु० ॥ दर्दुरनुं भक्षण करे, तव में विगर विचारी ॥ जु० ॥ पकड्यो पुच्छथी नागने, तस पण कोप अपार ॥ १८ ॥ जु० ॥ डशीउं मुज वदने तदा, मांहो मांहे धरी खार ॥ जु० ॥ खाइये बिहुं परस्परे, इण अवसर तिणी वार ॥ १९ ॥ ॥ जु० ॥ आवी रींछ मुजने ग्रह्यो, खावा मांड्यो ताम ॥ जु० ॥ त्रट त्रट

त्रोडे शिरा तिहां, चट चट फाडे चाम ॥ २० ॥ जु० ॥ घट घट शोणित पीवतो, करू करू मरडे हाम ॥ जु० ॥ तिम खातां खातां थका, पहोती तास रुहाम ॥ २१ ॥ जु० ॥ ते शब्दथी मानुं बीहतो, नागो कलेवर ठाम ॥ जु० ॥ जीवपंखी उमी गयो, तेह स्थानकने ठाम ॥ २२ ॥ जु० ॥ तेह विशाला नयरीए, दुष्टोदका नदी नाम ॥ जु० ॥ महोटा द्रहमां माछली, कुखे उपन्यो ताम ॥ २३ ॥ जु० ॥ रोहित मत्स्यनी जातिमां, हवे जे कालो साप ॥ जु० ॥ एह नदीमां उपन्यो, सुसमार निज पाप ॥ २४ ॥ जु० ॥ चोथे खंमे अढारमी, ढाल कही मनोहार ॥ जु० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो, सुणतां जय जयकार ॥ २५ ॥ जु० ॥ ५७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मत्स्य अने सुसमार ते, अनुक्रमे मलीआ दोय; पकड्यो मुजने पुछथी, सुसमारे धरी सोय ॥ १ ॥ इण अवसर आवी तिहां, स्नान करण संकेत; चेमि नाम चिलाइका, देखी ऊंपा देत ॥ २ ॥ मुजने मूकी तिण समे, पकड्यो दासी पाय; नदी मांहे नासी गयो, हुं तो करतो हाय ॥ ३ ॥ बुंबारव करे बापडी, पकमी राखी पाणि; माछी आव्या मोकला, जबर उतस्या जाण ॥ ४ ॥ मूकावी ते मानिनी, मास्यो ते सुसमार; काल केतोइक अतिक्रमे, आगल सुणो अधिकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ म्हारी सही रे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन माछीए नाखी जाल, पकड्यो मुज ततकाल रे ॥ जुर्ज कर्म कमाणी ॥ महा मत्स्य जाणीने जेटणुं कीधुं, ते तो गुणधर राजाए लीधुं रे ॥ १ ॥ जु० ॥ नयणावलीने पासे लायो, नृपति मन हरख ते पायो रे ॥ जु० ॥ कहे निज मातने पुछनो देश, रंधावो तात उद्देश रे ॥ २ ॥ जु० ॥ वली अजा पण मनमां धारो, ब्राह्मणने ए अवधारो रे ॥ जु० ॥ ए आपण माटे उपज्यो जाग, पछ तलीने रंधावजो लाग रे ॥ ३ ॥ जु० ॥ एम सांजल्युं वली नयणे दीठुं, उपन्युं जातिस्मरण मीठुं रे ॥ जु० ॥ सांजली पुछखंड ते माहरो, आप्यो ब्राह्मणने करी प्यारो रे ॥ ४ ॥ जु० ॥ शेष शरीर ते छोली करीने, मांहि त्रिगडुं हिंग जरीने रे ॥ जु० ॥ सिंच्यो हलदर ने वली नीर, उपजावी अति मुज पीर रे ॥ ५ ॥ जु० ॥

माखण ज्ञरी तावमीमां तलीउं, सवि जाणुं ज्ञाने खलनलीउं रे ॥ जु० ॥ पण धर्मध्यान तो आव्युं नांहि, महा तीव्र वेदना मांहि रे ॥ ६ ॥ जु० ॥ एम दृढ कर्म निगम बंधाणुं, नारक सम वेदन टाणुं रे ॥ जु० ॥ तोही शरीरथी जीव न जाय, इण समे सुसमार जे माय रे ॥ ७ ॥ जु० ॥ चंमालपाडे ते बकरी जाइ, विशाला नयरीमां आइ रे ॥ जु० ॥ तेहनी कुखे अज हुं हुउं, पाम्यो यौवन आगले जुउं रे ॥ ८ ॥ जु० ॥ मैथुन अर्थे मात ज्ञोगवतां, दीठो यूथपति जोगवतां ॥ जु० ॥ क्रोधे मर्मदेशे मुक मास्यो, निज वीरजमां अवतास्यो रे ॥ ए ॥ जु० ॥ यतः ॥ "कम्ममलविनमीएणं, तब मरं तेण मंदनग्गेणं ॥ अप्पा हु अप्पणचिय, जणीउं जणणीए गप्रंमी ॥ १ ॥" ढूकडो प्रसवकाल जब आयो, गयो आहेडे नररायो रे ॥ जु० ॥ आहेडेथी वलीउं राय, तिहां क्षेत्रमां बकरी देखाय रे ॥ १० ॥ जु० ॥ गर्नथी हलके हलके चाले, राय खाली आव्यो ते साले रे ॥ जु० ॥ बाण नाख्युं बकरीने वागुं, हरख्यो नृप लक्षने लागुं रे ॥ ११ ॥ जु० ॥ गर्न जाणीने पेट विदास्युं, तिहां म्हें तो जीवित धास्युं रे ॥ जु० ॥ सोंप्यो अजापालने तिहां राये, ते पण वीजीनुं थण पाये रे ॥ १२ ॥ जु० ॥ पारधी फल काजे कुलदेवी, पूजे महिष तणी वलि देवी रे ॥ जु० ॥ पन्नर पाका नोजन काजे, मराव्या गुणधर राजे रे ॥ १३ ॥ जु० ॥ ब्राह्मण अर्थे मांस रंधाव्यो, मुकने वारणे बंधाव्यो रे ॥ जु० ॥ मेष पवित्रमुखो कहेवाय, काक शुनक बोट्युं न खवाय रे ॥ १४ ॥ जु० ॥ तिणे मुकने सुंघामी जिमीआ, विप्रे आचमन ते करीआं रे ॥ जु० ॥ अंतेउर लेइ राजा आव्यो, देखी मुक मनमां नाव्यो रे ॥ १५ ॥ जु० ॥ जातिस्मरण उपन्युं ज्ञान, थयुं सर्व वृत्तांत विज्ञान रे ॥ जु० ॥ ब्राह्मण बेठा हारोहार, प्रणम्या म्हें चित्त उदार रे ॥ १६ ॥ जु० ॥ विप्र कहे ए तातनी पांति, ए आर्यिकानी वली खांति रे ॥ जु० ॥ ए कुलदेवीनी पंक्ति जाणी, तव म्हें चिंत्युं मन आणी रे ॥ १७ ॥ जु० ॥ ए मुक पुत्र करे मुक अर्थे, पण सवि जाये व्यर्थे रे ॥ जु० ॥ नोजने बेठो सहु परिवार, नवि दीठी नयणावली नार रे ॥ १८ ॥ जु० ॥ इणी समे दासी परस्पर नाखे, कहो मांस डुर्गंधता दाखे रे ॥ जु० ॥ महिष तो ताजा हणीआ नूपे, तव एक बोली करी चूपे रे ॥ १ए ॥ जु० ॥ प्रेममंजुषा सुणय तुं वात, मांसनो न-

वि गंध आयात रे ॥ जु० ॥ नयणावलीए मत्स्य जे खाधो, अजीर्ण थयो कोढ ते बाधो रे ॥ २० ॥ जु० ॥ तास शरीरनो दुर्गंध लावे, वायरो जे फरसीने आवे रे ॥ जु० ॥ एक कहे सुणय सुंदरी बीजुं, ताहरी वात सांजली खीजुं रे ॥ २१ ॥ जु० ॥ रायने झेर देइने मास्यो, ते पाप व्याजे वधास्यो रे ॥ जु० ॥ एक कहे ए म करो वात, षटकर्ण मंत्र जेदात रे ॥ २२ ॥ जु० ॥ उठो अन्य ठेकाणे जइये, ठवको कोइनो नवि लहीये रे ॥ जु० ॥ ते उठी चाली अन्य ठाम, तव में जोयुं गाम गाम रे ॥ २३ ॥ जु० ॥ एकण पासे बेठी दीठी, नयणावली दुःख उक्कीठी रे ॥ जु० ॥ मक्षिका सहसगमे दुःख देती, कर्म उदय थतां वार केती रे ॥ २४ ॥ जु० ॥ चोथे खंडे ढाल ए जाखी, जली ठंगणीशमी चित्त राखी रे ॥ जु० ॥ पद्मविजय कहे कर्म कमाइ, कोइ न करजो जाइ रे ॥ २५ ॥ जु० ॥ सर्व गाथा ॥ ६०० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मेषपणे चिंत्युं मने, केहवा कर्मविपाक; उदये आव्या एहने, राणी रुए वराक ॥ १ ॥ नयण वयण थण जेहनां, जीते जुवती जगत्त; कमल चंद ने कुंजनी, उपम अधिकी वत्त ॥ २ ॥ तपसी पण मुनिवर तणां, चित्त तणी ए चोर; हवे कामीजन हैयडलुं, कठिण न जींजे कोर ॥ ॥ ३ ॥ एम चिंतवुं इण अवसरे, राय कहे सूपकार; महिषनुं न रुचे मांस ए, आणो अन्य उदार ॥ ४ ॥ आणा रायनी आकरी, सूपकार संजाल; कालक्षेपना जय थकी, ते मुफने ततकाल ॥ ५ ॥ एक पासुं बेद्युं इणे, जरुथुं जूपति काम; निपजावी नररायने, मोकलीयुं धरी माम ॥ ६ ॥ तातने पुण्य जणी तिहां, विप्रने दीये विशेष; कांयक नयणावली कने, खाय आप जे शेष ॥ ७ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ राग मारु ॥ सागरीआ तुं मम गर्व करे ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसरे मुफ मात जे बकरी, मारी गुणधर राय ॥ तेह कलिंग देशे थयो पाडो, अनुक्रमे महोटो थाय रे ॥ १ ॥ सुणो जविको मत कर्म करो, एम किम जवजलधि तरो रे ॥ ए आंकणी ॥ जार वही आव्यो तिणे नयरी, नदी उतरे जेते ॥ जूपतुरंग आव्यो जल पीवा,

मास्यो तस तेते रे ॥ २ ॥ सु० ॥ रायने खबर करी ते पुरुषे, राय कहे लावो ॥ तव लाव्या ते पुरुष महिषने, कोप थयो चावो रे ॥ ३ ॥ सु० ॥ राय कहे सूपकारने इणी परे, एह डुष्ट पाको ॥ एहने जीवतां नरूथुं करज्यो, डुःख देवण गाको रे ॥ ४ ॥ सु० ॥ तिणे पण सयल दिशा लोहकीला, ठोकी वांध्यो तास ॥ एक कमाह जले नरी मूकी, कर्म तणो नहीं नास ॥ ५ ॥ सु० ॥ त्रिगडुं हिंग लवण मांहि मूकी, चोक फेर करी आग ॥ खेर काष्ठ होमे हवे अग्नि, वलती नहीं कोय माग ॥ ॥ ६ ॥ सु० ॥ कंठ होठ तालु अति सूके, तरषा पण तेहवी ॥ उसकार जल पीतां वेदन, पामुं नरक जेहवी रे ॥ ७ ॥ सु० ॥ देह मांहि तव आग ते उठी, मांस नीकल्युं वीत्र पास ॥ राय कहे हवे महिषनुं न-रूथुं, लावो हमारी पास रे ॥ ८ ॥ सु० ॥ जिणे जिणे दिश ते मांसज पाक्युं, छेदी ते ते अंश ॥ सूपकार मोकले नरपतिने, तोहि जाय नहीं हंस रे ॥ ए ॥ सु० ॥ घी रेमी वली लूण वाटीने, घाल्युं डुःख देवा ॥ पीरसनारो रायनो आव्यो, बीजुं मांस लेवा रे ॥ १० ॥ सु० ॥ सूप-कारे तस साहमुं निरख्युं, तव तेणे मर खाधो ॥ रोम कंप्यां गलीउं तस गाढो, हामबंध बांधो रे ॥ ११ ॥ सु० ॥ सम काले म्हें जैसडे कीधो, काल मरीने दोय ॥ विशालापुरीए चंमालपामे, कुकमी उदरे जोय रे ॥ १२ ॥ सु० ॥ मार्जारे अम माता पकमी, उकरमे लेइ जाय ॥ खातां अंमयुगल तिहां पमीउं, गयो मार्जार ते ठाय रे ॥ १३ ॥ सु० ॥ अम उपरे तिहां सूपडुं ढांक्युं, चंडालिणी आवी ॥ तेहनी वाफ थकी अमे जीव्यां, ए पण जुउ नावी रे ॥ १४ ॥ सु० ॥ इमां फोमी अम्हे नीकल्यां बाहिर, चंमाल सुत पाले ॥ पिछनार चंडिका सदृश, हुउ तरुण काले रे ॥ १५ ॥ सु० ॥ अर्धी चणोठी सरिखी चूला, दीठां को-टवाले ॥ रायखेलण योग्य जाणी ग्रहीयां, नृपने देखाले रे ॥ १६ ॥ सु० ॥ राजा हरख लहीने सोंप्यां, कोटवालने नाखे ॥ जिहां जिहां जाउं तिहां तिहां एहने, लावजे मुऊ साखे रे ॥ १७ ॥ सु० ॥ तहत करे काल-दंड कोटवालह, हवे एक दिन राजा ॥ अंतेउरशुं रमवा चाल्यो, क्रीमा वसंत ताजा रे ॥ १८ ॥ सु० ॥ कुसुमाकर उद्याने पोहोतो, तव कोटवाल अम लेय ॥ राजा केलि घरे करे क्रीडा, राणीशुं बहु नेय रे ॥

॥ १९ ॥ सु० ॥ अमने कोटवाल लेइ आव्यो, अशोक वृक्षपंती ॥ तिहां शशिप्रभ आचारज दीठा, मुनिवर बहु उपांति रे ॥ २० ॥ सु० ॥ वीशमी ढाले ए चोथे खंडे, समरादित्य रासे ॥ पद्मविजय कहे मुनिवर मलीया, सघलुं सुख थाशे रे ॥ २१ ॥ गा०॥ ६२७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अलिक वंदना एणे करी, धर्म लाभ दीये साध; तपसिरी देखी तेहनी, सुणी तस वयण समाधि ॥ १ ॥ उपशम कांयक आणीने, पूछे धर्म प्रपंच; साधु कहे साधारणो, सर्वनो एकज संच ॥ २ ॥ भीठे तत्त्व न प्राणीआ, मूढ गणे मनभेय; तेह धर्म सुणतां थका, उपजे नहीं कोइ खेय॥३॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ वात म काढो हो व्रत तणी ॥ ए देशी ॥

॥ त्रिविधे हिंसा वर्जवी, अलिक न भाखवी वाणी रे ॥ विगर दीधुं कल्पे नहीं, एक तृणसलीअ प्रमाण रे ॥ १ ॥ सांभलो श्रीगुरुदेशना, भाव धरी भवि जीव रे ॥ त्रिविधे अब्रह्म वर्जवुं, अब्रह्मे होय कलीव रे ॥ २ ॥ स० ॥ नवविध परिग्रह वर्जवो, रात्रीभोजन टाली रे ॥ दोष बेंतालीश वर्जवा, आहार तणा संभाली रे ॥ ३ ॥ सां०॥ डंडवासिक बोल्यो तदा, एह तो मुनिवरधर्म्म रे ॥ पण कहो सागारी तणो, मुनि कहे तेहनो मर्म रे ॥ ४ ॥ सां० ॥ श्रावकनां व्रत बार जे, संभलावे मुनिराय रे ॥ सांभली कहे मुनिवर खरुं, पण ए म्हें न कराय रे ॥ ५ ॥ सां० ॥ वेदमां पशुवध भाखीजे, कुलकर्मागत जेह रे ॥ पूरव पुरुषे आचर्यो छांडी न शकुं तेह रे ॥ ६ ॥ सां० ॥ सूरि कहे जो नवि तजे, तो ए कुक्कुट जोडी रे ॥ दुःख पाम्यां तिम पामशो, लहेशो अनर्थनी कोडि रे ॥ ७ ॥ कोटवाल कहे किम प्रभु, पाम्या अनर्थभंडार रे ॥ तव मुनिवर धुरथी कहे, अमचुं चरित्र उदार रे ॥ ८ ॥ सां० ॥ जिम पीठ कुक्कुटने हण्यो, जिम दुःख पाम्यो अत्यंत रे ॥ श्रुतज्ञानी गुरुए तिहां, संभलाव्यो विरतंत रे ॥ ९ ॥ ॥ स० ॥ यतः ॥ "सिहि साण सप्प पसया, मिणो हरणअई अ मेसीय ॥ महीस य कुकड पक्की, जाया संसार जलहिंमी" ॥ १ ॥ बूझ्यो दंडवासिक तिहां, सांभली श्रीगुरुवाणी रे ॥ कहे गुरुजी माहरे सखुं, हिंसा अनर्थनी खाणी रे ॥ १० ॥ सा० ॥ व्रत आपो

श्रावक तणां, तव गुरु जिन उपदेश्यो रे ॥ पंच नमस्कार आपीउं, तेहनो मर्म प्रकाश्यो रे ॥ ११ ॥ सां० ॥ प्राणातिपात प्रमुख वली, उच्चराव्यां व्रत बार रे ॥ हवे निज चरित्र ते सांभली, कुक्कुट हर्ष अपार रे ॥ १२ ॥ ॥ सां० ॥ जातिसमरण पामीआ, उपन्यो बहु संतोष रे ॥ भुवन गुरुना धर्मनी, पाम्या बोधिनो पोष रे ॥ १३ ॥ सां० ॥ सानुबंधी कर्म नीठव्यां, हर्ष न मायो अंगे रे ॥ तिणे कुकडूकूं बोलीआ, राचता नाचता रंगे रे ॥ १४ ॥ सां० ॥ इण अवसरे नरपति तिहां, राणी जयावली संगे रे ॥ भोग भोगवतां सांभल्यो, कुक्कुटशब्द सुचंग रे ॥ १५ ॥ सां० ॥ धनुषे तीर चढावीयो, राणीने कहे एम रे ॥ देख तुं शब्दवेधीपणुं, कुक्कुट मारुं ए प्रेम रे ॥ १६ ॥ सां० ॥ खेंची बाणने मूकीउं, मार्या अमने तेण रे ॥ राणी जयावली भोगवी, तत्क्षण जे भूपेण रे ॥ १७ ॥ सां० ॥ तस कूखे अमे उपन्या, बोधि तणे परभावे रे ॥ गर्भप्रभावे दोहलो, उपन्यो ते सुणो भावे रे ॥ १८ ॥ सां० ॥ अभयदान देउं जीवने, एवां हुआं परिणाम रे ॥ अभयदान दीधुं घणुं, जन्म थयो अम ताम रे ॥१९॥ सां० ॥ दोहदपरिमाणे ठवे, नाम हमारुं तात रे ॥ हुं सुत अभयरुचि ठव्यो, बीजी अभयमति जात रे ॥२०॥ सां० ॥ हवे नरपति मन चिंतवे, पुत्र ठवुं युवराज रे ॥ पुत्रीनो वली विवाह करुं, ए दोय उत्सव काज रे ॥ २१ ॥ सां० ॥इण अवसरे नृप नीकल्यो, आहेडे पुर बहार रे ॥ पोहतो विशाला उद्यानमां, साथे निज परिवार रे ॥ २२ ॥सां०॥ वायु कुसुम सुरभी तिहां, जाणी जोयुं उद्यान रे ॥ तिलकवृक्षने ढूकडा, दीठा मुनि गतध्यान रे ॥ २३ ॥ सां० ॥ सुदत्त नामे मुनिवरु, देखी कोप्यो भूप रे ॥ पारधीमां अशुकन थयां, पडीउं चिंताकूप रे ॥ २४ ॥ सां० ॥ करी उपद्रव एहने हवे, मानुं शकुन निदान रे ॥ बूंबूंकार करी मूकीआ, मुनि उपरे महा श्वान रे ॥ २५ ॥ सां० ॥ वेगे जालिम जम समा, आव्या मुनिवर पास रे ॥ जाज्वल्यमान अग्नि परे, मुनिवर देह प्रकाश रे ॥ २६ ॥ सां० ॥ तप तेज ते न शक्या सही, उषधिगंध जिम नाग रे ॥ निर्विष तिम निःप्रभा थया, तेह शुनक धरे राग रे ॥२७॥ सां० ॥ तपप्रभावे प्रदक्षिणा, देइ श्वाननुं वृंद रे ॥ मस्तक धरतीए खोसीने, प्रणमे तेह मुणींद रे ॥ २८ ॥ सां० ॥ श्री समरादित्यरासमां, चोथे खंडे ढाल रे ॥ एकवीश-

मी पदमे कही, सुणतां मंगलमाल रे ॥ २ए ॥ सां० ॥ सर्व गाथा ॥ ६६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ देखी अचरिज दूरथी, उपन्युं चित्तमां एम; श्वान पुरुष ए समजणा, नहीं नर श्वान हुं नेम ॥ १ ॥ तप चरणे मुनि ततपरा, अकुशल चिंत्युं आज; इण समे पुरीथी आवीउं, केइ जन वंदन काज ॥ २ ॥ जिन धर्मे नावित जिके, अरहदत्त इण नाम; शेठपुत्र सोहामणो, आव्यो वंदन आम ॥ ३ ॥ मेदिनीपतिनो मित्र ते, दीठो नृप अवदात; मुनि उपसर्ग ते मोटिको, परलोकनो करे पात ॥ ४ ॥ प्रणमी नूप नणी कहे, कस्युं एह शुं काम; कहे नरपति नर कूतस्या, सरिखुं कीधुं स्याम ॥ ५ ॥ अरहदत्त कहे इणी परे, पुरुषसिंह परधान; अश्वथी हेठा उतरो, वंदो ए नगवान ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ हाररो हीरो म्हारो साहिबो ॥ ए देशी ॥

॥ देश कलिंगनो अधिपति ॥ साहिबा ॥ मारा अमरदत्त राजान हो ॥ पुत्र सुदत्त नामे तेहना ॥ सा० ॥ नरपति निर्मलवान हो ॥ १ ॥ संवेग रस नीनो मारो, समताशुं लीनो मारो, मुनिमां नगीनो मारो साहिबो ॥ साहिबा मारा ॥ वंदो मुनिवर पाय हो ॥ ए आंकणी ॥ प्रथम जोबन मांहि वरतता ॥ सा० ॥ एक दिन आव्यो तलार हो ॥ चोर साथे एक लावीउं ॥ सा० ॥ विनवे नृपने तिवार हो ॥ २ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ परघर पेसीने इणे ॥ सा० ॥ लीधुं द्रव्य अपार हो ॥ मास्यो महर्द्धिकने वली ॥ सा० ॥ ग्रहीउं निसरती वार हो ॥ ३ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ हवे जिम कहो तिम कीजीये ॥ सा० ॥ सांनली ते नरराय हो ॥ धर्मशास्त्र जाणनारने ॥ सा० ॥ तेमी सुणावे प्रकार हो ॥ ४ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ स्यो दंड एहने दीजीये ॥ सा० ॥ तव नर बोल्या तेह हो ॥ घात कस्यो चोरी करी ॥ सा० ॥ कीधुं कर्म अछेह हो ॥ ५ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ त्रिक चोक चाचरे फेरवो ॥ सा० ॥ सहु जनने संनलावी हो ॥ नेत्र उपाडो एहनां ॥ सा० ॥ कान ने नाक कपावी हो ॥ ६ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ हाथ ने पग वली छेदीये ॥ सा० ॥ इणी परे जीवनो नाश हो ॥ करवो एम रुषिवयण छे ॥ सा० ॥ सांनली वयणविन्यास हो ॥ ७ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥

चिंतवे अहो अहो नृपकुले ॥ सा० ॥ करवां एहवां पाप हो ॥ तिणे ए राज्य सुखे सह्युं ॥ सा० ॥ जेहथी बहु संताप हो ॥ ८ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ आणंद नाम नाणेजने ॥ सा० ॥ सोंपी राज्यनो नार हो ॥ सुधर्म गुरु पासे थया ॥ सा० ॥ गेह तजी अणगार हो ॥ ए ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ मुनिवंदन करी निस्तरो ॥ सा० ॥ सांजली श्रावक वाणी हो ॥ मुनि वंद्या जव तिणे समे ॥ सा० ॥ थयुं मुनि पूरण ठाण हो ॥ १० ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ धर्मलान्न देइ नाखीउं ॥ सा० ॥ बेस तुं निरवद्य ठाण हो ॥ पश्चात्ताप नृप उपन्यो ॥ सा० ॥ जाणी अकज्ज अप्पाण हो ॥ ११ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ राय बेसी मन चिंतवे ॥ सा ० ॥ में कस्यो मुनिवर घात हो ॥ प्रायश्चित्त मुजने नहीं ॥ सा० ॥ विण निज मस्तक पात हो ॥ १२ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ आत्म अकार्य कलंकथी ॥ सा० ॥ दुःखित एक मुहूर्त्त हो ॥ धारी न शकुं तिणे हवे ॥ सा० ॥ निपजावुं एह जुत्त हो ॥ १३ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ इण समे मुनिने उपन्युं ॥ सा० ॥ मणपज्जव वरनाण हो ॥ जाणी आशय नूपनो ॥ सा० ॥ मुनिवर कहे एम वाणी हो ॥ १४ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ ए तुज प्रायश्चित नहीं ॥ ॥ सा० ॥ जे तें कल्पना कीध हो ॥ आतमघात पण वारीउं ॥ सा० ॥ ते पण समय प्रसिद्ध हो ॥ १५ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ यतः ॥ " नाविय जिणवयणाणं, ममत्तरहियाण नत्थि हु विसेसो ॥ अप्पाणंमि परंमिय, तो वज्जे पीमुन्नउवी ॥ १ ॥" कलंक दुःखित निज आतमा ॥ सा० ॥ जे चित्त चिंतवे तास हो ॥ जैनक्रिया जले धोयतां ॥ सा० ॥ निर्मल थाये खास हो ॥ १६ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ नव अनुबंध वधे घणो ॥ सा० ॥ करतां आतमघात हो ॥ नव कोमि पाम्यो नहीं ॥ सा० ॥ जिनवरवयण विख्यात हो ॥ १७ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ तिणे जिनआण अंगीकरो ॥ सा० ॥ सांजली चिंतवे राय हो ॥ अहो मन वात जाणे मुनि ॥ सा० ॥ मुज मन अचरिज थाय हो ॥ १८ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ प्रायश्चित मुज पापनुं ॥ सा० ॥ निश्चय लहेशुं ए पास हो ॥ आणंद जल नरी नयणमां ॥ सा० ॥ चरणे पडे नृप तास हो ॥ १९ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ प्रायश्चित्त प्रनु नाखीये ॥ सा० ॥ मुज कहे सुण महाराय हो ॥ एक मिथ्यात्व अज्ञान जे ॥ सा० ॥ तास अनाव जो थाय हो ॥ २० ॥ सं० ॥ स० ॥

॥ मु० ॥ चिंतववुं विपरीत जे ॥ सा० ॥ ते मिथ्या परिणाम हो ॥ तें पण विपरीत चिंतव्युं ॥ सा ० ॥ मुनि अपशकुननुं नाम हो ॥ २१ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ करीअ कदर्थना वारीये ॥ सा० ॥ ए अपशकुन निदान हो ॥ तुज मन इणी परे उपजे ॥ सा० ॥ नवि करे ए कदि स्नान हो ॥ २२ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ तुंरु मुंरु मुंमित वली ॥ सा० ॥ जिखथी जीवे जेह हो ॥ वली पाखंरु विरुद्ध ए ॥ सा० ॥ पावन न करे तेह हो ॥ २३ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ मध्यस्थ भाव करी सुणो ॥ सा० ॥ उत्तर एह रसाल हो ॥ चोथे खंडे बावीशमी ॥ सा० ॥ पद्मविजय कही ढाल हो ॥ २४ ॥ सं० ॥ स० ॥ मु० ॥ सर्व गाथा ॥ ६८० ॥

॥ दोहा ॥

॥ पलक एक होय पवित्रता, मनमां होय अभिमान; करे प्रार्थना कामिनी, शुचि हुं एहवी शान ॥ १ ॥ जीवविराधना जल तणा, नहीं कोइ धर्म स्नान; सद्गति जो स्नाने होये, मत्स्य देरुक बहुमान ॥ २ ॥ यज्ञदीक्षाए जोषथी, विप्रे पण बह रीति; अस्नानव्रत भलुं आदर्युं, नवि जाणे ए नीति ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ सुणी तुज स्नाननी वातज कहुं, पांच शौच पुराणमां लहुं ॥ सत्य शौच तप शौचज वली, त्रीजुं इंद्रियनिग्रह मली ॥ १ ॥ चोथुं सर्व जीवनी दया, जलनुं शौच पांचमुं कही गया ॥ वली आरंभे वरते जेह, मैथुन सेवे रहेतो गेह ॥ २ ॥ शौचपणुं ते ब्राह्मण भणी, न कह्युं युधिष्ठिर में पाप गणी ॥ द्यो माटीना भार हजार, शत कुंभा वली लीजे वारि ॥ ३ ॥ तीरथ शतगमे करे सनान, पण जो दुष्टाचार निदान ॥ तेह पवित्र ब्राह्मण नहीं कदा, पापप्रमादे वरते सदा ॥ ४ ॥ जिम मदिरानुं भाजन होय, सहसवार जो धोवे तोय ॥ पवित्र न थाये तिण परि जाणी, दुष्ट अंतरगत चित्तनुं न्हाण ॥ ५ ॥ आत्म नदी संजम जल भरी, सत्य प्रवाह शील तट करी ॥ दया नदी पांरुव करो स्नान, जलथी शुद्ध न आत्म निदान ॥ ६ ॥ इत्यादिक शिव शास्त्रे घणा, भाख्या भेद ते स्नानज तणा ॥ सर्व शास्त्रमां प्राणीदया, न्हातां न रहे तेहनी

मया ॥ ७ ॥ वली दातणनो कह्यो विचार, श्राद्ध तथा उपवास मझार ॥ दंत काष्ठ संजोग निवारी, संजोगे सात कुल संहार ॥ ८ ॥ महाभारतमां वात ए कही, वली मार्कंडपुराणे लही ॥ संक्रांतिदिन पडवे प्रतिपदा, नौमि वारशि वली वरजी सदा ॥ ९ ॥ ते कारण दातणनो दोष, म करो करीये मन संतोष ॥ वली अखंडव्रत नियमना धार, विषय कषाय जींत्या अणगार ॥ १० ॥ सझाय ध्यानमां राता नित्य, एहवा मुनिवर नित्य पवित्त ॥ वली शिर तुंड मुंडन जे कह्युं, प्रथम व्रत राखणने धर्युं ॥ ११ ॥ पाखंड पण ए मंगल करे, जो चित्तमां मुनि मंगल धरे ॥ सहुने शास्त्रे भिक्षा कही, मंगल जो पाले व्रत वही ॥ १२ ॥ अन्यलिंगथी भ्रष्ट जे थया, जैनलिंगे जे मोक्षे गया ॥ जैनलिंगथी भ्रष्ट जो थाय, तो तस वज्रलेप कहेवाय ॥ १३ ॥ श्वेतांवर केहवाशे वेष, किम अवतार करे सुविशेष ॥ कहो महादेव मने ए तुमे, जिम निःसंदेह जाणुं अमे ॥ १४ ॥ दंड कंवल ग्रहे शुद्ध आहार, अजारोम प्रमार्जन धार ॥ तुंविफल भाजन होय करे, भिक्षाभोजन कोप न धरे ॥१५॥ श्वेत वस्त्र राखे करे दया, मुक्ति जैनधर्ममां सया ॥ पापनिकंदनने अवतार, जुग जुग कीधा में अणगार ॥ १६ ॥ एह प्रभासपुराणे कथा, सांभली वोलो म मुखथी वृथा ॥ सुरने पण ए श्रमणनुं रूप, मंगल रूप कह्यां सुण भूप ॥ १७ ॥ यतः ॥ प्रभासपुराणे ॥ "अन्यलिंगपरिभ्रष्टो, जैनलिंगेन सिध्ध्यति ॥ जैनलिंगपरिभ्रष्टो, वज्रलेपो भविष्यति ॥ १ ॥ श्वेतांवराः कीदृशास्ते, (कीदृशाः किमाकाराः) कर्म्म कुर्वंति कीदृशं ॥ अवतारः कथं तेषां, महादेव निगद्यतां ॥ २ ॥ दंडकंवलयुक्तं, अजारोमप्रमार्जनं ॥ गृह्णाति शुद्धमाहारं, शास्त्रं दृष्ट्वा चरंति च ॥ ३ ॥ तुंबिफलकरा भिक्षा, भोजनं श्वेतवाससः ॥ न कुर्वंति कदा कोपं, दयां कुर्वंति जंतुषु ॥ ४ ॥ मुक्तिस्तु जैनधर्मेण, पापनिकंदनाय च ॥ अवतारः कृतो तेषां, मया देवि युगे युगे ॥ ५ ॥ " महाभारतमां भाख्युं एम, जस कुल जति न थाये प्रेम ॥ अवगतीआ तस पूर्वज थाय, ते नर मोक्षे किमे न जाय ॥ १८ ॥ शिवशासनमां जैन प्रमाण, केतां भाखुं तास वखाण ॥ सांभली नृपनुं गयुं मिथ्यात, कहे तुम ज्ञान अहो साक्षात् ॥ १९ ॥ इम करतो मुनि चरणे नमे, गुरुजी कोप न करशो तुमे ॥ में अज्ञानपणे

कर्खुं कर्म, ते खमजो प्रज्ञु तुमचो धर्म ॥ २० ॥ मुनि कहे मुनि समता परधान, उठ म कर संज्रम कोइ ठाण ॥ सर्व जीवनुं खमीये अमे, तिणे अम कोप न चित्तमां गमे ॥ २१ ॥ आक्रोश तर्जना घातना करे, धर्मभ्रंश वली हृदये धरे ॥ अग्निम अग्रिम विरह ते जाव, लाज्ञ ते होये शुद्ध स्वज्ञाव ॥ २२ ॥ वली मुनि ज्ञावे कर्मविवाग, ज्ञूपति हरख्यो धर्म ते राग ॥ एहना ज्ञानथी ठानुं नहीं, पूढुं तातने आर्यिका कही ॥ २३ ॥ इम चिंतीने पूछ्युं जदा, मुनिवरे ज्ञाख्युं सघलुं तदा ॥ पीठकुक्कुटवध मांमी करी, जयावली सुत ने दीकरी ॥ २४ ॥ तिहां लगे सांज्ञली राय विचार, चिंतवे अहो संसार अपार ॥ अहो ज्ञवनाटिक किणी परे लहे, ज्ञानी गुरु विण कहो कुण कहे ॥ २५ ॥ एम चोथे खंडे ए कही, ढाल त्रेवीशमी पद्मे सही ॥ समरादित्य नरपतिनो रास, सांज्ञलो आगल वातविलास ॥ ॥२६ ॥ सर्व गाथा ॥ ७१ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ अहो संसार असारता, अबला अथिर सनेह; अहो गुरुता मोहनी, अकज्जविवाग अछेह ॥ १ ॥ कुक्कुटपीठनो वध कर्यो, देवता रायनी, मं तो दीधुं दान; तेह विपाक एम तातने, परिणम्यो काढे प्राण ॥ २ ॥ मं तो जीव मार्या घणा, आले धरी अन्नाण; नरक विना मुजने नहीं, होशे हीणुं ठाण ॥ ३ ॥ पूढुं अथवा मुनि प्रत्ये, मुनि लही मननी वात; कहे नृपने चिंता किसी, वली सांज्ञल अवदात ॥ ४ ॥ जैन धर्म जो पमिवजे, पापनो पश्चात्ताप; त्रिविधे आरंज्ञने तजी, आदरे चारित्र आप ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ फतमलनी देशी ॥

॥ नरपति ॥ चारित्र लेइ आप, जीव सवे मैत्री करे ॥ न० ॥ राखी मध्यस्थ ज्ञाव, वैराग्यज्ञावना आदरे ॥ १ ॥ पाली निरतिचार, पूर्व डुःकृत खेपवे ॥ न० ॥ कारण विण नव कर्म, अशुज्ञ न बांधे तेहवे ॥ २ ॥ न० ॥ क्षय करी कर्मनी जाल, पुण्यपरंपरा साधतो ॥ न० ॥ आराधक थइ तेह, शुज्ञ गुणठाणे वाधतो ॥ ३ ॥ न० ॥ श्रेणि क्षपक चढी जीव, घातीकरमनो क्षय करी ॥ न० ॥ पामी केवलज्ञान, शाश्वत शिवलछी वरी ॥ ४ ॥ न० ॥ जिहां नहीं रोग ने शोग, जन्म जरा मरवुं नहीं ॥

न० ॥ अव्याबाध अरूप, अशरीरी पदवी लही ॥ ५ ॥ न० ॥ बोल्यो ते भूपाल, तात आर्यिका एणी परे ॥ न० ॥ पाम्या कर्मविपाक, एहवे अल्प डुःकृत करे ॥ ६ ॥ गणपति ॥ में कर्यां कर्म अघोर, शी गति होशे माहरी ॥ ग० ॥ जोगव्या विण किम जाय, एहमां कुण तुज वाहरी ॥ ७ ॥ ग० ॥ सद्गति पामुं केम, तव गुरु कहे सुणय भूपति ॥ न० ॥ एक चरण परिणाम, काढे कर्मनी संतति ॥ ८ ॥ न० ॥ पातिक विष परिणाम, अमृत सम चारित्र कह्युं ॥ न० ॥ कर्म गिरिपविरूप, चिंतामणि डुर्विध लह्युं ॥ ए ॥ न० ॥ शिवसुख फल सुररूख, चरण परिणाम कह्यो सही ॥ ॥ न० ॥ विषलव खाये कोय, तास उपाय करे नहीं ॥ १० ॥ न० ॥ पामे आपद् तेह, कृत्याकृत्य मुंजी रहे ॥ न० ॥ नर सुख सघलां छांमी, जीवित क्षय तत्क्षण लहे ॥ ११ ॥ न० ॥ तिम ए जीव प्रमाद, वशथी पापकरम करी ॥ न० ॥ नवि करे तस प्रतिकार, जन्म मरण करे भव फरी ॥ १२ ॥ न० ॥ जो करें तास उपाय, अमृत सम शक्ति करी ॥ न० ॥ कालकूट विष होय, तोपण तस लीये संहरी ॥ १३ ॥ न० ॥ विषलवनो श्यो भार, तिम भवभाव अनादिमां ॥ न० ॥ सेवी पाप अघोर, प्रतिपक्ष सेवे आह्लादमां ॥ १४ ॥ न० ॥ बहुभव संचित पाप, क्षय कस्य चारित्र आदरी ॥ न० ॥ एक भवनो शो भार, गुरुवच सुणी हरखे करी ॥ १५ ॥ न० ॥ पूछे चरण परिणाम, शुं कहीये तव गुरु कहे ॥ न० ॥ सम्यक् ज्ञानथी तीव्र, रुचिथी पापनिवृत्ति लहे ॥ १६ ॥ ग० ॥ तुम दरिसणे थयो धन्य, आज महानिधि में लह्यो ॥ ग० ॥ आण करुं तुम्ह एह, जो तुम्हे श्रवण योग्य कह्यो ॥ १७ ॥ न० ॥ भृत्यने कहे नरनाथ, जइ कहो मंत्री प्रमुख भणी ॥ न० ॥ अभयरुचि ठवो राज्य, आण करो ए अम तणी ॥ १८ ॥ न० ॥ मत करजो मुज खेद, जैननी दीक्षा हुं वरुं ॥ न० ॥ अंगीकरी ते भृत्य, जइ संभलाव्युं तिणे खरुं ॥ १ए ॥ न० ॥ सांभली हुं पण तेह, अभयमति साथे ग्रही ॥ न० ॥ अंतेउर सविषाद, पहोता नृप पासे वही ॥ २० ॥ न० ॥ दीठो मुनिने पास, संवेगरस भावितमति ॥ न० ॥ बेठो धरती हेठ, छत्र चामर छंड्यां जति ॥ २१ ॥ न० ॥ होय न होय ए राज, जय जय शब्दथी प्रणमती ॥ न० ॥ सिंहपंजर गत रीति, किम बेठा करे विनति ॥ २२ ॥ न० ॥ गतदाढा

जिम सर्प्प, राज्यभ्रष्ट नरनी परे ॥ न० ॥ बेठा शोक मझार, तव नृपति एम उच्चरे ॥ २३ ॥ न० ॥ मुनि भाख्यो संबंध, वात कही ते सांभली ॥ न० ॥ इहापोह थयो ताम, अमची मति बहु खलभली ॥ २४ ॥ न० ॥ जातिसमरण ज्ञान, उपन्युं अमं बिहुने तदा ॥ न० ॥ मूर्छागत थयां दोय, अमे धरती ढलीआं यदा ॥ २५ ॥ न० ॥ अंतेउर परिवार, तेह देखीने रुदन करे ॥ न० ॥ ए वली बीजुं दुःख, मानिनी नयण आंसु झरे ॥ २६ ॥ न० ॥ मूर्छा लही अम माय, अनुक्रमे चेतन पामीआं ॥ न० ॥ मात आश्वासना कीध, रायने चरणे नामीआं ॥ २७ ॥ न० ॥ कहे संसार असार, देखी अम मन उभग्युं ॥ न० ॥ श्रमणपणुं तुम साखी, लीजीये एम अम्हे उलग्युं ॥ २८ ॥ न० ॥ राय कहे जिम सुख, एहमां प्रतिबंध मत करो ॥ न० ॥ भाणेजने दीउं राज्य, विजयधर्म अभिधा धरो ॥ २९ ॥ न० ॥ जिनवर चैत्य मझार, अठाइमहोत्सव करी ॥ न० ॥ लेइ अमने साथ, वली परधान अंतेउरी ॥ ३० ॥ न० ॥ लीये दीक्षा गुरु पास, चोथे खंडे मन धरी ॥ न० ॥ चोवीशमी वर ढाल, पद्मविजय कही सुख करी ॥ ३१ ॥ सर्व गाथा ॥ ७५५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ में कह्युं गुरुने पाय नमी, नयणावलीनें नाथ; संभलावो शुरू देशना पार लहे भवपाथ ॥ १ ॥ योग्य नहीं जिनधर्मने, कीधुं घणुं अकाज; त्रीजी नरगे तत्क्षणे, जाशे कहे गुरुराज ॥ २ ॥ ऋषि अनुसय तव बहु करे, कहे गुरु मत करो एम; चारित्र तुमे चोखुं करो, मान्युं गुरुवच प्रेम ॥ ३ ॥ अनुक्रमे चरण आराधीने, काल करी तत्काल; उपन्या देवलोक आठमे, सुख भोगवे विशाल ॥ ४ ॥

॥ ढाल पचीशमी ॥

॥ एकवीशानी देशी ॥

॥ ढाल ॥ कोढल देशे रे, साकेत नयरीए नरपति ॥ विनयंधर रे, तेहनी राणी लछीमति ॥ तेहनो सुत रे, नाम जशोधर हुं थयो ॥ पाडलीपुरे रे, जीव अभयमति आवीयो ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ आवीउ ईशानसेन नृपनी, राणी विजया नाम ए ॥ विनयमती तस नाम थाप्युं, कला शीख्यां ताम ए ॥ स्वयंवरा ते आवी वरवा, बहु आडंबर थकी ॥ नयर बाहिर

आवास आप्या, में पण सांजली ते वकी ॥ २ ॥ ढाल ॥ मन हरख्यो रे, ताते लगन जोवारूीउं ॥ अनुकरमे रे, वरघोडे मुऊ चारूीउं ॥ वाजंते रे, बहुविध तूर संगल तणां ॥ नाचंते रे, पात्र पगे पगे अति घणां ॥ ३ ॥ त्रु० ॥ अति घणां मंगल विरुद वोले, जाट चारण लोक ए ॥ माता प्रमुख सवि नारी गावे, धवल मंगल थोक ए ॥ आमंबर बहु करी चाल्यो, राजवृंदे परिवस्यो ॥ धवल गजशिर उपरे हुं, मस्तक वली बत्रज धस्यो ॥४॥ ढाल ॥ नरनारीए रे, प्रासादतल रह्यां देखीये ॥ अनुकरमे रे, राजमार्गमां विशेखीये ॥ इण अवसरे रे, दाहिण लोचन फुरकीयुं ॥ हरषे करी रे, चित्तमां में आलोकीयुं ॥ ५ ॥ त्रु० ॥ आलोचीयुं कांय हरख थाशे, एहथी पण अजिनवो ॥ इण अवसर दीठा फिरता, गोचरीए साहवो ॥ कल्याण शेठने जवन आंगण, पूर्व अज्यासे करी ॥ उपन्युं मुनिराज देखी, जातिसमरण चित्त धरी ॥ ६ ॥ ढाल ॥ मूर्डावशे रे, पमतां गजशिरथी जल्यो ॥ नामे रामजड रे, पुरुषे पासे वेठां कल्यो ॥ तूरादिक रे, वंध कस्यां तिणे अवसरे ॥ खेद लही नृप रे, आवी चिंते इणी परे ॥ ७ ॥ त्रु० ॥ एणी परे पूगफलादि मदथी, होंशे तिणे सिंचावीउं ॥ चंदन पाणी प्रमुखथी तव, तास चेतन आवीउं ॥ तात पूछे पुत्रशुं ए, कहुं में तव एमं ए ॥ संसार विलसित तात ए छे, तात कहे ते केम ए ॥ ८ ॥ ढाल ॥ एह वचननो रे, अवसर नहीं तव में कहुं ॥ वात मोहोटी रे, संक्षेपे किम जाये कहुं ॥ सहु तेमो रे, वेसो एकांते सजा करी ॥ सहु तेड्या रे, वेठा सुणवा चित्त धरी ॥ ए ॥ त्रु० ॥ चित्त धरी पूछे वात शुं छे, तिणे समे में जाखीउं ॥ संसार निर्गुण मोहमुंझित, प्राणी एम जिन दाखीउं ॥ चित्त चिंतवे आलोच अवला, प्रवर्त्ते अहिते सदा ॥ अनागत नवि काल पेखे, वर्त्तमान जुवे तदा ॥ १० ॥ ढाल ॥ साधारण रे, जन्म जरा रोग शोगमा ॥ एक मरणने रे, वली वाहलाना विजोगडा ॥ प्रमादनी रे, चेष्टा थोमी वहु दुःख दीये ॥ सुर असुरने रे, नर तिरिने जाणो हिये ॥ ११ ॥ त्रु० ॥ पीठमय कुक्कुट हण्यो तेणे, जुउं परिणम्यो केटलो ॥ एम कही सुरेंद्रदत्तना जवथी, जाख्यो जोगव्यो जेटलो ॥ १२ ॥ ढाल ॥ सहु सांजली रे, कहे अकारय कर्मनां ॥ लहे संवेग रे, सुणीअ विपाक विहामणा ॥ मात तातने रे,

परिजन सहु वैरागीआं ॥ देखी जाखुं रे, सांजलो चित्त लय लागीआं ॥ जवथी मुझ रे, चित्त विरक्त थयुं घणुं ॥ आपो आणा रे, सफल करुं नरजवपणुं ॥ १३ ॥ त्रु० ॥ मोहवश तव तात बोले, पुत्र तुझ कुण ना कहे ॥ ताहरो जव सफल छे तिणे, एह कन्या किमज रहे ॥ परणीने ए प्रजा पालो, पुण्य बांधो इणी परे ॥ में कह्युं धुरथी तात तुमने, पाणिग्रहण ते कोण करे ॥ १४ ॥ ढाल ॥ तात जाखे रे, परणवामां शो दोष छे ॥ में जाख्युं रे, पाणिग्रहण सुखशोष छे ॥ औषध विनु रे, व्याधिमोहनुं गेह छे ॥ शुद्ध ध्याननो रे, वयरी नवि धृति रेह छे ॥ १५ ॥ त्रु० ॥ विक्षेपनो ए मित्र जाख्यो, शांतिनो प्रतिपक्ष ए ॥ मदजवन दुःख उदय कारण, पाप आवास लक्ष ए ॥ नरजव साधनने होय समरथ, तोहि पण सीदाय ए ॥ सिंह पंजरमां पड्यो तिम, मोक्ष किमे न सधाय ए ॥ १६ ॥ ॥ ढाल ॥ रयण कंचन रे, थाल मांहि विष्टा जरी ॥ कुण नाखे रे, तिम ए नरजव लही करी ॥ कुण सेवे रे, विषय वचन जिननां लही ॥ तिणे दीजे रे, आणा तातजी मुझ वही ॥ १७ ॥ त्रु० ॥ नयनमां तव नीर आणी, कहे तात अम नेह ए ॥ पीछे अतिशय तेह कारण, रहो अमचे गेह ए ॥ में कह्युं स्नेह न कीजीये एह, निमित्त मुख्य संसार ए ॥ दीप परे क्षण उपजे विणसे, तास क्षये जवपार ए ॥ १८ ॥ ढाल ॥ बोले जूपति रे, ईशानसेन नृपनी धूआ ॥ खेद करशे रे, तव में कह्युं आणी मया ॥ कहेवरावो रे, तेहने एह विचार ए ॥ जो बूझे रे, सांजली मुझ अधिकार ए ॥ १९॥ त्रु० ॥ अधिकार सांजली कहे राजा, एह वात कही खरी ॥ पचवीशमी ए ढाल जाखी, खंम चोथे सुखकरी ॥ विबुध उत्तमविजय केरो, शिष्य पद्मविजय कहे ॥ रास समरादित्य केरो, सुणतां जयलछी लहे ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ७७९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुरोहितने नरपति कहे, शंखवर्द्धन सुण वात; जिम निपनी तिम जइ तुमे, संजलावो सुखशात ॥ १ ॥ कुमरी पासे जइ करी, आव्यो जूपतिपाय; कहे सिद्धा ए कुमरना, मनोरथ सुणो महाराय ॥ २ ॥ जइ जाख्युं में जतनथी, कांयक कहे नृप काम; आसनथी ते उतरी, अंजलि करी कहे आम ॥ ३ ॥ अवनीपति आणा करुं, में जाख्युं तव एम; इहां

कुमरने आवतां, राजमारगमां प्रेम ॥ ४ ॥ साधुदर्शनथी सखर, जातिसमरण जाम; उपनाथी नव नव अवल, ततक्षीण नाख्या ताम ॥ ५ ॥ संजलाव्या सरवे असे, जशोधरा मुख जाम; नयणावली सुतनी वधू, इण अवसर थयुं आम ॥ ६ ॥

॥ ढाल ठवीशमी ॥

॥ सांजरीआ गुण गावा मुऊने हीरना रे ॥ ए देशी ॥

॥ एम सांजलतां मूर्छा पामी नृपधूआ रे, कांय हुउं हुउं आकुल सवि परिवार रे ॥ चंदन सिंचे चेतन पामी तव पवे रे, कांय पूछ्यो पूछ्यो में तस ए अधिकार रे ॥ १ ॥ सांजलजो अहो कर्मविपाक विचित्रता रे ॥ कांय नाख्युं इणी परे राजकुमरीए ताम रे ॥ में नाख्युं किम तेह विचित्रता तव कहे रे, तेह जशोधरा माहरुं जाणजे नाम रे ॥ २ ॥ सां० ॥ जवमां जमतां कर्मनाटिक शुं नवि होये रे, तव में नाख्युं सांजलो कुमरी वात रे ॥ एह चरित्रे राजकुमर मन उजग्युं रे, कांय दीक्षा इछे जिनवर नाखी ख्यात रे ॥ ३ ॥ सां० ॥ राय कहे वरावे कहो हवे अमे करीये किशुं रे, तव सा बोली कहो जइने महाराय रे ॥ एह संसारस्वरूप देखी कहो कोणने रे, नवि वैराग्य करे जिणे शिवसुख थाय रे ॥ ४ ॥ सां० ॥ तिणे संसार तणा प्रतिबंध थकी सखुं रे, कीजे जे मन उपजे कुमरने जाव रे ॥ मुऊने आणा द्यो जिम हुं दीक्षा ग्रहुं रे, सुणी राजा संवेग लह्यो जवनाव रे ॥ ५ ॥ सां० ॥ कहे कुमरने पुत्र मात्र नहीं माहरो रे, धर्म पमाड्यो तिणे गुरु माहरो होय रे ॥ तिणे संसारमां रहेवुं सरीयुं माहरे रे, दीक्षा लेशुं अमे पण दंपती दोय रे ॥ ६ ॥ ॥ सां० ॥ में नाख्युं तव तातजी तुम एमज घटे रे, नवि कीजे कांय एह वाते प्रतिबंध रे ॥ तव तिहां देवराव्युं महा दान वली करे रे, सघले देहरे जिनपूजा संबंध रे ॥ ७ ॥ सां० ॥ क्षुल्लक ज्राता मुऊ जसवर्द्धन नामथी रे, तेहने थाप्यो राज्यनो नार विशेष रे ॥ माय पिता परधान लोक वली केइशुं रे, विनयवतीशुं लीधो साधुवेष रे ॥ ८ ॥ सां० ॥ इंद्रजूति आचारय पासे पुण्यथी रे, लीधो संजम सहुए शुज परिणाम रे ॥ ए निर्वेदकारण मुऊ चरित्र कह्युं सवे रे, सांजल रे तुं धन्नकुमर अजिराम रे ॥ ए ॥ सां० ॥ धन कहे रुडुं निर्वेदकारण दाखीउं रे,

जाखो मुजने करवाने जे योग्य रे ॥ गुरु कहे चरण सामग्री जगमां दो-
हिली रे, पामीने कोण हारे मूरख लोग रे ॥ १० ॥ सां० ॥ विस्तारे सुणी
डुर्लज वात चरित्रनी रे, हरख्यो हरख्यो धन्नकुमर कहे प्रेम रे ॥ लेजं
चारित्र गुरुजी तुम आणा थकी रे, माय तायने समजावुं जइ एम रे ॥
॥ ११ ॥ सां० ॥ गुरु कहे जिम सुख उपजे तिम कीजे तुमे रे, आव्यो मात
पिताने पासे धन्न रे ॥ परम संवेगे वात कही मुनिवर तणी रे, प्रतिबूज्या
माय ताय करे व्रत मन्न रे ॥ १२ ॥ सां० ॥ योग्य पुत्र ठे गेहजार सोंपुं
हवे रे, एम करी धनकुमरने जाखे नेह रे ॥ मणि मोती मुख सार ड्रव्य
तुमे आदरो रे, अमे प्रव्रज्या लेशुं शिवसुखगेह रे ॥ १३ ॥ सां० ॥ धन
कहे सारपणुं शुं दीठुं ड्रव्यमां रे, जन्म जरा ने मरण न राखे काय रे
॥ अर्थ मनोरथ पूरा पण न करी शकुं रे, अथवा पुएय गये पण संचित
जाय रे ॥ १४ ॥ सां० ॥ परलोके पण न होय सखाइ कोइने रे, तात
कहे तें ए तो जाख्युं साच रे ॥ धन कहे आणा आपो साथे व्रत ग्रहुं
रे, तात कहे ए साचुं पण सुण वाच रे ॥ १५ ॥ सां० ॥ यौवने इंड्रिय
दमवा कंदर्प डुर्दमो रे, धन कहे अविवेक ते यौवन जाण रे ॥ नहीं
तरुण ने घरढो जीव अनादिनो रे, गरढा पण बहु विषय पिपास वखाण
रे ॥ १६ ॥ सां० ॥ यतः ॥ "अगंगलितं पलितं मुंडं, दशनविहीनं जातं
तुंडं ॥ वृद्धो याति गृहीत्वा दंडं, तदपि न मुंचत्याशापिंडं ॥ १ ॥" पूर्व
ढाल ॥ निंदा न गणे न विचारे परमार्थने रे, ड्रव्यसंयोगे केश करे
वली श्याम रे ॥ पारद मर्दन सेवी अंग कठिन करे रे, हिंडे टेक थकी
वली राखी माम रे ॥ १७ ॥ सां० ॥ वृद्धजावथी बीहतो जनम कालांतरे
रे, दाखे पण नवि देखे आयु खीण रे ॥ केइ परलोकना अर्थी यौवन
वय उते रे, वीज चपल परे जीवित जाणे हीण रे ॥ १८ ॥ सां० ॥ धरी
विवेक असार विषय ढांमी करी रे, हरिण परे वली मरणथी बीहता
तेह रे ॥ चारित्रधर्म सेवे जे परलोक साधवा रे, यौवन वृद्ध तणो नहीं
हेतु एह रे ॥ १९ ॥ सां० ॥ इंड्रिय दमीया आतम दमीजं मूलथी रे,
तेहथी सुरनर सुख वली मोक्षनां सुख रे ॥ एम जाणी कोण इंड्रिय न
दमे मूरखो रे, अशुज संकल्प मूल ते अनंग ठे डुःख रे ॥ २० ॥ सां० ॥
जिनवयणे जावित संकल्प करे नहीं रे, समता धरतो रहे नित्य गुरुने

पाय रे ॥ निर्वेदी ज्ञावनथी कंदर्प शुं करे रे, सार किशुं ए पुजलनो समुदाय रे ॥ २१ ॥ सां० ॥ शब्दादिक शुज्ञ थइने अशुज्ञ होये वली रे, अशुज्ञ होय ते परिणमे शुज्ञ परिणाम रे ॥ ए जम आतम चेतनने संबंध किश्यो रे, डव्यांतर संजोगे सुखनुं न ठाम रे ॥ २२ ॥ सां० ॥ अन्य संजोगे आत्मिक सुख न होये कदा रे, तिणे मुज न गमे विषय प्रमादनो संग रे ॥ तातप्रज्ञावे विघ्न जशे सवि माहरां रे, मान्युं ताते कुमरवचन मनरंग रे ॥ २३ ॥ सां० ॥ करी अठाइ महोत्सव दीये दानने रे, मात पिताने बीजो परिजन संग रे ॥ तेह जशोधर गुरुने पासे आदरे रे, धनकुमार अधिक मन दीक्षारंग रे ॥ २४ ॥ सां० ॥ चोथे खंडे ढाल कही छवीशमी रे, श्रीगुरु उत्तमविजय पसाये एह रे ॥ पद्मविजये श्रीसमरादित्यना रासमां रे, सुणतां मंगलमाला श्रोतागेह रे ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ७१० ॥

॥ दोहा ॥

॥ धनकुमरे दीक्षा धरी, कीधो क्रियाकलाप; सूत्रअज्यास करी सवे, जपतो मौनथी जाप ॥ १ ॥ एक विहार अंगीकरे, ज्ञावना ज्ञावे सर्व; गामे एक निशगमे, नगरे पंच निगर्व ॥ २ ॥ कोसंबीपुरे अनुक्रमे, आव्या ते ऋषिराय; नंद ने हवे धनसिरी तणो, कहुं संबंधकथाय ॥ ३ ॥ सघले खोळ्या समुद्रमां, जड्या नहीं ते जाम; उलंघ्या अर्णव हवे, तरुणीवयणे ताम ॥ ४ ॥ कंचन ने वली कामिनी, देखी चूक्यो नंद; कोसंबी आवी करी, मन सुख धरी रह्यो मंद ॥ ५ ॥ समुद्रदत्त ते शेठीउं, नाम ठवे निज नंद; गोचरी फरतां नगरमां, मातंग जेम मुणिंद ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्यावीशमी ॥

॥ कंत तमाकु परिहरो ॥ ए देशी ॥

॥ फरता आव्या गोचरी, नंद तणे घरबार ॥ मेरे लाल ॥ धनसिरीए तव उलख्या, उपन्यो तस शोक अपार ॥ मे० ॥ १ ॥ नारीकुकर्म्म जोजो तुमे ॥ आंकणी ॥ दूधे सिंच्यो लींबडो, नवि मीठो थाय लगार ॥ मे० ॥ किम नवि एह मूउ हजी, कहे मुज अवतार धिःकार ॥ मे० ॥ ॥ २ ॥ ना० ॥ केम मुज नजरे ए चड्यो, हवे करीये एह उपाय ॥ मे० ॥ जिम जीवे नहीं मूलगो, एण अवसर ते ऋषिराय ॥ मे० ॥ ३ ॥ ना० ॥

जाचना समय अतिक्रम्यो, जाणीने वलीआ तेह ॥ मे० ॥ द्वेष लही धनसिरी घणुं, उलखी मुझ चिंते एह ॥ मे० ॥ ४ ॥ ना० ॥ शीघ्र गयो केम ए कहो, बोलावी दासी ताम ॥ मे० ॥ जइ जुउ किहां जइ ए रहे, होय तिम मुझने कहे ठाम ॥ मे० ॥ ५ ॥ ना० ॥ दासी आण अंगीकरी, चाली मुनिवरने लाग ॥ मे० ॥ मुनिवर आहार मल्यो नहीं, पण अवसरनो नहीं लाग ॥ मे० ॥ ६ ॥ ना० ॥ पुरदेवी उद्यानमां, पोहोता तव चोथो जाम ॥ मे० ॥ लागो तिणे विचर्या नहीं, काउस्सग्ग रह्या तिणे ठाम ॥ मे० ॥ ७ ॥ ना० ॥ जइ धणसिरीने ते कह्युं, धणसिरी कहे नंदने एम ॥ मे० ॥ में पुरदेवीने मानीयुं, तुम रोग हतो तव प्रेम ॥ मे० ॥ ८ ॥ ना० ॥ करी उपवास वदि आठमे, तुम्ह आयतने करुं वास ॥ मे० ॥ आठम गइ परमादथी, स्वप्ने तव प्रेरी खास ॥ मे० ॥ ९ ॥ ना० ॥ विहाणे तुमे जाता रह्या, तेणे जाखी न शकी वात ॥ मे० ॥ कीधो छे उपवास में, तिणे जाउं तिहां साक्षात् ॥ मे० ॥ १० ॥ ना० ॥ पूजापो आणी दीउ, नंदे पण आणी दीध ॥ मे० ॥ तव चाकर दुग साथी ले, दासी पण साथे लीध ॥ मे० ॥ ११ ॥ ना० ॥ तिहां जइ दीठा मुनिवरु, इण अवसर आव्यो एक ॥ मे० ॥ काष्ठ तणी जरी गाडली, कठीआरो धरत विवेक ॥ मे० ॥ ॥ १२ ॥ ना० ॥ जांगो अक्ष तिहां किणे, आथमवा लाग्यो सूर ॥ मे० ॥ कठीआरो मन चिंतवे, मुझने थयुं अतिहि असूर ॥ मे० ॥ १३ ॥ ना० ॥ काष्ठ ग्रहे नहीं को इहां, तिहां मूकी वृषज ते लीध ॥ मे० ॥ निज घर पहोतो वेगशुं, धनसिरी चिंते जलुं कीध ॥ मे० ॥ १४ ॥ ना० ॥ एहज काष्ठे बालशुं, चिंतवी गइ चंडिकापाय ॥ मे० ॥ पूजा करी चाकर जणी, जोजन आपे मन जाय ॥ मे० ॥ १५ ॥ ना० ॥ सूता सहुए अनुक्रमे, एकाकिणी नीकली नारी ॥ मे० ॥ मुनि पासे ते काष्ठनो, खडके तिहां अति संजार ॥ मे० ॥ १६ ॥ ना० ॥ ध्यानमां मुनिवर नवि लहे, अज्ञाने प्रजाली आग ॥ मे० ॥ ज्वाला फरसे मुनितनु, चिंते मुनिवर महाजाग ॥ मे० ॥ १७ ॥ ना० ॥ अनुकंपाए मुनिवरु, बलता काउस्सग्ग अडग्ग ॥ मे० ॥ अहो ए जीवने हुं थयो, कारण दुर्गतिने मग्ग ॥ मे० ॥ १८ ॥ ना० ॥ धन जे नर मुक्ते गया, न होय कर्मबंधनुं हेत ॥ मे० ॥ मुझ उद्देशी नरगमां, ए पोहोंचशे दुःखसंकेत ॥ मे० ॥ १९ ॥ ना० ॥ कारणे कारय नीपजे, एम

ज्ञाखे श्री जगनाथ ॥ मे० ॥ नवि शोचुं मुऊ जीवने, शोचुं ए जीव अनाथ ॥ मे० ॥ २० ॥ ना० ॥ बाहिर मति जिनवयणथी, पमीउं डुःखसायर एह ॥ मे० ॥ मोही क्लिष्ट प्राणी जणी, अथवा नहीं डुःख ए रेह ॥ मे० ॥ २१ ॥ ना० ॥ धिक् संसार असारने, एम ज्ञावतो शुज्ज परिणाम ॥ मे० ॥ पापिणीए मास्यो रुषि, एहने किहां सज्ञति ठाम ॥ मे० ॥ २२ ॥ ना० ॥ पन्नर सागर आउखे, उपन्या रुषि शुक्रविमान ॥ मे० ॥ सातमे देवलोके सही, सुख ज्ञोगवे ते असमान ॥ मे० ॥ २३ ॥ ना० ॥ चोथे खंडे ए कही, वर सत्यावीशमी ढाल ॥ मे० ॥ पद्मविजय सोहामणी, सुणतां होय मंगलमाल ॥ मे० ॥ २४ ॥ ना० ॥ सर्व गाथा ॥ ७४० ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंमिकादेहरे चपलथी, दासीए पेसतां दीठ; धनसिरीने पूछे धसी, स्वामीनी कहो विसिठ ॥ १ ॥ किहां जइ आव्यां ते कहो, मानिनी कहे मध्यरात; परदक्षिणा पूठे करी, ज्ञगवतीने ज्ञली ज्ञांति ॥ २ ॥ इण अवसर अवलोकीउं, अगनिनो उद्योत; शुं ए एम शोची करी, सूती शंक सहोत ॥ ३ ॥ विहाणे देवी पूजी हवे, चाली करी अति चूप; पंचत्व लह्यो पंथे रुषि, आलोक्यो ते अनूप ॥ ४ ॥ चाकरने चेटी कहे, अहो ए कुप अपराध; एह शुं जाणीये आपणे, सीज्यो केणी परे साध ॥ ५ ॥ चेटी मनमां चिंतवे, मोकली काले मुऊ; जोवा वली मध्यजामिनी, गइ तेहनुं ए गुऊ ॥ ६ ॥ अजुवालुं आलोकीयुं, तिण वेला ततकाल; अहो मुऊ एह अनर्थमां, कारण करी विकराल ॥ ७ ॥

॥ ढाल अठावीशमी ॥

॥ जगतूगुरु हीरजी रे ॥ ए देशी ॥

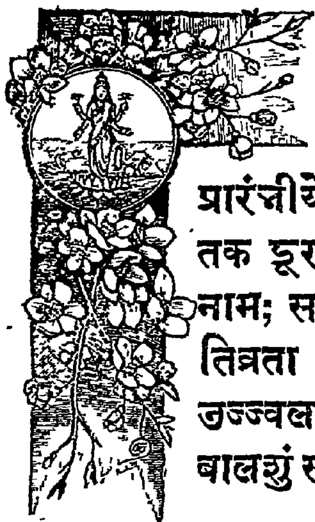
॥ गाडलानो धणी आवीउं रे, व्यतिकर दीठो तेह ॥ फरियादी गयो रायने रे, अहो मुऊ पाप अछेह ॥ १ ॥ रुषि किणे मारीउं रे ॥ मुऊ काष्ठथी बलीउं जेह ॥ माहरा धिग् जन्मने रे ॥ ए आंकणी ॥ मुऊ माठी गति होयशे रे, सुणी कोप्यो राजान ॥ हुकम कस्यो कोटवालने रे, रुषिघातक करो जाण ॥ २ ॥ रुषि० ॥ चंमिकादेहरे चालीउं रे, कोप धरी कोटवाल ॥ पूछे पूजारी प्रत्ये रे, रात्रि रह्युं कोण काल ॥ ३ ॥ ॥ रुषि० ॥ चोर लांठ कोइ नवि रह्यो रे, पूजारी कहे एम ॥ समुद्रदत्त-

नी गेहिनी रे, एक रही धरी नेम ॥ ४ ॥ ऋषि० ॥ कहे तलार शे हेतुए रे, रात्रि रही ए नारी ॥ पूजारी कहे नवि लहुं रे, तव चिंते ते तलार ॥ ५ ॥ ऋषि० ॥ आठम नौमी चौदशी अछे रे, वसवा केरो दिन्न ॥ तेहमां आज एके नहीं रे, वातथी थइ खण खण ॥ ६ ॥ ऋषि० ॥ मंगलवार हतो वली रे, पाछले पोहोरे वृष्टि ॥ योगनिपात मल्यो खरो रे, स्त्रीविण नहीं कोइ दुष्ट ॥ ७ ॥ ऋषि० ॥ जाउं एहने घर हवे रे, पामशुं सघली वात ॥ एम चिंती पोहोतो घरे रे, द्वारे चेटी आयात ॥ ८ ॥ ऋषि० ॥ पूछे सार्थपनी गेहिनी रे, घरमां छे के नांहि ॥ क्रोञना लही कहे काम शुं रे, कहे कोटवाल उछाह ॥ ए ॥ ऋषि० ॥ ईर्ष्या धरी क्रोधे करी रे, परअभिप्रायनो जाण ॥ कहे रे पापिणी विसर्युं रे, मुनिवृत्तांत अजाण ॥ १० ॥ ऋषि० ॥ निज कर्मे शंकी घणी रे, चेटी बोली ताम ॥ मुज शेठाणीए मोकली रे, जोवा मुनिवर ठाम ॥ ११ ॥ ऋषि० ॥ हुं बीजुं जाणुं नहीं रे, सुणी उपन्यो संदेह ॥ अहो गवेषणा केरडुं रे, कारण नहीं ए करेह ॥ १२ ॥ ऋषि० ॥ फरी ते पूछे सुंदरी रे, म करो भय मन मांहि ॥ मोकल्यां तुम्ह शे कारणे रे, ते भाखो तुमे आंहि ॥ १३ ॥ ऋषि० ॥ सा कहे भिक्षा लेअवा रे, काले त्रीजे जाम ॥ आव्या विण लीधे वल्या रे, तव मुज मोकली आम ॥ १४ ॥ ऋषि० ॥ जोइ आवीने में कह्युं रे, ऋषि रहेवानुं ठाम ॥ कार्य तो जाणुं नहीं रे, कहे कोटवाल ते ताम ॥ १५ ॥ ऋषि० ॥ तिहां जइने शुं कीधलुं रे, तव बोली सा नारी ॥ चंडिकानी पूजा करी रे, मुनि नमीआ न लगार ॥ १६ ॥ ऋषि० ॥ कोटवाल तव चिंतवे रे, पूजाने मिष एह ॥ परिजन वंची मारीउ रे, मुनिवर नहीं संदेह ॥ १७ ॥ ऋषि एणे मारीउ रे ॥ ए आंकणी ॥ बोलावी घरमां जइ रे, तव खोभाणी तेह ॥ भाव लखीने भाखीयो रे, वात सुणो मुज एह ॥ १८ ॥ ऋषि० ॥ ऋषिघातकने खोलवा रे, मुजने मोकल्यो राय ॥ सांभलुं तुम घर आवीउं रे, तिणे चालो नृपपाय ॥ १ए ॥ ऋषि० ॥ सांभलीने धरणी ढली रे, तव चिंते कोटवाल ॥ निश्चय कर्म्म एणे कर्युं रे, नहीं तो भय किम भाल ॥ २० ॥ ऋषि० ॥ नाठो नंद बाहिर थकी रे, वात सुणीने ते कान ॥ धनसिरी लाव्या नृप कन्हे रे, जोइ चिंते राजान ॥ २१ ॥ ऋषि० ॥ इण आकारे एहवुं रे, कर्म करे किम भाय ॥

शे कारण तुं तिहां गइ रे, पूछे एणी परे राय ॥२२॥ ऋषि० ॥ क्षोन लही बोली नहीं रे, तव शंका नृप थाय ॥ फरी पूछे केहनी धूआ रे, किहांथी आवी रहाय ॥२३॥ ऋषि० ॥ पूर्णचंद्रनी हुं धूआ रे, सुसम्म नयरथी आय ॥ समुद्रदत्तनी गेहिनी रे, तव तस शोध कराय ॥२४॥ ऋषि० ॥ न जड्यो नर्त्ता तेहनो रे, तव कीधो विश्राम ॥ नूप पासे न बोली शके रे, एहवो धरी मन नाम ॥२५॥ ऋषि० ॥ पूर्णचंद्र पासे मोकल्यो रे, लेखवाहक ततकाल ॥ एहने पूछावे तदा रे, एहज वात नूपाल ॥२६॥ ऋषि० ॥ लेखवाहक लेख लावीने रे, वांच नरपति एम ॥ धणसिरी नामे अम धूआ रे, अम कुलखंपण नेम ॥२७॥ ऋषि० ॥ राय विचारे एणीए रे, निश्चय कीधुं काम ॥ पापिणीनी अहो मूर्खता रे, अहो क्रूरहृदया वाम ॥२८॥ ऋषि० ॥ नारी अवध्य कही तिणे रे, दीधो देश-निकाल ॥ जातां सांऊसमय तदा रे, नूख तरश असराल ॥२ए॥ ऋषि० ॥ देवलमां सूती जइ रे, एहवे करड्यो नाग ॥ महा क्लेशे मरी ऊपनी रे, वालु-प्रना दुःख नाग ॥३०॥ ऋषि०॥ उग्र पाप तुरतज फले रे, एहमां नहीं संदेह ॥ सात सागर नारकपणे रे, दुःख नोगवे निज देह ॥३१॥ ऋषि० ॥ एणी परे चोथो नव कह्योरे, दंपतीनो अधिकार ॥ हवे जय विजय न्राता तणो रे, नाखुं सखर विचार ॥३२॥ श्रोताजन सांनलो रे ॥ ए आंकणी ॥ आषाढ वदि एकादशी रे, च्यालीशे मंमाण ॥ पूरो वीसल नगरमां रे, चोथो खंड प्रमाण ॥३३॥ श्रोता० ॥ अघावीश ढाले करी रे, समरादित्यने रास ॥ नाद्रवा वदि तेरश दिने रे, संपूरण सुविलास ॥३४॥ श्रो० ॥ विजयदेवसूरि पटधरु रे, श्रीविजयसिंह सूरीश ॥ सत्यविजय सोहामणा रे, सोनागी तस शिष्य ॥३५॥ श्रो० ॥ तास कपूरविजय कवि रे, खिमाविजय वर तास ॥ जिनविजय शिष्य तेहना रे, जेहने शास्त्रअन्यास ॥ ३६ ॥ श्रो० ॥ गीतारथ गिरुआ घणा रे, न-द्रक समतावंत ॥ उत्तमविजय सोहामणा रे, तेहनो शिष्य महंत ॥ ३७ ॥ श्रो० ॥ तस पदपद्म न्रमर समो रे, पद्मविजय इण नाम ॥ गाया एम हरषे करी रे, गुणी जनना गुणग्राम ॥ ३७ ॥ श्रो० ॥ पुण्य उपार्जन जे करी रे, तेहथी नविज-न लोक ॥ सकल दुःखनो क्षय करी रे, पाम्यो शिवफल रोक ॥ ३ए ॥ श्रो० ॥ सर्व गाथा॥७७६॥ इति श्री संविझपक्षीय पंडितप्रवर श्रीमदुत्तमविजयगणि-शिष्य पंडित श्री पद्मविजयगणिविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबं-धे धनकुमारधनश्रीदंपत्योः संगतयोश्चतुर्थों नरनवः समाप्तः॥ चतुर्थ खंडे सर्व गाथा ॥ ७७६ ॥ उक्त गाथा तथा काव्य अने सवैयो मलीने ॥ २७ ॥

॥ अथ ॥

॥ पंचमः खंडः प्रारभ्यते ॥



॥ दोहा ॥

॥ प्रगट प्रतापी पास जी, प्रणमुं प्रेमे पाय; समरी साची शारदा, करे जेह कविराय ॥ १ ॥ पंचम खंड प्रारंभीये, सुणो संघ समुदाय; सुणतां समता रस वधे, पातक दूर पलाय ॥ २ ॥ जंबुद्वीपनुं भरत जे, नयर काकंदी नाम; समुद्रदेश परे शोभती, तंतुशुं खांतिका ताम ॥ ३ ॥ पतिव्रता जनमन परे, परपुरुषे प्राकार; उलंगाये नहीं अधिक, उज्ज्वल घन आगार ॥ ४ ॥ द्वार तोरण अति दीपतां, सिंहबालशुं साच; गिरिवर केरी ज्युं गुफा, तरतो दीसे ताच ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ लाछल दे मात मल्हार ए देशी ॥

॥ सूरतेज नृप नाम, सूरतेजरिपु ठाम ॥ आज हो ॥ राणी रे लीलावती जाणी तेहनी रे ॥ १ ॥ पूरण करी सुर आय, धनसुर उपन्यो आय ॥ आ० ॥ तेहनी रे कुखे तव चंद्र स्वपन लह्युं रे ॥ २ ॥ संभलावे भरतार, तव ते करे उच्चार ॥ आ० ॥ सामंतमंडलमां शशि सम सुत होयशे रे ॥ ३ ॥ प्रसवसमय थयो जाम, शुभ जोगे सा ताम ॥ ॥ आ० ॥ प्रसव्यो रे तिणे पुत्र रत्न सम परगडो रे ॥ ४ ॥ निवृत्ति नामे नारी, खाये वधामणी सार ॥ आ० ॥ संतोषे तस दान देइने भूपति रे ॥ ५ ॥ एम करतां थयो मास, जयकुमार ते तास ॥ आ० ॥ थापे रे अभिधान अनुक्रमे वाधतो रे ॥ ६ ॥ करतो कला अभ्यास, पूर्वधरम निवास ॥ आ० ॥ चारित्रे घणो राग थयो तस जन्मथी रे ॥ ७ ॥ एक दिन रमवा उद्यान, चंद्रोदय अभिधान ॥ आ० ॥ दीठा रे तिहां सनतकुमार सूरीसरु रे ॥ ८ ॥ तेजे सूर्य समान, उतर्या प्रासुक थान ॥ आ० ॥ उदधि परे गंभीर शीतल जिम चंद्रमा रे ॥ ९ ॥ रतन परे बहु मूल, सहु जनने अनुकूल ॥ आ० ॥ सरग परे रमणिक वाच्य नहीं शिव परे रे

॥ १० ॥ नयरी श्वेतंबिका राय, जशवर्म सुत मुनिराय ॥ आ० ॥ स्वपर समय ग्रह्यो सार बहु मुनि परिवर्‍यो रे ॥ ११ ॥ देखी लह्यो संवेग, मन चिंते अतिवेग ॥ आ० ॥ एह संसार असार एहवा पण छांमता रे ॥ १२ ॥ कुण ए केम कर्‍यो त्याग, पूछुं जइ महाभाग ॥ आ० ॥ जइ वंद्या सहु मुनिने वली सूरीशने रे ॥ १३ ॥ बेठो गुरुने पाय; करकज जोमी ठाय ॥ आ० ॥ गुरुजी ए संसार वैराग्यहेतु खरो रे ॥ १४ ॥ तोपण बाह्य निमित्त, विण नवि जागे चित्त ॥ आ० ॥ ते कारण विशेष हेतु तुमचुं कहो रे ॥ १५ ॥ चिंते सूरिवर एम, वयणविन्यास अहो केम ॥ आ० ॥ एहनो रे ए विवेक देखी मन रंजीयुं रे ॥ १६ ॥ हेतु विशेष अवधार, ते पण छे संसार ॥ आ० ॥ सूरि कहे जो सुणवा इछा तो सुणो रे ॥ १७ ॥ अल्प निदान विभाग, महोटा सुणी महाभाग ॥ आ० ॥ चित्रांगद विद्याधर पासे व्रत लीयुं रे ॥ १८ ॥ इणहीज भारहवास, श्वेतांबिका पुरी खास ॥ आ० ॥ जशवर्मा नृप तेहनो पुत्र हुं जाणजे रे ॥ १९ ॥ ज्योतिषी कहे तव एम, जन्ममात्रथी नेम ॥ आ० ॥ विद्याधर नरपति थाशे ए बालको रे ॥ २० ॥ हुं बहु वल्लभ तात, एक दिन तस्कर घात ॥ आ० ॥ करवा रे लेइ जाता दीठा में तदा रे ॥ २१ ॥ चोर घणा कहे एम, अम तुम शरणुं नेम ॥ आ० ॥ राखो रे तुमे तव में तस मूकावीआ रे ॥ २२ ॥ रमवा गयो हुं बार, सघलो ए अधिकार ॥ आ० ॥ निपन्यो रे तिहां बाहरि पंचम खंममां रे ॥ २३ ॥ पहेली ढाल रसाल, सुणतां मंगलमाल ॥ आ० ॥ समरादित्यना रासमां पद्मविजये कही रे ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रूठा लोक नयर तणा, कहे नृपने कोटवाल; नृप कहे कुंमर जाणे नहीं, तेम करजो ततकाल ॥ १ ॥ तस्कर ग्रही तुमे पुर तणा, नरने करी विन्नाण; मारजो सुणी तिणे मारीआ, जव मुफने थयुं जाण ॥ २ ॥ रीसाणो महारायथी, चाल्यो चतुर सुजाण; तामलिप्ति आव्यो तुरत, मनमां आणी माण ॥ ३ ॥ यतः ॥ "त्रयः स्थानं न मुंचंति, काकाः कापुरुषाः मृगाः ॥ अपमाने त्रयो यांति, सिंहाः सत्पुरुषा गजाः ॥ १ ॥ ईशानचंद अवनीपति, साहमो जइ सनमान; देइ कहे सुंदर कर्‍युं, आव्या

आपण ठाण ॥ ४ ॥ जाणो ए निज राज्य छे, नयरमां कस्या निवेश; आपे मुऊ आवास तिम, रहेवा तेह नरेश ॥ ५ ॥ जीवन ल्यो तुम्ह जे गमे, एम कहेवरावे राय; में तो ते नवि मानीयुं, तस हित जिणे परे ताय ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ राग धमाल ॥ पासजी हो ॥ अहो मेरे ललनां ॥ ए देशी ॥

॥ वसंतसमय एक दिन हवे आव्यो, रहेतां तिहां सुख मांहि ॥ ललनां ॥ अविवेकी जन आनंदकारी, दिन दिन अधिक उछाह ॥ १ ॥ मनमोहन मेरे दिल वस्यो हो, अहो मेरे ललनां ॥ दिल वस्यो मन वस्यो मुऊ ॥ मन० ॥ ए आंकणी ॥ मलयवायु तिहां वाया मनोहर, फूल्यां वन उद्यान ॥ ललनां ॥ लोकथोक तिहां जोवा चाल्या, कोकिलरव सुणे कान ॥ २ ॥ मन० ॥ मित्रे परिवृत हुं पण चाल्यो, करी तनु शोजा विशेष ॥ ल० ॥ अनंगनंदन उद्यानमां जातां, आव्यो राजपंथने देश ॥ ३ ॥ मन० ॥ नाम विलासवती नृपपुत्री, गोंखथी दीठो मुऊ ॥ ल० ॥ कोइ जवांतरने अज्यासे, रागथी अतिशें अलूऊ ॥ ४ ॥ मन० ॥ बकुलमाला गुंथी निज हाथे, नाखी मुऊ शिर तेह ॥ ल० ॥ दीठी मुऊ वसुजूति मित्रे, थापी कंठदेशे में एह ॥ ५ ॥ मन० ॥ ऊर्ध्व जोयुं तब तिहां दीठुं, वदनकमल अदजुत ॥ ल० ॥ हर्ष लह्यो हुं ते पण हुइ, तोष विषाद संयुत ॥ ६ ॥ मन० ॥ हुं तनुथी तिहां आगल चाल्यो, चित्त मूकी तस पास ॥ ल० ॥ तेहनुं ध्यान करत घर आयो, पण नहीं क्रीमा विलास ॥ ७ ॥ मन० ॥ शिर ङुःख्याना मिषथी विसरज्यो, मित्रादिक परिवार ॥ ल० ॥ अननुजूत ङुःखने अनुजवतो, क्षण निङा करी तिण वार ॥ ८ ॥ मन० ॥ रात्री गइ कह्युं कुल्य घोष, आव्या मित्र ते पास ॥ ल० ॥ जवन उद्यानमां क्रीमा करतां, लीये तंबोल सुवास ॥ ९ ॥ मन० ॥ शून्य चित्त लही वसुजूति पूछे, किम वासर शशिवान ॥ ल० ॥ क्षणमां ध्यानी मुनि परे दीसो, करी तनु चेष्टा ठान ॥ १० ॥ मन० ॥ जीत्या जुहारी परे क्षण हरखो, तव में कह्युं नहीं कांय ॥ ल० ॥ मित्र कहे में जाएयुं सघलुं, चिंता तुऊ नारीनी थाय ॥ ११ ॥ मन० ॥ नेत्रबाणे करी विंध्यो सबलो, तिणे करी दीर्घ निःश्वास ॥ ल० ॥ मत चिंता कर तुऊने इछे, माल ते हूती तुऊ पास ॥ १२ ॥ मन० ॥ एक पखी प्रीते बहु चिंता,

तुऊ चिंता न लगार ॥ ल० ॥ तुम्ह संयोग उपायमां वरतुं, राखो चित्त हर्ष अपार ॥ १३ ॥ मन० ॥ धावी विलासवतीनी पुत्री, अनंगसुंदरी इण नाम ॥ ल० ॥ तास संघाते प्रसंग कस्यो तिणे, गमनागमन थयुं ताम ॥ १४ ॥ मन० ॥ दिवस वही गया जब बहुतेरा, तव मन चिंते एम ॥ ल० ॥ काम कस्युं नहीं मित्रे माहरुं, कहो हवे करीये केम ॥ १५ ॥ मन० ॥ मारवशे सज्या जइ सूतो, मूर्छित मृत मूढ जेम ॥ ॥ ल० ॥ ग्रह आवेश थयो अथ बीहीनो, आपवशे नहीं तेम ॥ १६ ॥ मन० ॥ एक दिन आव्यो मित्र हरखशुं, कहे सीधुं तुम काम ॥ ल० ॥ कहो केम सीधुं तव ते नाखे, हुं गयो धावी धूआ धाम ॥ १७ ॥ मन० ॥ म्लान वदन देखी में पूछ्युं, अनंगसुंदरी कहो वात ॥ ल० ॥ शी चिंता तव प्रेमे बोली, सुणी माहरो अवदात ॥ १८ ॥ मन० ॥ सा कहे आदर्श परे पुःख जेहने, संक्रमे नहीं तस वात ॥ ल० ॥ कही तोपण शुं लेखे लागे, विरला परऊःखे ऊःखात ॥ १९ ॥ मन० ॥ "यतः ॥ विरला जाणंति गुणा, विरला जाणंति ललियकव्वाइं ॥ सामण धणा विरला, परऊःक्के ऊक्किया विरला ॥ १ ॥ " में कह्युं तुऊ आशा करुं पूरी, तव बोली सा नारी ॥ ल० ॥ रायधूआ मुऊ सही अति ऊःखिणी, तेहनो कह्यो सर्व विचार ॥ २० ॥ मन० ॥ मदन महोत्सवमां नर दीठो, रूपे जिम पंचबाण ॥ ल० ॥ तेहथी अंत अवस्था नोगवे, माला प्रमुख अहीनाण ॥ २१ ॥ मन० ॥ पण नवि उंलख्यो कोण हतो ए, में पण करी बहु शोध ॥ ल० ॥ सर्व व्यापार तज्यो तेणे सखीए, मुऊ पण ते नवि लऊ ॥ २२ ॥ मन० ॥ सखीजन कर ग्रही उपरितल चढी, मारगे निरखे तेह ॥ ल० ॥ वात संनारी अश्रुपात करे, जिम आषाढनो मेह ॥ २३ ॥ ॥ मन० ॥ एम करतां ते मूर्छा पामी, तव मुऊ संभ्रम थाय ॥ ल० ॥ उठी कह्युं में किहां ठे देखावो, रखे तस जीवित जाय ॥ २४ ॥ मन० ॥ कहे वसुनूति वन्युं ए काले, पण सुणो आगल वात ॥ ल० ॥ सांनलतां उपजशे शाता, सुणीये आगल अवदात ॥ २५ ॥ मन० ॥ बीजी ढाल ए पंचम खंडे, समरादित्यने रास ॥ ल० ॥ पद्मविजय कहे गुणिगुण गातां, होवे नित्य लीलविलास ॥ २६ ॥ मन० ॥ सर्व गाथा ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कृपा धरी अवनत करी, वदन सुणे हवे वात; वसुभूति कहे वेगशुं, वींज्या शीतल वात ॥ १ ॥ चंदन शीतल चरचीआं, जीव वल्यो तस जाम; नयन उघामी निरखती, तस पूछ्युं में ताम ॥ २ ॥ शी पीमा एम सामटी, ते कहे दर्शन तास; न थयुं तिण कारण मदन, पीमे देतो पास ॥ ३ ॥ धारण तेहने धारवा, में कह्युं राजकुमार; चिंता न करो चित्तमां, कहुं तेहनो परकार ॥ ४ ॥ लाध्यो ते लक्षण थकी, भोगालो ते उपल्ल; कटिसूत्रक संतोष करी, आप्यो मुझ अवल्ल ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ घोमी ते आइ थारा देशमां मारु जी ॥ ए देशी ॥

॥ इण समे आवी तिहां कणे ॥ साहिबजी ॥ विलासवतीनी मात हो, सुणो साहिब काम ए नीपन्युं ॥ साहिबजी ॥ कहे राये फरमावीयुं ॥ सा० ॥ वीणा संभारो ख्यात हो ॥ १ ॥ सु० ॥ वीणा बजाववी नृप कने ॥ सा० ॥ सांभली कह्युं परमाण हो ॥ सु० ॥ वीणाचार्यणी तेमीने ॥ सा० ॥ नवि लोपे गुरु आण हो ॥ २ ॥ सु० ॥ हुं तो तिहांथी आवती ॥ सा० ॥ विगर कहे निज गेह हो ॥ सु० ॥ घणुंअ विशेषे खोलीउं ॥ सा० ॥ पण नव लाधो तेह हो ॥ ३ ॥ सु० ॥ चिंता पिशाचणीए ग्रही ॥ सा० ॥ तिणे मुझ उद्वेग थाय हो ॥ सु० ॥ तव कह्युं चिंता तजो ॥ सा० ॥ हुं उलखुं ते भाय हो ॥ ४ ॥ सु० ॥ मेलवशुं संजोग ए ॥ सा० ॥ अनंगसुंदरी कहे ताम हो ॥ सु० ॥ कोण जुवान ते भाखीये ॥ सा० ॥ तव कह्युं संघलुं काम हो ॥ ५ ॥ सु० ॥ उलखाव्यो में भली परे ॥ सा० ॥ भाखी नाम निशान हो ॥ सु० ॥ अनंगसुंदरी तव कहे ॥ सा० ॥ एहवी वात निदान हो ॥ ६ ॥ सु० ॥ तो निरुद्यम केम थइ रह्या ॥ सा० ॥ तव में भाख्युं तास हो ॥ सु० ॥ नहीं निरुद्यम पण चिंतवुं ॥ सा० ॥ एह उपाय ते खास हो ॥ ७ ॥ सु० ॥ सा कहे समरूप कुलकनी ॥ सा० ॥ हरतां कांय न दोष हो ॥ सु० ॥ आठ प्रकार विवाहना ॥ सा० ॥ शास्त्रमां भाख्या जोष हो ॥ ८ ॥ सु० ॥ ब्राह्म १ प्राजापत्य २ आर्ष ॥३॥ सा० ॥ ऋत्विज ४ धर्म ए चार हो ॥ सु० ॥ गांधर्व ५ आसुर ६ राक्षस ७ वली ॥ सा० ॥ पैशाच ८ अधर्म चार हो ॥ ९ ॥ सु० ॥ कन्या भूषित करी

दीये ॥ सा० ॥ ते विवाह कह्यो ब्राह्म हो ॥ सु० ॥ निज विभवोचित धन दीये ॥ सा० ॥ ते प्राजापत्य नाम हो ॥ १० ॥ सु० ॥ गाय दानपूर्वक दीये ॥ सा० ॥ ते तो आर्ष कहाय हो ॥ सु० ॥ सर्व जाति धन दक्षिणा ॥ सा० ॥ ते तो दैव सुठाय हो ॥ ११ ॥ सु० ॥ वरकन्या राजीपणे ॥ सा० ॥ नहीं कोइ अवरनुं काम हो ॥ सु० ॥ ते गांधर्व कह्यो वली ॥ सा० ॥ परठन्न परणे जाम हो ॥ १२ ॥ सु० ॥ जे पण बंधे परणीये ॥ सा० ॥ ते तो आसुर जाण हो ॥ सु० ॥ बलात्कारथी परणवुं ॥ सा० ॥ ते राक्षस पहिचाण हो ॥ १३ ॥ सु० ॥ सूती रमती होय जे ॥ सा० ॥ अणजाणे लेइ जाय हो ॥ सु० ॥ ते पैशाचिक जाणीये ॥ सा० ॥ इणमां दोष न कोय हो ॥ १४ ॥ सु० ॥ में कह्युं वात खरी कही ॥ सा० ॥ पण रागी नरराय हो ॥ सु० ॥ अप्रतिहत गति कुमरने ॥ सा० ॥ वली जीवन सुपसाय हो ॥ ॥ १५ ॥ सु० ॥ परणावे राजा कदी ॥ सा० ॥ तव नहीं बीजो उपाय हो ॥ सु० ॥ दर्शन बेहुने जिम होये ॥ सा० ॥ चिंतवो तेह सुठाय हो ॥ ॥ १६ ॥ सु० ॥ अनंगसुंदरी तव भणे ॥ सा० ॥ लावो तुमे कुमार हो ॥ सु० ॥ हुं पण भुवन उद्यानमां ॥ सा० ॥ लावुं राजकुमारी हो ॥ १७ ॥ ॥ सु० ॥ में ए वात अंगीकरी ॥ सा० ॥ चाल्यो कारण तेह हो ॥ सु० ॥ वचन सुणी वसुभूतिनां ॥ सा० ॥ परम आणंद लह्यो देह हो ॥ १८ ॥ ॥ सु० ॥ मोह अज्ञाने मानतो ॥ सा० ॥ सवि दुःखनो लह्यो पार हो ॥ ॥ सु० ॥ वसुभूतिने कह्युं तुम तणुं ॥ सा० ॥ वचन न करुं नाकार हो ॥ १९ ॥ सु० ॥ भवन उद्याने अमे गया ॥ सा० ॥ जिहां षट्ऋतुनी सोह हो ॥ सु० ॥ जाति अनेकनां फूलीयां ॥ सा० ॥ वृक्ष देखी होय मोह हो ॥ २० ॥ सु० ॥ अनंगसुंदरी आवी कहे ॥ सा० ॥ एह चंदनलता-गेह हो ॥ सु० ॥ तिहां आवीने बेसीए ॥ सा० ॥ तव अमे गया तिहां नेह हो ॥ २१ ॥ सु० ॥ दीठी विलासवती तिहां ॥ सा० ॥ सखीए परिवृत जेह हो ॥ सु० ॥ कूर्मोन्नत पद जेहना ॥ सा० ॥ निर्मल नख ससनेह हो ॥ २२ ॥ सु० ॥ ऊरुजुग रंभा उपमा ॥ सा० ॥ सिंहलंकी शुभवान हो ॥ सु० ॥ कटिमेखला खलकी रही ॥ सा० ॥ भवननितंब पंचबाण हो ॥ २३ ॥ लावण्य जलनी कूपिका ॥ सा० ॥ नाभिमंडल गंभीर हो ॥ सु० ॥ कमलनालशी बांहडी ॥ सा० ॥ नासिका चंच ज्युं कीर हो ॥ २४ ॥ सु० ॥

चंदलावयणी विराजती ॥ सा० ॥ चंपकवरणी धार हो ॥ सु० ॥ कोट उरे घणुं सोहतो ॥ सा० ॥ मुक्ताफलनो हार हो ॥ २५ ॥ सु० ॥ आंखमी पंकजपांखमी ॥ सा० ॥ अर्द्ध शशि सम जाल हो ॥ सु० ॥ कामधनुष जमुहा बनी ॥ सा० ॥ अधर प्रवाला लाल हो ॥ २६ ॥ सु० ॥ जिन ध्यानानले दाऊतो ॥ सा० ॥ मदनधूम मानुं केश हो ॥ सु० ॥ अथवा शेष वेणे वस्यो ॥ सा० ॥ दंत दाढिमकली वेश हो ॥ २७ ॥ सु० ॥ रूप देखी रीज्यो घणुं ॥ सा० ॥ चित्तमां सनत्कुमार हो ॥ सु० ॥ नेत्रकटाक्षे निरखीउं ॥ सा० ॥ विस्मय पामी नार हो ॥ २८ ॥ सु० ॥ त्रीजी पांचमा खंममां ॥ सा० ॥ पद्मविजय कही ढाल हो ॥ सु० ॥ समरादित्यना रासमां ॥ सा० ॥ आगल वात रसाल हो ॥ २९ ॥ सु० ॥ सर्व गाथा ॥ ७५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आदर देइ उजी थइ, विलासवती तिणी वार; सन्मानी बेसारतो, कामनीने ते कुमार ॥ १ ॥ अनंगसुंदरी कहे अम प्रत्ये, आसन बेसो एथि; बेठा तव अमे बिहु जणा; तंबोल आएयो तेथि ॥ २ ॥ मित्रजूति इण नामथी, कन्या रक्षाकार; आवी प्रणम्यो आदरे, कीधो में सत्कार ॥ ३ ॥ विलासवती तुमने वदे, नरपति एहवी वात; वीणा तुमने विसरी, काले कोप करात ॥ ४ ॥ आज वजाववी अवलथी, संजारो करी शान; आणा तव अंगीकरी, नीकली अवसर जान ॥ ५ ॥ तिर्छी आंखे ताकती, जवन गइ जयजीत; मारबाण विंधी मने, कंपे जेम चकित ॥ ६ ॥ वसुजूति कहे वालहा, जइये आपणी जाग; शे कारण बेसी रह्या, विलासवती विण बाग ॥ ७ ॥ उठ्या बेहु इहां थकी, आव्या द्वार उद्यान; अनंगवती नृपराणीए, दीठो मुज दिल आण ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ माहारुं मन मोह्युं रे माधव देखवा रे ॥ ए देशी ॥

॥ मुजने देखी रे राग ते उपन्यो रे, काम न राखे रे माम ॥ कार्य अकार्य हिताहित नवि गणे रे, विह्वल थइ तेह वाम ॥ १ ॥ विषयपिपासा रे विषमी जगतमां रे ॥ ए आंकणी ॥ निज थानक अमे पोहोता प्रेमशुं रे, चिंतवता तेह थान ॥ राग होये जे उपर जेहनो रे, तेहने तस बहु मान ॥ २ ॥ वि० ॥ कुसुममाल तंबोल विलेपणुं रे, मूके विलासवइ

सखी साथ ॥ पूर्वे व्रतां पण ते अंगीकर्यां रे, राग धरी निज हाथ ॥ ॥ ३ ॥ वि० ॥ अनंगसुंदरीने आप्यो कंठथी रे, हार ते भुवनमां सार ॥ निज घर जाणी नित्य नित्य आवजो रे, खेद म करजो लगार ॥ ४ ॥ वि० ॥ एम भाखीने विसर्जी ते प्रत्ये रे, एम करतां कोइ काल ॥ एक दिन घरथी नीकलतां मने रे, दासी कहे उजमाल ॥ ५ ॥ वि० ॥ अनंगवती नृपराणीए मोकली रे, तुमने तेरुवा काज ॥ आप इहांए कुंवर पधारीये रे, पाउ धारो तुमे राज ॥ ६ ॥ वि० ॥ अंबा कहे ते करवुं माहरे रे, कुमर करे रे विचार ॥ राये सघले प्रवेशआणा करी रे, चिंतवी चाल्यो ते वार ॥ ७ ॥ वि० ॥ वाम नयन फुरक्युं तब माहरुं रे, न गण्युं ते मन मांहि ॥ जइ दीठी शोकातुर विह्वला रे, प्रणमी धरीय उछाहि ॥ ८ ॥ वि० ॥ राणी कहे शरणागत ताहरे रे, कंदर्पनो भय जोर ॥ मंदिर उद्यानथी जातां थका रे, दीठा तुम तिण ठोर ॥ ए ॥ वि० ॥ ते दिनथी पंचबाण पण माहरे रे, थयो दश कोडी ते बाण ॥ तुम गुणथी मुझ हृदय ते बांधीयुं रे, शल्य सहित अप्रमाण ॥ १० ॥ वि० ॥ तुम संयोगे मुझ तनु ठारीये रे, शक्तिमंत जे होय ॥ ते पर प्रार्थना भंग करे नहीं रे, दीन उद्धार करे सोय ॥ ११ ॥ वि० ॥ आपद आवती न गणे चित्तमां रे, पूरे पर अभिलाष ॥ उलटी प्रार्थना हुं तुझने करुं रे, तिणे ए अनंगथी राख ॥ १२ ॥ वि० ॥ वयण सुणी वज्रघात परे थयो रे, बोल्यो ताम कुमार ॥ मात ! शुं बोल्यां रे एम नवि बोलीये रे, ए तो महा अनाचार ॥ १३ ॥ वि० ॥ इह परलोके दुःखदायक घणुं रे, कुलआचार न एह ॥ संकल्पजोनि मदन ए भाखीउ रे, तिणे संकल्प तजेह ॥ १४ ॥ वि० ॥ तुम तनु भोगनो खप नहीं माहरे रे, शक्तिमंता नर तेह ॥ जे निज धर्म न छंडे सत्त्वथी रे, नवि खंडे शील रेह ॥ १५ ॥ वि० ॥ नवि उलंघे निज आचारने रे, न करे निंदित काम ॥ निज करणीमां मुंझाये नहीं रे, तेहने कीधुं करे काम ॥ १६ ॥ वि० ॥ यतः ॥ "ते पंडिआ जे विरया विरोहे, ते साहुणो जे समयं चरंति ॥ ते सत्तिणो जे न चलंति धम्मे, ते बंधवा जे वसणे हवंती ॥ १ ॥" पहेरो विवेकसन्नाह तुम प्रेमशुं रे, जेहथी अनंगभय जाय ॥ जो तुम वल्लभ हुं छुं

मातजी रे, तो केम एम कहाय ॥ १७ ॥ वि० ॥ क्षण सुख अरथे बहु दुःख नरगमां रे, जोगववां बहु काल ॥ अविवेकी जन अजिलाषा करे रे, ठांमो एह जंजाल ॥ १८ ॥ वि० ॥ यतः ॥ "खिणमित्त सुक्का बहुकाल दुक्का, पगाम दुक्का अनिकाम सुक्का ॥ संसार मुक्कस्स विपक्क जूआ, खाणि अणबाणउ कामजोगा ॥ १ ॥ " लाज करी तव अनंगवती कहे रे, जलुं जलुं कह्युं रे कुमार ॥ में तेड्याव्यो परीक्षाकारणे रे, पण धन तुम अवतार ॥ १ए ॥ वि० ॥ जाउ सुखे निज स्थानक इम सुणी रे, चाल्यो करी परणाम ॥ घर आव्यो कांय वेला अतिक्रमी रे, निपन्युं तिणे समे आम ॥ २० ॥ वि० ॥ विनयंधर कोटवाल ते आवीउ रे, जस नरपति घणुं हेत ॥ ते कहे कुमर एकांत आणा करो रे, कहेवी वात संकेत ॥ २१ ॥ वि० ॥ तव सहु मित्र गया निज स्थानके रें, हवे कहेशे कोटवाल ॥ पद्मविजय कही पंचम खंडमां रे, चोथी ढाल रसाल ॥ ॥ २२ ॥ वि० ॥ सर्व गाथा ॥ १२५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तुम्ह राज्ये शक्तिमती, सन्निवेश ठे सार; वीरसेन कुलपुत्र वसे, दयावंत दातार ॥ १ ॥ शरणागत राखण सखर, अजिमानी आधार; स्वर गंजीर सोहामणो, सफल जनम संसार ॥ २ ॥ जाणी गरज जाया तणो, लेइ नारीने ल्हार; सुजट परिवृत सामटो, चाल्यो चतुर विचार ॥ ३ ॥ जातां नयर जयस्थले, जिहां श्वशुर जनवास; बाहिर श्वेतांबी वने, वेगे कीधो वास ॥ ४ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ देव तणी ऋद्धि जोगवी आव्यो ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसर एक चोर ते आव्यो, मोहडे श्वास न माये ॥ जयकायर नयणां न हींडाये, कंठ प्राण तस आय के ॥ १ ॥ जाइउ सुणो हो हुं रे अनाथी, नहीं इंहां माहरो साथी के ॥ जाइ० ॥ ए आंकणी ॥ शरण तुमारे आव्यो एणी परे, तव बोले तेह वाणी ॥ जय म करे मुज वेगां तारो, केश न त्रोडे प्राणी के ॥ २ ॥ जा० ॥ गृहिणी कहे अन्यायी होशे, तिणे म करो ए काम ॥ कुलपुत्र कहे जो न्यायी होवे, तो आवे शे काम के ॥ ३ ॥ जा० ॥ जेहवो होय तेहवो में राख्यो, कहे वेश तुं

इहां आइ ॥ ते कहे जयकायर जिम हरणो, अंग धूजे अथिराइ के ॥ ॥ ४ ॥ जा० ॥ नारीहृदय जयश्री थरहरतुं, तिम साथल थरहरती ॥ सज्जनने परनिंदा वाणी, तिम नवि गति विस्तरती के ॥ ५ ॥ जा० ॥ याचक वचन परे पग खलता, जम परे ए नरनाह ॥ तेहना चाकर पूंठे आवे, तेहनी नीति अथाह के ॥ ६ ॥ जा० ॥ खेद म कर कुलपुत्रे जाख्युं, बेसाड्यो एकांते ॥ रायपुरुष आवी इम जाखे, आपो चोर एकांते के ॥ ७ ॥ जा० ॥ जाये पाताले के जलधि उलंघे, शक्रने शरणे जाय ॥ तोपण नवि ठोडीजे एहने, चोरी करी करी आय के ॥ ८ ॥ जा० ॥ कुलपुत्र कहे चोर राखवो न घटे, शरणागत न अपाय ॥ जेम कहो तेम करीये तव बोल्या, आपो अम ए जाय के ॥ ९ ॥ जा० ॥ रायकोपानल मांहि पतंग सम, मत थाउ तुम कहीये ॥ कहे कुलपुत्र ए केम अपाये, शरणागत जे लहीये के ॥ १० ॥ जा० ॥ नृपनर कहे केम राखशो एहने, बलथी लहेशुं एह ॥ कुलपुत्र कहे मुज प्राण धरंते, नवि खंडाये रेह के ॥ ११ ॥ जा० ॥ एम कही खड्ग लीधुं निज करमां, सन्नद्ध होय परिवार ॥ राजपुरुष पोहोता नृप पासे, जाख्यो सर्व विचार के ॥ १२ ॥ जा० ॥ मुज आणालोपनुं शरणुं, जेह करे तस मारो ॥ एम कही नृपे बहु सैन्य मोकलीयुं, करता बहु होकारो के ॥ १३ ॥ जा० ॥ लाग्युं युद्ध परस्परे बेहुने, इण अवसर तिहां आयो ॥ राजकुमर जशोवर्म रमीने, बहु असवारे ठायो के ॥ १४ ॥ जा० ॥ पूठे तव सरवे संजलाव्युं, बोल्यो सुत नरराय ॥ मुज मार्या विण ए शरणागत, वत्सल नविश्र मराय के ॥ १५ ॥ जा० ॥ युद्ध शम्युं नृपतिए जाण्युं, राये मानी वात ॥ चोर बोलावी सहु निज थानक, क्षेमे कुशले आयात के ॥ १६ ॥ जा० ॥ अनुक्रमे जयथल नगरे पोहोता, प्रसव्यो पुत्र हुं ताम ॥ एम तुज ताय मुज माय तायने, मुज उपगारी आम के ॥ १७ ॥ जा० ॥ मात पिता पासे में सूणीउं, सघलो ए अधिकार ॥ गुणकीर्त्तन करतां दिन काढे, माने बहु उपगार के ॥ १८ ॥ जा० ॥ कारण एह कह्यानुं सुणीये, ईशानचंद जे राय ॥ रहवाडी रमी अनंगवती घरे, हरख धरी जव आय के ॥ १९ ॥ जा० ॥ पंचम खंडे पद्मविजये कही, पंचमी रूडी ढाल ॥ समरादित्यना रासमां सुणीये, सुणतां मंगलमाल के ॥ २० ॥ जा० ॥ सर्व गाथा ॥ १४९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अनंगवती दीठी इसी, विलखित कर रुह वयण; नयणे आंसु नाखती, नरपति पूछे सयण ॥ १ ॥ ए शुं तव कहे अंगना, शील राख्यानो स्वाद; राय कहे किम उच्चरो, अंगे धरी आह्लाद ॥ २ ॥ पूर्वे करतां प्रार्थना, वासर घणा व्यतीत; सनत्कुमार ए सुखीये, आज ए कीध अनीति ॥ ३ ॥ राजा तव रीशे चढयो, कहे मुजने कर काम ॥ मारो सनत्कुमारने, नवि जाणे कोइ नाम ॥ ४ ॥ में पण ते तिहांथी मानीउं, मनमां चिंत्युं आम; जोड्यो मुज अकार्यमां, मुज नरगे नहीं ठाम ॥ ५ ॥ नीचसेवा नरपति तणी, एम चिंता चित्त मांय; किमहीक दीर्घायु थकी, न मरे तो होये न्याय ॥ ६ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ शारद बुद्धिदायक ॥ हवे अवसर जाणी ॥ ए देशी ॥

॥ नरपतिनी आणा, तोपण केम लंघाय ॥ पगलुं जरे जेहवे, तेहवे छींक ते थाय ॥ करे विलंब ते ए हवे, तव एक निमित्तिउ बोले ॥ ढील न करो हमणां, नहीं ए छींकने तोले ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ सोमा नाम ए छींक ते जाखी, आरोग्य फलने आपे ॥ पूर्वऋषि एणी परे जाख्युं छे, तिणे दुःख दोहग कापे ॥ वली निमित्तंतरथी जाणुं, निर्दोष वस्तुमां आण ॥ राजाए कीधी छे तोपण, तुज मनमां अप्रमाण ॥ २ ॥ " यतः ॥ पच्छीसेहमजत्तं वा, हाणी वुड्ढा खयं असिद्धिं च ॥ आरोग्ग मब्बलाजं, छीयंमि पयाहिणं दिशासु ॥ १ ॥ " पण जिम तुज चित्तमां, छे तेम थाशे एह ॥ पण जा तुं वहीलो, नहीं तो विपरीत तेह ॥ तव में मन चिंत्युं, सिद्धादेश ए नाम ॥ एहना बहु प्रत्यय, दीठा छे केइ काम ॥ ३ ॥ त्रु० ॥ एम चिंती गयो जननी पासे,पूछे जननी मुज ॥ देखुं छुं उदवेग सरिखुं, म्लान वदन ते तुज ॥ माताथी नवि छानुं करीये, एम विचारी जाख्युं ॥ माता कहे ए कुमरने ताते, ताहरुं कुल सवि राख्युं ॥ ४ ॥ ए काम म करजे, एम सुणी हुं इहां आव्यो ॥ माहरुं वृत्तांत ए, तुमने सर्व सुणाव्युं ॥ आचारज जाखे, सांजली में विचार्युं ॥ स्त्रीचरित्र अहो जूउ, विषने वलीअ वधार्युं ॥ ५ ॥ त्रु० ॥ अहो पापिणी ए सापिणी सारिखी, कूटहृदय जुउ राखे ॥ मोहके मीठी दिलमां जूठी, प्रेमबीज ज्युं दाखे ॥ स-

रिता परे उजय कुल हरणी, गर्हित हिंसा जेहवी ॥ संगीनिदीक्षा परे न लहे, धर्मवात ते केहवी ॥ ६ ॥ ए चिंतानुं शुं, काम कहो छे माहारे ॥ पण राजा किणी परे, वात एह अवधारे ॥ अथवा यौवन वय, माहरुं देखी माने ॥ खरी वात संजलावुं, जइ राजाने काने ॥ ७ ॥ त्रु० ॥ अथवा राणी मारी जाये, तिणे ए पण किम करीये ॥ एक तो मनवंछित तस न कस्युं, वली संकटमां धरीये ॥ राजाने जो खरुं न जाखुं, तो कुलकलंक ते आवे ॥ तोपण एहवुं काम ते न करुं, जिणे परपीका थावे ॥ ८ ॥ कहे विनयंधर सुणो, मुजने शुं फरमावो ॥ कुमर कहे तुमे तो, राय हुकम वजावो ॥ मुज जीवे शुं छे, एहवुं जाखे जाम ॥ श्रीहर नामे ब्राह्मण, मार्गे छींक्यो ताम ॥ ए ॥ त्रु० ॥ वली ब्राह्मण बहु मोहोटे शब्दे, वातो करता चाले ॥ शुं कहीये घणुं दोष न एहने, सम करीये जे आले ॥ सुणी विनयंधर बोल्यो एणी परे, तुममां नहीं कोइ दोष ॥ सिद्धादेश छींक ए शब्दे, काढ्यो सघलो शोष ॥१०॥ कहे शुं बहु जाखुं, कहो जेहवुं होय तेह ॥ विनवी नूपतिने, देवरावुं दंरू देह ॥ कह्युं में शुं जाखुं, अंबा कहे ते प्रमाण ॥ तव कहे विनयंधर, मुजने थयुं विन्नाण ॥ ११ ॥ त्रु० ॥ मुजने थयुं विन्नाण वचने, एहज डुष्ट छे राणी ॥ जइ राजाने करुं विनति, करे सहु सम जाणी ॥ एम कही उठ्यो ते जेहवे, तेहवे में वेसास्यो ॥ में कह्युं अंबा उपर एवडो, न करो कोप वकास्यो ॥ १२ ॥ एह चंचल जीवित, काजे केम डुःख दीजे ॥ कहे विनयंधर सुणी, एवमी वात केम पीजे ॥ मूको मुज जाउं, तव में एम जाखीजे ॥ एह वाते आग्रह, अंशमात्र नवि कीजे ॥ १३ ॥ त्रु० ॥ एम करतां जो बलथी करशो, तो हुं तजशुं प्राण ॥ एम सांजलीने रोवा लागो, विनयंधर असमान ॥ अहो अविचार्युं कारज नृपनुं, एहवा पुरुषमां शंका ॥ में कह्युं तातने एम न कहीये, कर्मपरणति मुज वंका ॥ १४ ॥ तव विनयंधर कहे, हुं पापी शिरदार ॥ हुं शुं करुं जाखो, में कह्युं तुं आणाकार ॥ कर नृपनी आणा, तव बोल्यो ते तलार ॥ जिम तिम शुं बोल्यो, किम तुम कर्म विकार ॥ १५ ॥ त्रु० ॥ धन्य तुमे कृत्य पुण्य गुणाकर, सुरतरु सरिखो दाता ॥ जो नवि विनवुं राजाने, अनुकंपाए राता ॥ उगारवी राणीने जाणो, तो चिंतवो उपाय ॥ तुम्हने उगारी आणंडुं, कोप न करे

वली राय ॥ १६ ॥ में कह्युं विचारी, जो न करे नृपआण ॥ तो वसुभूतिशुं, जाउं देशांतर ठाण ॥ ते मान्युं तलारे, बोले तव कोटवाल ॥ आज सुवर्णभूमि, जाय काज ततकाल ॥ १७ ॥ त्रु० ॥ संध्यासमये बिहुं नीकलीआ, साथे वली कोटवाल ॥ प्रवहण स्वामी समुद्रदत्तने, सोंप्या थइ उजमाल ॥ घणी भलामण दइ मुझ प्रणमी, कहे मुझ कोप न करज्यो ॥ नेत्रे नीर झरंतां वलतां, कहे तनुजतन ते करजो ॥ १८ ॥ चाल्युं हवे प्रवहण, उपयोगी कर्णधार ॥ वसुभूति पूछे, मित्र ए कशो विचार ॥ तव सहु संभलावे, अनंगवती अधिकार ॥ नृपने नवि भाख्युं, अनंगवती उपगार ॥ १९ ॥ त्रु० ॥ सुवर्णभूमि पोहोता अनुक्रमे, दोय मासने काल ॥ उतरी श्रीपुर नगरे पहोता, पंचमे खंडे ढाल ॥ पद्मविजये छठी भाखी, समरादित्यने रास ॥ गुणवंता गुण गातां होवे, घर घर लीलविलास ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ १७५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्वेतांबिकावासी मल्यो, समृद्धदत्त सुत सार; वाणिज्य अर्थे आवीउं, मनोरथदत्त मनोहार ॥ १ ॥ माहरो बालथी मित्र ते, संभ्रम पाम्यो सोय; निश्चय उलखी प्रणमीयो, हर्ष विषाद मन होय ॥ २ ॥ नृपने कुशल पूछ्युं मने, निज घर लाव्यो नेह ॥ भोजन उत्तर एम भणे, कारण आगम केह ॥ ३ ॥ राय निर्वेदे नवि रह्यो, आव्यो आणे ठाम; माउल थाये माहरो, सिंहलद्वीपनो स्वामी ॥ ४ ॥ तिहां जावुं मुझ ततक्षिणे, जोजो जातुं झिहाज; मनोरथदत्ते मानीयुं, जिम भाखो महाराज ॥ ५ ॥ मित्र विजोगना मान्यथी, काढ्यो बहु तिणे काल; उतावल लही एक दिन, मुझने कहे मयाल ॥ ६ ॥ जावुं तुमारे जोपशुं, तो प्रवहण जाये नित्य; तुम्ह विजोगने कातरे, एटला दिवस अतीत ॥ ७ ॥ आजज माहरे जायवुं, में भाख्युं एम जाम; पट एक लावी आपीयो, उत्पत्ति भाखे आम ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ सातमी ॥

॥ भोलिडा हंसा रे विषय न राचीये ॥ ए देशी ॥

॥ कौतुक सहित ए पट स्वामी सुणो, उढीजे जव एह ॥ कोइ न देखे रे आपणने तदा, तव में पूछ्युं सनेह ॥ १ ॥ पुण्य प्रमाणे रे सवि सुख संपजे ॥ ए आंकणी ॥ में तव उछ्यो रे तेमहीज निपन्युं, उत्पत्ति

पूछी में ताम ॥ तव ते नाखे रे इहां आव्या पछी, सिद्धसेन एक नाम ॥ २ ॥ पुण्य० ॥ आणंदपुरनो वासी तेह छे, बहु विद्या जस सिद्ध ॥ ते सिद्धपुत्रशुं प्रीति थइ घणी, एक दिन में तस कीध ॥ ३ ॥ पुण्य० ॥ चमत्कार कोइ विद्यामां अछे, के नहीं कौतुक मुझ ॥ तव तिणे नाख्युं रे देखाडुं तने, विद्यासाधन गुझ ॥ ४ ॥ पुण्य० ॥ सरसव प्रमुखनी सामग्री करो, जावुं छे समशान ॥ तैयारी करी अमे बिहुं चालीआ, आथमीउं तव नान ॥ ५ ॥ पुण्य० ॥ अंधकारमां रे घूक गुहरू करे, जइ तिणे मंरुल कीध ॥ अग्निकुंरू करी मुझ अप्रमत्त कस्यो, मुझ कर खड्ग ते दीध ॥ ६ ॥ पुण्य० ॥ थोरुी वेला रे मंत्र जाप कस्यो, तव यक्षकन्या रे एक ॥ चंद्रमुखी मृगनयणी राजती, कलशस्तनी वर टेक ॥ ७ ॥ पुण्य० ॥ सुरतरु कुसुमे रे वेणा शोजती, गगनथी उतरे तेह ॥ में मन चिंत्युं रे मंत्रशक्ति गुरु, सिद्धने प्रणमी रे एह ॥ ८ ॥ पुण्य० ॥ मुझ समरणनुं रे कारण नाखीये, सिद्धसेन कहे ताम ॥ मित्रने दिव्य दर्शनना रागथी, एह अमारे रे काम ॥ए॥ पुण्य०॥ तव ते देवी रे मुझने जोइ करी, कहे तूठी तुझ आज ॥ माग तुं कांयक तव में नाखीयुं, तुम्ह दरशने सख्युं काज ॥ १० ॥ पुण्य० ॥ खाली न जाये रे देवदर्शन कदा, यक्षकन्या कही एम ॥ नयन मोहन पट रयण ते आपीउं, प्रणमी लीधो रे प्रेम ॥ ११ ॥ पुण्य० ॥ "यतः ॥ अमोघा वासरे विद्युत्, अमोघं निशि गर्जितं ॥ अमोघा उत्तमा वाणी, अमोघं देवदर्शनं ॥ १ ॥" गइ निज स्थानक ते जक्षकन्यका, विहाणे अमे पुर मांहि ॥ आव्या इणी परे उत्पत्ति ए कही, लीधो तेह उछाहि ॥ १२ ॥ पुण्य० ॥ मनोरथदत्तशुं रे सायर तट गया, देवविमान परे दीठ ॥ ध्वजमाला शोजित वर झिहाज ते, अतिशय तेह विशिठ ॥ १३ ॥ पुण्य० ॥ ईश्वरदत्त तस अधिपति उठीउं, आप्युं आसन सार ॥ करीअ प्रणामने बेठा ते सहु, सोंप्या अमने संनार ॥ १४ ॥ पुण्य०॥ मनोरथदत्त कहे मुझ बांधवा, स्वामी ए वली मित्त ॥ जीवित माहरुं रे एहने जाणजो, जालवजो बहु रीत ॥ १५ ॥ पुण्य० ॥ पोतपति कहे झाझुं शुं कहो, मुझ पण एहवा रे एह ॥ बेठा झाझे रे मनमोदे करी, दरियाने बलि देह ॥ १६ ॥ पुण्य० ॥ पवने पूस्यो रे सढ ऊंचो करी, मनोरथदत्त परिणाम ॥ करी उजो रह्यो वाहण चलावीआं,

निरजामके सहु ताम ॥ १७ ॥ पुण्य० ॥ तेरशमे दिन सायरमां जतां, चढीउं मेघ अकाल ॥ वीज झबूके रे,गरजारव करे, अंधकार असराल, ॥ १८ ॥ पुण्य० ॥ सायर कंपे रे कल्लोल उछले, वायु विषमा रे वाय ॥ मदमत्त गज परे वश नहीं झिहाज ते, निर्यामक ते खेदाय ॥ १९ ॥ पुण्य० ॥ तिणे समे ठेव्या रे में धीरज धरी, सढना दोर संभाली ॥ सढ संकेल्यो रे नांगर मूकीयां, पण सागर विकराल ॥ २० ॥ पुण्य० ॥ भार गुरु तिणे कर्मविपाकथी, भांग्युं झिहाज तिवार ॥ सघला अलगा रे थया विजोगीआ, पाम्या दुःख अपार ॥ २१ ॥ पुण्य० ॥ फलक लह्युं में रे आयुसंबंधथी, दिवस थया तिहां त्रण ॥ तट देखीने रे नीकलीउं हवे, जाणुं पुण्य अगण्य ॥ २२ ॥ पुण्य० ॥ ॥ पंचम खंडे रे सातमी ढाल ए, पूरण हुइ सुप्रमाण ॥ पद्मविजय कहे भवसायर तरो, जिम होय कोडि कल्याण ॥ २३ ॥ पु० ॥ सर्व गाथा ॥ ३०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जंबुवृक्ष तले जइ, चिंतवे इणी परे चित्त; वसुभूति रह्यो वेगलो, माहरो वल्लभ मित्त ॥ १ ॥ पडीउं एहवे पयोनिधि, कहो जीव्यो हुं केम; मित्र विना हवे माहरे, नवि जीववुं ए नेम ॥ २ ॥ अथवा मुज परे एह पण, जीवंतो होय जोय; तो मलवुं थाय तेहशुं, हवे जो भावी होय ॥ ॥ ३ ॥ जव जोयुं तव जाणीउं, पलट्यो नहीं ते पट्ट; विस्मय पाम्यो वेगशुं, प्रेम थकी परगट्ट ॥ ४ ॥ उत्तर सनमुख आवीउं, भूखनी वेदनी भाली; गिरि नदीने कांठे गयो, फनसफलादि संभाली ॥ ५ ॥ आहार करी अवनी तले, रुडो राजकुमार; वेठो तव जोडे विहुं, सारस दीठां सार ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ धन दिन वेला धन घडी तेह ॥ ए देशी ॥

॥ दीठां रे सारस सारसी दोय, क्रीडा रे करतां लटपटी अति घणी रे ॥ चिंतुं रे मनमांए रे स्वाधीन, जाया रे नवि रहे वेगली निज तणी रे ॥ १ ॥ सुखमां रे काढे काल निचिंत, एम विचारतां सहसकिरण गयो रे ॥ संध्यानी करणी करी ते कुमार, देवगुरु प्रणमी वाम पासे थयो रे ॥ २ ॥ बहु दिन खेदथी आवी रे निंद, रात गइ ने जाग्यो हुं तदा रे ॥

प्रणमी रे देवगुरुना पाय, चाल्यो वनवननी शोभा जोउं यदा रे ॥ ३ ॥ गिरि नदीकांठे जाउं रे जाम, दीठी रे पदपंति सोहामणी रे ॥ चक्रांकुशरेखा शोभित तेह, लघु ने सुकमालथी जाणी स्त्री तणी रे ॥ ४ ॥ चाल्यो रे पगले पगले तेह, दीठी रे दूरथी तापसनी कनी रे ॥ वांकलां पहिर्यां वस्त्रने ठामि, सोवनवरणी देह ते अति बनी रे ॥ ५ ॥ अलते रे रंजित चरणसरोज, रशना रे योग्य नितंब सोहामणा रे ॥ सुजन चित्त परे नाभी गंभीर, सुकृतपरिणाम परे उन्नत कुच घणा रे ॥ ६ ॥ तपथी विनिर्जित मोह अंधार, हृदयमां पेशण वेण मिषे थयो रे ॥ रक्त अशोक परे कर जास, नयन ते हरणीनेत्र भाग भयो रे ॥ ७ ॥ गलस्थल चंद्रमंमल परे जास, अधर ते पाडल कुसुम शोणित परे रे ॥ ठाबडी वाम करे रही जास, फूल रे विणती तेह दक्षिण करे रे ॥ ८ ॥ देखीने चिंतव्युं में इण भाति, वनदुःख सहे पण लावण्य केहवुं रे ॥ आघो जइ जालांतरे जोयुं जाम, देखुं रे रूप विलासवती जेहवुं रे ॥ ए ॥ वनवासे रहेती एटलो फेर, स्मरणपवने काम संधूकीउं रे ॥ फूलनी ठाबडी लेइ जब जाय, तव हुं विकार गोपवी ढूकीउं रे ॥ १० ॥ प्रणमी में भाख्युं तपनी थाउ वृद्धि, तामलिप्ति नगरीथी आवीउं रे ॥ श्वेतांबी नगरी वासी हुं जाण, सिंहलद्वीप भणी हुं धावीयो रे ॥ ११ ॥ झिहाज भांग्युं थयो एकाकी एम, कहो कोण थानक ए किहां रहो तुमे रे ॥ संभ्रांत थइ करी तिर्छी रे दृष्टि, वचननो उत्तर नवि दीधो किमे रे ॥ १२ ॥ चाली रे निज आश्रम भणी तेह, मनमां में चिंत्युं नारीने एकली रे ॥ वलीअ तापसिणी एहशुं शुं काम, वली रे पूछीश कोइ नरने अटकली रे ॥ १३ ॥ वलीउं रे पाछो आव्यो ते ठाम, वली रे विचारुं जोउं ए जाये किहां रे ॥ जोतां रे दीठी मंथर चाली, चालती पाछल जोती ते तिहां रे ॥ १४ ॥ नवि रे दीठो कोइ प्राणी ताम, मूकी रे छाबडी वेणि समारती रे ॥ पहेर्युं पण वांकलुं पहेर्युं रे फेर, बाहु करी उंची अंगने मरडती रे ॥ १५ ॥ आवे बगासां कामविकार, में मन चिंत्युं ए शुं एम करे रे ॥ अथवा रे विरुद्ध विचार शो मुज, एम करी चाल्यो गिरिनदी परिसरे रे ॥ १६ ॥ प्राणवृत्ति करी दिवस गमाय, सूतो रे रयणीए स्वप्नुं तव लह्युं रे ॥ दिव्य स्त्रीए एक कुसुमनी माल, आपीने इण परे मुजने तिणे कह्युं रे ॥ १७ ॥ पूर्वे निपजावी

ए छे रे माल, आपी रे में तुजने तिणे लीजीये रे ॥ में पण लेइ थापी कंठदेश, पाछले पहोरे देखी जागीजीये रे ॥ १८ ॥ मनमां हरखी चिंतवुं एम, कन्यानो लाज सुपन ए सूचवे रे ॥ अटवीमां केम होशे मुज लाज, चिंतव्युं रे दक्षिण नेत्रने फरकवे रे ॥ १९ ॥ स्वप्न शकुन अनुसारे रे एम, चिंतवुं अन्य परिचय मुज नहीं रे ॥ महारे रे विलासवतीनुं रे काम, पूर्वे निपनी माला देवे कही रे ॥ २० ॥ तापसिणी दीठी तस अनुहार, विधि रे विचित्र प्रकारे घटे सदा रे ॥ कोण जाणे तेहज होय तो होय, नहीं तो किम मदनविकार ए करे तदा रे ॥ २१ ॥ "यतः ॥ अघटित घटितानि घटयति, सुघटित घटितानि जर्जरीकुरुते ॥ विधिरेव तानि घटयति, यानि पुमानेव चिंतयति ॥ १ ॥" तोपण व्रतिणी साथे रे जोग, न घटे पण एहनुं दर्शन पामीउं रे ॥ एणे कह्युं माहरे करवुं छे तेह, उग्यो रवि पूर्व दिशावधू कामीउं रे ॥ २२ ॥ चक्रवाकना टल्या रे वियोग, पंचम खंडे सांजलजो गुणी रे ॥ समरादित्यना रासमां एह, आठमी ढाल ते पद्मविजय जणी रे ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ २३५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राग घणो रमणी तणो, रमणिक देखी रान; कामज्वरथी कानने, जोवा लागो जाम ॥ १ ॥ रमणी जोतां कुमरने, क्लेशे गयो बहु काल; आंबा तले आवी करी, बेठो हुं नृपबाल ॥ २ ॥ सूकां पत्र तणो सुणयो, इणी अवसर आराव; वली कोट विस्तारीने, दृष्टे जोयुं दाव ॥ ३ ॥ मध्यवये आवी महा, तापसिणी एक ताम; जूतितिलक जाले कह्युं, कमंडल कर वाम ॥ ४ ॥ पुत्रजीव माला प्रगट, जमणा करमां जोय; जटाकलाप बांध्यो ऊकडी, वल्कलवस्त्र वर होय ॥ ५ ॥ तपतापित कृश तनु थयुं, अस्थिचर्म अवशेष; देखी गोपव्यो मदनने, प्रणम्या पाद विशेष ॥ ६ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ राग गोडी ॥ बे कर जोडी ताम रे, जडा विनवे ॥ ए देशी ॥

॥ मुजने देखी तास रे, आंसु आवीआं ॥ बेठी चिरंजीव कही ए ॥ १ ॥ ए शुं उलखे मुज रे, एम में चिंतव्युं ॥ अथवा ज्ञानी होय व्रती ए ॥ २ ॥ शुं नवि जाणे एह रे, इण अवसर कहे ॥ बेसो कुमर ए जूतले ए ॥ ३ ॥ पूजी धरती तेह रे, बेठी तापसी ॥ कहे हुं कहुं ते सांज-

लो ए ॥ ४ ॥ इण जरते वैताढ्य रे, पर्वत मध्य छे ॥ उंचो पचवीश जोअणां ए ॥ ५ ॥ जोजन पहोलो पच्चास रे, तेह रजत तणो ॥ पूर्वापर सायर अड्यो ए ॥ ६ ॥ विद्याधरनी श्रेणि रे, दक्षिण उत्तरे ॥ धरतीथी दश जोअणां ए ॥ ७ ॥ दक्षिण नगर पंचास रे, साठ उत्तर दिशे ॥ गंधसमृद्ध पुर तेहमां ए ॥ ८ ॥ सहेसवल तिहां राय रे, सुप्रजा जारया ॥ मदनमंजरी हुं सुता ए ॥ ए ॥ यौवन पामी जाम रे, परणावी मने ॥ पवनगति राजा प्रत्ये ए ॥ १० ॥ रमतां तेहशुं रंगे रे, काल गयो बहु ॥ गगनमारग एक दिन हवे ए ॥ ११ ॥ क्रीडा करवा काज रे, नंदनवन गयां ॥ बेठां कनक शिलातले ए ॥ १२ ॥ सहसा पक्षीउं हेठे रे, मरण लह्यो तदा ॥ आयु अथिरथी मुज पति ए ॥ १३ ॥ मुजने उपन्यो शोक रे, जमती जूये पक्षी ॥ मूर्छाथी चेतन लही ए ॥ १४ ॥ उडवा जाउं जाम रे, उडाये नहीं ॥ विद्या पण चाली नहीं ए ॥ १५ ॥ दाधा उपर लूण रे, ए शुं वली थयुं ॥ इणी अवसर तिहां आवीउं ए ॥ १६ ॥ देवानंद इण नाम रे, मित्र मुज तातनो ॥ तापस व्रत अंगीकर्युं ए ॥ १७ ॥ कह्युं माहरुं वृत्तांत रे, जर्ता मरी गयो ॥ गगनगामिनी तिम गइ ए ॥ ॥ १८ ॥ जल आंसु जरी नयण रे, मुजने एम कहे ॥ वछ संसार ए एहवो ए ॥ १९ ॥ क्षणजंगुर संजोग रे, इंद्रिय चपल छे ॥ जीवलोक अशाश्वतो ए ॥ २० ॥ एम जाणी करे धर्म रे, उत्तम प्राणीआ ॥ त्रण लोक बांधव समो ए ॥ २१ ॥ दीक्षा आपो मुज रे, में इणी परे कह्युं ॥ तापस बोल्या तेहवे ए ॥ २२ ॥ विद्या केम गइ तुज रे, में कह्युं नवि लहुं ॥ तव ज्ञाने करी बोलीआ ए ॥ २३ ॥ शोके करी सिद्धकूट रे, उल्लंघ्यो तुमे ॥ कुसुमदाम शिखरे पक्षी ए ॥ २४ ॥ विद्या गइ तुज एम रे, आशातन थकी ॥ तव में जाख्युं सांजलो ए ॥ २५ ॥ उपगारी इह लोक रे, विद्याए सर्युं ॥ व्रत आपी अनुग्रह करो ए ॥ २६ ॥ तव पूछी मुज तात रे, आचार संजलावी ॥ लावी इहां मुज व्रत दीयुं ए ॥ २७ ॥ एक दिन पूजन देव रे, सायर उपकंठे ॥ गइ तव दीठुं पाटीयुं ए ॥ २८ ॥ कन्या वलगी एक रे, जल कल्लोलमां ॥ चंद्रलेखा परे निर्मली ए ॥ २९ ॥ आचारज कहे ताम रे, हुं हरषित थयो ॥ मनोरथ तरुफल उगीआं ए ॥ ॥ ३० ॥ तापसिणी कहे ताम रे, जोयुं में जइ ॥ जाणी तव ए जीवती

ए ॥ ३१ ॥ कर्मफल जल बांटे रे, नेत्र उघामीश्रां ॥ लावण्यथी कुलवती लही ए ॥ ३२ ॥ धीरी था तुं वत्स रे, श्रमे तापस श्रबुं ॥ एम कही फल आणी दीश्रां ए ॥ ३३ ॥ खवराव्युं में प्राणे रे, लइ आश्रम गइ ॥ देखाडी कुलपति जणी ए ॥ ३४ ॥ कुलपतिने परणाम रे, करीने ते रही ॥ तव आशीष दीये कुलपति ए ॥ ३५ ॥ पंचमे खंडे ढाल रे, नवमी ए कही ॥ पद्मविजय एह रासमां ए ॥ ३६ ॥ सर्व गाथा ॥ २७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ किहांथी आव्या ते कहो, में पूछ्युं एम जाम; तामलितिथी ते कहे, में पूछ्युं फिरी ताम ॥ १ ॥ किहां जाइ ने कुल किशुं, तव नवि बोली तेह; नाखी दीर्घ निःश्वासने, तव में चिंत्युं एह ॥ २ ॥ उत्तम कुलमां उपनी, आखे नहीं तिणे आप; पूछीश कुलपतिने पछे, पामीश तिहां जबाप ॥ ३ ॥ कुलपति आवश्यक करी, संध्या समय समाधि; पासे कुलपति पूछीयुं, बेसीने निराबाध ॥ ४ ॥ कन्या ए कुण किम लही, एह अवस्था आज; आगले केहवुं एहने, कहो निपजशे काज ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ सांजल्य तुं सजनी मारी, रजनी क्यां रमी आवी जी ॥ ए देशी ॥

॥ मुजने कहे कुलपति सांजल्य तुं, तपपरजावे जाणुं जी ॥ तामलिति नरपतिनी पुत्री, रूप तणुं जे ठाणुं ॥ १ ॥ नृपसुत सुणीये जी ॥ ए आंकणी ॥ जर्तास्नेहे एम अवस्था, पामी छे निरधार जी ॥ में पूछ्युं किम कन्या नहीं ए, कुलपति कहे तिवार ॥ २ ॥ नृप० ॥ कृव्यथी कन्या जावे परणी, में पूछ्युं किम एम जी ॥ तव सघलुं धुरथी संजलाव्युं, पति जावानी सीम ॥ ३ ॥ नृप० ॥ एक दिन सुणीउं लोकवयणथी, कुमरने माख्यो राये जी ॥ इणे चिंत्युं मोहे करीने, शी गति हवे मुज थाय ॥ ४ ॥ नृप० ॥ तेहज समशाने जइ जोइ, करवो प्राणविजोग जी ॥ प्राण अधिक मुज वल्लज केरी, वात करे एम लोग ॥ ५ ॥ नृप० ॥ अरधी राते ते एकाकिणी, घरमांथी ते चाली जी ॥ तस्कर लूंटी अचल सार्थपने, वेचाथी तेणे आली ॥ ६ ॥ नृप० ॥ ऊिहाज बेसारी बर्बरकुले, जातां जांग्युं ऊिहाज जी ॥ एक पाटीयुं एहना करमां, आव्युं जीवित काज ॥ ७ ॥ नृप० ॥ त्रणे दिवसे ए तट पामी, हवे आगल सुणो वात जी ॥

भर्ता लहेशो भोग भोगवशो, थाशो जगत विख्यात ॥ ८ ॥ नृप० ॥ परभव साधी मानवनो भव, सफलो करशो एह जी ॥ एम सांभलीने हुं घणुं हरखी, राति गइ जव तेह ॥ ९ ॥ नृप० ॥ सूरज उदये में कह्युं कुमरी, ए संसार अनित्य जी ॥ यौवन चंचल अथिर ए लखमी, धैर्य धरे सुविदित ॥ १० ॥ नृप० ॥ सा कहे स्वामिनी साचुं भाखो, व्रत आपो उपगारी जी ॥ में कह्युं यौवन वय छे पहेली, मदन न शकीये वारी ॥ ॥ ११ ॥ नृप० ॥ ज्ञान सूर्य कुलपतिने पूछ्युं, तुज वृत्तांत मन आणी जी ॥ अतीत अनागत सघलुं भाख्युं, तुज पति मिलन प्रमाणी ॥ १२ ॥ नृप० ॥ भर्त्ता तुज जीवे छे कुशले, सांभली विस्मय धारी जी ॥ अण हुंता पण कटक युगल दीये, कलपनाये उतारी ॥ १३ ॥ नृप० ॥ हार लता देवा जब कोटे, हाथ नाख्यो तव नांहि जी ॥ चित्त ठामे आव्युं तव विलखी, थइ अति संभ्रम मांहि ॥ १४ ॥ नृप० ॥ में भाख्युं संभ्रम मत कर तुं, ताहरुं चित्त उदार जी ॥ व्रतनो अवसर हमणां तुज नहीं, सांभल्यो एह विचार ॥ १५ ॥ नृप० ॥ तापसकन्या वेषे विचरे, एम करतां गयो काल जी ॥ एक दिन कुलपति सिद्धपर्वते, गया दर्शन किरपाल ॥ १६ ॥ नृप० ॥ ए तो फूल वीणवा चाली, मोरु तिहांथी आवी जी ॥ पाछल जोती प्रस्वेदे करी, देहमी भीनी लावी ॥ १७ ॥ नृप० ॥ में पूछ्युं तुं किम खेदाणी, तव ते बोली एम जी ॥ मारा बांधव सांभरूया मुजने, तेहनो मुज घणो प्रेम ॥ १८ ॥ नृप० ॥ में भाख्युं कुलपति आवण दे, तुज बांधव मेलवशे जी ॥ एम सुणी मौन करी ते दिनथी, निज आतम नहीं वशे ॥ १९ ॥ नृप० ॥ अतिथि नवि बहु माने देवनुं, पूजन पण नवि करती जी ॥ फूल वीणवा पण नवि जाये, नविअ हुताशन नमती ॥ २० ॥ नृप० ॥ विद्याधरनां जुगल आलेखे, सारसजुगल ते जोवे जी ॥ स्त्री भरतार पूराणी वातो, सुणवा तत्पर होवे ॥ २१ ॥ नृप० ॥ में मन चिंत्युं यौवन आव्युं, यौवने मद बहु वाधे जी ॥ मदथी मदनविलास मदनथी, केम विकार न वांधे ॥ २२ ॥ नृप० ॥ "यतः ॥ नवि अन्नाणवियहोही, पाएणं तिहुअणं मिसो जीवो ॥ जो जोव्वणमणुपत्तो, विआर रहीउं सया होई ॥ १ ॥" दशमी ढाल ए पंचम खंडे, मदन परा-

जय करशे जी ॥ पद्मविजय कहे ते नविप्राणी, नवसायर लघु करशे ॥ २३ ॥ नृप० ॥ सर्व गाथा ॥ ३०५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वलगी नागरवेलमी, वृक्ष अशोक अवधारी; हंसली क्रीमा हंसशुं, जोडे दीठ जिवार ॥ १ ॥ नाखी निशासो नीकली, तपोवन बाहिर तेह; देखी जाती दृष्टिथी, सलक्यो मुफ सनेह ॥ २ ॥ आज न देखुं एहनो, अवलतनु आकार; जोउं किहां ए जाय बे, चाली हुं एम विचार ॥ ३ ॥ बटकी लइने बाबडी, गइ जिहां कुसुमनी जागी; चपलता राखी चोंपशुं, लखती चिहुं दिश लागी ॥ ४ ॥ अशोक वृक्ष तले अवनीए, जइ उन्नी रही जाम; कदलीवन अंतर करी, रही हुं पूंठे राम ॥ ५ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ उव्य कलालण नर घमो हे, दारुमारो मूल्य बताव्य ॥ ए देशी ॥

॥ मोहटे स्वरथी रोवती हे, बोले एणी परे वाणी ॥ सांनलजो वनदेवता हे, एह ते तेहज ठाण ॥ १ ॥ मारा कर्मविपाकनी हे ॥ ए आंकणी ॥ गति नवि जाखी जाय ॥ प्राणवल्लन विण माहरी हे, गति ते शी परे थाय ॥ २ ॥ मा० ॥ आर्यपुत्र मिल्या इहां हे, तापसिणी मुफ जाण ॥ प्रणम्यो ने उलखावीउं हे, नाम अने निज ठाण ॥ ३ ॥ मा० ॥ में उत्तर नवि वालीउं हे, नारी मतिथी रे ऊण ॥ मदन नेदाणी बोली नहीं हे, हवे कहो गति मुफ कुण ॥ ४ ॥ मा० ॥ पूंठे में जोयुं घणुं हे, पण नवि दीठो कोय ॥ आर्यपुत्र ते के नहीं हे, देव वेषधर होय ॥ ५ ॥ मा० ॥ हवे तो जे होय ते होजो हे, पण न विजोग खमाय ॥ मदन अनल बलती थकी हे, कोइ रीते न जीवाय ॥ ६ ॥ मा० ॥ अयमत्ता लता वेलमी हे, बांधीने गलपास ॥ मरवुं माहरे इणी परे हे, जीवननी नहीं आश ॥ ७ ॥ मा० ॥ सार करे जो मुफ पति हे, तापसिणी मुफ मात ॥ सरखीने संनलावजो हे, ए माहरो अवदात ॥ ८ ॥ मा० ॥ लाजथी हुं नवि कही शकुं हे; एम कही दीधो पास ॥ देवगुरु प्रणमी करी हे, फुलाव्यो ते निराश ॥ ए ॥ मा० ॥ एण अवसर हुं दोमती हे, जइ बेग्यो तस पास ॥ परलोके पण जायतां हे, नवि पूबे शाबास ॥ १० ॥ मा० ॥ तव सा चिंते धिग् मने हे, सांनल्युं सघलुं एण ॥ मुख नीचुं क-

रीने कहे हे, नवि कह्युं लज्जावशेण ॥ ११ ॥ मा० ॥ करशो म कोप मो ऊपरि हे, तव में जाख्युं तास ॥ तपसी कोप करे नहीं हे, धीरज धरी सुविलास ॥ १२ ॥ मा० ॥ कुलपति वचन अमोघ ठे हे, तुरतज मलशे तेह ॥ चाल आश्रम प्रत्ये जाइये हे, गया अमे इम करी नेह ॥ १३ ॥ मा० ॥ तापस कुमर जोवा जणी हे, मोकलीआ तिणी वार ॥ कथाविनोद करतां थका हे, बेठी पासे नारी ॥ १४ ॥ मा० ॥ तापस कुमर आवी कहे हे, अमे नवि दीठो कोय ॥ कुमरी सहुने जलावीने हे, चाली खोलवा सोय ॥ ॥ १५ ॥ मा० ॥ जवितव्यताए देखामीयुं हे, मुऊने दर्शन तुऊ ॥ आश्रमपद चालो तुमे हे, जीवाडो एह गुऊ ॥ १६ ॥ मा० ॥ एम सांजली हुं चालीउं हे, आगल गइ तिणी वार ॥ आसन मुऊने आपीयुं हे, दीठी तिण समे नारी ॥ १७ ॥ मा० ॥ विलासवती मुऊ देखीने हे, ऊठी ऊजी थाय ॥ सखीउं साथे मोकले हे, अर्थ ते शौचने जाय ॥ १० ॥ मा० ॥ थयो मध्याह्नसमय जदा हे, फनसादिक फल आणी ॥ प्राणवृत्ति करावीने हे, आवी तापसिणी ते ठाण ॥ १ए ॥ मा० ॥ राजपुत्र सुणो वारता हे, अम घर पोहोता आय ॥ शी प्राहुणागति तुम करुं हे, वसन वल्कल फल खाय ॥ २० ॥ मा० ॥ पण ए विलासवती अठेहे हे, अधिकी जीवित पाहिं ॥ विधिए पूर्वे दीधली हे, फिरी अमे दीध उछाहिं ॥ ॥ २१ ॥ मा० ॥ एम कहीने रोवे घणुं हे, वारी में तिणी वार ॥ जगवती एम न कीजीये हे, जाणो स्वरूप संसार ॥ २२ ॥ मा० ॥ अग्निशाखे परणावीआं हे, फेरा फरीआं रे ताम ॥ जगवतीनी आणा लही हे, गयां सुंदरवन नाम ॥ २३ ॥ मा० ॥ सर्व ऋतु राढा मली हे, देखी पाम्या उल्लास ॥ सूतां पल्लव साथरे हे, कीधो काम विलास ॥ २४ ॥ मा० ॥ एणी परे रजनी निर्गमी हे, एम अनुक्रमे कोइ काल ॥ एक दिन शोजा वन तणी हे, देखे स्त्री असराल ॥ २५ ॥ मा० ॥ एम ए पंचम खंऊमां हे, जाखी अग्यारमी ढाल ॥ पद्मविजय ए रासमां हे, सुणतां मंगलमाल ॥ २६ ॥ मा० ॥ सर्व गाथा ॥ ३३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विनता शोजा वन तणी, जोती न खसे जाम; कुसुम वीणती किमहीके, उत्तर न दीये आम ॥ १ ॥ ठेढुं पट हुं एटले, नवि देखे मुऊ

नारी; अचरिजथी एम उंढीउं, तरुणी न देखे तिवार ॥ २ ॥ आर्यपुत्र हा एम लवे, पमी ते मूर्छा पामी; मन चिंत्युं में माहरे, कीधुं अवलुं काम ॥ ३ ॥ पट उंढ्यो पाछो करी, सिंच्युं जले शरीर; सज्ज थइ कहे शब्दथी, नयणे झरती नीर ॥ ४ ॥ नवि दीठा तुम नयणथी, तव में जाख्युं तास; हुं शुं जाणुं एहमां, जाखे नारी विज्ञास ॥ ५ ॥ केम नवि जाणो कहो तुमे, सर्व कह्युं तव साच; कामिनी पण परीक्षा करे, वस्त्रनी वात अवाच्य ॥ ६ ॥ काल गमावी केटलो, एक दिन में कह्युं एम; सुण सुंदरी निज देशमां, पोहोंचीए तिम करो प्रेम ॥ ७ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ अढीआनी ॥ देशी ॥

॥ पूछे जगवती ताम, जइये निज पुर ठाम ॥ जो आणा करो ए, महेर नजर धरो ए ॥ १ ॥ तेणीए आणा दीध, जिन्नपोत ध्वज कीध ॥ केइक दिन गया ए, केलि करे सया ए ॥ २ ॥ इण अवसर तिहां आय, निरजामक चित्त लाय ॥ नावडे बेसीने ए, खामीमां पेसीने ए ॥ ३ ॥ मुझने कहे एम वात, द्वीप कमाह विख्यात ॥ रहे ते वाणीउं ए, सार्थप जाणीउं ए ॥ ४ ॥ मलयदेश जणी जाय, तुम ए ध्वज देखाय ॥ मोकलीआ अमे ए, चालो तिहां तुमे ए ॥ ५ ॥ में कह्युं मारे नारी, कहो तो आवीये व्हारी ॥ ते कहे चालीये ए, विलंब न जालीये ए ॥ ६ ॥ पोहोता मोहोटे झिहाज, सारथवाह समाज ॥ तिणे आदर कर्यो ए, शुज स्थानक धर्यो ए ॥ ७ ॥ एक दिन पाछलो जाम, राति शेष रही ताम ॥ लघुशंका थइ ए, उठ्यो हुं तइ ए ॥ ८ ॥ तिण समे सारथवाह, जाग्यो देखी लाह ॥ चिंते ए रुअमी ए, नारी न कूअमी ए ॥ ए ॥ राति समय छे एह, कोइ न जाणे रेह ॥ दरियामां धरुं ए, नारी अंगीकरुं ए ॥ १० ॥ लघुशंकाने काम, बेठो जब तिणे ठाम ॥ नाख्यो हुं पड्यो ए, पुण्ये फलक जड्यो ए ॥ ११ ॥ पंच राति रह्यो मांहि, मलयकूल उछाहिं ॥ जलनिधि उतर्यो ए, जव नवे अवतर्यो ए ॥ १२ ॥ में मन चिंत्युं एम, सार्थवाहे कह्युं केम ॥ नारी लोजे करी ए, नहीं प्रयोजन वरी ए ॥ १३ ॥ एह विलासवती नारी, मुझ वियोग चित्त धारी ॥ नहीं जीवित धरे ए, आपघात करे ए ॥ १४ ॥ नवि जाणे ए शेठ, कीधी केवल वेठ ॥ नारी विना सही ए,

जीववुं मुऊ नहीं ए ॥ १५ ॥ निंबपादप तिहां देखी, गयो हुं सर्व उवेखी ॥ मरवा मन करी ए, जोयुं दिश फरी ए ॥ १६ ॥ दीठुं दूरथी तास, सरोवर एक अभिरास ॥ चकवे बोलतुं ए, मानुं ए रोवतुं ए ॥ १७ ॥ भ्रमर गुंजारवे गाय, मानुं वली नाटक थाय ॥ कल्लोल मिष धरी ए, उंची बांह करी ए ॥ १८ ॥ दीठो हंस तिहां एक, नारीवियोगी छेक ॥ करुण स्वरे रुवे ए, आंखे आंसु चुवे ए ॥ १९ ॥ क्षण रोवे क्षण गाय, अन्य हंसी जोइ धाय ॥ विभ्रम आणतो ए, निज स्त्री मानतो ए ॥ ॥ २० ॥ जाणी हंसी अन्य, खेद करे ते विखिन्न ॥ मरवा मन करे ए, शोक घणो धरे ए ॥ २१ ॥ मूर्छा पामे तेह, वली चेतन लहे जेह ॥ इत्यादिक सहु ए, दीठां लक्षण बहु ए ॥ २२ ॥ कस्यो विचार में ताम, दुःखीउ ए पण आम ॥ एम जाणी करी ए, पंक्तिते परिहरी ए ॥ २३ ॥ इणी परे चिंतवुं जाम, फिरतो हंस ते ताम ॥ हंसलीने मल्यो ए, दैवे विरह टल्यो ए ॥ २४ ॥ सा पण दुर्बल अंग, कूजित न करे चंग ॥ शोके शक्ति नहीं ए, बिहुं हरख्यां सही ए ॥ २५ ॥ मुऊ मन चिंता थाय, जीवतां संपद पाय ॥ विरह दूरे टले ए, कांता आवी मले ए ॥ ॥ २६ ॥ कुलपतिए कह्युं नारी, सुख भोगवी संसार ॥ परभव साधशे ए, भव सफलो थशे ए ॥ २७ ॥ तिणे मरशो नहीं नारी, कर्म विचित्र अवधार ॥ एहने खोलवी ए, नवि जाये भोलवी ए ॥ २८ ॥ नारिंगफलनो आहार, करीने फिरे अपार ॥ सायरने तटे ए, दुःख जिणथी मिटे ए ॥ २९ ॥ पंचम खंडे ढाल, बारमी एह रसाल ॥ पद्मविजये कही ए, भविजने सर्दही ए ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ ३७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अर्ध जोजन गयो आगले, आवतुं फलक ते एक; दीठुं ते में दृष्टिथी, तीरे गयो अतिरेक ॥ १ ॥ तीरे आव्युं ते तुरत, विलासवती विलग्ग; नयणे दीठी नेहशुं, उपन्यो अति उमंग ॥ २ ॥ अबलाए मुऊ उंलख्यो; आश्वासना में आपी; पूछ्युं ए शुं निपन्युं, पभणे ते मुऊ पाप ॥ ३ ॥ स्वामी परीक्षा सायरे, जाण्युं सघले जाम; सार्थवाह धरी शोकने, कहे मुऊ पऊवा काम ॥ ४ ॥ परिजनशुं हुं परिवरी; वास्यो सारथवाह; रात गइ उग्यो रवि, थयुं तोफान अथाह ॥ ५ ॥ जिहाज भांग्युं

जन सहु गयां, में तुम पुण्य प्रमाण; पाम्युं तिहां एक पाटीयुं, जलनिधि लंघी जाण ॥ ६ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ ढोला रहो तो हुं रांधुं खीचमी ॥ ए देशी ॥

॥ तिहां में मने एणी परे चिंतव्युं, अहो मायावी शिरदार ॥ साजन सुणो हे ॥ अध्यवसाय हीणा घणा, ए सारथवाह असार ॥ १ ॥ सा० ॥ जुर्ज जुर्ज कर्मविटंबणा, कांय कर्म करे ते होय ॥ सा० ॥ जु० ॥ ए आंकणी ॥ अथवा ए अचरिज को नहीं, कांय कारणथी होय काज ॥ सा० ॥ पण विण कारण नवि होय, कांय पापथी केम होय राज ॥ ॥ सा० ॥ २ ॥ जु० ॥ पूछे विलासवती तुमे केम पड्या, तव में कीध मन विचार ॥ सा० ॥ दोष न कहीये पारका, एम चिंतवी बोल्यो तिवार ॥ ॥ सा० ॥ ३ ॥ जु० ॥ परमादे हुं पमी गयो, जड्युं फलक ते तुझ परे मुझ ॥ सा० ॥ उतर्यो जलनिधि अनुक्रमे, फरतां तुझ मलीर्ज ए गुझ ॥ सा० ॥ ४ ॥ जु० ॥ कहे नारी हुं तरशी बुं घणी, तव में कह्युं सांजल वात ॥ सा० ॥ सरोवर ढूकडुं इहां थकी, चालो तिहां जइये सुखशात ॥ सा० ॥ ५ ॥ जु० ॥ कांय नारी नितंबना जारथी, वली समुद्रमां उपनो थाक ॥ सा० ॥ थोडुं चाली तव थाकती, नवि चाली शकुं सुणो वात ॥ ॥ सा० ॥ ६ ॥ जु० ॥ तव म्हें कह्युं ए वम तले, तुं बेश लेइ आवुं नीर ॥ सा० ॥ नलिनीपत्र दमीर्ज करी, तव बोली थइ ते धीर ॥ सा० ॥ ७ ॥ ॥ जु० ॥ तुम दर्शनना सुख आगले, मुझ तरष न पीडे कांय ॥ सा० ॥ में कह्युं धीरज धारीये, जाणजे जल लेइने आय ॥ सा० ॥ ८ ॥ जु० ॥ नयनमोहन पट उढ्य तुं, जिम अटवीमां विघ्न न थाय ॥ सा० ॥ पल्लवशय्या पाथरी, न्यग्रोध हेठल ते ठाय ॥ सा० ॥ ए ॥ जु० ॥ वात मनावी बल थकी, गयो जल लेवा तेणी वार ॥ सा० ॥ जल फनसादिक फल प्रत्ये, लेइ आव्यो वर आहार ॥ सा० ॥ १० ॥ जु० ॥ नयनमोहन पट मूकी तुं, पीयो पाणी लाव्यो तेह ॥ सा० ॥ तोही उत्तर नवि दीये, में कह्युं हांसी करो केह ॥ सा० ॥ ११ ॥ जु० ॥ तोपण जब बोली नहीं, तब में एम चिंतन कीध ॥ सा० ॥ इहां तो ए रमणी नथी, अन्यथा केम बोल न दीध ॥ सा० ॥ १२ ॥ जु० ॥ साथले फरश्यो कर जदा, तोपण

नवि आवी हाथ ॥ सा० ॥ वली मावुं लोचन फरकीयुं, पमीयुं करमांथी पाथ ॥ सा० ॥ १३ ॥ जु० ॥ खेद लह्यो शंका थइ, खोलवा मांमी ते नारी ॥ सा० ॥ देवी देवी मुख जंपतो, किहां गइ मुझ प्राण आधार ॥ सा० ॥ १४ ॥ जु० ॥ वेलुथले देखे तिहां, अजगरघसणी दुःखदाय ॥ ॥ सा० ॥ ते अनुसारे हुं चालीउं, दीठो वनगहन सवाय ॥ सा० ॥ १५ ॥ जु० ॥ कुख नवि नेत्र रातमां, गलतो वली तेहज पट्ट ॥ सा० ॥ महाकाय अजगर तिहां, देखी थइ मुझ चटपट्ट ॥ सा० ॥ १६ ॥ जु० ॥ मारी विलासवती एणे, तेणे अवसर मुझ गइ शान ॥ सा० ॥ रात दिवस शीत उष्णने, न लहुं वस्ति के रान ॥ सा० ॥ १७ ॥ जु० ॥ सुख दुःख उत्सव आपदा, वली चालतो के रह्यो ठाय ॥ सा० ॥ कांय मरण जीवित पण नवि लहुं, ए अवस्था कांय न कहाय ॥ सा० ॥ १८ ॥ जु० ॥ मूर्छाए धरणी ढल्यो, जाणीये गया तिहां मुझ प्राण ॥ सा० ॥ वली सायरनी लहेरे करी, चेतना लही रोउं अजाण ॥ सा० ॥ १९ ॥ जु० ॥ ए देह सोंपुं अजगर प्रत्ये, थाये उदरमां देवीसंग ॥ सा० ॥ जव अजगर पासे हुं गयो, तिणे संकोच्युं निज अंग ॥ सा० ॥ २० ॥ जु० ॥ में जाण्युं मुआ पण दोहिलुं, ए नारीनुं मलवुं थाय ॥ सा० ॥ अजगरने क्रोध पमामवा, कस्यो मस्तक उपर घाय ॥ सा० ॥ २१ ॥ जु० ॥ नयथी तेणे पट पाठो वम्यो, लेइ नारी तेणे बहुमान ॥ सा० ॥ हृदये देइ मन चिंतवे, ए पटफांसे तजुं प्राण ॥ सा० ॥ २२ ॥ जु० ॥ प्रेम विलुझो ए प्राणीउं, मन चिंतवे आल पंपाल ॥ सा० ॥ सुखीआ निसनेही मुनि, जिणे ठोमी सयल जंजाल ॥ सा० ॥ २३ ॥ जु० ॥ पंचम खंडे ए तेरमी, कही ढाल अति सुरसाल ॥ सा० ॥ कवि पद्म कहे श्रोता सुणो, सुणतां होय मंगलमाल ॥ सा० ॥ २४ ॥ जु० ॥ सर्व गाथा ॥ ४०३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सूती जिहां श्यामा हती, तिहां वम तले ततकाल; शाखाशुं फांसो दीउं, करवाने में काल ॥ १ ॥ झुलायो हुं जेटले, रुंधायो तिणे रान; कंठ तिणे कानन नम्युं, सघली गइ तव शान ॥ २ ॥ पेसे गगन पातालमां, नयन ते नीकलीयांइ; अननुनूत ते अनुनव्युं, मुंझाणो मन मांहि ॥ ३ ॥ पाणिवलने पांतरे, स्वपन परे सुखवास; दीठो ऋषि एक दृष्टिथी, सिंचे

जल आसास ॥ ४ ॥ चेतन पामी चिंतवुं, अहो न मूउं आज; तापसने कह्युं ए तुमे, कीधुं शाने काज ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ सोनाने केरुं मारुं बेरूलुं रे लो, रूपला इंढोणी हाथ ॥

॥ मारा वाहलाजी रे ॥ हवे न बोडुं तोरी चाकरी रे लो ॥ ए देशी॥

तापस कहे सुणय वातमी रे लो, दूरथी दीठो तुऊ ॥ मारा वालाजी रे ॥ कुसुम लेवा हुं आवीयो रे लो, करुणा उपनी मुऊ ॥ मा० ॥ १ ॥ एम मरण नवि किजीये रे लो ॥ ए आंकणी ॥ कोइ उत्तम जन आचरे रे लो, निंदित मारग एह ॥ मा० ॥ कारण पूबी निवारीये रे लो, चिंतव्युं एम धरी नेह ॥ मा० ॥ २ ॥ एम० ॥ उतावला आवतां थकां रे लो, तें तो कीधुं ए काम ॥ मा० ॥ मा साहसे एम बोलतो रे लो, दोडी आव्यो आम ॥ मा० ॥ ३ ॥ एम० ॥ ताहरो पास त्रूटी गयो रे लो, तुं पमीउ तव हेठ ॥ मा० ॥ में सिंच्यो जलथी तुने रे लो, आयु प्रमाणे होय नेठ ॥ मा० ॥ ४ ॥ एम० ॥ एहवुं तुं केम आचरे लो, तापस पूबे एम ॥ मा० ॥ लाजे उत्तर नवि में दीयो रे लो,तापस कहे धरी प्रेम ॥ मा० ॥ ५ ॥ एम० ॥ तपसी मात पिता समां रे लो, कहो मूकी खलखंच ॥ मा० ॥ अणजाण्यो ते शुं करे रे लो, कारजनो परपंच ॥ मा० ॥ ६ ॥ एम० ॥ तव में धुरथी जाखीयुं रे लो, निपन्युं जे वृत्तांत ॥ मा० ॥ तव संसार असारता रे लो, जाखे तेह महांत ॥ मा० ॥ ७ ॥ एम० ॥ शरदमेघ सम आउखुं रे लो, कुसुमित तरु सम ऋद्धि ॥ मा० ॥ विषय स्वप्न सम जाखीआ रे लो, संजोग विजोगशुं गिद्ध ॥ मा० ॥ ८ ॥ एम० ॥ बांड्य तुं ए व्यवसायने रे लो, धर्म विना केम सुख ॥ मा० ॥ में कह्युं साचुं ऋषि कहो रे लो, पण मुऊ प्रेयसी डुःख ॥ मा० ॥ ए ॥ एम० ॥ तेणे नवि विरह खमी शकुं रे लो, मरण अधिक मुऊ डुःख ॥ मा० ॥ तिणे मुऊ मुआ जिम ए मिले रे लो, तेम जाखो करो सुख ॥ मा० ॥ १० ॥ एम० ॥ तपसी कहे तुमे सांजलो रे लो, मलय पर्वत ए नाम ॥ मा० ॥ मनोरथपूरक टुक बे रे लो,मनचिंतित करे काम ॥ मा० ॥ ११ ॥ एम० ॥ तेह उपरे चढी चिंतवो रे लो, जे मनमां अजिप्राय ॥ मा० ॥ ऊंपा करी ते पामीये रे लो, सुणी प्रणम्यो ऋषिपाय ॥ मा० ॥ १२ ॥ एम० ॥ चाल्यो हुं ते पर्वते रे लो, पोहोतो

त्रीजे दिन्न ॥ मा० ॥ तिहां चम्री में चिंतव्युं रे लो, प्रिया उपरे मुज मन्न ॥ मा० ॥ १३ ॥ एम० ॥ झंपा कस्यो में जेटले रे लो, अहो अहो प्रमाद ॥ मा० ॥ विद्याधरे एम बोलतां रे लो, जलप्यो धरी विषवाद ॥ मा० ॥ ॥ १४ ॥ एम० ॥ चंदनलताना गेहमां रे लो, लावी आश्वास्यो तेण ॥ ॥ मा० ॥ रे महापुरुष शुं तुं करे रे लो, उत्तम आकारेण ॥ मा० ॥ १५ ॥ ॥ एम० ॥ कहे तुज कारण शुं अछे रे लो, तव में कह्यो संबंध ॥ मा० ॥ ऋषिए एह बतावीउं रे लो, कामित पम्रण निबंध ॥ मा० ॥ १६ ॥ एम० ॥ तव कांयक हसीने कहे रे लो, विद्याधर एम वाणी ॥ मा० ॥ स्नेहकायर अहो मानवी रे लो, स्नेह ते डुःखनी खाणी ॥ मा० ॥ १७ ॥ एम० ॥ स्नेहे विवेक रहे वेगलो रे लो, ॥ डुर्गति बांधव स्नेह ॥ मा० ॥ कुशल पक्ष शत्रु कह्यो रे लो, निवृत्ति अर्गला एह ॥ मा० ॥ १० ॥ एम० ॥ स्नेहे पराजव्या प्राणीआ रे लो, न गणे आयती काल ॥ मा० ॥ कालोचित नवि ते जुए रे लो, धर्म न सेवे रसाल ॥ मा० ॥ १ए ॥ एम० ॥ सिंह पंजरगतनी परे रे लो, समरथ थको सीदाय ॥ मा० ॥ तेणे तजीये ए स्नेहने रे लो, विवेकदीपके जुउं जाय ॥ मा० ॥ २० ॥ एम० ॥ कर्म विचित्र सवि जीवनां रे लो, केम गति होवे एक ॥ मा० ॥ मनवंछित फल साधवा रे लो, चउविह धर्म्मे विवेक ॥ मा० ॥ २१ ॥ एम० ॥ पंचम खंडे चौदमी रे लो, पद्मविजय कही ढाल ॥ मा० ॥ समरादित्यना रासमां रे लो, धर्मथी मंगलमाल ॥ मा० ॥ २२ ॥ एम० ॥ सर्व गाथा ॥ ४३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुणो दृष्टांत सोहामणो, एह तणे अधिकार; मलय देशमां गामडुं, कर्णिकार श्रीकार ॥ १ ॥ सक्किल शेठनी सुंदरी, सिंहा नाम सुजाण; पति उपर प्रेमज घणो, पतिने न अंश प्रमाण ॥ २ ॥ बिहुंने वात वणी इसी, एक दिन सुणीयुं एम; कामित पम्रण करी मरे, पामे वंछित प्रेम ॥ ३ ॥ पति चाल्यो प्रेमे करी, चिंतवे एणी परे चित्त; जार्या एह जवांतरे, नवि पामुं ए प्रीति ॥ ४ ॥ एम करी झंपा तिणे दीउं, सांजले सिंहा कान; इण धारुं मन एणी परे, मुज पति एह प्रमाण ॥ ५ ॥ विरह म थाउ जवांतरे, पतिरागे पमी तेह; कोण एहमां लहेशे कहो, दंपती निःसंदेह ॥ ६ ॥

जुक्ति रहित जाणी करी, कोण करे एह अकाज; सुणी जाएयुं में सयण ए, एहवुं जाखे आज ॥ ७ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ योगमाया गरबे रमे जो ॥ ए देशी ॥

॥ अजगरनी जे वातमी जो, में संजलावी तस कान जो ॥ त्रीजो दिन आज तेहने जो, कहे खेचर सुणो सुप्रमाण जो ॥ १ ॥ धीरजथी सवि संपजे जो ॥ ए आंकणी ॥ केटले वेगलुं ते वन्युं जो, में कह्युं दश जोजन थाय जो ॥ तव विद्याधर बोलीयो जो, तुं खेद म कर मन जाय जो ॥ ॥ २ ॥ धी० ॥ जीवे ले तुज प्रेयसी जो, तेहनो सांजल अधिकार जो ॥ विद्याधरनो अधिपति जो, चक्रसेन नामे अवधार जो ॥ ३ ॥ धी० ॥ तेणे अप्रतिहत चक्राजिधा जो, महाविद्या साधवा हेत जो ॥ पूर्व सेवा बार मासनी जो, हवे उत्तरने संकेत जो ॥ ४ ॥ धी० ॥ अमतालीश जोजन तणी जो, कांय क्षेत्रशुद्धि करी सार जो ॥ अजय देइ सहु जीवने जो, महा उद्यमथी तिण वार जो ॥ ५ ॥ धी० ॥ निज समजे विद्याधरा जो, तेहने एम हुकम ते कीध जो ॥ सात दिवस लगी सांजलो जो, सहु जीवनी हिंसा निषिद्ध जो ॥ ६ ॥ धी० ॥ मलय गिरि गुफा नामथी जो, सिद्धिनिलया अजिधान जो ॥ स्फाटिक मणि जपमालिका जो, एकाकी रह्यो तिणे थान जो ॥ ७ ॥ धी० ॥ सात लाख मांड्यो जापने जो, पूरा थया दिवस ते सात जो ॥ सिद्धि सवारे थायशे जो, तेणे जाणुं कुशलनी वात जो ॥ ८ ॥ धी० ॥ एटला क्षेत्रमां मरे नहीं जो, ए काममां सहु सावधान जो ॥ सांजली में पण चिंतव्युं जो, ए वात युक्ते परधान जो ॥ ए ॥ धी० ॥ पट उंढ्यो हतो एणीए जो, केम एकलो पट गले तेह जो ॥ मनुष्य गल्युं होय जो एणे जो, तो संकोचाये केम देह जो ॥ १० ॥ धी० ॥ में कह्युं खेचरने तिहां जो, मुज आशासना तुमे दीध जो ॥ थाउं मनोरथ तुम तणा जो, मुज अकुशल पक्ष निषिद्ध जो ॥ ११ ॥ धी० ॥ खोली लावुं माहारी प्रिया जो, मुज बोले खेचर ताम जो ॥ शाने कलेश करो तुमे जो, आज तो अमने एह काम जो ॥ १२ ॥ ॥ धी० ॥ काले सहु जेला मली जो, पामीशुं खबर ते तास जो ॥ मेलवशुं अमे तुमने जो, तुमे रहो इहां सुखवास जो ॥ १३ ॥ धी० ॥ मान्युं

वचन में तेहनुं जो, अर्ध पहोर रातिं रही शेष जो ॥ गगने उद्योत थयो तदा जो, गाय मंगल गीत विशेष जो ॥ १४ ॥ धी० ॥ देवविमान परे दीपतुं जो, आव्युं विद्याधरनुं विमान जो ॥ कहे खेचर मुऊ देखजो जो, विद्यासिद्धस्वामि निसान जो ॥ १५ ॥ धी० ॥ गयुं विमान तिहां कणे जो, वहु विद्याधर परिवार जो ॥ विहाणे मुऊने तेमी गयो जो, चक्रसेन समीप उदार जो ॥ १६ ॥ धी० ॥ करीय प्रणाम ऊन्ना रह्या जो, वर आसन दीधुं ताम जो ॥ वात सुणावी वेसीने जो, तव वोल्यो खेचर स्वामी जो ॥ १७ ॥ धी० ॥ मत संताप करो तुमे जो, तुम मेलवशुं आज नारी जो ॥ इणे समे दोय विद्याधरा जो, प्रणमी कहे एक तिवार जो ॥ १७ ॥ धी० ॥ तुम आणाथी वनांतरे जो, ज्रमतां एक दीठी नार जो ॥ अजगर ज्ञयथी नासती जो, आर्यपुत्र हा करती होकार जो ॥ १ए ॥ धी० ॥ वस्त्र लीधुं तेणे अजगरे जो, लाव्या मलयशिखर अमे नारी जो ॥ शून्य हृदय क्षण रही करी जो, उठी क्षण नयनमां वारि जो ॥ २० ॥ धी० ॥ अमे कह्युं ज्ञय न करो तुमे जो, तुऊ किहां गयो ज्ञरतार जो ॥ सा कहे पाणी लेवा गयो जो, तव अमे करी शोध अपार जो ॥ २१ ॥ धी० ॥ पण नवि अमने ते मल्यो जो, सा नवि लीये अन्न ने पान जो ॥ हा हा आर्यपुत्र राखीये जो, एम कहेती रहे तिणे थान जो ॥ २२ ॥ ॥ धी० ॥ खेचरपति मुऊने कहे जो, तुमे जुर्ज तुमची के नांहि जो ॥ साथे खेचर हुं तिहां गयो जो, जोइ पाम्यो अति उत्साह जो ॥ २३ ॥ धी० ॥ देइ आश्वासना तिहां कणे जो, लावी दीये खेचर आहार जो ॥ खेचरपतिने आवी कह्युं जो, महाराज ए माहरी नारी जो ॥ २४ ॥ धी० ॥ वात घणी रुअमी थइ जो, तुम जांग्या डुःख वियोग जो ॥ कहो ते वली तुम शुं करुं जो, तुमे दीसो उत्तम कोइ लोग जो ॥ २५ ॥ धी० ॥ समरादित्यना रासमां जो, कही पंचम खंडे रसाल जो ॥ पद्मविजय सोहामणी जो, रुमी पन्नरमी एह ढाल जो ॥ २६ ॥ धी० ॥ सर्व गाथा ॥ ४६३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देखी लक्षण देहनां, एणी परे चिंत्युं आप, विद्याधरपति वल्लहो; पामीश प्रवल प्रताप ॥ १ ॥ अजितवता विद्या अछे, ते आपुं हुं तुऊ; उत्तम पुरुष में उलखी, मोद थयो एम मुऊ ॥ २ ॥ प्राये अविघन पा-

मशो, परगट जास प्रजाव; बालपणे वतलावीयो, जोशीए एह जमाव ॥ ॥ ३ ॥ उदय तेहनो आवीयो, एम विचारी आप; विद्या लीधी वेगशुं, उत्तम सुणी आलाप ॥ ४ ॥ विद्याधर गया वेगशुं, आखी साधन आम; साधन खेत्र शिरोमणि, केम करुं विकट ए काम ॥ ५ ॥ उत्तर साधक नहीं इहां, संजास्यो वसुजूति; इण अवसर आवी मिले, आखुं ते अद्भुत ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ बावा किसनपुरी तुम विना मढीआं उजर पमी ॥ ए देशी ॥

॥ विद्यासिद्धि सूचवे तेह, आव्यो वसुजूति ससनेह ॥ मन हरख न माय, आव्याजी जले रे तुमे अहोजी अहो ॥ तापसनो पहेस्यो डे वेश; आलिंगन कस्यो हर्ष विशेष ॥ १ ॥ मन० ॥ में मन चिंतव्युं तापस आम, आलिंगन दीये शाने काम ॥ मन० ॥ देवी सहित हुं प्रणम्यो तास, चिरंजीव कहे मुजने जास ॥ २ ॥ मन० ॥ अविधवा थाउ नारी आशीष, शब्दे उलखी धूण्युं में शीश ॥ मन० ॥ आणंद आंसु नयणे न माय, आसन आप्युं वेगा थाय ॥ ३ ॥ मन० ॥ चरण पखाले नारी तिवार, वृत्तांत पूछे करावी आहार ॥ मन० ॥ किहांथी आव्या ने सायर तस्या केम, ते कहे फलक लह्युं थयुं क्षेम ॥ ४ ॥ मन० ॥ पांचे दिवसे पाम्यो पार, मलयतटे उतस्यो तिणी वार ॥ मन० ॥ आव्यो तापस जोवा तीर, आश्वास्यो मुज देखी पीर ॥ ५ ॥ मन० ॥ कुलपति पासे मुज लेइ जाय, में वंद्या तव आशीषदाय ॥ मन० ॥ आहार करावी पूछी वात, में पण कह्यो सघलो अवदात ॥ ६ ॥ मन० ॥ में कह्युं तापस कीजे स्वामि, मित्र विजोगीने ए अजिराम ॥ मन० ॥ कुलपति कहे कर्त्तव्य डे एह, पण नवि त्रूटे तंतुसनेह ॥ ७ ॥ मन० ॥ दुःकर कर्म तणा रे विवाग, दुःकर जाख्यो विषयनो त्याग ॥ मन० ॥ मुनिनो मारग दोहिलो जाणी, पालवुं दोहिलुं वली अपिछाणी ॥ ८ ॥ मन० ॥ समजीने तजीये संसार, पण एक सांजल्य बीजो प्रकार ॥ मन० ॥ ज्ञाने करी जाणुं हुं एम, मित्र ताहरो मलशे सुख क्षेम ॥ ए ॥ मन० ॥ सेवा करतो रहे अम पास, मुनि वचने थइ मलवानी आश ॥ मन० ॥ तिहां रहेतां थयो एटलो काल, कुलपति सेवा करतो विशाल ॥ १० ॥ मन० ॥ आजथी त्रीजे दिवस अतीत, एक तापस कहे वात प्रतीत ॥ मन० ॥ कुलप-

ति आगल हरख धरेह, मुऊ सांजलतां सर्व कहेह ॥ ११ ॥ मन० ॥
ताहरुं वृत्तांत में सुणीयुं कान, में कह्युं मित्र ए माहरुं ठान ॥ मन० ॥
कुलपतिनी आणा लही ताम, काले हुं आव्यो ते तीरथ ठाम ॥ १२ ॥
॥ मन० ॥ खेचरे कह्यो मुऊ तुऊ अधिकार, खोलतो आव्यो एणहिज
ठार ॥ मन० ॥ तव में विद्याप्रापति वात, संजलावी तस हाथ ते थात
॥ १३ ॥ ज्योतिषी वचन मिथ्या नवि थाय, अहो जावी सहु वनतुं जा-
य ॥ मन० ॥ करो मन इच्छित ए तुमे काम, थाशो अवश्य विद्याधर स्वामी
॥ १४ ॥ मन० ॥ पूर्वे सेवा करवी षट मास, मांऊी मलयशिखर अज्यास
॥ मन० ॥ मौनपणे ब्रह्मचारी थाय, परिमित आहार फलादि कराय ॥
॥ १५ ॥ मन० ॥ कह्युं में विलासवती थयुं काम, षट मास ऊःकर गया
मुऊ आम ॥ मन० ॥ हवे अहोरातिनुं काम ठे जोय, कहे विलासवती सुणो
सोय ॥ १६ ॥ मन० ॥ तुम मनोरथ पूरा थाउ, वहेला वहेला थाउ खेचर-
राउ ॥ मन० ॥ कायर हृदय जाणी में तेह, मलयगिरि दरीमां ठवी एह
॥ १७ ॥ मन० ॥ मांऊी प्रधान सेवा हवे तब, देवता ठवी करी कुसुमनो
जब ॥ मन० ॥ दिशापाल कस्यो वसुजूति, पदमासन बांध्युं अद्भुत ॥
॥ १८ ॥ मन० ॥ मुद्रामंरूल कीधां आप, मंत्र लक्नो मांड्यो जाप ॥
॥ मन० ॥ कांइक वेला वीती जाम, आकाश हसवा लाग्युं ताम ॥ १९ ॥
॥ मन० ॥ गाज अकाले के सायर क्षोज, पृथवीकंप के देखी अथोज
॥ मन० ॥ मदमातो मयगल सकषाय, जलकणीआ शीतल ठंटाय ॥ २० ॥
॥ मन० ॥ विलासवतीने आक्रमे तेह, क्रोधे कुंरूलित सुंढी करेह ॥ मन० ॥
गुलगुल करतो अंकुश कान, सन्मुख आवतो देखे ते थान ॥ २१ ॥ मन० ॥
हा आर्यपुत्र एम करती नारी, नवि अखोजाणो धीरज धारी ॥ मन० ॥
एह विजीतिका गइ असराल, आवी पिशाचिणी अति विकराल ॥ २२ ॥
॥ मन० ॥ वरणे काली रातां नयण, अट्टाट्ट हास्य करे निज वयण ॥
॥ मन० ॥ करपदनी गले माला धारी, गगन उद्योत करे तिणी वार ॥
॥ २३ ॥ मन० ॥ शोणित खरड्युं चर्म ते जाण, वस्त्र ते पहेर्युं ऊःखनी
खाणी ॥ मन० ॥ रुधिर पीती जाजन कपाल, विलासवती वाम कर सं-
जाल ॥ २४ ॥ मन० ॥ रे रे ऊष्ट विद्याधर संग, ऊरविदग्ध थयो मनरं-
ग ॥ मन० ॥ किहां जाइश मुख कहेती एम, कोजना करती आवी तेम

॥ २५ ॥ मन० ॥ तेहथी नवि क्षोजाणो धीर, हवे शाकिण आवी करे पीर ॥ मन० ॥ विण वादल गरजारव थाय, नाचे धरू वेताल बहु धाय ॥ २६ ॥ मन० ॥ वरसे रुधिर धारा असराल, नगन ऊर्ध्व केश अति विकराल ॥ मन० ॥ बोले शिवा करती फेतकार, तोपण नवि क्षोन्यो हुं लगार ॥ २७ ॥ मन० ॥ हवे चोथो उपसर्ग ते थाय, राक्षसिणी आवी लेइ जाय ॥ मन० ॥ कूपमां नाख्यो जेम पाताल, चंड सूर्य नाठा सम काल ॥ २८ ॥ मन० ॥ दाढा जेहनी अति विकराल, मनुष्यमस्तकनी पहेरी माल ॥ मन० ॥ नाभि लगे घण लटके जास, मनुज कलेवर कापे विलास ॥ २९ ॥ मन० ॥ मार मार कहे मुखे आलाप, महा विकराल तणुं नहीं माप ॥ मन० ॥ तोपण नवि बीहीनो हुं लगार, चार घमी रहे राति तिवार ॥ ३० ॥ मन० ॥ मंत्र थयो समापत प्राय, सुगंध तव वायरा हवे वाय ॥ मन० ॥ फूलवृष्टि जय जयरव थाय, किन्नरीउं तिहां मंगल गाय ॥ ३१ ॥ मन० ॥ थयो उद्योत आकाशे जाम, अजितबला आव्यां हवे ताम ॥ मन० ॥ देवदेवी बहु परिवर्यां तेह, स्तवना करे शुज माहरी एह ॥ ३२ ॥ मन० ॥ पंचम खंमे सोलमी ढाल, सांजलतां होय मंगलमाल ॥ मन० ॥ समरादित्यना रासमां सार, पद्मविजय कहे जय जयकार ॥ ३३ ॥ मन० ॥ सर्व गाथा ॥ ५०२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अहो ताहरो उपयोग ए, अहो व्यवसाय अनंत; अहो पुरुषोत्तमपणुं अति, सिद्ध थइ हुं संत ॥ १ ॥ विरम तुं ए व्यवसायथी, तव में चिंत्युं एम; मंत्र अधूरो माहरे, कहो ठलमां पडुं केम ॥ २ ॥ मंत्र पूरो करी प्रणमीउं, इण अवसर तिहां आय; विद्याधरनां वृंद जे, रूप मनोहर राय ॥ ३ ॥ सुणी देवी कहे ए सहु, प्रेमे तुज प्रणमंत; चंमसिंह प्रमुख चतुर, भृत्य जाव जावंत ॥ ४ ॥ तुम पसाय एम कही तुरत, अंगीकरे अतिरेक; कहे देवी तुज कीजीये, खेचरपति अनिषेक ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ सीरोहीरो शालू हो, के उपरे जोधपुरी ॥ ए देशी ॥

॥ में कह्युं मुज मित्रने हो, के वली नारी देखे ॥ तब बोलाव्यो तस हो, के नवि बोले रेखे ॥ तस जोयो जइने हो, के नवि दीठो जाम ॥ व-

हु विद्याधरशुं हो, के गगन गयो ताम ॥ १ ॥ तिहां एक निकुंजमां हो, के अरहो परहो नमतो ॥ अम देखी क्रोधे हो, के अतिशय धमधमतो ॥ दोय करमां रूखनी हो, के शाखा लेइ कहे ॥ मुऊ मित्रनी नारी हो, के दुष्टो केम रहे ॥ २ ॥ ते सांजली चिंतव्युं हो, के देवी अपहरी ॥ मुऊ फोक परिश्रम हो, के पूबुं वात खरी ॥ रे वसुजूति कहो हो, के देवी किहां गइ ॥ वसुजूति न सांजले हो, के वचन ते थिर थइ ॥ ३ ॥ खेचरनी माया हो, के ए मनमां धरी ॥ कस्यो घा मुऊ उपर हो, के तेणे आकर्ष करी ॥ वंचावी गातने हो, के शाखा अपहरी ॥ कर पकमी नाखुं हो, के देवी किणे हरी ॥ ४ ॥ फिरी फिरी जब पूबुं हो, के तव उपयोग करी ॥ मुऊ उंलखी बोल्यो हो, के सांजल वात खरी ॥ तुऊ विद्या साधंतां हो, के राति ते दोय जाम ॥ विद्याधर टोलुं हो, के आव्युं एक ताम ॥ ५ ॥ उपसर्गनी शंका हो, के में मनमां आणी ॥ थोमी थइ वेला हो, के तव बोले राणी ॥ हाहा आरजसुत हो, के मुऊने लेइ जाय ॥ राख राख वसुजूति हो, के मुऊ आपद थाय ॥ ६ ॥ सुणी मुऊ आशंका हो, के संभ्रमथी थइ ॥ तव तेह गुफामां हो, के में जोयुं जइ ॥ नवि दीठी ज्यारे हो, के धायो विमान पुठे ॥ नवि जाणुं किहां गइ हो, के तव चिंतुं ऊठे ॥ ७ ॥ हरी खेचरे देवी हो, के पण ए किहां जाशे ॥ मुऊ क्रोधअगनिमां हो, के एह पतंग थाशे ॥ किसी फकर म करशो हो, के अजितबला सीधी ॥ कहे देवी तिणे समे हो, के शी चिंता लीधी ॥ ८ ॥ कही वात सवे तस हो, के देवी क्रोधे चढी ॥ दिश दिश तिणे मूकी हो, के खेचर श्रेणी वमी ॥ एक खेचर आवी हो, के पवनगति नाखे ॥ ए स्त्री में दीठी हो, के अंनगरति राखे ॥ ए ॥ सुणो नग वैताढ्ये हो, के तुम आणाए गयो ॥ रहनेउर चक्कवाल हो, के नयर तिहां नयो ॥ उद्वेग घणो करे हो, के तिहांना सहु लोका ॥ गाम गाम पूजा बलि हो, के होम हवन थोका ॥ १० ॥ एक खेचरने में हो, के पूब्यो अवदात ॥ कहे ते अम स्वामी हो, के अनंगरति थात ॥ कंदर्पना वशथी हो, के एक दिन अपहरी ॥ विद्यासाधकनी हो, के नारी ते जूचरी ॥ ११ ॥ नवि इछे नारी हो, के तव ते हठ करी ॥ लेवा परवर्यो हो, के सुणी हुं द्वेष धरी ॥ कह्युं ठे कोइ पासे हो, के लावो

खड्ग मुदा ॥ एम करीने उव्यो हो, के क्रोध धरी तदा ॥ १२ ॥ कहे पवनगति तव हो, के प्रसन्न थइ सुणो ॥ ए वात कहुं बुं हो, के नहीं प्रत्यक्ष मुणो ॥ सिंहिणीने श्वानज हो, के केम पराजवे ॥ तव में कह्युं आगल हो, के वात कहो हवे ॥ १३ ॥ हुं बेठो तिहां रे हो, के वात कहे आगे ॥ असमंजस देखी हो, के शील तणे रागे ॥ महाकाली देवी हो, के इहां उपसर्ग करे ॥ जूमिकंप ने विजली हो, के बहु निर्घात धरे ॥ १४ ॥ आवी कहे नृपने हो, के उत्तम पुरुष थइ ॥ केम नीचनुं कारय हो, के करे तुऊ मति गइ ॥ तव अलगो उन्नों हो, के कायाए करी ॥ पण नहीं कांय मनथी हो, के एहवी वात धरी ॥ १५ ॥ पुरदेव जो कोपे हो, के नगर विनाश करे ॥ ते कारण मांड्यां हो, के शांति करम नगरे ॥ तव में तस पूब्युं हो, के कहो सा किहां रहे ॥ नृपजुवन उद्याने हो, के आंम्र तले ते कहे ॥ १६ ॥ हवे हुं तिहां पहोतो हो, के गगन तले रह्यो ॥ तेहने हुं देखी हो, के मनमां गहगह्यो ॥ विद्याधर वृंदे हो, के परवरी ते रही ॥ कर देइ गलोथो हो, के जूख तरष सही ॥ १७ ॥ तुमची विण आणा हो, के हुं न गयो पासे ॥ तिहांथी तुम पासे हो, के आव्यो उल्लासे ॥ हवे तुम मनगमतुं हो, के काम ते कीजीये ॥ पूछे वसुजूतिने हो, के तव ते वदीजीये ॥ १८ ॥ देवता उपदेशे हो, के लाज्यो तेह घणुं ॥ तिणे दूतने मूकी हो, के किजे जाणपणुं ॥ ढाल पंचम खंडे हो, के सत्तरमी गणी ॥ समरादित्य रासमां हो, के पद्मविजय जणी ॥ १९ ॥ सर्व गाथा ॥ ५२६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ब्रह्मदत्त खेचर जणे, ए शुं बोल्या आम; रमणी निज कोइ राखतां, इयो तिहां वचननो साम ॥ १ ॥ समरसेन कहे साचवुं, एह न खमाये आज; वायुवेग मन वांबियो, कहे न सीज्युं काज ॥ २ ॥ वायुमित्र कहे वेगशुं, जाणो तुमे सुजाण; चंद्रसिंह हसीउं चतुर, एह वात अप्रमाण ॥ ३ ॥ सुजट वीररस सामटा, समजाव्या सुविशेष; राज्यस्थिति ए राखवी, दूत मूको तस देश ॥ ४ ॥ पवनगति तेह पेखीउं, दूरस करीने दूत; समजावी सघली स्थिति, आखी निज आकूत ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ राग वंगालनी देशी ॥

॥ अनंगरति छे तिहां महाराय, दूत कहे जइ एम निरमाय ॥ सां- जन सांजलो ॥ अपजश केरुं कारण जेह, उत्तम पुरुष न आचरे तेह ॥ ॥ १ ॥ सा० ॥ लोकने हांसीनुं कारण थाय, अरिअण मनमां आनंद पाय ॥ सा० ॥ धीरज जेहथी नासी जाय, एम अवगुणनो होय समुदा- य ॥ २ ॥ सा० ॥ इह नव पर नव दोय विरुद्ध, कोण आचरे कहो म- हामति मुद्ध ॥ सा० ॥ परदारा हरवी महा पाप, चित्त विचारो राजन् आप ॥३॥ सा० ॥ मूको ए माठो व्यवहार, एम कहेवरावे सनत्कुमार ॥ सा० ॥ आपो मुज जाया तुमे आप, शाने उपजावो संताप ॥ ४ ॥ सा० ॥ बोल्यो तेह अनंगरति राय, कहेजे तुं तुज रायने जाय ॥ नारी नापीये ॥ ए तो पटराणी करी घर थापीये ॥ नारी० ॥ ए आंकणी ॥ नूचर मु- ज मनावे आण, सदसद् व्यवहारनो ए जाण ॥ ५ ॥ नारी० ॥ जिणे अंगीकरी तेहनी नारी, परनारी अम नहींअ लगार ॥ नारी० ॥ पाप पु- ण्य तो तिहां गणाय, घर मूकीने रणमां जाय ॥ ६ ॥ नारी० ॥ कहेवुं होय तस कहेजे जाय, आवीश हुं रण सन्मुख धाय ॥ नारी० ॥ सांजली दूत ते वलीउ खिप्प, पोहोतो विलासवतीने समीप ॥ नारी सांजलो ॥ ए आं- कणी ॥ खेद म करजो मनमां रेह, शोध लाधी छे तुमची एह ॥ नारी० ॥ थोमा दिनमां टलशे विजोग, मत करजो मनमां कांय शोग ॥ ७ ॥ ना- री० ॥ बोली विलासवती हवे ताम, आर्यपुत्र घरणी मुज नाम ॥ सा० ॥ तेणे मुजने नवि खेद ते कांय, पूछजो आर्यपुत्रने सुखसाय ॥ ए ॥ सा० ॥ वली आव्यो दूत बीजे दिन्न, संनलावे सनत्कुमारने कन्न ॥ सा० ॥ कटुक वयण सुणी जाग्यो क्रोध, थया उजमाल ते सघला जोध ॥ १० ॥ सा० ॥ अमरष धरतो मूके हुंकार, ब्रह्मदत्तने रणरस बहु सार ॥ सा० ॥ समरसेन करे नुजआस्फाल, रोषे नयण कर्यां विकराल ॥ ११ ॥ सा० ॥ भ्रकुटी चढावी नाखे दृष्टि, वायुवेग खड्गे करि मुष्टि ॥ सा० ॥ रिपुहृद- ये करे तिहांथी प्रहार, वायुमित्र तेहमां शिरदार ॥ १२ ॥ सा० ॥ मुज अंधार करे चंमसिंह, क्रोधानल जलतो अविह ॥ सा० ॥ पिंगलगंधार उछाले वांहि, मतंग धरती कंपावे त्यांहि ॥ १३ ॥ सा० ॥ अमितमेघ

हरख्यो मन मांहि, संगरआसन्न जाणी उत्साह ॥ सा० ॥ गिरीदरीमां पऋबंदा थाय, देवोसह हसीउं तिम जाय ॥ १४ ॥ सा० ॥ मरण आव्युं हवे ढूकडुं तास, तुमे कोप्या संग्राम निवास ॥ सा० ॥ तुमे रहो हुं जाउं खड्गसहाय, आवुं जूचरनुं वीर्य देखाय ॥ १५ ॥ सा० ॥ सहु कहे तुमचा करजो जाय, तेहनुं तेज तेहथी न खमाय ॥ सा० ॥ तो तुमची शी वात कहाय, इण समे अजितबला तिहां आय ॥ १६ ॥ सा० ॥ माहारे काजे रचीउं विमान, मित्र सहित बेठो तिणें थान ॥ सा० ॥ वाग्यां समरनां मंगल तूर, चाल्या विमान चढ्या बल जूरि ॥ १७ ॥ सा० ॥ जय जय होवे तेणी वार, गाम नगर पुर जोतां उदार ॥ सा० ॥ पोहोता वैताढ्य पर्वत पास, देवी आदेशे कस्या हेठ आवास ॥ १८ ॥ सा० ॥ सर्व विद्या वश करवा काज, अठम करी करे पूजा समाज ॥ सा० ॥ शेष विद्याधर आव्या पास, वात पोहोती अम शत्रु सकाश ॥ १ए ॥ सा० ॥ डुमुख नाम सेनापति जेह, मोकलीयो अम सनमुख तेह ॥ सा० ॥ पांचमे खंडे अढारमी ढाल, जाखी ए वर राग बंगाल ॥ २० ॥ ॥ सा० ॥ समरादित्यना रासमां सार, पद्मविजय कही जय जयकार ॥ सा० ॥ कायर ते थरहर कंपाय, शूरवीर सन्नद्ध ते थाय ॥ २१ ॥ सा० ॥ सर्व गाथा ॥ ५५२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सनमुख आव्यो बल सबल, सांजली थयो बहु शोर; खड्ग में लीधुं खांतशुं, जालिम करवा जोर ॥ १ ॥ दूत आव्यो डुमुख तणो, बोल्यो आवी वाणी; अनंगरतिनो आवीउं, सेनानी सपराण ॥ २ ॥ सांजलजो एक मन सवे, जूमिचरना भृत्य; कहेवराव्युं तिणे कोपशुं, सज्ज थाउं शुज रीति ॥ ३ ॥ अनंगरतिशुं आवीया, युद्ध करण जय काज; पण मुक कर तुमे पामजो, खरी उतारुं खाज ॥ ४ ॥ अनंगरति नवि आवीउं, सांजली सनतकुमार; मूक्युं खड्ग ते मानथी, खेचर बोल्या खार ॥ ५ ॥ चंडसिंह उठ्यो चटक, सेनानी थइ सार; आण आपो अम जणी; वलती म करो वार ॥ ६ ॥ आणा आपी आदरे, कुसुममाल तस कंठ ॥ नाखी सेनानी कीउं, आव्यो लही उत्कंठ ॥ ७ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥
॥ कन्नखानी देशी ॥

॥ सूररस पूर मुख नूर आणी घणो, चालीआ समरवर करण देश ॥ सिद्ध गंधर्व सुर असुर जोवा मिल्या, सुरवरे गगन न्नरीयुं विशेष ॥ १ ॥ सू० ॥ खेचरे संग्रह्यो हुं विमाने रह्यो, सार तरवार परहार पम्रतां ॥ मांहो मांहि न्नट लडे बेहु नायक अडे, करत बेहु हतप्रहत रोषे चढतां ॥ २ ॥ सू० ॥ चंम्रसीहो अबीहो कहे एहने, डुम्मुहो सम्मुहो आंहीं आयो ॥ रे डुराचार परहार कख्य आगले, तुऊ पराक्रमे मने न्नय न लायो ॥ ३ ॥ सू० ॥ करे गदा युद्ध मांडी तदा ते करे, चंम्रसिंह उपरे घात विरसो ॥ तेह वंचावीउं क्रोधथी चावीउं, घात खमी हवे जमराय सरिसो ॥ ४ ॥ सू० ॥ उत्तमांगे दीउं रंगे परहार तिम, रुधिर वमतो महा डुःख खमतो ॥ जय जयरव थयो तेह जमघर गयो, दल सयल जाय दिशिदिशि न्नमंतो ॥ ५ ॥ सू० ॥ कुसुमवुठि नइ तुठी चंम्रसिंहने, न्नढीउं वेयट्ट हवे कुमर निरतो ॥ रथनेउर चक्रवाल थाल पोहोता वही, दोय खेचर तस पास धरतो ॥ ६ ॥ सू० ॥ तेह जइने कहे तुं हजी किम रहे, जा तपोवन जपो देव जाणं ॥ अहव मुऊ कोह अनलोह पतंग सम, था हवे आहवे करत नाणं ॥ ७ ॥ सू० ॥ सांन्नली तिहां बली देहली तेहनी, धरणी आस्फालतो वयण जंपे ॥ एह न्नूगोयरो पोयरो शुं लहे, आणी मुऊ माणी एम किम पयंपे ॥ ८ ॥ सू० ॥ मुऊ कषायानले, ए बले किम नहीं, देख अंतर हवे रेख नांहि ॥ न्नूमि अति आवीउं म्रर मुऊ नावीउं, तुमे पण केम अन्नाण मांहि ॥ ९ ॥ सू० ॥ एम कही क्रोध लही सैन्य निजमां तदा, तूरि वजम्रावतां समर न्नेरी ॥ पढम रण देखवा शक्ति निज लेखवा, सज्ज होय सुन्नट सहु कवच पहेरी ॥ १० ॥ सू० ॥ केइ करवाल महाकाल जमजीहसी, सुहम्रवर रुहिर पीवा अतित्ती ॥ कर ग्रही महा गया जाणुं असणीलया, घणुं कुटिल खल परे धरे अमित्ती ॥ ११ ॥ सू० ॥ केइ निज नारीस्तन फरसन व्यग्रथी, विगर सन्नाह उब्बाह कीनो ॥ केइ रमणी मृगनयणी आंसु ऊरे, पण सुन्नट विकट तिहां मन न दीनो ॥ ॥ १२ ॥ सू० ॥ केइ रमणी रमण विघन जावा करे, किम डरे मन धरे तुरत आयो ॥ अपर रमणी जल पान करतां न्नरे, न्नायण नयण आंसु

करायो ॥ १३ ॥ सू० ॥ कांइ मुंबा अतुंबा लही रागलो, दाखवे नारी ज्ञरतार आगे ॥ एम तिहां देखी उवेखी फरी आवीआ, सनतकुमार पुर कहत रागे ॥ १४ ॥ सू० ॥ कटुक कर्णे सुणी रक्त वर्णे थयो, ज्ञेरी वजडावतो समर केरी ॥ प्रलयनो जलय जिम शब्द तिम सहु करे, सज करे सहु एक एक प्रेरी ॥ १५ ॥ सू० ॥ पीवतां आसवा अमल आरोगता, शत्रुशंसा करी फरी जगावे ॥ छत्र चामर ध्वजा प्रगुण करी सहु सज्या, केइ चंदनादि अंगे लगावे ॥ १६ ॥ सू० ॥ शब्द जय जय करे अमरख बहु धरे, चलत विमान मन मान धारी ॥ पद्मव्यूहे रच्युं सैन्य शुज्ञ परे मच्युं, वाम पासे समरसैन्य ज्ञारी ॥ १७ ॥ सू० ॥ चंडसीहो अबीहो रह्यो आगले, ठायो देवोसहो जिमणे ज्ञायो ॥ पिंगलगंधार विचमां रह्यो खेचरो, गगनमां मगनपणे हुं रह्यायो ॥ १८ ॥ सू० ॥ शत्रुबल सयल तिहां निकट देखी विकट, वेगे वायुवेगने पूछुं एम ॥ नाम ने ठाम शत्रु तणां ज्ञाखीये, तेह कहे गहगहे सूणो प्रेम ॥ १९ ॥ सू० ॥ कंचनदाढ एशगम मुह आगले, वाम पासे अशोको सशोको ॥ कालजिह दरूणे लरूणे हीणडो, मध्ये विरूप नयणे विलोको ॥ २० ॥ सू० ॥ पुठे अनंगरइ गयमइ देखजो, समरवर करण मांहोमांहि लागा ॥ ज्ञूरि रणतूर पूरे लडे सूर तिम, जेह कायर तिके जाय ज्ञागा ॥ २१ ॥ सू० ॥ शीशसंकुल मही बहुल रुधिरे ज्ञरी, नायका सायका दो चलावे ॥ कुंत असि शक्ति बहु हेत नाखंती ते, सिंह शियाल परे बीहलावे ॥ २२ ॥ सू० ॥ लेइ करवाल तस ज्ञाल मांहि दीउं, कंचनदाढ जम दाढसरिसे ॥ सोर महाघोर थयो अनंगरति सैन्यमां, सैन्य महादैन्य थइ तास विरसे ॥ २३ ॥ सू० ॥ उठीउं रूठीउं अनंगरइ डुठमइ, समरसेन प्रमुख वर साथ लेइ ॥ तास सनमुख धस्यो समरे हुं नवि खस्यो, सुज्ञट अति विकट लेइ साथ केइ ॥ २४ ॥ सू० ॥ में कह्युं खेचरा सैन्य बहु क्षय लह्युं, वाद तुज साथ अविवाद लागो ॥ सुज्ञटने किम हणे पापपुण्य नवि गणे, केम मुजशुं जाये दूर ज्ञागो ॥ २५ ॥ सू० ॥ केहवो तुजशुं जूज मुज एहवो, खेचरा ज्ञूचरा वाद केहो ॥ समरमां बोलवुं म कर तुं एहवुं, जयविजय साखीआ कहेशे एहो ॥ २६ ॥ सू० ॥ एह शियाल सिंहबाल ए देखीये, अशनिनो मेह मुज देह माशे ॥ वरसीउं करशीउं चर्मरयणे करी, ज्ञगवती गुणवती

मुझ हाथे ॥ २७ ॥ सू० ॥ केम मायाबले एम तुं झूझतो, आवी निज भुजबल सबल कीजे ॥ एम में भाखीयुं सिद्ध सुर साखीयुं, एम कही मांहोमां घा करीजे ॥ २८ ॥ सू० ॥ मारीउं शक्तिए धरणी मुझ पाडीयो, भयविधुर सैन्य मुझ दैन्य कीधुं ॥ हर्षभर उछले शोर बहु ते करे, जाणे अमे एहनुं राज्य लीधुं ॥ २९ ॥ सू० ॥ उठी में लेइ गदा मारी शिरमां जदा, ते पड्यो रुधवड्यो धरणी पीठे ॥ कालरव कारिउं तेहने वारीउं, हुं गयो तेहने पास दीठे ॥ ३० ॥ सू० ॥ उठव्यो तेहने देइ आशासना, जूझ बहु जूझ करतां न थाकुं ॥ पवनहृत जलहरा मत्त जिम गयवरा, तेम एक एकनो बलह ताकुं ॥ ३१ ॥ सू० ॥ जीतीउं तेह विद्याबले खेचरो, जय जय शब्द आकाश बोले ॥ सुर असुर सिद्ध विद्याहरा सहु मली, कुसुमवृष्टि करे बहु अमोले ॥ ३२ ॥ सू० ॥ खंड ए पंचमे ढाल उगणीशमी, सरस रस समरनी एह भाखी ॥ समरआदित्यना रासमां ए भली, पद्मविजये धरी चित्त राखी ॥ ३३ ॥ सू० ॥ सर्व गाथा ॥ ५५१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जयवाजां तिहां वाजीयां, अनंगरति तव आप; आपतां पण इच्छ्युं नहीं, जाणी राज्यसंताप ॥ १ ॥ गयो तपोवन गेलीशुं, विद्याधरने वृंद; परवरीयो परिवारशुं, आणी हर्ष अमंद ॥ २ ॥ पुरप्रवेश कीधा पछे, दीठी दुर्बल अंग; नारी नयणे नीरभर, हृदय उपन्यो रंग ॥ ३ ॥ विद्याधर विस्मय लह्या, देखी रूपनिधान; प्रणम्या तेहना पदकजे, पटराणी पहेचान ॥ ४ ॥ मुझने दोय कटक मली, थाप्यो राज्यने थान; न्याय नीतिए दिन गमुं, वारु वधते वान ॥ ५ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ वेण म वाज्यो रे विठल वारुं तुमने ॥ ए देशी ॥

॥ एम करतां कोइ काल गयो तव, एक दिन पाछली राते ॥ विलासवतीए स्वपने सूतां, गज दीठो वरगाते ॥ १ ॥ भवि तुमे जो जो रे पुण्य तणां फल मीठां ॥ ए आंकणी ॥ ऐरावण सरिखो चउदंतो, घन अंजन सम श्याम ॥ मेरुगिरि सम वयणे पेठो, जागी तेहवे ताम ॥ २ ॥ ॥ भवि० ॥ हरखवशे मुझने संभलावे, में पण भाख्युं तास ॥ सयल विद्याधर पूजित थाशे, सुत तुझ गुणनो राशि ॥ ३ ॥ भवि० ॥ सांभली

हर्ष लही ते दिनथी, त्रण वर्ग साधंती ॥ अनुक्रमे शुभ दिने जायो सुतने, हर्ष ते हियडे धरंती ॥ ४ ॥ भवि० ॥ मंजरिका दासीए सुतने, जनमे राय वधाव्यो ॥ दान देइ तेहने संतोषी, दारिद्र दूरे गमाव्यो ॥ ५ ॥ भवि० ॥ अजितबला परभावे, पाम्यो, राज्य लक्ष्मी सुत एह ॥ मास थयो तब चिंती अजितबल, नाम ठव्युं गुणगेह ॥ ६ ॥ भवि० ॥ अनुक्रमे कुमरभाव ते पाम्यो, इण अवसर में विचार्युं ॥ बहु दिन मात पिता मलीया थया, तिणे मिलवुं एम धार्युं ॥ ७ ॥ भवि० ॥ मावित्र दुःप्रतिकारज भाख्यो, रिद्धि लही शे लेखे ॥ सज्जनशुं भोगवी नहीं जे वली, दुर्जन नयणे न देखे ॥ ८ ॥ भवि० ॥ अजितबला देवीने आशय, भाख्यो तिणे ते जाणी ॥ विकूरव्युं विमान ते तेहमां, बेहठो लही सुत राणी ॥ ९ ॥ भवि० ॥ पोहोतो श्वेतांबिका उद्याने, पवनगति मोकलीउं ॥ वात सुणी जब तेहना मुखथी, नृप साहामो नीकलीउं ॥ १० ॥ भवि० ॥ नृप देखी साहामो जइ प्रणम्यो, हुं निज बहु परिवारे ॥ माहरी ऋद्धि देखीने मावित्र, अति आनंद दिल धारे ॥ ११ ॥ भवि० ॥ नयरप्रवेश आडंबरे कीधो, रही तिहां केइक दिन्न ॥ तामलिप्ति नयरीए पोहोतो, श्वशुरने मिलवा मन्न ॥ १२ ॥ भवि० ॥ विलासवती जे दिनथी गइ छे, ते दिनथी खेदाणो ॥ सिद्धादेशवचनथी सघलो, परमारथ जिणे जाण्यो ॥ १३ ॥ भवि० ॥ अनंगवती उपरे बहु रीशे,धमधम्यो ईशानचंद ॥ तेहने बहु प्रणिपत्य करीने, उपजाव्यो आणंद ॥ १४ ॥ भवि० ॥ तात पासे आव्या वली फरीने, केइक दिन तिहां रहीयां ॥ कालक्रमे मुझ मात तातने, धर्मभूपतिए ग्रहीयां ॥ १५ ॥ भवि० ॥ मुझ लघु भाइ जश कीर्त्तिनिलयने, थापी राज्यनो भार ॥ वेअढगिरि पोहोतो रथनेउर, चक्रवालपुर सार ॥ १६ ॥ भवि० ॥ सुखमां तिहां हुं राज्य पालतो, इण अवसर तिहां आव्या ॥ श्रमणगुणे शोभित चउ नाणी, बहु शिष्ये सोहाव्या ॥ ॥ १७ ॥ भवि० ॥ चित्रांगद नामे आचारय, मुजने कह्युं परिवारे ॥ जइ आडंबरशुं में वंद्या, धर्मलाभ दीउं त्यारे ॥ १८ ॥ भवि० ॥ मुनि कहे मुझने सांभल भूपति, पुण्य कर्यां ते पाम्यां ॥ एम जाणीने पुण्य करो तुमे, सुणी में पदकज नाम्यां ॥ १९ ॥ भवि० ॥ पुण्य कहो केम करीये गुरुजी, एम में पूछ्युं जाम ॥ सम संवेग मूल जिनदर्शित, धर्म कहे गुरु

ताम ॥ २० ॥ नवि० ॥ धर्म परिणम्यो पाम्यो समकित, अणुव्रत लीधां बार ॥ चरण नमी करीने में पूब्युं, कहो प्रनु करो उपकार ॥ २१ ॥ नवि० ॥ प्रियाविरह डुःख जनित संतापह, केम उपन्यो ए स्वामी ॥ पूर्वे नवे शी करणी कीधी, केम फरी ऋद्धि प्रिया पामी ॥ २२ ॥ नवि० ॥ वीशमी ढाल ए पंचम खंमे, समरादित्यने रास ॥ सांनलो गुरुमुखपद्मथी नाखे, पूरव नव सुविलास ॥ २३ ॥ नवि० ॥ सर्व गाथा ॥ ६२० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नरतखेत्र इणमे नलुं, नयर कंपिलपुर नाम; चंड्रगुप्त राजा चतुर, वारु तेहने वाम ॥ १ ॥ जयासुंदरी जग जाणीये, रामगुप्त अनिराम; नामे सुत तुं गुणनिलो, रूपवंत जिम राम ॥ २ ॥ उत्तरापंथ अवनीपति, धूआ तास गुणधाम; हारप्रना जिम हरप्रिया, वारु ते करी वाम ॥ ३ ॥ आव्यो वसंत ते अन्यदा, नवनदीर्घिका नाली; नरनारी निरतां विहुं, क्रीमा करे तिणे काल ॥ ४ ॥ वाव्यकांठे रंनावने, कुंकुम रागकृत अंग; बेठां जब बेहु जणां, स्त्री नरतार सुसंग ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ सावरमतीए आवीलां नरपूर जो ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसर एक हंसजुगल तिहां आवीयुं जो, तें कर लीधी हंसली कौतुक काम जो ॥ हंस ते लीधो नारीए करमां रंगशुं जो, कुंकुम रंगथी फसव्यां हाथथी ताम जो ॥ १ ॥ सांनलजो तमे अल्प निदान फले घणुं रे ॥ ए आंकणी ॥ एक एकने उलखे नहीं कुंकुम रागथी जो, विरहे पीमित मरवानां परिणाम जो ॥ करे ते रुंधी श्वासने पाणीमां पड्यां जो, पण कोइ विचित्र जाणो कर्मपरिणाम जो ॥ २ ॥ सां० ॥ कंवगत प्राण थया तव डुःख उपन्युं घणुं जो, वली ते नीरे कुंकुम रंग धोवाय जो ॥ नावीनावथी उंचुं जोये तव बिहुं जो, तव अन्योन्ये राग थकी उलखाय जो ॥ ३ ॥ सां० ॥ एह करम तुम बांध्युं विरहनुं आकरुं जो, एह ते जाणो तुमचो कर्मपरिणाम जो ॥ में चिंत्युं अहो अल्प निदान बहु फले जो, तिणे हवे माहरे परिव्रज्याशुं काम जो ॥ ४ ॥ सां० ॥ में कह्युं नगवन मुज उपरे किरपा करी जो, सांनलतां निज चरित्र थयो वैराग्य जो ॥ नवअटवी उतारो दीक्षा आपीने जो, गुरु कहे जिम

सुख उपजे तिम महाभाग जो ॥ ५ ॥ सां० ॥ देइ राज्य अजितबल कुंवरने में तदा जो, करी उद्घोषणापूर्वक दीधुं दान जो॥ वसुभूति राणी परिजन परिवारशुं रे, लीधी दीक्षा सुणी जयकुमर निदान जो ॥ ॥ ६ ॥ सां० ॥ एह विशेष कारण में म्हारुं भाखीयुं जो, जय कहे शोभन कारण एह विशेष जो ॥ भवअटवीथी उतरीये प्रभु किणी परे जो, उतरीने कहो जावुं किणे देश जो ॥ ७ ॥ सां० ॥ गुरु कहे अटवी द्रव्य भाव दुभेदथी जो, द्रव्यअटवीनो सांभल तुं दृष्टांत जो ॥ कोइ नगरथी नगरांतर जावा भणी जो, कोइ सार्थप उद्घोषणा एणी वृत्तांत जो ॥ ८ ॥ सां० ॥ मुज साथे जे आवे तेहने पोहोंचवुं जो, एम सांभली बहु साथ थयो तस साथे जो ॥ मारगना गुण दोष ते साथने दाखवे जो, सांभलजो इण मारग छे दोय पाथ जो ॥ ए ॥ सां० ॥ एक सरल ने बीजो वक्र ते जाणीये जो, पण ते वक्रे बहु काले पहोंचाय जो ॥ सुखथी जातां अंते ऋजुमां अवतरे जो, लहीये इछित पुर सुखनो समुदाय जो ॥ १० ॥ सां० ॥ ऋजु मार्गे बहु पासे पण अति सांकडो जो, बहु कष्टे पहोंचाये इछित शहेर जो ॥ अति विषम तिहां उतरतां बीहामणो जो, वाटे विघ्नकारी हरि वाघ न महेर जो ॥ ११ ॥ सां० ॥ मारगमां पण उतरवा ते नवि दीये जो, तेहने आप पराक्रमथी करी ध्वंस जो ॥ जइशुं पण पूठे पूठे आवशे जो, पुरमां पहोंचीये तिहां लगे एहनो अंश जो ॥ १२ ॥ सां० ॥ उन्मारगे पग मूके तो ले मूलथी जो, मार्गे हींडे ते उपर नहीं जोर जो ॥ आगल जातां रूख मनोहर आवशे जो, स्निग्ध सुगंधी पत्र कुसुम बहु मोहोर जो ॥ १३ ॥ सां० ॥ शीतल छाया शोभे जेहनी रुअडी जो, पण तिहां बेठा पामे जीव विनाश जो ॥ तो खावानी वात तो जाणो वेगली जो, तिहां नवि बेसजो धरो जीवनआश जो ॥ १४ ॥ सां० ॥ वली बीजां झाड सड्यां पड्यां आवशे जो, पांडुपत्र कुसुम फल वर्जित तेह जो ॥ नहीं मनोहर विशामो करवो पडे जो, मुहूर्त्त मात्र तो करजो शुभ मनरेह जो ॥ १५ ॥ सां० ॥ मारगकांठे बेठा पुरुष घणा हशे जो, रूप मनोहर ने वली मीठां वयण जो ॥ तुमने तेडशे आवो इहां पण मार्ग छे जो, तेहनुं वचन न सुणवुं न जोवुं नयण जो ॥ १६ ॥ सां० ॥ क्षण पण साथथी मत रहेजो कोइ वेगला जो, एकाकीने भय निश्चय

होय प्रायं जो ॥ दावानल थोडो पण अप्रमादी थइ जो, उलववो अन्यथा बहु अनर्थ थाय जो ॥ १७ ॥ सां० ॥ ऊंचो पर्वत उपयोगे उल्लंघवो जो, ते उपयोग विना जाये प्राण ते ठाम जो ॥ वंशजाल अतिगह्वर गुपित उल्लंघवी जो, उपद्रव होय तिणे नवि करवो विश्राम जो ॥ १८ ॥ सां० ॥ एक खाकी लघु मारग जातां आवशे जो, नाम मनोरथ भट बेठो नित्य पास जो ॥ ते कहेशे ए खाड लगारेक पूरजो जो, पण नवि पूरजो मनमां आणी तास जो ॥ १९ ॥ सां० ॥ जो पूरशो तो मोहोटी वधती ते जशे जो, तिणे अवगणना करीने जावुं जाय जो ॥ फल किंपाकनां पंच जातिनां मनोहरु जो, नवि जोवां नवि खावां स्वाद बणाय जो ॥ २० ॥ सां० ॥ महा विकराल पिशाच ते बावीश वाटमां जो, क्षण क्षण उपद्रव करतां गणवा नांहि जो ॥ नीरस विरस जातपाणी ते पण दोहिलुं जो, खेद न करवो वावरतां ते मांहि जो ॥ २१ ॥ सां० ॥ नित्य प्रयाण ते करवुं मुक आणा वही जो, वहेवुं नियमा राते पण दोय जाम जो ॥ एम जातां अटवी केमे उल्लंघीये जो, निवृत्तिपुर पामीजे सुखनुं धाम जो ॥ २२ ॥ सां० ॥ क्लेश उपद्रव तिण नगरीथी वेगला जो, ए दृष्टांत हवे उपनय कहुं सार जो ॥ सारथवाह ते त्रण लोक सुरमणि समो जो, अरिहा देवनो देव करे उपगार जो ॥ २३ ॥ सां० ॥ आक्षेपणी १ विक्षेपणी २ संवेगणी ३ तथा जो, निर्वेदनी ४ ए धर्म कथा चउ जेय जो ॥ ते उद्घोषणा मोक्षना अर्थी जीवका जो, साथना लोक ते साथे थया अमेय जो ॥ २४ ॥ सां० ॥ अटवी चिहुं गति भ्रमण करणनी जाणीये जो, साधुधर्म ते सूधो मारग होय जो ॥ श्रावकधर्म ते वांको मोडुं पोहोंचवुं जो, पण अंते मुनिधर्ममां आवे सोय जो ॥ २५ ॥ सां० ॥ इच्छित पुर ते शिवनगरी सोहामणी जो, जिहां नहीं जनम मरण ने रोगना शोग जो ॥ वाघ सिंह दोय राग द्वेष बहु उपद्रवे जो, जेहथी नवि लेवाये संजम जोग जो ॥ २६ ॥ सां० ॥ श्रमणपणुं लीधे पण केड मूके नहीं जो, जिनवरमारग चूकाने गली जाय जो ॥ नारी पशु पंडग संजुत वसतीयका जो, तेहज रूंख जाणो जस मनोहर ठाय जो ॥ २७ ॥ सां० ॥ निरवद्य वसती सडिते पंडुर दल रूंखडां जो, पासत्थादिक जे उपदेश विरुद्ध जो ॥ दायक ते मारग तट बेठा

बहु जना जो, ते वैरी सम बोलावे थइ शुरू जो ॥ २८ ॥ सां० ॥ साखी जन ते श्रमण शीलंगरथ धारकुं जो, क्रोधदावानल पर्वत ते महा मान जो ॥ वंशजाल माया लघु खाडी ते लोजनी जो, मनोरथ जट ते इछारूप अमान जो ॥ २९ ॥ सां० ॥ थोडी पण पूरीये तो पार न पामीये जो, शब्दादिकना विषय ते फल किंपाक जो ॥ जेह बावीश पिशाच ते जाणो परीसहा जो, संयम जीवित हरे एहनो ए विपाक जो ॥ ३० ॥ सां० ॥ मधुकरवृत्तिए अरस विरस मुनि आहार जे जो, नित्य प्रयाणुं ते जाणो अप्रमाद जो ॥ बे पहोर राते पण सज्झाय ते नित्य करे जो, एणी परे अटवी उल्लंघे आह्लाद जो ॥ ३१ ॥ सां० ॥ पोहोंचे अनुक्रमे शिवनगरी सुख शाश्वते जो, सांजली समकित देशविरति परिणाम जो ॥ जयकुमरे गुरु पासे ते अंगीकर्यां जो, पेठो नयरीमां पोहोतो निज ठाम जो ॥ ३२ ॥ सां० ॥ युवराज्ये थाप्यो निज ताते तेहने जो, नित्य नित्य सेवे मुनिवर सनतकुमार जो ॥ जाखी पद्मविजय ए पंचम खंडमां जो, ढाल एकवीशमी सुणतां जयजयकार जो ॥ ३३ ॥ सां० ॥ ६५८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मास कलप करी मुनिवरु, विचर्या श्रीजगवंत; आवे धणसिरी इहां कने, ते सुणजो विरतंत ॥ १ ॥ नारकमांथी नीकली, संसरी बहु संसार; अनंतर जवे अनुजव्युं, अज्ञान कष्ट अपार ॥ २ ॥ मरण लही जयकुमरनो, अनुज थयो घणुं इठ; विजय नाम तस ठावीयुं, कुमर थयो उक्किठ ॥ ३ ॥ विजयने जय वल्लज नहीं, काल गयो एम कांय; कर्म विचित्र थकी लह्युं, मरण तेह महाराय ॥ ४ ॥ जयकुमार राज्ये ठव्या, सहुए मली सामंत; विजय द्वेष लही विलखीउं, सज्ज थइ नासंत ॥ ५ ॥ सामंतमंडले समजीने, बांध्यो मरडी बांहि; बारवटीउं जे बाहिरे, दुःख देवे दिल मांहि ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ थाहरा मोहला उपर मेह, झबूके विजली हो लाल ॥ झबू० ॥ ए देशी ॥

॥ एणी अवसर प्रतिहारी, आवी एम विनवे हो लाल ॥ आवी० ॥ द्वारदेश तुम जननी, आवी ठे हवे हो लाल के ॥ आवी० ॥ कांयक कार्य उद्देशी, दरिसण अजिलषे हो लाल के ॥ दरि० ॥ तव नृप संभ्रम

पामी, गयो तस सन्मुखे हो लाल ॥ गयो० ॥ १ ॥ कहे माता तुमे केम, पधार्यां इहां लगे हो लाल ॥ प० ॥ तव रोती कहे सुत, शोकानल बहु जगे हो लाल ॥ शो० ॥ सुतने जीवितदान, आपो तव नृप वदे हो लाल ॥ आ० ॥ कोणथी जय ए कुमारने, तव राणी वदे हो लाल के ॥ त० ॥ २ ॥ प्रतिपक्षीने जतनथी, राखवो नृपथिति हो लाल के ॥ ॥ रा० ॥ अन्य सामंत प्रेरयाथी, उपद्रवनी तती हो लाल के ॥ उ० ॥ मत करो एम विचारी, राज्य चिंतक नरे हो लाल के ॥ रा० ॥ कीधुं काम ते मुऊ पण, गमतुं आदरे हो लाल के ॥ग० ॥ ३ ॥ पण एहने तनु बाधा, न थाये तिम करो हो लाल ॥ न० ॥ तव नृप कहे जो मात, प्रतिपक्षी ए खरो हो लाल ॥ प्र० ॥ तो कोण निज पक्षी कहो, मातजी माहरे हो लाल के ॥ मा० ॥ केम करो वात उन्नां इहां, आवी पादरे हो लाल के ॥ आ० ॥ ४ ॥ मांहि लावी देइ आसन, वेठो एणी परे हो लाल के ॥ वे० ॥ रे रे लावो कुमारने, रोक्यो जिण घरे हो लाल के ॥ रो० ॥ तेहने तेड़वा पुरुष, गया तव नृप मने हो लाल ॥ ग० ॥ चिंतवे राज्य ए केहवुं, जेहथी ए वने हो लाल के ॥ जे० ॥ ॥ ५ ॥ राज्य महंत नरे जुर्ज, वात एम शी करी हो लाल के ॥ वा० ॥ वंधुजनने राज्य, लह्यो ए दुःखकरी हो लाल ॥ ल० ॥ परम प्रमादहेतुफल, कडुआं जेहनां हो लाल के ॥ क० ॥ विदित संसार स्वरूपने, केम माने मनां हो लाल के ॥ के० ॥ ६ ॥ राज्य देइ कुमारने, मातने सुख करुं हो लाल के ॥ मा० ॥ एह राज्य बहु दोष, निधानने परिहरुं हो लाल ॥ नि० ॥ इण अवसर पूर्वे कृत, कर्मना दोषथी हो लालके ॥ क० ॥ वध परिणाम वध्यो नृप, उपर रोषथी हो लाल के ॥ उ० ॥ ॥ ७ ॥ आव्यो नृपति पास, सिंहासणे थापीर्ज हो लाल ॥ सिं० ॥ कनककलश न्नरी नीर, सुगंधे व्यापीर्ज हो लाल ॥ सु० ॥ एक लीये निज हाथ, वीजा सामंतने हो लाल ॥ वी० ॥ करी अन्निषेक नमी पद, पूछे मातने हो लाल के॥ पू० ॥ ८ ॥ मात गयो शोकानल, तव जननी कहे हो लाल के ॥ त० ॥ इंधणथी कहो अनल ते, केम हानि लहे हो लाल के ॥ के० ॥ नृपति कहे कारण किशुं, नवि जाणुं अमो हो लाल के ॥ न० ॥ मात कहे नरकांत ए, राज्य जाणो तुमो हो लाल के ॥ रा० ॥

॥ ए ॥ न गणे सुकृतिका पुरुष, उचित जाणे नहीं हो लाल ॥ उ० ॥ काल अनागत देखे, न विषय मुंजयो सही हो लाल ॥ न० ॥ स्वर्ग तथा अपवर्ग, स्वाधीन जे सुख अछे हो लाल ॥ स्वा० ॥ ते तो आचरे राज्यांध, पुरुष जिम सविगछे हो लाल ॥ पु० ॥ १० ॥ अचिंत चिंतामणि रत्न, समान ए नरजवो हो लाल ॥ म० ॥ हारीने ए राज्य, थकी नरगे जवो हो लाल ॥ थ० ॥ तुं तो राज्यने योग्य, जाणुं तुज लक्षणे हो लाल ॥ जा० ॥ राज्यमां पापपुण्य तुज, अनुज ते नहीं गणे हो लाल के ॥ अ० ॥ ११ ॥ मित्र कुमित्र मले तिणे, पाप ते आचरे हो लाल के ॥ ॥ पा० ॥ तेहवुं पाप नहीं जग, जे एह नवि करे हो लाल के ॥ जे० ॥ तिणे आशंकती एहने, ते तुज नीपजे हो लाल के ॥ ते० ॥ केम शोकानल बूजे ने, टाढक संपजे हो लाल के ॥ टा० ॥ १२ ॥ नृपति कहे सुणो मात, शाने तुम डुःख धरो हो लाल के ॥ शा० ॥ कुमर विचक्षणने लेउं, चरण ते हुं खरो हो लाल के ॥ च० ॥ द्यो आणा मुज मातजी, आतम हित करुं हो लाल के ॥ आ० ॥ मात कहे सुणो पुत्तजी, ए नहीं पाधरुं हो लाल के ॥ ए० ॥ १३ ॥ पालो प्रजा युवराज्य, ठवो कुमर प्रत्ये हो लाल ॥ ठ० ॥ नृप कहे एह वात, विरुद्ध ते सांप्रते हो लाल ॥ वि० ॥ करी राज्यनो अजिषेक, हवे केम पालटे हो लाल ॥ ॥ ह० ॥ चित्त विरक्त संसारथी, तिणे मुज ए घटे हो लाल ॥ ति० ॥ ॥ १४ ॥ द्यो आणा मुज श्रमण, पणुं जिम लीजीये हो लाल ॥ प० ॥ एम कही मातने चरण, वच्चे शिर दीजीये हो लाल ॥ व० ॥ मात कहे जिम तुम मन, माने तिम करो हो लाल के ॥ मा० ॥ पण मुजने तुमे साथ, लेइने संचरो हो लाल ॥ ले० ॥ १५ ॥ नृप कहे जीवित मरण, संजुत वखाणीये हो लाल ॥ सं० ॥ सुकृत कर्यां विणुं डुःख, सद्यां इणे प्राणीये हो लाल ॥ स० ॥ डुर्लज नरजव धर्म, जिणंदनो दोहिलो हो लाल ॥ जि० ॥ जव जव ए संसार, संजोग ते सोहिलो हो लाल ॥ सं० ॥ १६ ॥ तिणे अंबा तुमे जुक्त, विचारुं चित्तशुं हो लाल ॥ वि० ॥ हवे ते विजयकुमारने, शिख ये नीतिशुं हो लाल के ॥ शि० ॥ एह प्रजा प्रतिपालण, करजो हेजशुं लाल के ॥ क० ॥ जिम न संजारे तातने, लही उद्वेगशुं हो लाल ॥ ल० ॥ १७ ॥ पूर्व पुरुष अर्जित जश,

मलिन न कीजीये हो लाल के ॥ म० ॥ राजऋषिनुं चरित्र, सदाये ध-रीजीये हो लाल ॥ स० ॥ जिम नरजव सफलो होये, तेम करीजीये हो लाल के ॥ ते० ॥ हवे सामंतने शिख ये, इम चरीजीये हो लाल के ॥ इ० ॥ १७ ॥ तुमचो ए राजान, तात परे लेखजो हो लाल ॥ ता० ॥ कुमर प्रजाने हितकर, मत उवेखजो हो लाल के ॥ म० ॥ उजय लोक सुखकारक, तुमे वरतावजो हो लाल ॥ तु० ॥ एम करी कुल अनुरूप, सदा जश पावजो हो लाल ॥ स० ॥ १९ ॥ केइ कहे तुम विरहे, अमे डुःख आणीआं हो लाल ॥ अ० ॥ पण तुम इछित विघ्न, करे कोण प्राणीया हो लाल ॥ क० ॥ वली परलोक साधन जणी, नरपति उठीआ हो लाल के ॥ न० ॥ तव तस वचन प्रशंस, करे नृप पूठीयां हो लाल ॥ क० ॥ २० ॥ सनत्कुमार आचार्य, समीपे जायवा हो लाल ॥ स० ॥ जिणे समे उठीया आतम, तत्त्व निपायवा हो लाल ॥ त० ॥ पद्मविजय कहे तिणे समे, जे बन्युं ते कहुं हो लाल के ॥ जे० ॥ पंचम खंडमां ढाल, बावीशमी एम लहुं हो लाल ॥ बा० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ६७५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रवृत्ति मुनिनी पेखवा, मूक्यो माहण जेह; सिद्धारथ नामे सखर, तव तिहां आव्यो तेह ॥ १ ॥ स्वामी मनोरथ सीधला, सनत्कुमार सूरीश; आव्या तिंडुक वन इहां, उठे सुणी अवनीश ॥ २ ॥ सात आठ पद सन्मुखे, रोमांचित जइ राय; वंदी चाल्यो वांदवा, साथे सज समवाय ॥ ॥ ३ ॥ सामंतादिक सहु मली, विजयने कही विरतंत; महा दान महा मोछवे, दीनादिकने दिंत ॥ ४ ॥ पूजा विविध प्रकारनी, विरचावे विधि सार; देहरे सर्व जिणंदने, आदर धरी अपार ॥ ५ ॥ शुन्न तिथि करण दिवस लही, रथ वेसी महाराय; परवरीउं परिवारशुं, जुगति थकी नृप जाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ टुंक अने टोडा विचे रे ॥ ए देशी ॥

॥ चारित्र लेवा चोंपशुं रे, नरपति चाल्यो जाय ॥ संजमरंग लागो ॥ वर वरीआ कहेवरावतो रे, अर्थी इछित दाय ॥ १ ॥ सं० ॥ लोक अठेरुं देखतो रे, अहो उत्तम आचार ॥ सं० ॥ काल नहीं दीक्षा तणो रे,

अहो लघुवय सुविचार ॥ २ ॥ सं० ॥ आज अनाथ थइ पूरी रे, दुःख धरे बहु लोक ॥ सं० ॥ अंगुलीए देखावता रे, लोक धरे मन शोक ॥ ३ ॥ ॥ सं० ॥ तूर शब्द थाये घणा रे, केइक हर्ष धरंत ॥ सं० ॥ धन्य धन्य एहनी मावडी रे, धन्य धन्य तात कहंत ॥ ४ ॥ सं० ॥ बंदी बोले बिरुदावली रे, एम मोटे मंडाण ॥ सं० ॥ गुरुचरणे ते आवीउं रे, तिंदुक वन उद्यान ॥ ५ ॥ सं० ॥ सनत्कुमार सूरी कने रे, मात सहित भूपाल ॥ सं० ॥ मुख्य प्रधाने परवस्यो रे, चारित्र लीये ततकाल ॥ ६ ॥ सं० ॥ राय नयरना जन सहु रे, वंदी निज घर जाय ॥ सं० ॥ मास कलप पूरे थये रे, गुरु विचरे अन्य ठाय ॥ ७ ॥ सं० ॥ सूत्र भण्यां बहु खांतिशुं रे, मुनिवर जय अणगार ॥ सं० ॥ श्रमणपणुं ते पालता रे, निरतुं निरतिचार ॥ ८ ॥ सं० ॥ विजय भूपति हवे चिंतवे रे, अहो नवि मास्यो एह ॥ ॥ सं० ॥ जातो रह्यो ए हाथथी रे, हवे करुं कारण केह ॥ ए ॥ सं० ॥ निज विश्वासी नर प्रत्ये रे, घातक मूके राय ॥ सं० ॥ घातक नर चित्त चिंतवे रे, न्याय के ए अन्याय ॥ १० ॥ सं० ॥ निष्कारण केम मारीये रे, इम करी पाछा जाय ॥ सं० ॥ नृपने कहे अमे मारीयो रे, तव नृप हर्षित थाय ॥ ११ ॥ सं० ॥ हवे जयमुनि एम चिंतवे रे, जइ प्रतिबोधुं भाय ॥ ॥ सं० ॥ भावीभाव संबंधथी रे, संजम सन्मुख थाय ॥ १२ ॥ सं० ॥ आणा मागी गुरु तणी रे, केइक मुनि परिवार ॥ सं० ॥ स्वजन आलोकन कारणे रे, आव्या पुरने बार ॥ १३ ॥ सं० ॥ सुणी कोप्यो घातक प्रत्ये रे, तेडाव्या नर तेह ॥ सं० ॥ पूछे कहो केम मारीयो रे, कोण थानक अरि जेह ॥ १४ ॥ सं० ॥ मुनि आव्या जाण करी रे, बोल्या ते नर ताम ॥ ॥ सं० ॥ केश अलंकार विण अमे रे, नवि उलखीआ जाम ॥ १५ ॥ सं० ॥ नंदिवर्द्धन पुरे पूछीउं रे, कोइ देखी अणगार ॥ सं० ॥ जयमुनि कहो तुमे किहां अछे रे, तिणे देखाड्यो ठार ॥ १६ ॥ सं० ॥ नाग देहरे ए रह्यो रे, करतो निश्चल ध्यान ॥ सं० ॥ शून्य अरण्य जाणी करी रे, मास्यो अमे तिणे थान ॥ १७ ॥ सं० ॥ नृप कहे कोइक मारीयो रे, पण पापी रह्यो एम ॥ सं० ॥ नहीं तो आवे किहां थकी रे, आपणी नयरी सीम ॥ १८ ॥ सं० ॥ पण हजी कांय गयुं नथी रे, मारशुं हवे इण ठाम ॥ सं० ॥ मान्युं ते पुरुषे तिहां रे, हवे वंदनने काम ॥ १९ ॥ सं० ॥ जइ

मुनिचरणने वंदीया रे, धर्मलाभ दीयो ताम ॥ २०॥ सं० ॥ करुणाए संजलावीयो रे, जिनवर जाखित धर्म ॥ सं० ॥ नवि विरम्यो संसारथी रे, मुनि जाएयो तस मर्म ॥ २१ ॥ सं० ॥ पंचम खंमे ए कही रे, त्रेवीशमी वर ढाल ॥ सं० ॥ पद्मविजय कहे रासमां रे, सुणतां मंगलमाल ॥ २२ ॥ सं० ॥ सर्व गाथा ॥ ७१३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनि कहे सुणो महारायजी, सुख दुःख कर्म पसाय; संसारी सहु सत्त्वने, निरतो जाणे न्याय ॥ १ ॥ सुख इछे प्राणी सयल, सुखनुं मूल सुधर्म्म; तेहनुं फल ते सुरूपता, प्रियसंजोग परम्म ॥ २ ॥ जोग विपुल सौजाग्यता, नीरोगता निर्धार; अवलंबन करी आकरुं, धर्म ते सयल आधार ॥ ३ ॥ सहुशुं मैत्री समाचरे, दीजे अढलक दान; करुणा जीवनी कीजीये, सयल धर्म सावधान ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ हमचमीनी देशी ॥

॥ सांजली जूपति इणी परे चिंते, मरणनो जय इणे लागो ॥ तिणे एम बोले ठे पण सांजलो, हवे किहां जाशे जागो रे ॥ १ ॥ हमचमी ॥ एम चिंती कहे स्वामी साचुं, पण सुणजो मुऊ वात ॥ जे दिनथी तुमे दीक्षा लीधी, ते दिनथी विख्यात रे ॥ २ ॥ ह० ॥ धर्म करेवा मांड्यो स्वामी, गुरु कहे रुडुं कीधुं ॥ रही थोमी वेला पठी चाल्यो, गेह जणी दिल दीधुं रे ॥ ३ ॥ ह० ॥ एह दुराचारीने मारुं, आजज हाथे राते ॥ जाइ मुनि उपर एम उपजे, क्लिष्ट कर्मनी वाते रे ॥ ४ ॥ ह० ॥ पूर्व घातक पुरुषने तेड्या, रयणीए कर्यो विचार ॥ चालो आपण मारीये एहने, एह दुष्ट आचार रे ॥ ५ ॥ ह० ॥ चंद्र आथम्यो जिणी वेलाए, तव ते पुरुषने लेइ ॥ जय अणगार समीपे पोहोतो, दीठो चित्तडुं देइ रे ॥ ६ ॥ ह० ॥ पवन रहित स्थानक जिम दीवो, तिम मुनि ज्ञाणमां लीनो ॥ तीव्र कषाय उदयथी तेणे, नरगे जवा मन कीनो रे ॥ ७ ॥ ह० ॥ अधिक कषाये खड्ग ते काढ्युं, सुकृत वासना नाठी ॥ करम परिणते आखो गलीउं, कोप अनल चढी जाठी रे ॥ ८ ॥ ह० ॥ ग्रीवादेशे एक प्रहारे, मस्तक दूरे नाख्युं ॥ विजयरायनां एह अकारज, एम सहु मुनिए आख्युं रे ॥ ए ॥ ह० ॥ अहो अहो कर्म्म तणी गति जुउ, जीवचरित्र

विचित्र ॥ एम कही सहु मुनिवर खसीआ, जय अणगार पवित्र रे ॥ ॥ १० ॥ ह० ॥ मैत्रीभाव सयल जीव उपरे, ध्यान थकी नवि चलीआ ॥ निज तनु उपरे ममत न आएयुं, हली मली समता मलीआ रे ॥११॥ ह०॥ क्षीणप्राय हवे पाप करम छे, लेश्या शुद्ध स्वभाव ॥ संयम थिरता धीरज धोरी, आसनसिद्धि स्वभाव रे ॥ १२ ॥ ह० ॥ शुभ परिणामे काय तजीने, सुरलोक आनत नामे ॥ नवमे देवलोके ते पहोता, सुखसागरने धामे रे ॥ १३ ॥ ह० ॥ सीरीप्रभ नाम विमाने आयु, सागर तास अढार ॥ सांभलजो हवे विजयरायनो, जे कहुं हुं अधिकार रे ॥ १४ ॥ ह० ॥ महा पुरुषनो घात करीने, आत्म कृतारथ माने ॥ निज मंदिर आवीने नित्य नित्य, वरते पापस्थाने रे ॥ १५ ॥ ह० ॥ साधु विहाणे विहार करीने, गया गुरुनी पासे ॥ सहु वृत्तांत सुणाव्युं गुरुने, तिम समता अभ्यासे रे ॥ १६ ॥ ह० ॥ पश्चात्ताप घणो गुरु कीधो, अहो शिष्य सुसीसो ॥ ते दिनथी ते विजयरायने, पापउदय सुजगीशो रे ॥ १७ ॥ ह० ॥ व्याधि वेदना बहु अनुभवतो, हत्या अनुमोदंतो ॥ आयुक्षये ते चोथी नरगे, पंकप्रभाए पोहोतो रे ॥ १८ ॥ ह० ॥ दश सागर आयु भोगवतो, जय विजय ए दोय ॥ भाइनो अधिकार कह्यो हवे, दंपती जिणी परे होय रे ॥ १९ ॥ ह० ॥ ढाल चोवीशमी एणी परे भाखी, पंचमे खंडे पूरी ॥ पंचम खंड संपूरण हुउं, वात न रही अधूरी रे ॥ २० ॥ ह० ॥ वैशाख वदि बीजे ए पूरो, विशाल नगरे कीधो ॥ श्रीविजयसिंह सूरीश्वर केरो, सत्यविजय सुप्रसिद्धो रे ॥ २१ ॥ ह० ॥ तास कपूरविजय वर कोविद, खिमाविजय तस शिष्य ॥ गीतारथ गुणवंत सोभागी, जिनविजय सुजगीश रे ॥ २२ ॥ ह० ॥ उत्तम उत्तमविजय कहाया, तास शिष्य मतिवंतो ॥ गीतारथ समताना सागर, जे महिमाए महंतो रे ॥ २३ ॥ ह० ॥ श्रीकल्याण पास सुपसाये, समरादित्यनो रास ॥ पद्मविजय गणि भाखे सुणतां, घर घर लीलविलास रे ॥ २४ ॥ ह० ॥ सर्व गाथा ॥ ७४१ ॥

इति श्री संविज्ञपक्षीय पंडितप्रवर श्रीमदुत्तमविजयगणिशिष्य पंडित पद्मविजयगणिविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे जयविजय सहोदरयोः संगतयोः पंचमो नरभवः समाप्तः ॥ ५ ॥ पंचम खंडे सर्व गाथा (७४१) उक्त गाथा तथा काव्य ॥ १८ ॥

॥ अथ ॥

॥ षष्ठ खंडस्य प्रारंभोऽयं ॥



॥ दोहा ॥

॥ श्रीकल्याण प्रभु पास जी, करतां भवि कल्याण; पादपद्म तसु प्रणमीये, महिमा जस मंडाण ॥ ॥ १ ॥ सरस्वती गुरु प्रणमुं सदा, समरादित्य स्वरूप; वर्णवतां मुऊ वदनमां, आवी वसो अनुरूप ॥ २ ॥ पंचम खंड प्रेमे करी, पूरण कस्यो प्रमाण; हवे बठो खंड होंशथी, श्रोता सुणो सुजाण ॥ ३ ॥ जंबुद्वीप लख जोयणो, तेहमां भारत खेत; माकंदी पुरी मोटकी, सीरीदेवी संकेत ॥ ॥ ४ ॥ अधर्म जिहां आवे नहीं, न्याय तणोज निवास; कालदोषथी नीकली, उपद्रव रहित आवास ॥ ५ ॥ प्रिय बोले सहु प्राणीआ, सरल स्वभावी सार; धर्मी नेही व्रत धणी, परजा वसे अपार ॥ ६ ॥ कालमेघ नरपति कह्यो, वैरीने विकराल; सज्जान नयनने शशी समो, करुणावंत कृपाल ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ भाव श्रावकना भाखीये ॥ ए देशी ॥

॥ नगरशेठ चूडामणि, बंधुदत्त तिहां बहुगुणी ॥ पर तणी, नारीथी उपरांठो रहे ए ॥ १ ॥ पण प्रार्थनाए नहीं, पर धने निरलोभी सही ॥ पण अहीं, धर्म उपार्जणमां नहीं ए ॥ २ ॥ असंतुष्ट पर उपगारे, धन आगममां नहीं क्यारे ॥ ते प्यारे, दोषे दलिद्री नहीं विभवथी ए ॥३॥ सुरतरु परे खंध उपरे, पाद मूकी फल बहु परे ॥ तिणी परे, अर्थीनिवह फल भोगवे ए ॥ ४ ॥ हारप्रभा तस भामिनी, कुल रूप सम सोहामणी ॥ कामिनी, साथे सुखने भोगवे ए ॥ ५ ॥ आनत कल्पथी अवतस्या, सुर आउखो पूरो कस्यो ॥ उर धस्यो, हारप्रभाए सुपन लह्यो ए ॥ ६ ॥ उज्ज्वल करिवरे कनकने, कलशे जे सिंचती रे ॥ शोहंती रे, मुक्ताफल हारे करी ए ॥ ७ ॥ दिव्यकमल उपरे रही, चीवर धवल धरंती रे ॥ पहेरंती रे, विविध रतन कटिमेखला ए ॥ ८ ॥ उत्तरवस्त्रे ढांकीआ, स्त-

नजुग कमल करे रह्या ॥ बहु महमह्या, ज्रमर गुंजारव तिहां करे ए ॥ ॥ एहवी लखमी देवता, उदर पेसती दीठी रे ॥ मीठी रे, लागी जागी हरखशुं ए ॥ १० ॥ संजलाव्युं जरतारने, तव जरता तस जासे रे ॥ थाशे रे, लक्ष्मी निवास सुत ताहरे ए ॥ ११ ॥ सांजली धर्म करे सदा, प्रसव समय क्रमे आयो रे ॥ जायो रे, बालक पूरण दिहाडले ए ॥ १२ ॥ शेठ वधाव्यो दासीए, दीधुं दान संतोष रे ॥ पोष रे, कीधो हरष तणो घणो ए ॥ १३ ॥ मास थयो जब तेहने, तव नाम धरण तस दीधुं रे ॥ सीधुं रे, पितामहनुं जे हतुं ए ॥ १४ ॥ कुमरजाव पाम्यो जदा, कला ग्रही तिणे बहु तदा ॥ ए सदा, लब्धि पदानुसारी नीपनो ए ॥ १५ ॥ विजयजीव हवे नारकी, नरकमांथी नीकलीयो रे ॥ रुलीउ रे, बहु संसारमां अनुक्रमे ए ॥ १६ ॥ लगते जवे कांय तप करी, इण पुरे कार्त्तिक नामे रे ॥ शुज धामे रे, जया जार्या कुखे उपन्यो ए ॥ १७ ॥ पुत्रीपणे ते अनुक्रमे, लखमी एणे अजिधाने रे ॥ शुजवाने रे, यौवन पामी बालिका ए ॥ १८ ॥ कर्मपरिणाम अचिंतथी, वली जावीजावना जोगथी ॥ कर्मजोगथी, महा आडंबरे परणीयां ए ॥ १९ ॥ राग घणो लछी उपरे, धरणने पण नहीं तास रे ॥ मुज पास रे, रखे आवे एम चिंतवे ए ॥ २० ॥ एम विषय विटंबणा सारिखा, जोगवतां गयो कोइ काल रे ॥ सुरसाल रे, मदन महोत्सव आव्यो अन्यदा ए ॥ २१ ॥ मलयसुंदर उद्यानमां, क्रीडा करवा हेते रे ॥ सुसंकेते रे, रथ बेसी धणो गयो ए ॥ २२ ॥ पोहोतो दरवाजे हवे, इणे अवसरे देवनंदी रे ॥ पंचनंदी रे, शेठनो पुत्र सोहामणो ए ॥ २३ ॥ क्रीडा करी उद्यानमां, रथ बेसी वल्यो पाछो रे ॥ आछो रे, ते दरवाजे आवीयो ए ॥ २४ ॥ ॥ आमा साहामा बिहु मिल्या, छठे खंडे ढोगाला रे ॥ मछराला रे, ढाल प्रथम पन्ने कही ए ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मारग लघु रथ मोटका, समकाले न समाय; देवनंदी कहे दावथी, धरणने साहमो धाय ॥ १ ॥ उसारो रथ इहां थकी, आवे मुज रथ आम; कहे धरण संकडाशमां, न फरे मुज रथ नाम ॥ २ ॥ तिणे उसारो

तुम तणो, रथ जिम थाये राह; तव देवनंदी त्रासीउं, आणी अंग उन्हा-
ह ॥ ३ ॥ कहो तुमथी ऊणिम किसी, अममां बे कांइ आज; रथ तिणे
हुं केम फेरवुं, धरण कहे धरी लाज ॥ ४ ॥ ए तो सम विहुने अछे;
बिहु थाका बलवंत; राजपंथ रोक्यो रथे, कोइ कोइने न कहंत ॥ ५ ॥
वात नगरमां विस्तरी, कारणिआने कान; पोहोती तव पंचे मली, न्या-
ये करता न्यान ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आछो रंग ल्याजो रे माणिगर महाराजा ॥ ए देशी ॥

॥ आछो न्याय करजो रे, चातुर चोवटीआ ॥ ए आंकणी ॥ आलो-
च करतां रे नयरी महर्द्धिका, ए तो दोय शेठ महंत महंत ॥ आ० ॥
छोरु तेहनां रे अति उछांछलां, वारी न शकीये एहने तंत ॥ १ ॥ ॥
आ० ॥ जइ निव्रंछो रे दोय कुमारने, एम शिखामण अति घणी देह ॥
॥ आ० ॥ चार जण मूक्या रे वयथी परिणम्या, धर्मारथमां विशारद
तेह ॥ २ ॥ आ० ॥ वचन विन्यास कुशल समता घणी, धर्मी धर्मे स-
हाय ॥ आ० ॥ इह परलोक अपाय देखायवा, निपुण घणा कृत न्याय॥
॥ ३ ॥ आ०॥ वहुमत जनने रे ते चारे जणा, आव्या ते कुंअर पास ॥
॥ आ० ॥ उन्ना थइने रे आदर दे घणो, हवे शीक्षा दीए तास ॥ ४ ॥
आ० ॥ पूर्वज केरा रे धनथी मानशो, नविअ कमाया तुमे कोय ॥ आ०
॥ केणे कमाइने रे दान दीधुं घणुं, जेणे जश जगतमां होय ॥ ५ ॥ आ०
॥ मात पिताने रे केणे संतोषीआं, के कस्यो दीन दुःखीनो उद्धार ॥ आ०
॥ के कांय धर्मनुं रे काज करावीयुं, फोकट स्यो रे अहंकार ॥ ६ ॥ आ०
॥ वुधजन तुमची रे हांसी करे सदा, उंसरो तुम इण गाम ॥ आ० ॥
निज निज ठामथी रे रथ पाछा करो, तुमचो वक्कर जाये आम ॥ ७ ॥
॥ आ० ॥ हरख्यो त्राखे रे देवनंदी खरुं, लाज्यो धरण कुमार ॥ आ० ॥
॥ कहे तुमे अमने रे शिख दीधी खरी, मुजने पमो रे धिःकार ॥ ८ ॥ आ०
॥ हांसी हुइ रे एह चरित्रथी, काचा गर्ज समान ॥ आ० ॥ मानुं माहरो
रे आतम इणी परे, तुमे तो बुद्धिनिधान ॥ ए ॥ आ० ॥ रथ उंसारो रे
जइ देशांतरे, पामी द्रव्य अपार ॥ आ० ॥ वरसे दिवसे रे जे करशे घणो,

दीन अनाथ उद्धार ॥ १० ॥ आ० ॥ पेसशे तेहनो रे रथ आगल थकी, ते तव बोल्या महंत ॥आ०॥ एह हठाग्रह रे शाने तुमे करो, तव तिहां धरण बोलंत ॥ ११ ॥ आ० ॥ शाता अमने रे ते विण नवि होये, तव बोल्या तेह चार ॥आ०॥ ए तो जाणे रे नयर महर्द्धिका, धरण कहे धरी प्यार ॥ १२ ॥ आ० ॥ जणावो तेहने रे अमे जाशुं खरा, देवनंदी कहे आम ॥ आ० ॥ दोष न एहमां रे सुखे एमज करो, संजलावे तस ताम ॥ १३ ॥ आ० ॥ शेठ नयरना रे मली बोलावीआ, तेहनां मात ने तात ॥ आ० ॥ वात सुणावी रे तव अंगीकरे, सम दीधा सुविख्यात ॥ ॥ १४ ॥ आ० ॥ साहाय्य न करवुं रे निज सुतनुं तुमे, बोलाव्या तिहां दोय ॥ आ० ॥ दिनार पण लख रे बिहुने जुजुआ, आपे महाजन सोय ॥ १५ ॥ आ० ॥ पत्र लिखाव्यो रे बिहुना हाथनो, वरस दिवसे जे कोइ आय ॥ आ० ॥ अधिक पराक्रम रे निज द्रव्ये करी, फोरवशे जेह न्याय ॥ १६ ॥ आ० ॥ तेहनो रथवर रे आगल चालशे, मुद्रित कीधो तेहनो पत्त ॥ आ० ॥ मूक्यो कागल रे पुरजंमारमां, हवे चाले तेह जत्त ॥ १७ ॥ आ० ॥ जांरू ते लीधां रे योग्य जेहने हतां, उत्तरापंथे चाल्यो एक ॥ आ० ॥ बीजो पूरव रे दिश जणी चालीउं, मनमां धरतो ते टेक ॥ १८ ॥ आ० ॥ चिंतवे लक्ष्मी रे गयो देशांतरे, मलशे कहो हवे केम ॥ ॥ आ० ॥ मारी न शकी रे हवे केम मारीये, उपनो खेद ते एम ॥ १९ ॥ आ० ॥ एक प्रयाणुं रे तेहवे पोहोंचीआं, तव तस मात ने तात ॥ ॥ आ० ॥ पुत्रतनुनी रे चिंता करणने, पूछी महर्द्धिकने सवि वात ॥ २० ॥ ॥ आ० ॥ वहूरो बेहुनी रे मोकली पूठीथी, साथे सबल परिवार ॥ आ० निज निज पतिने रे ते आवी मली, पाम्या हर्ष अपार ॥ आ० ॥ छठे खंडे रे ढाल बीजी कही, ए तो जली समरादित्यने रास ॥ आ० ॥ पद्म कहे रे हवे सुणो आगले, सुणतां लीलविलास ॥ २२ ॥ आ० ॥ सर्व गाथा ॥ ६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नित्य प्रयाणुं नवनवुं, एक दिन दीठुं एम; साथ वहंते सामटे, धरणे धारी प्रेम ॥ १ ॥ वनमां एक विद्याधरो, सौम्य रूप शिरदार; उपडे ने अवनी पडे, पास गयो धरी प्यार ॥ २ ॥ पंखविहूणो पंखीउं, उपडे पडे

अपार; तेणी परे केम करो तमे, पूछे एह प्रकार ॥ ३ ॥ गमन उत्सुक गगने घणा, पण न जवाये प्राय; वात कहो वहेला थइ, कहेवा जेहवी कांय ॥ ४ ॥ आकृति देखी एहनी, वली वचन विन्यास; चमत्कार लही चित्तमां, जणे ते एहवी जास ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥

॥ अमरपुर वैताढ्य पर्वते जी, तिहां हुं विद्याधरपुत्त ॥ हेमकुंमल इण नामथी जी, नांहि विद्याधरसुत्त ॥ १ ॥ अमर० ॥ एक दिन एक विद्याधरु जी, विद्युन्माली तिहां आय ॥ तातनो मित्र तिणे पूछीउं जी, आमणा डुमणा किम जाय ॥ २ ॥ अम० ॥ तेह खग कहे मुक तातने जी, विंकथी आवीउं एथ ॥ वाटमां उजेणी नयरीए जी, सीरीभज्ञ नाम नृप तेथ ॥ ३ ॥ अम० ॥ जयसीरी नाम तेहने धूआ जी, कोकण नृपसुत नाम ॥ नविश्र शिशुपालने दीधली जी, जाचतां पण तेणे ताम ॥ ४ ॥ अम० ॥ वङ्ग नृपपुत्र श्रीविजयने जी, आपतो तेहनो तात ॥ क्रोध चढीउं शिशुपालने जी, आवीउं चिंतवी घात ॥ ५ ॥ अम० ॥ विवाह अवसरे नीकली जी, मयणनी पूज निमित्त ॥ तेह विचमांथी हरी गयो जी, पामीआ सहु तिहां जीत ॥ ६ ॥ अम० ॥ श्रीविजये केमी कीधी घणी जी, युद्ध लाग्युं ते अपार ॥ छोमवी जयसीरी लेइ वल्यो जी, पण तस गाढ प्रहार ॥ ७ ॥ अम० ॥ वेदनाथी घणुं व्याकुलो जी, नारी देखी कहे एम ॥ एह जीमशे तव जीमशुं जी, अन्यथा माहरे नेम ॥ ८ ॥ अम० ॥ तेह महा डुःख मांहे पमी जी, तास डुःख देखी हुं एम ॥ तात संसार कहे एहवो जी, डुःखदायक नहीं खेम ॥ ९ ॥ ॥ अम० ॥ खेद म करो एह वातमां जी, सांजलशुं में तव तेह ॥ चिंतव्युं काले हिमवंत गयो जी, उंषधिनो नगगेह ॥ १० ॥ अम० ॥ गंधर्वरति मुक मित्रशुं जी, तेह गांधर्व कुमार ॥ उंषधिवलय उग्युं तिहां जी, एक वर गुफा मकार ॥ ११ ॥ अम० ॥ ते कहे मुकने सांजलो जी, लोकनी साचली वात ॥ मंत्र मणि औषधि केरमो जी, मोटो प्रजाव कहेवात ॥ १२ ॥ अम० ॥ एह औषधिनो महिमा सुणो जी, खड्गप्रहारे करी जास ॥ हाम जो कापीआं होय तो जी, जीवितनी नहीं आश ॥

॥ १३ ॥ अम० ॥ नीरमां एह पखालीने जी, छांटीये एह जो वारि ॥ वेदनाने व्रण रूझवे जी, ततक्षण दीठ प्रतिकार ॥ १४ ॥ अम० ॥ ते जणी तिहां जइ लावीये जी, टालीये सीरीविजय दुःख ॥ विद्या संजारी किमहीक करी जी, गगनगामिनी लह्यो सुख ॥ १५ ॥ अम० ॥ औषधि लेइ तिहांथी वळ्यो जी, रखे श्रीविजय दुःख थाय ॥ तिणे करी वेगथी चालतां जी, आवीयो इणहीज ठाय ॥ १६ ॥ अम० ॥ विश्राम निमित्त इहां उतस्यो जी, शौच कस्युं चरणनुं ताम ॥ क्षणेक रही वेगथी चालवा मन कस्युं जी, विद्या संजारी ते जाम ॥ १७ ॥ अम० ॥ अजिनव जणयो तिणे विसस्युं जी, वली गमन संक्रम मुऊ ॥ पद एक सांजस्युं नहीं मुने जी, तिणे पडुं ए कह्युं तुऊ ॥ १८ ॥ अम० ॥ धरण कहे शुं करशो हवे जी, खग कहे नांहि उपाय ॥ जिणे करी नृपसुत विणसशे जी, ए मुऊ दुःख बहु थाय ॥ १९ ॥ अम० ॥ खेद बहु उपजे चित्तमां जी, नवि थयो पर उपगार ॥ पुण्यहीणो न समीहित लहे जी, हवे कहे धरण कुमार ॥ २० ॥ अम० ॥ कल्प संजलाववानो होये जी, तो मुऊ आगले जाखी ॥ तेह पद जो कदि मुऊ जडे जी, तो मानुं पामीआ लाख ॥ २१ ॥ अम० ॥ तेह विद्या संजलावतो जी, तुरत पद पूरीयुं तेण ॥ हरखीउं हेमकुंमल घणुं जी, नृपसुत जीवीउं जेण ॥ २२ ॥ ॥ अम० ॥ शुं तुऊ उपगरीये कहो जी, बोलीउं धरण कुमार ॥ जाउं इच्छित करो शीघ्रथी जी, तिणे थयो मुऊ उपगार ॥ २३ ॥ अम० ॥ हेमकुंमल कहे सांजलो जी, तुमे तो मोहोटा महाजाग ॥ उषधिवलय खंम आपीउं जी, करजो उपगार धरी राग ॥ २४ ॥ अम० ॥ प्रार्थनाजंग किम कीजीये जी, लीधी औषधि तिणे ताम ॥ साथ जेला थया धरण ते जी, हेमकुंमल गयो ठाम ॥ २५ ॥ अम० ॥ खंम छठे ते त्रीजी कही जी, पद्मविजये ए ढाल ॥ श्री समरादित्य रासमां जी, सुणतां होय मंगलमाल ॥ २६ ॥ अम० ॥ सर्व गाथा ॥ ए१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केइक वासर व्यतिक्रम्या, एक दिन गिरिने तीर; साथ सहु आवासीउं, धरणो साहस धीर ॥ १ ॥ इण अवसरे आमा उतां, दीठा जील ते दिन; वस्त्र वृक्षनी छालनां, जल विनुं होय जिम मीन ॥ २ ॥ कृष्ण व-

रण कोदंम करे, शुनकवृंद वली साथ; रोता न रहे रानमां, हैयुं न रहे हाथ ॥ ३ ॥ पास तेमीने पूछीयुं, कारण रोवो केह; ते कहे स्वामी अम तणो, जम परे अरिने जेह ॥ ४ ॥ कालसेन कलीउं अति, केसरीनो ते काल; केसरी नाम सुणे कदा, फोकट न चरे फाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ सीता हो प्रिया सीता ॥ राग प्रन्नाती ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन हो प्रन्नु एक दिन सुणीयुं कान, केसरी हो इहां केसरी आव्यो उद्यानमां जी ॥ एकलो हो तेह एकलो नीकल्यो वहार, शर धनु हो लेइ शर धनु पूख्यो मानमां जी ॥ १ ॥ अंतरे हो रह्यो अंतरे वनने सिंह, दीठो हो नवि दीठो तिणे पासे गयो जी ॥ सिंहे हो कर्यो सिंहे पूठेथी घात, लेइ हो नील लेइ कटारी साहामो थयो जी ॥ २ ॥ मार्यो हो तेह सिंहने मार्यो ताम, मस्तक हो खंम मस्तक खंम त्रोडे हरि जी ॥ चिंतवे हो तव चिंतवे अमचो स्वामी, निश्चय हो अमे निश्चयथी जाशुं मरी जी ॥ ३ ॥ बलशुं हो अमे बलशुं अगनिमां पेसी, नारी हो सुणे नारी तास गरन्नवती जी ॥ वारी हो पण वारी न रहे तेह, बलवा हो हवे बलवाने आवी छती जी ॥ ४ ॥ तातने हो तस तातने तेमवा अम्ह, मूक्या हो तिणे मूक्या नारी उगारवा जी ॥ थाशे हो केम थाशे अम पति शूर, शक्ति न हो अम शक्ति न तेह उगारवा जी ॥ ॥ ५ ॥ दुःखीया हो अमे दुःखीया नहीं उपाय, स्त्री परे हो असे स्त्री परे केवल रोइये जी ॥ बोल्या हो तव बोल्या धरण कुमार, नरनुं हो एम नरनुं पत्य सवि खोइये जी ॥ ६ ॥ दाखवो हो मुज दाखवो पल्लीनाथ, जीवे हो कदि जीवे तो जीवामीये जी ॥ पमीया हो तेह पमीया चरणे ताम, चालो हो प्रन्नु चालो तुमने देखामीये जी ॥ ७ ॥ जो तुम हो प्रन्नु जो तुम अनुग्रह बुद्धि, तो तुमे हो प्रन्नु तो तुमे चालो उतावला जी ॥ रखे हो प्रन्नु रखे थाय विनाश, उंषधि हो ग्रही उंषधि ने धर्यां पावलां जी ॥ ॥ ८ ॥ परवर्यो हो निज पुरुषे परवर्यो तेह, वेसर हो वर वेसर असवारी करी जी ॥ पोहोतो हो तिहां पोहोतो दीठो तेह, वमने हो तले वमने पासे चय धरी जी ॥९॥ रुधिरे हो तस रुधिरे सिंची देह, स्नेहे हो वली स्नेहे नारी तिहां रुवे जी ॥ सवरे हो कही सवरे स्वामीने वात, उठवा

तव ऊंचे सूवे जी ॥ १० ॥ धरणे हो तव धरणे माग्युं नीर, आण्युं हो जल आण्युं नलिनीपानमां जी ॥ उंषधि हो तिहां उंषधि नाखी मांहि, शिरनो हो खंम शिरखंम जोड्यो शानमां जी ॥ ११ ॥ पाणी हो बांध्युं पाणी बांध्युं तत्र, व्रण नवि हो तव व्रण नवि तिहां दीसे जरा जी ॥ महिमा हो तस महिमा अगम अपार, उठी हो तेह उठीने बेठो धरा जी ॥ १२ ॥ अधिकुं हो थयुं अधिकुं पूर्वथी रूप, घरणी हो वली घरणी हरखी अति घणी जी ॥ लागो हो हवे लागो पल्लीपति पाय, राखे हो तुमे राखे जीवित दीउं मुज जणी जी ॥१३॥ नारी हो प्रभु नारी सगर्भा एह, उगरी हो प्रभु उगरी अम आशा फली जी ॥ करीये हो हवे करीये जे कहो तेह, बोले हो तव बोले धरण करी मति जली जी ॥ १४ ॥ कीजे हो दया कीजे दया सवि जीव, बोल्यो कालसेन आणी मया जी ॥ पारधी हो कर्म पारधी न करुं काम, जीवुं हो जिहां जीवुं त्यां पालुं दया जी ॥ १५ ॥ धरण हो कहे धरण कह्युं सवि काम, एम कही हो तेह एम कही निज थानक गया जी ॥ नवनवां हो तेह नवनवां करतां प्रयाण, जातां हो हवे जातां केइक दिन थया जी ॥ १६ ॥ पोहोता हो तेह पोहोता आया मुंही गाम, सुखमां हो हवे सुखमां साथ ते उतर्यो जी ॥ पाखीनो हो कर्यो पाखीनो उपवास, धरणे हो निज धरणे आतम उद्धर्यो जी ॥ १७ ॥ तिणे समे हो तिहां तिणे समे एक चंमाल, तीखी हो तस तीखी खांधे शूली धरी जी ॥ गेरु हो तस गेरुए लींप्युं गात्र, चोर हो पण चोर न चोर ग्रह्यो करी जी ॥ १८ ॥ विरसुं हो वली विरसुं मिंमिम वाय, जाये हो लेइ जाये जुवानने मारवा जी ॥ देखी हो तेह देखी मोहोटो साथ, बोले हो नहीं बोले मुज दुःख वारवा जी ॥ १९ ॥ सुणजो हो सहु सुणजो महासर गाम, वासी हो नामे वासी नामे मोरीउं जी ॥ कामे हो जतां कामे कुशस्थल गाम, तलवरे हो मुज तलवरे इणी परे धोरीउं जी ॥ २० ॥ दोष हो मुज दोष नथी इहां कांय, ठेरुवो हो मुज ठेरुवो शरणागत प्रत्ये जी ॥ सुणजो हो वली सुणजो एक मुज वात, मरणथी हो बहु मरणथी दुःख बहु सांप्रते जी ॥ २१ ॥ पूर्वज हो मुज पूर्वज थया निकलंक, मेलुं हो कयुं मेलुं कुल में माहरुं जी ॥ ठेरुवो हो तिणे ठेरुवो दीनदयाल, बीरुद हो कांय बीरुद दयानुं ताहरुं जी ॥ २२ ॥ सांजली

हो तव सांजली धरण कुमार, चिंतवे हो चित्त चिंतवे चोर न एह छे जी ॥ वचने हो करी वचने जाणुं एम, तलवर हो कहे तलवरने कहे जेह छे जी ॥ २३ ॥ खमजो हो तुमे खमजो मुहूर्त्त मात्र, नृपने हो द्रव्य नृपने द्रव्य देइ करी जी ॥ छोमवुं हो कदि छोमवुं जाग्य जो होय, ते कहे हो जाउं ते कहे जाउं शीघ्रज चरी जी ॥ २४ ॥ माला हो लेइ माला मुक्ताफल साथ, सहस हो दश सहस दिनारनी ते जली जी ॥ नेटी हो नृप नेटीने कह्युं वृत्तांत, कीधो हो नृपे कीधो पसाय नर अटकली जी ॥ २५ ॥ आवी हो तिहां आवी मूकाव्यो चोर, जीवित हो तुमे जीवित दीधुं शुन परे जी ॥ जाखी हो एम जाखी तलवरने वाणी, पाणने हो तेह पाणने आश्वासन करे जी ॥२६॥ छठे हो खंम छठे चोथी ढाल, जाखी हो ए जाखी अति सोहामणीजी ॥ जाणो हो नवि जाणो दयालु एम, वाणी हो एह वाणी पद्मविजय जणी जी ॥२७॥ सर्व गाथा ॥१२३॥

॥ दोहा ॥

॥ संबल तस देइ सखर, वोलाव्यो ते ताम; एह अवस्था आर्य तुम, मत हो जिणे मुक्त काम ॥ १ ॥ गयो चंमाल गुण गावतो, करे प्रयाण कुमार; उत्तरापंथ अचलपुरे, सुखमां पहोता सार ॥ २ ॥ आदर राये आपीयो, वेची सघली वस्त; अठ गुण लान आसादीउं; सघलुं करतो शस्त ॥ ॥ ३ ॥ पुण्यउदय तस पाधरो, चातुर चारे मास; करतां कोमि कमाइउं, वाणिज्य तणो विलास ॥ ४ ॥ माकंदी पुर मोखनुं, जरीयुं तेणे जंम; साथ करी ते सामटो, चाल्यो तेज प्रचंम ॥ ५ ॥ प्रतिदिन करत प्रयाण ते, अनुचर साथे अपार; कादंबरी अटवी कने, तंबू कस्या तैयार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ जाउं जाउं रे रुठडा नाथ, तुमशुं नहीं बोलुं ॥

॥ वृषन तडुके तिणे वने, कांय सोर करे शीआल रे ॥ कांय वनन्नेंसा मांहो मांहि लडे, कांय वानर देता फाल ॥ १ ॥ सांजलो वातमीयां, जोजो जोजो रे कर्मनिदान ॥ सां० ॥ ऋद्धि चंचल कुंजरकान ॥ सां० ॥ जेहवुं कपटीनुं ध्यान ॥ सां० ॥ नरपतिनुं जेहवुं मान ॥ सां० ॥ ए आंकणी ॥ सिंहनाद केसरी करे वली, किहांयक गजवरवृंद रे ॥ ताल तमाल चंदन घणां, क्यांहि वृक्ष वली माकंद ॥ २ ॥ सां० ॥ अजगर फ-

णिधर मणिधरा, कांय नीम अटवी महा घोर रे ॥ त्रण दिन साथ व-ह्यो तिहां, कांय फिरता चिहुं दिश चोर ॥ ३ ॥ सां० ॥ जलथानक आव्युं यदा, कांय उतर्या तेहने तीर रे ॥ नाइ धोइ जीमीआ सहु, कांय नांगी तननी पीर ॥ ४ ॥ सां० ॥ चोकी मूकी चिहुं दिशे, कांय सूता सघला लोक रे ॥ चरम जाम थयो रातिनो, तव सबरना आव्या थोक ॥ ५ ॥ सां० ॥ मार मार करता थका, कांय वरसे तीर अपा-र रे ॥ जाग्या सहु जन साथना, तव जुझे जोध कुंझार ॥ ६ ॥ सां० ॥ मार्या सुनटे साथने, कांय नाठा नील ते जाय रे ॥ वली नेला मिली आवीआ, कांय करता बहु जन घाय ॥ ७ ॥ सां० ॥ सुनट थोमा ते साथमां, कांय सबरसेना नहीं पार रे ॥ नेल पामीने लूंटीउं, कांय त्रासवे बहु नर नारी ॥ ८ ॥ सां० ॥ बंदी पकड्या केइने, वली ऊव्य ले-इ गया तेह रे ॥ पल्लीपतिने सोंपता, सवि सूक्ष्म बादर जेह ॥ ए ॥ सां० ॥ कालसेन पल्लीपति, कांय पूछे बंदीवान रे ॥ किहांथी साथ ए आवीयो, वली कोहनो साथनिदान ॥ १० ॥ इण अवसर तिहां उलख्यो, भृत संगम नामे तास रे ॥ साथे सबवाहपुत्रने तेह, आव्यो हतो गु-णराशि ॥ ११ ॥ सां० ॥ सिंहप्रहारने टालवा, कांय संनारी ते वात रे ॥ पूछे कहीं दीठो हतो, ते कहे नवि जाणुं ख्यात ॥ १२ ॥ सां० ॥ का-लसेन कहे सांनलो मुऊ, प्राण दीआ हुंता जेण रे ॥ उत्तरापंथ नणी चालतां, पण नवि जाणुं नामेण ॥ १३ ॥ सां० ॥ तव तुमने दीठा हता, ए गया वरषनी वात रे ॥ जम परे सिंह मने मल्यो, मुऊ कीधो हतो प्राणांत ॥ १४ ॥ सां० ॥ उत्तरापंथ जातां थका, मुऊ कीधो तिणे उप-गार रे ॥ किम जीवाड्यो मुऊने, कांय न लह्यो तास प्रकार ॥ १५ ॥ सां० ॥ संनारी संगम कहे, ए सघली साची वाणी रे ॥ कालसेन तव बोलीयो कहो, तेह गया किण ठाण ॥ १६ ॥ सां० ॥ संगम आंसु रेऊ-तो कहे, दैवने पूछो एह रे ॥ पल्लीपति कहे तेह किम; तव संगम बो-ल्यो तेह ॥ १७ ॥ सां० ॥ साथ तेहुनो जाणजो, इहां धाऊ पमी अम जाम रे ॥ दीठा शर धनु लेइने, कांय दोडतां साहासा ताम ॥ १८ ॥ सां० ॥ तेहनी खबर हवे नहीं, ते सांनली पल्लीनाह रे ॥ मूर्छा लही धरणी ढल्यो, कांय धरतो डुःख अथाह ॥ १९ ॥ सां० ॥ वलकलवायरे

विंजतां, कांय चेतना लाधी जाम रे ॥ मास्यो के नवि मारीयो, कोइ पू-
छे सबरने ताम ॥ २० ॥ सां० ॥ सबर कहे नवि मारीयो पण, एकने
कीध प्रहार रे ॥ तव बंदी जोया तिणे, पण न लह्यो तेह मझार ॥ २१ ॥
सां० ॥ ते धन सहु एकत्र करीने, आश्वास्यो सहु साथ रे ॥ व्रणकार्य
करे लोकनां, ते साथनो पल्लीनाथ ॥ २२ ॥ सां० ॥ दश दिशि सबरने
मोकल्या, कांय खोलवा धरण कुमार रे ॥ आप गयो तस खोलवा, कांय
धरतो दुःख अपार ॥ २३ ॥ सां० ॥ छठे खंडे पांचमी, रूमी पद्मविजय
कही ढाल रे ॥ समरादित्यना रासमां, कांय सुणतां मंगलमाल ॥ २४ ॥
सां० ॥ सर्व गाथा ॥ १५३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नवि लाधा कोइ थानक, आव्यो फरी आवास; सबर आव्या दि-
शो दिशि थकी, सहुए थइ निराश ॥ १ ॥ शोक लह्यो कालसेन तव, बोले
एम जबाप; दुर्जनने जो सुख दीये, सज्जन होय संताप ॥ २ ॥ पन्नगने
पयपान जे, ते विषवृद्धिनुं हेत; दुःखदायक हुं देखजो, तिणी परे मुझ
संकेत ॥ ३ ॥ शुं बहु बोले सहु सुणो, एह प्रतिज्ञा आज; पांच दिवसमां ए
पुरुष, संपद् मेलवुं साज ॥ ४ ॥ एम करतां जो ए नहीं, मिले तो करशुं
एम; अग्निमां पेसी आपणा, प्राण तजीशुं प्रेम ॥ ५ ॥ कुलदेवी कादंबरी,
अटवीनी आधार; दश नरनो बलि देयशुं, लहीये जो ए लगार ॥ ६ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ हरिया मन लागो ॥ ए देशी ॥

॥ एहवी मानी मानता, बहु दिन संबल दीध रे ॥ कुंवर मतिवंतो
॥ मोकल्या सबर दिशो दिशे, खोलवा केरुी ते कीध रे ॥ १ ॥ कुं० ॥
खोल करणने नीकल्यो, आमण दुमणो आप रे ॥ कुं० ॥ जिम जिम ते-
ह जडे नहीं, तिम तिम धरे संताप रे ॥ २ ॥ कुं० ॥ धरणो पण हवे सा-
थथी, नाठो लही लेय रे ॥ कुं० ॥ दव्यमां उषधिवलय छे, पासे पंथे एय
रे ॥ ३ ॥ कुं० ॥ दिग्मूढ चालतां थका, दिवस रह्यो घरुी दोय रे ॥ कुं० ॥
सिणिंधनिलय गिरि गयो, भयस्थानक बहु होय रे ॥ ४ ॥ कुं० ॥ हस्ति-
कलेवर बहु जिहां, सिंह करे सिंहनाद रे ॥ कुं० ॥ दावानल लागे घणा,
वनभेंसा उनमाद रे ॥ ५ ॥ कुं० ॥ अजगर वाघ अहि घणा, कात्यायनी

हरे प्राण रे ॥ कुं० ॥ थाकी लखमी वाटमां, वयण प्रस्वेद पिठाण रे ॥ ॥ ६ ॥ कुं० ॥ अहो अहो माहारां कर्मनी, परिणति विचित्र प्रकार रे ॥ ॥ कुं० ॥ प्राणप्रिया दुःख एम लहे, चिंतवे धरण कुमार रे ॥ ७ ॥ कुं० ॥ लखमी पण चित्त चिंतवे, दुःख पण ए मुऊ सुख रे ॥ कुं० ॥ जिहां ए आपद पामीयो, धरण लहुं महा दुःख रे ॥ ८ ॥ कुं० ॥ उदक फलादिक नवि मल्यां, जिणे होय लखमीने त्राण रे ॥ कुं० ॥ सूतां पालव साथरे, अस्त थयो जब जाण रे ॥ ए ॥ कुं० ॥ रात्रि गइ बीजे दिने, दिवस रह्यो एक जाम रे ॥ कुं० ॥ वरुठाया हेठल परी, मूर्छानो परिणाम रे ॥ ॥ १० ॥ कुं० ॥ मुंऊाणी तस चेतना, तालु जीन सुकाय रे ॥ कुं० ॥ धरण विचारे एहवुं, जीवलोक दुःखदाय रे ॥ ११ ॥ कुं० ॥ प्राण आपुं हुं तेहने, सज्ज करे कोय ए नारी रे ॥ कुं० ॥ अंगे तस कर फेरवे, मूकतो आंसुधार रे ॥ १२ ॥ कुं० ॥ चेतना वली तव एम कहे, लागी तरश अपार रे ॥ कुं० ॥ जल लावुं धीरी थजे, रहेजे इणहीज ठार रे ॥ १३ ॥ ॥ कुं० ॥ वृक्ष उपरे चढी जोइयुं, पण नवि जल कहीं लद्ध रे ॥ कुं० ॥ ताम उतरी निज कर तणी, लेइ नसा तिणे विद्ध रे ॥ १४ ॥ कुं० ॥ तुबरी वनस्पति रसे, कीधुं उदक समान रे ॥ कुं० ॥ निज साथलनुं मांस जे, वनदवे पचव्युं जान रे ॥ १५ ॥ कुं० ॥ नारी माटे ए सवि कस्युं, नारी विना न जीवाय रे ॥ कुं० ॥ औषधिए व्रण रूऊव्यो, आव्यो नारीने ठाय रे ॥ १६ ॥ कुं० ॥ पाणी पीउ ए लावीउ, वनदवमां ए सिद्ध रे ॥ कुं० ॥ शशकमांस ए लावीउ, इणी परे कुंअरे कीध रे ॥ १७ ॥ कुं० ॥ आहार कस्यो तिणीए हवे, कांयक काल गमाय रे ॥ कुं० ॥ दिनकरना अनुमानथी, उत्तर सन्मुख थाय रे ॥ १८ ॥ कुं० ॥ पोहोता एक सरोवरे, अर्क अस्तंगत थाय रे ॥ कुं० ॥ नवि पेठां तिणे नयरमां, यक्षदेवलमां ठाय रे ॥ १ए ॥ कुं० ॥ पहोर रात्रि गइ तव कहे, लछी अलछी अवतार रे ॥ ॥ कुं० ॥ आर्यपुत्र तरशी घणुं, तव बोल्यो ते कुमार रे ॥ २० ॥ कुं० ॥ आणुं उदक नदी थकी, तुं रहेजे सुख साथ रे ॥ कुं० ॥ घट लेइ पाणी लावीउ, लखमीने ते पाय रे ॥ २१ ॥ कुं० ॥ सूतां धरण लछी हवे, राति चरम एक जाम रे ॥ कुं० ॥ लछी जागी तिणे समे, चिंतवे मनमां आम रे ॥ २२ ॥ कुं० ॥ एह अवस्था पामीयो, मुऊ विधि छे अनुकूल रे ॥ कुं० ॥

एहथी अधिक लहे आपदा, तो होय अति मंजुल रे ॥ २३ ॥ कुं० ॥ छ-ट्ठी ढाल खंममां, पद्मविजय कही ढाल रे ॥ कुं० ॥ डुर्जन सुजन पटंत-रो, सुणजो जवि सुविशाल रे ॥ २४ ॥ कुं० ॥ सर्व गाथा ॥ १०३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर तिहां आवीउं, चंडरुद्र एक चोर; रयण जांम लेइ र-यणीए, कीधुं कर्म कठोर ॥ १ ॥ कोटवाल केडे थयो, नासी न शक्यो नेम; देहरा मांहि दरूवडी, पेठो जीवन प्रेम ॥ २ ॥ पेठो देइ बारणां, आर-क्षक नर आय; बेठा बोले बारणे, अप्रमादी हो जाय ॥ ३ ॥ सांजल्युं लछीए ते सवे, तस्कर पगरव तेम; चिंतवे नारी चित्तमां, कारण ए छे केम ॥ ४ ॥ पूछुं जो पूगे कदा, मनह मनोरथ मुज; तास निकट गइ ते-हवे, पूछे इणी परे गुज ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ झीणा मारुजीनी करहलमीनी देशी छे ॥

॥ नृप कहे निज पुत्री जणी, फट पापिणी हतीयारी मुखडुं कांय देखाडे हो राज ॥ ए देशी ॥

॥ लखमी कहे तुं कोण अछे, बारणे हाल कल्लोल एवमो केहनो थाये हो राज ॥ तेह कहे कहेशुं पछे, पण मुज आपे पाणी माहरुं काज सधाय हो राज ॥ १ ॥ सा कहे जल देशुं अमे, कारण मुजने जाखो तव ते चित्तमां चिंते हो राज ॥ कुंज बराबर ठोंकरी, माहरे जोग्य ए दीसे जाखे ते इणी जांते हो राज ॥ २ ॥ चंमरुद्र हुं चोर छुं, कहुं संक्षेपे वात विस्तारे न कहाय हो राज ॥ नृपनो रतनकरंमीउं, चोरीने हुं लाव्यो तलवर जाणज थाये हो राज ॥ ३ ॥ ते मुज पूछे आवीआ, तेह वहु हुं एक क्षीण शक्ति वली जावा हो राज ॥ जीवितनी आशा वडी, रयणीए अंधारी आव्यो ए मुज रावा हो राज ॥ ४ ॥ बोले बाहिर ते नरा, तव लछी मन चिंते मुज विधि जो अनुकूल हो राज ॥ तो इछित मुज नीपजुं, एम चिंती कहे सुणजे तुज नहीं होये मंगुल हो राज ॥ ५ ॥ पाणीनुं शुं काम छे, तुज जीवाडुं माहरुं वचन करे जो प्यारे हो राज ॥ ते कहे दाख उतावली, सा कहे पुरी माकंदी कार्त्तिक शेठ धन धारे हो राज ॥ ६ ॥ नामे लखमी हुं तस धूआ, पूरवने जिम वैरी धरणे मुजने परणी

हो राज ॥ मुफ अनिष्ट सूतो इहां, मूक तुं ए धन चोरखुं हुं थाउं तुफ घरणी हो राज ॥ ७ ॥ ए एहनुं कह्युं पामशे, पूछशे जो कदि राजा तेहने उत्तर देशुं हो राज ॥ आ माहारो जर्त्तार छे, ए तो नवि उलखीये एम करी जममुख देशुं हो राज ॥ ८ ॥ चोर कहे साचुं कह्युं, पण ए पुरीनो वासी मुफ उलखे सहु प्राणी हो राज ॥ सा कहे तास उपाय श्यो, तस्कर कहे चोर गुटिका माहारी पास वखाणी हो राज ॥ ए ॥ दीठो प्रत्यय जेहनो, चिंतामणिने सरिखी आंजुं उदक संजोगे हो राज ॥ नवि देखे कोइ मुफने, सहस नयन जो इंदो जोवा आवे रंगे हो राज ॥ १० ॥ खंधरुद्ध जगवाननी, आपी ते छे नरनी वात तो कहीये केही हो राज ॥ अलछी जल तस आपीयुं, अंजन कीधुं विहुए छानी राखी देही हो राज ॥ ११ ॥ रतनकरंमक मूकीयो, धरणनी पासे तेणे रहीयां ते एक देशे हो राज ॥ विहाणे धरण ते उठीयो, कोटवाले तव दीठो रयणकरंम विशेषे हो राज ॥ १२ ॥ देवकुल मांहिथी काढीयो, बांधी कीधो आगे चिंते ए शुं जाय हो राज ॥ अथवा विधि प्रतिकूलथी, अमृत ते विष होय गोपय सायर थाय हो राज ॥ १३ ॥ रज्जु कृष्ण सर्प होय, परमाणु पण मेरु सुत पण वैरी थाय हो राज ॥ मूषक विवर रसातलं, होय प्रकाश अंधारुं सापण सरिखी माय हो राज ॥ १४ ॥ खंति कोहं मद्दव माण, आर्यव माया थाय तोष ते लोज उराय हो राज ॥ सत्य ते अलिक समोवमे, वाघण सरिखी नारी फाकुं शुं कहेवाय हो राज ॥ १५ ॥ अथवा एहथी न छूटीये, पण ए पीमा करतां अधिकी मुफने साले हो राज ॥ नवि दीसे लछी किहां, शी गति होशे एहनी विरह न लही कोइ काले हो राज ॥ १६ ॥ अथवा रुडुं ए थयुं, ए पण आपद् लहेती जो होती मुफ संगे हो राज ॥ अनुक्रमे रायकुले लावीआ, अवसरे नृपने विनव्यो पकड्यो महा जुजंग हो राज ॥ १७ ॥ मायावी वाणिकवेशे, चोर्या धननी साथे जेह आण ते करीये हो राज ॥ सोंपो ए चंमालने, कहेजो नृपनी आण एहने जमघरे धरीये हो राज ॥ १८ ॥ तिमज कह्युं ते तलवरे, कहे महत्तर चंमाल केहनो छे आज वारो हो राज ॥ कहे चंमाल मोरीआ तणो, महत्तरे तव तेमाव्यो आव्यो तस कहे मारो हो राज ॥ १९ ॥ पहोर दिवस रह्यो पाछलो, जो

एहने नवि मारो नासी जाये किवारे हो राज ॥ नृपनी आण डुक्कर घणी, लेइ जाउं मशाणे मोरीए मान्युं त्यारे हो राज ॥ २० ॥ मोरीउं लेइ चाल्यो तिहां, मुज जीवितनो दाता सब्बवाहसुत एह हो राज ॥ उंलख्यो तेहने जली परे, अहो अहो कर्म्म विचित्र एह अवस्था केह हो राज ॥ २१ ॥ त्यां जइ बंधन ठोमीयां, चरणे लागी बोल्यो मुजने उंलखो स्वामी हो राज ॥ धरण कहे नवि सांजरे, तव धुरथी सवि जाख्युं तुम परे हुं लह्यो खामी हो राज ॥ २२ ॥ द्रव्य देइ नृपने बहु, विण अपराधी मुजने उगार्यो जली जांते हो राज ॥ धरण कहे ए केटलुं, मोरीउं बोले ताम ठाम लही एकांते हो राज ॥ २३ ॥ उठे खंमे सातमी, पद्मविजय ए जाखी ढाल अधिक उल्लासे हो राज ॥ श्री समरादित्य रासमां, सांजलजो हवे आगे मंगलमाला थाशे हो राज ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ११२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आवी केम ए आपदा, मोरीउं कहे महाराज; पूछो दैवने सांप्रते, कहेवानुं नहीं काज ॥ १ ॥ मनमां चिंते मोरीउं, नहीं बोले ए नाथ; कचपचनुं कामज नहीं, हमणां बाजी हाथ ॥ २ ॥ पाण कहे प्रणमी करी, निश्चय इहांथी नास; कालक्षेप करतां थका, पमीये कोइक पाश ॥ ॥ ३ ॥ धरण कहे धीरज धरी, मुजने सुखथी मार; आण करो अवनीपति, दिलमां डुःख न धार ॥ ४ ॥ पण तुज कष्टे प्राण मुज, नहीं राखुं निरधार; मोरीउं कहे मुज प्राणनी, वात न कांय विचार ॥ ५ ॥ सात पेढीनो शुं सरो, अमचो अवनीपाल; शत अवगुण अमचा सहे, कोपे नहीं कोइ काल ॥ ६ ॥ नवि जाये जो नासीने, मरवुं तो मुज नेम; सज्जन स्नेह इस्या होये, जलपय मलीआं जेम ॥ ७ ॥ यतः ॥ क्षीरेणात्मगतोदकाय सुगुणादत्ताः पुरा तेऽखिलाः, क्षीरे तापमवेक्ष्य तेन पयसा स्वात्मा कृशानौ हुतः ॥ गंतुं पावकमुन्मनस्तदजवद्दृष्ट्वा च मित्रापदं, युक्तं तेन जलेन शाम्यति सतां मैत्री पुनस्त्वीदृशी ॥ १ ॥" एम विचारी आत्मशुं, धरण कहे सुण धीर; तुम वयणे जाउं तुरत, पाण कहे गइ पीर ॥ ८ ॥ पंथ देखाड्यो पधारो, प्रणमी धरणना पाय; पाछो वलीउं प्रेमशुं, जलदी धरणो जाय ॥ ९ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ सोनाने केरुं मारु बेड्लुं, मारूजी वाव्य खोदाव ॥ ए देशी ॥

॥ जातां इणी परे चिंतवे, किहां गइ माहरी नारी ॥ लघुनीति क-रेवा काम उठी न जगाडीउं, मुझ रागे रे तिणी वार ॥ १ ॥ मूषी कोइक तस्करे, लेइ गया निर्धार ॥ बोली नहीं मुझ घात विचारी चित्तमां, राग घणो रे मुझ नारी ॥ २ ॥ नवि देखुं जो नारीने, तो मुझ अफल संसार ॥ एम चिंतवतो तेह जोवा लागो हवे, रेडतो आंसु रे धार ॥ ३ ॥ रिजुवालिकामां न्हाइउं, इण अवसर तेह चोर ॥ रिजुवालिकाए आवी विचारे एणी परे, नारी ए कर्म कठोर ॥ ४ ॥ तुरत ठांड्यो निज धव प्रते, महा आपदमां नाखी ॥ निज कुल न कस्यो विचार आवी मुझ संप्रति, नवि उलखती रे साखी ॥ ५ ॥ एहनी संगे हुं रही, जीवुं केतो काल ॥ दुर्गति द्वार ए नारी अनर्थनी खाण ठे, सापण सम विकराल ॥ ६ ॥ चंचल चपलानी परे, मुखे मीठी असराल ॥ एहनां चरित्रनो पार न लहीये पंमिते, जिम तिम बोले रे आल ॥ ७ ॥ ॥ यतः ॥ सवइउ ॥ " छिनुमें हसती छिनुमें रुदती, छिनुमें बहु बोल कटुक सहे ॥ छिनुमें अतिरंग विरंग छिनुं, छिनुंमें दृगनीर शुं आय रहे ॥ छिनुमें कटु वात सहे अपनी, छिनुमें मधुरो पण नांहि सहे ॥ कवि पद्म कहे जगदीश बिना, त्रियकी करनी कहो कोन लहे ॥१॥" तिणे ए नारी थकी सखुं, जिणी वाते जाये प्राण ॥ अंग आभूषण लेइ गयो तस ठोमीने, शुद्ध विचारी रे जाण ॥ ८ ॥ लछी विचारे एहवुं, रुडी थइ एह वात ॥ धरण मुउ रिपु मुझ जाउं अन्य स्थले, रहेशुं रे हवे सुख शात ॥ ९ ॥ कांठे चालतां एहवे, दीठी धरण कुमार ॥ रोम राय उल्लास करीने पूछतो, किम रे मली तुं नारी ॥१०॥ तव रोवा लागी घणुं, धरण कहे ए संसार ॥ आपद भाजन जाणी न रोइए एणी परे, आपद गइ इण वार ॥ ११ ॥ तुझ मिलीउं हुं धन्य थयो, तव बोली तेह वाम ॥ पकडी तसकरे मुझ हुं उठी लघुनीति, करवा केरे रे काम ॥ १२ ॥ शीलभंग करवा तिणे, कीधा घणा रे प्रकार ॥ में नवि मान्युं तेह गयो मुझ मूषीने, बलथी केम रे ले नारी ॥ १३ ॥ चोर कदर्थनाथी मुने, उपनुं दुःख अपार ॥ जे तुम दीठा एम अवस्था

दुःख करी, सुणी चिंते रे कुमार ॥ १४ ॥ में चित्त चिंतव्युं तिम थयुं, कहे नारीने रे एम ॥ फिकर न करीए कांय चालो तुमे तव लछी; चिंते रे थइ गयुं केम ॥ १५ ॥ आव्यो कृतांतना मुख थकी, पापनी परणति एह ॥ गयां विचारपुर गाम सूरज तव आथम्यो, रयणी रे गइ पण तेह ॥ १६ ॥ नवि रहेवुं इण थानिके, जइए दंतपुर गाम ॥ तिहां मुज माउलगेह मूकी तुजने पछे, करशुं रे कांयक काम ॥ १७ ॥ मान्युं लछीए तव जवा, मांड्युं दंतपुरे दोय ॥ इण अवसर हवे वात पल्लीपतिनी सुणो, जोजो रे किणी परे होय ॥ १८ ॥ सार्थवाहसुत नवि जड्यो, चित्त उपनो रे संताप ॥ निज नरने तेह साथ जलावी जली परे, इणी परे करे रे आलाप ॥ १९ ॥ एहनां मा बापने तुमे, पोहोंचावजो धरी खांति ॥ हवे चिंते एम चित्त कादंबरी देवी तेह, मान्युं छे रे जे एकांत ॥ २० ॥ काम थयुं नहीं पण देवी वलि, ते देवीने काज ॥ तेह प्रतिज्ञा कीध ते करशुं तव पछे, मांड्यो तेहनो रे साज ॥ २१ ॥ छठे खंडे आठमी, पद्मविजय कही ढाल ॥ सज्जन कृत गुणजाण होये जुउ एहवा, होशे रे मंगलमाल ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ २४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुरुष वलिने पाठव्या,कादंबरीनी कीध; पूजा विविध प्रकारनी, आडंबरथी इद्ध ॥ १ ॥ स्नान कर्युं सरितातटे, वलकल पहेर्यां वास; कणवीर माल करी शिरे, चय विरचावे खास ॥ २ ॥ चंडिका देहरे ते चल्यो, धरतो धरणनुं ध्यान; इणी अवसर ते अटवीए, जातो धरण सुजाण ॥३॥ सवरे दीठ सुरोदये, लछी धरणने ल्हार; बांधी सवरे ते बिहु, आण्यां तेह उदार ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ दक्षिण दोहिलो हो राज ॥ ए देशी ॥

॥ आवे जेते हो राज, देखे तेते हो राज ॥ तेहने खेते रे, वृक्षे रुधिर त्रिशूल कर्यां ॥ सडीआ पक्षीया हो राज, वृक्षे पक्षीआं हो राज ॥ उदेही जक्षीआं रे, शिखरमां सर्प्पजुगल धर्यां ॥ १ ॥ जीववध थाय हो राज, रुधिर सिंचाय हो राज ॥ नृपति पाय रे, ग्रह भूत जक्ष राक्षस घणा ॥ आघो जाय हो राज, देखे तिहांय हो राज ॥ शवसमुदाय रे,

कोट बणायो नहीं मणा ॥ २ ॥ मस्तकमाला हो राज, धरू विकरालां हो राज ॥ तोरण शाला रे, कीधी तिहां बीहामणी ॥ गजवर दंता हो राज, दीसे महंता हो राज ॥ महाजय दिंता रे, हारू चाम डुर्गंध घणी ॥ ३ ॥ सबर जुवान हो राज, रह्या तिणे थान हो राज ॥ खड्ग लेइ पाणि रे, जिलरू रोवे डुःख धरी ॥ नरने कपाले हो राज, दीपे विशाल हो राज ॥ तिहां ततकाल रे, मंगल दीपश्रेणी करी ॥४॥ चामर लटके हो राज, पूछडे ऊटके हो राज ॥ कीधा सटके रे, गज मुक्ताफल साथीआ ॥ गुगल गंध हो राज, होय संबंध हो राज मदवरगंध रे, दीसे फिरता हाथीआ ॥ ५ ॥ खड्ग कोदंरू हो राज, कर धस्यो घंट हो राज ॥ पुछ महिष खंरू रे, शोजे कात्यायनी करे ॥ देखी विचारे हो राज, धरण तिवारे हो राज ॥ सिंहनी वारे रे, बलीर्ज कोइक तत्परे ॥ ६ ॥ पण पुण्य पाप हो राज, जे हुइ ताप हो राज ॥ तस संताप रे, टाली शकीये किणी परे ॥ इणी परे करतां हो राज, जइने धरता हो राज ॥ जिहां थरथरता रे, नरसमुदाय धस्या घरे ॥ ७ ॥ पाये लागी हो राज, कालसेन सागी हो राज ॥ कुमरनो रागी रे, आवी गद्गद उच्चरे ॥ मेलव्यो न मुजने हो राज, शुं कहुं तुऊने हो राज ॥ पण एम बुऊीने रे, जनमांतरे हवे मत करे ॥ ८ ॥ में डुःख दीधुं हो राज, अवलुं कीधुं हो राज ॥ ते डुःख सीधुं रे, जाणे तुंही कात्यायनी ॥ चिंती चंग हो राज, नाम कुरंग हो राज ॥ बोलावे संग रे, लावो बलि सुजायनी ॥ ए ॥ डुग्गिल नामे हो राज, कासिद ठामे हो राज ॥ काढ्यो तामे रे, पकरूी केश माथा तणा ॥ थरथर ध्रूजे हो राज, कांय न सूऊे हो राज ॥ रतांजणी पूजे रे, काढी खड्ग पल्लीपति जणया ॥ १० ॥ लोक ए जोय हो राज, मनमां जे होय हो राज ॥ मागजे कोय रे, जीवित विण तुऊ दीजीये ॥ जयश्री तेह हो राज, बोल्यो नरेह हो राज ॥ फिरीने एह रे, बोलाव्यो न वदीजीये ॥ ११ ॥ पल्लीनाह हो राज, चिंते सुराह हो राज ॥ मननो लाह रे, पूछ्या विण किम मारीये ॥ चिंते धरणो हो राज, अंते मरणो हो राज ॥ उपगार करणो रे, कण एक मात्र उगारीये ॥ १२ ॥ चिंती कुरंग हो राज, बोलाव्यो रंग हो राज ॥ जइने संग रे, तुम स्वामीने विनवो ॥ एहने म मारो हो राज, जयश्री जारो हो राज ॥ मुऊ अवधारो रे, वात आखर

मुऊने रीऊवो ॥ १३ ॥ परडुःख नजरे हो राज, देखी सुपरे हो राज ॥ खमीये किणी परे रे, मारो आगलथी मुऊने ॥ पल्लीपति नयण हो राज, जलजरी वयण हो राज ॥ बोले सयण रे, कुण एहवुं कहे गुऊने ॥ १४ ॥ मूर्बा नमीउं हो राज, धरणी पमीउं हो राज ॥ चेतन जमीउं रे, तव इणी परे बोलावतो ॥ जुउं तिहां जाइ हो राज, मनमां लाइ हो राज ॥ कुण ए जाइ रे, सब्बवाहसुत परे चालतो ॥ १५ ॥ जोवे ते ठोर हो राज, जइ किशोर हो राज ॥ कोइ न उंर रे, तेहज नर ए एम कहे ॥ पोते निरखे हो राज, तव ते हरखे हो राज ॥ ठोडे परखी रे, बंधन तेहनां गहगहे ॥ १६ ॥ प्रणमे चरण हो राज, सांजलो धरण हो राज ॥ ताहरुं शरण रे, खम अपराध तुं माहरो ॥ धरण ते जाखे हो राज, अपराध आखे हो राज ॥ एक सराखे रे, दोष नहीं बे ताहरो ॥ १७ ॥ कीधुं काम हो राज, अपराध ठाम हो राज ॥ पल्लीपति ताम रे, कहे शुं काम कस्युं अमे ॥ नर नवि मास्यो हो राज, मुऊ वच धास्यो हो राज ॥ काम सुधास्यो रें, मुऊ मनोरथ पूरतां तमे ॥ १८ ॥ पल्लीपति चिंते हो राज, उलखे न तंते हो राज ॥ जयनी ज्रांते रे, बोले बे ए इणी परे ॥ पूबे तास हो राज, जाख तुं जास हो राज ॥ मरण अज्यास रे, श्या डुःखथी तुं आदरे ॥ १९ ॥ कहे कुमार हो राज, वात विस्तार हो राज ॥ श्यो अधिकार रे, काम करो तुमे निज तणुं ॥ कालसेन जाण हो राज, करे उलखाण हो राज ॥ कृतगुण हानि रे करनारो हुं अति घणुं ॥ २० ॥ तुमे जीवाड्यो हो राज, तुऊ विणसाड्यो हो राज ॥ डुःखथी काढ्यो रे, नाग बाल परे मुऊने ॥ हुं महापापी हो राज, तुऊ संतापी हो राज ॥ एम विलापी रे, कृतघ्नीशेखर हुं थयो तुऊने ॥ २१ ॥ कुंअर जाणी हो राज, लाज ते आणी हो राज ॥ कहे मुख वाणी रे, जीव्या निज पुण्ये करी ॥ बठे रसाल हो राज, खंमे विशाल हो राज ॥ नवमी ढाल रे, पद्मविजय पूरी करी ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ २६९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कृतघ्न किम तुऊने कहुं, सज्जनमां शिरदार; अज्ञाने करी इणी परे, पश्चात्ताप प्रकार ॥ १ ॥ पण तें शुं प्रारंजीउं, एह कहो अवदात; पल्ली-पति तव कहे पबे, वारु धुरथी वात ॥ २ ॥ सार्थवाहसुत सांजली, अहो

स्थिर स्नेह अपार; कृतज्ञता कहुं केटली, वर्णवे वारंवार ॥ ३ ॥ पण सांजलो पल्लीपति, देउं तुज उपदेश; पूजो देव गुरु प्रत्ये, वलि पुष्पादिक वेश ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ बे बे मुनिवर विहरण पांगर्यां जी ॥ ए देशी ॥

॥ धर्म न होये जीव हणया थकी जी, जल थकी अनल न होय रे ॥ गायना श्रृंगथी दूध न संजवे जी, विष थकी अमृत किम जोय रे ॥१॥ धर्म० ॥ यतः ॥ "सकमलवनमग्नेर्वासरं जास्वदस्ता,–दमृतमुरगवक्त्रात् साधुवादं विवादात् ॥ रुगपगममजीर्णात् जीवितं कालकूटात्, अजिलषति वधात् यः प्राणिनां धर्ममिछेत् ॥ १ ॥ नरके ते पोहोंचे जीवहिंसा थकी जी, तिणे ए पाप थकी रहो दूर रे ॥ महिष ने मेष प्रमुख हणतां थकां जी, पापे पिंरु ते होवे पूर रे ॥ २ ॥ धर्म० ॥ कहे कालसेन न करशुं एहवुं जी, अन्न न मलशे अमने जाम रे ॥ तो अमे अन्न विना लेशुं नहीं जो, इण अटवीमें आव्या केरुं नाम रे ॥ ३ ॥ धर्म० ॥ जीवनी हिंसा जीवुं तिहां लगे जी, नहीं करुं तुम केरे उपगार रे ॥ फूल वली गंध चंदनशुं देवता जी, पूजीने कीधो अति सत्कार रे ॥ ४ ॥ बंदी सहित ते धरणने लावीउ जी, निज घर कीधो उचित आहार रे ॥ जोजन कीधां मनने जावतां जी, लूंट्युं हतुं जे डव्य अपार रे ॥ ५ ॥ धर्म० ॥ ते सवि लावीने डव्यनो ढग कर्यो जी, गजकुंज मुक्ताफल श्रीकार रे ॥ गजवर दंत ने चामर आपीयां जी, लीधो ते सघलो निज संजारी रे ॥६॥ धर्म० ॥ बंदीने कांयक देइ विसर्जीआ जी, आग्रहथी रहीआ केइक दिन्न रे ॥ आण लहीने निज नगरे गया जी, जाणे मावित्र ने वली महाजन्न रे ॥ ॥ ७ ॥ धर्म० ॥ हर्ष धरीने साहामा आवीआं जी, जांमना मूल्यनी संख्या कीध रे ॥ कोमी सवा धननी संख्या थइ जी, मनना मनोरथ सघला सिद्ध रे ॥ ८ ॥ धर्म० ॥ देवनंदी एक पख पछे आवीउ जी, साहामा जइ जोयुं तेहनुं जंम रे ॥ कोमी अर्द्ध धन तेहनुं नीपन्युं जी, मनमां ते खेद लह्यो परचंम रे ॥ ए ॥ धर्म० ॥ जांमनुं मूल ते आप्युं मूलगुं जी, शेष धने करे दान ने पुण्य रे ॥ मदन तेरशी आवी इण अवसरे जी, आवी महंत ते न्याये पुन्न रे ॥ १० ॥ धर्म० ॥ कहे रथ तुमचो काढो आगले जी, धरण कहे ए क्रीमा बाल रे ॥ कोण करे ते सुणी परशंसीउ

जी, एम करतां वीतो केइक काल रे ॥ ११ ॥ धर्म० ॥ कोमी सवा ते प्राये खरचीआ जी, करता ते परने बहु उपकार रे ॥ चिंते मनमां त्रण वर्ग साध्या विना जी, जाये अफल अवतार रे ॥ १२ ॥ धर्म० ॥ तेहमां पण ग्रहीने अर्थ ते मुख्य छे जी, जेहथी सधाये धर्म ने काम रे ॥ रूप बहुमान सौभाग्य ते अर्थ छे जी, द्रव्ये होये सवि परनुं काम रे ॥ १३ ॥ धर्म० ॥ यतः ॥ "वयोवृद्धास्तपोवृद्धा, ये च वृद्धा बहुश्रुताः सर्वे ते धनवृद्धस्य, द्वारि तिष्ठंति किंकराः ॥ १ ॥ बुभुक्षितैर्व्याकरणं न भुज्यते, पिपासितैः काव्यरसो न पीयते ॥ न छंदसा केनचिदुद्धृतं कुलं, हिरण्यमेवार्जय निष्फलाः कलाः ॥ २ ॥" ते पण तातनी मात परे नहीं जी, मुजने भोगववी किणही रीति रे ॥ मात पितानी आणाथी हवे जी, चाल्यो बहु साथ लेइ शुभ नीति रे ॥ १४ ॥ धर्म० ॥ लक्ष्मी पण साथे लेइने आवीयो जी, सायरकांठे नगरी नाम रे ॥ रुमी वैजयंती नरपतिने मल्यो जी, दीधुं बहुमान ने आप्युं गाम रे ॥ १५ ॥ धर्म० ॥ लाभ तथाविध न थयो चिंतवे जी, जाउं पर तीरे पामुं ऋद्धि रे ॥ जिहाज करीने किरियाणां भर्यां जी, लगन मुहूर्त्त जोइ परसिद्ध रे ॥ १६ ॥ धर्म० ॥ सायरकांठे आवी पूजीयो जी, दीधां बहु अरथी जनने दान रे ॥ देव गुरु प्रणमी बेठा जथाजमां जी, उपाड्यां नांगर जल असमान रे ॥ १७ ॥ ॥ धर्म० ॥ पूर्यो ते सढने वाहण चालीयां जी, छठे ते खंडे दशमी ढाल रे ॥ पद्मविजय कहे चीन द्वीपे जवा जी, धरणोजी चित्तमां अति उजमाल रे ॥ १८ ॥ धर्म० ॥ सर्व गाथा ॥ २७१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वाहण तीरवेगे वहे, केइक दिन अतिक्रांत; मध्याह्ने मारुत घणो; एक दिन अति उद्भ्रांत ॥ १ ॥ गाजे सायर गज परे, संकेल्या सढ तांम; जीवितनी आशा जथा, नांगर मूक्यां नाम ॥ २ ॥ अथमातुं ते अनुक्रमे, वाहण भांग्युं वेग; आउ संबंधे अनुक्रमे, आव्युं फलक ते एग ॥ ३ ॥ तिणे करी एक अहो रात्रिमां, पोहोतो सोवन दीव ॥ मन चिंते मुज मानिनी, दुःख दीठुं हा दैव ॥ ४ ॥ परिजन पण परहो गयो, करी विलाप तिणे काल; कदलीफल केरो करे, रुमो आहार रसाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ प्रणमी सद्गुरु पाय, गायशुं राजिमती सती जी ॥ ए देशी ॥

॥ सूरज आथम्यो जाम, पल्लवसाथरो पाथरी जी ॥ टाढ उडावण काज, अरणीथी अग्नि पेदा करी जी ॥ १ ॥ प्रणमी श्री गुरु ने देव, सूतो ने प्रातःसमय थयो जी ॥ जाग्यो जाम प्रजात, सूर्यराय जब जगजयो जी ॥ २ ॥ अग्नि फरसित ज्रूमि, दीठी कनकमयी थइ जी ॥ देखी चिंते एम, धातु क्षेत्र ए शुज्र मइ जी ॥ ३ ॥ कीधी इंट्यो ताम, धरण नाम अंकित करी जी ॥ कीधा संपुट आइ, कनक कस्युं अग्निमां धरी जी ॥ ४ ॥ कस्या दश सहस संपुट, जिन्न पोतध्वज बांधीउं जी ॥ चीन थकी एक जिहाज, पुएये लावी सांधीउं ॥ ५ ॥ सुवचन सारथवाह, जांड असार तिहां जस्यां जी ॥ कोइक द्वीपथी पामी, लबीशुं देवपुर संचस्यां जी ॥ ६ ॥ आव्या जव तिणे ठाम, जिन्न पोतध्वज निरखीउं जी ॥ मूक्यां नांगर ताम, मूक्या निर्जामक हरखीउं जी ॥ ७ ॥ दीठा धरण कुमार, वात सुणावे तेहने जी ॥ सुवचन सारथवाह, नामे दया बहु एहने जी ॥ ८ ॥ चीन द्वीप जस वास, देवपुर जावा मन करे जी ॥ तुम कहेवरावे एम, आवो तो जहाज मांहि धरे जी ॥ ९ ॥ बोल्या ताम कुमार, जांड जस्युं शुं एहमां जी ॥ निर्यामक कहे ताम, द्रव्यशक्ति नहीं तेहमां जी ॥ १० ॥ विधिवशे थयो निर्द्रव्य, पण व्यवसाय न डंमीयो जी ॥ तादृश तो नहीं जांड, धरण कहे तव मंमीयो जी ॥ ११ ॥ एहुनी इछा जो होय, एटली ज्रूमि आवो अहीं जी ॥ तेमी लाव्यो तेह, धरण कहे कोपशो नहीं जी ॥ १२ ॥ कांयक कारण पामी, पूबुं तुमने एणी परे जी ॥ जहाजमां केटलुं द्रव्य, जाखो मुजने शुज्र परे जी ॥ १३ ॥ तव ते बोल्यो जाय, कर्मनी वात माहारी सुणो जी ॥ द्रव्य गयुं मुज सर्व, पण उद्यम करुं डुगगुणो जी ॥ १४ ॥ सोवन टंक हजार, लेइने जांड हुं आवीयो जी ॥ धरण कहे सुणो वात, हुं तुमने जले पावीयो जी ॥ १५ ॥ काढी नाखो जांड, सोवनथी वाहण जरो जी ॥ पोहों-चीशुं जव तीर, लाख द्रव्य देशुं परो जी ॥ १६ ॥ कहे सुवचन तव शेठ, जार किशो सोवन तणो जी ॥ तुं बहुमान बे मुज, सयल करुं जे सुख जणो जी ॥ १७ ॥ काढी नाख्युं जांड, वाहण कनक गणी जस्युं

जी ॥ बेठो वाहण जाम, तव लछीदरसण कस्युं जी ॥ १८ ॥ हरख्यो चित्त मझार, डूजाणी लखमी घणी जी ॥ ए छे माहारी नारी, धरण कहे सुवचन जणी जी ॥ १९ ॥ आणंद्यो तव शेठ, वाहण चाले अनुक्रमे जी ॥ पंच जोजन गया जाम, एक अचरिज होय तिण समे जी ॥२०॥ सुवर्णद्वीपनी खामी,सुवर्ण नामा वाणमंतरी जी ॥ कंपावे ते समुद्द, मानुं अकालनी वीजली जी ॥ २१ ॥ रेरे सारथवाह, कांय उपचार कस्यो नहीं जी ॥ मुझ आणा विण एह, कनक लेइ जाइश कहीं जी ॥ २२ ॥ धरीयुं तेणीए जिहाज, निर्यामकने एम कहे जी ॥ बलि द्यो पुरुषनी मुझ, ते विण द्रव्य ए कुण लहे जी ॥२३॥ अथवा मारुं हाथ, धरण विचारे एम सुणी जी ॥ नाखी देवाड्युं द्रव्य, लखमी मुझ आपी गुणी जी ॥ २४ ॥ उपगारी मुझ एह, देवी तो एणी परे जणे जी ॥ वलि थाउं हुं आज, प्राण आ अवसर कुण गणे जी ॥ २५ ॥ देवीने कहे वाणी, एह अजाणपणे थयुं जी ॥ प्रसन्न थइ द्यो मुझ, बलि तुमे कांय नवि गयुं जी ॥ २६ ॥ देवी बोले ताम, सायरमां झंपा दीयो जी ॥ लखमी चिंते एम, देवीए मुझ अनुग्रह कीयो जी ॥ २७ ॥ सारथवाहने एम, लछी जलावी एम कहे जी सोंपजो अम माय ताय, एम करी सायरमां वहे जी ॥ २८ ॥ विंध्यो ताम त्रिशूल, देवी सोवनद्वीपे लावती जी ॥ देवी थइ उपशांत, वाहणने नवि बोलावती जी ॥ २९ ॥ वाहण चाल्यां जाय, हेमकुंडल इण अवसरे जी ॥ रयणद्वीपे ते जाय, दीठो ने उलख्यो जली परे जी ॥ ३० ॥ देवी परिचित तास, मागी उषधिए सज कस्यो जी ॥ पुण्य प्रमाणे ताम, जीवितशेषे आयु धस्यो जी ॥ ३१ ॥ यतः " वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये, महार्णवे पर्वतमस्तके वा ॥ सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा, रक्षंति पुण्यानि पुराकृतानि ॥ १ ॥" अग्यारमी ए ढाल, छठे खंडे सोहामणी जी ॥ समरादित्यने रास, पद्मविजय जावे जणी जी ॥३२॥ सर्व गाथा ॥३२८॥

॥ दोहा ॥

॥ हेमकुंडल उलख्यो हवे, पूछे धरण पवित्त; सीरीविजय संबंध कहो, तव कहे तेह त्वरित ॥ १ ॥ जीवाड्यो में तिहां जइ, सुणी धरण संतुष्ट; धरण लेइ विद्याधरो, गुण संजारी गरिष्ठ ॥ २ ॥ रयणसार रलिआमणो, द्वीप अति उद्दाम; रतनगिरि अति रुअडो, नानाविध तरु-ना-

म ॥ ३ ॥ विद्याधर क्रीमा विषे, तत्पर तरुणी गीत; सुरजिवासना दश दिशे, आवे पण नहीं इत ॥ ४ ॥ सरोवरतीरे सुहंकरू, हंसादिकनी हार; वृक्षश्रेणी वारु परे, शोजे अति श्रीकार ॥ ५ ॥ वाव्यकांठे क्षण विशम्या, संग्रहे फल सहकार; वाव्यमां नाही वावरे, पूठे वात प्रकार ॥ ६ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ ए बिंमी किहां राखी ॥ ए देशी ॥

॥ हेमकुंमल पूछे धरणाने, किम तुमने मली एह ॥ तव धुरथी मांमीने सघली, वात कही हती जेह रे ॥ १ ॥ प्राणी पुण्य तणां फल जोजो ॥ दुर्जन सज्जन दोय पटंतर, अणु मेरु सम होजो रे ॥ प्राणी० ॥ ए आंकणी ॥ अहो अहो दुष्टता व्यंतरी केरी, कीधुं मोहोटुं अकाज ॥ हवे तुमे कहो ते करीये तव कहे, कीधुं सघलुं काज रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ पण मुक जाया दुःखिणी होशे, कीजे तास संजोग ॥ हेमकुंमल मन मांहि विचारे, रयण तणो करुं जोग रे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ हेमकुंमल कहे मेलवुं रमणी, पण एक सांजलो वात ॥ रतनगिरि नामे इहां परवत, सुलोचन सुर ख्यात रे ॥ ४ ॥ प्रा० ॥ किन्नर ते मुक मित्र वखाण्यो, तेहने मलवुं माहारे ॥ तुमने देवपुरे पछे मूकीश, मलशे नारी तिहारे रे ॥ ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ धरण कहे जिम तुम मन जाणो, तव ते धरणने लेइ ॥ पहोतो रयणगिरि तस शोजा, वर्णवीये कहो केइ रे ॥ ६ ॥ प्रा० ॥ तिलक समान रतनगिरि उपरे, रुचिर जवन अति दीपे ॥ गोंख जित्ति प्राकारनी शोजा, सुरविमानने जीपे रे ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ उन्नो थइने आदर दीधो, कीधो उचित उपचार ॥ किहांथी आव्या ने ए कोण छे, कहो वली हेतु विचार रे ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ आशय निज विद्याधर जाखे, रयण अपाववा लाव्यो ॥ हरषित थइ ते सांजली राख्यो, केइक दिन मन जाव्यो रे ॥ ए ॥ प्रा० ॥ रयण लेइने धरणने लाव्यो, देवपुर नयरने बारी ॥ रतन आपीने इणी परे जाखे, शोधजे इहां निज नारी रे ॥ ॥ १० ॥ प्रा० ॥ हेमकुंमल निज थानके पोहोतो, धरण गयो पुर मांहि ॥ टोप शेठ हवे देखे तेहने, मनमां लहे उत्साह रे ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ अहो आकार अपूरव दीसे, एकाकी किम एह ॥ सुखशाता पूछी घरे लाव्यो, शेठ कहे हवे तेह रे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ किहांथी आव्या तुमे इ-

ण नयरे, तव ते धरणे जाख्युं ॥ माकंदी नीकळ्याथी मांफी, देवपुर पर्यंत दाख्युं रे ॥ १३ ॥ प्रा० ॥ रतन शेठने राखवा आप्यां, राखजो गोपवी एह ॥ वाहणनी हवे वात सुणेजो, धरण पड्या पठी जेह रे ॥ १४ ॥ ॥ प्रा० ॥ आश्वासना लक्ष्मीने करतो, सुवचन सारथवाह ॥ ए संसार बे सुंदरी, सहुने एहज राह रे ॥ १५ ॥ प्रा० ॥ जिहां संजोग वियोग त्यां दीसे, खेद म करशो नारी ॥ ताहारी आथ गइ नहीं एहमां, जाणजे गइ बे माहारी रे ॥ १६ ॥ प्रा० ॥ ए लक्ष्मी तुं लखमी विहुने, पहोंचारुं तुम गेह ॥ तव नयने आंसु जरी बोली, लखमी मायागेह रे ॥ १७ ॥ प्रा० ॥ तुम जीवतां मुजने शी चिंता, एक दिन शेठ विचारे ॥ एह द्रव्य ने सुंदरी सुंदर, हाथे आवी कोण हारे रे ॥ १८ ॥ प्रा० ॥ तेह तो मरण तपस्वी पाम्यो, एहनुं मन मुज साथे ॥ कुण मूरख कर आव्युं बांडे, चित्त करुं मुज हाथे रे ॥ १९ ॥ प्रा० ॥ हास्य करंता निज वश कीधी, लंपटने शी वार ॥ घरणी करीने राखी घरमां, धन पण राख्युं सार रे ॥ २० ॥ प्रा० ॥ केइक दिन पोहोतुं अनुकरमे, देवपुरे ते जिहाज ॥ जेटणुं लेइ राजाने मलीउं, तुठो ते नरराज रे ॥ २१ ॥ प्रा० ॥ तेहनुं दाण मूक्युं नरराये, पोहोतो जिहाज मजार ॥ बठे खंमे बारमी ढाले, पद्म कहे अधिकार रे ॥ २२ ॥ प्रा० ॥ सर्व गाथा ॥ ३५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चीनथी आव्युं चालतुं, जिहाज ए सांजळ्युं जाम; नीकळ्यो धरण ते निरखवा, दोय जण दीठां ताम ॥ १ ॥ हरख्यो हैयडे हेजशुं, डूजाणां ते दोय; पण आसन देइ पूबीयुं, पूर्व वृत्तांत पलोय ॥ २ ॥ संजलाव्यो तिणे सामटो, सुवचन चिंते शेठ; अहो अहो कर्मनी गति अजब, हैहै दैवथी हेठ ॥ ३ ॥ केवल कीध अकाज में, समीहित पण नवि सिद्ध, चिंती आखे वचनथी, कारज सुंदर कीध ॥ ४ ॥ जीवंता तुम जोइआ, व्यो तुम सघली लाठी; कहे धरण तुमे सवि कह्युं, पाबी न राखी पाठी ॥ ५ ॥ मुजने जाया मेलवी, कीधुं सघळुं काम; जायाने कहे जाइये, आवो पुरमां आम ॥ ६ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ बापडली रे जिनरूली तुं कां नवि बोले मीठुं ॥ ए देशी ॥

॥ सांजलजो जाइ नारीचरित्रह, काम करे छे केहवां ॥ लखमी कहे काल नयरीमां, आपण जाशुं रहेवा रे ॥१॥ सां० ॥ आज तुमे पण इहां रहेवुं; धरणे मानी वात ॥ स्नान करावीने दोय चिंते, करवो एहनो घात रे ॥ २ ॥ सां० ॥ मदिरा पाइने आहार कराव्यो, आवी जेहवे रयणी ॥ सवा सुंदर पाथरी सूतां, धरण तथा निज घरणी रे॥ ३ ॥ सां० ॥ मुंऊाणो मदिराने जोरे, तेहवे अवसर जाणी ॥ फांसो दीधो पण ते फसव्यो, लखमी हर्ष जराणी रे ॥ ४ ॥ सां० ॥ मुउं जाणी बेहु मलीने, सायरकांठे बांध्यो ॥ ते थानक गयां तेहवे शीतल, वायरो आववा मांड्यो रे ॥ ॥ ५ ॥ सां० ॥ चेतन लाधुं तव ते चिंते, शुं ए स्वप्नुं देखुं ॥ इंद्रजाल अथवा मतिविभ्रम, अथवा सत्य ए पेखुं रे ॥ ६ ॥ सां० ॥ सायरतट देखीने विचारे, निश्चय साचुं एह ॥ उठीने चिंते लछीनुं, चरित्र अहो डुःखरेह रे ॥ ७ ॥ सां० ॥ उन्मारगे ए केम प्रवर्त्यां, डुःखदायक ए जोग ॥ ॥ मुख मीठी वली दिलथी जूठी, महिला चालतो रोग रे ॥ ॥ ८ ॥ सां०॥ अग्नि पवन ने जुजंग ग्रहेवाये, नारीचित्त न कलाये ॥ दोषनी खाण कलेशनुं कारण, मोहे जगत उलाय रे ॥ ए॥ सां० ॥ यतः ॥ अनृतं साहसं माया, मूर्खत्वमतिलोजता ॥ अशौचं निर्दयत्वं च, स्त्रीणां दोषाः स्वजावजाः ॥ १ ॥ जवस्य बीजं नरक,—द्वारमार्गस्य दीपिका ॥ शुचां कंदः, कलेर्मूलं, डुःखानां खानिरंगना ॥ २ ॥ जलणो विघेप्पइ सुहं, पवणो जूयगोय केण इनएणं ॥ महिलामणो न घेप्पइ, बहुएहिं विणय सहस्सेहिं ॥ ३ ॥" अथवा सुवचन शेठने न घटे, पण एहनो शो दोष ॥ विषयराग वाह्यो नारीशुं, ते कारण ए रोष रे ॥ १० ॥ सां० ॥ इण अवसरे तिहां टोप शेठना, पुरुष खोलता आव्या ॥ देखी नयणे आंसु रेमी, इणी परे तिणे बोलाव्या रे ॥ ११ ॥ सां० ॥ राते पण तुमे किम नवि आव्या, शेठने उपनी चिंता ॥ अमने जोवा मोकल्या शेठे, आव्या इहां खोलंता रे ॥ १२ ॥ सां० ॥ चालो शेठने दरिसण आपो, शेठनी चिंता जांगो ॥ अहो पुरुषनो अंतर देखो, कुमर विचारवा लागो रे ॥ १३ ॥ सां० ॥ यतः ॥ "वाजिवारणलोहानां, काष्ठपाषाणवाससां

॥ नराणां रमणीनां च, अंतरं महदंतरं ॥ १ ॥" ते नर साथे धरण ते चाल्या, मलीआ शेठने जाम ॥ एकांते बेसारी शेठे, वात ते पूछी ताम रे ॥ १४ ॥ सां० ॥ आमण डूमण एम केम दीसो, होय ते जाखो साचुं ॥ तव ते धरण विचारे मनमां, किम करी फाटे काचुं रे ॥ १५ ॥ सां० ॥ वात लज्जामणी नवि कहेवानी, नयणे नीर जराय ॥ कहे कांइए नहीं शेठ कहे सुणो, चीनथी जहाज जे आय रे ॥ १६ ॥ सां० ॥ ते तुमने मलीयुं के नांहि, तव ते गद्गद वाणी ॥ मलीयुं कुमर कहीने रोवे, आंसुधार वहाणी रे ॥ १७ ॥ सां० ॥ मानुं नारी मरण लही एहनी, अन्यथा एहवो न शोक ॥ शेठ कहे छे कुशल प्रियाने, जिहाज तेहज के फोक रे ॥ १८ ॥ सां० ॥ वाहण तेहज ने नारी जीवे, शेठ कहे तव एम ॥ तुमने शोक कहो हवे श्यो छे, जव सहुने छे खेम रे ॥ १९ ॥ सां० ॥ जिम तिम उत्तर ने पडउत्तर, बोले कुमर जिवारे ॥ शेठ कहे शूं ने मने जाखे, मनमां तुं शुं धारे रे ॥ २० ॥ सां० ॥ तें मुज गुरुजावे पडिवजीउं, किम गुरु आणा खंडे ॥ नवि कहेवानुं पण ते धरणो, आणाए कहेवा मंडे रे ॥ २१ ॥ सां० ॥ जीवितथी नारी जीवे छे, पण शीले नवि जीवे ॥ शेठ कहे किम जाण्युं तव कहे, कारयथी जिम दीवे रे ॥ ॥ २२ ॥ सां० ॥ किणी परे नीपनुं तव ते धरणे, जोजन जिमणथी मांमी ॥ सयल कह्युं जिम छेहली वारे, सायरतट गयां छांमी रे ॥ २३ ॥ सां० ॥ अनुक्रमे जीवतो तुमने मलीउं, वात ते सर्व प्रकाशी ॥ छठे खंमे तेरमी ढाले, पद्मे वात ते जाषी रे ॥ २४ ॥ सां० ॥ सर्व गाथा ॥ ३०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुवचन उपरे शेठजी, कोप्या जेम कृतांत; धरण धरी निज धाममां, आव्यो राय उपांत ॥ १ ॥ वात सयल तिहां विनवी, नरपति करवा न्याय; तेमाव्यो सुवयण तदा, प्रणमे आवी पाय ॥ २ ॥ पूछे नृप परगट कहो, सुणीये ऋद्धि सफार; केम कमाणा तव कहे, हरखी हैया मजार ॥ ३ ॥ आवी ऋद्धि कुल अनुक्रमे, नृप कहे किहांथी नारी; मात पिताए मुजने, परणावी बहु प्यारी ॥ ४ ॥ सन्मुख नरपति शेठने, जोवे सांजली जाम; शेठ कहे सुण साहिबा, अलिक कहे ए आम ॥ ५ ॥ सुवचन कहे साचुं किशुं, शेठ कहे तव सार; कंचन ने ए कामिनी, धरण तणी अव-

धार ॥ ६ ॥ साचुं एहज सांजले, सांजली उपनी शंक; पण बोले परगट-प्रणे, मानुं मन निःशंक ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ श्रीनमिजिननी सेवा करतां ॥ ए देशी ॥

॥ अहो अपूरव तुंही निमित्तिउं, कहो इहां प्रत्यय तास साचो जी ॥ राजद्वार ए बे तव बोले, शेठ साधारण खास वाचो जी ॥ १ ॥ अहो० ॥ एह प्रत्यय जे तेहज जीवे, सुवचन बोले ताम राया जी ॥ धरण नाम काने नवि सुणीयुं, ए तो कहे बे आम जाया जी ॥ २ ॥ अहो० ॥ परखो तुमे तव ते नरराये, धरण तेमाव्यो पास तेह जी ॥ निज नर मूकी नारी तेमावी, आवी तिहां उल्लास एह जी ॥ अहो० ॥ इन्हा विण शेठने उपरोधे, आव्यो राय हजुर जाम जी ॥ पूछे रे नारी ए नरनो, दीठो के नहीं नुर ताम जी ॥ ४ ॥ अहो० ॥ नारी कहे कहीये नवि दीठो, पूछे धरणने राय हेजे जी ॥ तुमची घरणी के नांहि, तव कहे धरण ते ठाय तेजे जी ॥ ॥ ५ ॥ अहो० ॥ जेह एणे कह्युं ते सवि सुणीयुं, हवे पूछ्यानुं काम शुं बे जी ॥ नृप कहे तेहज माटें पूछुं, वचन केनारो साम तुं बे जी ॥ ६ ॥ अहो० ॥ धरण कहे तुम आग्रहे जाखुं, नारी हती मुज एह आगे जी ॥ नृप कहे धरण जणी ए सुवचन, उंलखे के नहीं केह मागे जी ॥ ७ ॥ अहो० ॥ धरण कहे नृप एहने पूछो, एह कहे ते प्रमाण माहारे जी ॥ तव सुवयणने पूछे जूपति, बे कांइए उंलखाण ताहारे जी ॥ १० ॥ अहो० ॥ सुवचन कहे ए कुण ने हुं कुण, राय कहे ए वात रही जी ॥ वाहणमां द्रव्य किश्युं बे दाखो, सुवचन कहे नरतात अही जी ॥ ए ॥ अहो० ॥ कनक इंट्यो दश सहस संपुट बे, पूछ्या पढी कहे एम धरणो जी ॥ राय कहे तस तोल कहो तुमे, कहे नवि जाणुं नेमकरणो जी ॥ १० ॥ अहो० ॥ निज वस्तुनो तोल न जाणो, तव कहे एमज एह कीधां जी ॥ सुवचनने जाखे तव बोले, धरणे वचन कह्यां जेह सीधां जी ॥ ११ ॥ अहो० ॥ नरपति थाको न्याय करतां, तव कहे धरण विचारी रंगे जी ॥ अलिकवादी हुं एहने आपो, ए धन ने ए नारी संगे जी ॥ १२ ॥ अहो० ॥ सुवचन कहे मुज आल देइने, बोले बे जुउ केम जाइ जी ॥ टोप शेठ तव त्रटकी बोल्यो, रे पापी कहे एम कांइ जी ॥ १३ ॥ अहो० ॥ एहवुं करीने एम तुं बोले, शेठ कहे

वली रोष आणी जी ॥ शुं बहु बोले जो ए नारी, धरणनो सघलो कोश जाणी जी ॥ १४ ॥ अहो० ॥ कहुं एहमां जो जूठुं होवे, तो घरवारशुं जीव आपुं जी ॥ धीज करावो ते अमे करीए, पण एहने अमे खिव नापुं जी ॥ १५ ॥ अहो० ॥ धरण विचारे ए मुझ स्नेहे, बोले इणी परे तेण माहारे जी ॥ न घटे उदासपणुं करी जंपे, सुणो नृप सखुं दिव्येण वारे जी ॥ १६ ॥ अहो० ॥ वाहणमां सोवन संपुट जे छे, तेहमां धरण मुझ.नाम होशे जी ॥ जो सुवचन नीकले तो एहनुं, राय कहे थयुं काम तोशे जी ॥ १७ ॥ अहो० ॥ पंचोली लेवा मोकलीआ, लाव्या संपुट ताम निरख्या जी ॥ धरण नाम दीठुं नहीं ज्यारे, लोक थया सहु ताम विलखा जी ॥ १८ ॥ अहो० ॥ राय कहे नवि अभिधा दीसे, सुवचन कहे नरराय जाणो जी ॥ पण तुम आगल अलिक कहीने, किम धारे ए ठाय प्राणो जी ॥ १९ ॥ अहो० ॥ घरबार ने जीव कबुल कर्यो छे, धरणने कहे ए केम राय जी ॥ धरण कहे जूठुं नवि बोलुं, फोडो संपुटने एम ताय जी ॥ २० ॥ फोड्या संपुट नाम ते दीठुं, कोप्यो राय अपार ताम जी ॥ महा चोर ए वाणिगवेशे, करे अन्याय प्रकार काम जी ॥ २१ ॥ अहो० ॥ जमघर सुवचन शेठ पहोंचावो, अलवीने देशनिकाल दीजे जी ॥ धरणने द्रव्य सर्व ए सोंपो, वली कहो कांय ततकाल कीजे जी ॥ २२ ॥ अहो० ॥ धरण कहे प्रभु द्रव्ये सरीयुं, सुवचन अभय प्रधान करीये जी ॥ चिंते राय अहो नर अंतर, शुं एहने उपमान धरीये जी ॥ २३ ॥ अहो० ॥ नृप कहे धरण ए वात अघटती, पण तुझ वचन लंघाय तिणे जी ॥ तुझ मन माने तिम कर तव ते, बोल्यो कीध पसाय वयणे जी ॥ २४ ॥ अहो० ॥ छठे खंडे ढाल चौदमी, समरादित्यने रास भाखी जी ॥ पंडित उत्तमविजय सुसेवक, पद्मविजय सुविलास राखी जी ॥ २५ ॥ अहो० ॥ सर्व गाथा ॥ ४१८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सहु पंचाती शेठीया, सुवचन लेइ साथ; धरण लेइ पृथवीधणी, सहु गया सरितानाथ ॥ १ ॥ संपुट धरणने सोंपीआ, शेठे गणीने सर्व; धरण सुवयणने धीरता, आपे इम निगर्व ॥ २ ॥ कुणने दैववशे कहो, वात खलित नवि होय; खेद मूकीने खांतिशुं, साहस धरीये सोय ॥ ३ ॥

लाख सोवन तुमे नवि लख्या, आदर मुऊने आप; इम मुऊने तुम आखीयुं, लाखनो इयो आलाप ॥ ४ ॥ एह संभ्रम वयणे अमे, नाखुं तुम इणी भांत; तुम मन माने तेटलुं, सोवन ल्यो थइ शांत ॥ ५ ॥ लाज्यो सुवचन नवि लव्यो, धरण थइ तव धीर; अठ लख सोवन आपीया, परनी भांजे पीर ॥ ६ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ गरु गरु ऊांऊां जस नोबत वाजे ॥ ए देशी ॥

॥ नृपने देइ सनमान, टोप शेठशुं आव्या थान रे ॥ जस नोबत जगमां वाजी ॥ ए आंकणी ॥ करी स्नान ने भोजन कीधां, बहु दान जाचकने दीधां रे ॥ १ ॥ जस० ॥ टोप शेठने चरणे लागो, टोप शेठ कहे शुं मागो रे ॥ जस० ॥ कहे धरण जो न कहो नाकारो, तो मागुं एकज वारो रे ॥ २ ॥ जस० ॥ हरषे करी चिंते शेठ, हुं धन्य सहु मुऊ हेठ रे ॥ जस० ॥ सुरतरु चिंतामणिभूत, मुंऊ पास मागे अद्भुत रे ॥ ३ ॥ जस० ॥ कहे शेठ सुणो सुविनीत, पुत्र कलत्र ने ए सवि वित्त रे ॥ जस० ॥ दासत्व निमित्ते जाचो, तोही मुऊ मन नवि काचो रे ॥ ४ ॥ जस० ॥ कहे धरण जो एम विचारो, त्रण वचन आपो सुखकारो रे ॥ जस० ॥ त्रण वचन दीयां तव मागे, मुऊ सहस रतन द्यो रागे रे ॥ ५ ॥ जस० ॥ दीधां तिहां रयण हजार, तेहमांथी धरण कुमार रे ॥ जस० ॥ लेइ आठ रतन करी पूजा, शेठ जी तुम सम नहीं दूजा रे ॥ ६ ॥ जस० ॥ इणी परे गुणस्तवना करतो, पग वचमां निज शिर धरतो रे ॥ जस० ॥ मुऊ एह प्रार्थना जाणो, शेठ चिंते तव समऊाणो रे ॥ ७ ॥ जस० ॥ ठलीउं मुऊ वचने एणे, किम ना कहेवाये इणे तेणे रे ॥ जस० ॥ शेठे बहु आदर करीयो, निज नयर भणी संचरीउं रे ॥ ८ ॥ जस० ॥ निज नयरने बाहिर आवी, डेरा दीधा शुभ भावी रे ॥ जस० ॥ नरपति तव सामो आवे, महा महोत्सवशुं पधरावे रे ॥ ए ॥ जस० ॥ निज भुवने लावे राया, स्नान भोजन करत पसाया रे ॥ जस० ॥ बहु भूषण ने वली मान, पोहोंचाड्या निज घरथान रे ॥ १० ॥ जस० ॥ माय तायने हरख न माय, सहु चैत्ये पूजा विरचाय ॥ जस० ॥ तेड्या वली रायने घेर, सत्कार कस्यो बहु पेर रे ॥ ११ ॥ जस० ॥ परधान

पागीआ जेह, सहु सत्कारया शुन्न रेह रे ॥ जस० ॥ पूछे हवे माय ने ताय, तुम घरणी कहो किहां जाय रे ॥ १२ ॥ जस० ॥ कहे धरण सुणो तुमे वात, ए मत पूछो अवदात रे ॥ जस० ॥ जे नारीने उचित ते कीधुं, जनकादि विचारे ए सीधुं रे ॥ १३ ॥ जस० ॥ मुद्रा देउं एहने आज, एम चिंतवी ते पुरराज रे ॥ जस० ॥ आव्यो घर उठी राय, तव धरण उचित करे जाय रे ॥ १४ ॥ जस० ॥ आगमन प्रयोजन कहीये, नृप कहे मुद्रा तुम लहीये रे ॥ जस० ॥ कहे धरण न मुद्रा काम, एक वात सुणो शुण काम रे ॥ १५ ॥ जस० ॥ कहे राय कहो ते करीये, कहे धरण जो मुज आदरीये रे ॥ जस० ॥ तो मूको बंदीवान, तुम राज्यमां अन्नयनुं दान रे ॥ १६ ॥ जस० ॥ राये दीधी तव आण, मुज राज्यमां कीजे जाण रे ॥ जस० ॥ हिंसा नवि करजो कोय, नहींतर नृपदंड ते होय रे ॥ १७ ॥ जस० ॥ नरपति निज स्थानक आव्या, गुण धरणा तणा चित्त लाव्या रे ॥ जस० ॥ बहु काले मित्र जे मलीआ, तेहशुं क्रीडामां हलीआ रे ॥ १८ ॥ जस० ॥ गया मलयसुंदर उद्यान, तिहां नागलताने थान रे ॥ जस० ॥ नामे रे विलग कहायो, ते कुपित नारीने जायो रे ॥ १९ ॥ जस० ॥ बहु लाली पाली करे तास, देखीने धरण उदास रे ॥ जस० ॥ सांन्नरी लक्ष्मी ते ठाम, चिंते अहो डुर्जय काम रे ॥ २० ॥ जस० ॥ कामी परमार्थ न देखे, वैराग्य थकी एम लेखे रे ॥ जस० ॥ जाय आगल धरण कुमार, अशोकश्रेणी तिण ठार रे ॥ २१ ॥ जस० ॥ प्रासुक थानक तिहां दीठा, हैडामां लागा मीठा रे ॥ जस० ॥ बहु शिष्य तणो परिवार, गयो चित्तथी कामविकार रे ॥ २२ ॥ जस० ॥ अर्हद्दत्त आचारय नाम, नाणी शुन्न चित्त परिणाम रे ॥ जस० ॥ जीत्यो जिणे खूब अनंग, पण ईहे अनंग सुखरंग रे ॥ २३ ॥ जस० ॥ तपशोषित जास शरीर, जोइ धरण विचारे धीर रे ॥ जस० ॥ पन्नरमी छठे खंडे, पद्मे कही ढाल अखंडे रे ॥ २४ ॥ जस० ॥ सर्व गाथा ॥ ४४८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आचारज अवलोकीने, धरण विचारे धन्य; जीवित सफलुं जगतमां, गुणगण जास अगन्य ॥ १ ॥ कंचन ने वली कामिनी, सयण कुटुंब सहु लोक; इंद्रजाल परे उलखे, फिरी करे पापज फोक ॥ २ ॥ उपगारी

मुऊ एह ठे, पालुं जे परिवार; केवल मोहनी कल्पना, धर्म विना न आधार ॥ ३ ॥ नियमा करी शकीये नहीं, धर्म ते रहेतां धाम; आरंभे हिंसा अति, नहीं तिहां धर्मनुं नाम ॥ ४ ॥ अंते तजवो आपणे, काम नहीं तिणे कोय; चित्तमां धरी चारित्रने, समऊं आव्युं सोय ॥ ५ ॥ चरण कमलनी चोंपश्युं, वारु साथ वयंस; धर्मलाज दीधो धुरे, आचारज अवतंस ॥ ६ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ जीरे जीरे स्वामी समोसस्था ॥ अथवा, तुज विण गति नहीं जंतुनी ॥ ए देशी ॥

॥ गुरुचरणे जब उपविशे, गुरु कहे किहां थकी आव्या रे ॥ धरण कहे आव्या इहां थकी, चारित्रशुं अमे जाव्या रे ॥ १ ॥ श्रीगुरुराज कृपा करो ॥ ए आंकणी ॥ अहो अहो आकृति एहनी, एहनो जुर्ज विवेक रे ॥ चित्तपरीक्षा कारणे, बोल्या मुनिवर ठेक रे॥२॥ श्री० ॥ इंद्रियलालच ठांमवी, नवि करवो ते कषाय रे ॥ चित्त निरीहपणे करी, संजम पालवुं थाय रे ॥ ३ ॥ श्री० ॥ विषय अनादिकनी वासना, तजवी दोहेली जाण रे ॥ न तजे तो ए गृही समो, ठांड्युं न ठांड्युं समाण रे ॥ ४ ॥ श्री० ॥ कर्मदोषे न पाली शके, असदालंबन करतां रे ॥ संजम ठांडे ते नवि गृही, मुनि पण नहीं रहे फिरता रे ॥ ५ ॥ श्री० ॥ बे जव निष्फल तस गया, तिणे तुलना कस्या पाखे रे ॥ न घटे घर तुऊ ठांरुवुं, धरणो तव एम जाखे रे ॥ ६ ॥ श्री० ॥ जगवन् तुमे साचुं कह्युं, तजवा जोग्य ए धाम रे ॥ उपादेय चारित्र ठे, तुलना विवेकनुं काम रे ॥ ७ ॥ श्री० ॥ आचारज मन चिंतवे, जाण्यो यथार्थ संसार रे ॥ बोधि लहे जिनधर्मनी, करुं प्रशंसा विस्तार रे ॥ ८ ॥ श्री० ॥ बूऊे जिम मित्र एहना, बोले एम विचारी रे ॥ जाणवा जोग्य ते जाणीयो, वत्स धन्य माता ताहारी रे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ ऽुर्लजबोधि ते तें लही, करी सफलो अवतार रे ॥ ताहारुं कारज सीऊशे, ले तुं संजमजार रे ॥ १० ॥ श्री० ॥ विषयना लालची जीवमा, परमारथ नवि देखे रे ॥ इहां दृष्टांत ते माहरो, सांजलो चित्त विशेषे रे ॥ ११ ॥ श्री० ॥ इणहीज क्षेत्र मांहि वसे, अचलपुरी नामे नयरी रे ॥ जितशत्रु तिहां नरपति, जिणे जीत्या सहु

वैरी रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥ अपराजित सुत तेहने, समरकेतु बीजो जाण रे॥ अपराजित जुवराजीयो, बीजो कुमरने ठाण रे ॥ १३ ॥ श्री० ॥ कुमरने आप्युं उजेणीनुं, जोगववा जलुं राज रे ॥ समरकेसरी नामे राजीयो, उल्लंठ ते काज रे ॥ १४ ॥ श्री० ॥ अपराजित ते उपरे, चढीउं एक दिन तेह रे ॥ जय करी जाम पाछो वल्यो, आवणने निज गेह रे ॥ १५ ॥ श्री० ॥ धर्मीराम सन्निवेशे, आव्यो देखतो ताम रे ॥ पुण्यउदय मानुं परगज्यो, सूरीसर रोह नाम रे ॥ १६ ॥ श्री० ॥ देखी संवेग ते उपन्यो, पूछे धर्मविचार रे॥ देशना दीये गुरु तेहने, पडिबूज्यो ते कुमार रे ॥ ॥ १७ ॥ श्री० ॥ चारित्र क्षय उपशम थयुं, इंद्रजाल सम जाणी रे॥ सवि संसार दीक्षा लीये, तप संजम करे नाणी रे ॥ १८ ॥ श्री० ॥ गुरुचरणे हवे विचरतां, पोहोता नगरा गामे रे ॥ तिहां उजेणीथी आवीआ, साधुवंदन कामे रे ॥ १९ ॥ श्री० ॥ रोहसूरिना शिष्य जे, आर्यराहु गुणगेह रे ॥ तेहना मुनिवर एह छे, वंदे गुरु ससनेह रे ॥ २० ॥ श्री० ॥ पूछे गुरु उज्जेणीमां, निरुपसर्ग विहार रे ॥ मुनि कहे सुंदर विहार छे, पण एक वात विचार रे ॥ २१ ॥ छठे खंडे सोलमी, पद्मविजय कही ढाल रे ॥ श्रोताजन सुणजो हवे, आगल वात रसाल रे ॥ २२ ॥ श्री० ॥ सर्व गाथा ॥ ४७६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पण नृप पुरोहितपुत्र दोय, जद्रक नहीं तस जाव; मुनि उपसर्ग महा करे, देवीने निज दाव ॥ १ ॥ अपराजित मुनि एम सुणी, चित्तमां करे विचार; समरकेतु समजण विना, अहो प्रमाद अपार ॥ २ ॥ पुत्रने पण नवि पालवे, आणा लही गुरु आज; जाउं हुं उज्जेणीए, समजावुं शुज साज ॥ ३ ॥ साधुद्वेषथी शुज नहीं, बोधबीज वली जाय; शक्ति अछे समजाववा, एह विचारी उपाय ॥ ४ ॥ आण लही आचार्यनी, आव्या ते उज्जेण; आर्यराहु गछ अनुसरी, वसीआ कार्यवशेण ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ मुजरो ल्योने जालिम जाटणी ॥ ए देशी ॥

॥ गोचरी वेलाए मुनिवर बोलीया, तुम प्राहुणा अणगार ॥ आहार आणी तुमने अमे आपीये, अपराजित कहे ते वार ॥ १ ॥ मुनिवर

स्याद्वाद समजे सहु ॥ ए आंकणी ॥ कहे हुं आत्मलब्धिक छुं तेणे करी, देखाडो तुम जेह ॥ थापनाकुल तिहां जावुं नवि घटे, मूके चेलो एक तेह ॥ २ ॥ मु० ॥ कुल देखाडीने वली वारीआ, एह प्रत्यनीकनुं गेह ॥ एम कहीने चेलो पाछो वल्यो, पेठा तिहांहिज तेह ॥ ३ ॥ मु० ॥ मोहोटे शब्दे धर्मलाभ दीयो, देखी अंतेउर ताम ॥ अहो मुनिने करशे कदर्थना, जाणशे कुमर ते जाम ॥ ४ ॥ मु० ॥ संज्ञा करे जे जाउ वहेला फरी, बधिर परे मुनिराय ॥ धर्मलाभ कह्यो तेहथी आकरो, जिम ते कुमर सुणाय ॥ ५ ॥ मु० ॥ आव्या दोय कुमर दोड्या तिहां, मनमां हर्ष न माय ॥ देइ द्वारने अतिशय मुनि तणे, वंद्या मुनि तणा पाय ॥ ॥ ६ ॥ मु० ॥ धर्मलाभ दीधो तव बोलीया, नाचो तुमे अम पास ॥ मुनि कहे गीत वाजित्र विण नाचवुं, केम शोभे सुविलास ॥ ७ ॥ कुंवर कहे अमे गीत वाजित्र करुं, मुनि कहे ताम श्रीकार ॥ विषम तालगीत वाजित्र इणे कर्युं, कृत्रिम कोप अणगार ॥ ८ ॥ मु० ॥ कहे रे मूर्ख गोपना छोकरा, नवि जाणो रे विन्नाण ॥ अमने नचाववा होंश घणी करो; सुणी कोप्या ते अजाण ॥ ए ॥ मु० ॥ मुनिमारणने साहमा दोडीआ, तव मुनि करुणारेवंत ॥ अवर उपाय नहीं इहां कामनो, चिंतवे इणी परे चित्त ॥ १० ॥ मु० ॥ कुशल घणुं नियुद्ध व्यापारमां, हलुवे एकने काली ॥ सांध्यो सर्व उतारी अंगनी, बीजो आव्यो तस ढाल ॥ ११ ॥ ॥ मु० ॥ तेहने पण तिमहीज मुनिए कर्यो, उघाडी हवे बार ॥ निज ठामे जइ एकांते करे, सझाय ध्यान अणगार ॥ १२ ॥ मु० ॥ कुमर पड्या हवे हाले चाले नहीं, दीठा सहु परिवार ॥ पाणीए सिंचे तनु उलासता, बोले न जाम लगार ॥ १३ ॥ मु० ॥ राय पुरोहितने संभलावतां, सुणो इणे व्यतिकरे एह ॥ साधुए कुमर कर्या इणविध थकी, भूपति खबर करेह ॥ १४ ॥ मु० ॥ भूप सूरि पासे जइ प्रणमीआ, भगवन् खमो अपराध ॥ कहे बालकनो तव सूरि बोलीया, अमे जाणुं नहीं साध ॥ १५ ॥ ॥ मु० ॥ तव वृत्तांत सहु राये कह्युं, तव बोल्या सूरिराय ॥ अप्रतिबंधी निज तनु उपरे, साधे तत्त्व अमाय ॥ १६ ॥ मु० ॥ नित्य परलोकथी बीहे मुनिवरा, खमता समता रे भाव ॥ प्राणना भयथी दुःख देवे नहीं, ए उत्सर्ग स्वभाव ॥ १७ ॥ मु० ॥ पण कोइ आचरीउं अपवादथी, होय तो पूछुं

रे साध॥ एम करी पूछे सघला साधने, पण ते कहे निरावाध॥ १८॥ मु०॥ एह वातमां अमे जाणुं नहीं, सूरि कहे महाराय॥ ए अम मुनिए तो कीधुं नहीं, नृप कहे जूठ न थाय॥ १९॥ मु०॥ सूरि कहे एक मुनिवर प्राहुणा, कीधुं होय जो तेण॥ राय कहे ते साधु किहां अछे, जइने पूछुं हुं जेण॥ २०॥ मु०॥ एक मुनिवरे जइ तेहने दाखव्या, साल तरुतले ताम॥ ध्यान धर्मनुं मुनिवर धारता, देखे नरपति जाम॥ २१॥ मु०॥ उलखी मुनिवरने चित्त लाजीउं, प्रणम्यो जायना पाय॥ धर्मलाभ देइने एम कहे, सांभल रे महाराय॥ २२॥ मु०॥ छठे खंडे सत्तरमी कही, उत्तम एहवी ढाल॥ पद्मविजय कहे श्रोता सांभलो, आगल वात रसाल॥ २३॥ मु०॥ ५०४॥

॥ दोहा॥

॥ जुगतुं कारज जालव्युं, मुनि उपसर्ग महंत; करतां वार्या कांय नहीं, निज राज्ये निरखंत॥ १॥ कुमर अनाथ ते कीधला, तव जल भरीयां नेत; नृप कहे लाज्यो मुनिवरु, अधिकं कर्युं अम हेत॥ १॥ अनुग्रह कीजे अम भणी, दोष ते खमो दयाल; कुमरअंग साजां करो, एहवुं नहीं करे आल॥ ३॥ संध्यो तो साजी करुं, मुनिवर कहे महाराय; अमची दीक्षा आदरे, न करे फरी अन्याय॥ ४॥ नृप कहे में आज्ञा करी, पण तस जोउं परिणाम; मुनि कहे पूछो कुंवरने, भूपति भणे ताम॥ ५॥ बोली न शके बापडा, साधुए कर्यो पसाय; अवनीपतिशुं आवीआ, गावा कुमरने ठाय॥ ६॥ जोगीसर ध्याने जिस्यो, दीठा काष्ठ दशाय; बोले पराणे वल थकी, एहवा कीधा आय॥ ७॥

॥ ढाल अढारमी॥

॥ शेत्रुंजा गढना वासी रे, मुजरो मानजो रे॥ ए देशी॥

॥ मुनिवर कहे सुणो वाणी रे, मुनिनी कदर्थना रे॥ ते तरु फूल ए फल तो, नरगनी वेदना रे॥ तेहनो पश्चात्ताप जो होय, तो साह्यकारी थाउं परलोय॥ १॥ चरणनी सेवा सारी रे, भवदुःख कापशे रे॥ उपद्रव सघला टाली रे, शिवसुख आपशे रे॥ कुमर कहे प्रभु कर्यो उपगार, लाज्या अमे अमचे आचार॥ २॥ च०॥ लेशुं दीक्षा पामी रे, मात पिता तणी रे॥ आणा तव ते बोल्या रे, दीधा गुरु भणी रे॥ जोड्यां अंगने गु-

णसंघात, लीधी प्रव्रज्या करी प्रणिपात ॥ ३ ॥ च० ॥ दीक्षा पालतां ज्ञावे रे, बिहु जनने तदा रे ॥ केइक दिन गया जाम रे, हवे सुणो एकदा रे ॥ कर्मउदये पुरोहित कुमार, जाण्यो यद्यपि धर्मनो सार ॥ ४ ॥ च० ॥ प्राणे दीक्षा दीधी रे, एम मन आवीयो रे॥ गुरु उपरे द्वेष जाग्यो रे, पण न खमावीयो रे ॥ ईशानदेव लोके उपनो देव, रतिसागरमां पड्यो ततखेव ॥ ५ ॥ च० ॥ एक दिन अप्सरा साथे रे, बेठां उपनो रे ॥ दीन ज्ञाव वली निद्रा रे, कामराग नीपनो रे ॥ कंप्यां कल्पवृक्ष देखाय, सुरज्ञि कुसुममाला कुमलाय ॥ ६ ॥ च० ॥ लाज ने शोज्ञा नाठी रे, देवडुष्यज खस्यां रे ॥ कोप करे घणो अरति रें, नयन ज्ञम्यां जिस्यां रे ॥ हैये उपनो खेद ते वार, देवीउं विलपे तेम परिवार ॥ ७ ॥ च० ॥ एम अज्ञाने विलपुं रे, शाता शी इहां रे ॥ तीर्थंकर पद्मनाज्ञ रे, पूछुं जइ तिहां रे ॥ किहां उपजीश हुं चिंते देव, सुलज्ञ डुर्लज्ञबोधि जिनदेव ॥ ७ ॥ च० ॥ आव्यो पूर्वविदेहे रे, जिनवरने नम्यो रे ॥ पूछ्या पछी कहे जिनजी रे, उपजशो तुमो रे ॥ जंबुद्वीपना ज्ञरत मझार, कोसंबी नगरी अवधार ॥ ए ॥ च० ॥ थाइश तुं डुर्लज्ञबोधि रे, गुरुद्वेषे करी रे ॥ इत्यादिक ज्ञव पहिलो रे, ज्ञाख्यो तस चरी रे ॥ सांज्ञली कहे अहो गुरु प्रत्यनीक, अल्पे एवडा उदयनी ज्ञीक ॥ १० ॥ च० ॥ आ लोकनो उपकारी रे, जिन कहे जाणीये रे ॥ श्यो तस प्रत्युपकारे रे, कहोने वखाणीये रे ॥ परलोक उपगारनी शी वात, टाले अन्नाण ने मिथ्यात ॥ ११ ॥ च० ॥ सुविहित किरिया आपे रे, थापे गुण ज्ञणी रे ॥ जनम जरा ने मरण रे, रोग शोक अवगुणी रे ॥ टाले जे संसार आवास, शासुख पामे सुविलास ॥ १२ ॥ च० ॥ एहवा गुरुने द्वेषे रे, गुणद्वेषी थयो रे ॥ पूर्वथी विपरीत थाये रे, अति संसार ज्ञयो रे ॥ देव कहे प्रज्ञु साचुं एह, किहारे ए कहो कर्मनो छेह ॥ १३ ॥ च० ॥ प्रज्ञु कहे लगता ज्ञवमां रे, अंत एहनो थशे. रे ॥ मूंगो बीजुं नाम रे, तुज ज्राता वशे रे ॥ देव कहे पहेलुं शुं नाम, जिणे बीजुं ए ज्ञाखो स्वामी ॥ १४ ॥ च० ॥ पहेलुं नाम अशोक रे, जिनजी कहे हतुं रे ॥ सांज्ञल तेहनो हेतु रे, मूंगो जिम थतुं रे ॥ कोसंबी एहज पुर सार, अतीत कालनी वात विचार ॥ १५ ॥ च० ॥ तापस नामे शेठ रे, दानादिक करे रे ॥ पण पर-

मादी तेह रे, द्रव्य घणुं धरे रे ॥ करतो नित्य नित्य बहु व्यापार, आरत ध्यान धरे ते अपार ॥ १६ ॥ च० ॥ घर सूअर थयो मरीने रे, निज घर देखीने रे ॥ जातिसमरण ज्ञान रे, तास विशेषीने रे ॥ एक दिन बापनो दिवस ते आय, भोजननी वेला जब थाय ॥ १७ ॥ च० ॥ पीरसवा वेला जाम रे, आवी ढूकमी रे ॥ मांस लेइ मार्जार रे, चाल्यो दरूवमी रे ॥ तव सूपकारी चिंते मन्न, वेला अतिक्रम चढ्यो बहु दिन्न ॥ ॥ १८ ॥ च० ॥ गृहपतिना तव भयथी रे, सूअर मारीयो रे ॥ मांस ते रांध्युं ताम रे, क्रोधे हकारीयो रे ॥ उपनो मरीने तेहज गेह, सूअर नागपणे थयो तेह ॥ १९ ॥ च० ॥ एह घरने सूपकारी रे, देखी उपनुं रे ॥ जातिसमरण ज्ञान रे, नागने नीपनुं रे ॥ कर्म विचित्रथी न थयो क्रोध, अनुकंपा उपनी थयो बोध ॥ २० ॥ च० ॥ रांधण सापने देखी रे, कोलाहल कस्यो रे ॥ सहु तिहां दोमी आव्या रे, अहि जमघर धस्यो रे ॥ तिहां तस निर्जरा थइ अकाम, मनुज आयु बांध्युं अभिराम ॥ २१ ॥ च० ॥ नागदत्त इण नामे रे, निज सुत कामिनी रे ॥ बंधुदत्ता उरे आयो रे, जनम्यो जामिनी रे ॥ अशोकदत्त दीधुं अभिधान, वरस एक बोले थइ शान ॥ २२ ॥ च० ॥ मात पिता सूपकारी रे, देखीने वली रे ॥ जातिसमरण पाम्यो रे, एम कहे केवली रे ॥ कर्म अचिंत्यनी शक्ति निहाली, पुत्रवधू ते माता भाली ॥ २३ ॥ च० ॥ सुतने तात निहाली रे, महा वैरागीयो रे ॥ माता पिता किम भाखुं रे, एम मन भागीयो रे ॥ मौनपणुं धस्युं जाणी जाम, मूंगो नाम प्रसिद्ध थयो ताम ॥ २४ ॥ च० ॥ ढाल अढारमी एह रे, बठा खंममां रे ॥ समरादित्यने रासे रे, रंग अखंममां रे ॥ श्री गुरु उतमविजयनो शिष्य, पद्मविजय कहे सुणत जगीश ॥ २५ ॥ च० ॥ सर्व गाथा ॥ ५३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केवलज्ञानी एम कहे, बोल्या बार वरष; चउनाणी चारित्रीयो, मेघनाद सुमुनीश ॥ १ ॥ आव्या ते उद्यानमां, चारु वयण विन्यास; सुमंगल साधु शिरे, शीखवीआ शुभ भास ॥ २ ॥ नागदत्त घर निरखजो, आंगणे बेठो आय; अशोकदत्त तस एम कहे, चेतन सुणी चित्त लाय ॥ ३ ॥ गुरुजी तुजने ज्ञानथी, कहे सुण तापस काम; मौन धरे शुं मन

थकी, धर्म करो गुणधाम ॥ ४ ॥ सूअर साप ने पुत्रसुत, मरीने कर्म प-साय; तहत्ति करी मुनि तिहां गया, संजलाव्यो सद्भाव ॥ ५ ॥ यतः॥ "तावस किमिमिणा मुणवएण, पव्विज्जा जाणिउं धम्मं; मरिऊण सुअ-रोग, जाउं पुत्तस्स पुत्तोत्ति" ॥ १ ॥

॥ ढाल ठेगणीशमी ॥

॥ मनमोहना जिनराया ॥ ए देशी ॥

॥ कहे मूंगो करी परणाम, कहो ते गुरु छे किण ठाम रे ॥ गुरु वंदीये शुभ भावे ॥ जिम भवभय दुःखडां नावे रे ॥ गुरु० ॥ ए आंकणी ॥ इहां चैत्य छे शक्रावतार, मुनि कहे तिहां गुरुगुण धार रे ॥ १ ॥ गु० ॥ मूंगो कहे चालो जइये, गुरु प्रणमीने सुख पइये रे ॥ गु० ॥ विस्मित मूंगानो परिवार, जाणे जायतो अवल विचार रे ॥ २ ॥ गु० ॥ जइ प्रणम्यो गुरुना पाय, धर्मलाभ दीये गुरुराय रे ॥ गु० ॥ पूछे तव मूंगो स्वामी, किम अतीत वात तुमे पामी रे ॥ ३ ॥ गु० ॥ गुरु कहे अमे नाणथी जाणुं, नाण अतिशय एह वखाणुं रे ॥ गु० ॥ प्रतिबोध थशे एम जाणी, गुरु भाखे धर्मनी वाणी रे ॥ ४ ॥ गु० ॥ मूंगो प्रतिबोध ते पाम्यो, पण मूंगो नाम न वाम्यो रे ॥ गु० ॥ एम बीजुं नाम ते जाणो, सांभली कहे हर्ष भराणो रे ॥ ५ ॥ गु० ॥ प्रतिबोध लहीश शी रीते, प्रभु पद्मनाभ कहे नीते रे ॥ गु० ॥ वैताढ्य मांहि तुमे देखी, निज कुंमल जुगल विशेखी रे ॥ ६ ॥ गु० ॥ प्रतिबोध तिहां तुम थाशे, मिथ्यामति दूर पलाशे रे ॥ गु० ॥ सुणी वंदना प्रभुने कीधी, गयो कोसंबी सुप्रसिद्धि रे ॥ ७ ॥ गु० ॥ मूंगाने देखी भाखे, तुझथी प्रतिबोध प्रभु दाखे रे ॥ गु० ॥ मुझ बूझवजे निरधार, तव बोल्यो मूक विचार रे ॥ ८ ॥ गु० ॥ उद्यम करुं शक्ति प्रमाणे, सुर लेइ गयो वैताढ ठाणे रे ॥ गु० ॥ कूटसिद्धायतन देखाड्यो, वली वात ते एम सुणाव्यो रे ॥ ए ॥ गु० ॥ रयणावतंसक नाम, ए कुंमल जुगल उदाम रे ॥ गु० ॥ कुंमल वली कूट ए दोय, मुझ अतिशय वल्लभ जोय रे ॥ १० ॥ गु० ॥ शिलासमूह विवरने देशे, तिहां कुंमल देवनिवेशे रे ॥ गु० ॥ आपे चिंतामणि रयण, पछे भाखे एहवुं वयण रे॥ ११॥ गु०॥ जे चिंता करीये तेह, एक दिने एक

पूरे तेह रे ॥ गु० ॥ एहनी शकते वैताढ्ये जाजे, मुजने कुंमल देखाजे रे ॥ १२ ॥ गु० ॥ मानी एणे ए वात, कोसंबी गया सुखशात रे ॥ गु० ॥ देवता गयो आप विमान, अनुक्रमे चवीउं तिणे थान रे ॥ १३ ॥ बंधुमती कुखे आयो, एक दोहद तास सुहायो रे ॥ गु० ॥ शरद्‌काले सहकारनी इछा, पण नीपजे नवि तस वंछा रे ॥ १४ ॥ गु० ॥ गर्ज पीमा पाम्यो तास, दुर्बल थइ नारी निराश रे ॥ गु० ॥ मरशे ए निश्चय नारी, एम लोके वात विचारी रे ॥ १५ ॥ गु० ॥ मूंगो चिंते माय सनेह, जिनवाणी न अन्यथा रेह रे ॥ गु० ॥ अन्यथा वैश्रढ न जवाय, एम चिंता चित्तमां लाय रे ॥ १६ ॥ गु० ॥ चिंतामणि पासे मागी, दोहद पूरे वमजागी रे ॥ गु० ॥ अनुकरमे जायो पुत्त, नाम अरहदत्त दीउं जुत्त रे ॥ १७ ॥ गु० ॥ अशोकदत्त गुरुने चरणे, बालकने लगावे शरणे रे ॥ गु० तव बालक रोवा मांडे, नित्य नित्य एम काल गमाडे रे ॥ १८ ॥ गु० ॥ कुंवरपणुं पाम्यो जिहारे, नित्य धर्म सुणावे तिहारे रे ॥ गु० ॥ गयो काल केतोएक एम, नवि लागो धर्मनो प्रेम रे ॥ १९ ॥ गु० ॥ एक दिन वली अशोकदत्त, पूरव जवनी कहे वत्त रे ॥ गु० ॥ पण अरहदत्तने अंग, नवि लागो धरमनो रंग रे ॥ २० ॥ गु० ॥ उलटुं कहे मूकने एम, विलाप करे छे केम रे ॥ गु० ॥ अहो कर्मपरिणतिनी शक्ति, अशोकदत्त करे व्यक्ति रे ॥ २१ ॥ गु० ॥ एम चिंतवी वैराग्य पामी, आरंज परिग्रह वामी रे ॥ गु० ॥ लीधो इणे संजमजार, अरहदत्त परण्यो वधू चार रे ॥ २२ ॥ गु० ॥ जोग जोगवतां केइ काल, थयो दुर्लजबोधि निहाल रे ॥ गु० ॥ चारित्र निरतिचार पाली, अशोकदत्त पापने गाली रे ॥ २३ ॥ गु० ॥ काल करीने देवता थाय, अशोकदत्त मुनिराय रे ॥ गु० ॥ पदमे उगणीशमी ढाल, कही छठे खंमे रसाल रे ॥ २४ ॥ गु० ॥ सर्व गाथा ॥ ५६५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंचत्व ज्राता पामियो, अरहदत्ते सुण्युं एम; शोक थयो तेहने सबल, पामी बहुलो प्रेम ॥ १ ॥ पंचम कल्प ते पामीयो, आव्यो तस उपयोग; अरहदत्तनो अवधिथी, जाण्यो सघलो जोग ॥ २ ॥ करुं उपाय हवे आकरो, जिम बूझे ए जीव; व्याधि विकुर्वी वेगशुं, आप्युं दुःख अतीव ॥ ३ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ बेमले जार घणो बे राज, वातां केम करो बो ॥ ए देशी ॥

॥ पग सोजीने थांजा हूआ, वांहि ते जेहवी दोरमी ॥ लोचन मिचाणां जम जीहा, पेट जिसी गागरमी ॥ १ ॥ श्रीगुरु आशातन फल एह, प्राणी केमही न बूके ॥ ए आंकणी ॥ निद्रा नाठी आवी अरति, वेदनाथी लह्यो खेद ॥ वैद्य तेमावी द्रव्य सहु घरनुं, आपी कहे तस जेद ॥ २ ॥ श्री० ॥ टालो वेदन तिणे पण मांड्या, औषधना उपचार ॥ कांय विशेष थयो नहीं तेहथी, वैद्ये कस्यो परिहार ॥ ३ ॥ श्री० ॥ तीव्र वेदनथी एणी परे वोले, एक दिन पण न रहाय ॥ तिणे हुं अग्निमां पेसी मरशुं, सुणी वांधव खेदाय ॥ ४ ॥ श्री० ॥ मूर्छा पामी पत्नी रोवे, रोवे सहु परिवार ॥ इण समे सवर वैद्यने रूपे, आव्यो सुर अवतार ॥ ॥ ५ ॥ श्री० ॥ खांधे कोथलो अरहदत्तना, घर पासे जइ वोले ॥ सवर वैद्य हुं विद्यासागर, कोइ नहीं मुज तोले ॥ ६ ॥ श्री० ॥ शीशवेदना टालुं खसने, वहिर तिमिर वली टालुं ॥ शूल ने उदरव्यथा मलव्याधि, टालुं कहुं ते पालुं ॥ ७ ॥ श्री० ॥ वोलाव्यो सुणीने वहुमाने, परिजन कहे सुण वैद्य ॥ मुह माग्युं तुमने आपीशुं, जलोदर टालो ए सद्य ॥ ॥ ८ ॥ श्री० ॥ तेह कहे हुं धर्मवैद्य बुं, नहीं हुं द्रव्यनो लोही ॥ कष्टसाध्य ए व्याधि बे सुणजो, तिणे सुखथी नविसोही ॥ ९ ॥ श्री० ॥ इह जव ने पर जव नियाणुं, तजवुं पमशे जाइ ॥ इह लोके कुपथ्य आहारादिक, धातुकोप जिणे वाइ ॥ १० ॥ श्री० ॥ परजवनुं जे पाप न करवुं तेह नियाणुं टालो ॥ इह लोक पण परलोक संबंधे, तिणे इह लोक अजुवालो ॥ ११ ॥ श्री० ॥ तेहमां मुख्य मिथ्यात निवारो, समकितशुं चित्त लावो ॥ ज्ञान क्रिया अज्यास करावो, आरंज सहु वरजावो ॥ १२ ॥ श्री० ॥ प्रथम चरम पोरसीए करवो, चित्त मल शोधनकारी ॥ जिनवयण सजाय जलेरो, बीजी पोरसी अर्थकारी ॥ १३ ॥ श्री० ॥ हिंसा अलिक अदत्त ने अब्रह्म, मूर्छा परिग्रह वारो ॥ करवुं, नहीं वली रात्रिजोजन, समता मार्दव धारो ॥ १४ ॥ श्री० ॥ माया टाली लोज न करवो, वसवुं वन समशाने ॥ चित्त निरीहपणे वली रहेवुं, अप्रतिबंध विधाने ॥ १५ ॥ श्री० ॥ जावजलोदर टालुं इणी परे, तो द्रव्यनो स्यो

नार ॥ सांजली परिजन एम विचारे, मरवाथी ए सार ॥ १६ ॥ श्री० ॥ अरहदत्तने नाखे परिजन, मरणथी एहज वारु ॥ अरहदत्त चिंते ए मरणथी, अधिकी वात विचारु ॥ १७ ॥ श्री० ॥ पण उपाय नहीं बीजो एहनो, तिणे हाकार कहायो ॥ वैद्य कहे मुज शक्ति देखो; मोह न पेसे नायो ॥ १८ ॥ श्री० ॥ निश्चय मन करजो तुमे सघला, कुमित्र वयण मत सुणजे ॥ कुशील संग तजजे इह नवनी, वस्तु न मनमां मुणजे ॥ १९ ॥ श्री० ॥ मुजने मत मूके तुं माहारुं, कह्युं ते करजे नाइ ॥ एम कही मंत्रमंमल आलेख्युं, अरहदत्त तिहां ठाइ ॥ २० ॥ श्री० ॥ नगरलोक सहु मलीयो जोवा, उंषध मंत्र्यां तेणे ॥ उज्ज्वल वस्त्र उंढारु करीने, मंत्र जप्यो हवे एणे ॥ २० ॥ श्री० ॥ देवशक्तिथी कोलाहल करे, नैरव शब्द ते मूके ॥ पृथिवी आलोटीने उठे, देवशक्ति नवि चूके ॥ २२ ॥ श्री० ॥ वीशमी ढाल ए छठे खंमे, समरादित्यने रास ॥ पंमित उत्तमविजयनो जंपे, पद्मविजय सुविलास ॥ ॥ २३ ॥ श्री० ॥ सर्व गाथा ॥ ५९१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रूप धरी व्याधि रह्यो, बहु कलिमल जंबाल; डुरन्निगंध दयामणो, नीषण अतिशय नाल ॥ १ ॥ आप सरीस अठ एक शत, व्याधिरूप परिवार; पापविपाक मानुं परिवस्या, देवनी शक्ति उदार ॥ २ ॥ अचरिज जन देखी इस्युं, कहे अपूरव कोय; दीठुं नहीं नहीं देखशुं, जोपे एहवुं जोय ॥ ३ ॥ राग रूप कुणे निरखीयो, सवर वैद्य सुखकार; आवी उंघ अवल परे, पाम्यो डुःखनो पार ॥ ४ ॥ वैद्ये पमिबोह्यो वली, नाषे इणी परे नाष; पाप व्याधि तुं पेखजे, काढी तुज सकाश ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ केसर वरणो हो के काढ कसुंबो मारा लाल ॥ ए देशी ॥

॥ हवे एम करजे हो के जिम ए व्याधि ॥ मारा लाल ॥ फरी नवि वलगे हो के डुष्ट उपाधि ॥ मा० ॥ आरोग्य सुखनो हो के देश तुं पाम्यो ॥ मा० ॥ पापकरमनी हो के व्याधि ते वाम्यो ॥ मा० ॥ १ ॥ हवे तुं करजे हो के इणी परे काम ॥ मा० ॥ मूल उछेदे हो के पापनुं ठाम ॥ मा० ॥ जेहथी पामे हो के सुख अनंत ॥ मा० ॥ जन्म जरा ने हो

के मरण न हुंत ॥ मा० ॥ २ ॥ तुज परे मुजने हो के एणीए ग्रहीयो ॥ मा० ॥ पाप ए व्याधिथी हो के दुःख बहु सहीयो ॥ मा० ॥ करतां मुजने हो के तास उपाय ॥ मा० ॥ कांयक टलीजे हो के हवे नवि जाय ॥ मा० ॥ ३ ॥ शेष टालवा हो के हुं अजोग ॥ मा० ॥ वचुं इणी परे हो के माहारा जोग ॥ मा० ॥ तुं पण उत्तम हो के करी उपाय ॥ मा० ॥ अथवा मुज परे हो के चालो जाय ॥ मा० ॥ ४ ॥ लोक कहे स्यो हो के उत्तम राह ॥ मा० ॥ सवर वैद्य कहे हो के सुणो उछाह ॥ मा० ॥ जिनशासनमां हो के दीक्षा लेवे ॥ मा० ॥ व्याधि न आवे हो के फरी जे सेवे ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनुक्रमे सघली हो के व्याधि ते जाय ॥ मा० ॥ पण मुज जातिनो हो के वांक ते थाय ॥ मा० ॥ संजम मुजथी हो के नवि लेवाय ॥ मा० ॥ ताहारी उत्तम हो के जातिथी थाय ॥ मा० ॥ ॥ ६ ॥ तिणे ल्यो संजम हो के अथवा चालो ॥ मा० ॥ माहारी साथे हो के म करो टालो ॥ मा० ॥ लोक कहे तुज हो के जाइए लीधी ॥ ॥ मा० ॥ दीक्षा तुज पण हो के लेवी सीधी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अरहदत्ते तव हो के मान्युं एह ॥ मा० ॥ कोइक मुनिवर हो के पासे लेह ॥ मा० ॥ द्रव्यथी लीधी हो के पण नवि जावे ॥ मा० ॥ सवर वैद्य तव हो के थानक जावे ॥ मा० ॥ ८ ॥ केइक दिवसे हो के थइ तस अरति ॥ मा० ॥ कुलने निंदा हो के न गणी विरति ॥ मा० ॥ लिंग ते छांडी हो के आव्यो गेह ॥ मा० ॥ देवे जाणी हो के वात तेह ॥ मा० ॥ ९ ॥ पूरव रीते हो के व्याधि कीधो ॥ मा० ॥ लोके निंद्यो हो के दुःख बहु दीधो ॥ मा० ॥ वैद्यने खोले हो के तस परिवार ॥ मा० ॥ लाधो तेह हो के दैवविचार ॥ मा० ॥ १० ॥ वैद्यने जाखे हो के फरी रोग आव्यो ॥ मा० ॥ करो उपगार हो के तेह समावो ॥ मा० ॥ वैद्य कहे सुणो हो के कुपथ्य कीधुं ॥ मा० ॥ परिजन कहे खरुं हो के दुःख इणे लीधुं ॥ ॥ मा० ॥ ११ ॥ इणे चरित्रे हो के लाज्या अमे ॥ मा० ॥ पण उपकारी हो के मोहोटा तुमे ॥ मा० ॥ सबर कहे एह हो के लेवे दीक्षा ॥ मा० ॥ करी प्रपंच हो के सुर दीये शिक्षा ॥ मा० ॥ १२ ॥ व्रत इछा विणु हो के लीधुं फेरी ॥ मा० ॥ शांति करी गयो हो के वैद्य ते प्रेरी ॥ मा० ॥ वली घर आव्यो हो के चारित्र मूकी ॥ मा० ॥

देवताए जाएयुं हो के गलीयुं थूंकी ॥ मा० ॥ १३ ॥ व्याधि विकुर्व्यो हो के तीव्र जावे ॥ मा० ॥ बांधव बोल्या हो के किम फरी आवे ॥ मा० ॥ अवगुण थाये हो के किम नवि जाणे ॥ मा० ॥ एहनुं वयण ते हो के मानो ए टाणे ॥ मा० ॥ १४ ॥ अथवा जीवथी हो के जावुं दीसे ॥ मा० ॥ बोल्यो नव ते हो के विशवावीशे ॥ मा० ॥ लावो वैद्यने हो के कहेशे जेह ॥ मा० ॥ करशुं प्रेमे हो के साचुं तेह ॥ मा० ॥ १५ ॥ बंधवे खोलतां हो के दीठो जाम ॥ मा० ॥ कहे मुख नीचुं हो के करीने ताम ॥ मा० ॥ मातुं कीधुं हो के किरिया न करी ॥ मा० ॥ रोग उपन्या हो के काया विफरी ॥ मा० ॥ १६ ॥ कहो उपाय हो के सवर ते बोले ॥ मां० ॥ विषयलोलुपी हो के एह अतोले ॥ मा० ॥ उद्यम हीणो हो के नहीं उपाय ॥ मा० ॥ थाशे आगल हो के बहु अपाय ॥ मा० ॥ ॥ १७ ॥ नरक तिरिनां हो के डुःख बहु खमशे ॥ मा० ॥ पूछो एहने हो के जुर्ज कांय गमशे ॥ मा० ॥ तुम आग्रहथी हो के करुं वली साजो ॥ मा० ॥ मुऊशुं हिंरूे हो के तो रहे ताजो ॥ मा० ॥ १८ ॥ जइ संजलाव्युं हो के मान्युं प्राणे ॥ मा० ॥ वैद्य कहे सुणी हो के हवे मम माणे ॥ मा० ॥ जे जे हुं कहुं हो के ते ते करजे ॥ मा० ॥ मुऊथी अलगो हो के कण मत रहेजे ॥ मा० ॥ १९ ॥ हाहा जणतो हो के कीयो नीरोगी ॥ मा० ॥ लोके जाख्यो हो के म थए जोगी ॥ मा० ॥ वैद्ये आप्यो हो के कोथलो हाथे ॥ मा० ॥ नयरथी नीकल्यो हो के लेइने साथे ॥ मा० ॥ २० ॥ छठे खंमे हो के जाखी ढाल ॥ मा० ॥ ए एकवीशमी हो के वात रसाल ॥ मा० ॥ दोहिलो बूऊे हो के डुर्लजबोहि ॥ ॥ मा० ॥ पण तस देवता हो के करशे सोही ॥ मा० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ६१७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गामांतर हवे ते गया, सुर माया करे सार; धूम्र सघण अंधारथी; दृष्टि डुःख दातार ॥ १ वंश फूटे ज्वालावली, शुऊ चले असमान; वलतुं गाम बतावीने, चाल्यो तेह अचान ॥ २ ॥ तृण जारो शिर तोलीने, अरहदत्त कहे आम; उलाये तृणथी अगनि, कहो किस करो ए काम ॥ ॥ ३ ॥ सुर कहे तुं एम समऊणो, अग्नि न बूऊे एम; देह इंधण लेइ

दाहमां, कहो घरे जाये केम ॥ ४ ॥ क्रोध अनल जिहां किण घणी,आवे पवन अन्नाण; बहु प्राणी बलता तिहां, नवि आवे तुझ नाण ॥ ५ ॥ बोली न शक्यो बापडो, पण नवि बूज्यो पहाण; आगल चाली आवी-आ, महोकम करी मंडाण ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ बलिहारी रे तुझ वेषनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ हांरे हांरे देवता रे, उन्मारग तिहां चालीउ रे ॥ कंटकाकुल झूठाम रे लाल ॥ किम पंथथी कुपंथे व्रजो रे, अरहदत्त कहे ताम रे लाल ॥ १ ॥ गुरु आशातना मत करो रे ॥ ए आंकणी ॥ हांरे हांरे देवता रे, देव कहे तुं जाणे एम खरुं रे, नवि जाइये उनमग्ग रे लाल ॥ तो किम मोक्षमारग तजी रे, किम संसारमां लग्ग रे लाल ॥ २ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे देवता रे, एम सुणी मौन कर्युं तिणे रे, पण नवि बूज्यो तेह रे लाल ॥ आगल जाय तव देखतो रे, सूअर रूप करेह रे लाल ॥ ॥ ३ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे देवता रे, विविध जाति कण छंडने रे, ढांडी अशुचि डुर्गंध रे लाल ॥ विष्टाशुं राचि रह्यो रे, करी गाढो प्रतिबंध रे लाल ॥ ४ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे देवता रे, अरहदत्त देखी वदे रे, अहो एहनो अविवेक रे लाल ॥ कण मूकी विष्टा जखे रे, सुर कहे सुण तुं छेक रे लाल ॥ ५ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे देवता रे, कहे तुं जाणे छे खरो रे, ते कहे शुं हुं अजाण रे लाल ॥ सुर कहे सुनिसुख छांडीने रे, तुं केम थयो अन्नाण रे लाल ॥ ६ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे देवता रे, अशुचि विषय डुःर्गंधीआ रे, तेहमां तुझ बहु मान रे लाल ॥ सांजली मौन क-री रह्यो रे, पण नवि बूज्यो अज्ञान रे लाल ॥ ७ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे चालतां रे, एक गामे जइने रह्या रे, देवकुलमां धरी प्रीति रे लाल ॥ ते व्यंतर हेठो पडे रे, लोक देखे विपरीत रे लाल ॥ ८ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे देवता रे, लोक बेसारे थानिके रे, वली ते पडतो हेठ रे लाल ॥ वली वली पडे मूके वली रे, एहनी तिहां गइ ठेठ रे लाल ॥ ए ॥ गु० ॥ हांरे हांरे बोलतो रे, अरहदत्त ए मूरखो रे, किम पडे हेठो एह रे लाल ॥ अर्चा पूजा नवि आदरे रे, तव सुर बोले तेह रे लाल ॥ १० ॥ गु० ॥ हांरे हांरे तुं किम रे, जाणे छे एहवुं खरुं रे, ते कहे एहमां कांय रे लाल ॥ सुर कहेतो

तुं विचारजे रे, संजम ठोमी पलाय रे लाल ॥ ११ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे सुर शिव रे, गति पूजनिक ते ठोमीने रे, नरकादिकनो उपाय रे लाल ॥ करतो केम जाणे नहीं रे, सांजली मौन ते थाय रे लाल ॥ १२ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे देवता रे, माया एक विकुर्वतो रे, ऊंजुर्ज चारी अनंत रे लाल ॥ क्षेत्र जखुं ठे तेहनुं रे, कूपक एक तस अंत रे लाल ॥ १३ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे देवता रे, मूको विषम जग्या घणी रे, तिहां एक लेश प्रवाल रे लाल ॥ एक बलद तिहां खायवा रे, चार मूकी असराल रे लाल ॥ ॥ १४ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे देवता रे, जातां लम्थमीने पड्यो रे, जांग्यां अंग उपांग रे लाल ॥ देखी अरहदत्त बोलीयो रे, अहो ए बेल विरंग रे लाल ॥ १५ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे देवता रे, ऊंजुआ चारीने ठांमीने रे, किहां खावा ए जाय रे लाल ॥ सुर कहे जाणे तुं खरो रे, ते कहे एटलुं न ठाय रे लाल ॥ १६ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे देवता रे, किम तुं सुर-सुख ठांमीने रे, जेह ऊंजुमइ चारी रे लाल ॥ एक प्रवाल लव सारिखां रे, माणस सुख अवधार रे लाल ॥ १७ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे देवता रे, तस अजिलाखाए आतमा रे, किम पाडे डुर्गतिकूप रे लाल ॥ ते सुणी कर्मसंचय गल्यो रे, चिंतवे एम सरूप रे लाल ॥ १८ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे जाणीये रे, एह माणस नहीं देवता रे, मुज कहे एम वारंवार रे लाल ॥ वात रुमी संजलावतो रे, जाइ पण एह विचार रे लाल ॥ १९ ॥ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे पूढुं ए रे, तास परमारथ एहने रे, चिंतवी पूछ्युं ताम रे लाल ॥ तुं कोण ठे मुज जाइ परे रे, वात सुणावे आम रे लाल ॥ २० ॥ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे देवता रे, कहे हुं परजायांतरे रे, अशोकदत्त तुं जाण रे लाल ॥ अरहदत्त तव बोलीयो रे, कहो प्रत्यय अहीनाण रे लाल ॥ ॥ २१ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे देवता रे, कहे आपण बिहुए मली रे, वैताढ्य पर्वत ठाम रे लाल ॥ कुंमल जुगल जे थापीयो रे, प्रतिबोधनने काम रे लाल ॥ २२ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे देवता रे, कहे देखाडुं तुजने रे, मानी अरहदत्ते वाणी रे लाल ॥ दिव्य सरूप करी लेइ गयो रे, देखाड्या तिणे ठाण रे लाल ॥ २३ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे तेहने रे, कूट कुंमल सहु देखीने रे, जातिसमरण ज्ञान रे लाल ॥ उपनुं कर्म विचित्रथी रे, जाग्यो जाग्य प्रधान रे लाल ॥ २४ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे तेहवे रे, जावथी दीक्षा

आदरे रे, देव खमावी ताम रे लाल ॥ निज थानक गयो देवता रे, करी निज सघलुं काम रे लाल ॥ २५ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे तेहमां रे, पुरोहित सुत हुं जाणजे रे, धरण सुणो मुज वात रे लाल ॥ विराधक प्राणी तणा रे, नहीं तुज सम अवदात रे लाल ॥ २६ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे जे होय रे, अविराधक प्राणी जला रे, ते सुखे करे निरवाह रे लाल ॥ तिणे संजम तुमे आदरी रे, तरो संसार अगाह रे लाल ॥ २७ ॥ गु० ॥ हांरे हांरे रुअडी रे, छठे खंडे ए कही रे, बावीशमी वर ढाल रे लाल ॥ पद्म कहे श्रोता घरे रे, होजो मंगलमाल रे लाल ॥ २८ ॥ गु० ॥ सर्व गाथा ॥ ६५१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर जोडी धरणो कहे, आण करुं अणगार; संजलावुं मावित्र सवे, उत्तम तुम अधिकार ॥ १ ॥ बूजे जो पुण्यज बले, मुनि कहे सुखे महाजाग; बूज्या मित्र लेइ बहु, वहेलो ते वड जाग ॥ २ ॥ आवी मावित्र आगले, आलाप्यो अधिकार; बूज्यां बहु माने नहीं, सारो ए संसार ॥ ३ ॥ जननी मित्र जनक वली, विधिपूर्वक वड वीर; व्रत सहु साथे संग्रहे, धरणो साहस धीर ॥ ४ ॥ अरहदत्त गुरु आदरे, शीखाव्यां बहु सुत्त; किरिया पण बहु विध करे, गीतारथ गुरु गुत्त ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ गो वाछरुआं चारती, आहिरनो अवतार रुडुं गोकुलीउं ॥ ए देशी ॥

॥ एकल मल्ल पडिमा जणी, जोग्य थया रुषिराय ॥ डुक्कर तप कारी ॥ ॥ इछा करतां तेहनी, आणा गुरुनी थाय ॥ १ ॥ डु० ॥ जावी तेहनी जावना, तप सूत्रादिक जेह ॥ डु० ॥ एकल विहार अंगीकस्यो, विहार करे रुषि तेह ॥ २ ॥ डु० ॥ एक राति गामे वसे, नयरे वसे पंच राति ॥ डु० ॥ तामलीति पुरी आवीआ, काउस्सग्गे मुनि ठात ॥ ३ ॥ वात सुणो लखमी तणी, काढी देवपुर बहार ॥ डु० ॥ सुवचने खोली तदा, करी प्रयत्न अपार ॥ ४ ॥ डु० ॥ नंदिवर्द्धन गामडे, थयो बिहुंनो संजोग ॥ डु० ॥ निज द्वीपे लेइ गयो, जोगवतो सुखजोग ॥ ५ ॥ डु० ॥ कोइक काल व्यतिक्रमे, साथे लेइ ते नारी ॥ डु० ॥ तामलीति पुर बाहिरे, उतरीयो परिवार ॥ ६ ॥ डु० ॥ फिरती फिरती तिहां गइ, लछी जिहां मुनिराय ॥ डु० ॥ उलखीया रुषिराजने, मनमां बहु खेदाय

॥ ७ ॥ डु० ॥ पापकरमना जोरथी, क्रोध लही मन मांहि ॥ डु० ॥ वज्रघात परे ते थइ, चिंते किम ए आंहि ॥ ८ ॥ डु० ॥ दीठो में मुज पापथी, कांयक देउं कलंक ॥ डु० ॥ कंठाजरण त्रोमी ठवुं, एहनी पास निःशंक ॥ ए ॥ डु० ॥ कोलाहल करशुं पछी, ठरशे तव ए चोर ॥ डु० ॥ चंड्रशासन डे जूपति, इणशे ए इण गोर ॥ १० ॥ डु० ॥ जिकुरूपे ग्रही चोरने, लोप्रसहित हण्या काल ॥ डु० ॥ लिंगी पण चोरी करे, एह प्रसिद्धि जाली ॥ ११ ॥ डु० ॥ जेम मन चिंत्युं तेम कस्तुं, आव्यो धाइ कोटवाल ॥ डु० ॥ आवी मुंनि बोलावीआ, कांयक उत्तर आल ॥ १२ ॥ डु० ॥ नवि बोले जव ते रुषि, जूषण खोले ताम ॥ डु० ॥ ठिन्न केकण पासे पड्युं, दीठुं डूर न गम ॥ १३ ॥ डु० ॥ नयरी जन बोलावीया, वात देखामी तेह ॥ डु० ॥ नरपतिने जइ विनव्यो, चोर अपूरव एह ॥ १४ ॥ डु० ॥ विस्मित बोले जूपति, खोली करी खरी रीति ॥ डु० ॥ मारो एहने तव तिहां, पूठे पूरव नीति ॥ १५ ॥ डु० ॥ नवि बोल्या जव ते मुनि, तव उपनो तस कोप ॥ डु० ॥ अहो कपटवेशे रह्यो, नवि बोले करी लोप ॥ १६ ॥ डु० ॥ मारण थानक लावीया, शूलीए दीधो साध ॥ डु० ॥ करे चंडाल उद्घोषणा, सुणो पाप अगाध ॥ १७ ॥ डु० ॥ साधुवेशे चोरी करी, तिणे ए मास्यो जाय ॥ डु० ॥ वली कोइ करशे इणी परे, तस पण वध एम थाय ॥ १८ ॥ डु० ॥ तपपरजावे मुनि तणे, शूली धरती मांहि ॥ डु० ॥ पेठी मुनि विंध्या नहीं, कुसुमवृष्टि थइ त्यांहि ॥ १ए ॥ डु० ॥ धर्म ते जयवंतो अठे, एम थइ लोकमां वाणी ॥ डु० ॥ रायने गइ वधामणी, आव्यो नृप ते ठाण ॥ २० ॥ डु० ॥ हर्षे करतो वंदना, पूठे विस्मय वात ॥ डु० ॥ केम ए खामी नीपन्युं, जाखो मुज अवदात ॥ २१ ॥ डु० ॥ नवि बोल्या जव ते मुनि, तव नर कहे परधान ॥ डु० ॥ व्रतविशेषवंता रुषि, न करे उत्तर दान ॥ २२ ॥ डु० ॥ ठठे खंडे ए कही, त्रेवीशमी वर ढाल ॥ डु० ॥ समरादित्यना रासमां, पद्मने मंगलमाल ॥ २३ ॥ डु० ॥ सर्व गाथा ॥ ६७ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूठो ते नारी प्रत्ये, तव नृप मूके तलार; नाठी लोकवचन सुणी, नवि लाधी ते नारी ॥ १ ॥ नृपने कहे ते नवि जमी, जूपति कहे तव

नास; शोधी करो सम्यग परे, तव खोलण गया तास ॥ २ ॥ आराम शून्य उद्यानमां, देवकुले नवि दीठ; पण तस नर्त्ता पेखीयो, नासंतो थो नीठ ॥ ३ ॥ कोटवाले पकमी करी, नृपने आण्यो नयण; पकड्या नारी तणो पति, शेठ ए लह्यो सुवयण ॥ ४ ॥ नारी तो इण नगरी नथी, नासंतां पकड्यो नाथ; तुम मन माने तिम करो, हे सहु तुमचे हाथ ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ साहिबा मोती घोने हमारो ॥ ए देशी ॥

॥ नृप कहे तुऊ किहां बे नार, ते कहे हुं न जाणुं निरधार ॥ साहिबा तुमे सुणजो साचुं, मोहनां तुमे सुणजो ॥ ए आंकणी ॥ राय कहे तो नाठो केम, ते कहे नय लही नाठो एम ॥ १ ॥ सा० ॥ विण अपराधे नय केम लागो, नृप पूज्या पढी कहे एक आगो ॥ सा० ॥ दुष्ट नारी ग्रही दुःखनुं मूल, तेहज मुऊ अपराध अतूल ॥ २ ॥ सा० ॥ अनय दीयो तुऊने नृप नाखे, जो मुऊ व्यतिकर सघलो दाखे ॥ ॥ सा० ॥ कोण ऋषि ए कोण वली नार, सुवयण देखे तव अणगार ॥ ३ ॥ सा० ॥ उलखी आंसु नयणे नरीयां, मुनिवर चरित्त देखी चित्त ठरीआं ॥ सा० ॥ विस्मय लही कहे रायने एम, नवि कहेवा जेहवुं प्रनु नेम ॥ ४ ॥ सा० ॥ राय कहे संसार ए एहवो, एहमां अचरिज लहेवो केहवो ॥ सा० ॥ सुवयण कहे एकांत करीजे, तव नृप परिजन दूर धरीजे ॥ ५ ॥ सा० ॥ मुनि देखीने घणुं पढतायो, नृपने कहे हुं पापे नरायो ॥ सा० ॥ पुरुष श्वान हुं पुरुष म जाणो, सत्यसंधा मुनि पुरुष वखाणो ॥ ६ ॥ सा० ॥ कृतगुण जाण अपर उपगारी, व्रत धर्युं सर्व अकारज वारी ॥ सा० ॥ एहमां सर्व वात मुऊ नाखी, राय आगल पूरी नवि दाखी ॥ ७ ॥ सा० ॥ तुऊ सम पुरुष ते श्वान न कहीये, प्रस्तुत वात कहो जिम लहीये ॥ सा० ॥ वात कही तव सघली जाम, नरपति तुष्टमान थयो ताम ॥ ८ ॥ सा० ॥ मूक्यो सुवयण मुनि नमी चाल्यो, आर्यमंगु पासे मिथ्यात टाल्यो ॥ सा० ॥ धर्म सांनली कर्यो पश्चात्ताप, धरणने रागे श्रमण थयो आप ॥ ९ ॥ सा० ॥ नरपति प्रणमी मुनिवर पाय, हरखे निज नुवने ते आय ॥ सा० ॥ नय पामी तिहां नाठी लखमी, जातां वाट पमी तिहां विषमी ॥ १० ॥ सा० ॥ लूंट्यां वस्त्रानरण ते चोरे,

रांति पाछिली एकज पोहोरे ॥ सा० ॥ पहोती नाम कुशस्थल गाम, तस नरपति मांड्युं एक काम ॥ ११ ॥ सा० ॥ राणीने विघननिवारण माटे, पुरोहित गाम बाहिर इण वाटे ॥ सा० ॥ अग्नि करी चोवटे चरु रांधे, चोकी मूकी चिहुं दिश बांधे ॥ १२ ॥ सा० ॥ नख छेदित तंडुल करी मूक्या, मंत्र जाप करतां नवि चूक्या ॥ सा० ॥ इण अवसर देखी ते ज्वाला, इण मारग आवी सा बाला ॥ १३ ॥ सा० ॥ उतस्यो साथ जाणीने आवी, दीठी दिशापाले तव ठावी ॥ सा० ॥ शीवारुतने लगती देखी, जय पाम्या राक्षसिणी लेखी ॥ १४ ॥ सा० ॥ थंज्या पग ने पकी करवाल, कर कंप्या मानुं जीवित साल ॥ सा० ॥ पकीआ धरती तव ते नारी, वोले मत बीहो मन हारी ॥ १५ ॥ सा० ॥ हुं बुं मनुष्यणी एम कही आवे, पुरोहित पास नगनने जावे ॥ सा० ॥ देखी धैर्य धरी तस केश, पकडी कहे बीहो मत लेश ॥ १६ ॥ सा० ॥ दिशापाल तव उठी आया, बांधी नयरमां लेइ सधाया ॥ सा० ॥ नूपतिने जणाव्युं कहे त्यारे, करजो विटंबणा विविध प्रकारे ॥ १७ ॥ सा० ॥ एहनुं मांस एहने खवराव्युं, लेइ अशुचि मुखमां धराव्युं ॥ सा० ॥ करीय विटंबणा अतिहि निर्भ्रंछी, गाममांथी काढी ते अलछी ॥ १८ ॥ सा० ॥ पेसवा नवि पामी कोइ गामे, अटवीमां फिरती ठामठामे ॥ सा० ॥ पूर्व कर्मने उदये मारी, गजवरे पाप करी अति जारी ॥ १९ ॥ सा० ॥ धूमप्रजाए उपनी तेह, घोर पापनां फल ठे एह ॥ सा० ॥ सत्तर सागर तेहनुं आय, संजम पाले धरण मुनिराय ॥ २० ॥ सा० ॥ करी संलेषणा शुज परिणाम, पादपोप करे अणसण ताम ॥ सा० ॥ काल करी उपना अणगार, आरण देवलोकमां अवधार ॥ सा० ॥ २१ ॥ चंद्रकांति विमाने एह, एकवीश सागर आयु धरेह ॥ २२ ॥ सा० ॥ धरण लछी दंपतीनो जाख्यो, जव छठे खंडे चित्त राख्यो ॥ सा० ॥ चोवीशमी ढाले ए पूरो,कीधो छठो खंड सनूरो ॥ २३ ॥ ॥ सा० ॥ जाडवा वदि दशमे गुरुवारे, विसलनगर चोमासुं तिवारे ॥ ॥ सा० ॥ अढारसें एकताला वरषे, शांति जिनेश्वर साह्यथी हर्षे ॥ २४ ॥ सा० ॥ विजयसिंह सूरि शिष्य सवायो, सत्यविजय गुरु जगमां गवायो ॥ सा० ॥ श्रीगुरु कपूरविजय तस शीषो, खिमाविजय तस शिष्य जगीशो ॥ २५ ॥ सा० ॥ पंडित जिनविजय जयवंतो, विद्याविचक्षण लक्षणवंतो

॥ सा० ॥ उत्तमविजय सुशिष्य सोजागी, तत्त्वज्ञानमां जस मति लागी ॥ २६ ॥ सा० ॥ उत्तम समरादित्यनो रास, पद्मविजय कहे लीलविलास ॥ सा० ॥ सांजलतां होय मंगलमाला, पुण्यमहोदय सुख सुविशाला ॥ ॥ २७ ॥ सा० ॥ सर्व गाथा ॥ ३११ ॥

॥ इति श्री संविज्ञपक्षीय पंमितप्रवर श्रीमदुत्तमविजयगणिशिष्य-पंमित श्रीपद्मविजयगणिविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे धरणलक्ष्मी वधूवरयोः संगतयोः षष्ठो नरजवः समाप्तः ॥ षष्ठखंडे सर्व गाथा ॥ ॥ ३११ ॥ उक्त गाथा तथा काव्य ॥ १० ॥ अने सवैर्ड ॥ १ ॥



॥ अथ ॥

॥ सप्तमः खंडः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांतिकरण श्रीशांतिजी, समरुं सुखदातार; प्रणमुं शंखेश्वर प्रभु, अरुवडीआ आधार ॥१॥ सातमो खंम सोहामणो, समरादित्य संबंध; सेन विसेन दोय भ्रातृसुत, पितराइ परबंध ॥ २ ॥ जंबुद्वीप लख जोअणो, वारु भारहवास; तिहां चंपा नयरी तणो, उत्तम छे आवास ॥ ३ ॥ शेषफणा भोगज समो, पोढो छे प्राकार; हिमगिरि शिखर हरावता, भुवन तणो संभार ॥४॥ नंदनवन वने जीतीयुं, सरोवरे मान कासार; महाजन जिहां अमत्सरी, दक्ष घणो दातार ॥ ५ ॥ रूपवंत रलियामणी, सुंदर घणुं सुकुमाल; लज्जावंत महिला तिहां, विनयवंत सुविशाल ॥ ॥ ६ ॥ अमरसेन अवनीपति, साधित दिशिवधू सार; ईर्ष्याए आवी वरी, लक्ष्मी पण तस व्हार ॥ ७ ॥ जाया तस जयसुंदरी, सयल अंतेउर सिठ; अनुभवतो तेहशुं अवल, विषयभोग सुविसिठ ॥ ८ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ क्रीमा करी घरे आवीउं ॥ ए देशी ॥

॥ इणी अवसर देवलोकथी, चवीउं पाली आय रे ॥ धरणजीव तिहां उपनो, स्वप्न लहे सुखदाय रे ॥ १ ॥ इणी० ॥ दंम कनकमय दीपतो, रयण विभूषित तुंग रे ॥ देवडुष्य ध्वज लहकतो, गयण भूषण मानुं चंग रे ॥ २ ॥ इणी० ॥ वदने उदरमां पेसतो, विस्मयकारी विचित्त रे ॥ सूर्यउदये देखी करी, जागी निंद अतीत रे ॥ ३ ॥ इणी० ॥ हर्षे पति संभलावती, कहे तव नरपति एम रे ॥ सकल नरिंद्रकेतु समो, पुत्र थशे तुज नेम रे ॥ ४ ॥ इणी० ॥ सांभली तेह अंगीकरे, अनुक्रमे साधे त्रिवर्ग रे ॥ उचित समय सुत प्रसवीयो, सुखमां तेह निसर्ग रे ॥ ५ ॥ इणी० ॥ हरषमती दासी तदा, दीध वधाइ राय रे ॥ दान संतोषनुं नृप दीये, मास एक वही जाय रे ॥ ६ ॥ इणी० ॥ सेनकुमर नाम थापीयुं,

वर्ष एक थयुं जाम रे ॥ नरक थकी हवे नीकल्यो, जीव लबीनो ताम रे ॥ ७ ॥ इणी० ॥ नमीउं तेह संसारमां, अनंतर नवे नर थाय रे ॥ कांयक कष्ट करी तिहां, नरपति कुलमां आय रे ॥ ८ ॥ इणी० ॥ अमरसेन नरपति तणो, नाइ लघु हरिसेण रे ॥ हारप्रना तस नारया, तस कुखे गर्नेण रे ॥ ए ॥ इणी० ॥ जब जनम्यो तब थापीयुं, नाम विसेन, कुमार रे ॥ सेन कुमार ग्रहे कला, करतो विसेनशुं प्यार रे ॥ १० ॥ इणी० ॥ पण नहीं सेनशुं तेहने, एम करतां केइ काल रे ॥ एक दिन जय जयरव थयो, कुसुमवृष्टि सुविशाल रे ॥ ११ ॥ इणी० ॥ सुर सिद्ध विद्याधर थकी, व्यापी रह्युं आकाश रे ॥ राय पूछे निज पुरुषने, कहो ए किशो प्रकाश रे ॥ १२ ॥ इणी० ॥ खबर करी प्रतिहार तें, नाखे तास निदान रे ॥ इण नयरीमां पामीयां, साधवी केवलज्ञान रे ॥ १३ ॥ इणी० ॥ जाणें लोकालोकना, त्रण कालना नाव रे ॥ सुर विद्याधर बहु थूणे, सांनली नरपति ताव रे ॥ १४ ॥ इणी० ॥ हरखी चाल्यो वांदवा, आव्यो उपाश्रय द्वार रे ॥ तोरण थंन ने पूतली, ज्युं विद्युत् जातकार रे ॥ १५ ॥ इणी० ॥ किहांयक स्फाटिक विद्रुम किहां, किहांयक चामर श्वेत रे ॥ ध्वज शिर उपर फरकतो, कनक किंकीणी सम वेत रे ॥ १६ ॥ इणी० ॥ बहु साहुणीए परिवर्यां, तिम श्राविका समुदाय रे ॥ श्रीसम रूपे शोनतां, गुरुणी तिहां देखाय रे ॥ १७ ॥ इणी० ॥ नवसायर तरीयां जिके, गुणमणि रयणनंमार रे ॥ शशि सम वयण शोना मली, नाशित तम अंधकार रे ॥ १८ ॥ इणी० ॥ श्वेतांबरश्री साहूणी, स्तवता नूपति ताम रे ॥ कुसुम वरसी करे धूपने, करे पंचांग प्रणाम रे ॥ १ए ॥ इणी० ॥ बेठो धर्मश्रवण नणी, धर्मकथा कहे जाम रे ॥ आव्या दोय तिणे समे, सारथवाह सुत ताम रे ॥ २० ॥ इणी० ॥ बंधुदेव सागर नामे, लेइ निज निज नार रे ॥ परम गुरु प्रणमी करी, साहुणी प्रणमे सार रे ॥ २१ ॥ इणी० ॥ सातमे खंडे ढाल ए, पहेली पापनिवार रे ॥ पद्मविजय कहे सांजलो, सुणतां जय जयकार रे ॥ २२ ॥ इणी० ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सागर कहे नृप सांनलो, मत करजो मन खेद; अद्भुत एक दीठुं अमे, सांनलजो तस नेद ॥ १ ॥ सांनलतां विस्मय थशे, रही न शकुं

हुं राज्य;-विस्मय प्रेख्यो वीसमी, अर्थ न जाणुं आज ॥ २ ॥ पूबुं ए नगवती प्रत्ये, ठावो नृप कहे ठीक; असंनाव्य अद्भुत किशुं, ते नाखो तहकीक ॥ ३ ॥ सागर कहे मुऊ सहचरी, हाथे खोयो हार; अतीत काल कोइ उपरे, वीसरीउं इण वार ॥ ४ ॥ आज नोजन करी आवीयो, चित्रशाली चित्रकार; एक थयुं अचरिज इहां, नाखुं ते अधिकार ॥५॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ अरज अरज सुणोने रुमा राजीया होजी ॥ ए देशी ॥

॥ एहवे एहवे मोर एक चित्रमां होजी, लेवे उंचो रे श्वास ॥ क्षणमां क्षणमां कोट हलावतो होजी, कीधो पिछ विलास ॥ १ ॥ एह० ॥ पांख पांख खंखेरी उतस्यो होजी, राता वस्त्रमां हार ॥ मूकी मूकी गयो निज स्थानके होजी, हूउं चित्र प्रकार ॥ २ ॥ एह० ॥ देखी देखी विस्मय उपनो होजी, कहो ए शुं कहेवाय ॥ एहवे एहवे जय जयरव थयो होजी, कुसुमवृष्टि ते थाय ॥ ३ ॥ एह० ॥ सुरवर सुरवर विद्याधर मल्या होजी, सांनली लोकनी वाणी ॥ पाम्यां पाम्यां केवल साहुणी होजी, आव्यो हुं इण ठाण ॥ ४ ॥ एह० ॥ बोले बोले नरपति सांनलो होजी, साचुं अचरिज एह ॥ एहवुं एहवुं संनवीए नहीं होजी, पूछे नगवती नेह ॥ ५ ॥ एह० ॥ नाखे नाखे तव तेह साधवी होजी, एहमां अचरिज कांय॥ करमे करमे शुं नवि संनवे होजी, नियमा सफलां ते थाय ॥ ६ ॥ एह० ॥ जेहवां जेहवां शुनाशुन बांधीआं होजी, तेहवां उदये रे थाय ॥ अशुने अशुने जल अगनि होये होजी, न्याय ते थाय अन्याय ॥ ७ ॥ एह० ॥ चंद चंद तिमिर हेतु होय होजी, घरमांथी मरी जाय ॥ अर्थ अर्थ अनर्थ मित्र वेरीउं होजी, नन्नथी अगनि वरसाय ॥ ८ ॥ एह० ॥ शुनथी शुनथी विष अमृत होय होजी, डुर्जन सज्जन होय ॥ अपजश अपजश ते जश नीपजे होजी, न हणे युद्धमां कोय ॥ ९ ॥ एह० ॥ पामे पामे अचिंती संपदा होजी, सुणी बोले नरनाह ॥ कोहनां कोहनां कर्मनी परिणति होजी, बोले साहुणी राह ॥ १० ॥ एह० ॥ माहरां माहरां कर्मनी परिणति होजी, बोले ताम नूपाल ॥ किम ते किम ते शुं निमित्त कहो होजी, साहुणी नाखे रसाल ॥ ११ ॥ एह० ॥ जंबु जंबुद्दीपना नरतमां होजी, शंखवर्द्धन नाम ॥ नयर नयर शंखपाल

नूपति होजी, धन सार्थप उद्दाम ॥ १२ ॥ एह० ॥ धन्या धन्या तेहने नारजा होजी, दोय पुत्र बे तास ॥ धनपति धनपति धनावह नामथी होजी, पुत्री धनसिरी खास ॥ १३ ॥ एह० ॥ जाणो जाणो ते हुं राजीआ होजी, परणावी पुर मांहि ॥ ताते ताते तिहां सोमदेवने होजी, नरता उपरत त्यांहि ॥ १४ ॥ एह० ॥ जोग जोगनी वात लही नहीं होजी, उपनो मुऊ निर्वेद ॥ चंड चंडकांतानिध साहुणी होजी, पाउ धास्था गतखेद ॥ १५ ॥ एह० ॥ सखीए सखीए मुऊ जणव्युं जदा होजी, गइ हुं वंदन काम ॥ जिनघरे जिनघरे दीठां ते गुणी होजी, सुंदर पण दह्यो काम ॥ १६ ॥ एह० ॥ कला कला कुशल मानी नहीं होजी, श्रुतदेवी परे जेह ॥ धरम धरम कहेती श्राविका नणी होजी, विस्मय थयो मुऊ देह ॥ १७ ॥ एह० ॥ पेठी पेठी जिनघरमां तदा होजी, घंटा चाली में हाथ ॥ दीवो दीवो करी फूल वरसीआं होजी, पूजी पडिमा जिननाथ ॥ १८ ॥ एह० ॥ धूप धूप करी प्रज्ञु वंदीआ होजी, आवी गुरुणीने पास ॥ प्रणमी प्रणमी धर्मलान तिणे दीयो होजी, बेठी तास सकाश ॥ १९ ॥ एह० ॥ पूछे पूछे मुऊ तुमे किहां थकी होजी, में कह्युं इहांथी आय ॥ नाख्यो नाख्यो सखीए माहारो होजी, जनक जननी ठाय ॥ २० ॥ एह० ॥ करमे करमे परणी ततक्षणे होजी, नरता मरण ते पामी ॥ नियम नियम उपवास बहु करे होजी, मन वैराग्य प्रकाम ॥ २१ ॥ एह० ॥ देह देहनी गाले एणी परे होजी, सांनली तुम विरतंत ॥ नक्ते नक्ते आवी वंदवा होजी, मावित आण लहंत ॥ २२ ॥ एह० खंड खंड सातमे बीजी कही होजी, उल्लासे एह ढाल ॥ पंडित पंडित उत्तमविजयनो होजी, नाखे पद्म ए वाल ॥ २३ ॥ एह० ॥ सर्व गाथा ॥ ५७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ साधवी कहे सारुं कह्युं, आव्यां तुमे इहां आज; वली वैराग्य घणो वहो, करतां आतम काज ॥ १ ॥ ए संसार असार बे, ङुःखनाजन ङुःखदाय; धर्म कहे ते धर्मिणी, परिणम्यो तास पसाय ॥ २ ॥ विरति देशथी पडिवजी, केतोक वीतो काल; जननी जनक जमघर गयां, चिंतव्युं चित्त विचाल ॥ ३ ॥ साधुपणुं लेउं सखर, पूबुं न्रातने प्रेम; ते कहे घर मांहि तमे, नवि थाये किम नेम ॥ ४ ॥ जिनवर घर निपजा-

वीयुं, रहीने घर आवास; प्रतिमा जरावी परवरी, करुं निज ज्ञानप्रकाश ॥ ५ ॥ फुल वली चंदन गंध फल, इव्यनो व्यय ते देखी; जोजाइ मन जावे नहीं, कर कर करे अतिरेख ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ पीउजी पीउजी नाम जपुं दिन रातिऑं ॥ ए देशी ॥

॥ में मन चिंतव्युं जाइ चित्त जोउं खरी, शुं मुऊ एहशुं काम हवे रयणी परी ॥ पोहोर राते ते वासजुवन आगल रही, धनपति आव्यो वासजुवनजां गहगही ॥ १ ॥ जिम जाइ सांजले जोजाइने तिम कहे, धरमदेशना मिषथी जिम संशय लहे ॥ साडी राखजे आपणी शुं कहीये घणुं, सांजली चिंतवे तास पति कुशीलपणुं ॥ २ ॥ जगनी जूठ न जासे तिणे एहथी सह्युं, आवी जव ते नारी वदन अवलुं कह्युं ॥ पाय उंलासी दीवो समारी तंबोल धरे, नारी निवारी मत शय्या पर पग धरे ॥ ३ ॥ मन चिंते स्त्री हांसी मुऊ करता हशे, जव सूती तव जरतार उठ्यो धसमसे ॥ नारी कहे शुं कारण तव कहे इणी परे, कांय नहीं पण नीसर मुऊ घर बाहिरे ॥ ४ ॥ सा चिंते में डुष्कृत कांय कीधुं खरुं, चिंतवी उठी सज्जाथी चित्त आलोच करुं ॥ बहु चिंता अंते पति निद्रावश थयो, सा पण संजारे मुऊ दोष न कोइ जयो ॥ ५ ॥ शोकातुर थइ चिंतवे मुऊ जीववुं नहीं, जिणथी पति डुहवाये अथवा एम सही ॥ मरतां जरतानुं होय लघुताइपणुं, लोक करे विकल्प आडुं अवलुं घणुं ॥ ६ ॥ ए डुःख सहेवाये नहीं कहो शुं कीजीये, अहवा नणंद मुऊ माही काम ए दीजीये ॥ बुद्धि घणी जुगताजुगतुं मुऊ जाखशे, करशुं पठे ते काम नणंद जे आखशे ॥ ७ ॥ मन डुःख ने वली आंखे आंसुधारा वहे, राति मांहि क्षणमात्र न निद्रा ते लहे ॥ वासजुवन थकी आमण डुमणी नीकली, में पूछ्युं तस इणी परे किम रहे टलवली ॥ ८ ॥ रोते वदने कहे अपराध जाणुं नहीं, रुठो जरता कहे मुऊ नीकल तुं वहि ॥ में कह्युं धीरी था करुं काम हुं ताहरुं, एम करी जाइने कहुं सुण वचन ते माहरुं ॥ ए ॥ श्यो अपराध कस्यो तुऊ नारी ते कहो, ते कहे डुष्टशीलानुं नाम ते मत लहो ॥ एहथी संतति विगमे अपजश विस्तरे, मलिन करे कुलने वली जरता संहरे ॥ १० ॥ उजय लोक विगमे तिणे काम न एहनुं, में

कह्युं किम जाएयुं तव चरी कहे तेहनुं ॥ सांजल्युं तुम पासे देशना मिष कह्युं, तव में कह्युं तुऊ पंमितपणुं रुडुं लह्युं ॥ ११ ॥ अहो तुऊ जाहापणने मुऊशुं स्नेहज घणो, में कह्यो सामान्ये एहमां दोषज पणो ॥ पण नवि एहनो दोष देखाम्वा जाणजे, एटले तुं तुऊ नारीमां दोष म लावजे ॥ ॥ १२ ॥ शरमायो ने पश्चात्ताप करे अति, अहो मातुं कह्युं काम मनावी ते सती ॥ में एम धार्युं मानशे कृष्ण धवल सहु, एह जाइ हवे बीजानी पण जे वहू ॥ १३ ॥ इणी परे जाख्युं हाथ ठेकाणे राखजो, वीजुं सवे पूरव परे एहने जाखजो ॥ कपटे करम बंधाणुं मुऊने तिणे समे, अन्यदा दीक्षा में लही जिणे जव नवि जमे ॥ १४ ॥ जाइ जोजाइशुं व्रत पालुं हुं सदा, आयुक्षणे सुरलोके थया अमे अन्यदा ॥ आगलथी मुऊ जाइ चवी इहां आवीआ, शेठ पूर्णदत्त पुत्रपणे नाम ठावीआ ॥ १५ ॥ सागर ने बंधुदेव वधंता अनुक्रमे, हुं पण उपनी गजपुर नगरे तिण समे ॥ शंखशेठनी शुजकांता नारी उरे, पुत्रीपणे थइ नाम सर्वांगसुंदरी धरे ॥ १६ ॥ जोजाइउे पण देवलोकमांथी चवी, कोशलापुरमां नंदन शेठ घरे हवी ॥ देविलाकुखे नारीपणे बिहु अवतरी, श्रीमती कांतिमती अजिधा अनुक्रमे धरी ॥ १७ ॥ जैनधर्मी हुं श्रावक कुल उपना थकी, यौवन वय लही तिणे मुऊ देखे सहु ठकी ॥ बंधुदेव गजपुरमां एक दिन आवीयो, मुऊने देखी काम मांहि चित्त लावीयो ॥ १८ ॥ पूछ्युं मुऊ वृत्तांत वर्द्धन नरने जदा, सर्वांगसुंदरी ए शंखधूआ कहे तदा ॥ तास पिता कने मागी तव ते एम कहे, योग्य तुम ठो पण ए साधर्मिक लहे ॥ १९ ॥ श्रावक विण जोग न करुं सुतने दीकरी, में एम गुरुने पासे शुद्ध अगरू धरी ॥ तव ते कहे मुऊने पण साधर्मिक करो, तात कहे सुणो जिनवाणी हृदये धरो ॥ २० ॥ जावथी श्रावक थाउं तव ते सांजली, मुऊ लोजे गयो साधु समीपे ते वली ॥ धर्म सुणीने कपटे श्रावक ते थयो, क्रिया करे दानादि दीये एम काल गयो ॥ २१ ॥ एक दिन तातनी पासे आवी विनवे, धन्य थयो हुं मत जाणो कहे केतवे ॥ तुमे उपदेश दीधो हुं पण पामीउं, जैनधर्मने मिथ्यामत सवि वामीउं ॥ २२ ॥ मुऊ परलोकनो बांधव देव गुरु समो, तुम सम अवर न होय अहो तुऊने नमो ॥ विदित संसारस्वजाव हुं तिणे मुऊ खप

नहीं, कन्यानो तिणे निज देशे जाशुं सही ॥ २३ ॥ शासनरागे मुजने मत वीसारजो, उचित काम मुज लखजो दृढ धर्म धारजो ॥ पोतानो गणजो एम कही पाये पडे, शुद्ध स्वभावथी तात सत्य चित्तमां धरे ॥ ॥ २४ ॥ बहुमाने वली तात कहे धन्य छो तुमे, जिणे लाधो जैनधर्म घणुं शुं कहीये अमे ॥ सातमे खंडे ढाल ए त्रीजी मन धरो, पद्म कहे भविलोक के सहु जय जय करो ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ परमारथ तुमे पामीया, मत करजो परमाद; एम कही नीकलीयो इशे, नवि कीधो कांय नाद ॥ १ ॥ सज्जन मेलावो सर्वनो, करीने पूछे कामः परणावुं कहो तो पछे, तुम मन माने ताम ॥ २ ॥ सहु कहे श्रावक साचलो, सर्वांगसुंदरीसंग; योग्य लह्यो हवे जिम तुमे, मन माने सो उमंग ॥ ३ ॥ परणावे तव मुज पिता, काढ्यो केइक कालः निज घर आव्यो नारशुं, करे उछव ततकाल ॥ ४ ॥ वासर गयो वेला थइ, मंगल दीप मंडाण; कुसुमवृष्टि कीधी तिहां, वास आवास वखाण ॥ ५ ॥ धूप धरी तिहां धगधगी, लटकावी फूलमाल; आव्यो भर्ता इण समे, सुणो वात सम काल ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ जिनवचने वैरागीउ हो धन्ना ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसर उदये थयुं हो प्राणी, बांध्युं प्रथम जे कर्म ॥ भोगव्या विण छूटे नहीं हो प्राणी, कर्म न राखे शर्म रे हो सुणजो प्राणी, कर्म न कीजे वे ॥ १ ॥ क्षेत्रपाल फिरतो थको हो प्राणी, आव्यो तिणहीज देश ॥ कर्म्मपरिणाम अचिंत्य छे हो प्राणी, दीठां दंपती नव वेश रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ २ ॥ कौतुक जोउं ए इहां हो प्राणी, जिम नवि थाय संजोग ॥ रूप करी अन्य पुरुषनुं हो प्राणी, पाडवा तास विजोग रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ ३ ॥ गोखमां वदन करी कहे हो प्राणी, सर्वांगसुंदरी कांम ॥ बंधुदेवे ते निरखीउं हो प्राणी, आव्यो कषायने धाम रे हो ॥ ॥ सु० ॥ क० ॥ ४ ॥ अरति थइ मुज उपरे हो प्राणी, जाण्युं कुशील छे नारी ॥ कोइक बोलावी किम गयो हो प्राणी, इण परे करत विचार रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ ५ ॥ स्नेहबंधन त्रूटी गयुं हो प्राणी, हुं आवी तिहां ताम ॥

चेष्टा कीध सूवा तणी हो प्राणी, सखीउं गइ निज ठाम रे हो ॥ सु० ॥ ॥ क० ॥ ६ ॥ द्वार देइ शय्या तणे हो प्राणी, बेठी एकज देश ॥ पति उठ्यो सहसा तदा हो प्राणी, हुं पण उठी विशेष रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ ॥ ७ ॥ में अपराध न पूछीयो हो प्राणी, पति तव सूतो तेथी ॥ करतो विकल्प कोड्यो गमे हो प्राणी, निद्रा आवी एथी रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ ॥ ८ ॥ हुं पण महा शोके ग्रही हो प्राणी, धरतीए बेठी ताम ॥ राति गइ दुःखणी घणी हो प्राणी, जाणे त्रिभुवन स्वामी रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ ॥ ए ॥ सहीउं आवी जरता गयो हो प्राणी, पूछे सहीउं वात ॥ केम तुमे आमण डुमणां हो प्राणी, तव नवि बोल्युं जात रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १० ॥ वात कहेवा जेहवी नहीं हो प्राणी, शोकथी कंठ निरुद्ध ॥ शुद्धि बुद्धि पण नासी गइ हो प्राणी, फरी पूछे सखी शुद्ध रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ ११ ॥ व्यतिकर सर्व सुणावीउं हो प्राणी, तव चिंते सखी एम ॥ स्वामिनीमां दूषण नहीं हो प्राणी, पति पण निपुण छे नेम रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १२ ॥ कर्मदोष परजव तणो हो प्राणी, निश्चय कारण एह ॥ स्वजन पूछ्या विण पति गयो हो प्राणी, आव्यो चंपाए तेह रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १३ ॥ माता पिता पति उपरे हो प्राणी, कोप्यां माहरे रे राग ॥ व्यवहार टाल्यो तेहशुं हो प्राणी, मुऊ तपनो वैराग रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १४ ॥ ए संसार असारमां हो प्राणी, दुःख तो सोहिलुं होय ॥ चारित्रधर्म ते दोहिलो हो प्राणी, चंचल जीवित जोय रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १५ ॥ गृह आश्रमथी हवे सर्युं हो प्राणी, जेहथी बहु जंजाल ॥ चारित्र लेवुं माहरे हो प्राणी, जिणथी सुख असराल रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १६ ॥ इण अवसर तिहां आवीयां हो प्राणी, गुरुणी जसवती नाम ॥ माता पिता आणा लही हो प्राणी, दीक्षा ग्रही अजिराम रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १७ ॥ बंधुदेव परण्यो हवे हो प्राणी, श्रीमती नामे नार ॥ कोशलापुरे नंद शेठनी हो प्राणी, धूया गुणजंडार रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १८ ॥ सागर परण्यो तेहनी हो प्राणी, जगिनी कांतिमती नाम ॥ ते वधू बिहु लेइ आवीआ हो प्राणी, इणहिज चंपा गाम रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १९ ॥ गुरुणी साथे विचरतां हो प्राणी, आव्या तुम पुरे राय ॥ फिरतां गोचरी गाममां हो प्राणी, बंधु-

देव घर आय रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ २० ॥ मुनिने वयर न राखवुं हो प्राणी, दीगं ते बिहु नार ॥ पूर्व नव अभ्यासथी हो प्राणी, प्रीति थइ ते अपार रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ २१ ॥ यतः ॥ "जं अप्पसेइ जीवो, गुणं च दोसं च इब जम्मंमी ॥ तं पावइ परलोए, तेणय अप्पास जोएणं ॥ १ ॥ अभ्यासेन क्रियाः सर्वा, अभ्यासात्सकलाः कलाः ॥ अभ्यासाद्ध्यानमौनादि, किमभ्यासस्य डुष्करं ॥ २ ॥" पमिलान्यां अन्न पाणीए हो प्राणी, आव्या उपाश्रये तेह ॥ धर्म्म सुणाव्यो दोयने हो प्राणी, परिणम्यो विकसी देह रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ २२ ॥ श्राविका थइ हवे विनवे हो प्राणी, कीजे अम उपगार ॥ धर्म कहो घर आवीने हो प्राणी, बूजे अम परिवार रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ २३ ॥ आणा लही गुरुणी तणी हो प्राणी, गमनागमन करेय ॥ सातमे खंडे चोथी कही हो प्राणी, पद्मे ढाल ते अेय रे हो ॥ सु० ॥ क० ॥ २४ ॥ ११७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर आव्युं उदय, कर्म जे बीजुं कीध; राग घणो बिहु नारीनो, शासन नक्ति सिद्ध ॥ १ ॥ व्यंतर आश्रित नुवननो, चिंते इणी परे चित्त; साध्वी उपर साचलो, नक्ति नाव नली रीत ॥ २ ॥ जोउं राग जोपे करी, इण अवसर एक दिन्न; गइ हुं एहना गेहमां, वारु वासनवन्न ॥ ३ ॥ हार परोवे हर्षशुं, कांतिमती निज काम; उनी थइ आदर दीये, आसन देवे आम ॥ ४ ॥ साहुणीउं बेठी सखर, मुऊ पूबे महाराय; दीधी धर्मनी देशना, उठी अवसर ठाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ नंद सलुणा नंदना रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ जावा मांड्युं जेटले रे लो, कांतिमती कहे तेटले रे लो ॥ आज तुमारे पारणुं रे लो, अशन लीउं देहधारणुं रे लो ॥ १ ॥ आणी करी साहुणी नणी रे लो, में तिहां आहार लेवा तणी रे लो ॥ कांतिमतीशुं गयां हवे रे लो, आहारना घरमां एहवे रे लो ॥ २ ॥ चित्र मोरमां अवतस्यो रे लो, व्यंतर मोर ते उतस्यो रे लो ॥ हार गली यानके गयो रे लो, मुऊने विसंज्रम बहु थयो रे लो ॥ ३ ॥ पूबशुं गुरुणीने जइ रे लो, एम चिंतवी आलय गइ रे लो ॥ वोहोरावीने कांतिमती रे लो, वासनुवनमां

आवती रे लो॥ ४ ॥ हार जोयो दीठो नहीं रे लो, मन चिंते ए शुं सही रे लो॥ कौतुक मोहोटुं उपनुं रे लो, कहो जाइ ए शुं निपनुं रे लो॥ ५॥ पूछे तव परिवारने रे लो, दीठो कोइ इहां हारने रे लो ॥ परिजन कहे जाणुं नहीं रे लो, पण कोइ आव्युं नहीं अहीं रे लो ॥ ६ ॥ इहां आर्या आव्यां हतां रे लो, तुमे तिहां जाउ जोयतां रे लो ॥ कांतिमती कहे शुं कहो रे लो, एहुने तृण मणि सम लहो रे लो ॥ ७ ॥ असंबंध कहो तेहने रे लो, कनक पत्थर सम जेहने रे लो ॥ वात चाली पुरमां घणी रे लो, कह्युं में आवी गुरुणी जणी रे लो ॥ ८ ॥ गुरुणी कहे मुजने इशुं रे लो, कर्मे निपजे सहु किशुं रे लो ॥ तप चारित्र अधिकां करो रे लो, मत इण घर पगलुं धरो रे लो ॥ ए ॥ प्रवचनलाघव जाणीये रे लो, ते तो प्रयत्नथी नाणीये रे लो ॥ शरदचंद शासन तणुं रे लो, मलिनपणुं थाये घणुं रे लो ॥ १० ॥ अधर्म लहे धरमी नवा रे लो, सज्ज होये डुर्गति जवा रे लो ॥ लंघे जिनआणा वली रे लो, संसारहेतु सहुने जली रे लो ॥ ॥ ११ ॥ गुण ढांकी अगुणी थइ रे लो, धर्मनी वात तो वही गइ रे लो ॥ बोधी बोली संसारमां रे लो, रझले ज्युं पारावारमां रे लो ॥ १२ ॥ सांजली संवेग जावना रे लो, उपनी आतमपावना रे लो ॥ तप करे सुविशेषे हवे रे लो, तस घर वरजे विण जवे रे लो ॥ १३ ॥ परिजन मन शंका घणी रे लो, श्राविकाने नहीं एक कणी रे लो ॥ श्राविका चिंतवे इणी परे रे लो, गुरुणी ए वात जाणी खरे रे लो ॥ १४ ॥ संकट जाणी न आवीयां रे लो, धर्मे आपण जावीआं रे लो ॥ दोष अनेक परघर जतां रे लो, इह लोकनां निस्पृह थतां रे लो ॥ १५ ॥ आव्यां नहीं ते कारणे रे लो, अमे जशुं गुरुणी बारणे रे लो ॥ केइक काल एम वही गयो रे लो, एक दिन चित्त निरमल थयो रे लो ॥ १६ ॥ कर्मराशि पातली पमी रे लो, कुशल ध्यान मांहि चढी रे लो ॥ जीववीरज उल्लस्युं जदा रे लो, अपूर्व करण थयुं तदा रे लो ॥ १७ ॥ क्षपकश्रेणि मांहे लही रे लो, केवलज्ञान छानुं नहीं रे लो ॥ कर्म त्रूटुं जब माहरुं रे लो, व्यंतर चित्त थयुं पाधरुं रे लो ॥ १८ ॥ पश्चात्तापे हारने रे लो, मूक्यो कर्म निवारणे रे लो ॥ कर्मविपाक मुज दाखीउं रे लो, सांजली सहु जन हरखीउं रे लो ॥ १ए ॥ विस्मित थइ कहे एहवुं रे लो, अहो एटलाथी

दुःख केहवुं रे लो ॥ राजादिक कहे स्वामिनी रे लो, बहु दुःखनी खमी जामिनी रे लो ॥ २० ॥ चिहुं गतिमां भमतां थकां रे लो, दुःख ते कहो किम कही शकां रे लो ॥ नरक तिरी दुःख तो रह्यां रे लो, मनुष्यनां पण किम जाये सह्यां रे लो ॥ २१ ॥ गर्भने जनम मरण जरा रे लो, प्रियविरहादिक दुहकरा रे लो ॥ मैथुनसुख माने जिके रे लो, खरज खनन सम छे तिके रे लो ॥ २२ ॥ मुख मीठा विरसा पछे रे लो, धर्म थकी सहु अघ गछे रे लो ॥ बूझी सभा तव भूपति रे लो, बंधुदेव कहे शुभमती रे लो ॥ २३ ॥ धरम अमे अंगीकरुं रे लो, तुम आणा अमे शिर धरुं रे लो ॥ जिम सुख देवाणुप्रिया रे लो, विलंब न कीजे ए क्रिया रे लो ॥ २४ ॥ अठाइ महोत्सव करे रे लो, दान देइने उद्धरे रे लो ॥ हरिसेनने राज्ये ठवी रे लो, दीक्षा लीये ज्युं सुरगवी रे लो ॥ २५ ॥ पुरुषचंद्रसूरिने कने रे लो, साथे प्रधान ने परिजने रे लो ॥ पांचमी ढाल पञ्चे कही रे लो, सातमे खंडे ए सही रे लो॥२६॥ सर्व गाथा ॥१५०॥

॥ दोहा ॥

॥ खेद धरी छल खोलतो, सेन तणां विसेन; छिद्र न लाधुं छल थकी, तव कह्युं मौनज तेण ॥ १ ॥ दिन सूरज आथमे, फूल्या अकाले फार; भवन उद्यानमां भूपना, वनपालक तिणी वार ॥ २ ॥ आवी प्रधानने ठलगे, तिमज दीठा तिणे ताम; पाछा मूल प्रकृते थया, जाणी चिंते जाम ॥ ३ ॥ अंबड अष्टांग निमित्तिउं, सिद्धपुत्र सुविचार; एकांते आदर करी, पूछे प्रधान प्रकार ॥ ४ ॥ कुसुम विचार भावी कहो, तव बोल्यो ततकाल; कोप न करशो को परे, शास्त्रवचन संभाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ चउ सद्दहणा तिलिंग छे ॥ ए देशी ॥

॥ कोप किश्यो दैवपरिणति, भाखे एम प्रधानो जी ॥ कहो जेहवुं होय तेहवुं, तव बोल्यो ते विज्ञान जी ॥ १ ॥ त्रु० ॥ विज्ञानथी कहे कुसुम उग्यां, अकाले फल तास ए ॥ राज्य उलट पलट थाशे, सांभलो सुविलास ए ॥ तुरत सहज स्वभाव हुआं, तिणे थोडो काल ए ॥ क्षीणवेला वल थकी वली, प्रभूत काल निहाल ए ॥ २ ॥ कहे परधान करवुं किशुं, भाखो तास उपाय जी ॥ दान प्रमुख शांतिकर्मनी, विघन विदारण थाय

जी ॥ ३ ॥ त्रु० ॥ थाय इणी परे निमित्तिउं कहे, देवगुरु पूजा करो ॥ जाव-जीव कांय पाप बांधो, गुण अधिक अंगे धरो ॥ पडिहार नृपनो इणे अवसरे, आवी कहे महाराय ए ॥ बोलावे तुमे शीघ्र आवो, तव प्रधान कहाय ए ॥ ४ ॥ कह्यो नृपने जइ इणी परे, आव्यो आण प्रमाण जी ॥ पूछे ताम निमित्तिउं, शे कारण नृप आण जी ॥ ५ ॥ त्रु० ॥ नैमित्तिउं कहे राज-पुरथी, आव्यो नृपनर एक ए ॥ कल्याणकारी तिणे तुम्हने, तेडाव्या छे छेक ए ॥ संक्षेपथी हुं एह जाणुं, तव कहे परधान ए ॥ कल्याणकारी कह्यो शुं छे, बोले तव वरज्ञान ए ॥ ६ ॥ उच्चरो कांयक मुख थकी, तव ते इ-णी परे नासे जी ॥ जयइ जयलक्ष्मी निलय, सुणी निमित्तिउं विमासे जी ॥ ७ ॥ त्रु० ॥ विमासी कहे नृपकुमरने, कन्या देवा काज ए ॥ आव्यो तिणे आणंदहेतु, वली सुणो एक आज ए ॥ जेह परणशे एह कुमरी, तेह थाशे राय ए ॥ एह तुमचा राज्य केरो, वली अन्यनो थाय ए ॥ ८ ॥ निमित्तिउं विसर्जीउं, पूजी हर्ष लहीने जी ॥ शांतिकर्म आणा करी, गयो नृप पासे वहीने जी ॥ ९ ॥ त्रु० ॥ राय उठी आसन आप्युं, दीठो नयणे दूत ए ॥ नृप कहे रायपुर नृपनर ए, सुणो तस आकूत ए ॥ शंख नरपति एम कहावे, सुता मुज शांतिमती ॥ आपी तुम्ह सुत गमे तेहने, वाहाली जीवितथी अति ॥ १० ॥ कहे मंत्रि अनुकूल ए, कीजे तास वचन्न जी ॥ राय कहे मानो सुखे, सेन कुमारने दिन्न जी ॥ ११ ॥ त्रु० ॥ सामंत नयरी जनने जणावे, मंत्रि वर्धापन करे ॥ वाजे मंगल तूर नाचे, अंतेउरी आणंद धरे ॥ आणंद सहुने उपनो पण, दुह-वाणो विसेण ए ॥ सुणी न शकुं एह व्यतिकर, देखी शकीये केण ए ॥ १२ ॥ केइक दिन पछी मोकले, परणवा सेन कुमारो जी ॥ बहु आ-डंबरे परिवर्यो, मंत्रि प्रमुख परिवारो जी ॥ १३ ॥ त्रु० ॥ परिवार सेती गयो तिहारे, सामइयुं ते नृप करे ॥ छोडाव्या सहु बंदिजनने, दान देवे शुन्न परे ॥ राजमारग शुद्ध कीधो, पात्र नाचे पगपगे ॥ इत्यादिक परवेश महोत्सव, आडंबरथी झगमगे ॥ १४ ॥ उतरे नृपदत्त भुवनमां, लगन दिवस वरतावे जी ॥ अनुक्रमे गजशिर बेसीने, विवाहमांडवे आवे जी ॥ १५ ॥ त्रु० ॥ बहु परे शणगार करीने, पहेरी वस्त्र अलं-कार ए ॥ रूप अद्भुत देखी चिंते, ताम सेन कुमार ए ॥ जव अनादि

अभ्यास दोषे, जाग्यो प्रेम अंकूर ए ॥ अहो एहवा भाव जगमां, उपजे भरपूर ए ॥ १६ ॥ पाणिग्रहण थयुं तिहां, फेरा फरतां ताम जी ॥ दान दीये बहु नरपति, सुख भोगवे शुभ धामो जी ॥ १७ ॥ त्रु० ॥ बोलावीआ केइ दिवस रहीने, आव्या निज पुरी ऊमही ॥ नरपति अंतेउर नगरजन सहु, आव्यां सनमुख गहगही ॥ पेसारो महोत्सव करीने, लाव्या निज आवास ए ॥ तव विसेन कुमर डुभाणो, पूरव वैर अभ्यास ए ॥ १८ ॥ काल गयो वली केटलो, आव्यो मास वसंतो जी ॥ कामिनीजन मदनाकुली, मलय अनिल वायंतो जी ॥ १९ ॥ त्रु० ॥ कोकिलरवे करी पथिक त्रसव्या, केसुडां फूली रह्यां ॥ अंबमंजरी तणे परिमल, भ्रमर अति आणंद लह्या ॥ राढा मली तिहां अति अनोपम, ताम सेन कुमार ए ॥ वस्त्र उज्ज्वल अने आभूषण, साथे सहु परिवार ए ॥ २० ॥ अमरनंदन उद्यानमां, कनककटक धर्यां हाथो जी ॥ बाजुबंध ने कुंडलं, केडे कटिसूत्र ते साथो जी ॥ २१ ॥ त्रु० ॥ तिणे साथे माथे मुकुट पहेर्यो, बेठो गजवर उपरे ॥ वाजते वाजे वंदिजनशुं, परिवर्यो जब नीसरे ॥ खंड सातमे पद्मविजये, कही छठी ढाल ए ॥ समरादित्यना रास मांहि, सुणतां मंगलमाल ए ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ १७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ऐरावण परे इंद्र जिम, सुरपरिवृत तिम सेन; शांतिमती पण सोहती, भूषण बहु भरणेण ॥ १ ॥ रसणा मणि नेउरवर, हार कुंडल सोहंत; चंद्रमुखी चतुरा घणुं, मानिनी जन मोहंत ॥ २ ॥ जडित रतन जंपानमां, बेठी बाला तेह; डुहवाणो देखी इशुं, जडो विसेनो जेह ॥ ॥३॥ पूरव कर्मविपाकशुं, अवलुं सूझे आम; मारुं एहने मूलथी, ठावो फेडुं ठाम ॥ ४ ॥ अमरनंदन उद्यानमां, आव्यो कुमर आराम; वावि सरोवर वृक्षने, देखी हर्ष उद्दाम ॥५॥ उतरीउं अवनी तले, क्रीडा विविध प्रकार; करतां दिन सवि नीकल्यो, आव्या निज आगार ॥ ६ ॥ एम नित्य रमवा आवतो, सेन कुमर सुहमन्न; मारा पूठे मूकतो, विसेन कुमर विखिन्न ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ लोहारणी जायो दीकरो ॥ लोहारी हे ॥

॥ तेहनुं कुलणीउं दीउं नाम के ॥ लाल सुरंगी हे ॥ ए देशी ॥

॥ एम करतां बहु दिन गया ॥ सुणो प्राणी हे ॥ एक दिन थया म-

ध्याह ॥ लाल गुणखाणी हे ॥ परिजन सहु विरक्षा थया ॥ सु० ॥ रह्यो निज जवनने थान ॥ ला० ॥ १ ॥ निज निज कामे चर गया ॥ सु० ॥ हवे धरी तापसवेश ॥ ला० ॥ आव्या विसेण कुमारना ॥ सु० ॥ कपट करी कायक्लेश ॥ ला० ॥ २ ॥ नलिका प्रयोगे खम्ग धरी ॥ सु० ॥ देखे सेन कुमार ॥ ला० ॥ हुकम कर्यो आववा तणो ॥ सु० ॥ आव्या जाम तिवार ॥ ला० ॥ ३ ॥ शे कारण तुमे आवीआ ॥ सु० ॥ एम पूछे सेन कुमार ॥ ला० ॥ ते कहे गुरु आणा थकी ॥ सु० ॥ आवो एकांते गार ॥ ॥ ला० ॥ ४ ॥ कुमर विचारे चित्तमां ॥ सु० ॥ तपस्वी गुरु वचकार ॥ ॥ ला० ॥ थोम्गो ए दोष एहमां नहीं ॥ सु० ॥ शुद्ध हृदय एम धारी ॥ ॥ ला० ॥ ५ ॥ गया एकांते जेटले ॥ सु० ॥ बूरी कूंटावी लीध ॥ ला० ॥ काढी खम्ग खंध देशमां ॥ सु० ॥ गाढ प्रहार ते कीध ॥ ला० ॥ ६ ॥ कोप्यो कुमर चिंते शुं थयुं ॥ सु० ॥ वलीआ म्गावे पास ॥ ला० ॥ अचलित वीर्य कुमर तणुं ॥ सु० ॥ पम्गीया तेहने पास ॥ ला० ॥ ७ ॥ घातक क्षोजाया घणुं ॥ सु० ॥ झील्या एके चार ॥ ला० ॥ खड्ग कुंटावीने लीआं ॥ सु० ॥ देखी एह प्रकार ॥ ला० ॥ ८ ॥ शोर कर्यो वनपालिका ॥ ॥ सु० ॥ तव आव्या चोकीआत ॥ ला० ॥ खड्गथी मारवा मांम्गीआ ॥ ॥ सु० ॥ तव कुमर निषेध करात ॥ ला० ॥ ए ॥ क्षोज लह्या नबला थया ॥ सु० ॥ जीवितनी नहीं आश ॥ ला० ॥ मारे मुआने शुं होइ ॥ सु० ॥ आशा अफल थइ जास ॥ ला० ॥ १० ॥ राय सुणी तिहां आवीआ ॥ ॥ सु० ॥ बंधाव्या ते चोर ॥ ला० ॥ नृप कहे ए शुं थयुं ॥ सु० ॥ कुमर कहे तिणे गोर ॥ ला० ॥ ११ ॥ कांय अमे जाणुं नहीं ॥ सु० ॥ घातकने कहे ताम ॥ ला० ॥ शुं ए कर्युं कोणे मोकल्या ॥ सु० ॥ निमित्त विना नहीं काम ॥ ला० ॥ १२ ॥ नवि बोल्या ते तव फरी ॥ सु० ॥ पूछे एम त्रण वार ॥ ला० ॥ तोपण जब नवि बोलीआ ॥ सु० ॥ तव तस दीधो मार ॥ ला० ॥ १३ ॥ नविश्च खमाणा कोरमा ॥ सु० ॥ जीवितनी वली आश ॥ ला० ॥ नृप कोप न खमी शक्या ॥ सु० ॥ वात कइ सवि तास ॥ ॥ ला० ॥ १४ ॥ कुमर विसेने मोकल्या ॥ सु० ॥ कीधुं एह अकाज ॥ ॥ ला० ॥ कोप्यो विसेन कुमर जणी ॥ सु० ॥ सेन कहे सुणो राज ॥

॥ ला० ॥ १५ ॥ कुमर विसेन ए नवि करे ॥ सु० ॥ स्वजन तणो धि-क्कार ॥ ला० ॥ तातनो सुत जश अरथीउं ॥ सु० ॥ न करे विरुद्ध कु-मार ॥ ला० ॥ १६ ॥ जीवित इछक एम कहे ॥ सु० ॥ तिणे कीजे सु-पसाय ॥ ला० ॥ घातक मूको तातजी ॥ सु० ॥ ताम गवेषे राय ॥ ला० ॥ ॥ १७ ॥ कुमर विसेनना निश्चये ॥ सु० ॥ कोप्यो राय अपार ॥ ला० ॥ काढी मूको मुज राज्यथी ॥ सु० ॥ कुलदूषक ए कुमार ॥ ला० ॥ १८ ॥ काढो ए घातक जीवथी ॥ सु० ॥ तव पभीउं सेन पाय ॥ ला० ॥ जाखे जो ए इम करो ॥ सु० ॥ तो मुज दुःख अति थाय ॥ ला० ॥ १९ ॥ थाशे अवस्था मुज तणी ॥ सु० ॥ जिणे तुम उपजे शोक ॥ ला० ॥ तेह सुणी नृप चिंतवे ॥ सु० ॥ अहो अंतर जुउं लोक ॥ ला० ॥ २० ॥ नृप कहे तुजने जे गमे ॥ सु० ॥ पण नहीं जुगती वात ॥ ला० ॥ कुमर कहे अनुग्रह कस्यो ॥ सु० ॥ करतां ए अवदात ॥ ला० ॥ २१ ॥ मूक्या घा-तक जीवता ॥ सु० ॥ कुमर राख्यो जिणे पास ॥ ला० ॥ व्रणकर्मनी आणा करी ॥ सु० ॥ नूप गयो निज वास ॥ ला० ॥ २२ ॥ लोकवाद एहवो थयो ॥ सु० ॥ अहो हीणुं कस्युं काम ॥ ला० ॥ एम अपजश विसेननो ॥ ॥ सु० ॥ सेन सुणी दुःखधाम ॥ ला० ॥ २३ ॥ विण अपराधे अहो जुउं ॥ सु० ॥ अपजशजाजन थाय ॥ ला० ॥ निंदित दुर्जन आचरे ॥ सु० ॥ ते एहथी न कराय ॥ ला० ॥ २४ ॥ लोक निरंकुश न विचारे ॥ सु० ॥ जुक्ताजुगतुं जेह ॥ ला० ॥ अथवा पूरव कर्मथी ॥ सु० ॥ निपजे सघलुं एह ॥ ला० ॥ २५ ॥ दुहवाणो सेन एणी परे ॥ सु० ॥ हवे रुजाणो प्रहार ॥ ला० ॥ शुन्न दिवसे न्हायो वली ॥ सु० ॥ दान दीये अपार ॥ ला० ॥ २६ ॥ मूक्या वंदिलोकने ॥ सु० ॥ पूज्या नयरीना देव ॥ ला० ॥ मंगल तूर वजावीआं ॥ सु० ॥ वधामणुं करे हेव ॥ ला० ॥ २७ ॥ सातमे खंमे सातमी ॥ सु० ॥ पद्मविजय कही ढाल ॥ ला० ॥ श्री समरादित्य-रासमां ॥ सु० ॥ धर्मथी मंगलमाल ॥ ला० ॥ २८ ॥ सर्व गाथा ॥ २१२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नरपति दर्शन नवि लहे, कुमर विसेन किवार; नवि मन चिंते नि-पन्युं, इछित काम ए वार ॥ १ ॥ उचित करे नहीं एक पण, परिजन परिचय त्याग; उछवमां नवि आवीउं, किम हंसामां काग ॥ २ ॥ सेन

कुमर ते सांजली, चित्तमां करे विचार; अबतुं आल दीये जना, न सहाये निरधार ॥ ३ ॥ तिहां जइने कही तातने, लावुं चरण लगाय; जगतीपति जइ विनव्यो, कहे मुऊ करो पसाय ॥ ४ ॥ कुमर विना आणंद किश्यो, नृप कहे सांजल न्याय; कुलकलंकनी वात किम, करतां जश कहेवाय ॥ ५ ॥ सेन कहे साचो नहीं, विकल्प तणो विचार; आचरे नहीं अकार्यने, आण करो ए वार ॥ ६ ॥ जोलो तुं जोलाय ठे, देखे सघलुं दूध; पण ए कुटिल पराक्रमी, लागे मुऊ मन लूध ॥ ७ ॥ कहे कुमर जाखो किश्युं, गुणथी अति गंजीर; वालसजाव बाहिर कस्यो, पण धरे अपजश पीर ॥ ८ ॥ राय कहे तुऊ मन रुचे, तिम कर सुखे तेडावी; तव स्वयमेव तिहां गयो, आखे इणी परे आवी ॥ ए ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ माला किहां ठे रे ॥ ए देशी ॥

॥ आमण डुमण ने वली डुर्वल ॥ वाल्हा मारा ॥ आजूषण नहीं अंग रे ॥ वदनकमल कमलाणुं जेहनुं, देखे सेन विरंग रे ॥ १ ॥ उत्तम एहवा रे ॥ अपराधीशुं नेह, करे सुख देवा रे ॥ ए आंकणी ॥ त्रूटी जुनी खाटे सूतो ॥ वा० ॥ देखी विसेनने चिंते रे ॥ अठता अवगुण जन जब जाखे, डुःख नावे किणी रीते रे ॥ २ ॥ उ० ॥ यतः ॥ "संतगुणविप्पणासो, असंतदोसुजवेयजं डुःखं ॥ तं सोसेइ समुद्दं; किं पुणहियियं मणुस्साणं ॥ १ ॥" रे जाइ उठो नृप पासे ॥ वा० ॥ वालचेष्टा नवि कीजे रे ॥ पापचिंता न करो घट मांहि, चित्त उत्साह धरी जे रे ॥ ३ ॥ उ० ॥ इन्ना विण अलंकार करावे ॥ वा० ॥ चंदन चरचे अंगे रे ॥ क्षौमजुगल पहीराव्युं सेनने, दीठं तंबोल उमंगे रे ॥ ४ ॥ उ० ॥ लावी नृपने पाय लगाड्यो ॥ वा० ॥ हवे उंब्रव वर्त्ताव्यो रे ॥ अनुक्रमे केइक काल गयाथी, सेन विश्वासे जाव्यो रे ॥ ५ ॥ उ० ॥ एक दिन कौमुदी महोत्सव करवा ॥ वा० ॥ नृप चाल्यो उद्याने रे ॥ नगरलोक क्रीडामां मंड्या, जुठ अचरिज इण थाने रे ॥ ६ ॥ ॥ उ० ॥ मत्त मतंगज बूटो थंजथी ॥ वा० ॥ आलानथंज उखेडी रे ॥ पादप जांजतो लोकने सन्मुख, चाल्यो मीठ ठंडेडी रे ॥ ७ ॥ उ० ॥ हाटश्रेणी जांजे थयो कलकल ॥ वा० ॥ लोक ते चिहुं दिश नाठा रे ॥ राय जाणी कहे पकडो एहने, केम बलथी सहु घाठा रे ॥ ८ ॥ उ० ॥ आ-

णा लही तव सेन कुमारह ॥ वा० ॥ तेहने सन्मुख धायो रे ॥ सिंहकिशोर परे गज देखी, मद सवि दूर पलायो रे ॥ ए ॥ उ० ॥ करी असवारी अंकुश ग्रहीने ॥ वा० ॥ कुंजस्थले ते दीधी रे ॥ गुलगुल शब्द कस्यो गजराजे, जश कीर्त्ति बहु लीधी रे ॥ १० ॥ उ० ॥ दुजाणो ए जश सांजलीने ॥ वा० ॥ चिंते विसेन कुमार रे ॥ ए दुःख तो में खम्युं नवि जाये, करीये किश्यो प्रकार रे ॥ ११ ॥ उ० ॥ जे थानार ते थाज्यो पण हुं ॥ वा० ॥ मारुं माहारे हाथे रे ॥ एक दिन सेन कुमार उद्याने, रह्या शांतिमती साथे रे ॥ १२ ॥ उ० ॥ संध्यासमये केइ नर साथे ॥ वा० ॥ सेनशक्ति न विचारी रे ॥ क्रोधवशे निज बल अणतोली, चाल्यो मारवुं धारी रे ॥ १३ ॥ उ० ॥ चंदनलता घर मांहि पेठो ॥ वा० ॥ दीठो कुमर एकाकी रे ॥ शांतिमती दूजी देखीने, काढ्युं खड्ग ते ताकी रे ॥ १४ ॥ उ० ॥ शांतिमती देखी कहे पीउने ॥ वा० ॥ तव संभ्रांत ते पामी रे ॥ घात कस्यो ते वंचावी लीधो, कलबल ठल नहीं खामी रे ॥ १५ ॥ उ० ॥ ए शुं एम शून्य हृदये करीने ॥ वा० ॥ खड्ग ते अपहरी लीधुं रे ॥ काढी बूरी वली मारण कामे, काम अकारज कीधुं रे ॥ १६ ॥ उ० ॥ कर मरकीने तेह छुंटावी ॥ वा० ॥ लीधी सेन कुमारे रे ॥ तेहनी पीडाये पड्यो हेठो, उठावे सेन त्यारे रे ॥ १७ ॥ उ० ॥ हाथ झाली सज्जाए बेसारी ॥ वा० ॥ पूछे संभ्रमवातो रे ॥ कंठ रुंधाणो उत्तर न दीधो, उठ्यो चित्तथी हारी रे ॥ १८ ॥ उ० ॥ नीकलीयो हवे तिहांथी त्यारे ॥ वा० ॥ शांतिमती प्रति पूछे रे ॥ शी ए वात कहे तव मुजने, खबर नहीं ए शुं छे रे ॥ १ए ॥ उ० ॥ पण सामान्ये एहवुं जाणुं ॥ वा० ॥ राज्यअरथे कोइ प्रेस्यो रे ॥ इणे थानक रहेवुं मुज न घटे, जिणे नाइ दुःखथी घेस्यो रे ॥ २० ॥ उ० ॥ जो कदि नृप जाणे कोइ लिंगे ॥ वा० ॥ तो घरमांथी काढे रे ॥ अंबा शोक धरे कुललाघव, कुपुरुष कलंक ए चाढे रे ॥ २१ ॥ उ० ॥ कुलनिंदा राखे ते सुपुरुष ॥ वा० ॥ एम सुणी बोले नारी रे ॥ तुम्हने केम नृप जावा देशे, कुंमर कहे सुण प्यारी रे ॥ २२ ॥ उ० ॥ गुरुने नाख्यां विण जावुं छे ॥ वा० ॥ तेहमां गुण बहु जाणी रे ॥ शांतिमती कहे हे स्वामी जी, प्रमाण तुमची वाणी रे ॥ २३ ॥ उ० ॥ सेन कुमार कहे चालो हवे ॥ वा० ॥ रखे कुमार ते नासे रे ॥ लह्या परिसह नांहि खमाये,

तिणे नवि रहे ए वासे रे ॥ २४ ॥ उ० ॥ सातमे खंके आठमी ढाले ॥ वा० ॥ सज्जनवात ए जोजो रे॥ पद्मविजय कहे डुर्जन सरिखा, नविका कोइ मत होजो रे ॥ २५ ॥ उ० ॥ सर्व गाथा ॥ २४६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सज्जन शेलमी सारिखा, आपे रस असराल; पीख्या पण पीके नहीं, मोहोटा तेह मयाल ॥ १ ॥ अर्क हवे तिहां आथम्यो, परिजनने कहे प्रेम; आज इहां वसवुं अछे, जाउं सहुए जेम ॥ २ ॥ सज्या हवे तिहां सज करी, मस्तक डुःखे मुऊ; एम कही सहु अलगां कस्यां, गांठी चित्तमां गुऊ ॥ ३ ॥ उंघ्या सहुए एटले, अवलाने कहे एम; देशांतर दीरघ घणा, नीकलवुं तो नेम ॥ ४ ॥ आपद् पण आवे कदा, कर्म विचित्रनां काम; अबलानो अवसर नहीं, न पडे सुजितुं नाम ॥ ५ ॥ शांतिमती कहे स्वामी जी, फिकर न करीये फोक; तुम साथे मुऊ वर्त्ततां, श्यो मुऊने छे शोक ॥ ६ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ धन धन संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

॥ शांतिमतीशुं चाल्यो तिहांथी, न कही कोइने वात रे ॥ चंपावास गाम मांहि, आव्या चाली रातो रात रे ॥ १ ॥ सज्जन परीक्षा इणी परे कीजे ॥ ए आंकणी ॥ अर्क उग्यो ने थाकी अबला, बेठां एक वन मांहि रे ॥ रायपुरवासी सारथवाह सुत, सानुदेव आव्यो त्यांहि रे ॥ २ ॥ ॥ स० ॥ उलखीने चित्तमां एम चिंते, किहांथी रति ने काम रे ॥ राय तो काढी न मूके एहने, एह महागुणधाम रे ॥ ३ ॥ स० ॥ गुणपक्षपाती हरिषेण राजा, तिणे कारण कोइ अन्य रे ॥ कोइ समर्थ न काढवा एहने, पण कोइ उद्वेग मन्न रे ॥ ४ ॥ स० ॥ प्रणमी पूछुं एम विचारी, पूछे करी परणाम रे ॥ खेद म करजो अजाण्यो पूछुं, कुंअर बोले ताम रे ॥ ५ ॥ स० ॥ खेद तणो अवसर नहीं नाखो, तव बोल्यो सानुदेव रे ॥ तुम सुसरापुरनो हुं वासी, तामलिति जाउं हेव रे ॥ ६ ॥ स० ॥ माहरो साथ इहां उतरीयो, आव्यो आचमनने काज रे ॥ पासे सरोवर छे अति सुंदर, आव्यो तेहनी पाज रे ॥ ७ ॥ स० ॥ एह निकुंजमां पेसतां उपनो, मुऊने अति आणंद रे ॥ में जाण्युं इहां हरख ते

थाशे, दीठो तुम मुखचंद रे ॥ ८ ॥ स० ॥ रायपुरे में दीठा तुमने, उं लख्या कारण तेण रे ॥ हर्ष लह्यो पण खेद उपनो, दीठा एकाकी जेण रे ॥ ९ ॥ स० ॥ कहेवा जेहवी होय तो नाखो, चिंते ताम कुमार रे ॥ अहो अनुराग वचन चतुराइ, नाखे एम उदार रे ॥ १० ॥ स० ॥ सांजली कारण पूछे कहेशुं, पण तामलिप्तिए जावुं रे ॥ सार्थप कहे मुऊ साथे आवो, कुमर कहे ते नावुं रे ॥ ११ ॥ स० ॥ तात तणा असवार जो आवे, तो मुऊने लेइ जावे रे ॥ सानुदेव कहे रहेशुं इहां, जब ते आवीने जावे रे ॥ १२ ॥ स० ॥ ना ना करतां पण ते रहीउं, तव सेन कुमर ते नाषे रे ॥ जाउं साथमां कोइने म कहेजो, मत आवजो इण वासे रे ॥ १३ ॥ स० ॥ सार्थप चाल्यो आप साथमां, आव्या ते असवारो रे ॥ पूछे साथने नर नारी कोइ, दीठां इणही प्रकारो रे ॥ १४ ॥ सा० ॥ साथ कहे इहां कोइ न आव्युं, तव कहे मांहोमांहि रे ॥ कुमरनो एह न मारग जावा, में नाख्युं हतुं त्यांहि रे ॥ १५ ॥ स० ॥ रायपुर मारग चालो इहांथी, एम कही गया असवारो रे ॥ थोमी वेलाए मोकले सार्थप, दंपतीने आहारो रे ॥ १६ ॥ स० ॥ वात कहे सार्थप आवीने, सूर्य आथम्यो जाम रे ॥ लाव्यो साथमां पाछली राते, कीध प्रयाण ते ताम रे ॥ १७ ॥ स० ॥ शांतिमतीशुं कुमरने आपे, बेसवाने जंपान रे ॥ मारग जातां डेरा देइने, उतरीया कोइ थान रे ॥ १८ ॥ स० ॥ एम नित्य नित्य प्रयाण करतां, वोल्या केइक दिन्न रे ॥ एक दिन दत्तरती अटवीमां, उतर्यो साथ ते वन्न रे ॥ १९ ॥ स० ॥ नय जाणी चोकी चिहुं पासे, मूकी थइ सावधान रे ॥ प्रात समय चोकी सहु उठी, सहु गया निज निज थान रे ॥ २० ॥ स० ॥ चाकर सर्वे लादवा लागा, आवी जिल्लनी धामी रे ॥ बाण तणो वरसाद वरसावे, शृंगना शब्द वजामी रे ॥ २१ ॥ स० ॥ मार मार करता ते आव्या, खेद लह्या कर्मकार रे ॥ आमहथीआरा आगल दोड्या, लागुं युद्ध अपार रे ॥ २२ ॥ स० ॥ शांतिमतीने धीरज आपी, चाल्यो सेन कुमार रे ॥ केसरी हरणजूथ ज्युं त्रसव्या, सवरसैन्य पमिहार रे ॥ २३ ॥ स० ॥ बीजी दिशिथी साथने नेद्यो, लूंट्युं नांमज सार रे ॥ आमहथीआरा पाड्या सघला, नाठी सघली नारी रे ॥ २४ ॥ स० ॥ कुमर आव्यो जब एह दिशाए, जिल्ल तणी पमी नासी

रे ॥ एकाकी देखी पल्लीपति, आव्यो तास सकाशी रे ॥ २५ ॥ स० ॥ नाख्युं खड्ग कुमर वंचावे, कुमरे दीध प्रहार रे ॥ मूर्छा लही पल्लीपति पडीयो, वींजे कुमर तिवार रे ॥ २६ ॥ स० ॥ ढुकडा सरथी कमलिणी-पत्रे, लावी सिंचे नीर रे ॥ नयन उघाडी ताम विलोके, कुण ए साहस धीर रे ॥ २७ ॥ स० ॥ रूपे मयण पराक्रमे केसरी, दयाए मुनिकुमार रे॥ छे सुकमाल पण दृढप्रहारी, शत्रु ने मित्र अनुहार रे ॥ २८ ॥ स० ॥ परमेसर ए दीसे साचो, काम अजुक्तुं कीधुं रे ॥ एहवा पुरुषने आपणे एणी परे, साथ लूंटी दुःख दीधुं रे ॥ २ए ॥ स० ॥ सातमे खंडे समरादित्यना, रासमां नवमी ढाल रे ॥ पद्मविजय कहे सांजलो श्रोता, आगल वात रसाल रे ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ २०२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर कहे मत आकुला, जद्र थाउ जाग्यवंत; कहे पल्लीपति केहवुं, स्वस्थपणुं अम संत ॥ १ ॥ निल्लसैन्ये आवी जणे, इण अवसर कोइ एम; पल्लीपतिने पाडीउ, करशुं कहो हवे केम ॥ २ ॥ मार मार करता मनुज, तिहां सबरना तास; आव्या देखी आफणी, शान करे पल्लीस्वाम ॥ ३ ॥ मुज जीत्यो ए महापुरुष, मत करजो परमाद; शीआली करी ते सुणी, उपनो बहु आह्लाद ॥ ४ ॥ हाथ जोडी मूकी हवे, धनुष तीर धरी कंध; परशु तेहवे पाणीने, आव्यां अंजलि बंधि ॥ ५ ॥ अजय ते आपो अम जणी, सेन कहे सुविचार; आयुधरहितने अजय छे, इण अवसर अवधार ॥ ६ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ सुणो हो ते हुं अनाथी ॥ ए देशी ॥

॥ पल्लीपति पाये पडे, कहे खमो मुज अपराध ॥ साथ तुमारो लूंटीउ, तिणे कीधुं रे पाप अगाध ॥ १ ॥ कुंमरजी कीधो रे अम उपगार, तुम सरिखा जगमां हूं चार ॥ कुं० ॥ ए आंकणी ॥ एम कही करी उद्घोषणा, संग्राम कीधो दूर ॥ जिण जे लीधुं होये ते, लावो रे मुज हजुर ॥ २ ॥ कुं० ॥ कोइ कने कांइ रहेशे कदा, तो टालुं तेहनुं गाम ॥ ततकाल सहु जेलुं करी, कहे जुउ रे ए दाम ॥ ३ ॥ कुं० ॥ कहे कुमर नहीं स्वामी आव्यो, सबवाह सुत जो आय ॥ तो उलखोने स-

घणुं लहे, सुणी तेहने रे खोलवा जाय ॥ ४ ॥ कुं० ॥ एक वन निकुंजे ते लह्यो, लावीया तेहने ताम ॥ कहे पल्लीपति नवि जाणीउं, एहवा रुम्ा रे पुरुष ए ठाम ॥ ५ ॥ कुं० ॥ एणे जीत्या अमने एकले, अमे पम्विज्यो ए नाथ ॥ एहुना तुमे अमे तुम तणो, लूंटी लीधो रे एणी परे साथ ॥ ६ ॥ कुं० ॥ बीज भाव ए तुम तणी, लेजो संभाली भाय ॥ सार्थप विचारे चित्तमां, इण एके रे कीध पसाय ॥ ७ ॥ कुं० ॥ सार्थप कहे सहु आवीउं, हरख्यो ते पल्लीस्वामी ॥ कुमर विचारे एहनी, सज्जनता रे जुउ आम ॥ ८ ॥ कुं० ॥ प्रहार तस भंजावीया, दीधो कंदोरो आप ॥ जाणी प्रसाद अंगीकस्यो, पल्लीनाथे रे मोहोटानी छाप ॥ ९ ॥ कुं० ॥ व्रणकर्म बीजा पुरुषनां, वली करावे ते कुमार ॥ कहे पल्ली छे डुकरी, मुज पाली रे चालो ए वार ॥ १० ॥ कुं० ॥ उपगार कीजे मुज भणी, वोले ते सेन विचार ॥ सार्थप प्रमाण ए वातमां, सानुदेव रे भाखे तिवार ॥ ११ ॥ कुं० ॥ तुम दरिसणे दीठी अमे, तुमची मनोहर पाली ॥ इण समे सानुदेवनो, सूपकार रे आव्यो ते काल ॥ १२ ॥ कुं० ॥ आंसुनी धार खेंचे नहीं, कहे गयुं सर्व जे सार ॥ नृपसुता कहीं दीसे नहीं, सुणी हुउ रे आकुलो कुमार ॥ १३ ॥ कुं० ॥ सानुदेव विलखो थयो, पल्लीपति थयो मूढ ॥ कहे राजपुत्री कोण अछे, मुज भाखो रे तेहनुं गुढ ॥ १४ ॥ कुं० ॥ कहे सानुदेव राजपुर तणो, शंखपाल नामे राय ॥ तेहनी सुता आ कुमरनी, शांतिमती रे घरणी थाय ॥ १५ ॥ कुं० ॥ पल्लीपति कहे केम बन्युं, तव कहे ते सूपकार ॥ संग्राममां साहमो गयो, जब धाइ रे सेन कुमार ॥ १६ ॥ कुं० ॥ बीजी दिशाथी भेलीउं, लूंटीयो सघलो सार ॥ आरुहथीआरा पारुआ तव, वीहीनी रे शांतिमती नारी ॥ १७ ॥ कुं० ॥ नीकली पटआवासथी, हा आर्यसुत गया क्यांहि ॥ मुज भलावी हती तिणे करी, पूठे चाल्यो रे तेहनी राहि ॥ १८ ॥ कुं० ॥ अटवी भणी जातां थकां, एक सवर मुजने आय ॥ लकुट मास्यो चरणमां, हुं तो पड्यो रे तिणहीज ठाय ॥ १९ ॥ कुं० ॥ मूर्छा लही वली चेतना, लाधी ते रुव्यो ताम ॥ खोली घणी पण नवि जमी, हवे करो रे तुमे ए काम ॥ २० ॥ कुं० ॥ हा देवि देवि एम भणी, मूर्छा लह्यो ते कुमार ॥ पल्लीपतिए आश्वासीउं, मत करो रे खेद लगार ॥ २१ ॥

कुं० ॥ वेला थइ बे थोमली, अटवी ते नांहि दूर ॥ देवी न वहु हींमी शके, मुज निल्ल रे सेना नूरि ॥ २२ ॥ कुं० ॥ पवनवेगे चालता, नहीं अजाण्युं कोइ गाम ॥ हमणां लावीने मेलवुं, एम कही रे मूक्या ताम ॥ २३ ॥ कुं० ॥ सार्थपने पल्लीपति कहे, हुं जाइश खोलवा नारी ॥ निज पुरुष केइक सोंपीने, धीरज देज्यो रे सेन कुमार ॥ २४ ॥ कुं० ॥ सार्थप पण कहे कुमरने, धीरज करो तुमे आज ॥ हवणां खोली लावीये, जिहां होशे रे पुत्री राज ॥ २५ ॥ कुं० ॥ एम करी सहुए चालीआ, केइ सुन्नट लेइ संग ॥ सातमे खंडे दशमी कही, ढाल पन्ने रे चढते रंग ॥ २६ ॥ कुं० ॥ सर्व गाथा ॥ ३१४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ संसरतां शांतिमती, आर्यपुत्र किहां आज; दिशामूढ दिन आथम्यो, पोहोती गिरिनदी पाज ॥ १ ॥ मन चिंते माहारो पति, आवी न मल्यो आंहि; विरहे कहो केम जीवीये, मरवुं आ वन मांहि ॥ २ ॥ अशोकवृक्ष अवलंबीने, दीयो पाश दुखराशि; वनदेवी वाणी सुणो, एहवी माहारी आशि ॥ ३ ॥ आर्यपुत्र मूकी अवर, नवि चिंत्यो मन मांहि; जो जनमांतरे आर्यसुत, तो पति थाजो त्यांहि ॥ ४ ॥ एम नियाणुं आदरी, आतम अधर करेअ; पाश तूटो धरणी पमी, मूर्ग ताम मलेय ॥ ५ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ बेमो नांजी ॥ ए देशी ॥

॥ तापस कुमर आयो इण अवसर, संध्या सेवन काज ॥ देखी चिंतवे नामिनी कोण ए, रूपे रतिशिरताज ॥ १ ॥ अलगा रहीये ॥ वनदेवी परे ए आज ॥ अलगा० ॥ ए आंकणी ॥ अथवा शुं मुज नारीनुं कारज, जाउं अवर ठेकाणे ॥ शास्त्रमां वाखुं नारीनुं दरिसण, पंमित एम वखाणे ॥ २ ॥ अ० ॥ नयणे लोहशलाका ताती, अंजन करवी रुमी ॥ पण जे अंगोपांग संठाणह, नारी निरखवी नूंमी ॥ ३ ॥ अ० ॥ विष नखीये पण नोग न नजीये, रसनाबेद वली रुडो ॥ पण नवि अलिक वचन जंपीजे, नहीं विश्वासी कूमो ॥ ४ ॥ अ० ॥ मुनिजननो अधिकार ए नांहि, अथवा दीनउद्धार ॥ करवो ते पण शास्त्रे बोल्यो, जीवदया विस्तार ॥ ५ ॥ अ० ॥ यतः "न धम्मकज्जा परमत्थि कज्जं, न पाणहिंसा परमं

अकज्जं ॥ न पेमरागा परमत्थि बंधो, न बोहिलाभा परमत्थि लाभो ॥ १ ॥" ए पण अटवीमां एकाकी, सूती तिणे ए दीन ॥ विद्याधरी छे के ए कोण छे, देखी पास विखिन्न ॥ ६ ॥ अ० ॥ एणे रूपे ने पाश गले श्यो, वात विरोधी एह ॥ अथवा कर्मे शुं नवि थाये, कर्म विचित्र करेह ॥ ॥ ७ ॥ अ० ॥ कमंडल जले दीध आभूषो, आतखे चेतन आव्युं ॥ आंख उघाडे तव मुनि तापस, देखी चित्त डराव्युं ॥ ८ ॥ अ० ॥ भय न धरे मनमां कहे मुनिवर, हुं तापसकुमार ॥ सुणी प्रणमी तव आशीष भाखे, अविधवा हो नारी ॥ ९ ॥ अ० ॥ तुमे इहां किहांथी तव मुनि भाखे, तपोवन प्रमुख विचार ॥ किम एकाकी किम इहां आवी, केम एहवो व्यापार ॥ १० ॥ अ० ॥ एम सांभली शांतिमती चिंते, केम कहीये निज वात ॥ तोपण तपसीजन मानेवा, नहीं निज कृत्रिम थात ॥ ११ ॥ अ० ॥ एम चिंती कहे रायपुर राजा, शंखपालनी बेटी ॥ साथ लूंटाणो तिणे एकाकिनी, भर्त्ता गयो मुज मेटी ॥ १२ ॥ अ० ॥ तास विजोगे ए व्यवसायह, कहीनें रोवा लागी ॥ तपसी कहे मत रो सोभागिण, नहीं संसार सोभागी ॥ १३ ॥ अ० ॥ जेम नाटकीआ केरी बाजी, क्षणमां होय विजोगा ॥ क्षण संयोग क्षणेकमां मोदज, क्षणमां होवत शोगा ॥ १४ ॥ अ० ॥ क्षणमां आपद क्षणमां संपद, बुद्धिवंते एम जाणी ॥ न करे विषाद विषम वेलामां, अनुचित न करे प्राणी ॥ ॥ १५ ॥ अ० ॥ धीरज धरतां आपद जाये, तिणे तुं छोरु विषाद ॥ वली तुज लक्षणथी हुं जाणुं, सुणी कहुं करी प्रसाद ॥ १६ ॥ अ० ॥ तुज भर्त्ता नवि मरण लह्यो छे, कहे तुज सोवन कांति ॥ कोकिलस्वर सुप्रतिष्ठित चरणां, नाभी दक्षिण वर्त्तवंती ॥ १७ ॥ अ० ॥ नितंबफलक सुविशाल विराजे, शारद शशि सम वयण ॥ नवि कमलाणी छबी मधुगुलिका, सरिखां ताहारां नयण ॥ १८ ॥ अ० ॥ तिलकभूषित भालमंडल शोहे, कुटिल केश व्रली काला ॥ स्नेहाला घणुं तेणे तुज भाखुं, तुं छे भाग्य विशाला ॥ १९ ॥ अ० ॥ अविधवा तुं छे वली बीजुं, पुत्रवंती निरधार ॥ कुलपतिने तुमे आवी वंदो, सुणी चाली तस द्वार ॥ २० ॥ अ० ॥ कुलपति वंदे आशीष दीधी, मुनिए व्यतिकर भाख्यो ॥ कुलपति कहे मत तपजे वत्से, हवे दुःख दूरे नाख्यो ॥ २१ ॥ अ० ॥

थोमा दिनमां पति तुज मलशे, इणहीज जाण उद्यान ॥ ज्ञाने करी जाणुं हुं एहवुं, सा कहे वचन प्रमाण ॥ १२ ॥ अ० ॥ तापसिणी पासे ते रहेतां, वीतो केतोक काल ॥ सातमे खंडे पद्मविजय कहे, एह अग्यारमी ढाल ॥ १३ ॥ अ० ॥ सर्व गाथा ॥ ३४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अटवीमां इण अवसरे, सबर पल्लीपति सेन; खोली करी बहु खांतिशुं, किमे न लाधी केण ॥ १ ॥ वासर तो वोली गयो, न मली तेहनी नारी; खेद लही विलखा थया, मल्या अरण्य मजारी ॥ २ ॥ कहे पल्लीपति कुमरने, मत करजो मन खेद; मिलशे निश्चय मानिनी, जाणुं ते सांजली जेद ॥ ३ ॥ सहुने दिवस न सारिखा, कालक्षेप पण कांय; आहार करो तुमे अम्ह तणा, प्राण रहे जिम प्राय ॥ ४ ॥ जुगतो आहार जाणी करी, आग्रहथी कस्यो आहार; शय्या पाथरी सोवतो, मानिनी मनमां धार ॥ ५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ महावीर जगमां जींत्यो जी ॥ ए देशी ॥

॥ पल्लीपति पण पासे सूतो, मूक्या चोकीदार ॥ तिणे समे सबर आवीने एणी परे, अतिशय करत पोकार ॥ १ ॥ सुणो हम वाणी जी, पल्लीपति पण उठी, धनुष लीयो ताणी जी ॥ पूछे पूछे वात सुजाण, कहो किसि काणी जी ॥ ए आंकणी ॥ ते कहे खबर पडे नहीं अमने, पण सामन्ये जाण्यो ॥ साथ आव्यो अटवीमां जाणी, विश्वपुर केरो राणो ॥ २ ॥ सु० ॥ जाणयुं पल्लीपति नीकलशे, मोकली तेणे धामी ॥ कहे पल्लीपति मुज मन केरी, पोहोती नांहि रुहामी ॥ ३ ॥ सु० ॥ स्वामीकारय साध्युं नांहीं, तोपण जावुं तब ॥ रखे साथ ए आवी लूंटे, थाय तो अतिश्र अनब ॥ ४ ॥ सु० ॥ सानुदेवने तेह सुणावी, कुमरनी करजो सार ॥ दूरथी कुमरने प्रणमी चाल्यो, जाणे तेह कुमार ॥ ५ ॥ सु० ॥ जुउ गुरुता पल्लीपति केरी, एम विचारी ताम ॥ खड्ग लेइ कहे सानुदेवने, पणयजंग नहीं काम ॥ ६ ॥ सु० ॥ तुमे सुखशाताए इहां रहेजो, अथवा करजो प्रयाण ॥ हुं पल्लीपति खबर करेवा, जाउं हुं सुण जाण ॥ ७ ॥ सु० ॥ सानुदेव नवि उत्तर आपे, सेन कुमर कहे ताम ॥ बोलवा जेहवी वात

नहीं छे, एम धरी चाल्यो हाम ॥ ८ ॥ सु० ॥ अनुक्रमे युद्ध लाग्युं तिहां सबलुं, गगनांगण जख्युं वाणे ॥ पल्लीपति कहे सेनकुमरने, जुउ मुज श-क्ति विन्नाण ॥ ए ॥ सु० ॥ सेन कुमर पण खड्ग लेइने, चाल्यो शत्रु साहा-मो ॥ सिंह परे तिहां करे पराक्रम, हरष पल्लीपति पाम्यो ॥ १० ॥ सु० ॥ अनुक्रमे युद्ध करंता हार्या, पल्लीपति कुमार ॥ पकमीने लेइ चाल्या विश्वपुर, आव्या हरष अपार ॥ ११ ॥ सु० ॥ पण एक कुमरनुं देखी पराक्रम, सहु चमक्या चित्त मांहि ॥ समरकेतु राजाने सघलो, कहे अ-धिकार उछाहि ॥ १२ ॥ सु० ॥ रूप पराक्रम देखी राजा, विस्मय पाम्यो चिंते ॥ कुण ए पुरुष लोकोत्तर दीसे, करुं गवेषणा तंते ॥ १३ ॥ सु० ॥ नरपति सुत होशे सही निश्चे, एम चिंती नृप बोले ॥ मारो पल्लीपति ए तस्कर, दुष्ट नहीं इण तोले ॥ १४ ॥ सु० ॥ कुमर कहे मुज शी मोहोटाइ, एह मरे हुं जीवुं ॥ तिणे मुजने मारो एम जाखे, नहींतर जल नवि पीवुं ॥ १५ ॥ सु० ॥ राय विचारे शुं मुख बोले, एह महानुजाग ॥ अ-थवा एहने एमज जुगतुं, राय कहे धरी राग ॥ १६ ॥ सु० ॥ जाति वंश जाखो तुम केरा, तव तिहां सेनकुमार ॥ पासे आइुं अवलुं जोतो, उत्तम धरी आचार ॥ १७ ॥ सु० ॥ सानुदेव इण अवसरे आव्यो, जेटणुं साथे लाव्यो ॥ वात कुमरनी कहेवा सारु, केइक नरे सोहाव्यो ॥ १८ ॥ सु० ॥ नृपआणाए पेसण देवे, समरकेतु पमिहार ॥ जइ नरपतिने जेटणुं आप्युं, जूप दीये सतकार ॥ १९ ॥ सु० ॥ आसन नृप आपी वेसाख्यो, दीठो सेन कुमार ॥ पीमित अनेक प्रहारे देखी, शोक धरे तिणी वार ॥ २० ॥ ॥ सु० ॥ मूर्छा लहीने धरणी ढलीउं, शुं थयुं राय विमासे ॥ शीतल उ-पचारे लह्यो चेतन, पूछे नृप तस पासे ॥ २१ ॥ सु० ॥ तुमने एह थयुं शुं जाखो, तव बोल्यो सछवाह ॥ एह संसारमां सार नहीं कांय, आपद होय अथाह ॥ २२ ॥ सु० ॥ चंपाधिपसुत एहवी आपद, पाम्यो तिणे मुज शोक ॥ तव नृप चिंते जेह कल्पना, कीधी ते नहीं फोक ॥ २३ ॥ ॥ सु० ॥ पूछे जद्र कहो ए किणी परे, अटवीमां एकाकी ॥ सानुदेव कहे मलीयो वाटे, वात न जाणुं वाकी ॥ २४ ॥ सु० ॥ वननिकुंजमां नारीशुं दीठो, इत्यादिक सहु जाख्युं ॥ कुमरनी खवर लही हुं आव्यो, जेहवुं थयुं तेह दाख्युं ॥ २५ ॥ सु० ॥ राय कहे ए रुडुं कीधुं, सातमे खंडे ढाल

॥ पद्मविजय कहे बारमी ज्ञाखी, सुणतां मंगलमाल ॥ २६ ॥ सु० ॥ सर्व गाथा ॥ ३७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय कहे निज नर प्रते, एहने करो अवल्ल; सांजलीते पण सज्ज हुआ, निरता करण नवल्ल ॥ १ ॥ बीजा घरमां बेहुने, सज्या कीधी सार; वैद्य बोलाव्या वेगशुं, व्रणकर्म करे तिणी वार ॥ २ ॥ शांतिमतीने शोधवा, निज नरने नरराय; मूकीने महीपति हवे, सार्थपने समजाय ॥ ३ ॥ साथ तुमारो विषम थल, दूरे जावुं देश; अवसर मेघनो आवीयो, सांजलजो सुविशेष ॥ ४ ॥ राजकुंअर बे मुज घरे, चिंता न करो चित्त; जाउं सुखे जिम सुख होये, सार्थप दुःखथी सित्त ॥ ५ ॥ पग न वहे पार्थिव सुणो, कुमर विना मुज कोय; संजलावे ते सेनने, सार्थप आवी सोय ॥ ६ ॥ सेन कहे सार्थप सुणो, नरपति कहे बे न्याय; कायरपणुं नवि कीजीये, नरपति वयण न जाय ॥ ७ ॥ न करो वयण जो नृप तणुं, निवृत्ति अम नवि थाय; वचन प्रमाण करी वदे, नवि तुम वचन लोपाय ॥ ८ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ अवसर पामीने रे, कीजे नव आंबिलनी ठली ॥ ए देशी ॥

॥ अवसर देखीने रे, चाल्यो सारथवाह सुजाण ॥ वर्षाकाल आव्यो तिण समे, निपन्यां सघलां धान ॥ अनुक्रमे वर्षा थयो व्यतिक्रम, निरमल थयां निवाण ॥ १ ॥ अव० ॥ कुमर पल्लीपति साजा हुआ, कर्यां बधामणां सार ॥ राय कुमरने कहे में मूक्या, खोलवा नर तुज नारी ॥ २ ॥ अव० ॥ केइक आव्या ने केइ नाव्या, इण अवसर नर दोय ॥ सोम सूर नामे एज जंपे, सांजलो वात तें मोय ॥ ३ ॥ अव० ॥ कुमरनारी संजोगनुं कारण, राय कहे कहो तेह ॥ सोम सूर कहे कादंबरीमां, प्रियमेलक तीर्थ जेह ॥ ४ ॥ अव० ॥ तेहनी उत्पत्ति सांजलोने, एहज अटवी मांहि ॥ विशाखवर्द्धन नामे नगरे, नृप अजितबल त्यांहि ॥ ५ ॥ अव० ॥ शेठ वसुंधर नामे रुडो, प्रियमित्र सुत तास ॥ ईश्वरखंध शेठनी बे पुत्री, निलुआ कन्यावास ॥ ६ ॥ अव० ॥ तेहने दीधी पण नवि परण्या, वीतो केतोक काल ॥ यौवन पाम्यां एहवे वरना, बापनुं धन विसराल ॥ ७ ॥ अव० ॥ शेठ वसुंधर पोहोतो परजव, हवे

प्रियमित्र कुमार ॥ माने नहीं कोइ दलिद्रपणाथी, परिजन करे अप-
कार ॥ ८ ॥ अव० ॥ जे जे करे ते निष्फल जाये, पाम्यो मन विषवाद ॥
नीकलीयो ते नयरने मूकी, मूकी तिहां आह्लाद ॥ ए ॥ अव० ॥
शून्य संमूर्छिमनी परे चाल्यो, उत्तरपंथ सुजाण ॥ पंथर भिक्षु नागदेव
नामे, मलीउं मित्र प्रमाण ॥ १० ॥ अव० ॥ भिक्षुए उलखीने बोलाव्यो,
एह अवस्था तुऊ ॥ केम छे ने किहां जाय एकाकी, जाखे तुं मुऊने गुऊ
॥ ११ ॥ अव० ॥ प्रियमित्र कहे दैवने पूछो, सघली माहारी वात ॥ ना-
गदेव कहे ताहरा तातने, छे के नहीं सुखशात ॥ १२ ॥ अव०॥ प्रियमित्र
कहे परजव पोहोता, तेहने नित्य सुखशात ॥ पण प्रियमित्र जघन्य
पुरुषना, देखो ए अवदात ॥ १३ ॥ अव० ॥ इह परलोक एके न सधाये,
एहवो अवसर आज ॥ नागदेव कहे शोक न धरीये, जमराजाने राज
॥ १४ ॥ अव० ॥ तास निवारक कोइ न लहीये, धर्मराय विण जाण ॥
इत्यादिक उपदेश देइने, दीक्षा दीये तिण ठाण ॥ १५ ॥ अव० ॥ गो-
रसत्याग प्रमुख करे किरिया, केइक दिन गया जाम ॥ निलुआ नारी
वात सुणीने, मनमां चिंते ताम ॥ १६ ॥ अव० ॥ जरतामारग चाले
नारी, एम चिंती करे धर्म्म ॥ विषय पिपासा विण जरतानुं, दर्शन मन
थयुं रम्म ॥ १७ ॥ अव० ॥ विरह थकी ते डुर्बल होइ, अनुक्रमे ते वि-
चरंत ॥ तिणे नयरे आव्यो तस जर्ता, निलुआ जइ प्रणमंत ॥ १८ ॥
अव०॥ ध्यानयोगमां दीठो तेहने, मूर्छा आवी ताम ॥ ध्यानयोग मूकी ते
भिक्षु, कहे शुं थयुं ए आम ॥ १ए ॥ अव० ॥ सखीउं कहे ए इसरखं-
धनी, पुत्री निलुआ नाम ॥ तुम्हने दीधी पण नवि परणी, मोहे मूर्छित
आम ॥ २० ॥ अव० ॥ सांजली शोकातुर थयो तेहवे, स्नेह वध्यो गयुं
ध्यान ॥ पाणी कमंमलनुं छांटीने, आणी तेहने शान ॥ २१ ॥ अव० ॥
राग घणो नारीनो देखी, वली कटाक्षनां बाण ॥ अंग उपांग जोतां नारीनां,
वींधाणा तस प्राण ॥ २२ ॥ अव० ॥ मदनविकार अति डुर्जय छे, रम-
णिक तरुणी विलास ॥ एकांत थानक वननुं जाणी, चित्त विह्वल थयुं
तास ॥ २३ ॥ अव० ॥ गुरुवच लोपुं के एह छांमुं, डुष्कर वात ए दोय
॥ अथवा व्रत पालुं तो ए मुऊ, जनमांतरे पण होय ॥ २४ ॥ अव० ॥
मनइच्छित पामे व्रत पाले, एहवी गुरुनी वाच ॥ व्रत रहशे ने ए पण

मलशे, एहवुं धार्युं साच ॥ २५ ॥ अव० ॥ सातमे खंडे तेरमी नाखी, पन्ने ढाल रसाल ॥ समरादित्यना रासमां रुमी, सुणतां मंगलमाल ॥ २६ ॥ अव० ॥ सर्व गाथा ॥ ४०३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वली विनताना वश थकी, चलीउं एहनुं चित्त; बोलावुं अबला प्रत्ये, जोउं ऊंपण रीति ॥ १ ॥ एम चिंती आखे इस्युं, मत दुःख आणे मन्न; तुऊ स्नेहे हुं तरुफडुं, कहुं ते सांजल कन्न ॥ २ ॥ व्रत लीधुं किम वरजीये, गुरुवच किम न गणाय; पण सांजव्युं गुरु पासथी, व्रतथी वंछित थाय ॥ ३ ॥ उजय वात व्रतथी अछे, इह लोके गुरु आण; पर-जव तुऊ संगमपणुं, मलशे एह प्रमाण ॥ ४ ॥ निबुआ कहे निरतुं करो, माहरे तुमे प्रमाण; अणसण बिहुए आदरुं, नेह परस्पर आण ॥ ५ ॥ जरता आशय जामिनी, नर आशय धरे नारी; जनमांतर होज्यो अमे, एणी परे चित्त अवधारी ॥ ६ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ सुरती महिनानी देशी ॥ अथवा ॥ चैत्रे चतुर्जुज नाव्या, राधाजी करे रे विचार ॥ ए देशी ॥

॥ वृक्ष अशोकने हेठल अणसण कीध उदार, बहु वारंती सखीजन पण ते मन नवि धारी ॥ ते कोलाहल्ल सांजली आव्या गुरु नागदेव, लाज्यो प्रियमित्र ऊर्ध्व थइ वंद्या ततखेव ॥ १ ॥ मनवंछित तुम निपजो एणी परे दीये आशीष, मन चिंते कुण नारी ए रूप समान वरीश ॥ राग घणो प्रियमित्रने उपरे लखीये एम, तव सखीए मांमी कह्यो धुरथी जिणी परे प्रेम ॥ २ ॥ नागदेव तव चिंतवे अहो अहो मदनविकार, मदन जेदाणा प्राणीआ सर्व करे परकार ॥ उंसरीये हवे इहांथी नहीं उपदेशनो लाग, चिंतवी कहे प्रियमित्रने सांजल तुं महाजाग ॥ ३ ॥ स्नेहालु होय सज्जन तिणे तें ए कर्युं काम, पण सावाश छे तुऊने व्रत नवि खंड्युं आम ॥ खेद म करजे करजे जावना तत्त्वविचार, एम कही नागदेव गयो हवे प्रियमित्र ने नारी ॥ ४ ॥ नर नारी नृप वंदतां दोय मास वही जाय, तेहज परिणामे करी काल दो किन्नर थाय ॥ जोइ पूर्व जव अवधिथी आव्यो तेह उद्यान, पूजा करी उद्याननी कर्युं दे-

वल तिण थान ॥ ५ ॥ देव अनंग ने निर्वृत्ति देवी थापी त्यांहि, नंदन-
वन गया तिहांथी हर्ष धरी उन्नाहि ॥ तिहां एक दीठी विद्याधरी तास
प्रीतमनो विजोग, तिणे अति दूबली जमती वनमां धरती शोग ॥ ६ ॥
पूछे तेहने तुं कुण किम एकाकी एम, सा कहे मदनमंजुषा खेचरी हुं
छुं नेम ॥ प्रीतम रागथी विद्यादेवीनी पूजा न कीध, जर्त्ता विजोग श-
राप छ मासनो तेणीये दीध ॥ ७ ॥ एह निमित्ते तुज पति केरो थाशे
विजोग, तिणे एकाकिणी वनमां जमीश तुं अरतिसंजोग ॥ चरणे पडी
तव में कह्युं स्वामिनि करी सुपसाय, तव देवी कहे प्रेमथी नवि आपद
देखाय ॥ ८ ॥ तिणे ते रुडुं काम न कीधलुं पण सुण वात, नंदनवन
तुं जायजे उपजशे सुखशात ॥ प्रियमेलक रुंख उपरे धवल जमल फुल
थाय, स्निग्ध माधवी लता आलिंगित हेठले जाय ॥ ९ ॥ तिहां तुज
मलशे जरता एम सुणी आवी एथ, पण नवि लाजे थानक नवि जाणुं
छे केथ ॥ किन्नर कहे धीरी था हुं तुज दाखुं तेह, अनुक्रमे खोली दे-
खाड्युं थानक तिहां गइ नेह ॥ १० ॥ प्रियमेलक सामर्थ्यथी मलीउं
तस जरतार, निज पति आगले धुरथी सर्व कह्यो अधिकार ॥ विद्याधर
किन्नरने प्रीति थइ ते अपार, कांयक काल गमावी गयां सहु निज निज
ठार ॥ ११ ॥ किन्नरी कहे निज स्वामीने ए दुःख तो न खमाय, निज
प्रिय विरह तणुं तिणे कीजे तास उपाय ॥ जन्म लह्यानुं फल जे करीये पर
उपगार, तिणे ए वृक्ष ठवो जिहां आपण मलीआं सार ॥ १२ ॥ सांजली
प्रियमेलक ठव्यो निज कृत देवल पास, ठाम ठाम जणव्युं एम विर-
हीनी पूरे आश ॥ केइक विरही लोकनी आशा पूरण कीध, तिणे प्रिय-
मेलक तीरथ नाम थयुं प्रसिद्ध ॥ १३ ॥ ते कारण हुं जाणुं कुमर ए
तिहां जो जाय, तो तस शक्ति अचिंत्यथी नारीनुं मलवुं थाय ॥ राय
कुमर मन हरख्या वात ते मानी साच, जूप विचारे मोकलुं निज नरशुं
शुज वाच ॥ १४ ॥ पल्लीपतिने पूछे जूपति तव कहे तेह, में पण सांजल्युं
तपवन ढुकडुं थानिक एह ॥ राय कहे तुमे परिकर लेइने जाउ तब, पण
तुमे घरणी लहीने निश्चय आववुं इछ ॥ १५ ॥ सांजली वयण ते चा-
लीउं करतो नित्य प्रयाण, अनुक्रमे तपोवन ढुकडो पहोतो तेह सुजाण
॥ तापसना उपरोधथी थोभो लेइ परिवार, जइ तापसने वंदीआ दीये आ-

शीष तिवार ॥ १६ ॥ पल्लीपति तेह थानक लाव्यो राजकुमार, बहु पादप उपशोभित ते देउलने द्वार ॥ कल्पपादप नवि उलखुं पण सामान्ये ए ठाय, पल्लीपति वच सांभली चित्त निराश ते थाय ॥ १७ ॥ संभारे शांतिमती नाखी दीर्घ निःश्वास, सा पण फूल ग्रहीने जाती निज आवास ॥ भावी भावना जोगथी कर्म तणे परिणाम, बेठी विशामे तिहां प्रियमेलकने ठाम ॥ ॥ १८ ॥ नागरवेली आलिंगित दीठो तिहां अशोक, संभारे तव कुमरने करती चित्तमां शोक ॥ वाम लोचन इण अवसरे फुरक्युं ताम कुमार, भमतो भमतो आवीउ ते प्रियमेलक ठार ॥ १९ ॥ देखी भरता जाणी हरखी मनथी जोर, बहु काले मल्या तिणे उत्कंठित घन ज्युं मोर ॥ विरहमां जीवती रही तिणे पामी लज्जा ताम, परीक्षा करुं एम उद्विग्न होशे के नहीं नाम ॥ २० ॥ किहांथी आव्या एम करती विचार अनेक प्रकार, स्वप्न हशे के किम ए पामी खेद अपार ॥ खरी प्रतीतथी स्वस्थ थइ तणे बहु रस भाव, वेदती मूर्छा पामती देखी तापसी ताव ॥ २१ ॥ खेद लही अहो शुं थयुं रेमती आंसुधार, पाणीए सिंची पण नवि बोले तेह लगार ॥ तव बहु आक्रंद करीने रोवा लागी तेह, दोड्यो कुमर आवी कहे बीहो कारण केह ॥ २२ ॥ ते कहे भय संसारनो बोले ताम कुमार, केम आक्रंद कर्यो तव वात कहे धरी प्यार ॥ सातमे खंडे ए पदमे भाखी चौदमी ढाल, वात सुणंतां होशे सहुने मंगलमाल ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ ४३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रायपुरपति शंखरायनी, पुत्री पावन अंग; शांतिमती ए सोहामणी, आरतिविरह एकंग ॥ १ ॥ प्राणत्याग पतिविरहथी, करती तापसे दीठ; कुलपतिने लाव्यो निकट, इणे पण एम आइठ ॥ २ ॥ भरता मलशे भली परे, तपोवनमां ततखेव; कुसुम कारण इहां अनुक्रमे, वलती आवी हेव ॥ ३ ॥ बेठी तव बीहामणी, मूर्छा पामी एम; कारण तो कलीये नहीं, पण अमने अति प्रेम ॥ ४ ॥ आक्रंद तिणे कीधो अमे, सांभली सेन कुमार; हरख विषादने अणु हवे, पामी दुःखनो पार ॥ ५ ॥ मूर्छा वली हवे मानिनी, स्नेहे जोवे स्वामी; कुलपति वयण कूडुं नहीं, तरुणी भाखे ताम ॥ ६ ॥ चालो कुलपति चरणने, पामे परमाणंद; कारण विण ते कुलपति, उपकारी ते अमंद ॥ ७ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ पारधीआनी अथवा मन वशीआ ॥ ए देशी ॥

॥ तापसिणीई चिंतवे रे, ए एहनो जरतार रे ॥ पुण्यवंतो ॥ नहीं तो एम किम बोलती रे, सुंदर अंग आकार रे ॥ गुणवंतो ॥ १ ॥ अहो विधाता मेलवे रे, जेहने जुगतुं जेह रे ॥ पु० ॥ आणंद आंसुजर हवे रे, उठे शांतिमती तेह रे ॥ २ ॥ गु० ॥ पल्लीपति जोइ रीजीयो रे, अहो अहो रूपनिधान रे ॥ पु० ॥ पुरुषरत्नने एहवी रे, नारी रतन घटमान रे ॥ ३ ॥ गु० ॥ विनय करी पल्लीपति रे, नारीने करे परणाम रे ॥ पु० ॥ स्वामिनि तुम्ह पति जृत्य हुं रे, ग्रहण योग्य नहीं नाम रे ॥ ४ ॥ गु० ॥ सुंदरी कहे स्वामी तणो रे, पामो तुमे सुपसाय रे ॥ पु० ॥ एम कही जोयुं पति जणी रे, सेन कहे तिणे ठाय रे ॥ ५ ॥ गु० ॥ एहने पसाय करीजीये रे, एहवुं नहीं कांय सार रे ॥ पु० ॥ लाज्यो पल्लीपति घणुं रे, हवे मन चिंते कुमार रे ॥ ६ ॥ गु० ॥ अणचिंतव्युं ए केम थयुं रे, पादप दीठो ताम रे ॥ पु० ॥ अपूरव अति सोहामणो रे, हरख्यो लही विशराम रे ॥ ७ ॥ गु० ॥ पूछे पल्लीनाथने रे, शुं ए वृक्षनुं नाम रे ॥ पु० ॥ ते कहे हुं जाणुं नहीं रे, एह अपूरव स्वामी रे ॥ ८ ॥ गु० ॥ पूछे तापसिणी प्रत्ये रे, तिणे पण जाख्युं तेम रे ॥ पु० ॥ कुमर कहे तुम ढुकडो रे, एह न जाणो केम रे ॥ ए ॥ गु० ॥ तापसिणी कहे आवीआं रे, थोमो काल थयो तास रे ॥ पु० ॥ एह हशे बहु कालनो रे, कुमरने थयो विश्वास रे ॥ १० ॥ गु० ॥ निश्चय प्रियमेलक खरो रे, धवल कुसुमजुग दीठ रे ॥ पु० ॥ पल्लीपतिने दाखव्यो रे, तिणे पण दीठ उक्किठ रे ॥ ११ ॥ गु० ॥ पूजा करुं एह वृक्षनी रे, लावो उपगरण तास रे ॥ पु० ॥ शक्ति अचिंत्य छे एहनी रे, पूगी अमची आश रे ॥ १२ ॥ गु० ॥ सबर पास मंगावीयां रे, फूल चंदन ने नीर रे ॥ पु० ॥ तिणे विधिपूर्वक पूजीयो रे, कल्पवृक्षने धीर रे ॥ ॥ १३ ॥ गु० ॥ आवर्जी एहने गुणे रे, क्षेत्रदेवी आसन्न रे ॥ पु० ॥ कहे तुठी तुज उपरे रे, माग तुं जे होय मन्न रे ॥ १४ ॥ गु० ॥ यतः ॥ "अमोघा वासरे विद्युत्, अमोघं निशि गर्जितं ॥ अमोघा उत्तमा वाणी, अमोघं देवदर्शनं ॥ १ ॥" तुम दर्शनथी शुं पछे रे, आधकुं छे मुज आज रे ॥ पु० ॥ देवी मनमां चिंतवे रे, नवि

मागे कांइ काज रे ॥ १५ ॥ गु० ॥ पण आग्रह करी आपीये रे, रयण एक अनिराम रे ॥ पु० ॥ विष सघलां अपहरी लीये रे, रोग हरे गुण-काम रे ॥ १६ ॥ गु० ॥ एम चिंती कहे देवता रे, तुं निर्लोनी सार रे ॥ ॥ पु० ॥ मुऊ बहु माने लीजीये रे, करवा पर उपगार रे ॥ १७ ॥ गु० ॥ मणिरयण ए माहरुं रे, सांनली करे विचार रे ॥ पु० ॥ देवता मान्य होये सदा रे, एम करी ग्रहे अविकार रे ॥ १८ ॥ गु० ॥ करे प्रणाम तव एम कहे रे, चिरंजीव आशीष रे ॥ पु० ॥ अदृश थइ ते देवता रे, वाधी कुमर जगीश रे ॥ १ए ॥ गु० ॥ तापसिणी विस्मय लही रे, कहे जाशुं अमे ठाय रे ॥ पु० ॥ थयो मध्याह्न समय हवे रे, तिणे अमथी न रहाय रे ॥ २० ॥ गु० ॥ कुलपतिने हुं वंदवा रे, आवीश तुमचे संग रे ॥ पु० ॥ जइ कुलपतिने वंदीया रे, दीये आशीष सुचंग रे ॥ २१ ॥ गु० ॥ आसन देइ बेसारुीयो रे, परिजनशुं ते सेन रे ॥ पु० ॥ तापसिणी कहे तेहनुं रे, सवि वृत्तांत रसेण रे ॥ २२ ॥ गु० ॥ देइ उपयोगने उलखी रे, कुलपति आदर कीध रे ॥ पु० ॥ नार्या सोंपी तेहनी रे, वली शिक्षा एम दीध रे ॥ २३ ॥ गु० ॥ गेह आश्रम बांध्यो अछे रे, पण एहशुं प्र-तिबंध रे ॥पु०॥ तिणे अनुरूपथी देखजो रे, शो कहीये परबंध रे ॥ २४ ॥ गु० ॥ वचन प्रमाण करे तदा रे, सातमे खंडे ढाल रे ॥ पु० ॥ पनरमी पदमे कही रे, सुणतां मंगलमाल रे ॥ २५ ॥ गु० ॥ सर्व गाथा ॥ ४६८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुलपति हवे मिलशे कदा, अबला विलपे एम; कुलपति समजावी कहे, प्राणी न करीये प्रेम ॥ १ ॥ तुऊ हृदये हुं नित्य वसुं, नित्य पासे वसुं नारी; तेह सुणी कुलपति प्रत्ये, प्रणमे बहुले प्यार ॥ २ ॥ पूछी ता-पसिणी प्रत्ये, दंपती मलीयां दोय; दानादिक बहु देइने, सरक्यो ति-हांथी सोय ॥ ३ ॥ विश्वपुरे ते आवीयो, संनलावे सवि वात; नरपतिने ते नारीनी, सुणी हरख्यो सगधात ॥ ४ ॥ वधामणां कीधां वली, करी आदर सत्कार; पल्लीपतिने पाठव्यो, सेन रह्या तिहां सार ॥ ५ ॥ पितृ-राज्य परे प्रेमशुं, शांतिमतीशुं नोग; विलसंतां वासर गया, शुन्न अनु-कूल संयोग ॥ ६ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ तुंने गोकुल बोलावे कान्ह ॥ गोवालण गोरी रे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे कर्म विचित्रथी रोग, नृपतिने थावे रे ॥ नयणे आवे बहु शूल, संध्यो कंपावे रे ॥ व्यापी शिरवेदन जाम, दांत सवि हाले रे ॥ बहु श्वासवचन निरोध, नयणे नवि चाले रे ॥ १ ॥ तेडाव्या वैद्य सुजाण, उषध अति कीधां रे ॥ पण गुण न थयो ते लगार, वंछित नवि सीधां रे ॥ वैद्य खेद लह्या ने, अंतेउरीउ घणुं रूवे रे ॥ पडी खबर कुमरने ताम, सुखे नवि सूवे रे ॥ २ ॥ मुज उपगारी ए राय, लहे दुःख एहवुं रे ॥ केम जीवंतां ए खमाय, करुं हवे केहवुं रे ॥ धिक् जीवित माहरुं जेण, नहीं उपाय रे ॥ एम करतां सेन कुमारने, मूर्छा थाय रे ॥ ३ ॥ करी वाय आशासना शांति, मती एम भाषे रे ॥ आरोग्य मणि वर रयण, अछे तुम पासे रे ॥ भलुं संभाख्युं तें नारी, हरषथी लेइ रे ॥ मणिरयण चाल्यो तव तास, शकुन शुभ देइ रे ॥ ४ ॥ कोइक कहे रहो चिरंजीव, शीघ्रे चाल्यो रे ॥ नरपति पासे जइ हाथ, ने पाय पखाल्यो रे ॥ छंट्यो मणिरयणे राय, शम्युं तव शूल रे ॥ थिर दांत थया गइ शीशनी, वेदना मूल रे ॥ ५ ॥ शम्यो श्वास ने उघड्यां नयण, संध्यो थइ साजी रे ॥ बोलवा लागो नृप जाम, सहु थया राजी रे ॥ आवी शक्ति ने उठ्यो राय, कुमर परशंस्यो रे ॥ राणीउं मंत्रि लह्या मोद, किणे नवि खींश्यो रे ॥ ६ ॥ नृप पूछे मुजने कांय, खबर नहीं एह रे ॥ उपगार कस्यो किणे मुज, भाखो तुमे तेह रे ॥ कह्युं जीवाणंदे सर्व, बोल्यो तव राय रे ॥ अमृत सम एह कुमार, मरण किम थाय रे ॥ ७ ॥ देव गुरु सुपसाये एह, कहे ते कुमार रे ॥ नृप भणे प्राण ए तुज, कहुं शुं वार वार रे ॥ कहे कुमर गुरु तुमे ताम, नृपति कहे साचुं रे ॥ जो गुरु तो वचन प्रमाण; करो अमे राचुं रे ॥ ८ ॥ कहे कुमर करुं तुम आण, कहे तव भूप रे ॥ जावुं नहीं मुजथी दूर, कहुं अनुरूप रे ॥ करे कुमर प्रमाण ते ताम, विसरजे कुमार रे ॥ तेडावी परिजन लोक, कहे निरधार रे ॥ ९ ॥ आवे कुमरने तेडवा कोय, तो मुज विण भाखे रे ॥ मत कहेजो कुमरने वात, सहुने एम दाखे रे ॥ एक दिन आव्यो मंत्रीपुत्र, अमरगुरु नाम रे ॥ थइ खबर भूपतिने ताम, तेड्यो निज ठाम रे ॥१०॥

कहे तेहने नरपति एम, वाल्हो मुझ एह रे ॥ इण पन्विजीउं मुझ पास, रहेवुं तुम गेह रे ॥ एम जाणी करजो तेम, सहु सुख पामे रे ॥ कहे अमरगुरु धन्य ए, तुम सरिखा कामे रे ॥ ११ ॥ जिम हुकम करो बो देव, करीशुं तेम रे ॥ जणवे हवे कुमरने नृप, अधिक धरी प्रेम रे ॥ जातां हवे कुमरनी पास, अमरगुरु चिंते रे ॥ नवि मूके कुमरने राय, अधिक गुणसंते रे ॥ १२ ॥ कयुं निज वश राज्य विसेने, तिणे न उपाय रे ॥ नृप दीक्षा लेतां मुझ, कही गया तांय रे ॥ राज्य हारशे एह विसेन, उद्धरशे सेन रे ॥ नैमित्तिआनो आदेश, अबे वली तेण रे ॥ १३ ॥ सामंतने दइ अपमान, उल्लंघे आचार रे ॥ बहु वाध्यो लोन्न असार, विसेन कुमार रे ॥ तिणे रहेवुं जुगतुं न अत्र, विचार ए कीध रे ॥ चरपुरुषे कुमरने ताम, वधाइ दीध रे ॥ १४ ॥ आववानो हुकम ते कीध, अनुक्रमे आव्या रे ॥ सेन कुमरे उठी ताम, मांहि पधराव्या रे ॥ पूबे एम कुशल बे तात, कुमरने दाखो रे ॥ कहे कुशल बे सहुने तोय, कहुं ते चित्त राखो रे ॥ १५ ॥ नृपतिए तुमने न दीठ, थयो वैराग्य रे ॥ तव संजमशुं मन लाय, महा सोन्नाग रे ॥ निज सुतने आपी राज्य, साथे परधान रे ॥ परिजनशुं संजम लीध, धरी शुन्न ध्यान रे ॥ १६ ॥ तव चिंते सेन कुमार, अहो मुझ राग रे ॥ न्नाइ अम कुलनी स्थिति एह, अंते वैराग रे ॥ कहे कुमर प्रजाने तेह, केहवा बे न्नाखो रे ॥ तव अमरगुरु कहे वात, थोमामां लाखो रे ॥ १७ ॥ नृपे लीधी प्रव्रज्या जाम, थयुं डुःख एह रे ॥ तुमे परदेशे गया तास, बीजुं डुःख तेह रे ॥ मन माने बे एम तेह, नहीं अम नाथ रे ॥ कहे सेन विसेन बे ते केम, प्रजा अनाथ रे ॥ १८ ॥ एहवें बींक्यो पन्हिहार, अमात्यसुत ताम रे ॥ कहे चिरंजीवो वली आप, फुरक्युं नेत्र वाम रे ॥ थइ चिंता कुमरने ताम, अहो शुं थाशे रे ॥ अथवा न्नलुं करशे देव, विघन सहु जाशे रे ॥ १९ ॥ कही शांतिमतीने तास, न्नोजन ने स्नान रे ॥ सुखथी दीये निज अधिकार, चढते नित्य वान रे ॥ नित्य खबर मगावे राज्य, तणी निज सार रे ॥ एक दिन शांतिमती नारीने, स्वप्न उदार रे ॥ २० ॥ कही सातमे खंमे ढाल, ते सोलमी सारी रे ॥ ए तो समरादित्यने रास, लागे घणुं प्यारी रे ॥

गुरु उत्तमविजयनो शिष्य, सुकोमल वाणी रे ॥ कहे पद्मविजय धरी प्यार, सुणो भवि प्राणी रे ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ४ए५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अंजन भ्रमरने अनुसरे, पत्र तणो नहीं पार; अंवक मन आणंदकरु, कल्पवृक्ष सुखकार ॥ १ ॥ स्वप्ने घणुं सोहामणो, चिंतित चिंता चूर; पेखे उदरमां पेसतो, शांतिमती सुसनूर ॥ २ ॥ जागी पतिने जणावती; तस फल दाखे तेह; सोभागी सुत होयशे, जगत नमावे जेह ॥ ३ ॥ सांभली धर्ममां सज होये, कांयक वीत्यो काल; पूरे मासे सुत प्रसवीयो; करे उंछव ततकाल ॥ ४ ॥ राय कुमर सहु रीझीआ, अमरसेन अभिधान; ठवीउं तेहनुं गजकुं, सुणो हवे थइ सावधान ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ चंपा नयरथी आवीयो, वात लावीयो रे ॥ एक दिन अनुचर एक ॥ वात ते सांभलो रे ॥ १ ॥ जोवा प्रवृत्ति राज्यनी, सुख काजनी रे ॥ मूक्यो अमरगुरु तास ॥ २ ॥ वा० ॥ हाली मुहाली विरचीआ, नवि अरचीआ रे ॥ जाणी अचलपुर नाथ ॥ ३ ॥ वा० ॥ मुक्तापीठे बल करी, चंपा पुरी रे ॥ लीधी थोडा दिन मांहि ॥ ४ ॥ वा० ॥ हाथ कर्यो भंमारने, अधिकारने रे ॥ हवे जाणो करो तेम ॥ ५ ॥ वा० ॥ विसेन नासीने गयो, दुःख बहु थयो रे ॥ तेहनी खबर नहीं कोय ॥ ६ ॥ वा० ॥ कोप्यो अमरगुरु सांभली, आवी वली रे ॥ कुमरने कहे अवदात ॥ ७ ॥ ॥ वा० ॥ बोले अमर्षथी एणी परे, कुण एम करे रे ॥ भाइ पराभव एम ॥ ८ ॥ वा० ॥ निज पदे ठवुं विसेनने, अरिसेनने रे ॥ भांजवुं तो खरी वात ॥ ए ॥ वा० ॥ दाहिण कर फुरक्यो तदा, जय कहे सदा रे ॥ बोल्यो तदा गजराज ॥ १० ॥ वा० ॥ कुमर कहे ए जीतीउं, दुःख वीतीउं रे ॥ नृपने करावे जाण ॥ ११ ॥ वा० ॥ मारे तिहां जावुं लहुं, तुमने कहुं रे ॥ कोप्यो राय अपार ॥ १२ ॥ वा० ॥ ए नहीं कुमरने परिभव्यो, मुझने हवो रे ॥ पण मुझ सेना साध्य ॥ १३ ॥ वा० ॥ अमरगुरु कहे साचलुं, भाख्युं भलुं रे ॥ पण कुमरे न खमाय ॥ १४ ॥ वा० ॥ समरकेतु नरपति कहे, चित्त गहगहे रे ॥ लशकर ल्यो अम साथ ॥ वा० ॥ १५ ॥

छत्र चामर मुकुटे करी, चढीउं करी रे ॥ कुंडल हार शोहंत ॥ १६ ॥ ॥ वा० ॥ सामग्री बहु सज करी, अमरष धरी रे ॥ शकुन मुहूर्त्त शुभ जोग ॥ १७ ॥ वा० ॥ चाल्यो अनुक्रमे आवीयो, सुख पावीयो रे ॥ देश सीमा छे जब ॥ १८ ॥ वा० ॥ मुक्तापीठने मोकल्यो, दूत एक भलो रे ॥ बोले विचक्षण बोल ॥ १९ ॥ वा० ॥ कहेवराव्युं ए मुज तणुं, शुं कहुं घणुं रे ॥ आपो राज्य उदार ॥ २० ॥ वा० ॥ एम तुम प्रीतडी वाधशे, नवि बाधशे रे ॥ नहीं तो करजे जुद्ध ॥ २१ ॥ वा० ॥ सांभली कोपे कलकल्यो, कहे मति चव्यो रे ॥ मूकवा लीधुं न राज्य ॥ २२ ॥ वा० ॥ जुद्धथी अप्रीति उपजे, बहु निपजे रे ॥ उत्तम सुभट संहार ॥ २३ ॥ वा० ॥ तोपण जुद्ध करुं अमे, सुणजो तुमे रे ॥ दूत कहे तव एम ॥ २४ ॥ वा० ॥ जमलोके जावा भणी, मति तुम तणी रे ॥ दीसे छे निरधार ॥ २५ ॥ ॥ वा० ॥ आवी कुमारने विनवे, जिम ते लवे रे ॥ जइ एकांते दूत ॥ ॥ २६ ॥ वा० ॥ सांभली ते पण कोपीयो, चित्त रोपीयो रे ॥ अमरष विरस अपार ॥ २७ ॥ वा० ॥ ढाल सत्तरमी ए भली, भवि सांभली रे ॥ सातमे खंडे रसाल ॥ २८ ॥ वा० ॥ सर्व गाथा ॥ ५२८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ भृकुटी चढावीने भणे, कोपे थइ विकराल; सौम्य वयण पण सहजथी, भीषण न शके भाली ॥ १ ॥ करने आस्फाली करे, वरण खलाते वाणी; एह मनोरथ अम अछे, हमची नहीं कोइ हाणि ॥ २ ॥ बिहु बलमां बीजे दिने, शोर करे संग्राम; सुभटने दीधा सामटा, सिरिपा बिहु शिर ठाम ॥ ३ ॥ दान बहु परे दीधलां, जाचक पाम्या जोर; रात्री गइ रवि उगीउं, सबलो मांड्यो सोर ॥ ४ ॥ मयगल गाजे मलपता, तुरंग घणा तेजाल; रथ आरोह्या राजवी, कर लेइ करवाल ॥ ५ ॥ सुभट थया तिहां सज घणा, कुंत तीर कर लेय; बिरुदावली बोली जते, वाजित्र बहु वाजेय ॥ ६ ॥ अमरष वशे आवी मल्या, वागे वीरनी हाक; केइक कायर कंपता, वारु सांभली वाक ॥ ७ ॥ ताकी मूके तीरने, खंडे केइ खरुप्प, छत्र ध्वजा केइ छेदता, सांचुं शूर सरुप्प ॥ ८ ॥ सुभटकबंध तिहां सामटा, रुधिरलित्त वर गात; नाचे नाटिकनी परे, विस्मय जन विख्यात ॥ ९ ॥ आमिषलोलुप आवीआ, कंक गृध्र ने काक; गगन ते छायो विह-

गशुं, बलती वहुली बाक ॥ १० ॥ वलवंती सेना वहु, सेन तणी सपराण; पण मुक्तापीठे प्रथम, जीत्यो सेन सुजाण ॥ ११ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ रमतां ते फाटो घाघरो रे, दश गज फाटो चीर रे ॥ हुंवे ॥ आवो रे ऊलगाणा ॥ ताहरी कांकणी रे ॥ कुंवे ॥ ए देशी ॥

॥ सेन प्रशंसी सुन्नटने रे, ऊठावे संग्राम रे ॥ करवा ॥ जाणे जमराजा उठ्यो निज घेर धरवा ॥ १ ॥ कुंत तीर तरवारना रे, घाले घात अपार रे ॥ तिणे ॥ मानुं कल्पांत काल आयो समय एणे ॥ २ ॥ रण तूर वाजे वेगशुं रे, करी कुंन्नस्थल न्नेद रे ॥ थाये ॥ कायर लोक केइ दूरथी पलाये ॥ ३ ॥ मुक्तापीठ लश्कर तणा रे, बेदे बत्र निशाण रे ॥ ताकी ॥ मुकुट बेदे केइ मदिराशुं बाकी ॥ ४ ॥ एम करतां विंटी लीये रे, मुक्तापीठने सेन रे ॥ राजा ॥ तोहे प्रहार करे शूर थइ जाजा ॥ ५ ॥ शूरसिद्ध पण चित्त चमकीया रे, देखी ए संग्राम रे ॥ वारु ॥ एहवे सेन हणे खड्ग दीदारू ॥ ६ ॥ पमीयो पृथवी ऊपरे रे, जय जयरव करे लोक रे ॥ मलीआ ॥ सेनकुंमर जश बोलवा रे हलीआ ॥ ७ ॥ मंगलतूर वजावीआं रे, सेन आव्यो तस पास ॥ गुण राणो ॥ मुक्तापीठ देखी चित्त हरखाणो ॥ ८ ॥ वींजणे वायरो वींजीउं रे, चंदन सिंच्यां तास रे ॥ अंगे ॥ चेतना वली थइ स्वस्थता सुरंगे ॥ ए ॥ कुमर कहे रुडुं कर्युं रे, न्नूपने घटतुं जेह रे ॥ कीधुं ॥ दीनपणुं तुमे चित्तमां न लीधुं ॥ १० ॥ पूर्वपुरुष तें अजवालीआ रे, में लीधुं मुज राज्य रे ॥ न्नाइ ॥ ताहरुं तुज कुशलुं रहो सदाइ ॥ ११ ॥ तुं मुज न्नाइ समोवडे रे, लाव्यो निज आवास रे ॥ माने ॥ करी वधाइ वोलावीउं वहु माने ॥ १२ ॥ अमरगुरुने कुमर कहे रे, लावो विसेन न्नूपाल रे ॥ खोली ॥ थापो चंपाए चित्त मांहि तोली ॥ १३ ॥ अमरगुरु कहे तिम करुं रे, पण रहेजो तुमे चंप रे ॥ स्वामी ॥ सेन कहे तव वात अन्निरामी ॥ १४ ॥ रहेशुं चंपाए खरा रे, पण नृप तो विसेन रे ॥ जाणो ॥ नरपतिए जिणे कीधलो बे राणो ॥ १५ ॥ वात प्रमाण करी हवे रे, मोकले निज नर एम रे ॥ न्नाखी ॥ एम कहे बे तुम देवहित राखी ॥ १६ ॥ पूर्वजनुं ए राज्य बे रे, न्नोगवो आवी एथ रे ॥ न्नाइ ॥ ते पण गया तस पास सुखदाइ

॥ १७ ॥ सेन गया चंपा भणी रे, महाजन आव्युं ताम रे ॥ साहामुं ॥ पाउ धारो अमे जेम सुख पामुं ॥ १८ ॥ सेन कहे किम आवीये रे, विना विसेन भूपाल रे ॥ अमे ॥ महाजन कहे प्रभु शुं कहो छो तुमे ॥ १९ ॥ अम भवितव्यता एहवी रे, एम चिंतवी कहे तेह रे ॥ परजा ॥ अम पुण्ये अमे एहवाज सरजा ॥ २० ॥ नगर बाहिर आवासीआ रे, केइक दिन गया ताम रे ॥ आया ॥ विसेन पासे नर जे पठाया ॥ २१ ॥ अमरगुरुने ते कहे रे, कयंगला नयरीए तेह रे ॥ दीठो ॥ तिणे पण सांभल्यो सेन जे उक्किठो ॥ २२ ॥ अमे पण जइने भाखीउं रे, तुमचो जे समाचार ते ॥ आगे ॥ सांभली ते अंगोअंगथी रे लागे ॥ २३ ॥ दुभाणो मनथी घणुं रे, कमलाणुं मुख तास रे ॥ पापे ॥ मछरथी ग्रह्यो तेह सुणो आपें ॥ २४ ॥ बोली न शक्यो वयणथी रे, किम किम करी कहे एम रे ॥ वात ॥ पर भुजबलथी राज्य ए आयात ॥ २५ ॥ ते नवि भोगवुं हुं किमे रे, जाउ तुमे निज ठाम शाने ॥ आया ॥ फरी मत आवजो शुं कहुं भाया ॥ २६ ॥ हवे जिम जाणो तिम करो रे, चिंतवे ताम अमात्य रे ॥ चित्ते ॥ राज्य योग्य नहीं एह अनिते ॥ २७ ॥ आवी कुमरने कह्युं रे, कुमर बोल्या ताम रे ॥ वाणी ॥ तात भाइ विना वातफी विराणी ॥ २८ ॥ अंधकारमां नाचीआ रे, श्यो गुण राज्यमां आज रे ॥ धारो ॥ अमरगुरु कहे बुद्धिनो भंभारो ॥ २९ ॥ प्रजा पण जे पालवी रे, महापुरुषनो धर्म एह ॥ सारो ॥ कुमर कहे ए निज पुण्यथी विचारो ॥ ३० ॥ सातमे खंडे सोहामणी रे, एह अढारमी ढाल रे ॥ भाखी ॥ पद्म श्रोता सुणो चित्त थिर राखी ॥ ३१ ॥ सर्व गाथा ॥ ५७०॥

॥ दोहा ॥

॥ हरिसेन राजऋषि हवे, काका सेन कुमार; सघलो व्यतिकर सांभली, चित्तमां करे विचार ॥ १ ॥ योग्य संजमने जाणीये, अधिकरण कह्युं एण; उद्धरीये एह आतमा, करुणा तस करणेण ॥ २ ॥ साथे साधु अनेकथी, आव्या तिणे उद्यान; वनपालके अवनीपति, विनवीयो धरी वान ॥ ३ ॥ दान देइ वंदन भणी, अमरगुरुशुं आय; नष्टशोक उद्यानमां, दीठा मुनि सुखदाय ॥ ४ ॥ ब्रह्मचारी वरुभागीया, संजत सहु शिरदार; आणा श्री अरिहंतनी, निर्वहेतां निरधार ॥ ५ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ जंबु धाइ पुष्करा ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नत्रयी आराधतां, मोह तिमिरभरनाश हो ॥ मुनिवर ॥ निरतिचार चरण धरे, नवि पभता मोहपाश हो ॥ मुनि० ॥ १ ॥ एहवा मुनि नित्य वंदीये ॥ ए आंकणी ॥ जेह निरंजन शंख ज्युं, भावना भावता वार हो ॥ मु० ॥ शारद जल ज्युं हृदयथी, प्रणमुं ते अणगार हो ॥ मु० ॥ २ ॥ एह० ॥ शिष्यने चिंतामणि समा, मुक्तिमारग मूर्त्तिमंत हो ॥ मु० ॥ शांति सुधारस जलनीधि, वंद्या ते भगवंत हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ एह० ॥ धर्मलाभ दीधो धुरे, रोमांचित ते कुमार हो ॥ मु० ॥ आणंद आंसु आव्यां तदा, मुनि कहे सुण तुं कुमार हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ एह० ॥ भाव धरम परे ताहरी, वात सुंदर सुविचार हो ॥ मु० ॥ तुऊ निर्वेदे मुनिपणुं, आव्युं मुऊ ए वार हो ॥ मु० ॥ ५ ॥ एह० ॥ एह असार संसारमां, संजम तेहज सार हो ॥ मु० ॥ जीवित एह मानव तणुं, केवल क्लेश आधार हो ॥ मु० ॥ ६ ॥ एह० ॥ द्रव्य उपार्जन क्लेश जे, नवि लहीये तस पार हो ॥ मु० ॥ देव दानवने पण सदा, मृत्यु तणो शिर मार हो ॥ मु० ॥ ७ ॥ एह० ॥ करवो प्रमाद जे थोमलो, ते पण अनरथमूल हो ॥ मु० ॥ गुरुभाषित कहुं तेहनो, संबंध आमूल चूल हो ॥ मु० ॥ ८ ॥ एह० ॥ एहज जंबु भरतमां, उत्तरपंथ अपार हो ॥ मु० ॥ वर्द्धनापुरमां राजीयो, अजितवर्द्धन अवधार हो ॥ मु० ॥ ९ ॥ एह० ॥ सद्धम नाम गाथापति, चंदा तेहनी नार हो ॥ मु० ॥ सर्ग नामे सुत तेहनो, निर्धन तेह अपार हो ॥ मु० ॥ १० ॥ एह० ॥ सद्धम मरण लह्यो हवे, कीधां मरणनां काम हो ॥ मु० ॥ आजीविका हेते करे, चंदा परघर काम हो ॥ मु० ॥ ११ ॥ एह० ॥ अटवी मांहिथी लावतो, इंधण साग प्रमुख हो ॥ मु० ॥ विक्रयथी आजीविका, एम दिन काढे दुःख हो ॥ मु० ॥ १२ ॥ एह० ॥ एक पामोशी तेहने, पासंम नामे शेठ हो ॥ मु० ॥ आव्यो जमाइ तस घरे, तेहनी करवा वेठ हो ॥ मु० ॥ १३ ॥ एह० ॥ बोलावी चंदा तदा, पाणी भरण निमित्त हो ॥ मु० ॥ पुत्र भूख्यो घरे आवशे, चिंतन धारी चित्त हो ॥ मु० ॥ १४ ॥ एह० ॥ भोजन शींके थापीने, कटिका देइ दुवार हो ॥ मु० ॥ स्नानादिकना भय थकी, चंदा चाली जिवार हो ॥ मु० ॥ १५ ॥

एह० ॥ सर्ग तुरत आव्यो तदा, मूक्यो इंधण नार हो ॥ मु० ॥ मात खोली पण नवि जमी, करतो कोप अपार हो ॥ मु० ॥ १६ ॥ एह० ॥ काम कस्युं हवे शेठनुं, पण नवि दीधुं कांय हो ॥ मु० ॥ आवी निज घर जेटले, करती महा विसाय हो ॥ मु० ॥ १७ ॥ एह० ॥ दीनमुखी देखी करी, कोपथी बोल्यो सग्ग हो ॥ मु० ॥ केम शूलीए तुज दीधली, नूखपीमा अम लग्ग हो॥ मु० ॥ १८ ॥ एह० ॥ ते केम तुजने विसरयुं, तव तस बोली मात हो ॥ मु० ॥ हाथ कपाणा ताहरा, एह शींके रह्युं नात हो ॥ मु० ॥ १९ ॥ एह० ॥ लेइने केम खाधुं नहीं, एहवां वचन उच्चार हो ॥ मु० ॥ करतां कर्म बांध्यां तिणे, जास विपाक अपार हो ॥ मु० ॥ २० ॥ एह० ॥ एक दिन कर्मविचित्रथी, नावी नावने जोग हो ॥ मु० ॥ बोधिबीज पाम्यां तिहां, मानतुंगसूरि संजोग हो ॥ मु० चरण धर्म वली पमिवज्यां, गुणगण केरां धाम हो ॥ मु० ॥ २२ ॥ एह० ॥ करीय संलेषणा ठेहडे, आगम उक्त विधान हो ॥ मु० ॥ काल करीने उपनां, दोय ते स्वर्ग विमान हो ॥ मु० ॥ २३ ॥ एह० ॥ समरादित्यचरित्रमां, पद्मविजय कही ढाल हो ॥ मु० ॥ सातमे खंमे सोहामणी, उंगणीशमी सुविशाल हो ॥ मु० ॥ २४ ॥ एह० ॥ सर्व गाथा ॥ ५०० ॥

॥ दोहा ॥

॥ तामलिप्ति इण नरतमां, नयरी द्रव्य निधान; कुमारदेव इन्य-कामिनी, जुंजीआ नाम जुवान ॥ १ ॥ सर्गदेव हवे स्वर्गथी, आवी लीये अवतार; तेहनी कुखे ततक्षणे, जन्म थयो क्रमे ज्यार ॥ २ ॥ अरुणदेव अनिधा ठव्युं, क्रमे क्रमे थयो कुमार; चंदा इण अवसरे चवी, सुरवरथी सुविचार॥ ३ ॥ नामे पाम्लापथ नयर, शेठ जसादित्य सार; अद्भुत नारी इलुआ, तस कुखे अवतार ॥ ४ ॥ पुत्री अनुक्रमे प्रसवती, देइणि नाम ते दीध; अनुक्रमे दीधी अरुणने, सघलुं नावी सिद्ध ॥ ५ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ विधाता वैरिणी रे ढठीमां शुं रे लख्युं रे ॥ ए देशी ॥

॥ विधाता वांको जाणो रे, जुउं शुं शुं रे थाये रे ॥ परण्या विण चढीउं ज्याजे रे, अरुणदेव द्रव्यने ध्याये रे ॥ १ ॥ कमाहदीपे गया कमावा रे, कमाइ ते रे वलीउं रे॥ ज्याज ते वाटमां नांगुं रे, कर्मे जुउं शुं रे

थयुं रे ॥ आव्युं एक पाटीयुं हाथे रे, तिणे दुःख सहुए गयुं रे॥ २ ॥ महेसर साथे बीजो रे, ते पण तिहां सायर तरीयो रे ॥ आव्या जव सायर कांठे रे, पामलावह बाहिर चरीउं रे ॥ ३ ॥ महेसर तिहां बोल्यो रे, तुमारे सासरे जइये रे ॥ कुंअर तव इणी परे जाखे रे, इणी वेला एम किम कहीये रे ॥ ४ ॥ तव ते कहे बेसो बाहिर रे, नयरमां हुं रे जाशुं रे ॥ जोजन हुं जइने आणुं रे, कहे ते सुखमां ठाशुं रे ॥ ५ ॥ देवकुलमां जइने सुतो रे, थाके करी उंघ्यो सारो रे ॥ महेसर तो लेवा गयो आहार रे, हाट शेरीए फिरतो अपारो रे ॥ ६ ॥ इण अवसर उदये आव्युं रे, देइणिने कर्म बंधाणुं रे ॥ निज जवन उद्याने बेठी रे, तस्करनुं थयुं रे टाणुं रे ॥ ७ ॥ कटक जुगल बहु मूलां रे, तस्कर तिहां लेवा आव्यो रे ॥ गाढां तिणे नवि नीकलीआं रे, साथे छुरीका रे लाव्यो रे ॥ ॥ ८ ॥ तेणे कापी हाथने लीधां रे, लेइ नासवा रे मांड्युं रे ॥ वनपालीए बुंबज पाडी रे, जाणे आव्युं रे धाडुं रे ॥ ए ॥ कोटवाल सुणी उजाणो रे, चोर तो आगे रे नासे रे ॥ नासतां हवे थाको चोर रे, जाएयुं हवे किहां रे जाशे रे ॥ १० ॥ पेठो देवकुल मांहि रे, अरुणदेव जिहां रे सुतो रे ॥ उदे तस कर्म आव्युं रे, सहु जन कर्मे खुतो रे ॥ ११ ॥ चोरे चित्त मांहि चिंती रे, कडां मूक्यां तेहनी पासे रे ॥ पोते शिखर अंधारे छपायो रे, छुरी मूकी हीणे आसे रे ॥१२॥ उठ्यो अरुणदेव तव दीठां रे, जाण्युं देवता रे तुठो रे ॥ लेइ फांटि मांहि संगोपे रे, छुरी देखी चिंते अपुठो रे ॥ १३ ॥ तव आव्यो तिहां तलार रे, मनमां क्रोजना रे थइ रे ॥ कहे किहां जाइश दुराचारी रे, छुरीका पडी रे गइ रे ॥ १४ ॥ पकड्यो तव बोले तेह रे, में अपराध श्यो रे कीधो रे ॥ ते कहे द्यो कटकनो जोडो रे, कहे अरुण न में रे लीधो रे ॥ १५ ॥ आणी क्रोधने ताड्यो तिणे रे, तव पडीआं कटक जूपीते रे ॥ उलख्या कोटवाले ताम रे, जूपति पुर धरीउं नीठे रे ॥१६॥ संजलाव्यो व्यतिकर राय रे, दीठो दव्यशुं रे तेह रे॥ कहे द्यो शूलीए ए चोर रे, तलवर पण सांजली एह रे ॥ १७ ॥ लाव्यो जिहां शूलीनुं ठाम रे, शूलीए ए रे दीधो रे ॥ इण अवसर जोजन लाव्यो रे, देवकुलमां ए रे सीधो रे ॥ १८ ॥ महेसरे खोल घणी कीधी रे, न दीठो कोइ रे ठामे रे ॥ तव आसनदेशे जोयो रे, न लह्यो

कोइ रे नामे रे ॥ १९॥ माली वनवासीने पूछे रे, एहवो किहां रे जाल्यो रे ॥ ते कहे नवि दीठो कोइ रे, पण एक चोर झाल्यो रे॥२०॥ हमणां तस मास्यो जाइ रे, कदा तिहां रे गयो रे ॥ कौतुकनो लीधो जाय रे, सुणी शोक रे थयो रे ॥ २१ ॥ आकुल व्याकुल घणो थाये रे, जाइ ए रे शुं कहुं रे ॥ जाइ मुझने ठाम देखाडो रे, मारुं हइडुं रे दहुं रे ॥ २२ ॥ तव ठाम देखाड्युं तिणे रे, तिहां दोजाणो आयो रे॥ शूलीए शेठपुत्रने दीठो रे, अरुणदेव रे जायो रे ॥ २३ ॥ एम कर्मविचित्रता जूउ रे, सातमे खंडे ते सुणो रे ॥ कहे पद्म वीशमी ढाले रे, कस्यां कर्म ए रे मुणो रे ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ६२० ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर्मविपाक कडुआ घणा, मूर्छा पामे मन्न; पडीयो पृथवी उपरे, तरुफडतो ते तन्न ॥ १ ॥ प्रेक्षक लोक आव्या पछे, पूछे झाली पाणी; शो ए कहो संबंध छे, आखो उत्तर आणी ॥ २ ॥ महेसर बहुले मोहथी, बोले गद्गद बोल; वाट उठी ए वातथी, अवलो थयो अतोल ॥ ३ ॥ तामलिप्तिए तिलक सम, कुमारदेव कहेवाय; तेहनो सुत तुमे जाणजो, अरुणदेव अभिधाय ॥ ४ ॥ इण नयरीवासी अवल, जसादित्य जग जाण; जामाता तस जाणजो, आव्यो इणहीज ठाण ॥ ५ ॥ जिहाज भांगुं प्रिय जन गया, मनमां धरतो माम; न गयो सुसराने घरे, अवसर जाणी आम ॥ ६ ॥ बेसास्यो में बाहिरे, पुरमां गयो पिछाण; आहार लेइने आवीउं, ठावो खोल्यो ठाण ॥ ७ ॥ पापउदय परगट थयो, आव्यो खोलतो आंहि; दीठो एणी परे दृष्टिथी, किहां ए शूली क्यांहि ॥ ८ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ इम म्हारा घणुं सवाइ ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ एम कहेतां मूरछा नडीउं, पृथवी उपरे ते पडीउं रे ॥ भविका कर्म तणी गति न्यारी, न शके कोइ कर्मने वारी रे ॥ भ० ॥ पूरानी परे तरुफडतो, उठ्यो केमहीक लडथडतो रे॥ १ ॥ भ० ॥ निज वध करवाने मांडे, लेइ पत्थर शिरशुं पछाडे रे ॥ भ० ॥ प्रेक्षक लोके धरी राख्यो, इणी परे

जे संबंध दाख्यो रे ॥ २ ॥ ज० ॥ नगरीमां थयो विस्तार, जसादित्ये सुएयो अधिकार रे ॥ ज० ॥ निज पुत्री लेइ तिहां आयो, दीठो अरुणदेव मन जायो रे ॥ ३ ॥ ज० ॥ अहो अहो ए वात ते केहवी, शेठपुत्रनी जोवा जेहवी रे ॥ ज० ॥ मूर्ग लह्यां डुहिता ने तात, ढांळ्यां चंदन वींजणे वात रे ॥ ४ ॥ ज० ॥ काढो मुज कष्ट रे जाय, नवि शोक संताप खमाय रे ॥ ज० ॥ मरशुं निश्चय ततकाल, सुणी वात ए पृथवीपाल रे ॥ ५ ॥ ज० ॥ कोटवालशुं करतो रीश, कोटवाल कहे सुणो ईश रे ॥ ज० ॥ चोरित वस्तुशुं एह, पकड्यो अमे करीये केह रे ॥ ६ ॥ ज० ॥ जसादित्य पासे वधठाम, नरपति आवी जणे आम रे ॥ ज० ॥ जाइ दैवनो ए अपराध, अम बुद्धि तणो नहीं बाध रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ कोइ जावी जाव विचार, एम बोले जूजरतार रे ॥ ज० ॥ शूलीएथी उतास्यो तेह, पण वेदन अतिशय देह रे ॥ ८ ॥ ज० ॥ प्रतिबोधनो अवसर जाणी, आव्या सूरि चउनाणी रे ॥ ज० ॥ अमरेसर गणधर नाम, तप अतिशयथी अजिराम रे ॥ ए ॥ ज० ॥ सुरवर पूजित गतपाप, सहुना गया शोक संताप रे ॥ ज० ॥ देवताए पृथवी समारी, गंधोदक वरसे धारी रे ॥ १० ॥ ज० ॥ वली कनककमल पण विरचे, फूल वरसे ने मुनिने अरचे रे ॥ ज० ॥ तिहां बेसीने देशना देता, उपदेश मांहि एम कहेता रे ॥ ११ ॥ ज० ॥ मोहनिद्रा म करो प्राणी, धर्म जागरणे जागो जाणी रे ॥ ज० ॥ तजो पापथानक अढारो, दशविध जतिधर्मने धारो रे ॥ १२ ॥ ज० ॥ तजीये वयरी अंतरंग, डुःख दीये परमाद प्रसंग रे ॥ ज० ॥ थोमो पण करीये पमाय, तेहथी वहु कर्म बंधाय रे ॥ १३ ॥ ज० ॥ डुःखदायक तास विवाग, मानस तनु डुःख अताग रे ॥ ज० ॥ देइणि ने अरुणदेव जेम, तव पूछे नरपति केम रे ॥ १४ ॥ तव सूरि पूर्व संबंध, विस्तारथी कहे प्रबंध रे ॥ ज० ॥ जो एटला डुःकृत केरो, विपाक आव्यो अधिकेरो रे ॥ १५ ॥ ज० ॥ एम सांजली केइ प्रतिबूझ्या, संवेगथी कर्मशुं जूझ्या रे ॥ ज० ॥ अरुणदेव देइणि दोय, मुर्छागत ततक्षण होय रे ॥ १६ ॥ ज० ॥ चेतना लही पाम्यां ज्ञान, जातिसमरण शुज ध्यान रे ॥ ज० ॥ आदान निदान सहु जाएयो, शुज परिणामे परमाएयो रे ॥ १७ ॥ ज० ॥ प्रज्जु जे तुमे जाख्युं तेम, अमे ज्ञाने दीठुं

एम रे ॥ ज० ॥ अमे पाम्या जिनवर वोधि, अणसण देइ करो अम शोधि रे ॥ १८ ॥ ज० ॥ जरा जनम मरण रोग शोग, टालो संसार संजोग रे ॥ ज० ॥ गुरु कहे ए जुगती वात, डुर्गति जाये सद्गति थात रे ॥ १९ ॥ ज० ॥ सुर नर सुख साधे एह, निरवाण दीये वली जेह रे ॥ ज० ॥ अणसण दीये नृप शेठ साखे, सहु धन्य धन्य मुखे जाखे रे ॥ २० ॥ ज० ॥ कहे विहु जण गुरुने स्वामी, वली कहो कांय अंतरजामी रे ॥ ज० ॥ गुरु कहे तुमे सघलुं कीधुं, मानवजवनुं फल लीधुं रे ॥ २१ ॥ ज० ज० ॥ वली ठांमो ममत डुःखमूल, मैत्री सहुशुं अनुकूल रे ॥ ज० ॥ पूरव डुःकृत डुगंठो, एक रत्नत्रयीने वंठो रे ॥ २२ ॥ ज० ॥ परमात्मस्वरूप विचारो, सुणी तिमज करे सुप्रकारो रे ॥ ज० ॥ इण अवसर कहे जूपाल, संवेग थकी सुरसाल रे ॥ २३ ॥ ज० ॥ एटलानां ए फल वतलावो, तो अमने कुण गति जावो रे ॥ ज० ॥ परमादवशे अमे पमीआ, अमे कर्म्मजंजीरशुं जमीआ रे ॥ २४ ॥ ज० ॥ गुरु कहे कर्मनी स्थिति एहवी, फले अधिक अधिक वमु जेहवी रे ॥ ज० ॥ जो अधिक अधिक वली वांधे, तो नरक तिरि गति साधे रे ॥ २५ ॥ ज० ॥ तिहां डुःख घणां जोगवशे, वहु काल लगे जोगवशे रे ॥ ज० ॥ ते लेखे ए थोडुं जाणो, तिणे जाखे त्रिजुवनराणो रे ॥ २६ ॥ ज० ॥ विष व्याधि जलण ने साप, शत्रुसंग दीये डुःख व्याप रे ॥ ज० ॥ इह जव डुःख पण परमाद, इह परजव आपे विषाद रे ॥ २७ ॥ ज० ॥ परमादथी करत अकाज, गुरुलाघव न गणे काज रे ॥ ज० ॥ एम तत्त्वातत्त्व विचार, गुरु उपर न करे प्यार रे ॥ २८ ॥ ज० ॥ एम संची वहुलां पाप, सहे वेदन नरके आप रे ॥ ज० ॥ पूछे नृप तास उपाय, तव सम्यग् कहे गुरुराय रे ॥ २९ ॥ ज० ॥ एम सातमे खंमे जाणो, एकवीशमी ढाल प्रमाणो रे ॥ ज० ॥ गुरु उत्तम एणी परे जाखे, नृप पद्मविजय चित्त राखे रे ॥ ३० ॥ ज० ॥ सर्व गाथा ॥ ६६६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सर्व आरंज तजे सदा, चारित्र पाले चित्त; आराधे अप्रमादने, नाणवृद्धि होय नित्य ॥ १ ॥ मिथ्यामत मुंके नहीं, वर्द्धमान संवेग; पूरव संचित खेपवे, वली नासे अविवेग ॥ २ ॥ निमित्त विना वांधे नहीं, नवां कर्म निर्धार; अनुक्रमे केवल उपजे, शाश्वत सुख श्रीकार ॥ ३ ॥

राय कहे सूरीशने, कस्यो न केम अप्रमाद; एणे अप्रमाद आराधीर्ठ, पण बहुलो परमाद ॥ ४ ॥ अतिशय अप्रमादीपणुं, करे कर्मनो अंत; पण थोमा अप्रमादथी, मोड्यां कर्म महंत ॥ ५ ॥ आदरीर्ठ अप्रमादने, अशुभ टल्यो अनुबंध; बीज अप्रमादनुं बोश्युं, स्तवीये ए संबंध ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ मारे घरे आवजो रे रसिया ॥ ए देशी ॥

॥ तिणे कारण प्रभुजी भाखे, करवो नहीं परमाद सराखे ॥ दुःकृत निंदा रे करीये, इणी परे भवसायर सुखे तरीये ॥ १ ॥ ति० ॥ आलोइये गुरु पासे, प्रायश्चित्त विधिपूर्वक अभ्यासे ॥ एम सुणी बूझ्यो रे राय, कारागार विमुक्ति कराय ॥ २ ॥ ति० ॥ जसादित्य माहेश्वर साथे, चारित्र लीये नृप सद्गुरु हाथे ॥ एह सुणी अधिकार, कटक चोर आव्यो तिणे ठार ॥ ३ ॥ ति० ॥ पश्चात्ताप रे करंतो, गुरुने इणी परे तेह वदंतो ॥ में पापीए ए काम, कीधुं निद्धंधस परिणाम ॥ ४ ॥ ति० ॥ धर्म उवेखी रे सार, अधरमनो कीधो अधिकार ॥ मानवभव एहेले खोयो, दुःखपरंपरानो मुख जोयो ॥ ५ ॥ ति० ॥ स्यो बहु वचनविन्यास, प्राणत्याग करवो तुम पास ॥ कहो प्रभु जोग्य जे माहरे, दीधो गुरु उपयोग तिवारे ॥ ६ ॥ ति० ॥ लौकिक सुंदरता भाव्यो, पण नवि भव वैराग्य ते आव्यो ॥ एम विचारी रे तास, दीधुं अणसण शुभ अभ्यास ॥ ७ ॥ ति० ॥ दीधो वली नवकार, चोरे पण कस्यो अंगीकार ॥ निंद्यो आतम आप, गुरु वंदीने धोयां पाप ॥ ८ ॥ ति० ॥ अरुणदेवे कस्यो काल, देइणि तस्कर पण ततकाल ॥ त्रणे सुरवर रे थाय, तिणे सुण सेन कुमरजी राय ॥ ९ ॥ ॥ ति० ॥ राज्य असारने काम, कीधो शे कामे संग्राम ॥ जुगतुं काम न कीधुं, सेन कुमर पण बोल्यो सीधुं ॥ १० ॥ ति० ॥ कुल पराभव न सहाणो, तिणे असुंदर कार्य कराणो ॥ जाएयुं हवे तुम पास, दीक्षाथी उपशम होय तास ॥ ११ ॥ ति० ॥ आपो जोग्य जो जाणो, गुरु कहे योग्य तणे शिर ठाणो ॥ तजवा जोग्य संसार, कीजे लघु कारय निरधार ॥ ॥ १२ ॥ ति० ॥ सेन कुमर कहे साच, सुणो अमात्य गुरुनुं वाच ॥ अनुमति द्यो तुमे सारी, बोल्यो ताम अमात्य विचारी ॥ १३ ॥ ति० ॥ विघन म होयो रे तुमने, आठ दिवस द्यो माग्या अमने ॥ अट्ठाइमहोत्सव रे

कीधो, दान अतुल जाचकने दीधो ॥ १४ ॥ ति० ॥ राज्य ठव्यो निज पुत्र, अमरसेन राखे घरसूत्र ॥ शुज्ञ लगने शुज्ञ वार, शांतिमती पण साथे नारी ॥ १५ ॥ ति० ॥ अमरगुरु मुखमंती, शकुन सवे अनुकूल निपंती ॥ हरिसेन गुरुने रे पासे, दीक्षा लेइने श्रुतअज्यासे ॥ १६ ॥ ति० ॥ अनुक्रमे सूत्र ने किरिया, अर्थ धस्यो हूआ गुणदरीआ ॥ तुलना जिनकल्प केरी, करे गुरुआणा लहीय जलेरी ॥ १७ ॥ ति० ॥ पांच प्रकारनी तेह, तप ने १ सूत्र २ अर्थ ३ गुणगेह ॥ एकांत ४ बल ५ पंच जाणो, पाठांतर बीजो परमाणो ॥ १८ ॥ यतः ॥ "तवेण सुत्तेण अत्थेणं, एगंतेण बलेण य ॥ तुलणा पंचहा वुत्ता, जिणकप्पं पडिवज्जउं ॥ १ ॥ अत्र पाठांतरं विशेषावश्यके ॥ तवेण सुत्तेण सत्तेण, एगत्तेण बलेण य ॥ इत्यादि ॥ तत्र सत्वजावना पंचधा" पहेली उपासरा मांहि, बीजी बाहिर धरत उठाहि ॥ त्रीजी चोकमां रहेतां, चोथी शून्य घरमां सहेतां ॥ १९ ॥ ति० ॥ पांचमी समशाने जाय, सत्वजावना इणी परे थाय ॥ बृहत्कल्पमां विस्तार, जोजो इहां थाय ग्रंथ अपार ॥ २० ॥ ति० ॥ यतः ॥ "पढमा उवस्सयंमी, बिया बाहिं तईया चउक्कंमी ॥ सुन्नहरंमी चउत्थी, तह पंचमीया मसाणंमी ॥ १ ॥ कीधी तुलना रे एम, टाले संग सहुशुं प्रेम ॥ ग्रामे एकज राति, नगरे पंच राति विख्यात ॥ २१ ॥ ति० ॥ एक दिन विचरंता आया, कोल्लाग सन्निवेशे मुनिराया ॥ काउस्सग्ग रह्या एक ठामे, प्रणमो ए मुनि नित्य शिर नामी ॥ २२ ॥ ति० ॥ सातमे खंडे रे ढाल, बावीशमी जाखी सुरसाल ॥ समरादित्यने रास, पद्मविजय कहे धरी उल्लास ॥ ॥ २३ ॥ ति० ॥ सर्व गाथा ॥ ६९५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राज्य विना हवे रुवडे, नाम विसेन कुमार; इण अवसर तिहां आवीयो, धरतो द्वेष अपार ॥ १ ॥ मुनिवर दीठा मोटिका, पण कोइ कर्मप्रमाण; कोपे चित्तमां कलकल्यो, बोले इणी परे वाणी ॥ २ ॥ दीठो वली दुष्टे करी, नहीं मुज पापनो पार; अथवा आ अवसर जलो, एकाकी अवधारी ॥ ३ ॥ एकांते आयुरू नहीं, पहोचाडुं जम पाणि; मनोरथ पूरुं मन तणा, अथवा मुज एम हाणि ॥ ४ ॥ निज कुलपुत्रने निरखतां, कहो मारुं कोण रीति; वध करशुं वली अवसरे, चाल्यो एम धरी चित्त ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥
॥ पट्टोधर पाटीये पधारो ॥ ए देशी ॥

॥ नवि कोइने व्यतिकर जाख्यो, ए द्वेष हैयामां राख्यो ॥ मुनि समतारस चित्त चाख्यो ॥ १ ॥ जविजन वंदीये मुनि जावे, जिम जव जव पातिक जावे ॥ जवि० ॥ ए आंकणी ॥ देवकुल पीठिकाए सूतो, सूरज क्षेत्रांतरे पोहोतो ॥ आयो रातिने जाग निचंतो ॥ २ ॥ ज० ॥ गयो खड्ग लेइ मध्यराते, मुनिवर पासे एकांते ॥ ध्यान निश्चल मुनिवर ध्याते ॥ ॥ ३ ॥ ज० ॥ एक अरतिने बीजुं अज्ञान, ज्वल्यो क्रोधने दीप्यो मान ॥ काढ्युं खड्ग जुजंग समान ॥ ४ ॥ ज० ॥ कहे सांजल रे डुराचार, जीवलोक नयणे अवधारी ॥ हुं मारीश तुज निरधार ॥ ५ ॥ ज० ॥ ध्यानमां न सुणे मुनिराय, पण क्षेत्रदेवी तिणे ठाय ॥ सुणे गुणरागिणी चित्त लाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ विसेन कुमारने कोपी, खड्ग वाहे जदा लाज लोपी ॥ अपहरी लीये दोष आरोपी ॥ ७ ॥ ज० ॥ थंज्यो वली तेहज ठाम, कहे धिग् संक्लेश परिणाम ॥ अनार्यपणानुं धाम ॥ ८ ॥ ज० ॥ सम शत्रु मित्र मुनि एह, वासी चंदन सम देह ॥ ते उपर केम करे एह ॥ ए ॥ ज० ॥ तुज मुख नवि जोवुं सार, दया आणीने मूक्यो तिवार ॥ पण तीव्र करम थयां ल्हार ॥ १० ॥ ज० ॥ न गणे ते देववचन्न, फरी मारण धाये तन्न ॥ देवताए जाणी शुज पन्न ॥ ११ ॥ ज० ॥ लोही वमतो नाख्यो तास, मुनि अवग्रह जाण्यो पास ॥ क्षोजना लही उठ्यो तास ॥ १२ ॥ ज० ॥ अवग्रहथी काढ्यो बाहिरे, मूक्यो वनमां जइ त्यारे ॥ अदृश थया देवता ज्यारे ॥ १३ ॥ ज० ॥ पापनी परिणति जुउ माहारी, नवि शकीउं एहने मारी ॥ विसेन ते एम विचारी ॥ १४ ॥ ज० ॥ एम करतो रुद्र ते ध्यान, अमरष धरतो अज्ञान ॥ थयुं नारक आयुबंधाण ॥ १५ ॥ ज० ॥ अजिनिवेशथी दृढ थाय, क्रमे कोइक काल गमाय ॥ परिजन सहु निज घर जाय ॥ १६ ॥ ज० ॥ पीमा बहु जूखनी खमतो, एकाकी मारग चलतो ॥ चोप्पीला अटवीमां जमतो ॥ १७ ॥ ज० ॥ जिल्ल गृध्र आवणने काज, मांस जेलुं करे तस व्याज ॥ मार्यो तिणे विसेण राज ॥ १८ ॥ ज० ॥ मरी बठी नरगे जायो, मुनिआशातन फल पायो ॥ बावीश सागर तस आयो ॥ १ए ॥ ज० ॥ हवे सेनराय

अणगार, पाली संजम निरतिचार ॥ करी संलेषणा तजे आहार ॥ २० ॥ ज० ॥ प्रणमी वीतरागना पाय, आदरे अणसण शुज गाय ॥ प्रतिबंध रहित निर्माय ॥ २१ ॥ ज० ॥ जावना आराधी जावे, देहपंजर मूकी जावे ॥ नवमे ग्रैवेयके आवे ॥ २२ ॥ ज० ॥ त्रीश सागर आयु तास, एम सत्तम जव सुविलास ॥ पितराइ जाइपणे जास ॥ २३ ॥ ज० ॥ सातमो कह्यो खंम रसाल, संवत् अढार बेंताल ॥ जेठ वदि बठे त्रेवीश ढाल ॥ २४ ॥ ज० ॥ विजयसिंह सूरीश सवाया, सत्यविजय सुशिष्य गवाया ॥ तस शिष्य कपूर कहाया ॥ २५ ॥ ज० ॥ तस खिमाविजय गुरुराय, जिनविजय विबुध तस थाय ॥ सोजागी जन सुखदाय ॥ २६ ॥ ज० ॥ तस शिष्यमां उत्तमविजयो, जग मांहि जस जसविजयो ॥ जस नाम प्रजाते लीजयो ॥ २७ ॥ ज० ॥ समरादित्यनो ए रास, कहे पद्मविजय सुप्रकाश ॥ पूरे पास कल्याणजी आश ॥२८॥ ज० ॥ सर्व गाथा ॥७२८॥

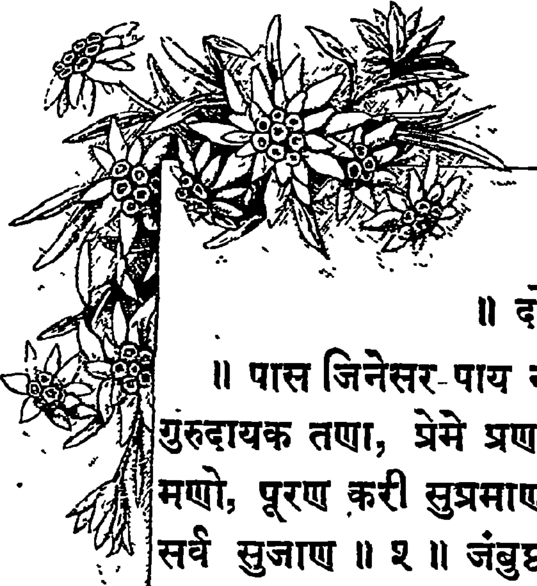
॥ इति श्रीसंविज्ञपक्षीयपंमितप्रवरश्रीमदुत्तमविजयगणिशिष्यपंडित पद्मविजयगणिविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे सेनविसेन पितृव्यभ्रात्रोः सप्तमो नरजवः समाप्तः ॥ ७ ॥ तत्समाप्तौ च समाप्तोऽयं सप्तमः खंमः ॥ सप्तमखंडे सर्व गाथा ॥ ७२८ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

॥ इति श्री समरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे सप्तमः खंमः संपूर्णः ॥ ७ ॥



॥ अथ ॥

॥ अष्टम खंडस्य प्रारंभोऽयं ॥



॥ दोहा ॥

॥ पास जिनेसर पाय नमी, समरी सरसती माय; गुणगण-गुरुदायक तणा, प्रेमे प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ सातमो खंम सोहामणो, पूरण करी सुप्रमाण; अद्भुत खंम हवे आठमो; सांजलो सर्व सुजाण ॥ २ ॥ जंबुद्वीप लख जोअणो, जरतक्षेत्र अजिराम; सुरपुरी सम सोहामणी, नयरी अयोध्या नाम ॥ ३ ॥ वनवाकी विहारे करी, नित्य उंडव आणंद; जुवती अद्भुत वे जिहां, करणी गति सुखकंद ॥ ४ ॥ लावण्य उतपत्ति लेखीये, शुद्ध शील समाचार; विधि कौशल्य प्रकर्ष वली, विस्मय ठाण विचार ॥ ५ ॥ पुरुषवर्ग पूरा वसे, अद्भुत चरित उदार; गुणपक्षपाती ने गुणी, वचन ते वदे विचार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ दानना व्यसनी लोक वे जेह, लोजी जश लेवाने तेह ॥ परधन लेवाने पांगला, परस्त्री देखणने आंधला ॥ १ ॥ बीकण करवा तेह अकाज, मूढा परं मागणने काज ॥ गुण ग्रहवानो नहीं संतोष, मुंगा पारका लेवा दोष ॥ २ ॥ जिहां बंधन ते धम्मीले होय, अथवा फूल वंधाये जोय ॥ दंम वत्रने के प्रासाद, स्नेहनो क्षय दीपके अविवाद ॥ ३ ॥ मार शब्द सोगठीने कहे, निर्दयपणुं तिहां खङ्ग लहे ॥ कुहियां मंदिर दीसे घणां, गजशालाए कलह नहीं मणा ॥ ४ ॥ कोरणी मंदिर मांहि घणी, पण तिहां लोक नहीं को रणी ॥ मैत्रीबल नामे तिहां राय, राज्यलक्ष्मी परे कीर्त्ति सुहाय ॥ ५ ॥ नीति परे नहीं दया विहीन, शत्रुने कीधा वली दीन

॥ पद्मावती पटराणी तास, सुख नोगवे तेहशुं सुविलास ॥ ६ ॥ नवमा ग्रैवेयकवासी देव, उपनो तेहनी कूखे देव ॥ दीठुं सूपन तिणे परजात, एक सरोवर तिणहीज राति ॥ ७ ॥ कमल सहित ते राजे घणुं, नृत्य करे मानुं वीचि तणुं ॥ नमरसमूह गुंजारव करे, कांठे पंखी रह्यां परपरे ॥ ८ ॥ तरुअर श्रेणी चिहुं दिश फरी, एह उदर पेठुं संचरी ॥ जागी संजलाव्युं जरतार, नृपने पण थयो हर्ष अपार ॥ ए ॥ पुत्र थाशे रायहंस समान, नूप कमलाकर नोग अमान ॥ सांजली संतोष पामी नारी, त्रण वरग साधे सुखकारी ॥ १० ॥ अनुक्रमे शुन मुहूरत शुन योग, सुखथी प्रसवे पुत्र नीरोग ॥ कमल परे कर पद सुकमाल, दासीए विनवीउ नूपाल ॥ ११ ॥ राय तणे मन हर्ष न माय, दीये वधामणी करीय पसाय ॥ ठोमी दीये तिहां कारागार, हरख्यो जनपद चित्त उदार ॥ १२ ॥ आणंद ध्वज कीधां घरशिरे, पूजा विरचावे परपरे ॥ घरघर वाजे मंगलतूर, रमणी गीत गाये ससनूर ॥ १३ ॥ वधामणां लावे बहु लोक, नाचे तरुणी जनना थोक ॥ राय दीये बहु आदर तास, कहे तुम केरी वृद्धि ए खास ॥ १४ ॥ बहु आणंदमां गयो एक मास, विविध उछव करतां उल्लास ॥ नाम ठवे गुणचंद कुमार, अनुक्रमे कुमर नाव लहे सार ॥ १५ ॥ शीखी कलाउ अनेक प्रकार, लेख गणित आलेख विचार ॥ नाटक गीत ने वाजित्र श्रुत, होरा काव्य ने आर्या जुत्त ॥ १६ ॥ प्रहेलिका मागधिका श्लोक, देखी अचरिज पामे लोक ॥ शयनविधि विधि अन्न ने पान, अष्टापद सम तालनुं मान ॥ १७ ॥ रमणी प्रतिकर्म्म लक्षण नारी, पुरुष तणां लक्षण अवधारी ॥ हय गय गोण ने कूकम तणां, मेढ लक्षण वली जाणे घणां ॥ १८ ॥ चक्र दंम मणि असि ने छत्र, कांगिणी चर्म्म लक्षण कहेवत्त ॥ चंद्र सूर राहुना चार, ग्रहना चार अने प्रतिचार ॥ १ए ॥ मंत्र तंत्र यंत्र केरी वात, व्यूह प्रतिव्यूह तणा अवदात ॥ खंधा चारनां जाणे मान, नगरनिवेश जाणे तस थान ॥ २० ॥ हय गय शिक्षा ने धनुरवेद, धातुर्वाद वली मणिना नेद ॥ बाहुदंम मुठि अठि जुऊ, वली ते जाणे जुऊनिजुऊ ॥ सजीव ने निर्जीव उपाय, नालिका खेम शकुन रुत थाय ॥ २१ ॥ विषय प्रसंग समथ आवीउं, पण कला नणवा चित्त नावीउं ॥ वली आसन ठे सिद्धिनां सुख्क, क्लिष्ट कर्म उपशमीआं डुख्क ॥ २२ ॥ कन्यारूप

प्रकर्ष न दीठ, तिणे तस विषय प्रसंग अनिठ ॥ गुरुने उपजावतो आणंद, साथे चाकरनां बहु वृंद ॥ २३ ॥ नंदनवन उपम वन मांहि, क्रीमा करतो अति उड्ढाहि ॥ पुण्य तणुं फल एम जोगवे, दान याचकने बहु उठवे ॥ २४ ॥ समरादित्य तणो ए रास, आठमे खंडे लीलविलास ॥ पंमित उत्तमविजयनो बाल, पद्मविजय कहे पेहेली ढाल ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जीव विसेण नारक जिके, उद्धर्यो इण काल; संसरीउ संसारमां, सहेतो दुःख असराल ॥ १ ॥ अनंतर जवे तिणे आचखुं, कष्ट तथाविध कांय; वैताढ्य वारु परवते, अवतरीयो ते आय ॥ २ ॥ रथनेउर चक्रवाल रम्य, विद्याधर वर थाय; अजिधा वाणमंतर इश्युं, कीधुं अनुक्रमे ताय ॥ ३ ॥ वाध्यो वये विद्याधरो, रमतो रमतो रान; मयणनंदन नामे जलुं, अयोध्या उद्यान ॥ ४ ॥ तिहां आव्यो ते ततक्षिणे, इण अवसर आवंत; गुणचंद्र कुमर गुणी घणा, चित्र करण निचिंत ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आवे लालनी ॥ देशी ॥

॥ दीठो कुमरने जाम, पापउदय थयो ताम ॥ सुंदर लाल ॥ ततक्षण कोपे कलकल्यो जी ॥ १ ॥ चिंतवे चित्तशुं एम, ए पापी इहां केम ॥ सुं० ॥ कुण दुःखदायक देखीये जी ॥ २ ॥ इहां करवो श्यो विचार, मारुं ए दुष्ट आचार ॥ सुं० ॥ आव्यो निकट कुमरने जी ॥ ३ ॥ कुमरनी हदमां तेह, आवी न शक्यो एह ॥ सुं० ॥ तव चिंते इहां रही हणुं जी ॥ ४ ॥ रही अदृश्य प्रकार, विद्या शक्ति उदार ॥ सुं० ॥ जीषण शब्दे जेखवुं जी ॥ ५ ॥ सहेजे तजशे प्राण, एम करी तेह अजाण ॥ सुं० ॥ शब्द कर्यो जैरव घणो जी ॥ ६ ॥ वज्रप्रहारे जेम, फूटे गिरिवर तेम ॥ सुं० ॥ तोहि कुमर खोन्या नहीं जी ॥ ७ ॥ मित्र लह्या तिहां होज, तेहने करी थिर थोज ॥ सुं० ॥ कोप्यो अति वाणमंतरो जी ॥ ८ ॥ अहो धीरज एणे कीध, पापी दुष्ट प्रसिद्ध ॥ सुं० ॥ फेरी पराक्रम दाखवुं जी ॥ ९ ॥ कंचन पादप नाम, करी नाख्यो शिरठाम ॥ सुं० ॥ कुंमरपुण्ये दूरे पड्यो जी ॥ १० ॥ वाणमंतर दुजाय, चिंता एणी परे थाय ॥ सुं० ॥ अहो पापी शक्ति घणी जी ॥ ११ ॥ अधिक

करे मन खेद, इण अवसरे थयो भेद ॥ सुं० ॥ क्षेत्रपाल तिहां देवता जी ॥ १२ ॥ वाणमंतर ए देव, गमन रति शुभ टेव ॥ सुं० ॥ ते देखी बीहीनो घणुं जी ॥ १३ ॥ विद्यानुं बल अल्प, नाठो तेह अजल्प ॥ सुं० ॥ विद्याधर वाणमंतरो जी ॥ १४ ॥ आव्या नयर मझार, ते गुणचंद कुमार ॥ सुं० ॥ इणी अवसर उत्तरापंथे जी ॥ १५ ॥ पाटण शंखपुर थाय, शंखायन तिहां राय ॥ सुं० ॥ कांतिमती तस भारया जी ॥ १६ ॥ धूआ रतनवती तास, मुनि पण पाडे पास ॥ सुं० ॥ रूप मनोहर रति समी जी ॥ १७ ॥ कला लावण्य निधान, वरचिंता असमान ॥ सुं० ॥ विधिए घड्यो के नवि घड्यो जी ॥ १८ ॥ चिंतवे इणी परे माय, खोलावुं शुभ ठाय ॥ सुं० ॥ पृथवी बहु रयणे भरी जी ॥ १९ ॥ निज नर सबल सुजाण, जोवा रूप विन्नाण ॥ सुं० ॥ पुरुष दिशोदिश मोकल्या जी ॥ २० ॥ शिखवीउं इणी रीत, रूप कला परतीत ॥ सुं० ॥ रत्नवती सम देखजो जी ॥ २१ ॥ ते ते राजकुमार, करी चित्राम सफार ॥सुं०॥ लावी मुझ देखाडीये जी ॥२२॥ अद्भुत कोइ विज्ञान, पत्र छेदादि समान ॥ सुं० ॥ ते कौशल्य पण दाखजो जी ॥ २३ ॥ ते पण करीय प्रमाण, गया दिशोदिश जाण ॥ सुं० ॥ दीठा नृपसुत बहु तिणे जी ॥ २४ ॥ पण नहीं नारीने जोग, पण कांयक जे लोग ॥ सुं० ॥ ते चित्र्या चित्राममां जी ॥ २५ ॥ फिरता आव्या तेह, नयरी अयोध्या नेह ॥ सुं० ॥ दीठो गुणचंद कुमरने जी ॥ २६ ॥ राधावेधविचार, धनुर्वेद प्रकार ॥ सुं० ॥ कला अभ्यासतो देखीउं जी ॥ २७ ॥ विस्मय पाम्या चित्त, रूप कला सुपवित्त ॥ सुं० ॥ कुंअर नयरमां आवीया जी ॥ २८ ॥ राजकन्या अनुरूप, पण न लखाये सरूप ॥ सुं० ॥ एकज वार वली देखीउं जी ॥ २९ ॥ आठमे खंडे ढाल, बीजी अतिहि रसाल ॥ सुं० ॥ पद्म कहे श्रोता सुणो जी ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ ६६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चित्रमती बोल्यो चतुर, भूषण अद्भुत भाल; ते कहे दीठुं तो खरुं, एहमां नहीं कोइ आल ॥ १ ॥ पण राणी उपदेशडो, करी शकीये केम; परछंदो नवि निपजे, अमने खेद छे एम ॥ २ ॥ चित्रमती कहे साचलुं, अमने पण ए खेद; पण एहनी पासे रही, भणशुं

एहनो भेद ॥ ३ ॥ रयणवती परे नित्य रही, प्रतिछंद करुं पाण; भूषण कहे ए भावतुं, जो पण दुःकर जाण ॥ ४ ॥ चित्रमती कहे चित्रकर, रत्नवतीनुं रूप; आलेखीने आपणे, अद्भुत एह अनूप ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ काली ने पीली वादली ॥ ए देशी ॥

॥ चित्रकारसुत मिष थइ, जइ मलीये राजकुमार ॥ भूषण कहे रुडुं कह्युं, मिलवानो एह प्रकार ॥ १ ॥ भलो भाख्यो रे, चित्त राख्यो रे, तुम बुद्धि तणो नवि पामीये वर पार ॥ ए आंकणी ॥ एम करतां मालूम थशे, रत्नवती उपरे केहेवो राग ॥ नयरमां पेठा एम करी, पट आलेखी लेइ पाग ॥ २ ॥ भलो० ॥ द्वारदेशे गया जेटले, तव रोक्या तस प्रतिहार ॥ हुकुम लही मांहि मोकल्या, तव आवी करे नमस्कार ॥ ३ ॥ भलो० ॥ आणार्थी बेसी हवे, पट काढ्यो हर्षित वयण ॥ देखाडी कहे इणी परे, शंखपुरथी आव्या अमे सयण ॥ ४ ॥ भलो० ॥ तुम गुण सांभली आवीआ, दीठा जेहवा सुण्या कान ॥ पृथवीनाथ तुमे अछो, पण अमचा नाथ राजान ॥ ५ ॥ भलो० ॥ चित्रनो लव अमे जाणीये, ते तुम पयभक्ति प्रभाव ॥ चित्रनो पट देखी कहे, गुणचंद्र कुमार ते ताव ॥ ६ ॥ भलो० ॥ एह कलानो लव कह्यो, केहेवी संपूरण होय ॥ चित्रकर्म एह उपरे, जगमां नवि दीसे कोय ॥ ७ ॥ भलो० ॥ कोइए न दीठो एहवो, रेखा केरो विन्यास ॥ मृगनयणीए दक्षिण करे, शतपत्र धर्युं सुविलास ॥ ८ ॥ भलो० ॥ मयणघरिणी मानुं चित्रमां, रहेती हरती अम चित्त ॥ दानव मानव देवमां, एहवी नारी होये केम मित्त ॥ ९ ॥ भलो० ॥ रूप लावण्य रति समुं, तुमे निपुणपणुं कर्युं जोर ॥ कला अधिकथी माहरा ए, चित्तना तणुं छे चोर ॥ १० ॥ भलो० ॥ तेह कहे निपजावीउं रे, विधिए जे ते लिखाय ॥ तो अम निपुणाइपणुं, कहो केही परे वखणाय ॥ ११ ॥ भलो० ॥ कुमर कहे मुख हरखते, तुमे किहां दीठुं ए रूप ॥ त्रिभुवन विस्मय उपजे, ते भाखो तास सरूप ॥ १२ ॥ भलो० ॥ ते कहे सांभलो कुमरजी, शंखपुरे शंखायन राय ॥ तेहनी ए छे कुंअरी, रंभा पण हारी जाय ॥ १३ ॥ भलो० ॥ रतनवती नामे करी, कंदर्प महोत्सवमां दीठ ॥ जंपाने बेठी थकी, शिर छत्र धर्युं सुविसिद्ध

॥ १४ ॥ चलो० ॥ बहु सखीउंए परिवरी, दक्षिण कर कमल विशेष ॥ जोइने पोहोता घरे, कीधो संचारी आलेख ॥ १५ ॥ चलो० ॥ पण तस रूप सुंदरपणुं, विश्वकर्म्माए न लखाय ॥ तो मूरख जने वचनथी, कहो किणी रीते कहेवाय ॥ १६ ॥ चलो० ॥ मदनवशे गुणचंद्रजी, थया पण गोपवी आकार ॥ कहे कांय प्रश्न उत्तर कहो, तव बोल्या तेह विचार ॥ १७ ॥ चलो० ॥ शुं दीये कामिनी कुण नम्या, हरने विषधर करे कांय ॥ चंद्रमा निज किरणे करी, शुं धवल करे कहो राय ॥ १८ ॥ चलो० ॥ एके शब्दे चारनो, उत्तर करवो कहो तेह ॥ 'नहं गणा चोयं' कहे, गुणचंद कुमर धरी नेह ॥ १९ ॥ चलो० ॥ चित्रमती कहे साहिबा, तुम लहण वेग अति सार ॥ कुमर कहे बीजो कहो, कांय प्रश्न ते अतिहि उदार ॥ २० ॥ चलो० ॥ बोल्यो विलासबुद्धि तदा, शुं रथमां होय प्रधान ॥ बुद्धिवले कोण लोकमां, जींते धरतो अभिमान ॥ २१ ॥ चलो० ॥ शुं करती बाला कहो, नेउरनो शब्द करंत ॥ हसितवदन कुमर तदा, चक्रमंती इम वदंत ॥ २२ ॥ चलो० ॥ अहो अतिशय तुम बुद्धिनो, इत्यादिक प्रश्न जबाप ॥ भूषण प्रमुखना वालीआ, सहु रीज्या निज चित्त आप ॥ २३ ॥ चलो० ॥ ग्रंथविस्तारना चय थकी, नवि कीधो इहां परपंच ॥ कुंअर पण परमोदथी, अंग अंग थयो रोमांच ॥ २४ ॥ चलो० ॥ धनदेव नाम चंमारीने, करे हुकम ते लाख दिनार ॥ आपो इणी परे सांचली, करी तहत्तिने करे विचार ॥ २५ ॥ चलो० ॥ चोला कुमर दानसेरी, नवि लाख विना दीये दान ॥ पण नवि जाणे केहवुं, लाख केरुं होशे मान ॥ २६ ॥ चलो० ॥ कुमरने आगे ढग करुं, तव जाणे लाख प्रमाण ॥ फिरी थोमाशेक काममां, नवि चाखे एहवी आण ॥ २७ ॥ चलो० ॥ एम विचारी ढग कस्यो, तव पूछे ए शुं कुमार ॥ ते कहे चित्रकरसुत चणी, देवराव्युं दान ते सार ॥ २८ ॥ ॥ चलो० ॥ कुमर विचारे एहने, चासे छे दान अपार ॥ तिणे ढग मुफ देखावीने, कहे छे जे दान निवार ॥ २९ ॥ चलो० ॥ जाणे छे एम धन तणो, हलुए हलुए होये नाश ॥ पण एहनी जुउ मूढता, एकांते बाह्यनी आशी ॥ ३० ॥ चलो० ॥ त्रीजी आठमा खंडनी, कही पद्मविजय

वर ढाल ॥ वली कुमरनां वयणनां, सुणजो नवि रंग रसाल ॥ ३१ ॥ ॥ नलो० ॥ सर्व गाथा ॥ १०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जीव साथे जाये नहीं, अग्नि चोर अवनीस; साधारण ए संपदा, कहो नवि दीजे कीस ॥ १ ॥ अंते दीये अपकार ए, तिणे देवुं ते तथ्य; लाख अलप ए लेखीये, परनवनुं नहीं पथ्य ॥२॥ आ नवमां पण एहने, दान लाख ए दोय; पोहोचे नहीं पूरुं तिणे, अपर आपवुं होय ॥ ३ ॥ उंबुं न होये अर्थमां, देतां बहु परे दान; पुण्य वधे प्राणी तणुं, एहज गुण असमान ॥ ४ ॥ दान नोग न दाटीये, करीये अनेक प्रकार; राखी पण रहेशे नहीं, पाप तणे परकार ॥ ५ ॥ प्रतिबोधीशुं ए पछे, अथवा एह उपाय; समजावणनो सर्वथा, ठावुं एम ठराय ॥ ६ ॥ ए शुं लाख ते ए- टला, अल्पज दीसे आम; दोय लाख तिणे दीजीये, तहत्ति नणे ते ताम ॥ ७ ॥ चित्रमती नूषण चिंते, चित्तमां करे विचार; अहो उदारता एहनी, अहो बुद्धि अवधार ॥ ८ ॥ दोहो सोरठी ॥ प्रणमी कुमरना पाय, धन मोकले धारी करी; जोर आवासे जाय, चित्रमती नूषण चतुर ॥ ए ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ कालनिवेदी वयणथी रे, श्रीगुणचंद कुमार ॥ जाणी मध्याह्नने उ- ठीआ रे, जाय मज्जन घरद्वारि रे ॥ १ ॥ प्राणी पुण्य तणां फल जोय, पुण्यथी सवि सुख होय रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ कनककलश गंधो- दके रे, मज्जन प्रमुख अशेष ॥ काम करे चित्त इछतो रे, रलवती सुवि- शेष रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ एकांते शय्या रह्यो रे, चिंतवे अहो सा नारी ॥ कन्या ले ए कारणे रे, करवो एहशुं प्यार रे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ तेहमां दूषण को नहीं रे, इणे अवसरे सहु मित्त ॥ विशालबुद्धि प्रमुख आवीआ रे, मांड्यो विनोद सुचित्त रे ॥ ४ ॥ प्रा० ॥ विद्याधर विद्याधरी रे, आलेख्यां अद्भुत ॥ नवनवां आनूषण रच्यां रे, देखाडे आकूत रे ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ अनिवन नेहने सूचवे रे, दृष्टि परस्पर स्नेह ॥ प्रेम आरोह्यो अंगमां रे, दीसे परगट तेह रे ॥ ६ ॥ प्रा० ॥ चित्रमती नूषण तदा रे, आठ्या ते- हज ठाम ॥ दीठा कुमर निरखता रे, खेचरयुग्म अनिराम रे ॥ ७ ॥ प्रा० ॥

गुलीए खरड्या कर वली रे, देखी प्रणमी तेह ॥ कहे ए शुं महाराजीआ रे, कुमर कहे जुर्ज एह रे ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ देखी चमक्या चित्तमां रे, सर्व-कला सावधान ॥ चित्रमां भाव देखाडवो रे, मुशकल छे तेह तान रे ॥ ॥ ए ॥ प्रा० ॥ चित्रशास्त्रमां एम कहे रे, जास न लहीये चरित्र ॥ वात कह्या विण चित्रनो रे, जाणीये भाव पवित्र रे ॥ १० ॥ प्रा० ॥ तेहज चित्रकर धुर कह्यो रे, एण समे थयो वियाल ॥ कालनिवेदी बोलीयो रे, संध्यासमय संभाल रे ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ संध्या उपर नेहथी रे, अस्ताचल रवि जाय ॥ संकेत थानकनी परे रे, सुरगिरि गुंजमां छाय रे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ कुसुम सुगंध ते विस्तर्यो रे, पूजे रमणी अनंग ॥ दीपज्योति परगट थइ रे, सांभली तेह सुरंग रे ॥ १३ ॥ प्रा० ॥ गुरुपद नमन समय थयो रे, उठ्या ताम कुमार ॥ जननी जनकना चरणने रे, प्रणम्या विनय प्रकार रे ॥ १४ ॥ प्रा० ॥ मावित्रे बहु मानीया रे, गया निज वास भुवन्न ॥ आवी निद्रा अवसरे रे, रतनवतीशुं मन्न रे ॥ १५ ॥ प्रा० ॥ प्रात समय दीठुं स्वप्नमां रे, दिव्य कुसुमनी माल ॥ आपी कोइक एम कहे रे, ल्यो ए अति सुकमाल रे ॥ १६ ॥ प्रा० ॥ तुम मन गमती एह छे रे, सांभलो धरी निज कंठ ॥ तूर प्रभातनां वाजीआं रे, जाग्यो धरी उत्कंठ रे ॥ ॥ १७ ॥ प्रा० ॥ कालनिवेदी बोलीयो रे, करतो तिमिर विनाश ॥ चक्रवाक दुःख टालतो रे, करतो रवि सुप्रकाश रे ॥ १८ ॥ प्रा० ॥ इत्यादिक सुणी हरखीउं रे, रतनावतीनो लाह ॥ अन्यथा स्वप्न न परिणमे रे, मंगल शब्द सनाह रे ॥ १९ ॥ प्रा० ॥ तुरत मली जोइये हवे रे, एह निमित्त प्रभाव ॥ गुरुपदवंदन प्रमुख जे रे, आवश्यक करे ताव रे ॥ २० ॥ ॥ प्रा० ॥ जनकादिक प्रणमी करी रे, बेठा जब निज ठाय ॥ आव्या मित्र वली एहवे रे, गोष्ठि चतुर्थ गूढ थाय रे ॥ २१ ॥ प्रा० ॥ (विशालबुद्धि बोल्यो) ॥ यतः " सुरयर रमणस्स रइहरे, णियं बंभमिरं वधुधूयकरगा ॥ं तक्खण वत्तविवाहा" ॥ कुमर कहे फरी भाखीये रे, फिरी भाख्युं तिणे जाम ॥ ततक्षण पद तिहां पूरीउं रे, रमण निवारे आम रे ॥ २२ ॥ प्रा० ॥ चतुर्थपदं यथा "रमणस्स करं निवारेई ॥ १ ॥" विशालबुद्धि कहे रुयडुं रे, पूछुं पद तुमे स्वामी ॥ चित्रमती कहे माहरुं रे, पूरो पद इण ठाम रे ॥ २३ ॥ प्रा० ॥ यतः "भाविय रइसार रसा, समा-

णिउं मुक्क बहुलसिक्कारा ॥ न तरइ विवरीयरयं, (कुमर बोल्या यथा) णियं बन्नारा लसासामा ॥ २ ॥ (भूषण बोल्यो) विउलम्मीमउलियच्छी, घणविस्संभस्स सामिणि सुचिरं ॥ विवरीय सूरय सहिया, (कुमर बोल्या) विसमई उरम्मि रमणस्स ॥ ३ ॥" एम करतां तिहां आवीउं रे, कहे एणी परे प्रतिहार ॥ भूप बोलावे तुम भणी रे, रहवाडी परिवार रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥ अनुक्रमे कुमर गया तिहां रे, अश्व खेलाव्या जोर ॥ आव्या निज आवासमां रे, शेष कृत्य करे ठोर रे ॥ २५ ॥ प्रा० ॥ एम विनोद करतां थकां रे, केइ दिवस वही जाय ॥ एक दिन रत्नवती तणुं रे, रूप आलेख कराय रे ॥ २६ ॥ प्रा० ॥ चोथी आठमा खंडमां रे, पद्मविजय कही ढाल ॥ समरादित्यना रासमां रे, सुणतां मंगलमाल रे ॥ २७ ॥ प्रा० ॥ सर्व गाथा ॥ १३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ रत्नवतीना रूपमां, परवश थयो अपार; उत्सुक जोवा अलजयो, नयने ते निरधार ॥ १ ॥ हेठी लखी गाहावली, इण अवसर तिहां आय; भूषण चित्रमती भला, चित्र जुवे चित्त लाय ॥ २ ॥ विस्मय लही वांची तदा, गाहा गुणभंडार; धन्य कुंअरी नृपनी धूआ, करे जस चाह कुमार ॥ ३ ॥ अचरिज अथवा नहीं इहां, जे बहु मानवा जोग; देवीने जइ दाखीये, शुभ मलीउं संजोग ॥ ४ ॥ बुद्धिवंत तव बोलीयो, चित्रमती चित्त लाय; पडछंदो ए अपूर्व छे, अहो मुज अचरिज थाय ॥ ५ ॥ दीठा विण ए दाखवी, भूषण बोल्यो भाय; एतादृश छे एहमां, कूड नवि लखीयुं कांय ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ मनमोहन मनमोहन पावन देहडी जी ॥ ए देशी ॥

॥ इणे अवसर इणे अवसर प्रतिहार आवीयो जी, नृप भाख्युं नृप भाख्युं ते सुणीये कुमार हो ॥ विश्वभूति विश्वभूति गंधर्व आवीयो जी, तुम दरिसण तुम दरिसणनो धरे प्यार हो ॥१॥ स्वामी अरज स्वामी अरज सुणो एक अमतणी जी ॥ ए आंकणी ॥ कहे कुंअर कहे कुंअर ते मोकलो वेगशुं जी, तिणे मूक्यो तिणे मूक्यो आव्यो ताम हो ॥ करी मुजरो करी मुजरो ने पासे उपविशे जी, कहे सुणीये कहे सुणीये वात ते आम हो ॥ २ ॥ स्वा० ॥ नृप

भाखे नृप भाखे इणी परे तुम भणी जी, गंधर्व गंधर्व विचार संदेह हो ॥ प-डीउं पमीउं ते गुणचंड टालशे जी,सुणी हसीआ सुणी हसीआ कुमार ते रेह हो ॥ ३ ॥ स्वा०॥ सुतनो जुउं सुतनो जुउं राग ते केटलो जी, विश्वभूति विश्व-भूति बोले तव एम हो ॥ गुण आदर गुण आदर जाणो पण नहीं जी, सुतमात्रे सुतमात्रे नृपनो प्रेम हो ॥ ४ ॥ स्वा० ॥ चित्रमती ने चित्रमती ने भूषण दोय कहे जी, खरी वात खरी वात कही बे एण हो ॥ कहे कुमर कहे कुमर चालो आणा करुं जी, उठी चाल्या उठी चाल्या विनये जेण हो ॥५॥ स्वा० ॥ बिहु हरख्या बिहु हरख्या निज भवने गया जी, नवि केहेवुं नवि केहेवुं कुमारने कांय हो ॥ विज्ञान विज्ञान कुमारनुं आलेखीने जी, कहे भूषण कहे भूषण चालो ठाय हो ॥६॥ स्वा० ॥ चित्रमती कहे चित्रमती कहे कहीने जायतां जी, शुं थाये शुं थाये तव कहे तेह हो ॥ नवि जावा नवि जावा दीये तुमने किमे जी, चित्रमई कहे चित्रमई कहे साचुं एह हो ॥ ७ ॥ स्वा० ॥ आलेख्युं आलेख्युं रूप कुमारनुं जी, कुमरे जे कुमरे ल-खीउं हाथ हो ॥ अयोध्या अयोध्या मांहिथी नीकल्या जी, लेइ बेहुए लेइ बेहुए पट्टिका साथ हो ॥ ८ ॥ स्वा० ॥ शंखपुरीए शंखपुरीए पोहोता अनु-क्रमे जी, कह्युं धुरथी कह्युं धुरथी कुमरवृत्तांत हो ॥ सुणी राणी सुणी राणी बिहु रूप देखीने जी, चित्त हरखी चित्त हरखी तेह एकांत हो ॥ ए ॥ ॥ स्वा० ॥ दान दीधुं दान दीधुं तास संतोषनुं जी, रूप जोइ रूप जोइ करे विचार हो ॥ अहो रूप अहो रूप अवस्थान केहवुं जी, अहो अतिशय अहो अतिशय देह आकार हो ॥ १० ॥ स्वा० ॥ रत्न-वतीना रत्नवतीना रूप हेठल लखी जी, जेह गाहा जेह गाहा वांची तेह हो ॥ मन चिंते मन चिंते माहरी धूआ जी, एम इबे एम इबे चित्तशुं एह हो ॥ ११ ॥ स्वा० ॥ मोकलीयुं मोकलीयुं रूप कुमारनुं जी, कुमरीने कुमरीने पासे ताम हो ॥ सखी मयण सखी मयणमंजुषा तिहां गइ जी, चित्रपट्टिका चित्रपट्टिका दाखी जाम हो ॥ १२ ॥ स्वा० ॥ कहे कुमरी कहे कुमरी ए शुं बे कहो जी, मोकल्युं तुम मोकल्युं तुम माये एह हो ॥ कहेवराव्युं कहेवराव्युं बे ए शीखजो जी, कहे कुमरी कहे कुमरी कोहोनो ए लेह हो ॥१३॥ स्वा० ॥ ते बोली ते बोली कांय जाणुं नहीं जी, ए इंद्र ए इंद्र होशे एम जाणी हो ॥ सहस नेत्र सहस नेत्र कहे सा तेहने जी,

ते बोली ते बोली होशे नाराण हो ॥ १४ ॥ स्वा० ॥ कृष्ण वरणे कृष्ण वरणे ते छे तव कहे जी, सखी बोली सखी बोली त्यारे होशे चंद हो ॥ सा नाखे सा नाखे कलंक छे तेहने जी, सखी नाखे सखी नाखे कंदर्प अमंद हो ॥ १५ ॥ स्वा० ॥ बोली रयण बोली रयणवती तेह वालीयो जी, महादेवे महादेवे कहो केम होय हो ॥ सखी नाखे सखी नाखे कहो तुमे आपथी जी, अपूरव अपूरव दरिसण कोय हो ॥ १६ ॥ स्वा० ॥ कहे रयण कहे रयणवती ए नर अछे जी, चढती वय चढती वय रूप नंमार हो ॥ निकलंकी निकलंकी सोवन कांति छे जी, नेहालां नेहालां नयण अपार हो ॥ १७ ॥ स्वा० ॥ बोली मयण बोली मयणमंजुषा नलुं कह्युं जी, एहमां नहीं एहमां नहीं कांय संदेह हो ॥ हुं तो जाणुं हुं तो जाणुं ए तुम वर हुशे जी, कोइ एहवे कोइ एहवे कहे निःसंदेह हो ॥ १८ ॥ स्वा० ॥ हरखी ते हरखी ते सांनली शकुनने जी, आलेख्यो आलेख्यो प्रतिबंद तेह हो ॥ कहे सखीने कहे सखी मातने दाखवो जी, शीखी के शीखी के नहीं कहो एह हो ॥ १९ ॥ स्वा० ॥ जइ दाख्युं जइ दाख्युं तब घणुं हरखती जी, निज धूआ निज धूआ धन्यविन्नाण हो ॥ आलेखी आलेखी कुमरे जे कुमरी जी, लावी मूकी लावी मूकी तिणे तस ठाण हो ॥ २० ॥ स्वा० ॥ अनुरूप अनुरूप युगल देखी करी जी, मन हरखी मन हरखी राणी कहे एम हो ॥ कहो रतन कहो रतनवतीने ए ठीक छे जी, नित्य करजो नित्य करजो एहशुं प्रेम हो ॥ २१ ॥ स्वा० ॥ तुऊने पण तुऊने पण इणी परे कुंअरे जी, आराधी आराधी छे अनुरूप हो ॥ चित्रपट्टि चित्रपट्टिका विहुए मोकली जी, तिणे पण जइ तिणे पण जइ कह्युं ते सरूप हो ॥ २२ ॥ स्वा० ॥ सखी बोली सखी बोली में जे तुम कह्युं जी, राजकुंमर राजकुमर तुमारे जोग्य हो ॥ कलाआगर कलाआगर गुणनिधि देखीये जी, एह जोगे एह जोगे को नवि शोग हो ॥ २३ ॥ स्वा० ॥ परुछंदो परुछंदो देखी तुम तणो जी, जुउ केही जुउ केही रीते कह्युं रूप हो ॥ जाणुं निश्चय जाणुं निश्चय मलशे एहशुं जी, पाणिग्रहण पाणिग्रहण जोग अनूप हो ॥ २४ ॥ स्वा० ॥ पांचमी कही पांचमी कही ढाल ए आठमे जी, खंके रुमी खंके रुमी समरादित्य रास हो ॥ गुरु उत्तम गुरु उत्तमविजय कृपा थकी जी, पद्मविजये पद्मविजये हर्ष उल्लास हो ॥ २५ ॥ स्वा० ॥ १६९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरी चिंते किहां थकी, मलवुं एहशुं मुज; मंद नाग्य जे मानवी, सुरमणि नवि होये सुज ॥ १ ॥ अंबक फुरक्युं इणी समे, वामा केरुं वाम; तुष्टमान थइ ते तदा, कहे मुज सरीयुं काम ॥ २ ॥ मात हुकमथी मानिनी, करे आवश्यक कर्म्म; नोजन करी चित्त नावतुं, हरखे रहेती हर्म्म ॥ ३ ॥ पटबंदो लइ पाणिमां, वदे अहो अंग विन्यास; नयन नेह अहो निरखीये, अहो अहो सर्व अन्यास ॥ ४ ॥ एम केइ वासर अतिक्रम्या, गुणचंद पण एम ग्यान; करतां दिवस केता गया, धरत परस्पर ध्यान ॥ ५ ॥

॥ ढाल ७मी ॥

॥ सुरपति सेवित त्रिनुवन धणी ॥ ए देशी ॥

॥ जाणे मैत्रीबल नरवरु, परस्परे वात मनोहरु ॥ मन चिंतवे तव नूपाल, ए योग्य वात सुरसाल ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ योग्य वात रसाल जाणी, कुशल नर नृप मूकीआ ॥ रत्नवती पण कुमर केरुं, ध्यान कबहुं न चूकीआ ॥ २ ॥ राजकन्या उचित करणी, सर्व ठांमी तेणीए ॥ राति दिन उदवेग करती, शून्यता करी जेणीए ॥ ३ ॥ खाय बगासां अंग मरडे, आवी तिहां मदनमंजुआ ॥ चिरंजीव तुं स्वामीनि हे, सफल मनोरथ संजुआ ॥ ४ ॥ जिम कह्युं में तिम निपनुं छे, वर तुमारो ए थशे ॥ कटिसूत्र आपी सांनलीने, कहे वात ए किम हशे ॥ ५ ॥ कहे मयणमंजुआ तुम कनेथी, गइ देवी पास ए ॥ तव चित्रमती नूषण विहुने, दीठा तास सकाश ए ॥ ६ ॥ मुज कहे राणी जाउं कुमरी, पास नाखो इणी परे ॥ महाराय मैत्रीबल तनुज जे, कुमर गुणचंद गुणसिरे ॥ ७ ॥ दीधी तुने छे प्रार्थनाथी, रतनवती कहे ताम ए ॥ केम असंबद्ध एह नाखे, सखी कहे सुणो आम ए ॥ ८ ॥ राणी कहे आराधीउं तिणे, प्रजापति तुठो घणुं ॥ तिणे जोग मिल्यो ए सुणीने, दीये आनरण आपणुं ॥ ९ ॥ परमोद नरथी चिंतवे सा, एहनी घरणी थइ ॥ एह शब्द सुणी संतापह, आपदा सघली गइ ॥ १० ॥ देव गुरुने वंदीआ वली, दान दीये महाराय ए ॥ एम नित्य करणी करत केइक, दिवस हरखे जाय ए ॥ ११ ॥ अजोध्या पुरी मोकले हवे, विवाह का-

रण नरपति ॥ एक मासे तेह पोहोती, जाणे अयोध्या नूपति ॥ १२ ॥ कारावंधन करे मोचन, नगर शणगारे तथा ॥ पात्र नाचे दान देवे, जनमे नवि खूटे यथा ॥ १३ ॥ वांची पत्र नंकारमांथी, काढे आनूषण घणां ॥ घोटकशाला तिम शणगारे, रथ ध्वजा मंकित तणा ॥ १४ ॥ लग्न शुन्न जोवराव्युं नलेरुं, देव गुरु प्रणमे वली ॥ गीत मंगल वाजित्र सुणतो, बंदिजन बिरुदावली ॥ १५ ॥ एम खंड आठमे ढाल बही, समरादित्यने रास ए ॥ पद्मविजये कही रूमी, सुणतां लीलविलास ए ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ १७० ॥

॥ दोहो सोरठी ॥

॥ करिवर चढ्यो कुमार, सहसनयन परे शोहतो; दीपे तस दीदार, आदित्य अनिनव उपनो ॥ १ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ केसरीया चढो वर घोडे ॥ अथवा ॥ सासनपति वंदन जइये ॥ ए देशी ॥

॥ उज्ज्वल करिवर बेठो शोहे, लोक तणां चित्तडां अति मोहे, चंद सूर काम रामके कोहे के ॥ १ ॥ केशरीए वागे विराजे ॥ वागे विराजे ने खूपशुं बाजे के ॥ के० ॥ ए आंकणी ॥ मित्र विशालबुद्धि मुख जेह, चाले पूठे धरी ससनेह, जानणी मंगल गीत कहेह के ॥ २ ॥ के० ॥ नयररामा अनिनंदना करती, चोके चोके जोवे संचरती, गुणचंदना गुण गावे फिरती तो ॥ ३ ॥ के० ॥ आव्या तोरण मंरूप मांहि, उतरीआ करिवरथी उबाहि, सासु करे पुंखणाविधि त्यांहि तो ॥ ४ ॥ के० ॥ दीठी चित्र तणे अनुहार, रत्नवतीनुं रूप अपार, अधर बिंबफल सम मनोहार तो ॥ ५ ॥ के० ॥ चक्रवाक युग ज्युं कुच राजे, विस्तीरण नीतंवज बाजे, मुख देखी शशधर पण लाजे तो ॥ ६ ॥ के० ॥ करपदतल शोणित सम रातां, सर्व अंग गुण जगविख्याता, लूंबणां करे लोक विधाता तो ॥ ७ ॥ के० ॥ सर्व अंगे घणुं देखण जोग, चित्त वाली जुये मुनिवर लोग, देखतां जाये सघला शोग के ॥ ८ ॥ के० ॥ देखी हरख्यो चित्त मजार, पाणिग्रहण करे शुन्न वार, मंरूल नमीआ हर्ष अपार के ॥ ए ॥ के० ॥ दिनकर आथमीउं शशी उगो, लेइ वधू वासनवने पूगो, साथे वधूसखी परिवृत रूगो के ॥ १० ॥ के० ॥ काल थोमो

रही सही सहु जाये, अंग अंगे मली क्रीडा कराये, सुख संसार तणां विलसाय के ॥ ११ ॥ के० ॥ सुख निद्रा करतां गइ राति, मंगलतूर वाजे परभाती, कमलनी ताम विकस्वर थात के ॥ १२ ॥ के० ॥ प्रात आवश्यक कीधां काम, चाल्या उद्यान जोवा अभिराम, क्रीडा करी आव्या निज गाम के ॥ १३ ॥ के० ॥ देवपूजा भोजन विधि सारी, साथे रतनवती निज नारी, भोगवे सुख वर दुःख निवारी के ॥ १४ ॥ के० ॥ एम करतां केइ दिन वही जाय, एक दिन हवे वलमैत्री राय, विग्रह राय निज सेवक प्राय के ॥ १५ ॥ के० ॥ आण न माने ते निज स्वामी, सेना मोकली ताम उद्दाम, जीत्यो विग्रह करी संग्राम के ॥ १६ ॥के०॥ जाणी कोप्यो वलमैत्री भूप, स्वयमेव चढवा कीधी चूंप, जाण्युं कुमरे तेह स्वरूप के ॥ १७ ॥ के० ॥ सिंह उपर नवि गाजे शीआल, तेह शीआल समो भूपाल, कहे नृपने एम वयण रसाल के ॥ १८ ॥ के० ॥ तिणे तुमे तातजी द्यो मुऊ आण, जिम तुम कोप अगनिने ठाण, थाय पतंग ते राय अजाण के ॥ १९ ॥ के० ॥ राय दीये तव लशकर साथ, कुमर कहे सांभलो नरनाथ, दोभाणो विग्रह सहु साथ के ॥ २० ॥ के० ॥ जब लगे जींतुं न एह नरींद, तव लगे तात पराभव वृंद, केम करुं विषयसंग सुखकंद के ॥ २१ ॥ के० ॥ एम चिंती मूकी तिहां नारी, लेइ लशकर कीधी असवारी, एक मासे पोहोतो अवधारी के ॥ २२ ॥ के० ॥ आव्यो कुमर विग्रह एम जाणी, गढ रूंधो करी बेठो ताणी, कुमरे वींट्यो जिम द्वीपने पाणी के ॥ २३ ॥ के० ॥ विण संभलावे ताम कुमार, विग्रह उपरे रोष अपार, एह चाकरनो श्यो छे भार के ॥ २४ ॥ के० ॥ बलीयो नाथ अछे निज पास, तिणे सहु सेना धरीअ उल्लास, मांड्युं जुऊ अभग्न सरास के ॥ २५ ॥ के० ॥ दुर्गबले ते नवि जींताये, तोहि मानथी अधिक भराये, महा संग्राम करे चित्त लाय के ॥ २६ ॥ के० ॥ जाणी कुमर हवे कहेवरावे, मत करो जुऊ तुमे इण दावे, एहनो यत्न विना जय थावे के ॥ २७ ॥ के० ॥ जाणी असाध्य पेठो कोट मांहे, वींट्यो छे चोक फेर ए प्राहे, नासशे ए कहो केणे राहे के ॥ २८ ॥ के०॥ वाहाला प्राणथकी तमो राय, तेह विनाश सहजमां थाय, ए पण भूपने सेवक ठाय के ॥ २९ ॥ के० ॥ नीतिमां पहेली साम व-

खाणो, युद्ध करणनो नहीं एह टाणो, स्वामी सेवक संबंध पीछाणो के ॥ ३० ॥ के० ॥ अविनय नाशनो कीधो उपाय, तिणे पराक्रम एहशुं नवि थाय, महारा सम तुमने देइ जाय के ॥ ३१ ॥ के० ॥ हवे मत करजो एहवुं काम, तेह कहे जिम तुमे कहो स्वामि, तिमहीज करशुं प्रभु शिर नामी के ॥ ३२ ॥ के० ॥ आठमे खंमे ए सातमी ढाल, पद्मविजय कहे पुण्य विशाल, सांजलतां होय मंगलमाल के ॥ ३३ ॥ के० ॥ स० ॥ २२४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विशालबुद्धि नामे वली, इणी परे करे उपाय; राजपुत्रने रीझीशुं, वेहेंची दीये वताय ॥ १ ॥ चोकी मूकी चिहुं दिशे, रुंधे आहार ने नीर; केइक दिन एम काढीआ, धरतो साहस धीर ॥ २ ॥ इण अवसर तिहां आवीउं, वाणमंतर वन मांहि; रहवाडी रमतो कुमर, देखी उपनो दाह ॥ ३ ॥ अहो गुरुता एहनी, वीरयवंत विशेष; मुझ सरिखो पण मारवा, अवसर न लहे अशेष ॥ ४ ॥ पण दुःख देवा पाधरो, ए अवसर छे आज; एम विचारी आवीयो, विग्रह पासे व्याज ॥ ५ ॥ प्रासाद तले बेठो प्रगट, विग्रह करे वखाण; किम आव्या पूछे कहो, वलती बोले वाणी ॥ ६ ॥ मलय जावा अमे मांडीयुं, दीठो विचमां दाव; गुणचंद वयरी मुझ घणो, तुझ पण तेह जमाव ॥ ७ ॥ उदय खमाय न एहनो, साहाय्य करुं तुझ साच; नयणे आज ए निरखीउं, मनमां तुं हवे माच ॥ ८ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ तुमे तो जले विराजो जी शंखेशरके वासी साहिब
जले विराजो जी ॥ ए देशी ॥

॥ तुमे तो जले पधार्या जी, देवांशी कोइ दीसो ॥ तुमे तो जले पधार्या जी ॥ ए आंकणी ॥ एहवुं जाणो साहाय्यज कीजे, तो करीये इम काम ॥ विग्रह कहे मुझ तिहां जइ मूको, गुणचंदनुं जिहां ठाम ॥ १ ॥ तु० ॥ रयणी मांहि करवुं एहवुं, वाणमंतर कहे ताम ॥ ए तो आयत माहरे दीसे, जाशे जव दो जाम ॥ २ ॥ तु० ॥ चार जणाशुं सज्ज थइने, विग्रह रहीयो जाम ॥ विद्या परजावे पण जणने, लेइ चाल्यो धरी माम ॥ ३ ॥ तु० ॥ गुणचंद शय्या पासे मूक्या, दीठो ताम कुमार ॥ गुणचंदने बोलावे एहवे, विग्रह धरी अहंकार ॥ ४ ॥ तु० ॥ मुझ साथे

तुं वयर करीने, केम सुतो सुख मांहि ॥ करी करवाल करे उठीनें, सुणी जाग्यो उछाहि ॥ ५ ॥ तु० ॥ उठीने कुंअर तव बोल्यो, जलो जलो व्यवसाय ॥ खड्ग लीए करमां इणे अवसर, अंगरक्षक तिणे ठाय ॥ ६ ॥ तु० ॥ कोलाहल सुणी आव्या तेहने, वारे ताम कुमार ॥ मत प्रहार करेजो कोइ, माहारा सम इण वार ॥ ७ ॥ तु० ॥ रहेजो साक्षी तुमे इण समये, हुं करशुं संग्राम ॥ इण अवसर वाणमंतर खड्गे, दीये प्रहार उद्दाम ॥ ८ ॥ तु० ॥ मार मार करतो तिम विग्रह, उठ्यो लेइ परिवार ॥ नाख्यां शस्त्र ऊमोऊम तेणे, पण वंचावे कुमार ॥ ९ ॥ तु० ॥ पुण्य प्रबल ने कलाकुशल वली, उत्कट बल परिणाम ॥ सिंह किशोर परे करिवरने, कीधा सहु विण धाम ॥ १० ॥ तु० ॥ उपकारी विग्रहने जाणी, नवि कीधो परिहार ॥ झाली केशने नाख्यो हेठो, हुउ ते जय जयकार ॥ ११ ॥ तु० ॥ विग्रहना परिवारने जींते, कुमर तणो परिवार ॥ कोलाहल उपनो तव नाठो, वाणमंतर विण मार ॥ १२ ॥ तु० ॥ वाणमंतर चिंते अहो पापी, अहो एहनो महिमाय ॥ गुण करीयो पण जाणे केहवो, एणी पेरे पण न मराय ॥ १३ ॥ तु० ॥ पण अयोध्या नयरे जाइ, संजलावुं परिवार ॥ गुणचंद तो परलोके पोहोतो, एम पण थशे अपकार ॥ १४ ॥ तु० ॥ एम विचारी चाल्यो तिहांथी, इण समे कहे कुमार ॥ उठ उठ महापुरीश करे ले, हर्ष धरी हथीआर ॥ ॥ १५ ॥ तु० ॥ एम कहीने मूक्यो कुमरे, पण नवि उठ्यो तेह ॥ कहे मुखथी वली इणी परे वाणी, सांजलजो गुणगेह ॥ १६ ॥ तु० ॥ तुम साथे हवे मुजने न घटे, हाथे लेवा हथीआर ॥ पूर्वे स्वामी हवणां जींत्यो, बहु तुमचो उपगार ॥ १७ ॥ तु० ॥ तुम वश हुं पण तुमे नवि मार्यो, मार्यो माहारो सत्त्व ॥ कुमर कहे तुम सरिखा नरने, एमज घटे ए तत्त्व ॥ १८ ॥ तु० ॥ विग्रह कहे शुं मुज वखाणो, हुं पापी शिरदार ॥ झाझुं जाखे शुं कह्यो होवे, सांजलो एक इणी वार ॥ १९ ॥ तु० ॥ हुकम करो निज नरने स्वामी, मारे जिणी परे मुज ॥ मुज कापुरुषनी चेष्टा देखो, घणुं घणुं शुं कहुं तुज ॥ २० ॥ तु० ॥ कुमर कहे कापुरुष ठो रुमा, जस एहवा परिणाम ॥ सूता शत्रुने नवि मार्यो, वलीअ जगाड्यो आम ॥ २१ ॥ तु० ॥ असंबंध बोलो नहीं मुखथी, मुजने दीधा प्राण ॥ तिणे सुखथी

पण में तुम मूक्या, तव बोख्यो ते जाण ॥ २२ ॥ तु० ॥ करी पसाय ने सेवक कीजे, बोख्यो ताम कुमार ॥ तात तणा सेवक तुमे तिणे, ज्येष्ट भ्राता मुज सार ॥ २३ ॥ तु० ॥ एम करतां जो तुम मन माने, चालो तात सकाश ॥ विग्रह कहे चालो तिहां जइए, बीक नहीं तुम पास ॥ २४ ॥ तु० ॥ वधामणां तिहां विग्रहे कीधां, चाल्यो कुंअर साथ ॥ विजयधर्म आचारय इणी समे, पाउ धास्था मुनिनाथ ॥ २५ ॥ तु० ॥ तृण मणि लेष्टु कंचन समवरू, षटजीवना प्रतिपाल ॥ कारण विण उपगारी जे गुरु, चौनाणी किरपाल ॥ २६ ॥ तु० ॥ गुणचंदने प्रतिबोधनो अवसर, जाणी लाज्ज अपार ॥ राज्य तजी मिथिला नयरीनो, लीधो संजमज्जार ॥ २७ ॥ तु० ॥ गुणसंज्जव उद्याने उतस्या, लब्धिवंत मुनि साथ ॥ परिजन मुखथी वात सुणीने, हरख्यो पृथिवीनाथ ॥ २८ ॥ तु० ॥ लेइ परिजन विग्रह संघाते, वंद्या गुरुना पाय ॥ सायर सम गंज्जीर रवि परे, तम टाले मुनिराय ॥ २९ ॥ तु० ॥ जिनवाणी परे जे निकलंकी, देखी शुज्ज परिणाम ॥ उपनो सर्व संग त्यागीना, वंदुं पद अज्जिराम ॥ ३० ॥ तु० ॥ साधुनुं दरिसण ते पावन, चिंती प्रणम्या पाय ॥ विग्रह सहित सहु साधु पण, धर्मलाज्ज देवराय ॥ ३१ ॥ तु० ॥ आठमे खंडे आठमी ढाले, गुरु बेसारे पास ॥ पद्मविजय पज्जणे इण अवसर, वात सुणो उल्लास ॥ ३२ ॥ २६४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर एक आवीयो, विद्याधर वररूप; वंदना करीने त्रिनवे, सांज्जलो प्रज्जुस्वरूप ॥ १ ॥ कनकपुरे दृढप्रज्ज करे, राज्य तिहां गुरुराय; तेहने आगले तिणे पुरे, हमणां वात कहाय ॥ २ ॥ मार्ग पाम्याथी मांमीने, आ ज्जव लगे अधिकार; वारु तुमे वखाणीयो, तिहां हुं गयो तिवार ॥ ३ ॥ जनमुखथी में जाणीयो, संक्षेपे संबंध; अचरिज सांज्जलवा अछे, पज्जणो सहु परबंध ॥ ४ ॥ अंतराय अन्य लोकने, न होये जो निरधार; अनुग्रह कीजे अम ज्जणी, कहेता ताम कुमार ॥ ५ ॥ अमने पण अनुग्रह होशे, एह कहे अवदात; ए इछा अमने अछे, वली जिम तुम मन वात ॥ ६ ॥ गुरुजी कहे गुणचंदने, सांज्जल थइ सावधान; विकथा निद्रा वरजजे, कहुं ते सुण देइ कान ॥ ७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ साहेबजी ॥ श्रीविमलाचल ज्ञेटीए होजी ॥ ए देशी ॥

॥ कुंअरजी ॥ एह जरतमां जाणीये होजी, मिथिला नयरी वि-ख्यात ॥ कुंअरजी ॥ कुं० ॥ विजयधर्म तिहां राजीयो होजी, राज्य करुं अवदात ॥ कुं० ॥ १ ॥ कुं० ॥ वात सोहामणी सांजलो होजी ॥ ए आंकणी ॥ कुं० ॥ अग्र महीषी माहरे होजी, चंद्रधर्मा वाहाली नारी ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ किणहिक अपहरी तेहने होजी, स्त्रीरयण मन धारी ॥ कुं० ॥ २ ॥ कुं० ॥ वात० ॥ कुं० ॥ मंत्रसाधनने कारणे होजी, मंत्रसि-द्धनां काम ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ विजयदेवीए मुज जाखीयो होजी, सांजली मूर्छा हुं पाम्मी ॥ कुं० ॥ ३ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ शीतल चंदने सिंचीआ होजी, कीधा वींजणे वाय ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ चेतना लही दुःखीयो घणुं होजी, देखी पण न शकुं कांय ॥ कुं० ॥ ४ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ एम करतां त्रण दिन गया होजी, आव्यो चोथे दिन्न ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ एक जटाधर मानवी होजी, तीव्र तपे परिखिन्न ॥ कुं० ॥ ५ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ जूति लगावी अंगमें होजी, मंत्रसिद्ध कहे आय ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ जे कामे तुमे आकुला होजी, नारी हरी में राय ॥ कुं० ॥ ६ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ मंत्रसाधनने कारणे होजी, तेहनो एहवो जीत ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ विण जाखे लेइ जायवी होजी, पण शीले सुपवित्त ॥ कुं० ॥ ७ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ पीमा पण नहीं उपजे होजी, तिणे मत कर संताप ॥ राजनजी ॥ रा० ॥ मास छए मलशे सही होजी, कहीने अदृश थयो आप ॥ कुं० ॥ ८ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ मूर्छा लही पूरव परे होजी, चित्त वले कहुं एम ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ दीर्घ विरह किम सही शकुं होजी, द्यो प्रतिवचन ते प्रेम ॥ कुं० ॥ ए ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ मोहवशे जे जे कह्या होजी, ते ते करुं आ-लाप ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ राज्य तज्युं कांय नवि गमे होजी, निशिदिन करुं विलाप ॥ कुं० ॥ १० ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ क्षण क्षणमां मूर्छा लहुं होजी, दुःख लहुं नरक समान ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ पंच मास किमे वही गया होजी, पंच पल्य उपमान ॥ कुं० ॥ ११ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ एक दिन विण कारण गयुं होजी, माहारुं दुःख असराल ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ अंगोअंग आणंद थयो होजी, चित्त प्रसन्न ते काल ॥ कुं० ॥ १२ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ हुं मुज

चित्तमां चिंतवुं होजी, कहो शुं कारण देव ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ वधामणी आवी तदा होजी, आव्या तिर्थंकर देव ॥ कुं० ॥ १३ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ रोम रोम हरख्यो घणुं होजी, सांभली तेहनी वाणी ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ उठी प्रभु सनमुख गयो होजी, संतोषी देइ दाण ॥ कुं० ॥ १४ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ वंदना करी नृप वृंदशुं होजी, दीधी सहुने आण ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ हय गय रह सहु सज करो होजी, जिनवर वंदन टाण ॥ कुं० ॥ १५ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ वस्त्र भूषण पहेरो सहु होजी, शोभा करो सुर जेम ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ समवसरण रचे देवता होजी, भाखुं कांयक तेम ॥ कुं० ॥ १६ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ नयरीथी उत्तर दिशा होजी, नंदन वननो भाय ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ वायुकुमर जोजन लगे होजी, अपहरे तृण समुदाय ॥ कुं० ॥ १७ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ मेघकुमार तिहां वरसता होजी, सुरभि शीतल नीर ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ ऋतु सुर वरसे फूलने होजी, पंच वरणनां रुचिर ॥ कुं० ॥ १८ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ रयण प्राकार वैमाणीआ होजी, वीजो कनक प्राकार ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ ज्योतिषी सुर विरचे तिहां होजी, हवे त्रीजो गढ सार ॥ कुं० ॥ १९ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ रजतनो भवनपति करे होजी, हवे व्यंतर करे काम ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ प्रत्येके तोरण ठवे होजी, मध्ये अशोक अभिराम ॥ कुं० ॥ २० ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ भ्रमर खेंचाणा लोभशुं होजी, कुसुमभरे नमी डाल ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ रयणसिंहासण मांडीआं होजी, पादपीठ सुविलास ॥ कुं० ॥ २१ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ त्रण छत्र वर उजलां होजी, मुक्ताफलनी जाल ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ त्रिभुवननाथ छे साहिबो होजी, विकसित कुंद ज्युं भालि ॥ कुं० ॥ २२ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ कनकदंड सोहामणो होजी, पवने नाचतो जेह ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ सिंहचक्र ध्वज मोटको होजी, गगनलेहन करे तेह ॥ कुं० ॥ २३ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ चामर गगने चालतां होजी, उज्ज्वल जिणी परे हंस ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ देवदुंदुभि घन गाजती होजी, सहु जन करे परशंस ॥ कुं० ॥ २४ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ रविमंडल परे दीपतुं होजी, धरमचक्रपुर जास ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ भामंडल तेजे तपे होजी, व्यंतरकृत सवि खास ॥ कुं० ॥ २५ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ त्रिभुवन नायकनुं रचे होजी, समवसरण एम सार ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ कनककमल पगलां ठवे होजी, ते पण नव सुवि-

चार ॥ कुं० ॥ २६ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ सात कमल पूठे रहे होजी, दोय उपरे ठवे पाय ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ पूर्व द्वारे पेसीने होजी, तीरथ नमे जिनराय ॥ कुं० ॥ २७ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ बेठा प्रदक्षिणा देइने होजी, पूर्व सन्मुख नाथ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ पादपीठ पग थापीने होजी, योगमुद्राए धरी हाथ ॥ कुं० ॥ २८ ॥ कुं० ॥ यतः ॥ "संघाचारज्ञाष्ये ॥ सिंहासणे निसन्नो, पाए ठविऊण पायपीढंमी ॥ कर धरीय जोगमुद्दो, जिणनाहो देसणं कुणई ॥ १ ॥" ॥ कुं० ॥ त्रिहुं दिशे जिन सारिखा होजी, प्रतिबिंब धरे विख्यात ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ धूपघटी तिहां महमहे होजी, आवश्यके घणी वात ॥ कुं० ॥ २९ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ कुमति मद जेहथी गले होजी, जिनवर सम देखाय ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ चामर ढाले बिहु दिशे होजी, निर्मल तिहां सुरराय ॥ कुं० ॥ ३० ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ अग्निकोणे प्रभुजी थकी होजी, सिंहासन रचे ताम ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ बेसे ज्येष्ठ गणधर तिहां होजी, गुणगण केरा धाम ॥ कुं० ॥ ३१ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ पेसे पूरव बारणे होजी, मुनि वैमानिक नारी ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ साधवी तिम प्रणमी करी होजी, बेसे अग्निकुणे ठारी ॥ कुं० ॥ ३२ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ भवणपति वण ज्योतिषी होजी, तेहनी देवी जेह ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ पेसे दक्षिण बारणे होजी, बेसे नैरुतकोणे तेह ॥ कुं० ॥ ३३ ॥ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ भवणपति वण ज्योतिषी होजी, पेसे पश्चिम द्वार ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ वाव्यकोणे ते उपविशे होजी, जिनने करी नमस्कार ॥ कुं० ॥ ३४ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ वैमानिक सुर तिम वली होजी, नर ने नरनी नारी ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ पेसी उत्तर बारणे होजी, बेसे ईशानकोणे ठारी ॥ कुं० ॥ ३५ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ साप नकुल मृग मृगपति होजी, कूकरु ने माजार ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ जातिवैर विसारीने होजी, बेसे बीजे प्राकार ॥ कुं० ॥ ३६ ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ यान विमान नरदेवनां होजी, रहे त्रीजा गढ मांहि ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ वधामणीदायक कहे होजी, सांभलो वली उत्साहि ॥ कुं० ॥ ३७ ॥ कुं० ॥ राजनजी ॥ दीठी राणी तिहां कणे होजी, सांभली लह्यो उल्लास ॥ कुं० ॥ कुं० ॥ आठमे खंडे नवमी कही होजी, ढाल पदमे ए रास ॥ कुं० ॥ ३८ ॥ कुं० ॥ सर्व गाथा ॥ ३०९ ॥

॥ दोहा ॥

॥सामग्री सहु सज करी, गजवर बेठो गेलि; वाजित्र बहुपरे वाजते, करतां परेपरे केलि ॥ १ ॥ नयर बाहिर जव नीकल्यो, परिवृत बहु परिवार; समवसरण सोहामणुं, दीठुं दरिस उदार ॥ २ ॥ उत्तर द्वारे आवीयो, पुलकित थइ पविठ; जगविख्यात जिनेसरु, दरिसण नयणे दीठ ॥ ३ ॥ प्रणमी जिणवर पाउले, स्तवना करे रसाल; सावधान थइ सांजले, स्वर पद वर्ण विशाल ॥ ४ ॥

॥ ढाल स्तुतिनी ॥

॥ लावो लावोने राज मोंघा मूलां मोती ॥ ए देशी ॥

॥ जवि तुमे वंदो रे अरिहा देव जिणंदा, गुणगणकंदो रे नमतां जाये जवफंदा ॥ ए आंकणी ॥ जय परमेश्वर जगदानंदन, जय जगवल्लज नाथ ॥ जय त्रिभुवन एक मंगलरूपी, जय तुं शिवपुरसाथ ॥ १ ॥ ज० ॥ जय जोगीसरसेवित पदकज, जय इंद्रियगजसिंह ॥ जय दुर्जय निर्जित कंदर्प्पह, जय तुं अकल अबीह ॥ २ ॥ ज० ॥ जय जविकमल विकाशन दिनकर, जय सुरनरनतपाय ॥ जय मनवंछित पूरण सुरगवि, जय तुं अमल अमाय ॥ ३ ॥ ज० ॥ जय पारंगत जय निकलंकी, जय स्याद्वाद सरूप ॥ जय गुणरहित गुणाकार स्वामी, जय अशरीर अरूप ॥ ४ ॥ ज० ॥ जय परिसह फोजे ऐरावण, जय अजरामर देव ॥ जय जवजयजंजन अविनाशी, जय सुरतरुसम सेव ॥ ५ ॥ ज० ॥ जय गतरागद्वेष गतवेदा, जय गतरोग ने शोग ॥ जय गत मान मत्सर रति अरति, जय गतजोग विजोग ॥ ६ ॥ ज० ॥ जय सर्वज्ञ तथा सविदंशी, जय तुं चरण अनंत ॥ जय अपुनर्जव जय जय निरुपम, जय जगवंत जदंत ॥ ७ ॥ ज० ॥ जय तुं अचल अनंत अखंडह, जय अक्षय अविकार ॥ जय निज गुण जोगी ने अयोगी, जय तुं मार्गदातार ॥ ८ ॥ ज० ॥ जय जगबंधव जय जगरक्षक, जय निरीह निःसंग ॥ जय शाश्वत सुख अव्याबाधह, जय निज आतम रंग ॥ ए ॥ ज० ॥ जय पूर्णानंदी परमातम, जय चिद्रूअमृतपानी ॥ जय निज गुण कर्त्ता तह जोक्ता, जय तुऊ अकह कहानी ॥ १० ॥ ज० ॥ जय गुणनंत अलप मुऊ बुद्धि, जय जिनवर किम कहीये॥ उत्तम गुण जो पद्मविजय कहे, प्रगटे तो सवि लहीये॥११॥ज०॥३५४

॥ दोहा ॥

॥ जनपति एम जिनराजनी, स्तवना करी सनाह; प्रणमे गणधर मुनिपति, एम अणगार उबाह ॥ १ ॥ उचित थानके उपविशे, पृथवीपति परिवार; दीये प्रभुजी पण देशना, जवजयजंजणहार ॥ २ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ हस्तिनागपुर वर जलो, जिहां पांडु राजा सार रे ॥

॥ प्राणी जिनवाणी सुणो, तुमे ढांडी मोहजंजाल रे ॥ पामी नरजव दोहिलो, मत खोवो आलपंपाल रे ॥१॥ मत खोवो आलपंपाल, फिरी फिरी दोहिलो जिनधर्म रे ॥ जिनधर्मनो मर्म लही करी, जिण परे पामीये शिवशर्म रे ॥ ए आंकणी ॥ जीव अनादि अनंत छे, कर्मे संजुत्त परवाह रे ॥ पापथी दुःखीउं धर्मथी, सुखीउं सवि दर्शन राह रे ॥ २ ॥ सुखी० ॥ चारित्र श्रुत दोय जेदथी, धर्म परखीजे त्रण जेय रे ॥ एक कस ने बीजो छेदथी, ताप कनक परे परखेय रे ॥ ३ ॥ ताप० ॥ जिहां सावद्य निषेध छे, टाले रागादिक जिहां ध्यान रे ॥ एह कसोटीए शुद्ध छे, जिम कनक कसोटीए दान रे ॥ ४ ॥ जिम० ॥ सूक्ष्म बादर जीवनी, जिहां हिंसानो नहीं त्याग रे ॥ तेह अशुद्ध धर्म जाणीये, वली रागादिक नहीं त्याग रे ॥ ५ ॥ वली० ॥ जिहां संयम अप्रमत्तता, लीये आहारादिक जिहां शुद्ध रे ॥ छेद शुद्ध ते धर्म छे, इणी परे जाषे स्वयंबुद्ध रे ॥ ६ ॥ इणी० ॥ पंच सुमति त्रण गुप्ति जे, सदा काल पाले सविशुद्ध रे ॥ एहथी विपरीत जे होये, ते छेदथी धर्म अशुद्ध रे ॥ ७ ॥ ते छे० ॥ जोजन परघर जायवुं, वली खड्गादिक धरे जेह रे ॥ तेह धर्म उछेदवो, जुक्ति नवि थापे तेह रे ॥ ८ ॥ जुक्ति० ॥ जीवादिक स्याद्वादथी, घटे बंधादिक सद्भाव रे ॥ ते जुगते वली थापवुं, ए शुद्ध धर्म छे ताव रे ॥ ९ ॥ ए शु० ॥ एह जुक्ति न खमी शके, ते ताप अशुद्ध विचार रे ॥ तिणे नित्यानित्य जाणीये, जीव अस्तिनास्ति प्रकार रे ॥ १० ॥ जीव० ॥ धर्म अनेक एम जीवना, ठरे सुख दुःख बंध ने मोक्ष रे ॥ धर्म अनेक न मानीये, तो उलटा होये दोष रे ॥ ११ ॥ तो उ० ॥ अस्तिस्वरूपे जाणीये, पररूपे नास्तिस्वजाव रे ॥ नहीं तो विशिष्ट अजावथी, सवि एक रूप होय जाव रे ॥ १२ ॥ सवि० ॥ नित्य एकांते जाखीये, तो किम

दुःखक्षयने हेत रे ॥ अनुष्ठान करे लोक ए, सुख लेहेवाने संकेत रे ॥ १३ ॥ सुख० ॥ कहीये एकांते अनित्य जो, तो भवन अनंतर नाश रे ॥ जीव परिणामी भावथी, केहने सुख दुःखनी आश रे ॥ १४ ॥ केह० ॥ भेदाभेद एम जाणीये, तिम एक अनेक विचार रे ॥ स्याद्वाद रीते करी, उलखो आतम निरधार रे ॥ १५ ॥ उल० ॥ मिथ्यात्वादिक बंधना, हेतुए करी बांधे कर्म रे ॥ सम्यक्तादिक भावथी, क्षय करी लहे शाश्वत शर्म रे ॥ १६ ॥ क्षय०॥ भेदाभेद जीव ने तनु, रूपी ने अरूपी तेम रे ॥ कर्त्ता भोक्ता उभय छे, बंधादिक पण घटे एम रे ॥ १७ ॥ बंधा० ॥ जीव शरीर पण भिन्न छे, जे कारण इण भव पाप रे ॥ अन्य शरीरे आतमा, परभव भोगवे संताप रे ॥ १८ ॥ पर० ॥ अन्य करे अन्य भोगवे, ते तो न घटे सर्व प्रकार रे ॥ तेणे अभेद कोइ रीति छे, एम भेदाभेद उदार रे ॥ १९ ॥ एम० ॥ बंध अनादि प्रवाहथी, कंचन पथर सम तेह रे ॥ नहीं तो शुद्ध स्वरूपने, कर्म वलगे इष्ट न एह रे ॥ २० ॥ कर्म० ॥ तेहनो अंत पण भव्यने, होये पुत्र पिता परे जाण रे ॥ कूकडी अंड परे वली, अभव्यने नित्य वखाण रे ॥ २१ ॥ अभ० ॥ तास विनाश उपायने, सेवी करीआ सिद्धि अनंत रे ॥ तेह तणो नवि अंत छे, प्रध्वंस अभाव परें तंत रे ॥ २२ ॥ प्रध्वं० ॥ तेह कारण भवि कीजीये, तेह कर्मविनाश उपाय रे ॥ समकित धुरे अंगीकरो, जिम सवि गुण थिरता थाय रे ॥ २३ ॥ जिम० ॥ देव गुरु ने धर्मनी, रुचि ते समकित कहेवाय रे ॥ वीतराग सर्वज्ञ जे, ते देवपणे ठहराय रे ॥ २४ ॥ ते दे० ॥ परिग्रह आरंभ जिणे तज्या, ते तरण तारण समरछ रे ॥ उपगरण धर्मनां जेह छे, ते चारित्ररक्षण अछ रे ॥ २५ ॥ ते चा० ॥ केवलीए जे जे भाखीयो, ते धर्म कहीजे संत रे ॥ ए समकित व्यवहारथी, निश्चय निज आतमतंत रे ॥ २६ ॥ निश्च० ॥ एम समकी अंगीकरो, तुमे सफल करो अवतार रे ॥ देशना सांभली एणी परे, लही परषदा हर्ष अपार रे ॥ २७ ॥ लही० ॥ हाथ जोडी प्रणमी करी, कहे प्रभु तुम वचन प्रमाण रे ॥ तुम सम देशक को नहीं, घरे जाये इम करती वखाण रे ॥ २८ ॥ घरे० ॥ केइक समकित पामीआ, केइ देशविरति लहे सत्त्व रे ॥ सकल संग छांडी करी, केइ चारित्र लीये लही तत्त्व रे ॥ २९ ॥

केइ० ॥ केइ नडकनावी थया, कही आठमे खंडे ढाल रे ॥ पद्मविजये दशमी नली, सुणो आगल वात रसाल रे ॥ ३० ॥ सु० ॥ ३५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नयणे दीठी नारीने, समवसरणमां सार; चिंता थइ मुऊ चित्तमां, निश्चय ए मुऊ नारी ॥१॥ केम ए इहां आवी कहो, वली संनाख्युं वयण; मंत्रसिद्धे नाख्युं मने, राणी देखी रयण ॥ २ ॥ पूर्बु जिनवरने प्रजु परनव शुं कर्बुं पाप; राणीविरहथी रोवतां, सबल थयो संताप ॥ ३ ॥ इणी परे धारी आदरे, कुमरजी पूछ्युं केम; पूर्वे कर्मविपाक जे, अरिहा नाखे एम ॥ ४ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ हो पियु पातलीआ, नारी गुणावली ताम जो ॥ पंजरीयुं कर लीधुं ऊरते लोयणे रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ हो सुण राजनीआ ॥ जंबुद्वीप मऊार जो, विंध्याचल इण नामे परवत सोहतो रे लो ॥ हो सु० ॥ उंषधिउं घणी तत्र जो, जाज्वल्यमान दीपक परे तिणे मन मोहतो रे लो ॥ १ ॥ हो सु० ॥ चंदन प्रमुख सुगंध जो, बहु पंखीगण शब्द करे सोहामणा रे लो ॥ हो सु० ॥ सिंहरसेण तुऊ नाम जो, शबर तणो तुं राय बलमां नहीं मणा रे लो ॥२॥ हो सु० ॥ बहु जीवनो करे घात जो, विषय मूर्बित तुं अतिशय घरणीशुं रहे रे लो ॥ हो सु० ॥ रोऊ हरिण ने रींछ जो, करे वियोग जुगलनो मनमां सुख लहे रे लो ॥ ३ ॥ हो सु० ॥ सुख अनिलाषी तेह जो, वनमां रहे ते बीहता तुऊथी थरहरे रे लो ॥ हो सु० ॥ श्रीमती ताहरे नारी जो, गुंजाफल मालानां आनरणां धरे रे लो ॥ ४ ॥ हो सु० ॥ पहेरे वल्कल वस्त्र जो, रुमी रे तरुआनी त्रोटी कानमां रे लो ॥ हो सु० ॥ तेहनी साथे नित्य जो, गिरिनिकुंजमां सुख नोगवतो मानमां रे लो ॥ ५ ॥ हो सु० ॥ ग्रीष्म ऋतु तिणी वार जो, आव्यो रे एक गछ मुनिवरनो तिहां किणे रे लो ॥ हो सु० ॥ पंथभ्रष्ट परिखिन्न जो, देखीने अनुकंपा आवी तुऊ मने रे लो ॥ ६ ॥ हो सु० ॥ तुऊ मनमां थइ चिंत जो, विषम गिरि कंतारमां केम इणी परे नमे रे लो ॥ हो सु० ॥ जइ पूछ्युं ततकाल जो, मुनि कहे नूला पंथथी तिणे नमीये अमे रे लो

॥ ७ ॥ हो सु० ॥ श्रीमती कहे जरतार जो, एह तपस्वी फल मूलादिक आपीये रे लो ॥ हो सु० ॥विंध्यनी अटवी जीम जो, पार उतारी एह तणां दुःख कापीये रे लो ॥ ८ ॥ हो सु० ॥ एह निधान समान जो, कीधी रे तुज जेट विधाताए खरी रे लो ॥ हो सु० ॥ एम सांजली तस वाणी जो, उठ्यो रे रोमांचित अति हरखे जरी रे लो ॥ ए ॥ हो सु० ॥ लाव्यो मूल ने कंद जो, अद्भुत फल लाव्यो तव एम मुनिवर जणे रे लो ॥ हो सु० ॥ नवि कल्पे अम एह जो, जिणवरे कीध निषेध नवि लेउं तिणे रे लो ॥ १० ॥ हो सु० ॥ बोल्यो शबरजूपाल जो, अम उद्वेग होये तिणे कारण लीजीये रे लो ॥ हो सु० ॥ मुनिवर जाणी जाव जो, लाजालाज विचारी एम वदीजीये रे लो ॥ ११ ॥ हो सु० ॥ लावो फल मूल कंद जो, वरण गंध पलटाणां होये जेहनां रे लो ॥ हो सु० ॥ जे बहु कालनां लीध जो, शबरराय ते सांजली वयणां तेहनां रे लो ॥ १२ ॥ हो सु०॥ परिणत फल मूल कंद जो, लाव्यो गिरिगुफाथी मुनि पडिलाजीआ रे लो ॥ हो सु० ॥ पंथ चढाव्या ताम जो, नारी सहित शुज जावथी धन्य निज मानीआ रे लो ॥ १३ ॥ हो सु० ॥ मुनिए पण कह्यो धर्म जो, सांजली कर्म विवरथी तुमे अंगीकस्यो रे, लो ॥ हो सु० ॥ दीधो तुम नवकार जो, शिवसुख कारण ते तुमे जक्ते हृदे धस्यो रे लो ॥ १४ ॥ हो सु० ॥ अतिशय ज्ञानी तेह जो, जाणी रे उपकार कहे वली इणी परे रे लो ॥ हो सु० ॥ पद्ममां एक दिन सार जो, सावद्य आरंज वरजीने इणी परे करे रे लो ॥ १५ ॥ हो सु० ॥ एकांते रही ताम जो, नवपदने तुं संजारे दृढ मन करी रे लो ॥ हो सु० ॥ तुजने मारे कोय जो, तोपण ते रहेवुं समता शुज आदरी रे लो ॥ ॥ १६ ॥ हो सु० ॥ एम पाली जिनधर्म जो, पामशो सुरसुख थोडा काल मांहि तुमे रे लो ॥ हो सु० ॥ अंगीकार करे दोय जो, साधुवयण ए बे तिणे निस्तरीयां अमे रे लो ॥ १७ ॥ हो सु० ॥ मुनिए कीध विहार जो, एह अजिग्रह पाले बिहु जिम मुनि कह्यो रे लो ॥ हो सु० ॥ वर्द्धमान संवेग जो, एक दिन पडिमा पोसह तिहां दंपती ग्रह्यो रे लो ॥ ॥ १८ ॥ हो सु० ॥ तिहां आव्यो एक सिंह जो, गजकुंजस्थल दारणने रसीउं घणुं रे लो ॥ हो सु० ॥ श्रीमती बीहीनी ताम जो, देखीने जिह्व

उठ्यो धरी साहसपणुं रे लो ॥ १९ ॥ हो सु० ॥ धनुष तीर लीये हाथ जो, कहे मत बीहे नारी तुं एक शरे हणुं रे लो ॥ हो सु० ॥ श्रीमती बोले ताम जो, एहमां नहीं संदेह पराक्रम तुम तणुं रे लो ॥ २० ॥ हो ॥ सु० ॥ पण गुरुवयण पलाय जो, गुरुए कह्युं प्राणांत करे कोइ वध प्रते रे लो ॥ हो सु० ॥ ते खमजो चित्त मांहि जो, किम गुरुवयण वृथा करीये समरण छते रे लो ॥ २१ ॥ हो सु० ॥ परभव बंधुभूत जो, ते गुरुवयण रसायण करीने जाणीये रे लो ॥ हो सु० ॥ नारीने कहे एम निव जो, सत्य कह्युं तें वयण गुरु बहु मानीये रे लो ॥ २२ ॥ हो सु० ॥ तुज मोहे कह्युं एम जो, मूक्युं धनुष्य तीर में गुरुवयणे रह्यो रे लो ॥ हो सु० ॥ इण अवसर ते सिंह जो, उछाली लांगुलने ते सन्मुख थयो रे लो ॥ २३ ॥ हो सु० ॥ तें चिंत्युं मन मांहि जो, गुरुआणा परिपालण कशवटि ए खरो रे लो ॥ हो सु० ॥ उपगारी एह सिंह जो, एम चिंतन शुभ करतां आव्यो डुहकरो रे लो ॥ २४ ॥ हो सु० ॥ दंपती दोय विनाश जो, कीधो रे उपसर्ग ते तुमे अहिआसीआ रे लो ॥ हो सु० ॥ सोहम देवलोक मांहि जो, दंपती उपनां ऋद्धिवंत आवासीआं रे लो ॥ ॥ २५ ॥ हो सु० ॥ पल्योपम एक आय जो, भोगवतां अग्यारमी ढाल सोहामणी रे लो ॥ हो सु० ॥ आठमे खंडे एह जो, पद्मविजय कहे वात सुणो आगे घणी रे लो ॥ २६ ॥ ३०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जंबुद्वीपमां बिहु जणां, अपर विदेह अनूप; नयर चक्रपुर निरखीये, भलो कुरुमृगांक भूप ॥ १ ॥ कामिनी बालचंदा कही, तस कूखे अवतार; समरमृगांक ठवे सुखे, नाम गुरु निरधार ॥ २ ॥ शालो नृपनो सोहतो, सुभूषण शिरदार; कुरुमती नारी कूखमां, तुज नारी अवतार ॥ ३ ॥ अशोक देवी एहवुं, थाप्युं नाम थिर थाव, कला ग्रहण करतां बिहु, यौवन पाम्यां जाव ॥ ४ ॥ तुम विवाह थयो बिहु तणो, परएयां दिन सुपसन्न; सुख भोगवतां स्वर्गनां, जाणे काल न जन्न ॥ ५ ॥ राग घणो स्त्री रमणने, एम करतां एक दिन्न; पलि देखे पृथ्वीपति, परसंवेग प्रपन्न ॥ ६ ॥ राज्य देइ तुज राजीउं, देवीशुं लीये दीक्ष; राज्य पाले तुं रंगशुं, सहु अरिने दीये शीख ॥ ७ ॥ मार्या निर्दय मन करी, वली ति-

थंच विजोग; हवे विपाक सुण तेहना, सघला कटुक संयोग ॥ ७ ॥
॥ ढाल बारमी ॥
॥ पहेलीने वाडे होजी वीर जिनवर कहे ॥ ए देशी ॥
॥ तिणहीज विजये होजी गंगा नयरीए, सिरिवल राजा रे राज्य करे तिहां जी ॥ तेहशुं सहजे होजी विग्रह तुज थयो, सुन्नट सनूरा रे गया सिरिवल जिहां जी ॥ १ ॥ तोपण तेहशुं होजी संग्राम मांमीउं, शेष सैन्य पण तिणे मार्युं यदा जी ॥ तुज पण मार्यो होजी काल करी तिहां, रौद्र ध्यानथी रे गयो नरगे तदा जी ॥ २ ॥ सत्तर सागर होजी आउखुं ताहरुं, ताहरी राणी रे मरण ते सांन्नली जी ॥ मूर्छा पामी होजी चेतना वली लही, करे नियाणुं रे इणी परे ते वली जी ॥ ३ ॥ जिहां मुज स्वामी होजी होये उपना, तिहां मुज होजो रे उपजवुं खरुं जी ॥ एम कही पेठी होजी बलती अग्निमां, क्लिष्ट चित्तथी रे कष्ट सह्युं आकरुं जी ॥ ४ ॥ सत्तर सागर होजी आउखे उपनी, महा दुःख सहेतां रे अनुक्रमे बिहु जणां जी ॥ तिहांथी नीकली होजी पुस्करा अर्ध्दमां, न्नरत क्षेत्रमां रे निरधन जे घणां जी ॥ ५ ॥ ते बिहु उपनां होजी न्निन्न न्निन्न घरे, बिहु जण परण्यां रे अनुक्रमे दंपती जी ॥ आजीविकानुं होजी दुःख तुमे अनुन्नवो, न्निक्षाए आव्यां रे एक दिन महा सती जी ॥ ६ ॥ देखी तेहने होजी सरधा वाधते, प्रासूक न्निक्षा रें रोमांचित थइ जी ॥ आपीने पूछ्युं होजी किहां रहो छो तुमे, तव ते बोली रे मुख्य जे संजइ जी ॥ ७ ॥ वसु शेठ घरने होजी पासे उपाशरे, नयरमां रहीये रे एम सुणी हरखीआं जी ॥ सांजे लेइ होजी फुल तिहां गयां, सुव्रता गणिणी रे नामे निरखीआं जी ॥ ८ ॥ पुस्तक साहामी होजी दृष्टि ठवी करी, तनु जस नाला रे न्नमर ते लोयणां जी ॥ सुवयण कमला होजी शोहे ज्युं कमलिनी, हरखे वंद्यां रे विस्मित दोय जणां जी ॥ ए ॥ अंग अग्यारे होजी जीन्नने टेरवे, धर्मलान्न दीधो रे कर उंचो करी जी ॥ प्रन्नुजी वंदो होजी कुसुमवुष्टि करी, संसार सागर सुखे जाउं तरी जी ॥ १० ॥ एम सुणी जिनवर होजी वंदी देहरे, गणिणी समीपे रे आवी उपविशे जी ॥ गणिणी पूछे होजी किहां तुम वास छे, गोचरीआं कहे एहु तो इहां वसे जी ॥ ११ ॥ अमे गयां गो-

चरी होजी एह तणे घरे, श्रद्धावंत घणा छे सामिनी जी ॥ नक्ते आव्या होजी जिनवर वांदवा, गणिणी बोल्यां रे वात करी कामनी जी ॥ १२ ॥ धर्म ते जगमां होजी शरण आधार छे, धर्मने मूकी रे दुःख टाले नहीं जी ॥ इंद्रजाल सम होजी के सुपना समो, चल ने असार रे नरनव ए लही जी ॥ १३ ॥ धर्म करे नहीं होजी विषयनो लोलपी, चंदन बाली रे अंगारा करे जी ॥ धर्मथी लहीये होजी शाश्वत सुख घणां, थोडे काले रे कह्युं इम जिनवरे जी ॥ १४ ॥ तिणे तुमे आव्यां होजी ते रुडुं कर्युं, जिन मुनि दरिसण अति पावन कह्युं जी ॥ एम तुमे सांजली होजी शुद्ध हृदय थकी, मांस ने मधुनुं रे पच्चरकाण तुमे लह्युं जी ॥ १५ ॥ जवा वेला होजी गणिणीए कह्युं, नित्य नित्य आवजो रे सुणवा धर्मने जी ॥ दुःख सहु जाशे होजी तुमचा अंगथी, वचन ते मान्युं रे जाणी मर्मने जी ॥ १६ ॥ घरे हवे आव्यां होजी धर्म ते नित्य करो, अनुक्रमे तुमने रे शुद्ध श्रावकपणुं जी ॥ विषय विमुखथी होजी पाली धर्मने, मरी ब्रह्मलोके रे लह्युं सुख सुर तणुं जी ॥ १७ ॥ सात सागरनुं होजी फाझेरुं आउखुं, तिहांथी चवीने रे आव्यां नृपघरे जी ॥ सबर जनममां होजी कर्म कर्यां तुमे, दुःख तस नरगे रे सहीयां परपरे जी ॥ १८ ॥ मनुजना नवमां होजी दुःख कांय जोगव्यां, उदये आव्युं रे शेष रह्युं तिके जी ॥ एम जाणीने होजी कर्म न कीजीये, तास उदयथी नर बीहे जिके जी ॥ १९ ॥ लोकनाथनी होजी सांजली वाणीने, परम संवेगे रे आतम जावीयो जी ॥ कहे जिनवरजी होजी धर्म जलो कह्यो, प्रजुजी पसाये रे वैराग आवीयो जी ॥ २० ॥ दीक्षा लेशुं होजी प्रजुजी पाउले, जगगुरु बोले रे प्रतिबंध मत करो जी ॥ लीधी दीक्षा रे जुवन गुरु कने, एह वृत्तांत रे कह्यो में माहरो जी ॥२१॥ कनकपुरे में होजी ते तुमने कह्यो, संवेग उपन्यो रे सांजली वातडी जी ॥ गुणचंद्र चिंते होजी दुष्ट विपाक छे, धिग् धिग् कहीये रे मोहनी जातडी जी ॥ २२ ॥ आठमे खंडे होजी ढाल ते बारमी, जाखी एम में रे पद्मविजय कहे जी ॥ समरादित्यने होजी रासे सोहामणी, सुणतां मंगलमाल जवि लहे जी ॥ २३ ॥ ४१७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुणचंद कुमर कहे गुणी, अमने कस्यो उपगार; कहेतां आप कथा तुमे, प्रगट उतास्या पार ॥ १ ॥ धर्म अमे धास्यो खरो, पामी तुम पसाय; मिथ्या विकल्प सवि मिट्या, अमने व्रत इच्छाय ॥ २ ॥ पण गिही धरम पसाय करी, विग्रह कहे तव वाणी; महेर करी तुमे मुजने, आपो अनुवृत्त जाणी ॥ ३ ॥ विधिए श्रावकव्रत लीआं, वंद्या गुरु बहु मान; गुरु धर्मलाभ देइ गहे, सुण तुं वात सयान ॥ ४ ॥ आव्या अवसर उलखी, अमे तुज बोधन आज; रत्नपुरीथी राजीआ, कहे सीधुं अम काज ॥ ५ ॥ पाछुं तिहां जइ पोहोंचवुं, मुनिवर तिहां बहु मुज; वाट जोता होशे वली, तिणे सांभल कहुं तुज ॥ ६ ॥ अयोध्यामां अम तणुं, मलवुं थशे कुमार; दृढव्रत होजे दाखवी, अद्भुत हवे अणगार ॥ ७ ॥ सहु साधुशुं संचस्या, गगनपंथ गुरुराय; वंदे कुमर विग्रह बिहु, अनुक्रमे अदृश थाय ॥ ८ ॥ हवे अयोध्या हर्षशुं, चाल्या चतुर विचारी; वाणमंतरनी वातनो, भणुं हवे प्रकार ॥ ९ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ हुं वारी रंग ढोलना ॥ ए देशी ॥

॥ तेहज दिवसे तिहां गयो हो राज, वाणमंतर खग जेह रे ॥ उझावे एहवी वातडी ॥ कुमरना परिजन आगले हो राज, कूड प्रपंच करे तेह रे ॥ १ ॥ उ० ॥ विग्रह राये मारीयो हो राज, संग्रामे गुणचंद रे ॥ उ० ॥ श्रवण परंपरा सांभले हो राज, मैत्रीबल जे नरींद रे ॥ २ ॥ उ० ॥ नरपति ते नवि सरदहे हो राज, रत्नवती सुणे जाम रे ॥ उ० ॥ मूर्छा लही धरणी ढली हो राज, आश्वासे परिजन ताम रे ॥ ३ ॥ उ० राय सुणी तिहां आवीउ हो राज, नयणे नीर न माय रे ॥ उ० ॥ रत्नवती चरणे नमी हो राज, कहे सुणीये महाराज रे ॥ ४ ॥ उ० ॥ हुं मंदभाग्य शिरोमणि हो राज, पेसुं अग्नि मझार रे ॥ उ० ॥ आणा द्यो जीवित तजुं हो राज, गयो मुज प्राणआधार रे ॥ ५ ॥ उ० ॥ प्राण निठोर हजी रह्या हो राज, द्यो आणा मुज आज रे ॥ उ० ॥ सुरलोके संगम होये हो राज, आर्यपुत्रशुं काज रे ॥ ६ ॥ उ० ॥ शोहागण सुणी वातडी हो राज, नृप कहे म करो शोक रे ॥ उ० ॥ संभव नहीं

एह वातनो हो राज, माने कोइ न लोक रे ॥ ७ ॥ उ० ॥ सिंहने मारे शी-आलीयो हो राज, एह मनाये केम रे ॥ उ० ॥ सिद्धादेशे जाखीउं हो राज, पुत्रजनम एम नेम रे ॥ ८ ॥ उ० ॥ वचन अलीक न तेहनुं हो राज, नहीं मुफ आकुल चित्त रे ॥ उ० ॥ स्वप्न दीठुं में सोहामणुं हो राज, अविधवा तुफ दित्त रे ॥ ए ॥ उ० ॥ जनमांतर कोइ वैरीए हो राज, कूरू कपट कर्खुं एह रे ॥ उ० ॥ तिणे ए वात न कीजीये हो राज, जिण वाते जाये गेह रे ॥ १० ॥ उ० ॥ दैवनी वात अचिंत्य छे हो राज, वात होशे एह साच रे ॥ उ० ॥ तो अमे पण किम जीवशुं हो राज, मान तुं साची वाच रे ॥ ११ ॥ उ० ॥ पवनगति काशिद प्रते हो राज, मोकलायो छे आज रे ॥ उ० ॥ पांच दिवसमां आवशे हो राज, पछे जुक्त करेशुं काज रे ॥ १२ ॥ उ० ॥ तिणे मत था उतावली हो राज, मत करजे संताप रे ॥ उ० ॥ रत्नवती कहे तातजी हो राज, जिम तुमची होय छाप रे ॥ १३ ॥ उ० ॥ पण जो तुम आणा होये हो राज, तो देउं नित्य दान रे ॥ उ० ॥ शांतिकर्म वली तिम करुं हो राज, देवपूजा बहु मान रे ॥ १४ ॥ उ० ॥ कुशल वात आर्यपुत्रनी हो राज, सांजलीये त्यां सीम रे ॥ उ० ॥ माहरुं मन छे एहवुं हो राज, आहार तणो करुं नीम रे ॥ १५ ॥ उ० ॥ राय कहे करीये सुखे हो राज, एहमां कोइ न दोष रे ॥ उ० ॥ रत्नवती हवे तिम करे हो राज, धर्म तणो वर पोष रे ॥ १६ ॥ उ० ॥ जूपति निज थानक गयो हो राज, सा गइ पूजनहेत रे ॥ उ० ॥ इणे अवसर तिणे निरखीआं हो राज, पूरव पुण्य संकेत रे ॥ १७ ॥ संजमवंती साधवी ॥ ए आंकणी ॥ विचार जूमिथी आवतां हो राज, नहीं कोइ चित्त विकार रे ॥ सं० ॥ ज्ञानी तपसी उपशमी हो राज, सुंदर अंग आकार रे ॥ १८ ॥ सं० ॥ जावना जावे परिणम्यां हो राज, साहुणीने परिवार रे ॥ सं० ॥ श्वेतांबिका नृपनी धूआ हो राज, कोशला नृपनी नारी रे ॥ १ए ॥ सं० ॥ चरणसीरीए विग्रह धर्खुं हो राज, सुसंगता जस नाम रे ॥ सं० ॥ देखतां रत्नवती तणो हो राज, नाठो शोक उद्दाम रे ॥ २० ॥ सं० ॥ मनमां आणंद उपनो हो राज, आतमवीर्य उल्लास रे ॥ सं० ॥ चिंतवे अहो जगवती तणो हो राज, रूप ने विषय उदास रे ॥ २१ ॥ सं० ॥ अहो कुशलता एहनी हो राज, कृतारथ अहो

एह रे ॥ सं० ॥ मुजने दरिसण ए थयुं हो राज, धन्य थइ मुज देह रे ॥ ॥ २२ ॥ दरिसण मात्रे जेहनां हो राज, पापपडल जाये दूर रे ॥ सं० ॥ साधवी पासे ते गइ हो राज, शुभ ध्याने संपूर रे ॥ २३ ॥ सं० ॥ विनयथी गणिणी वांदीयां हो राज, धर्मलाभ दीयो ताम रे ॥ सं० ॥ फरी वंदीने बोलती हो राज, विनति सुणो एक आम रे ॥ २४ ॥ सं० ॥ दुःखी जन वत्सल बो तुमे हो राज, कीजे एक पसाय रे ॥ सं० ॥ मुज घर आवो स्वामिनी हो राज, जो न विरोध कोइ थाय रे ॥ २५ ॥ सं० ॥ दुःख उपशम कांयक थयो हो राज, तुम दरिसणथी आज रे ॥ सं० ॥ संभलावो मुज धर्मने हो राज, जिम होवे मुज काज रे ॥ २६ ॥ सं० ॥ धर्मशीला सुण वातडी हो राज, एहमां कांय न विरोध रे ॥ सं० ॥ गुरुणी कहे अमे आवशुं हो राज, जेहथी होय तुम बोध रे ॥ २७ ॥ सं० ॥ कोइने अप्रीति न उपजे हो राज, रत्नवती कहे ताम रे ॥ सं० ॥ धर्मी मुज गुरुजन अछे हो राज, नहीं कोइ अप्रीतिठाम रे ॥ २८ ॥ सं० ॥ गणिणी कहे तो आवशुं हो राज, सा कहे कीध पसाय रे ॥ सं० ॥ चाल्यां सहु साथे हवे हो राज, रतनवती घर जाय रे ॥ २९ ॥ सं० ॥ आठमे खंडे ए कही हो राज, तेरमी ढाल रसाल रे ॥ सं० ॥ पद्मविजय कहे सांभलो हो राज, सुणतां मंगलमाल रे ॥ ३० ॥ सं० ॥ ४५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विनय करी विधिशुं वली, उत्तम आसन आपी; अलवे आगल उपविशे, सुणवाने संलाप ॥ १ ॥ परिवार पण बेठो पछे, सुणवा धर्म संकेत; ज्ञानी तव गुरुणी कहे, हवे करवा तस हेत ॥ २ ॥ ए संसार असारमां, जनम महा दुःखखाण; जरा वली जीरण करे, मरण दुःख असमाण ॥ ३ ॥ मोह विषय ने मान तिम, मत्सर क्रोध ने माय; लोभ सायर लख दुःख दीये, इंद्रिय विषय उजाय ॥ ४ ॥ सुखीयो नहीं संसारमां, परमारथथी पेख; मुनिवर मूकी मानिनी, दक्षपणे तुं देख ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ सुंदर ॥ पापथानक तजो सोलमुं ॥ ए देशी ॥

॥ सुंदर ॥ रोगी जिम वरवैद्यने, करीय गवेषणा सार हो ॥ सुं० ॥ निज दुःख तास निवेदीने, करे तेहनो उपचार हो ॥ १ ॥ सुंदर ॥ ध-

मैथी सवि सुख संपजे ॥ ए आंकणी ॥ सुं० ॥ वैद्यवचन अंगीकरे, सेवे किरिया तेह हो ॥ सुं०॥ कष्ट करे पथ्य सेवतां, आरोग्य अर्थी जेह हो ॥ १ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ दुःख पण बाह्य गणे नहीं, नवि मूक्या पण व्याधि हो ॥ सुं० ॥ निज मुख उलखीयुं जिणे, अनुक्रमे थाय अ-बाध हो ॥ ३ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ तिम मुनिवर संसारमां, जनम जरा ने मरण हो ॥ सुं० ॥ व्याधे पीड्या वैद्यनुं, वीतराग करे शरण हो ॥ ४ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ तेहनुं कथन ते आचरे, लीधा संजमभार हो ॥ सुं० ॥ किरिया कष्ट करे घणुं, सहे उपसर्ग अपार हो ॥ ५ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ अंतर सम संतोषना, सुखथी न गणे दुःख हो ॥ सुं० ॥ अंतर अव्याबाधने, जाणयुं निश्चय सुख हो ॥ ६ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ वीतराग सुखीआ घणुं, भाव रोग नहीं जास हो ॥ सुं० ॥ मोह तिमिर दूरे गयुं, ज्ञान सूर्यप्रकाश हो ॥ ७ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ त्रूटी भवनी वेलडी, ढूकडुं छे शिवसुख हो ॥ सुं० ॥ सुखीआ तिणे थोडा होये, बहु दुःखीआ लहे दुःख हो ॥ ८ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ पण संसारी जीवने, सुख दुःखनो विपर्यास हो ॥ सुं० ॥ अंगना आहारादिक थकी, माने सुख विश्वास हो ॥ ए ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ तुज दुःख कारण अम कहे, तव कही सघली वात हो ॥ सुं० ॥ पर-मार्थे जिम तुमे कह्युं, तिम साचो अवदात हो ॥ १० ॥ सुं० ॥ ध० ॥ ॥ सुं० ॥ पण पतिविरह साले घणो, गुरुणी बोल्यां ताम हो ॥ सुं० ॥ कुशल अछे वत्स तेहने, धीरज धरी थिर थाव हो, परमाणंदे मिलाव हो ॥ ११ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ सा कहे किम जाणो तुमे, गुरुणी कहे स्वर तुज हो ॥ सुं० ॥ शोहागणीने जोइये, एहवो छे ए गुज हो ॥ १२ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ रत्नवती कहे सांभलो, मत करजो तुमे क्रोध हो ॥ सुं० ॥ गुरुणी कहे मुनिलोकने, क्रोध तणो होये रोध हो ॥ १३ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ सा कहे प्रत्यय दाखवो, गुरुणी कहे शुं काम हो ॥ सुं० ॥ वीतरागनां वयणमां, न चले सुण अभिराम हो ॥ १४ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ स्वरमंडलमां भाखीउं, तेह कह्युं में एह हो ॥ सुं० ॥ तिणे नवि थाये ए अन्यथा, वली प्रत्यय कहुं तेह हो ॥ १५ ॥ सुं० ॥ ॥ ध० ॥ सुं० ॥ तुज उतावले भाखीये, मत करजे मन रीश हो ॥ सुं० ॥

गुरु प्रदेशे मस होशे, जाणजे विशवावीश हो ॥ १६ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ हवे तुं ताहरुं जाणजे, सा कहे साची वाणी हो ॥ ॥ सुं० ॥ में आकुलपणे नाखीउं, गणिणी कहे नहीं हाणि हो ॥ १७ ॥ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सुं० ॥ स्नेही होये उतावला, पण मुज खमजे एह हो ॥ सुं० ॥ तुज उतावले जे कह्युं, अणघटतुं में जेह हो ॥ १८ ॥ सुं० ॥ ॥ ध० ॥ सुं०॥ सा कहे शोक निवारीयो, कीधो मुज उपगार हो ॥ सुं० ॥ पूबुं तुम एक वातनी, ए कुण कर्म प्रकार हो ॥ १९ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ ॥ सुं० ॥ गणिणी कहे ए थोडलो, छे अज्ञान विवाग हो ॥ सुं० ॥ पण ए रुद्भता केटली, सांभल माहरी वाग हो ॥२०॥ सुं०॥ ध०॥ सं० ॥ थोडे कर्मे में लह्यो, जेह विपाक अपार हो ॥ सुं०॥ सा कहे सावधान अछुं, कीजे मुज उपगार हो ॥ २१ ॥ सुं० ॥ ध० ॥ सु० ॥ आठमे खंडे चौदमी, पद्मविजय कही ढाल हो ॥ सुं० ॥ गणिणी कहे हवे निज तणुं, सांभलो चरित्र रसाल हो ॥ २२ ॥ सुं ॥ ध० ॥ सुं० ॥ सर्व गाथा ॥ ४७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नयरी कोशलानो धणी, नर सुंदर नरनाह; अद्भुत इणहीज विजयमां, अंगे धरे उत्साह ॥ १ ॥ आ भव पर्याये अछुं, धर्मपत्नी तस धार; एक दिन गयो अवनीपति, रमवा रान मजार ॥ २ ॥ अपहरीउं अश्वे तदा, मूक्यो अटवी मांहि; मध्याह्ने तिहां मानिनी, ततक्षण दीठी त्यांहि ॥ ३ ॥ तव आदर ते अति करे, आवो अवनीपाल; वेसो तुमे इण बेसणे, सेवा करुं संभाली ॥ ४ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ वटाउनी देशी ॥

॥ राय कहे तुं कोण छे रे, कुण ए थानक सार ॥ तव ते कहे जखिणी अछुं, मनोहरा नाम उदार रे, ए तो विंध्यानुं रण अवधार रे, तव नरपति कहे सुण नार रे, तुं एकली किम इण ठार रे ॥ १ ॥ वलिहारी शीलवंतनी मेरे लाल ॥ ए आंकणी ॥ जखिणी कहे अमे दंपती रे, नंदनवनथी आज ॥ मलयाचल जइ आवतां, इण थानक आव्यां समाज रे, पति कोप्यो विण कोइ काज रे, एकाकिणी कीधी त्याज रे, तव बोल्यो एम नरराज रे ॥ २ ॥ व० ॥ विहुए काम हीणुं कह्युं रे, तुज मूकी गयो एह ॥

तुं पण साथे नवि गइ, सुणी बोली जक्खणी तेह रे, होये अन्यनुं रागी जेह रे, तिणशुं नहीं कारज रेह रे, तव नृप कहे गुणगेह रे॥ ३॥ ब०॥ धर्म सतीनो ए नहीं रे, बोले जक्खणी ताम॥ दोष विना तजे रागीने, तेहने सतीअपणानो श्यो ठाम रे, नृप जाखे तव अजिराम रे, कुण दोष विना तजे आम रे, सा कहे मूरखनां काम रे॥ ४॥ ब०॥ एम कही नाखे कटाक्षने रे, उवेखे तेह राय॥ लाज मूकी मोहे कहे, निज बोल्युं एम न पलाय रे, अनुरागीने कोण तजे जाय रे, अनुरागी तजो मुज कांय रे, नृप कहे परस्त्री तुं थाय रे॥ ५॥ ब०॥ पुरुषने सघली पर अछे रे, निज घर न जणी को होय॥ राय कहे एम मत कहो, जे विरोधी परलोय रे, कहे नारी अलीक वच तोय रे, परलोक विरुद्ध ए जोय रे, कह्युं अनुरागी तजे कोय रे॥ ६॥ ब०॥ राय कहे रागिणी कीसी रे, डुर्गति मोकले एम॥ दोष जरी ते कारणे, परलोक अपेक्षा न केम रें, तव बोली देखाक्ती प्रेम रे, मुज वचन करे जो नेम रे, नहीं तो तुजने नहीं खेम रे॥ ७॥ ब०॥ राय कहे अमे नवि गणुं रे, रंजा केरो जार॥ कोप चढ्यो थइ सामुंही, नृपतिए हकारी तिवार रे, तव अदृश्य थइ ते नार रे, चाल्यो निज नयर विचार रे, हवे जोजो मार्ग मजार रे॥ ८॥ ब०॥ कंचनपादप मारवा रे, नाख्यो पक्षीयो झूर॥ नृप जुवे उपरी जिशे, तव दीठी जक्खणी क्रूर रे, जाखे सा क्रोधने पूर रे, जृकुटी करी गगने जूर रे, हुं नाखीश तुजने चूर रे॥ ए॥ ब०॥ छूटीश तुं वार केटली रे, तव बोल्यो राजान॥ रे पापिणी गोचर नहीं, नहीं तो तुज फेरुं थान रे, घंटी जिम चूरे धान रे, इम जक्खणी सांजली कान रे, दिव्य जोगे अदृश्य पहिचान रे॥ १०॥ ब०॥ सैन्य मल्युं निज रायनुं रे, हरख्यां सघलां लोक॥ करे वधामणां सहु जना, जेटणां लावे थोके थोक रे, नृप सावधान गतशोक रे, नवि विश्वसे चित्त ए टोक रे, रखे आवे गलामां तोक रे॥ ११॥ ब०॥ साधवी कहे में पूछीयुं रे, किम न धरो विशवास॥ राय कहे ए सहजथी, तव पूछ्युं फरी नृप पास रे, मुज प्रजले चित्त वेखास रे, अति आग्रहे पूछ्युं तास रे, तव सर्व कह्युं सुखकास रे॥ १२॥ ब०॥ वात मनोहरानी कही रे, में जाख्युं सुणो स्वामि॥ किम ए द्वेषिणी तुम तणी, कहे राय हुं फेरुं ठाम रे,

जो मुज कर आवे ए वाम रे, एक दिन वली नृप अभिराम रे, वास-भवन मांहि गयो जाम रे ॥ १३ ॥ व० ॥ तव हुं वासभुवन गइ रे, दीठो तिहां में राय ॥ मुज सम रूपे नारीशुं, दीठो मुज मन शंकाय रे, ऊसरवा मांडुं पाय रे, भूपने थयो ताम कषाय रे, पापिणी माया करी आय रे ॥ १४ ॥ व० ॥ रे देवी ए पापिणी रे, केहवी आवी आज ॥ एम कही दोड्यो पूठथी, केश पकडे ते नरराज रे, में कह्युं शुं करो ए काज रे, तव बोलावे ते स्त्री पाज रे, आवी जो तुम सम वेश व्याज रे ॥ १५ ॥ व० ॥ मायास्त्री कहे रायने रे, ए दरिसण नहीं लाग ॥ पापिणी काढी मूकीये रे, सुणी भाखे नरपति वाग रे, चोकीआत तेमो मुज पाग रे, आव्या तव सोंपी अभाग रे, एहनो करो रणमां ताग रे ॥ १६ ॥ व० ॥ करजो कदर्थना बहुपरे रे, कीधी आणा प्रमाण ॥ पूर्व वयरीनी परे, पापिणी पापिणी कहे वाणी रे, केइ पकडे केश ने पाणी रे, केइ ताणे वस्त्र अन्नाण रे, केइ ताणे हाथ पिठान रे ॥ १७ ॥ व० ॥ नयर बाहिर लावी करी रे, कीधी कदर्थना फेर ॥ मूकी रणमां एकली, इणी परे भाखे थइ भेर रे, फरी पकमीश जो ए सेर रे, तो हणशुं ए समशेर रे, वलीआ एम कही तिणी वेर रे ॥ १८ ॥ व० ॥ में मनमां एम चिंतव्युं रे, अहो ए पापविकार ॥ विण अपराधे एवमां, प्राणी लहे दुःख अपार रे, पूरवकृत कर्म विचार रे, हवे जीववुं केही प्रकार रे, मरवुं निश्चय ए धारी रे ॥ १९ ॥ व० ॥ झंपा पर्वतथी करुं रे, इम निश्चय करी ठीक ॥ पोहोती पर्वते क्लेशथी, चढवा मांड्युं तहकीक रे, मुनिवर देखे गतभीक रे, दरीमां रह्या तेह नजीक रे, कलपांते न बोले अलीक रे ॥ २० ॥ व० ॥ नाम सुगृहीत सूरि अछे रे, साथे बहु परिवार ॥ संसाररण सार्थप समो, चिंतामणि सम हितकार रे, तपतेजे जिम दिनकार रे, गुणरयण तणो भंमार रे, दुःखीआने ते आधार रे ॥ २१ ॥ ॥ व० ॥ देखतां दिव्य ज्ञानी मुनि रे, नाठो सर्व किलेश ॥ वंद्या विनये मुनिवरु, धर्मलाभ दीयो सुविशेष रे, कहे वत्स सांभल उपदेश रे, मनमां मत कर संक्लेश रे, तुं शीलवंती शुभवेश रे ॥ २२ ॥ व० ॥ आठमे खंडे ए कही रे, वर पन्नरमी ढाल ॥ समरादित्यना रासमां, गुरु उत्तमविजयनो बाल रे, हवे गुरुजी वयण रसाल रे, कहेशे सवि जीवदयाल

रे, जेहथी होशे मंगलमाल रे ॥ २३ ॥ ब० ॥ सर्व गाथा ॥ ५१० ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुं संसारमां सार ले, आपद् नाजन एह; मोहे मुंज्या मानवी, तत्त्व न जाणे तेह ॥ १ ॥ श्रवणे जिनवच नवि सुणे, अहिते बांधे आप; तीव्र कर्म ते वेदतां, सूधो होय संताप ॥ २ ॥ वीतराग वयणां विना, होये इणी परे हाणि; में कह्युं तहत्ति महा मुनि, वली कहे एक वखाण ॥ ३ ॥ पाप कस्युं किशुं पूरवे, पामी इश्या प्रकार; कहे गुरु सांनल ते कथा, कहुं शेष सुप्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ चांदलीआनी देशी ॥

॥ इण नरते उत्तरदेशे, ब्रह्मपुर नगरे सुविशेषे, ब्रह्मसेन नूपति शुन वेशे रे ॥ १ ॥ शीलवंती ॥ तस विडुर विप्र इणे नाम, नृपने विश्वासनुं ठाम, पुरंदरा तेहनी वाम रे ॥ २ ॥ शी० ॥ चंद्रजशा तेहनी पुत्ती, इहांथी नवमे नवे हुती, मावित्र जाणे अम नूती रे ॥ ३ ॥ शी० ॥ जिनवयण नावित माय ताय, तुज वात ते हितनी कहाय, तुजने परिणमन न थाय रे ॥ ४ ॥ शी० ॥ नववासना जेह अगाइ, बालनाव वली डुःखदाइ, जशोदाम वसे शेठाइ रे ॥ ५ ॥ शी० ॥ बंधुसुंदरी तेहनी नारी, तेहशुं तुज प्रीति अपार, तेहने वालो संसार रे ॥ ६ ॥ शी० ॥ अति संक्लेशी परिणाम, वली गिरधर नोगने काम, परनवनुं न जाणे नाम रे ॥ ७ ॥ शी० ॥ तुज मावित्रे घणुं वारी, ए पापिणी डुर्गति बारी, एहनी संगति नहीं तुम सारी रे ॥ ८ ॥ शी० ॥ ते वचन न मान्युं तास, एक दिन वली गइ तस पास, बंधुसुंदरी दीठी निराश रे ॥ ९ ॥ शी० ॥ पूछ्युं तें किम तुं एम, सा कहे पतिनो नहीं प्रेम, एहने मदिरावतीशुं वेहेम रे ॥ १० ॥ शी० ॥ माहरे नहीं हजीअ संतान, शुं जाणे थशे शुं तान, ते सांनली नाख्युं कान रे ॥ ११ ॥ शी० ॥ नवि करीये एम विषाद, उद्यम करीये अविवाद, तव ते कहे जीणे नाद रे ॥ १२ ॥ ॥ शी० ॥ नवि जाणुं कांय उपाय, परिव्राजिका एक इणे ठाय, उत्पला नामे सुणाय रे ॥ १३ ॥ शी० ॥ ए वातमां कुशल वखाणी, पुर बाहिर पूरब ठाणी, तेहने लावो तुमे आणी रे ॥ १४ ॥ शी० ॥ तुं तुरत

गइ तस गेह, बंधुसुंदरी तेडे नेह, परिव्राजिका आवी तेह रे ॥ १५ ॥ शी० ॥ तुं तो सोंपी गइ निज घेर, पूजी कहे सा इणी पेर, करो जगवती मुफ पर महेर रे ॥ १६ ॥ शी० ॥ संजलाव्युं निज वृत्तांत, परिव्राजिका कहे एकांत, तुं धीरज धर मन शांत रे ॥ १७ ॥ शी० ॥ मदिरावती उपरे खेद, थाये तिम करशुं जेद, निश्चय करीने तुं वेद रे ॥ १८ ॥ शी० ॥ सा कहे कीधो उपगार, गइ परिव्राजिका आगार, करे बिहुने वियोग प्रकार रे ॥ १९ ॥ शी० ॥ केइ उषधि शक्ति अचिंत, वली कर्म विचित्रता जंति, थयुं कारज निश्चय तंत रे ॥ २० ॥ शी० ॥ मदिरावती डांफी रोठे, शोके ग्रही ते जुवे हेठे, तुफ कर्म बंधाणुं ते नेठे रे ॥ २१ ॥ शी० ॥ आयुखुं ते अनुक्रमे पाली, थइ हाथिणी तुं मतवाली, यूथाधिपने नहीं वाहाली रे ॥ २२ ॥ शी० ॥ लही मरणने वानरी थाय, यूथाधिपने न सुहाय, कस्यां कर्म ते कहो किहां जाय रे ॥ २३ ॥ शी० ॥ जूथाधिपे दूरे कीधी, जर ठाकुरे पकडी लीधी, सांकल बांधी डुःखे दीधी रे ॥ २४ ॥ शी० ॥ तिहां मरीने कुतरी जाइ, सवि श्वानने पण न सुहाइ, ऋतुकाले पण डुजगाइ रे ॥ २५ ॥ शी० ॥ क्षत बहुल ने विणठी देह, पडीआ कीडा अतिरेह, बहु क्लेश जोगवती जेह रे ॥ २६ ॥ शी० ॥ तिहांथी मरी थइ मार्जारी, कोइ मार्जारने नहीं प्यारी, घर अनले बली तिण वारी रे ॥ २७ ॥ शी० ॥ मरी चक्रवाकी थइ जाम, जरतार विहूणी ताम, महा डुःखिणी थइ अविराम रे ॥ २८ ॥ शी० ॥ तिहांथी चंडालिणी हुइ, पति अलखामणी रहे जुइ, अनुक्रमे तिहांथी मुइ रे ॥ २९ ॥ शी० ॥ हवे जीलडीनो जव आयो, कोइ सवरने संग न सुहायो, संक्लेशे जे कर्म बंधायो रे ॥ ३० ॥ पालीमांथी काढी मूकी, कोइ न जुवे साहामुं थुंकी, हवे कर्मथी ते थइ टूंकी रे ॥ ३१ ॥ शी० ॥ जमती तिहां विषम प्रदेश, सहेती बहुला संक्लेश, दीठा मुनिवर शुज लेश रे ॥ ३२ ॥ शी० ॥ आठमे खंडे ए ढाल, गुरु उत्तमविजयनो बाल, सोलमी कहे रंगरसाल रे ॥३३॥ शी० ॥५४७॥

॥ दोहा ॥

॥ मारगमां थाका मुनि, जूला पंथ जयाल; ते मुनिए दीठी तुने, करुणावंत कृपाल ॥ १ ॥ मोद थयो ताहरे मने, पूछे मुनिवर पंथ; कुण

ए थानक ते कहो, अलीक न एहमां अंश ॥ २ ॥ सऊकंतार ए साधुजी, पश्चिम दिश तुम पंथ; अथवा देखाडुं अमे, एहमां अलीक न अंश ॥ ३ ॥ मार्ग देखाडे मानिनी, चिंते विस्मित चित्त; अहो अणगार अमत्सरी, प्रियनाषी सुपवित्त ॥ ४ ॥ संग करे एह साधुनो, तेहनो धन्य अवतार; शुन परिणामे एम संयल, कर्म खप्यां एक तार ॥ ५ ॥ धर्मलान सुणी धर्मिणी, प्रणमी मुनिवर पाय; आरंन परिग्रह तस अलप, मार्दव वली अमाय ॥ ६ ॥ ते कारण बांध्युं तिहां, मनुज आयु महानाग; विहार कर्यो तिहां मुनिवरे, मुनिवर एहज माग ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ आज आणंद थयो, प्रेमनां वादल वरस्यां दाफा सोहेला ॥ ए देशी ॥

॥ आज आनंद थयो, मुनिवर दरिसण दीतुं धन्य दिन आजनो ॥ ए आंकणी ॥ मुनिवर विचर्या पण नारी तणो, शुन नाव न तूटो जेह घणो ॥ आ० ॥ श्वेतांबिका नयरीराय तणे, लही मरणने उपनी पुत्रीपणे ॥ १ ॥ आ० ॥ कोशला नयरी नूपे परणी, यौवन वय आवी तस करणी ॥ आ० ॥ ते कर्म रह्युं जे तुऊ शेष, जक्षणी तस कारण सुविशेष ॥ २ ॥ आ० ॥ तुऊ रूपे करीने नृप छलीउं, तुऊ कर्मशेष जे रह्यो बलीउं ॥ आ० ॥ तस उदये कदर्थना बहु पामी, परिव्राजिका लाव्याथी खामी ॥ ३ ॥ आ० ॥ इम सांनली मोहतिमिर गयो, तव जातिसमरण मुऊ थयो ॥ आ० ॥ संवेगथी गुरु प्रणमी कहुं, कब एह कर्मज अंत लहुं ॥ ४ ॥ आ० ॥ गुरु कहे ए एकज अहोराते, तव पूब्युं में वली सुखशाते ॥ आ० ॥ नृप जक्षणी कहो जाणशे क्यारे, वलतुं गुरुजी बोल्या त्यारे ॥ ५ ॥ आ० ॥ राते जब जक्षणी पासे, नरपति जाशे अति उल्लासे ॥ आ० ॥ पण तुऊ स्वनावथी फेरफार, देखी शंकाशे सुविचार ॥ ६ ॥ आ० ॥ मंत्रीश्वरने ते कहे वात, तव परीक्षा करवा अवदात ॥ आ० ॥ उलंघी जिन प्रतिमा जाम, जक्षणीनुं कपट लह्युं ताम ॥ ७ ॥ आ० ॥ मार मार करे लेइ करवाल, अदृश्य जक्षणी थइ ततकाल ॥ आ० ॥ पछे नृप करशे पश्चात्ताप, अहो राणी कदर्थी में आप ॥ ८ ॥ आ० ॥ में कह्युं नगवन् नहीं नृपदोष, ए कर्म कर्यां तेहनो रोष ॥ आ० ॥ गुरु कहे

साचुं पण मोहवशे, आवशे इहां विहाणुं वाय तिसे ॥ ए ॥ आ० ॥
तुऊ देखी तुऊशुं सुखी होशे, ते पण सहुए नयणे जोशे ॥ आ० ॥
तिणे मत करजे मन संताप, में कह्युं प्रज्जु गयां माहारां पाप ॥ १० ॥
आ० ॥ तुम दरिसणथी जवजय टलीयो, संयोग वियोग थकी मलीयो
॥ आ० ॥ नृप आवे पण मुऊ नहीं रंग, जरा मरण पीमित किम सु-
खसंग ॥ ११ ॥ आ० ॥ गुरु कहे अत्यंत सुखी कहीये, नवि लोक नी-
तिनुं ए लहीये ॥ आ० ॥ जरा मरण दोष जेहथी जाशे, वीतराग वचन
तुम थिर थाशे ॥ १२ ॥ आ० ॥ तिणे तत्त्वथी लहेशो सुखशात, एम
कही रह्या जब गुरु विख्यात ॥ आ० ॥ में जाण्युं धन्य नरपति एह, गुरु
कहे सांजल तुं ससनेह ॥ १३ ॥ आ० ॥ पंच परमेष्ठीनो नवकार, ते
परम मंत्र चित्तमां धार ॥ आ० ॥ सवि जव टाले शिवसुख आपे, गुण-
गण आवी अंगे व्यापे ॥ १४ ॥ आ० ॥ तव में कह्युं किरपा करो सारी,
हुं जाउं तुमची बलिहारी ॥ आ० ॥ पूरव साहामी मुऊ वाम दिशे,
गुरु कहे तुं रहे शोजन वेशे ॥ १५ ॥ आ० ॥ हुं विनये नमती एमज
रही, जिनवर संजारे गुरुजी सही ॥ आ० ॥ अखलितादिक गुणशुं दीधो,
उपयोगे में अंगी कीधो ॥ १६ ॥ आ० ॥ मुऊ जय जाणुं सवि दूर
गयो, मानुं मोक्ष ते मुऊ सनमुख थयो ॥ आ० ॥ राति काढजे ए सम-
रण करतां, गिरिदरीमां एक पासे रहेतां ॥ १७ ॥ आ० ॥ मत धरजे
जय मनमां कांय, हवे अम दरिसण विहाणे थाय ॥ आ० ॥ एम कही
गुरु पोहोता निज ठाम, हुं हरखी उपनो विश्राम ॥ १८ ॥ आ० ॥
रयणी गइ एक पलक परे, नृप खोलतो आव्यो परपरे ॥ आ० ॥ कहे
कोप न करशो रे राणी, अपराध करेशो न अन्नाणी ॥ १९ ॥ आ० ॥
में कह्युं तव कोप समय नांहि, पूर्वकृत शेष करम आंहि ॥ आ० ॥ नृप
कहे हुं निमित्त थयो ताहारो, में जाख्यो कर्मविपाक माहारो ॥ २० ॥
आ० ॥ बहु जव जोगवीउं बहु रीत, तिहां तो तुमे नांहि निमित्त ॥
आ० ॥ तिणे सर्वथा मुऊ कर्मनो दोष, इहां करवो नहीं कोइशुं रोष
॥ २१ ॥ आ० ॥ नृप कहे सामान्ये हुं जाणुं, तुऊ नाण विशेष हुं परमाणुं
॥ आ० ॥ तव धुरथी कही में सवि वात, नृप विस्मय पाम्यो सुविख्या-
त ॥ २२ ॥ आ० ॥ गुरुजी किहां बे ते देखावो, में कह्युं पासे बे तुमे

आवो ॥ आ० ॥ गयो परिजन सहित तिहां राय, हरखी वंद्या गुरुना पाय ॥ २३ ॥ आ० ॥ गुरुए पण धर्मलाभ दीधो, गुरु आगे सवि अवदात कीधो ॥ आ० ॥ अहो दुःकृत थोडुं विपाक घणो, तो मुज शी गति थाशे ते भणो ॥ २४ ॥ आ० ॥ तिणे जे मुज करवुं तेह कहो, गुरु कहे तुमे सावद्य सर्व जहो ॥ आ० ॥ करो अतीत कालनुं पडिक्कमणुं, वली वर्त्तमाननुं संवरणुं ॥ २५ ॥ आ० ॥ धरो अनागत कालनुं पच्चक्खाण, एम टलशे कर्मनुं बंधाण ॥ आ० ॥ एम शिवसुख थाशे करतले, नृप भाखे अनुग्रह कर्यो भले ॥ २६ ॥ आ० ॥ एम करीये गुरुजी तुम आणी, मुजने कहे सांभलो गुरु वाणी ॥ आ० ॥ गुरु धर्मसारथी सम नहीं मले, एहथी भव भव पातक टले ॥ २७ ॥ आ० ॥ में कर्युं जुगतुं तव नरराय, महादान दीनने देवराय ॥ आ० ॥ वली तिहां अठाइ महोत्सव थाय, सुरसुंदर सुत राज्ये ठाय ॥ २८ ॥ आ० ॥ अमात्य साथे बहु सामंत, मुजशुं सहु अंतेउर वंत ॥ आ० ॥ व्रत लीधां अमे गुरुजी पासे, विधिए वर्द्धमान ते शुभ आशे ॥ २९ ॥ आ० ॥ एम आठमे खंडे सुविशाल, कही रुडी सत्तरमी ढाल ॥ आ० ॥ ए समरादित्य तणे रासे, वर पद्मविजय शुभ अभ्यासे ॥ ३० ॥ आ० ॥ ५७४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एणी परे गुरुणी आखवे, कर्मविपाक ए मुज; तिणे थोडुं कर्म तें कर्युं, तस विपाक ए तुज ॥ १ ॥ भोगवे बहु भयकारीउं, नरक तिरीमां नेम; रत्नवती सुण रंगशुं, कर्म कर्यां जाये केम ॥ २ ॥ दुःकृत निजनो दोष ए, जाणी न तपीये तेण, सम्यग् देशविरति श्राविका, साधवी वच श्रवणेण ॥ ३ ॥ तुमो धन्य जिणे घर तज्युं, दुःख दालिद्र कर्यां दूर; हुं पण धन्य थइ हवे, पामी दरिसण पूर ॥ ४ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ कहान आवोजी उरा रे, कहुं एक वातडली ॥ ए देशी ॥

॥ गुरुणीजी माहारा रे, खरनी वातडली ॥ तुमे भाखो केहवी रे, शी छे भातडली ॥ परमाणंद जोगे रे, के भरता तुज मले ॥ एम भाख्युंतुं मुजने रे, के संदेह केम टले ॥ १ ॥ गु० ॥ शुं पाम्या ते पण रे, के जिनवर धर्म प्रते ॥ गुरुणी कहे जाणुं रे, के एहवुं सांप्रते ॥ इण अ-

वसर हाथी रे, के गुलगुल शब्द करे ॥ संध्या मंगलनां रे, के तूर वाज्यां सुपरे ॥ २ ॥ गु० ॥ वंदिजन बोल्या रे, के धर्मथी शुं न होये ॥ नंदा नंभारिणी रे, के लावी कटक दोये ॥ उज्ज्वल फूल लाव्यो रे, के पुरोहित एम कहे ॥ गुरुवंदन अवसर रे, के सुणी चित्त गहगहे ॥ ३ ॥ गु० ॥ सहु शकुन ते रूमां रे, के देखीने चिंतवे ॥ लह्यां जिनवरवयणां रे, के स्वामी एम संभवे ॥ श्रुतदेवी सरिखां रे, के भगवतीए कह्युं ॥ परमाणंद योगे रे, के ते पण सद्दह्युं ॥ ४ ॥ गु० ॥ करी विनयने भाखे रे, के राति इहां रहो ॥ गुरुणी कहे कल्पे रे, के पण ए वात लहो ॥ आलय ठे पासे रे, के तिणे अमे जाशुं तिहां ॥ फरी अवसरे आवशुं रे, होजो धर्मलाभ इहां ॥ ५ ॥ गु० ॥ सा वंदे पाया रे, उपाशरे तेह गयां ॥ करी रातनी करणी रे, वली परभात थयां ॥ उठीने पोहोतां रे, के गुरुणीने पासे ॥ देशनादिक सुणीने रे, के गइ घर उल्लासे ॥ ६ ॥ गु० ॥ एम बोल्या दिहाका रे, के चार ते अनुकरमे ॥ पांचमे दिन आवी रे, वधामणी एम धरमे ॥ गुरुणीशुं बेठां रे, आवी चंदसुंदरी कहे ॥ ताहरो भरता रे, आव्यो सवि काज करी ॥ ७ ॥ गु०॥ भगवतीनुं अन्यथा रे, के वयण होये नहीं ॥ रतनवती हरखी रे, के दीधुं दान उमही ॥ गुणचंदजी आव्या रे, मल्या तिहां रायने ॥ विग्रहनी वातो रे, कही नमी पायने ॥ ८ ॥ गु० ॥ नृपे सन्मान दीधुं रे, गया हवे धसमसी ॥ आवे रत्नवतीने रे, पासे जव उल्लसी ॥ तव दीठां गुरुणी रे, के नमे हरखे करी ॥ धर्मलाभ ते दीधो रे, कुमर कहे चित्त धरी ॥ ए ॥ गु० ॥ मुज पुण्यना उदयनो रे, के पार न पामीये ॥ सुगृहीत गुरु पासे रे, मिथ्यात्व में वामीये ॥ तुम पासे देवी रे, के धर्म पामी अछे ॥ तुम दरिसण डुर्लभ रे, के पाम्यो हुं अघ गछे ॥ १० ॥ गु० ॥ कुशलानुबंधी रे, के पुण्य विना प्राणी ॥ एहवा भाव न लहे रे, गुरुणी कहे एम वाणी ॥ अनुक्रमे पामे रे, के सुख ते मुक्ति तणां ॥ बीजानुं शुं केहवुं रे, कुमर कहे तव वयणां ॥ ११ ॥ गु० ॥ पुण्य पापना क्षयथी रे, के यद्यपि मोक्ष लहे ॥ पण कारण पुण्यानुं रे, के बंधी पुण्य कहे ॥ ते विण नवि लहीये रे, के आराधकपणुं ॥ गुरुणी कहे रुडुं रे, के तुमचुं जाणपणुं ॥ १२ ॥ गु० ॥ एम करी धर्मचरचा रे, के गुरुणी ठाम गयां ॥ दंपती होये धर्मी रे, के मनमां मगन भयां ॥

हवे बिहु जण सांजले रे, देशना नित्य तिहां ॥ जाय धर्म आराधतां रे, कोइक काल इहां ॥ १३ ॥ रत्नवतीने उपनो रे, सुत एक सोजागी ॥ राज्ये ठवे राजा रे, गुणचंद वडजागी ॥ मैत्रीबल राजा रे, के दीक्षा आदरे ॥ धर्मथी सहु सामंत रे, आणा रायनी धरे ॥ १४ ॥ गु० ॥ निष्कंटक पाले रे, अलंकृत राज्य गुणे ॥ त्रण वर्गने साधे रे, अन्योन्य अबाधपणे ॥ सहु जन सुप्रशंसे रे, के देव गुरु सेवे ॥ एम राज्य पालंतां रे, के दान अतुल देवे ॥ १५ ॥ गु० ॥ एणे अवसरे आव्यो रे, के जलदकाल रूडो ॥ हंस नाठा दूरे रे, विरहीने अति चूंडो ॥ मोरडा तिहां नाचे रे, के गरजारव थाय ॥ हरख्या बप्पइया रे, के विजली चमकाय ॥ १६ ॥ गु० ॥ दाडुर बहु बोले रे, के पृथिवी नीर वहे ॥ नदीउं थइ माती रे, सरोवर लहेर लहे ॥ बगलानी पंक्ति रे, पंथी घर चाल्यां ॥ महिषी ने गायो रे, के टाढक लही माहाल्यां ॥ १७ ॥ गु० ॥ सरितापूर जोवा रे, नीकलीयो राजा ॥ निज परिवार साथे रे, अवलवेश ताजा ॥ तृण काष्ठ तणाणां रे, के सरितामां आवे ॥ कलुषित बहु पाणी रे, के कांठे नवि मावे ॥ ॥ १७ ॥ गु० ॥ बिहु तट तिहां पाडे रे, लहे विस्तार घणो ॥ आराम विनाशे रे, पार न पूर तणो ॥ जलचर बहु दीसे रे, के जमरी जल खावे ॥ मरजादा मूकी रे, के बालने बीहावे ॥ १ए ॥ गु० ॥ एम देखी तमासो रे, के आव्या निज गेह ॥ ढाल आठमे खंडे रे, के अढारमी एह ॥ गुरु उत्तमविजयनो रे, के पद्मविजय शिश ॥ सांजलजो श्रोता रे, के सुणतां सुजगीश ॥ २० ॥ गु० ॥ सर्व गाथा ॥ ६०७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केइक दिन वली व्यतिक्रम्या, शरद समय संजाली; अश्ववाहनी आवीयो, नृप ते सरिता जाली ॥ १ ॥ मूल स्वजावे निरमली, क्रूर न चलचर कोय; बुधजन सेवित ते बहु, सांजलुं देखी सोय ॥ २ ॥ संवेगे नृप संवरी, चित्तमां करे विचार; ऋद्धि आडंबर नवि रहे, करे निज पर अपकार ॥ ३ ॥ नदीदृष्टांते निरखीये, पुरुषनो एह प्रकार; जावन तट पाडे जली, आतम मलिन अपार ॥ ४ ॥ वली आरंज परिग्रह वधे, करे उन्माद कल्लोल; चरण धर्म वाडी चसे, तजे कृत्य सीम अतोल ॥ ॥ ५ ॥ मोह तणी जमरी महा, परमारथ अणपामी; अबुऊ लोक घणुं

अफवके, देखी अद्भुत दाम ॥ ६ ॥ सरिता परे स्वनावथी, अलगी जाये उपाधि, अनुक्रमे तारी आतमा, अनुनवे अव्याबाध ॥ ७ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ जूल्यो मन नमरा रे कांइ नमे ॥ ए देशी ॥

॥ आप स्वनाव मांहि रमे, आवे जो रे विवेक ॥ पाप मित्रने परिहरे, शुन परिणामनी टेक ॥ १ ॥ गुणचंद राय संवेगीउं ॥ ए आंकणी ॥ अध्यवसाय नला होये, अर्थ अनर्थनो कार ॥ अंतराय परलोकनो, मिथ्यानिमान विस्तार ॥ २ ॥ गु० ॥ क्लेश होय जेहथी घणो, ज्ञाननी परिणति नाश ॥ कपट करे वली आकरुं, लोनथी सर्व विनाश ॥ ३ ॥ ॥ गु० ॥ कर्मादान व्यापारने, सेवे पाप अनेक ॥ कुशल जोग जाये वेगलो, पापमति अतिरेक ॥ ४ ॥ गु० ॥ द्रव्य उपगार डे यद्यपि, पण अल्प कालिक एह ॥ परपीडा होये घणी, किम आदरीये तेह ॥ ५ ॥ ॥ गु० ॥ द्रव्य नाव उपकारमां, नाव ते जाणी प्रधान ॥ एम चिंतवतां वाधीउं, शुन परिणाम निदान ॥ ६ ॥ गु० ॥ आवी मंदिर नरपति, संनलावे तेह वात ॥ रत्नवती मंत्री प्रत्ये, बोले ते अवदात ॥ ७ ॥ गु० ॥ जिम नाख्युं तुमे स्वामीजी, कीजे इन्नित काज ॥ कालक्षेप इहां नवि घटे, चंचल जीवित राज ॥ ८ ॥ गु० ॥ जाये धर्ममां जे घडी, तेह प्रशंसवा लाग ॥ सांनली उद्घोषणा करी, देतो दान अथाग ॥ ए ॥ गु० ॥ सर्व देहरे विरचावतो, पूजा अनेक प्रकार ॥ ज्ञाता कल्पसूत्रे कही, रायपसेणी मझार ॥ १० ॥ गु० ॥ जीवानिगम मांहे वली, पूजा कहे जिनराय ॥ तेह उवेखे जे प्राणीआ, मूढा डुर्गति जाय ॥ ११ ॥ गु० ॥ धृतिबल पुत्र राज्ये ठवी, सहुने देइ सन्मान ॥ खबर गुरुनी कढावतो, जाणी तेहनुं थान ॥ १२ ॥ गु० ॥ रतनवती साथे लेइ, सामंत ने परधान ॥ चाल्या काशीदेशमां, संयमनुं धरी ध्यान ॥ १३ ॥ गु० ॥ वाणारसी नयरी वसे, विजयधर्म सूरिराय ॥ धर्मलान सूरीसर दीये, जव वंद्या गुरुपाय ॥ १४ ॥ गु० ॥ पूछ्या पठी सघलुं कहे, आगम कारण सार ॥ वाणारसीपति बहु करे, द्रव्य थकी उपचार ॥ १५ ॥ गु० ॥ सहु साथे महामहोत्सवे, वधते शुन परिणाम ॥ संजम लेवे नरवरु, विचरे ग्रामानुग्राम ॥ १६ ॥ गु० ॥ सूत्र नएया क्रिया अन्यसी, समये थया अनिप्राय ॥

एकल विहार अंगीकस्यो, पूछ्या श्रीगुरुराय ॥ १७ ॥ गु० ॥ आणा जब गुरुजी करे, तब सूत्रादिक जेह ॥ तुलना पंच प्रकारनी, करे पूर्वे कही तेह ॥ १८ ॥ गु० ॥ यतः"सुत्तेणं अछेणं ॥ इत्यादि तथा पढमा उवस्सयंमी, बीया बाहिं तईया चउक्कंमी ॥ सुन्नघरंमी चउत्थी, तह पंचमीअ मसाणंमी ॥ १ ॥" एणी परे सत्व तोली करी, एकलमल्ल विहार ॥ सूत्रविधे अंगीकरे, पाले निरतिचार ॥ १९ ॥ गु० ॥ काल गयो एम केटलो, एक दिन करत विहार ॥ कोल्लाग सन्निवेशे गया, रहीआ एकांत ठार ॥ २० ॥ गु० ॥ काउस्सग्ग करीने रह्या, आठमे खंडे ढाल ॥ उंगणीशमी पदमे कही, सुणतां मंगलमाल ॥ २१ ॥ गु० ॥ सर्व ॥ ६३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मलय जतां वाणमंतरो, मलीया मुनि माहंत; कोप चढ्यो चित्त कलकव्यो, चित्तमां एम चिंतंत ॥ १ ॥ पापी दीठो पापथी, कपट करे जुउ केम; मूकुं शिला इहां मोटकी, तुरत मरे ए तेम ॥ २ ॥ मारे एहने माहरुं, सफल विद्याकुल सार; रौद्रध्याने अति रोषथी, वंछित करे विकार ॥ ३ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ नवमी वाडे निवास्यो रे, साधुजी अणगार ॥ ए देशी ॥

॥ पासे पर्वतथी शिला रे, विद्याबलथी रे लीध ॥ मूके गगनथी मुनिशिरे रे, पीडा अतिशय कीध ॥ १ ॥ पण नवि जावथी पीडीया रे, जोवे खेचर तेह ॥ जीवता देखी कोपीयो रे, चिंतवे अहो जुउ एह ॥ २ ॥ जीवनशक्ति अहो घणी रे, अहो परजव पक्षपात ॥ अवज्ञा मुज उपरे रे, एहनी अपूरव वात ॥ ३ ॥ मूकी मोहोटी शिला वली रे, तेहथी पीडी रे काय ॥ पण नवि जाव पीडाइउ रे, देखी क्रोध जराय ॥ ४ ॥ त्रीजी वार तुरत तिणे रे, मूकी एक महंत ॥ पण तिमहीज देखी करी रे, अतिशय खेद लहंत ॥ ५ ॥ चिंतवे मारी नवि शकुं रे, करुं धर्ममां अंतराय ॥ कोइकनुं घर मूषीने रे, मूकुं एहने रे पाय ॥ ६ ॥ लोकने कहुं महापापीयो रे, जुउ केहवां करे काम ॥ लोक ते करशे कदर्थना रे, आपदा लहेशे रे ताम ॥ ७ ॥ जिम चिंतव्युं तिमहीज कर्युं रे, संजलावे कोटवाल ॥ आव्यो तलार दीठा मुनि रे, परम दयाल मयाल ॥ ८ ॥ तपशोषित तनु

एहनुं रे, दीसे मूरति शांत ॥ चित्त आकुल नहीं एहनुं रे, जोगरहित एकांत ॥ ए ॥ ए केम करशे एहवुं रे, अथवा कपट विचित्त ॥ करुं परीक्षा एहनी रे, यद्यपि दीसे पवित्त ॥ १० ॥ जाम निकुंजे निहालीयुं रे, उपनी शंका रे ताम ॥ पूछ्युं पण नवि बोलीआ रे, तर्जना करतां प्रकाम ॥ ११ ॥ तोपण नवि बोले यदा रे, तव खेचर हरखंत ॥ अध्यवसायनी क्रूरता रे, नरक आयु बंधंत ॥ १२ ॥ रौद्रध्याने निकाचीयुं रे, हवे चिंतवे कोटवाल ॥ कहीये नृपने जे गमे रे, तेह करो नरपाल ॥ १३ ॥ संजालव्युं जूपालने रे, आव्यो विश्वसेन राय ॥ दीठा तव तेणे उंलख्या रे, प्रणम्या जक्ते रे पाय ॥ १४ ॥ पूछे कोटवालने तुमे रे, कीधुं छे प्रतिकूल ॥ ते कहे तेहवुं कांय नहीं रे, तव नृप कहे अनुकूल ॥ १५ ॥ राजरुषि ए अम तणा रे, स्वामी गुणचंद राय ॥ निरुपसर्ग जूपालने रे, नरजव सफल कराय ॥ १६ ॥ सयल संग त्यागी गुरु रे, वरते छे एह ध्यान ॥ अप्रतिबंधपणे रहे रे, कीधां छे अनुष्ठान ॥ १७ ॥ एकल विहार अंगीकस्यो रे, बोल्यो ताम तलार ॥ धन्य धन्य करी स्वामीउं रे, नृप कहे श्यो ए विचार ॥ १८ ॥ कोटवाल कहे जिणे कस्युं रे, ते नर छे इण गार ॥ नृप कहे किहां छे दाखवो रे, अदृश्य थयो तेणी वार ॥ १ए ॥ न जड्यो तव जूपति जणे रे, कोइक उपसर्गकार ॥ सुर खेचर होशे सही रे, डुष्ट तणो ए प्रकार ॥ २० ॥ कहो अंतेउरने तुमे रे, जनपदने सुविशेष ॥ आव्या स्वामी तुम तणा रे, गुणचंद जेह नरेश ॥ २१ ॥ धर्ममूर्त्ति धरी आवीउं रे, दीठे पाप पलाय ॥ शिवसुख कारण स्वामीजी रे, निःसंगी मुनिराय ॥ २२ ॥ विजव जक्ति शक्ति घणी रे, वंदो निज उपगार ॥ कोटवाले जणव्युं सवे रे, सहुने हर्ष अपार ॥ २३ ॥ आवी सहुए वंदीआ रे, पूजा करी विस्तार ॥ गुणस्तवना वली वली करे रे, दरिसण विस्मयकार ॥ २४ ॥ आठमे खंडे ए कही रे, समरादित्यने रास ॥ पद्मविजय ए वीशमी रे, सुणतां लीलविलास ॥ २५ ॥ सर्व ॥ ६६४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आव्यो कवाम्नी इण समे, सुणो कहे वात सरूप; ए अणगारने उपरे, नाखी शिला अनूप ॥ १ ॥ आवी मार्ग आकाशथी, नवि दीठे नयणेण; नवि नाठा ने नवि चव्या, कोण जाणे कस्युं केण ॥ २ ॥ तस

निर्घाते त्रासीयो, मूर्छा लह्यो महाराय; आगल नवि जाणुं अवर, कीधुं मुनिने कांय ॥ ३ ॥ एह शिलाकुग अपर जे, ते पण नाखी तेण; महापापी विण मानवी, जुउने न करे जेण ॥ ४ ॥ शोकातुर थया सांजली, राणी पुरजन राय; अहो अहो ऋषिरायने, डुष्ट महा डुःखदाय ॥ ५ ॥ अहो क्लिष्टकर्मा अहो, अहो अलौकिक एह; अहो निर्दयता एहनी, नहीं विवेक ने नेह ॥ ६ ॥ अहो गुणद्वेषी आकरो, मुनिवर महाव्रतवंत; अज्ञानीशुं न आचरे, मोहे सहु मुकंत ॥ ७ ॥ पृथिवीपति एम विलपतो, जाणी मुनिवर जाण; पूरे ध्याने पारीयो, काउस्सग्ग एम कहे वाण ॥ ८ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ जरत नृप जावशुं ॥ ए देशी ॥

॥ मुनिवर कहे सुणी राजीआ ए, कीधां कर्म न जाय, आपोआप जोगवे ए ॥ एह अल्प डुःख राय ॥ १ ॥ नमो मुनिरायने ए, धन धन एहनी माय ॥ नमो० ॥ ए आंकणी ॥ एह अनादि संसारमां ए, कर्म संतान अनादि, डुःखे व्यापी रह्यो ए ॥ निज गुण ऋद्धि आबादी ॥ २ ॥ नमो० ॥ जन्म जरा मरणे जस्यो ए, दीनता इष्ट विजोग, शोग बहु उपजे ए ॥ वली तनुमां अति रोग ॥ ३ ॥ नमो० ॥ एम जाणी वैराग्यथी ए, समकित मूल व्रत बार, वली चारित्र लीये ए ॥ बांकी निज आगार ॥ ४ ॥ नमो० ॥ बठ अठमादिक तप करे ए, सीलंग सहस्स अढार, पाली सुरजव लहे ए ॥ शिवसुख अनुक्रमे सार ॥ ५ ॥ नमो० ॥ केइक क्लीब पुरुष वली ए, कामजोग लपटाय, बहु डुःख जोगवे ए ॥ नीचनी सेव कराय ॥ ६ ॥ नमो० ॥ जीम संग्राम मांहे अडे ए, पेसे समुद्र मजार, मित्रादिकने ठगे ए ॥ विषयाजिलाष प्रकार ॥ ७ ॥ नमो० ॥ परजव नरगे संचरे ए, बांकी चंचल आय, लह्यां में डुःख घणां ए ॥ वार अनंती प्राय ॥ ८ ॥ नमो० ॥ जिन्न जिन्न साते धराए, डुःख तणो नहीं पार, कुंजीपाके पच्यो ए ॥ तीव्र शस्त्रे लह्यो मार ॥ ९ ॥ नमो० ॥ करवतश्री वेहेर्यो वली ए, काष्ठने जिम सूत्रधार, जेद्यो त्रिशूले करी ए ॥ जंत्रे पील्यो अपार ॥ १० ॥ नमो० ॥ वक्रतुंम पंखी थइ ए, खाधो करतो रीव, तातां जोतर ए ॥ मूक्यां माहारी ग्रीव ॥ ११ ॥ नमो० ॥ एम करी

रथ वहेवरावीउं ए, तिल तिल खंड कस्यो कापी, दिशोदिश वलि करे ए ॥ हिंसानां ए पाप ॥ १२ ॥ नमो० ॥ जीज तालुथी काढतां ए, ए अलीक बोल्यानो जेद, वली परद्रव्य लीयो ए ॥ कान नाक करे छेद ॥ १३ ॥ नमो० ॥ धगधगती लोहपुत्रिका ए, आलिंगन दीये देव, वैतरणीमां ठवे ए ॥ उस नीर नित्यमेव ॥ १४ ॥ नमो० ॥ छाय जाणी सामली तले ए, बेसवा जाउं जाम, पडे तस पत्र जे ए ॥ कान नाक छेदे ताम ॥ १५ ॥ नमो० ॥ ताढ १ ताप २ जूख ३ तरशनी ४ ए, खरज ने ५ परवशताय ६, शोग ७ जय ८ ज्वर ९ घणो ए ॥ दाह १० अतिशय थाय ॥ १६ ॥ नमो० ॥ ए दश वेदना नरगमां ए, वली कंक शुनक ने काक, रोता चूंटे घणुं ए॥ पापकर्म परिपाक ॥ १७ ॥ नमो० ॥ आंख मिंची उघाडीये ए, नहीं सुख तेती वार, तिरीगतिमां वली ए ॥ पाम्यो दुःख अपार ॥ १८ ॥ नमो० ॥ दहन लंछन ने वध होये ए, वहु वहेवरावे जार, खमी जूख तरशने ए ॥ नवि करे कोइ सुसार ॥ १९ ॥ नमो० ॥ नरजवमां परवशपणुं ए, निरधन ने वली क्लीब, तिणे नरपति सुणो ए ॥ शोक न करीये अतीव ॥ २० ॥ नमो० ॥ राय कहे तुमे स्वामीजी ए, कीधो सफल अवतार, कस्यो थिर आतमा ए ॥ अंतररिपु जयकार ॥ २१ ॥ नमो० ॥ शोचण योग्य तुमे नहीं ए, छांड्यो प्रमाद प्रसंग, अंगी तपसीरी करी ए ॥ प्राप्तप्राय शिवसंग ॥ २२ ॥ नमो० ॥ शोचवा योग्य ते ते थयो ए, जिणे कीधो उपसर्ग, गुरु कहे तव सुणो ए ॥ एहवो संसार संसर्ग ॥ २३ ॥ नमो० ॥ परचिंता तुं शुं करे ए, कर निज आतम चिंत, सुणी नृप उच्चरे ए ॥ आणा करो जगवंत ॥ २४ ॥ नमो० ॥ को पासे व्रत आदरुं ए, विजयधर्म गुरु पास, मुनि एणी परे कहे ए ॥ कस्युं प्रमाण वच तास ॥ २५ ॥ नमो० ॥ गुणचंद मुनि हवे विचरीआ ए, वाणमंतर हवे तेह, करी महा कर्मने ए ॥ रोगे थइ क्षीण देह ॥ २६ ॥ नमो० ॥ इंद्रिय हाणि लह्यां घणुं ए, अशुज उदय थयो तास, स्वजाव फस्यो वली ए ॥ करे आक्रंद वेखास ॥ २७ ॥ नमो० ॥ वैद्य निपुण उपदेशथी ए, विष्टा प्रमुख मुख दीध, कंटक शय्या करी ए ॥ एम कांयक सुख सिद्ध ॥ २८ ॥ नमो० ॥ रौद्रध्यान दोषे करी ए, तेत्रीश सागर आय, सातमी नरगे गयो ए ॥

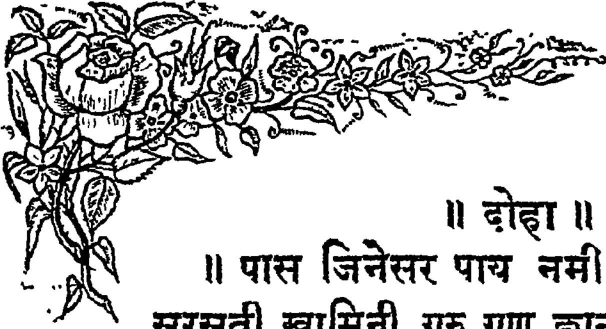
महा दुःखनो समुदाय ॥ २९ ॥ नमो० ॥ गुणचंद्र पण ऋषिराजीउं ए, पाली संजम शुद्ध, करी संलेषणा ए ॥ भावना भावी विशुद्ध ॥ ३० ॥ ॥ नमो० ॥ कर्मराशि बहु क्षय करी ए, खामी सघला जीव, नमी वीतरागने ए ॥ थानक जोइ निर्जीव ॥ ३१ ॥ नमो० ॥ पादपोपगम अणसण करी ए, पाली निरतिचार, रुंधी चेष्टा प्रत्ये ए ॥ बहु वंदे अणगार ॥ ॥ ३२ ॥ नमो० ॥ गाये देवांगना गीतमां ए, स्तवना करे नरदेव, त्यजी निज देहने ए ॥ थया सर्वारथे देव ॥ ३३ ॥ नमो० ॥ तेत्रीश सागर आउखे ए, सुखसागर झीलंत, ए नरभव आठमो ए ॥ आठमो खंड ए हुंत ॥ ३४ ॥ नमो० ॥ एकवीश ढाले सोहामणो ए, समरादित्यने रास, अढार बेंतालीशे ए ॥ सुदि दशमी भाद्र मास ॥ ३५ ॥ नमो० ॥ श्रीविजयसिंह सूरीशना ए, अंतेवासी मुख्य, क्रियाउद्धार कर्यो ए ॥ सत्यविजय सुशिष्य ॥ ३६ ॥ नमो० ॥ कपूरविजय तस पाटवी ए, खिमाविजय तस शिष्य, क्षमागुणथी भर्या ए ॥ जिनविजय सुजगीश ॥ ३७ ॥ ॥ नमो उत्तमविजयजी तेहना ए, शिष्य शिरोमणि सार, पंडित गुणे आगला ए ॥ समतारस भंडार ॥ ३८ ॥ नमो० ॥ कल्याण पास पसायथी ए, पद्मविजय कहे एम, विसलनगरे रही ए ॥ समरादित्य गुण प्रेम ॥ ॥ ३९ ॥ नमो० ॥ सर्व गाथा ॥ ७११ ॥

॥ इति श्रीसंविज्ञपक्षीयपंडितप्रवर श्रीमदुत्तमविजयगणिशिष्यपंडित श्रीपद्मविजयगणिविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे गुणचंद्रनृपवाणमंतराभिधानविद्याधरयोः अष्टमो नरभवः समाप्तः ॥ ८ ॥ सर्व गाथा ॥ ७११ ॥ उक्त गाथा ॥ ५ ॥



॥ अथ ॥

॥ नवमः खंडः प्रारभ्यते ॥



॥ दोहा ॥

॥ पास जिनेसर पाय नमी, शांति सदा सुखकार; समरी सरसती स्वामिनी, गुरु गुण ज्ञान दातार ॥१॥ आठ खंम कह्या इणी परे, दिन दिन चढते दाव; नवमो खंम हवे निर्मलो, जाखुं आणी जाव ॥ २ ॥ समरादित्य सोहामणा, गुणद्वेषी गिरिसेण; नृपसुत ने चंमाल नर, सांजलीये सयणेण ॥ ३ ॥ इणे जंबुद्वीपे अछे, जरतक्षेत्र जरऋद्धि; उ-ज्जेणी नयरी अवल, पृथिवी मांहि प्रसिद्ध ॥ ४ ॥ मंदिर गढ मढ मालीआं, विहार आराम विशेष; पोल पागार मारग पृथु, अमर जुवे अनिमेष ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ उजी जावलदे राणी अरज करे छे, अब को वरसालो घर कीजे हो ॥

॥ गढबुंदीरा हाडा ॥ वाल्हा चलण न देशुं ॥ ए देशी ॥

॥ लखमी चल जाणी परिखामी सवि धीये, रज्जु परे मानुं बांधी हो ॥ सुणो जविअण जावे ॥ गुण गुणवंत केरा ॥ सहु जन गुणरयणे करी जू-षित, रूपकला सहुए साधी हो ॥ १ ॥ सु० ॥ जेहनी सीमा सरोवर सोहे, नलिनीवने सर सोहे हो ॥ कमले नलिनीने कमल ते जमरे, जमर गुंजा-रवे मोहे हो ॥ २ ॥ सु० ॥ नामे पुरीससिंह तेहनो राणो, सुंदरी राणी जाणो हो ॥ त्रण वर्ग साधतां काल गमावे, दंपती दोय वखाणो हो ॥ ३ ॥ ॥ सु० ॥ इण समे सुर सरवारथवासी, तिहांथी चव्या आयु पाली हो ॥ सुंदरीकुखे उपनो जिहारे, जागी सुपने रवि जाली हो ॥ ४ ॥ सु० ॥ पतिने कहे में सूरय स्वप्ने, दीठो आज प्रजाते हो ॥ कमलाकर विकस्वर करतो, किन्नर तस गुण गाते हो ॥ ५ ॥ सु० ॥ गगन विजूषे तिमिर विणासे, लोक करे परणाम हो ॥ आतपे सौम्य ते पेसतो उदरे, तेहनुं फल कहो स्वामी हो ॥ ६ ॥ सु० ॥ नृप हरखी कहे तुज सुत होशे, त्रिजुवनमां विख्यात हो ॥

तहत्ति करी पतिवचन प्रमाणी, अनुक्रमे जन्म ते जात हो ॥ ७ ॥ सु० ॥ रुडे नखेतरे करण मुहूर्त्ते, विण संक्लेशे आयो हो ॥ सिद्धिमती दासीए वधायो, नृप मन हरख न मायो हो ॥ ८ ॥ सु० ॥ दासीने दान देइने करावे, बंदिमोचन राय हो ॥ अनिवारित दानने देवरावे, नयर महोत्सव मंडाय हो ॥ ए ॥ सु० ॥ पद्मराय मुख जे नरदेवा, तेहने करता जाण हो ॥ बहु उंडव नित्य नित्य प्रते करतां, हुउं मास प्रमाण हो ॥ ॥ १० ॥ सु० ॥ स्वप्न प्रमाणे पितामह केरुं, समरादित्य दीये नाम हो ॥ इण अवसर जीव वाणमंतरनो, नारक नीकळ्यो ताम हो ॥ ११ ॥ सु० ॥ नाना जव तिरिगतिमां जटकी, बहु डुःख खमतो तेह हो ॥ कर्मवशे शीआलीउं हुउं, मरण लही वली एह हो ॥ १२ ॥ सु० ॥ इणहीज नयरीए चंडालपाडे, गंठिग नाम चंडाल हो ॥ जक्कदेवा नामे तस नारी, तास कुखे तिण काल हो ॥ १३ ॥ सु० ॥ गिरिसेन नामे पुत्रज हुउं, जडमति डुःखीयो दीन हो ॥ कुरूपीपणे काल गमावे, पापराशि धनहीन हो ॥ १४ ॥ सु० ॥ समरादित्य पुण्यफल अनुजवता, पूर्व सुकृत अन्यासे हो ॥ सयल कला बालकाले शीख्यो, साखी मात्र गुरु पासे हो ॥ १५ ॥ सु० ॥ कुमरपणे पण पूर्व अन्यासे, शास्त्रचिंतन घणुं रातो हो ॥ तत्त्वजुक्तिए वात ठरावे, जावे जावना अवदातो हो ॥ १६ ॥ सु० ॥ जातिस्मरण जावना गुणथी, उपनो लोक प्रछन्न हो ॥ पुण्यानुबंधी पुण्यउदयथी, कुशल जावमां मन्न हो ॥ १७ ॥ सु० ॥ नाण निर्मल ने त्याज्य विषयथी, आसन्नसिद्धि संपत्ति हो ॥ उत्कट जीव वीर्य नहीं डुःकृत, तिणे एहवा गुणवत्ति हो ॥ १८ ॥ सु० ॥ राज्यलक्ष्मी उपर नहीं आदर, न करे शरीरसत्कार हो ॥ चित्रक्रीडा ने विषय न सेवे, महा वैरागी कुमार हो ॥ १ए ॥ सु० ॥ वात कुमरनी एहवी देखी, चिंतवे मनमां जूप हो ॥ रूपे कंदर्प ने वित्त अतुल छे, यौवन वय अनूप हो ॥ ॥ २० ॥ सु० ॥ रोगरहितने इंद्रिय प्रवरां, रायकन्या घणुं इछे हो ॥ मुनिदरिसण न लह्यो पण मुनि परे, मनमां विकार न प्रीछे हो ॥ २१ ॥ ॥ सु० ॥ गीत कला नवि सेवे न पहेरे, जूषण न करे मानो हो ॥ रुजुता न मूके धर्म न चूके, पुण्य संजार अमानो हो ॥ २२ ॥ सु० ॥ जे दिनथी उपनो ते दिनथी, उपनी सवि मुऊ चीज हो ॥ नृप कहे सवि

सुख मुफने होशे, एह कल्याणनुं वीज हो ॥ २३ ॥ सु० ॥ पहेली ढाल ए नवमे खंके, समरादित्यने रासे हो ॥ शिष्य उत्तमविजयनो जंपे, आगल वात विलासे हो ॥ २४ ॥ सु० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उल्ललित गोष्टि देखीये, सोंपुं तेहने संग; कलावंत क्रीकानिपुण, मदन विशिष्ट सत्तंग ॥ १ ॥ उत्तम कुलमां उपना, तस संगे ततकाल; अति प्रमोद उपजावशे, मुफने तेह मयाल ॥ २ ॥ अशोक कामांकुर अछे, ललितांग नाम लहंत; चतुर चूकामणि चिंतवी, कहे तेकी चूकंत ॥ ३ ॥ जतन करी तुमे जोपशुं, समरादित्य सुजाण; लोक मारगमां लावीये, ए छे अमची आण ॥ ४ ॥ आण प्रमाण करी अधिक, केतोक वीतो काल; सहु भेला विचरे सदा, खेले नव नव ख्याल ॥ ५ ॥

॥ ढाल वीजी ॥

॥ वीफाजी हो रल कूउं ने मुख सांकडुं हो वीजा,
केम करी करुं प्रवेश ॥ वयण वाल्हा सयण रुका ॥ ए देशी ॥

॥ वाहालाजी हो ॥ चालोने रमवा जाइये हो मित्ता, एम करी चाल्या तेह ॥ छेल वाल्हा, सयण रुका ॥ वा० ॥ वीणा प्रयोगे देखावता हो मित्ता, काव्य विनोद करेह ॥ छे० ॥ १ ॥ वा० ॥ जलक्रीका करे मोदशुं हो मित्ता, जोवे सरोवर शोह ॥ छे० ॥ वा० ॥ कामशास्त्र वोले घणां हो मित्ता, जे सुणी उपजे मोह ॥ छे० ॥ २ ॥ वा० ॥ वांधे हिंचोला रुंखशुं हो मित्ता, हिंचे तिहां धरी प्रीति ॥ छे० ॥ वा० ॥ गीत गाये अति रुअमां हो मित्ता, कामशास्त्र विरचित ॥ छे० ॥ ३ ॥ वा० ॥ कुसुम साथरा पाथरे हो मित्ता, वरणवता पंचवाण ॥ छे० ॥ वा० ॥ ते देखी चित्त चिंतवे हो मित्ता, समरादित्य सुजाण ॥ छे० ॥ ४ ॥ वा० ॥ वधते संवेगे करी हो मित्ता, अहो एह केम वोधाय ॥ छे० ॥ वा० ॥ मूढदशा अति आकरी हो मित्ता, किम उपगार ते थाय ॥ छे० ॥ ५ ॥ वा० ॥ पण तेहना उपरोधथी हो मित्ता, नवि कहे कांय प्रतिकूल ॥ छे० ॥ वा० ॥ तस प्रतिवोधन कारणे हो मित्ता, आचरुं तस अनुकूल ॥ छे० ॥ ६ ॥ वा० ॥ प्रीति परस उपजावतो हो मित्ता, उपजाव्यो विश्वास ॥ छे० ॥ वा० ॥ एक दिन सहु मित्रे मली हो मित्ता, मांड्यो वातविलास ॥ छे० ॥ ७ ॥ वा० ॥ वोले अशोक एणी परे हो

मित्ता, कामशास्त्र सम नांहि ॥ छे० ॥ वा० ॥ अवर कीशुं तव बोलीउं हो मित्ता, कामांकुर उछांहि ॥ छे० ॥ ७ ॥ वा०॥ एहमां कांय न पूछवुं हो मित्ता, एहथी त्रिवर्ग सधाय ॥ छे० ॥ वा० ॥ चित्त आराधे नारीनुं हो मित्ता, तेहथी संरक्षण थाय ॥ छे० ॥ ए ॥ वा० ॥ शुद्ध संतति तेहथी होय हो मित्ता, तेहथी दानादिक धर्म ॥ छे० ॥ वा० ॥ दारा सुत शुद्धथी लहे हो मित्ता, अर्थ कामनां शर्म ॥ छे० ॥ १० ॥ वा० ॥ विपरीते विपरीत निपजे हो मित्ता, तिणे त्रण वर्गनुं हेत ॥ छे० ॥ वा० ॥ कहे ललितांग जलुं कह्युं हो मित्ता, एहमां दोष न देत ॥ छे० ॥ ११ ॥ वा० ॥ पण एक अति जलुं जाणजो हो मित्ता, धर्म अरथ फल काम ॥ छे० ॥ वा० ॥ काम विना ते निष्फला हो मित्ता, मोक्षनो नहीं फल-ठाम ॥ छे० ॥ १२ ॥ वा० ॥ तेह लोकोत्तर मार्ग छे हो मित्ता, ज्ञानध्यान फल तेह ॥ छे० ॥ वा० ॥ अशोक कहे इहां साखीआ हो मित्ता, होय कुमर जो एह ॥ छे० ॥ १३ ॥ वा० ॥ कामांकुर कहे ए खरुं हो मित्ता, ललितांग कहे एम ताम ॥ छे० ॥ वा० ॥ करीये पसाय कुमारजी हो मित्ता, शोजन-तर जे उद्दाम ॥ छे० ॥ १४ ॥ वा० ॥ कुमर कहे मत कोपजो हो मित्ता, जाखुं हुं परमछ ॥ छे० ॥ वा० ॥ सहु कहे कोप इहां किश्यो हो मित्ता, नाश अन्नाणनो जछ ॥ छे० ॥ १५ ॥ वा० ॥ कुमर कहे कामशास्त्र जे हो मित्ता, करनार ने सुणनार ॥ छे० ॥ वा० ॥ प्रगट करे अन्नाणने हो मित्ता, ते सुणजो अधिकार ॥ छे० ॥ १६ ॥ वा० ॥ प्रकृति असार विटंबणा हो मित्ता, परजव विष उपमान ॥ छे० ॥ वा० ॥ मोहदोषे देखे नहीं हो मित्ता, कृत्याऽकृत्य अज्ञान ॥ छे० ॥ १७ ॥ वा० ॥ रुधिर मांस अशुचि जरी हो मित्ता, रमणी केरी काय ॥ छे० ॥ वा० ॥ जर्त्ता सुकरनी परे हो मित्ता, रहे नित्य तिहां लपटाय ॥ छे० ॥ १८ ॥ वा० ॥ मंदबुद्धि देखे नहीं हो मित्ता, परमारथनी वात ॥ छे० ॥ वा० ॥ बुधजनगर्हित जाणीये हो मित्ता, प्रकृति चपल न रहात ॥ छे० ॥ १ए ॥ वा० ॥ बाल जीव माने घणुं हो मित्ता, काम संपादन हेत ॥ छे० ॥ वा० ॥ क्लेश करे अकृत्य धरे हो मित्ता, ध्याये कुध्यान संकेत ॥ छे० ॥ २० ॥ वा० ॥ कुशल मार्ग मूके वली हो मित्ता, पामे अति उन्माद ॥ छे० ॥ वा० ॥ गुरुजननी निंदा करे हो मित्ता, लोकथी लहे अपवाद ॥ छे० ॥ २१ ॥ वा० ॥ अ-

नुक्रमे जाये नरगमां हो मित्ता, वली एह नव डुःखदाय ॥ डे० ॥ वा० ॥ वध बंधन पामे घणां हो मित्ता, ईर्ष्या कुल घर थाय ॥ डे० ॥ ॥ २२ ॥ वा० ॥ नय विषादनुं क्षेत्र डे हो मित्ता, क्रोध तणो रे निवास ॥ डे० ॥ वा० ॥ धर्मशास्त्र निंदे तिणे हो मित्ता, रुमां न काम विलास ॥ डे० ॥ २३ ॥ वा० ॥ मध्यस्थ थइने विचारजो हो मित्ता, किम साधे त्रण वर्ग ॥ डे० ॥ वा० ॥ द्रव्य उपार्जे किणी परे हो मित्ता, किम वली साधे सर्ग ॥ डे० ॥ २४ ॥ वा० ॥ कामकुशल प्राणी तणी हो मित्ता, कुलटा दीसे नार ॥ डे० ॥ वा० ॥ कामकुशल नहीं तेहनी हो मित्ता, शीलवंती सुविचार ॥ डे० ॥ २५ ॥ वा० ॥ तिणे कारण शुन्न संतति हो मित्ता, इत्यादिक न एकांत ॥ डे० ॥ वा० ॥ कामकुशल प्राणी तणा हो मित्ता, पुत्र ते अति डुर्दंत ॥ डे० ॥ २६ ॥ वा० ॥ वली तस्करपणुं तेहमां हो मित्ता, एम असमंजस वात ॥ डे० ॥ वा० ॥ धर्म अर्थ फल पण नहीं हो मित्ता, काम ते डुःख अवदात ॥ डे० ॥ २७ ॥ वा० ॥ खरज खनन सुख जेहवां हो मित्ता, करता नावअंधकार ॥ डे० ॥ वा० ॥ अशुन्न कर्म फलनूत डे हो मित्ता, किम धर्म अर्थ फलसार ॥ डे० ॥ २८ ॥ वा० ॥ शोक वधे लाघव होये मित्ता, वली अविश्वासनुं गम ॥ डे० ॥ वा० ॥ शरीरस्थिति होये कामथी हो मित्ता, मुनिवर शरीर उद्दाम ॥ डे० ॥ २९ ॥ वा० ॥ बहु सेवे जो विषयने हो मित्ता, तो होये क्षयी मुख रोग ॥ डे० ॥ वा० ॥ मोहीने ए मनोहरु हो मित्ता, मिथ्यानिमामनने योग ॥ डे० ॥ ३० ॥ वा० ॥ नवमे खंमे बीजी कही हो मित्ता, मित्रबोधननी ढाल ॥ डे० ॥ वा० ॥ पद्मविजय कहे आगले हो मित्ता, दीये उपदेश रसाल ॥ डे० ॥ ३१ ॥ वा० ॥ सर्व गाथा ॥ ६५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोक्ष अलौकिक मानीये, ते पण नांहि तहत्ति; वर मुनिलोक लौकिक वद्यो, सयल वीर्यनी सत्ति ॥ १ ॥ संपूरण कारय सवे, अव्याबाध अनूप; जन्म जरा नहीं जेहने, सुख उत्कृष्ट सरूप ॥ २ ॥ ज्ञान ध्यान पण गुण अडे, धर्मरूप ते धार; क्षयोपशम क्षायक होये, सफल तदा संसार ॥ ३ ॥ काम अनिंदित कोइ कहे, पण ते नांहि प्रकार; तिरि पण नोगवतां तुरत, निंदित डे निरधार ॥ ४ ॥ कामशास्त्र ते कारणे, करे अन्नाणप्रकाश, अद-

त्तग्रहण अवलोकीये, नाखे जिनवर नाथ ॥ ५ ॥ यतः ॥ " तं नाम होइ सच्चं, जं हियमच्चं जणस्स दंसेइ ॥ जं पुण अहियंति सया, तं णणुकत्तो-च्चयं सच्चं ॥ १ ॥ ताजं कामुद्दिरण, समच्चसच्चं न तं बुहजणेण ॥ सुमिणेवि जं पियवं, पसंसियवं च डुव्वयणं ॥ २ ॥ " सुखदायी सहु सत्वने, उपजावे उपशम्म; परशंसवुं ने जंपवुं, हृदये जाणो रम्म ॥ ६ ॥ यतः ॥ "पस-माइ नावजणयं, हियमेगंते सव सत्ताणं ॥ निउणेण जं पियवं, पसंसि-यवं सुविसुद्धं ॥ ३ ॥" सांजली विस्मय सहु लह्या, चित्तमां करे विचार; अहो विवेक अहो नावना, अहो वैराग्य अपार ॥ ७ ॥ कृतज्ञ गुण अहो केहवो, एहवा अध्यवसाय; नवि होये मुनिवर मने, एम चित्त अ-चरिज थाय ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ आवो हरि लाहरीआ वाहाला ॥ ए देशी ॥

॥ करे सहु मित्र मली वातो ॥ तेहमां अशोक कहे ख्यातो, सुणो कुमार कहुं अवदातो ॥ १ ॥ करे० ॥ तुमे कह्युं लोकोत्तर एह, इहां अधिकार कहो केह, लौकिकमां कामशास्त्र गुणगेह ॥ २ ॥ करे० ॥ कहे कामांकुर ए सारुं, कह्युं अशोके अवधारुं, कहे ललितांग लागे प्यारुं ॥ ३ ॥ करे० ॥ बोले हवे कुमर सुणो वाणी, लहे नहीं तत्त्व वात प्राणी, घणा कंदर्पी बाल अन्नाणी ॥ ४ ॥ करे० ॥ होये कर्मबंधहेतु काम, नहीं तेहशुं माहारे काम, जाणी पडे कूप कहो कुण आम ॥ ५ ॥ करे० ॥ देवाणो न उत्तर तिहां केणे, कह्युं अंगीकार सहु तेणे, गया केइ दिन नेहनर नयणे ॥ ६ ॥ करे० ॥ सहु मली एम विचार कीधो, ए कुमार तो त-पसी सम सीधो, आपणनो ए किम जाये लीधो ॥ ७ ॥ करे० ॥ अछे उपाय इहां एक, दाक्षिण्यवंत ए छे छेक, आपण मित्रशुं कीधा विवेक ॥ ८ ॥ करे० ॥ पाणिग्रहण करो कहीये एम, माने जो वचन धरी प्रेम, सहुए धारी एह-वो नेम ॥ ९ ॥ करे० ॥ बेसी एक दिन इणी परे नाखे, अशोक सुणो मित्र सहु साखे, एक पूछुं धरी मन अनिलाखे ॥ १० ॥ करे० ॥ मा-नवी के नहीं मित्रनी वाच, कहे कुमर मित्रना त्रण ताच, अधम मध्यम उत्तम साच ॥ ११ ॥ करे० ॥ एक मित्र घणुं लाल्या पाल्या, कोइ वा-तथी नवि अलगा टाल्या, पण आपदाए दूरे चाल्या ॥ १२ ॥ करे० ॥

ए तो तुमे अधम मित्र जाणो, हवे सुणो पर्व मित्र शाणो, मले कोइ पर्व उत्सव टाणो ॥ १३ ॥ करे० ॥ नवि हावन्नाव करवो तास, पण कष्टे ते करे वेखास, राखे कांय लौकिक सुविलास ॥ १४ ॥ करे० ॥ कांय विलपी विलंब करी मूके, ए तो मध्यम मित्र नवि चूके हवे उत्तम रुधिर रेडे थूंके ॥ १५ ॥ करे० ॥ एक लटक सलाम होय तेह, मूकावे डुःख थकी एह, गौरवपणुं दाखवे बहु जेह ॥ १६ ॥ करे० ॥ थोडे उपगार ते बहु माने, संपद् पण ते तस घर आणे, आपदाए पण राखे ढाने ॥ १७ ॥ करे० ॥ एहमां उत्तम सरिखुं थावुं, कहे कामांकुर न रहस्य पावुं, ए तो जगतजीव जाणे ठावुं ॥ १० ॥ करे० ॥ ललितांग कहे कह्युं गंन्नीर, कहो हवे ज्युं लहीए तीर, कहे कुमर सुणो सहु थइ धीर ॥ १ए ॥ करे० ॥ परमार्थ मित्रना त्रण न्नेय, देह सुजन धरम जाणेय, जघन्य मित्र देहने वेय ॥ २० ॥ करे० ॥ देहनी क्षण क्षण करो संन्नाल, न्नूख तरश ने टाढ ताप काल, संन्नालतां पण होय विकराल ॥ २१ ॥ करे० ॥ निरालंबन मूकीने जाय, हवे मध्यम मित्र सज्जन थाय, माय ताय कलत्र न्नगिनी न्नाय ॥ २२ ॥ करे० ॥ क्लेश अवसरे करता विलाप, प्रस्तावे ते संन्नारे आप, जाये परन्नव पुण्य तथा पाप ॥ २३ ॥ करे० ॥ हवे धर्म मित्र उत्तम जाणो, ते तो कोइक अवसर मन आणो, पण थाय सखाइ सपराणो ॥ २४ ॥ करे० ॥ ते तो सघला न्नय साथे टाले, फरी फरी ते पुरुषने संन्नाले, अनुक्रमे शाश्वत सुख आले ॥ २५ ॥ करे० ॥ एम जाणी विषयनां सुख ढांफो, ए असारशुं मत तुमे रढ मांफो, ए आतम सुख करे खांफो ॥ २६ ॥ करे० ॥ पामी मानवनो न्नव श्रीकारो, मोक्षमारग पामी मत हारो, वीतराग वयण चित्त अवधारो ॥ २७ ॥ करे० ॥ उत्तम नरसेवित धर्म करो, न्नव न्नवनां पातक डूरे हरो, संसारसायर सुख मांहि तरो ॥ २० ॥ करे० ॥ नवमे खंके त्रीजी ढाल, कही पद्मविजय अति सुरसाल, आगले होशे मंगलमाल ॥ २ए ॥ करे० ॥ सर्व गाथा ॥ १०२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ समरादित्यनां सांन्नली, वारु रसालां वयण; तेह अशोकादिक तणां, नेहे न्नरीयां नयण ॥ १ ॥ तथान्नव्यता तेहवी, शुद्ध वली संयोग; कर्मे विचित्र कह्यां तिणे, उत्कट वीर्य अन्नोग ॥ २ ॥ समरादित्यनी श-

क्तिथी; कर्मराशि कृतक्षीण; उपशम मिश्रत आवीयुं, परिणति शुभ थइ पीण ॥ ३ ॥ मोहवासना मटी गइ, अशुभ तूटो अनुबंध; गुणवंत गंठी भेदतां, शुद्ध समकित संबंध ॥ ४ ॥ अशोक कहे खरुं एह छे, नहीं संदेहनुं नाम; शोभनथी पण शोभनं, कामांकुर कहे काम ॥ ॥ ५ ॥ अथवा शोभन एहज छे, निश्चय कांय न अन्य; ललितांग कहे लख लोकमां, अमचा पुण्य अगन्य ॥ ६ ॥ अन्नाण निद्राए उंघीआ, अमने जगव्या आज; हेतुवाद अम हित करी, कुमरे कीधुं काज ॥ ७ ॥ आतमहित अमे आदरुं, शिक्षा तुम्ह संभाली; अशोक कहे ए अति भलुं, भाख्युं अवसर भाली ॥ ८ ॥ कुमर कह्यो करवुं जिके, ततक्षण बोल्या ताम, संक्षेपे सुणजो तुमे, साधुसंग विश्राम ॥ ए ॥ विषय राग वली वर्जवो, भवसरूपने भावी; कुसंग त्याग नित्य कीजीये, दानादिक चउ दाव ॥ १० ॥ साधु साधु एम सहु कहे, कह्युं अमे अंगीकार; कुमर कहे कृतपुण्य छो, सफल जन्म तुम सार ॥ ११ ॥ धर्मी थया तिणे धन्य छो, तेह बोल्या तिणी वार; आपतुं दरिसन अधन्यने, न होये एम निरधार ॥ १२ ॥ कुमर प्रशंसा एम करी, गया ते निज निज गेह; केइक दिन एम अतिक्रम्या, इण अवसर जुउ एह ॥ १३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ कउंकारा आया गुरुजी प्राहुणा ॥ ए देशी ॥

॥ आइ वसंत रुतु अन्यदा, वनसीरी अति विलसंत ॥ मारा साजन वाल्हा, चालो वसंत जोवा जाइये ॥ आंबे मंजरीउ भइ, अतिमुक्तक उल्लसंत ॥ १ ॥ मा० ॥ तिलकादिक फूल्यां घणुं, मलयाचल वाया वाय ॥ मा० ॥ भ्रमर गुंजारव करी रह्या, कोकिल शब्द सुणाय ॥ २ ॥ मा० ॥ मदन पीडे बाल वृद्धने, विकसित कमलिणी थाय ॥ मा० ॥ कानन सेवे बहु जना, विरह न दंपती खमाय ॥ ३ ॥ मा० ॥ नगर महर्द्धिक आवीआ, इण समे नृपति पास ॥ मा० ॥ विनवे इणी परे रायने, पूरो अमारी आश ॥ ४ ॥ मा० ॥ नित्य उछव छे यद्यपि, तोपण आज विशेष ॥ ॥ मा० ॥ उछव उपरे होयशे, उछव जनने अशेष ॥ ५ ॥ मा० ॥ पाउ धारो तिणे राजीया, तव चिंते महाराय ॥ मा० ॥ मोकलुं समरादित्यने, देखे विचित्र समवाय ॥ ६ ॥ मा० ॥ तो समीहित अम नीपजे, उपजे कामविकार

॥ मा० ॥ एम विचारी तेहने, जाखे सुणे परकार ॥ ७ ॥ मा० ॥ उंछव वहु देखावीआ, हुं लह्यो परमाणंद ॥ मा० ॥ हवे देखावो कुमरने, तुमचो एह नरींद ॥ ८ ॥ मा० ॥ कहे महर्द्धिक रायने, कीधो अम सुपसाय ॥ ॥ मा० ॥ इम कही ते निज घर गया, तेडावे कुमरने राय ॥ ९ ॥ मा० ॥ वस्त स्थिति ए आपणी, मधुउंछव थाये आज ॥ मा० ॥ जोवा जाये नरपति, एम जाखे महाराज ॥ १० ॥ मा० ॥ ए मारग तुमे आचरो, में जोयुं वहु वार ॥ मा० ॥ हर्ष थशे प्रजालोकने, तिम स्वजन परिवार ॥ ॥ ११ ॥ मा० ॥ कुमर प्रमाण करे हवे, हरख्यो राय अत्यंत ॥ मा० ॥ आण करे प्रतिहारने, जइ संजलावो तंत ॥ १२ ॥ मा० ॥ ज्ञानगरग सुख मंत्रिने, रथवर प्रमुख तयार ॥ मा० ॥ करीने कुमरशुं नीकलो, एह आणा अवधार ॥ १३ ॥ मा० ॥ प्रतिहारे जइ हर्षथी, संजलाव्यो अवदात ॥ मा० ॥ ते पण हरषे तिम करे, रथवर तेह विख्यात ॥ १४ ॥ मा० ॥ यंत्रयोध थाप्या तिहां, वली वैजयंती पताक ॥ मा० ॥ घूघरी चिहुं दिश रणझणे, पुण्य तणा परिपाक ॥ १५ ॥ मा० ॥ छत्र चामर घणुं सोहतां, लटके रयणनी दाम ॥ मा० ॥ आसन मांड्युं तिहां किणे, इण अवसर तिणे ठाम ॥ १६ ॥ मा० ॥ कुंकुम वस्त्र पहेरी करी, पात्र लोक तिहां आय ॥ मा० ॥ विविध यान वेसी वली, आवे भुजंग जन प्राय ॥ १७ ॥ मा० ॥ कुमर जोवाने कारणे, वहु तिहां राजकुमार ॥ मा० ॥ गोंखे रही अंतेउरी, कुमर दर्शनने सार ॥ १८ ॥ मा० ॥ नृप आणाथी परिवर्यो, नीकल्यो ताम कुमार ॥ मा० ॥ मित्र अशोकादिक सहु, चाल्या कुमरनी ल्हार ॥ १९ ॥ मा० ॥ वेठा रथवर उपरे, मित्रनी साथे तेह ॥ मा० ॥ रथ चाल्यो हवे जेटले, जय जय शब्द करेह ॥ २० ॥ मा० ॥ पात्र ते नाचे पगे पगे, पूठे राजकुमार ॥ मा० ॥ कौतुक विविध प्रकारनां, देखतां अति विस्तार ॥ २१ ॥ मा० ॥ राजमारग मांहि आवीआ, निज निज लेइ समुदाय ॥ मा० ॥ ऋद्धि विशेषे शोहे घणुं, अचरिज विबुधने थाय ॥ २२ ॥ मा० ॥ वाजित्र विविध प्रकारनां, देखतां लहे वैराग ॥ मा० ॥ जावना जावे एहवी, अहो अहो मोह अताग ॥ २३ ॥ मा० ॥ अहो अकार्यमां धीरता, अहो चेष्टा परमाद ॥ मा० ॥ अहो दीर्घदर्शी नहीं, अहो अणालोचित वाद ॥ २४ ॥ मा० ॥ अहो जवनी अशुद्धता, अहो संसारनो संग ॥ मा० ॥ एम चिंतवतां चा-

लतां, वाधे वैराग्यतरंग ॥ २५ ॥ मा० ॥ तास स्वरूप विचारतो, सारथी दाखे तास ॥ मा० ॥ भिन्न भिन्न कौतुक प्रत्ये, वाधते हर्ष उल्लास ॥ २६ ॥ मा० ॥ नवमा खंम तणी कही, चोथी ढाल रसाल ॥ ॥ मा० ॥ पद्मविजय एह रासमां, सुणतां मंगलमाल ॥२७॥ मा०॥ १४२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आगल जातां इण समे, देउल पीठे दीठ; रोगे पीड्यो रगरगे, नर एक बेठो नीठ ॥ १ ॥ दीसे हाथ ज्युं दोरमी, परगट सूज्या पाय; अति बीभत्स अशुचि अति, माखी देह न माय ॥ २ ॥ नीकलीआं रातां नयण, नासा ते लही नाश; कुमर देखी मन कर्मनी, परिणति चिंते पास ॥ ३ ॥ करुणा आणी कुमरजी, बूझववा बहु लोक; सारथीने पूछे सखर, रह्यो ए नाखो रोक ॥ ४ ॥ नाटक शुं ए निरखीये, तव सारथी कहे तेह; नहीं ए नाटक नाथजी, अति व्याधे ग्रह्यो एह ॥ ॥ ५ ॥ कुमर कहे व्याधि कवण, सारथी कहे सुजाण; शरीर सुंदर असुंदर करे, विण काले ए वियाण ॥ ६ ॥ कुमर कहे ए कापुरिश, तात सहे किम ताम; सारथी बोल्यो सांभलो, एह वध्य नहीं आम ॥ ७ ॥ कुमर कहे वध्य किम नहीं, मागे खड्ग महंत; व्याधि रहे तुं वेगलो, अलवे करुं तुझ अंत ॥ ८ ॥ अथवा युद्धने आव तुं, दुष्ट तुं घे दुःख लोक; इम आखीने उतर्यो, सघलो मूकी शोक ॥ ए ॥ चाल्यो सन्मुख ते चतुर, ते देखीने ताम; मलीआ लोक महाजना, कुंअर शुं करे काम ॥ १० ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ घर आवो हरिना वीर सुधीर ॥ शामलीआं जीरे ॥ ए देशी ॥

॥ सारथी कहे सुण साहिबा ॥ मारा वाल्हाजी रे ॥ हणवा योग्य न एह ॥ दुःख रेह ॥ मा० ॥ व्याधि नामे न नर अछे ॥ मा० ॥ कर्मनी परिणति जेह ॥ सहु देह ॥ १ ॥ मा० ॥ साधारण सहु जीवने ॥ मा० ॥ समरथ नहीं राणा राज ॥ जय काज ॥ मा० ॥ कुमर कहे पुरजन सुणो ॥ मा० ॥ ए किम छे कहो आज ॥ अति ब्राज ॥ २ ॥ मा० ॥ पुरिजन कहे एमज प्रभु ॥ मा० ॥ सारथीने कहे सार ॥ कुमार ॥ मा० तो किम ए बेसी रह्यो ॥ मा० ॥ बल नवि फोरवे लगार ॥ इण वार

॥ ३ ॥ मा० ॥ सारथी कहे इणे ग्रह्यां ॥ मा० ॥ वल साव नासी जाय ॥ न उठाय ॥ मा० ॥ जोर एहनुं चाले नहीं ॥ मा० ॥ कुमर कहे ते कोण थाय ॥ सुखठाय ॥ ४ ॥ मा० ॥ सारथी कहे धरमी जणी ॥ मा० ॥ कुमर कहे सुणो लोक ॥ सहु थोक ॥ मा० ॥ धर्म ते करवो श्रेय छे ॥ मा० ॥ परमार्थे एह शोक ॥ सहु फोक ॥ ५ ॥ मा० ॥ पुरिजन कहे साचुं कह्युं ॥ मा० ॥ पण उंछवनो होय जंग ॥ एकंग ॥ मा० ॥ लोकस्थितिने पालवा ॥ मा० ॥ नाटक जोवो रंग ॥ सुचंग ॥ ६ ॥ मा० ॥ सारथी कहे ए साचलुं ॥ मा० ॥ एम कहे चाल्या जाय ॥ त्यां देखाय ॥ मा० ॥ एक नर निज जवने रह्यो ॥ मा० ॥ मुखमां श्वास न माय ॥ शिथिलाय ॥ ७ ॥ मा० ॥ केश गया शिरना वली ॥ मा० ॥ नयण गले आवे खांस॥ नहीं को पास ॥मा०॥ दांत पड्या परिजन सवे ॥ मा० ॥ करे उपद्रव तास ॥ दुःखवास ॥ ८ ॥ मा० ॥ शेठ शेठाणी एहवां ॥ मा० ॥ देखी लहे वैराग्य ॥ महाजाग्य ॥ मा० ॥ सारथीने कहे ए किशुं ॥ मा० ॥ नाटक अजिनव लाग ॥ अथाग ॥ ए ॥ मा० ॥ सारथी कहे नाटक नहीं ॥ मा० ॥ ए जरापीमित शेठ ॥ दुःख वेठ ॥ मा० ॥ कुमर कहे जरा कोण छे ॥ मा० ॥ दुःख देवे एम नेठ ॥ जली पेठ ॥ १० ॥ मा० ॥ ते कहे नव जीरण करे ॥ मा० ॥ लोकने अहितनी कार ॥ कुमार ॥ मा० ॥ कहे केम तात उवेखतां ॥ मा० ॥ सारथी कहे चित्त धार ॥ तिवार ॥ ११ ॥ मा० ॥ तातने आयत ए नहीं ॥ मा० ॥ कुमर कहे तव एम ॥ धरी प्रेम ॥ मा० ॥ लावो खड्ग हणुं अमे ॥ मा० ॥ नवि आयत होये केम ॥ जुर्ज नेम ॥ १२ ॥ मा० ॥ कहे रे पापिणी तुं जरा ॥ मा० ॥ मूक तुं एहनो ख्याल ॥ संजाल ॥ मा० ॥ तुं जाते अवला अछे ॥ मा० ॥ जो माहारी करवाल ॥ विकराल ॥ १३ ॥ मा० ॥ सन्मुख जव्यो तेहने ॥ मा० ॥ लोक मळ्यां वहु ताम ॥ शुं आम ॥ मा० ॥ सारथी कहे अवला नहीं ॥ मा० ॥ उदारिक परिणाम ॥ ए ठाम ॥ १४ ॥ मा० ॥ कालवशे ए निपजे ॥ मा० ॥ उंदंजो इयो तास ॥ विमास ॥ मा० ॥ सहु साधारण एह छे ॥ मा० ॥ कुमर कहे साची जाष ॥ के नास ॥ १५ ॥ मा० ॥ पुरिजन कहे साचुं कहे ॥ मा० ॥ तव कहे कुमर विचार ॥ धरी प्यार ॥ मा० ॥ खेद न करशो को तुमे ॥ मा० ॥

एह करे अपकार ॥ जनवार ॥ १६ ॥ मा० ॥ एहथी पराजव उपजे ॥ मा० ॥ हसवा जोग्य ते थाय ॥ सुख जाय ॥ मा० ॥ धर्मरसायण झांझीने ॥ मा० ॥ कोण बीजो सुखदाय ॥ कहो न्याय ॥ १७ ॥ मा० ॥ सांजली सहु कहे इणी परे ॥ मा० ॥ अहो अहो कुमर विवेक ॥ जग एक ॥ मा० ॥ अहो परमार्थ दरशीपणुं ॥ मा० ॥ अहो अहो धर्मनी टेक ॥ अति रेक ॥ १८ ॥ मा० ॥ नयरी लोकशुं सारथी ॥ मा० ॥ लह्या संवेग महंत ॥ कहे तंत ॥ मा० ॥ अति अद्भुत तुमे कह्युं ॥ मा० ॥ पण अम्ह मोह अनंत ॥ नहीं चंति ॥ १९ ॥ मा० ॥ जव अनादि अज्यासथी ॥ मा० ॥ मोहवासना न तजाय ॥ महाराय ॥ मा० ॥ कुमर कहे जे तजे नहीं ॥ मा० ॥ पराजव करे जराय ॥ जमराय ॥ २० ॥ मा० ॥ इण समे दीठुं एहवुं ॥ मा० ॥ दरिद्र पुरुष मृत कोय ॥ खाटे सोय ॥ मा० ॥ वस्त्र जीरण ढंक्युं तिणे ॥ मा० ॥ दीन पुरुषे लीउं जोय ॥ बहु रोय ॥ २१ ॥ मा० ॥ स्त्रीजन दुःखिणी रोवती ॥ मा० ॥ कुमर कहे तव देखी ॥ सहु पेखी ॥ मा० ॥ चिंता मोहवासना तणी ॥ मा० ॥ रहे वाह्यो सुविशेष ॥ शुं एष ॥ २२ ॥ मा० ॥ ए नाटक अचरिज जशुं ॥ मा० ॥ सारथी कहे अवदात ॥ विख्यात ॥ मा० ॥ मन चिंते ते सारथी ॥ मा० ॥ संवेग कारण वात ॥ आयात ॥ २३ ॥ मा० ॥ अहो संसार असारता ॥ मा० ॥ प्रतिबोधन निमित्त ॥ धरी हित ॥ मा० ॥ अणजाण्या परे पूछतो ॥ मा० ॥ जाखुं यथार्थ रीति ॥ लही प्रीति ॥ २४ ॥ मा० ॥ कुमर सुणो कहे सारथी ॥ मा० ॥ मृत्युए ग्रह्यो आज ॥ करे ताज ॥ मा० ॥ बंधु पण राखे नहीं ॥ मा० ॥ कुमर कहे तो शुं काज ॥ कहो राज ॥ २५ ॥ मा० ॥ किम राखे पुरिमां पिता ॥ कहे सारथी नहीं एह ॥ कोइ देह ॥ मा० ॥ मारी केम शकीये प्रजु ॥ मा० ॥ खड्ग लावो कहे तेह ॥ हणुं जेह ॥ २६ ॥ मा० ॥ रे रे मृत्यु उज्जो रहे ॥ मा० ॥ जुऊ करे मुऊ संग ॥ धरी रंग ॥ मा० ॥ एम कही साहामो दोम्यो ॥ मा० ॥ सारथी कहे तव चंग ॥ एकंग ॥ २७ ॥ मा० ॥ हणवा योग्य न एह छे ॥ मा० ॥ साधारण सहु जीव ॥ अतीव ॥ मा० ॥ आयु करमने वश सवे ॥ मा० ॥ कुमर कहे तव खीव ॥ अक्लीव ॥ २८ ॥ मा० ॥ नयरी जन पूछे कहे ॥ मा० ॥ सत्य प्रजु छे एह ॥ न संदेह ॥ मा० ॥ कुमर कहे तो सारथी ॥ मा० ॥ बां-

धंव ठंडे केह ॥ तस देह ॥ २९ ॥ मा० ॥ सारथी कहे जीव तो गयो ॥ मा० ॥ रह्युं कलेवर तास ॥ दुरवास ॥ मा० ॥ गुण संचारी तेहना ॥ मा० ॥ रोवे सहु निःश्वास ॥ दुःखराश ॥ ३० ॥ मा० ॥ नवमे खंमे ए कही ॥ मा० ॥ रुमी पंचमी ढाल ॥ रसाल ॥ मा० ॥ पद्मविजय ए रासमां ॥ मा० ॥ सुणतां मंगलमाल ॥ विशाल ॥ ३१ ॥ मा० ॥ सर्व गाथा ॥ १७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अति वल्लन्न जो एह छे, केम नवि जाये केमी; कुमर कहे जाये एक किम, ते सहु नवि गयो तेमी ॥ १ ॥ सारथी कहे सुण साहिवा, कही न जाये कांय; कर्म विचित्र कथा कही, जीव विचित्र गति जाय ॥ २ ॥ कुमर कहे जो एम कहो, अहो हवे किश्यो उपाय; सारथी कहे तुमे सांजलो, जोगी गम्य जणाय ॥ ३ ॥ अमे न जाणुं ए अरथ, समरादित्य कहे सार; कहो लोको ए किम अछे, सहु कहे कहे श्रीकार ॥ ४ ॥ तव कहे कुमर ततक्षणे, ए जो एम अधिकार; सहु ए नाटकथी सख्युं, वारु हृदय विचार ॥ ५ ॥ सांजली सहु संवेगीआ, पाम्या केइ प्रमाण; समकित केइ शिवपंथने, जाणी कुंअर जाण ॥ ६ ॥ माहण देवसेन मुखे, सांजल्यो व्यतिकर सर्व; अवनीपति वीहीनो अति, गयो ते चित्तथी गर्व ॥ ७ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ सखी चैत्रज महीने चाल्या ॥ ए देशी ॥

॥ तेमवा मोकले हवे राय, वहेला घर आवो जाय, सुणी कुमर आव्या निज ठाय हो राज ॥ १ ॥ मानो वचन हमारुं ॥ ए आंकणी ॥ आवी वेसे रायनी पास, नृप जाखे तव सुविलास, मागवुं कांय तुऊ सकाश हो राज ॥ २ ॥ मा० ॥ तुऊ मानवुं पमशे तेह, कहे कुंअर तव ससनेह, गुरुवयण लोपे कुण रेह हो राज ॥ ३ ॥ मा० ॥ नृप कहे तुऊ छे परतीत, पण तुऊ उपर घणी प्रीति, तिणे कहीये ए एणी रीति हो राज ॥ ४ ॥ मा० ॥ जाउं कहेशुं अवसर पामी, उठ्या कुंअर नृप शिर नामी, निज उचित करे नवि खामी हो राज ॥ ५ ॥ मा० ॥ वेठा मित्रशुं वली एक दिन्न, करे धर्मकथा धन्य धन्य, प्रतिहार आवी कहे कन्न हो राज ॥ ६ ॥ मा० ॥ तुम माउल पासथी आया, कोइ कामे म

हंत सोहाया, तिणे तुम तेडे नरराया हो राज ॥ ७ ॥ मा० ॥ सुण मि-त्रशुं कुमर ते आया, प्रणमी बेठा निज ठाया, नृप बोले सांजलो जा-या हो राज ॥ ८ ॥ मा० ॥ खङ्गसेन माउल तुऊ जेह, कहेवरावे तु-मने तेह, दोय कन्या मुऊ रूप रेह हो राज ॥ ए ॥ मा० ॥ विभ्रमवती विभ्रम आणे, कामलता कामी करे प्राणे, जीवथी अधिक ते वखाणे हो राज ॥ १० ॥ मा० ॥ स्वयंवरा ते दोय आइ, वरतो सहुनी अनुजाइ, परणो तुमे चित्तमां लाइ हो राज ॥ ११ ॥ मा० ॥ तिणे लेहेशुं अमे संतोष, ते नृपने मोदनो पोष, गुरुवयणे तुम नहीं दोष हो राज ॥ १२॥ मा० ॥ कन्या पण लहे आणंद, एम जाख्युं जाम नरींद, चिंते कुमर सुखकंद हो राज ॥ १३ ॥ मा० ॥ पूर्वे ताते पण हुं जाणुं, जाख्युं ते ए-हज टाणुं, तात बोले बे अति शाणुं हो राज ॥ १४ ॥ मा० ॥ गुरुवयण ते किम लोपाय, गुरुवयणथी मंगल थाय, तव बोले एम नरराय हो राज ॥ १५ ॥ मा० ॥ नवि कीजे कांय विचार, प्रार्थना पण एह उदार, करवी अवश्य निरधार हो राज ॥ १६ ॥ मा० ॥ कुमरे तेह मानी वात, नृप हरख्यो साते धात, कहे उचित ए तुऊ अवदात हो राज ॥ १७ ॥ मा० ॥ तुऊ धर्म तणो पक्षपात, पण लोक मारग विख्यात, अनुसरतां होये सुखशात हो राज ॥ १८ ॥ मा० ॥ उपजे वली जब संतान, वय अतिक्रमे जाम जुवान, तव सेववुं व्रत असमान हो राज ॥ १ए ॥ मा० ॥ कुंअर कहे रुडुं थाशे, इण अवसर घरने पासे, सिद्धार्थ पुरोहित जाषे हो राज ॥ २० ॥ मा० ॥ एहमां नहीं कांय संदेह, गज गुल गुल शब्द करेह, वांजे मंगल तूर सनेह हो राज ॥ २१ ॥ मा० ॥ बंदि बोले जय जय वाणी, अनुकूल शकुन सहु जाणी, हरख्यो नरपति गुणखाणी हो राज ॥ ॥ २२ ॥ मा० ॥ बोल्यो कालनिवेदी ताम, मध्याह्न समय थयो आम, सूरय आव्यो मध्य ठाम हो राज ॥ २३ ॥ मा० ॥ केइ प्राणी करता स्नान, केइ देवपूजा केइ दान, गुरुशुश्रूषा सनमान हो राज ॥ २४ ॥ मा० ॥ केइ ध्यान मूकी अणगार, करवा जनने उपगार, गया गोचरीने अधिकार हो राज ॥ २५ ॥ मा० ॥ सुणी कुमरने आणा आपे, करो क-रणी उचित ते आपे, प्रणमे कुमर सुख व्यापे हो राज ॥ २६ ॥ मा० ॥ राये बहु दीधां दान, नयरी शोजा असमान, सुरलोक सरीसो थान हो

राज ॥ २७ ॥ मा० ॥ देवतानी पूजाउं कीधी, नाचे पगे पगे पात्र प्रसिद्धि, अं-तेउरी हरखमां गिद्धि हो राज ॥ २८ ॥ मा० ॥ मंगल वाजां बहु वाजे, नृप तेडे गणकसमाजे, पूछे लगन विवाहने काजे हो राज ॥ २९ ॥ मा० ॥ कहे पंचमी आज प्रधान, नहीं अवर को एह समान, वधावी लीये राजान हो राज ॥ ३० ॥ मा० ॥ खंड नवमे छठी ढाल, सुणतां होय मंगलमाल, कहे उत्तमविजयनो वाल हो राज ॥ ३१ ॥ मा० ॥ ॥ सर्व गाथा ॥ २२१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आणा करी अमात्यने, सामग्री करो सज्ज; तहत्ति करी ते पण तु-रत, करता तिमहीज कज्ज ॥ १ ॥ सुजटने आपे सामटां, आयुध अति अवल्ल; अंतेउरीने आपता, नानां आजरण नवल्ल ॥ २ ॥ रथवर शोजा रुअडी, गाजे वली गजराज; अंबाडी अंबर अडी, सिंदूरादिक साज ॥ ३ ॥ तुरंग तैयार कस्या अति, करणी उचित करेय; तोरण बांध्यां मणि तणां, ध्वजपट कनक धरेय ॥ ४ ॥ सयल विधि कस्यो सहजमां, करी पूजा कुलदेव; प्रणमी मावित्र पाउले, मित्र मानी स्वयमेव ॥ ५ ॥ रथवर बेठा कुंअरजी, साथे मित्रनो साथ; प्रगट परणवा चालीउं, समरादित्य सनाथ ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ कोडी सोनइये काशिदी ॥ मारा वाल्हा जीरे ॥
करनारो नहीं कोय, जइने केजो ॥ मा० ॥ ए देशी ॥

॥ परणवा वरघोडे चढ्या ॥ वरराजा जीरे ॥ नाचे पगे पगे पात्र, जोवा चालो ॥ वरराजा जीरे ॥ मंगल तूर वजावते ॥ वर० ॥ लोक मल्यां ते अमात्र ॥ १ ॥ जो० ॥ ढोल निशान जूंगल तणा ॥ वर० ॥ शब्द ते थाय सुरीत ॥ जो० ॥ अंतेउरी रथमां रही ॥ वर० ॥ गावे मंगल गीत ॥ २ ॥ जो० ॥ नयरी लोक आणंदीयो ॥ वर० ॥ रायने हर्ष न माय ॥ ॥ जो० ॥ संवेगे जावित मति ॥ वर० ॥ वरमन अचरिज थाय ॥ ३ ॥ जो० ॥ जवस्वरूप चित्त चिंतवे ॥ वर० ॥ लोक करे परशंस ॥ जो० ॥ विवाह-जवने आवीआ ॥ वर० ॥ उपमा उत्तम वंश ॥ ४ ॥ जो० ॥ माहिरा मांहि आवीआ ॥ वर० ॥ दीठी कन्या दोय ॥ जो० ॥ गजदंतमयी जिम पूतली ॥

वर० ॥ विभ्रमवती तिहां जोय ॥ ५ ॥ जो० ॥ वर आजरणे देहनी ॥ वर० ॥ कुंकुम विलेपन होय ॥ जो० ॥ सुललित अंग सोहामणां ॥ वर० ॥ शोजा जोवे सहु कोय ॥ ६ ॥ जो० ॥ कामलता वली शोजती ॥ वर० ॥ इंद्रनीलमणि वान ॥ जो० ॥ हरि चंदन विलेपीयुं ॥ ॥ वर० ॥ राजे अति असमान ॥ ७ ॥ जो० ॥ कुमर देखी मन चिंतवे ॥ वर० ॥ अहो सुंदर आकार ॥ जो० ॥ अहो लावण्य निकलंकता ॥ ॥ वर० ॥ अहो अहो विनय प्रकार ॥ ८ ॥ जो० ॥ मूर्त्ति शांति घणी अछे ॥ वर० ॥ जाणुं होशे जोग्य ॥ जो० ॥ करी साखी अग्नि तणी ॥ ॥ वर० ॥ करे कंसार आरोग ॥ ए ॥ जो० ॥ पाणिग्रहण एम निपन्युं ॥ ॥ वर० ॥ फेरा फरीआ ताम ॥ जो० ॥ उचित दान सवि दीधलां ॥ ॥ वर० ॥ कीधां सघलां काम ॥ १० ॥ जो० ॥ इण अवसर रवि आथम्यो ॥ वर० ॥ उग्यो नहंगण चंद ॥ जो० ॥ वासजुवन सजीयुं तिहां ॥ ॥ वर० ॥ मणिदीपकनां वृंद ॥ ११ ॥ जो० ॥ कुसुमसज्या तिहां पाथरी ॥ वर० ॥ लटके चंपक दाम ॥ जो० ॥ जमरावली वली रणऊणे ॥ ॥ वर० ॥ परूवासे गंधवाम ॥ १२ ॥ जो० ॥ दोय वधू बेठी जिहां ॥ ॥ वर० ॥ आव्या तिहां कुमार ॥ जो० ॥ मित्र अशोकादिके करी ॥ ॥ वर० ॥ परवरीउ परिवार ॥ १३ ॥ जो० ॥ उजी थइ ते दोय वधू ॥ ॥ वर० ॥ कुमर सज्याए निषपन ॥ जो० ॥ उचित थानक बेठां सहु ॥ ॥ वर० ॥ मित्र नारी बहु पन्न ॥ १४ ॥ जो० ॥ कुंदलता प्रमुखा जिके ॥ वर० ॥ सखीउ बेठी पास ॥ जो० ॥ विभ्रमवतीनी कुंदलता ॥ वर० ॥ कामलता मानिनी खास ॥ १५ ॥ जो० ॥ कुंदलता लावी दीये ॥ वर० ॥ तंबोल कुसुमनी माल ॥ जो० ॥ विभ्रमवतीए मोकली ॥ वर० ॥ ल्यो तुमे कुमर रसाल ॥ १६ ॥ जो० ॥ निज करथी गुंथी अछे ॥ वर० ॥ धरती राग अत्यंत ॥ जो० ॥ मानिनी माधवी कुसुमनी ॥ वर० ॥ माला मन मोहंत ॥ १७ ॥ जो० ॥ कुमरने आपी एम कहे ॥ वर० ॥ करो सफल अनुराग ॥ जो० ॥ कुमर कहे किम राग छे ॥ वर० ॥ तव सा कहे लही लाग ॥ १८ ॥ जो० ॥ हरष विषादे बोलती ॥ वर० ॥ कुमर गंजीर सुण वाणी ॥ जो० ॥ नाम तुमारुं सांजल्युं ॥ वर० ॥ ते दिनथी तुम ऊाण ॥ १ए ॥ जो० ॥ थाये दिन दिन दूबली ॥ वर० ॥ करे नित्य तु-

मची वात ॥ जो० ॥ एहवी वात सुणी हवे ॥ वर० ॥ चिंतवे कन्या-तात ॥ २० ॥ जो० ॥ जुगतो राग ए जाणीने ॥ वर० ॥ मोकली तुमने पाणि ॥ जो० ॥ सफल मनोरथ निपनो ॥ वर० ॥ आव्युं सघलुं ठाण ॥ २१ ॥ जो० ॥ कुमर विचारे चित्तमां ॥ वर० ॥ ठे मुऊ उपरे राग ॥ ॥ जो० ॥ रागी कहीये ते करे ॥ वर० ॥ कार्य अकार्य विजाग ॥ २२ ॥ ॥ जो० ॥ धर्मदेशना कीजीये ॥ वर० ॥ अवसर हमणां एह ॥ जो० ॥ एम समरादित्य चिंतवी ॥ वर० ॥ कहे जो अम पर नेह ॥ २३ ॥ जो० ॥ तो अहिते वरतावतां ॥ वर० ॥ किम लहीये अनुराग ॥ जो० ॥ मा-निनी कहे एम किम कहो ॥ वर० ॥ कुमर कहे सुणो वाग ॥ २४ ॥ जो० ॥ सातमी नवमा खंरुमां ॥ वर० ॥ समरादित्यने रास ॥ जो० ॥ पद्मविजय सोहामणी ॥ वर० ॥ ढाल अधिक उल्लास ॥ २५ ॥ ॥ जो० ॥ सर्व गाथा ॥ २५२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुणो दृष्टांत सोहामणो, कामरुदेश कहंत; नामे मदन पुरवर नयर, प्रद्युम्न नृप पजणंत ॥ १ ॥ रति राणी रति रूपथी, विषयनुं सुख विलसंत; नृप रमवाने नीकल्यो, रहवाडी सुरमंत ॥ २ ॥ राणी तत्र गोंखे रही, राजमार्ग निरखंत ; विमलमती सञ्चवाहसुत, शुजंकर नाम सोहंत ॥ ॥ ३ ॥ जोवन वय तस जाणीने, उपनो अति अविवेक; अवलोके आ-दर करी, अजिलाषा अतिरेक ॥ ४ ॥ तस दृष्टि थइ तेह पण, गिरि-धर थयो गमार; चित्त जाण ए अति चतुर, राणी हृदय विचार ॥ ५ ॥ एक देशे उजो रह्यो, जाणी जालिणी जाम; दासीने देखावती, आण तुं एहने आम ॥ ६ ॥ कामी हृदय होय अति कठिन, लेइ आवी ते ल्हार; पल्यंके बेठो पढे, वास गहे तिणी वार ॥ ७ ॥ बीडुं दीये तंबोलनुं, अर्द्ध ग्रह्युं इणे एह; सुणीउं शब्द इणी समे, कलयल वंदि करेह ॥ ८ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ आज गइती हुं समवसरणमां ॥ ए देशी ॥

॥ राणी विचारे ए नृपति आव्यो, हवे नहीं अन्य उपाय रे ॥ घाल्यो बाहर जवाने थानक, आव्यो हवे नरराय रे ॥ १ ॥ शील पालो जवि जाव धरीने, शीले सद्गति होय रे ॥ शील विराधननां फल एहवां, इह

नवमां पण जोय रे ॥ २ ॥ शी० ॥ राय कहे वारक नर तेडो, शौच करेवा जावुं रे ॥ शुनंकर सुणी चित्त विचारे, मरण अवश्य इहां पावुं रे ॥३॥ शी०॥ मरण बीक लही पड्यो संथासे, महा डुर्गंध अंधकारो रे ॥ विष्टाकूप कृमिकुले व्यापित, पमीयो तेहमां किनारो रे ॥ ४ ॥ शी० ॥ अशुचिशरीरे कृमिए खाधो, दृष्टि प्रसार रोकाणो रे ॥ अंग संकोच्युं वेदन पाम्यो, आकुल होय तिण टाणो रे ॥ ५ ॥ शी० ॥ अंगरक्षक नृपने तिहां जोयुं, आव्यो नृप तिण ठायो रे ॥ शरीरस्थिति करीने फरी आयो, राणीशुं काल गमायो रे ॥ ६ ॥ ॥ शी० ॥ सांजे राय सनामां पोहोतो, राणी तव जोवरावे रे ॥ नवि दीठो तव कहे एम राणी, कहो नाइउ किहां जावे रे ॥ ७ ॥ शी० ॥ दासी कहे ए मरणना नयथी, पमीयो कूप मजारो रे ॥ चिंतातीत थइ तव राणी, मृत जाएथो निरधारो रे ॥ ८ ॥ शी० ॥ तेह शुनंकर डुःखथी पीड्यो, नवितव्यताने जोगे रे ॥ आयुबले कोइ काल गमावे, अशुचि रस पान जोगे रे ॥ ए ॥ शी० ॥ विष्टाकूप शोधनने काजे, उघाड्युं ते द्वार रे ॥ अशुचि निर्गम मारगे नीकल्यो, राति समय तिणी वार रे ॥ ॥ १० ॥ शी० ॥ देहछबी विणठीने नाठा, नख ने केश विरूप रे ॥ किमहीक अंग पखाली निज घर, पोहोतो कष्ट सरूप रे ॥ ११ ॥ शी० ॥ बीहीनो परिजन नयथी कोण ए, तेह कहे मत बीहो रे ॥ शुनंकर हुं पिता तव पूछे, विमलमती मति लीहो रे ॥ १२ ॥ शी० ॥ शुं तें कीधुं जिणे एम हुउ, तव कहे पुत्र विचारो रे ॥ मरण लह्यो मत जाणो पिताजी, तेहज हुं अवधारो रे ॥ १३ ॥ शी० ॥ पण जे करणीथी एम हुउ, ते संनलावुं अनाग रे ॥ करी एकांतने नाख्युं सघलुं, सांनली तात विरागो रे ॥ १४ ॥ शी० ॥ वातरहित घरमां तस थापे, सहस्रपाकादिक तेले रे ॥ परिमर्दन करीने तस ताते, मूल स्वरूप करी मेले रे ॥ १५ ॥ ॥ शी० ॥ एक दिन देवतायतने जातां, रति राणीए दीठो रे ॥ पूर्वनी परे जालिणी मूकी, तेमावे कही मीठो रे ॥ १६ ॥ शी० ॥ मोहदोषे करी ते पण आव्यो, थयुं वली पूरव रीते रे ॥ कूपथी नीकल्यो वली सजा हुउ, केइक काल व्यतीते रे ॥ १७ ॥ शी० ॥ वली एणी रीते कष्टुं फरी जीव्यो, एम बहुवार गयो आव्यो रे ॥ ए दृष्टांत कह्यो हवे पूछुं, कहो चित्तमां जो नाव्यो रे ॥ १८ ॥ शी० ॥ रतिने राग हतो के नाहीं, मा-

निनी कहे परमार्थे रे ॥ राग नहीं वली बुद्धिरहित सा, कुमर कहे तस
अर्थे रे ॥ १९ ॥ शी० ॥ राग नहीं मुझ उपरे एहनो, परमार्थे बुद्धि-
हीन रे ॥ ईर्ष्याकारण चपल स्वभावे, भोग वांछे ए दीन रे ॥ २० ॥ शी० ॥
वस्तुतत्त्व न समझे कोइ, दुर्लभ नर अवतार रे ॥ भवसमुद्रमां पामी
न करे, धर्म ते मूढ गमार रे ॥ २१ ॥ शी० ॥ संहरे त्रण भुवनने मृत्यु,
सहेजे क्रूर स्वभाव रे ॥ न विचारे एहने वश आपण, किम धरे विषय
विभाव रे ॥ २२ ॥ शी० ॥ अहिते वरतावे ते कारण, मुझ उपर नहीं
राग रे ॥ एम सांभली वहूउ दोय बूझी, लहे संवेग विराग रे ॥ २३ ॥
॥ शी० ॥ शुद्ध भावनाए कर्म खप्यां बहु, पामी देश चारित्त रे ॥ श्रद्धा
अतिशये कुमरना पदजुग, प्रणमे अति सुविनीत रे ॥ २४ ॥ शी० ॥
विभ्रमवती कहे मोह गयो अम, उपनुं सम्यग् नाण रे ॥ विषयराग ट-
लीउ भवभयथी, पीयु तुम वचन प्रमाण रे ॥ २५ ॥ शी० ॥ कामलता
पण एमहीज भाखे, तव समरादित्य भाषे रे ॥ भले तुमे मानवनो भव
पाम्यां, कुशल बुद्धि जिणे पासे रे ॥ २६ ॥ शी० ॥ तिणे तुम विषय-
त्याग घटे करवो, मोहजनित मोहहेतु रे ॥ मोहस्वरूप मोहानुबंधी,
संक्लेश तिम समवेतु रे ॥ २७ ॥ शी० ॥ संक्लेशजनित ने संक्लेशहेतु,
तिम संक्लेश अनुबंधे रे ॥ जावजीव डांभो मोह चेष्टा, कुशल बुद्धिने
संधे रे ॥ २८ ॥ शी० ॥ इत्यादिक वयणां सुणी श्रवणे, बोले वधूटी दोय
रे ॥ जावजीव पच्चख्युं अमे अब्रह्म, हरख्यो कुमर ते सोय रे ॥ २९ ॥
शी० ॥ नवमे खंडे ढाल अनोपम, आठमी अद्भुत भाखी रे ॥ पद्म-
विजय कहे धन्य ए दंपती, जिणे एहवी मति राखी रे ॥ ३० ॥ शी० ॥ २९० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरख्यो कुमर हैया थकी, कहे अहो हलुआं कर्म; धन्यता उप-
शम धीरता, धारक अहो पतिधर्म ॥ १ ॥ इह लोकनी ईहा नहीं,
अहो गंभीर अपार; एम चिंती आखे इश्युं, साधु कह्युं सुखकार ॥ २ ॥ में
पण जावजीव सुणो, चोथुं व्रत कह्युं चित्त; अहो अहो शोभन आदर्युं,
मुखथी कहे सहु मित्त ॥ ३ ॥ कुसुमवृष्टि देवे करी, उत्तम अध्यवसाय;
चिंते कुमर विचार एम, शुभ परिणाम सुहाय ॥ ४ ॥ तदावरण क्षये
तेहने, अवधिज्ञान उप्पन्न; त्रिहुं काल जाणे तदा, प्रगट संवेग प्रपन्न

॥ ५ ॥ व्यतिकर सुणी पृथवीपति, प्रतिहारने पास; सांजली राणी पण सवे, वलतो करे विखास ॥ ६ ॥ अणघटतुं अवनीपति, कहे काम ए कीध; राणी कहे रोती थकी, लाहविषय नवि लीध ॥ ७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ पूछे प्यारीने धन्नो प्रेमशुं हो ॥ ए देशी ॥

॥ इण समे आवी देवांगना हो ॥ सुणो नृपति॥ हैये विराजे हार॥ सहु मन मोहे जिहो राज ॥ मुकुट कुंमल कटके करी हो ॥ सु० ॥ कटिमेखला खलकार ॥ १ ॥ सहु० ॥ देवडुष्यथी शोहती हो ॥ सु० ॥ मणि नेउर रणकार ॥ स० ॥ बावनाचंदन लींपीयुं हो ॥ सु० ॥ सुरतरु कुसुमने धारी ॥ २ ॥ स० ॥ मणि दीवा परे दीपती हो ॥ सु० ॥ सोमवदन अत्यंत ॥ स० ॥ देखी विस्मय पामीआ हो ॥ सु० ॥ हरष विषादे नमंत ॥ ३ ॥ स० ॥ बोले ताम देवांगना हो ॥ सु० ॥ म करो चित्त विषाद ॥ ॥ स० ॥ कुमरे घणुं जुगतुं कखुं हो ॥ सु० ॥ टाव्यो जव विखवाद ॥ ॥ ४ ॥ स० ॥ मोक्षमार्ग इणे साधीयो हो ॥ सु० ॥ अमृत ग्रह्युं तज्युं जेर ॥ स० ॥ आपदा दूरे करी इणे हो ॥ सु० ॥ पुरुषातन इणी पेर ॥ ॥ ५ ॥ स० ॥ क्षुद्रता टाली उदारता हो ॥ सु० ॥ कीधी अंगीकार ॥ स० ॥ तिणे कृतारथ एह छे हो ॥ सु० ॥ धन्य तुम कुल अवतार ॥ ६ ॥ स० ॥ राणी तुमे पण ढोमी द्यो हो ॥ सु० ॥ नहीं शोचवा योग्य जेह ॥ स० ॥ शाश्वत सुख इणे आदखुं हो ॥ सु० ॥ धन्य तुज कुख जिहां एह ॥ ७ ॥ स० ॥ बहु जनने शिवसुख तणुं हो ॥ सु० ॥ कारण तुज सुत नेम ॥ स० ॥ तिणे वेखास दूरे करो हो ॥ सु० ॥ नरपति कहे तव एम ॥ ८ ॥ स० ॥ कोण तुमे छो ते कहो हो ॥ सु० ॥ देवी कहे सुण वाणी ॥ स० ॥ खड्ग प्रहरणे उलखी हो ॥ सु० ॥ सुदरिसणा अनिहाण ॥ ९ ॥ स० ॥ तुज सुतगुणअनुरागिणी हो ॥ सु० ॥ रहुं तुज जवन मजार ॥ स० ॥ राय राणी सुणी हरखीआं हो ॥ सु० ॥ धन्य गुणवंत कुमार ॥ १० ॥ स० ॥ देवता पण रागी होय हो ॥ सु० ॥ देवता बोले ताम ॥ स० ॥ कुमर प्रजाव घणो अछे हो ॥ सु० ॥ चालो जइये ते ठाम ॥ ११ ॥ स० ॥ धर्मपिंम निहालीये हो ॥ सु० ॥ कहे ते करीये काम ॥ स० ॥ देवी प्रणमीने चालीयां हो ॥ सु० ॥ कुमर समीपे जाम ॥ १२ ॥ स० ॥ अवधे कुमरे जा-

णीयुं हो ॥ सु० ॥ हरषे उन्ना थाय ॥ स० ॥ प्रणम्या माविन्न पाउले हो ॥ सु० ॥ बेठा आसण ठाय ॥ १३ ॥ स० ॥ प्रणमी पूछे तातने हो ॥ सु० ॥ केम आव्या तुमे एथ ॥ स० ॥ अणघटतुं ए कीधलुं हो ॥ सु० ॥ मुक नवि तेड्यो तेथ ॥ १४ ॥ स० ॥ नृप कहे देवीए नाखीयुं हो ॥ सु० ॥ तुम वृत्तांत अशेष ॥ स० ॥ राणी कहे गुणवंत तुं हो ॥ सु० ॥ किम दीजे आदेश ॥ १५ ॥ स० ॥ कुमर कहे तुमे गुरुजना हो ॥ सु० ॥ तुम आणा करुं जेह ॥ स० ॥ गुणवंतपणुं मुज तो रहे हो ॥ सु० ॥ राय कहे सुणो एह ॥ १६ ॥ स० ॥ डुःकर काम तुमे कस्युं हो ॥ सु० ॥ समरादित्य कहे वाणी ॥ स० ॥ नहीं डुःकर इहां सांजलो हो ॥ सु० ॥ च्यार पुरुषतुं कहाण ॥ १७ ॥ स० ॥ केइक चार पुरुष हता हो ॥ सु० ॥ ऊव्य इछक तिहां दोय ॥ स० ॥ दोय विषयना लोलुपी हो ॥ सु० ॥ मार्ग पडिवज्या सोय ॥ १८ ॥ स० ॥ कोइक स्थानक पेखीउं हो ॥ सु० ॥ मणिरत्न कनकनी राशि ॥ स० ॥ नारी दोय रंजा समी हो ॥ सु० ॥ करती अति सुविलास ॥ १९ ॥ स० ॥ जे पामवुं ते पामीआ हो ॥ सु० ॥ सन्मुख चाल्या ताम ॥ स० ॥ वाणी थइ इण अवसरे हो ॥ सु० ॥ मा साहस करो आम ॥ २० ॥ स० ॥ मस्तक उपरे पेखजो हो ॥ सु० ॥ पर्वत पमशे एह ॥ स० ॥ उंचुं जोतां देखीउं हो ॥ सु० ॥ रौद्रदर्शनथी जेह ॥ २१ ॥ स० ॥ व्यापी रह्यो आकाशने हो ॥ सु० ॥ वारी न शकीये तेह ॥ स० ॥ ते पण पमतो पेखीयो हो ॥ सु० ॥ तास उपाय न रेह ॥ ॥ २२ ॥ स० ॥ इण समे वाणी सुणी तिहां हो ॥ सु० ॥ जे इछे अछकाम ॥ स० ॥ मरण लहे ते इणी परे हो ॥ सु० ॥ वली वली लहे डुःख ठाम ॥ २३ ॥ स० ॥ जेह निरीह ए दोयथी हो ॥ सु० ॥ नावे असारता तास ॥ स० ॥ तो क्रमे क्रमे दूरे खसे हो ॥ सु० ॥ काले उपद्रव नाश ॥ २४ ॥ स० ॥ तव एकेक ते चिंतवे हो ॥ सु० ॥ जे थानार ते थाय ॥ स० ॥ पण ए तो नवि ठोमीये हो ॥ सु० ॥ शीघ्र ते लेवा जाय ॥ २५ ॥ स० ॥ बीजा पण मन चिंतवे हो ॥ सु० ॥ अर्थ विषयशुं न काज ॥ स० ॥ जेहना कटुक विपाक छे हो ॥ सु० ॥ एम करी करता ताज ॥ ॥ २६ ॥ स० ॥ डुःकर कार केहा कहो हो ॥ सु० ॥ तात विचारो चित्त ॥ स० ॥ राय कहे जे प्रवृत्तिआ हो ॥ सु० ॥ लेवा विषय ने वित्त ॥

॥ २७ ॥ स० ॥ डुःकरकारी ते घणा हो ॥ सु० ॥ न विचारे जे विराग ॥ स० ॥ बीजानुं डुःकर किशुं हो ॥ सु० ॥ जुक्त करे जे ताग ॥ २८ ॥ ॥ स० ॥ नवमी नवमा खंममां हो ॥ सु० ॥ समरादित्यने रास ॥ स० ॥ पद्मविजय सोहामणी हो ॥ सु० ॥ ढाल अधिक उल्लास ॥ २ए ॥ स० ॥ ३२७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पर्वत पमतो पेखीयें, ते आयु असराल; सुर असुरा नहीं आसरो, जीषण अति जयाल ॥ १ ॥ असमंजस कारक अति, विष सम जास विपाक; विषयनो त्याग वखाणीयें, अमृत सम आपाक ॥ २ ॥ क्लेश रहित कुंअर कहे, सुखथी ए सेवाय; अर्थत्याग पण इणी परे, शुं डुःकर समजाय ॥ ३ ॥ राय कहे रुडुं कह्युं, मोहमां पण मुंजाय; कुमर पिताने तव कहे, डुरदंत ए डुःखदाय ॥ ४ ॥ मरण देखे निज मस्तके, व्यापे जरा विशेष; वीर्य गले वारु परे, दीये वली गुरु उपदेश ॥ ५ ॥ दोष न आणे दृष्टिमां, करे अकारय काम; जिनवर देखाड्यो जिके, न धरे धर्मनुं नाम ॥ ६ ॥ एम सांजली अवनीपति, जाणे धरी शुज जाव; जेम कह्युं ते तिमज बे, देवी पण इण दाव ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ माखीना गीतनी ॥ साहिब सांजल विनति ॥ ए देशी ॥

॥ माय कहे वत्स सांजलो, अम वमपण बे प्राय ॥ कुंअरजी ॥ तुम उपदेश सुण्यो वली, चिंता नहीं तिणे कांय ॥ कुं० ॥ १ ॥ मा० ॥ पण उदवेग ए उपजे, बाला यौवन वेष ॥ कुं० ॥ मनवंबित तस नवि थयुं, तिणे उदवेग विशेष ॥ कुं० ॥ २ ॥ मा० ॥ कुंअर कहे न करो तुमे, मन उदवेग लगार ॥ माताजी ॥ मनवांबित एहनुं थयुं, धन्य एहनो अवतार ॥ मा० ॥ ३ ॥ मा० ॥ मोहबीज एणीए लह्युं, सांजली एहवी वात ॥ माताजी ॥ वहूमुख साहामुं देखीयुं, तव बोली सुणो मात ॥ मा० ॥ ४ ॥ मा० ॥ तुमे स्नेहे करी एम कहो, पण सरीयुं अम काज ॥ मा० ॥ आर्यपुत्र घरणी तणो, शब्द लह्यो अमे आज ॥ मा० ॥ ५ ॥ मा० ॥ तुम प्रजावथी निपनुं, अम मनवंबित जेह ॥ मा० ॥ धर्म कह्यो वीतरागनो, उपदेश्यो पीयु तेह ॥ मा० ॥ ६ ॥ कुं० ॥ तिणे उदवेग न कीजीये, राणी विचारे ताम ॥ कुं० ॥ अहो रूप ने उपशम घणो, जाणे परमार्थ ते आम

॥ कुं० ॥ ७ ॥ मा० ॥ गुरुजक्ति अहो केहवी, अहो अहो वयणविन्यास ॥ कुं० ॥ अहो गंजीरता एहनी, एम चिंती कहे तास ॥ कुं० ॥ ८ ॥ मा० ॥ खड्गसेन पुत्री तणुं, उचित ते घटतुं एम ॥ कुं० ॥ इणी परे करतां वातमी, वात सुणो एक प्रेम ॥ कुं० ॥ ए ॥ मा० ॥ विप्र पुरंदर नामथी, राय जुवनने पास ॥ कुं० ॥ कोलाहल तिहां बहु थयो, जेह सुणी होय त्रास ॥ कुं० ॥ १० ॥ मा० ॥ राय कहे निज पुरुषने, जाउ खबर करो एह ॥ ॥ कुं० ॥ कुंअर कहे मत जायजो, जाणुं छुं छे जेह ॥ पिताजी ॥ ११ ॥ कुंअर कहे तुमे सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ ए संसार विलास छे, राय कहे ते केम ॥ कुं० ॥ कुमर कहे ए जट्ट जे, अरध मुउ जव नेम ॥ पिताजी ॥ ॥ १२ ॥ कुं० ॥ तिणे सहु सज्जन रोवतां ॥ नृप कहे दीठो आज ॥ कुं० ॥ कुंअर कहे कारण नहीं, मरणधर्मी नरराज ॥ पिता० ॥ १३ ॥ कुं० ॥ एहने रोग हतो नहीं, नृप कहे किम मुउ एम ॥ कुं० ॥ कुमर कहे अवाच्य छे, निंदित छे वली तेम ॥ पिता० ॥ १४ ॥ कुं० ॥ जूप कहे संसारमां, शुं नहीं निंदित होय ॥ कुं० ॥ पण कौतुक मुऊ ए अछे, संजलावो तुमे सोय ॥ कुं० ॥ १५ ॥ कुं० ॥ कोइ विस्तार नहीं लहे, नहीं डुर्जन को एथ ॥ कुं० ॥ कुंअर कहे मत एम कहो, सुणो जे निपनुं तेथ ॥ पिता० ॥ १६ ॥ ॥ कुं० ॥ नर्मदा नारी छे एहने, तिणे दीधुं छे झेर ॥ पिता० ॥ मोकलो वैद्य उतावला, आणी मनमां महेर ॥ पिता० ॥ १७ ॥ कुं० ॥ औषधे जीवे ते यथा, वली एहनी जे पोल ॥ पिता० ॥ नैऋत कोणे कूतरो, ए पण एहने तोल ॥ पिता० ॥ १८ ॥ कुं० ॥ एहज झेर ते दीधलुं, एहज विधि करो तास ॥ पिता० ॥ जीवशे तिणे ए विहु जणां, रायने थयो उल्लास ॥ पिता० ॥ १ए ॥ कुं० ॥ अहो ज्ञान जुउ कुमरनुं, एम कही वैद्यने तेमी ॥ पिता० ॥ शिखवीने तिहां मूकीआ, निज नरने ते केमी ॥ पिता० ॥ २० ॥ कुं० ॥ जूप पूछे हवे कुमरने, शुं इण मारण हेत ॥ कुं० ॥ कुमर कहे अविवेक छे, तोपण ए संकेत ॥ पिता० ॥ २१ ॥ कुं० ॥ वाहाली पुरंदरने घणी, तोपण नारी अज्ञान ॥ पिता० ॥ अर्जुनदास जे निज घरे, तेहशुं लागो तान ॥ पिता० ॥ २२ ॥ कुं० ॥ श्रवण परंपरा सांजल्युं, मान्युं न विप्रे तोहि ॥ पिता० ॥ एम केइ काल वही गयो, मात कहे हवे मोहि ॥ पिता० ॥ २३ ॥ कुं० ॥ पुत्र न सुंदर वहू अछे,

उवेखे बे केम ॥ पिता० ॥ थाय संतान नाश वली, सांजल्युं विप्रे एम ॥ पिता० ॥ २४ ॥ कुं० ॥ सांजलीवाम्व चिंतवे, एम जाखे बे मात ॥ पिता० ॥ प्राणप्रिया ए नारी बे, किम होशे ए वात ॥ पिता० ॥ २५ ॥ कुं० ॥ दशमी नवमा खंममां, पद्मविजय कही ढाल ॥ पिता० ॥ समरादित्यना रासमां, आगल वात रसाल ॥ पिता० ॥ २६ ॥ कुं० ॥ सर्व गाथा ॥ ३५ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ सासु वहूने संप नहीं, एहवो पण अवदात; वली विशेषथी गुणवती, मत्सर नहीं मुफ मात ॥ १ ॥ एटला काल लगे अहीं, नेद न जाणयो जाय; नारी पण बे निर्मली, श्यो कीजे व्यवसाय ॥ २ ॥ चंचल नारी ते चित्तथी, एम जाखे अणगार; ते पण नवि थाये वितथ, विषमा कामविकार ॥ ३ ॥ परीक्षा करुं तिणे पाधरी, एम चिंती एकांत; जाखे नर्मदा जामिनी, समजो मन धरी खांत ॥ ४ ॥ महीपति आणाए माहरे, जवुं माहेसर जाम; शीघ्र आवीश हुं सुंदरी, केश्क दिन बे काम ॥ ५ ॥ रहेजो रुमी रीतिशुं, नर्मदा कहे तव नारी· आर्यपुत्र हुं आवशुं, नहीं रहुं हुं निरधार ॥ ६ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥

॥ अश् प्रीतमशुं एकवार,सलुणी बोलो हो ॥ ए देशी ॥

॥ तुम विण हुं नवि रही शकुं रे, एम कही रुदन करेय ॥ पुरंदर कहे सुंदरी, स्नेहे कायरता म धरेय ॥ १ ॥ चरित्र नहीं रुडुं हो ॥ अहो कोश् न लहे एहनो पार ॥ चरि० ॥ माहरे तिहां कांय फुःख नथी रे, तव कहे वचन प्रमाण ॥ पण जो मोमा आवशो तो, माहारा जाशे प्राण ॥ २ ॥ चरि० ॥ बीजे दिवसे नीकल्यो रे, बाहिर दिवस गमाय ॥ रजनीए पेठो गेहमां, करी माया रह्यो एक ठाय ॥ ३ ॥ चरि० ॥ मध्यराते वासगेहमां रे, सूतां दीठां दोय ॥ सुरतप्रयासना खेदथी रे, निद्रामां आव्यां सोय ॥ ४ ॥ चरि० ॥ कोपे अति घणुं कलकल्यो रे, नाठो दूरे विवेक ॥ चिंतवे यतशुं पालवी, नारीने ते आपनी टेक ॥ ५ ॥ चरि० ॥ पण अर्जुन ए फुष्ट बे रे, जोगवे माहारी नारी ॥ मारुं एहने चिंतवी, कस्यो सूताने परहार ॥ ६ ॥ चरि० ॥ मारी ते वासना गेहथी रे, रहीउ घर एक देश ॥ जोवुं नारी हवे शुं करे, तिहां रुधिर फरस थयो

लेश ॥ ७ ॥ चरि० ॥ तेहथी जागी जोइयुं रे, मरण लह्युं ते जार ॥ चिंतवे हाहा मरी गयो, मुझ जेहशुं अतिशय प्यार ॥ ८ ॥ चरि० ॥ मंदजागिणी हुं घणी रे, किणे मास्यो मुझ स्वामी ॥ मारी न मुझने पापीए, किम जीवती रहुं इण गाम ॥ ९ ॥ चरि० ॥ गइ हवे रतिसुखनी कथा रे, एम चिंती खणे खाड ॥ घाल्यो अर्जुनने तिहां, दुःख धरती अति गाढ ॥ १० ॥ चरि० ॥ जोइने हवे नीकल्यो रे, पोहोतो इछित गाम ॥ सा पण तिण थानक करे, वेदिका तस तनु अहिनाण ॥ ११ ॥ चरि० ॥ नारी नहीं रुडी हो ॥ ए आंकणी ॥ दीप करे ने वलि दीये रे, पूजे प्रतिदिन तास ॥ आलिंगन वली तिहां करे, एम लेहे अन्नाण विलास ॥ १२ ॥ नारी० ॥ आव्यो पुरंदर अन्यदा रे, देखाड्यो न विकार ॥ केइक दिन एणी परे जतां, देखे पूजा नित्य जार ॥ १३ ॥ नारी० ॥ चिंतवे अहो ए मूढता रे, अहो केहवो छे राग ॥ अथवा एहवी शास्त्रमां, जाखी छे नारी अजाग ॥ १४ ॥ नारी० ॥ पण सुधाधार नारी कही रे, ऋषिए शास्त्र मझार ॥ तिणे मन माने ते करो, मुझ काज न तास लगार ॥ १५ ॥ नारी० ॥ एम चिंतवी पूरव परे रे, जोगवे तेहशुं जोग ॥ बार वरस एम वही गयां, ए तो मोहनीकर्मना जोग ॥ १६ ॥ नारी० ॥ एम करतां गत पांचमे रे, दिवसे रांध्युं अन्न ॥ ब्राह्मणने जमाडवा, पण नारीनुं जारमां मन्न ॥ १७ ॥ नारी० ॥ ब्राह्मण जमवा पूरवे रे, तिहां कस्युं वलिनुं दान ॥ तव पुरंदर देखी करी, हसीने कहे इणी परे वाणी ॥ १८ ॥ नारी० ॥ हजीअ ए शुं करो सुंदरी रे, सांजली करे विचार ॥ निश्चय मास्यो मुझ पति, तिणे बोले ए इणे प्रकार ॥ १९ ॥ नारी० ॥ जो मारुं ए हाथशुं रे, तो लेवाये वेर ॥ एम चिंतीने आपीयुं रे, जोजन मांहि झेर ॥ २० ॥ नारी० ॥ ए व्यतिकर सुणी पूछीयुं रे, जूपे एम कुमार ॥ श्वानने शे कारण दीउं रे, फेर कहो ते विचार ॥ २१ ॥ नारी० ॥ कुमर कहे ए कूतरो रे, आवी वेसे ते गाम ॥ निज प्रिय उपद्रव जाणीने रे, एहने पण दीउं ताम ॥ २२ ॥ नारी० ॥ सात वार अर्जुन जणी रे, मास्यो इण नारी ॥ ते सुणजो हवे प्रथमथी, कृमि उपनो देह मझार ॥ २३ ॥ नारी० ॥ तिहांथी गृहकोकिल थयो रे, उंदर ने वली जेक ॥ वली अलसीउं उपनुं तिम, सरप-

पणे अविवेक ॥ २४ ॥ नारी० ॥ सातमे ज्ञव ते कूतरो रे, मारे सघले नारी ॥ विषय थकी एम उःख लहे, अहो धिक् धिक् ए संसार ॥ २५ ॥ नारी० ॥ रागे रागीने मारती रे, ते पण निज अन्नाण ॥ थानक नवि मूके किमे, अहो मोहशक्ति अप्रमाण ॥ २६ ॥ नारी० ॥ श्वान तणो व्यतिकर सुणी रे, ज्ञूपति लह्यो संवेग ॥ अहो संसार असारता, कर्म विचित्रपणुं अतिरेग ॥ २७ ॥ नारी० ॥ नवमा खंममां ए कही रे, अगीआरमी ए ढाल ॥ पद्मविजये एह रासमां, सुणतां होय मंगलमाल ॥ २७ ॥ नारी० ॥ सर्व गाथा ॥ ३ए३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वैद्य आव्या इण अवसरे, जीवाड्यो कहे जाम; उद्योत थयो इण अवसरे, देवडुंडुन्नि नदे ताम ॥ १ ॥ सांजले गीत सोहामणां, कहे कहो रायकुमार; एह किशुं अद्भुत अछे, वली कहे कुमर विचार ॥ २ ॥ गुणधर्म शेठनो सुत गुणी, जिनधर्म नामे जाण; आजज सुरमां अवतस्यो, निश्चय अवधिनाण ॥ ३ ॥ मित्रनारी समजाववा, इहां ते आव्यो एह; प्रतिबोधी पाछा जतां, ऋद्धि देखामी रेह ॥ ४ ॥ सुरपद पाम्यो किम सखर, प्रतिबोध्या केणी पेर; कुमर कहे ए केम कहुं, वाच्य नहीं ए घेर ॥ ५ ॥ तुम आग्रहथी तातजी, जणुं तास प्रकार; जिनमत ज्ञावित जिनधरम, वसे न विषयविकार ॥ ६ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ जंबु ज्ञरत ज्ञू ज्ञामिनी ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञावना ज्ञावे ज्ञावशुं, न गमे मनमां संसार रे ॥ धनदत्त मित्र एक तेहने, बंधुला नामे निज नारी रे ॥ १ ॥ पण ते धनदत्तशुं रमे, बहु काल गमायो एम रे ॥ जिनधर्म तो इह लोकनी, नवि राखे अपेक्षा प्रेम रे ॥ ॥ २ ॥ विण संज्ञलावे कुटुंबने, शून्य घरमां काउस्सग्ग राते रे ॥ रहीआ हवे जे बंधुला, धनदत्त संकेत कस्यो वाते रे ॥ ३ ॥ ते शून्य घरमां आवीआं, एक पल्यंक लेइ ते उष्ट रे ॥ पाइये खीला लोहना, ढाल्यो पल्यंक पापे पूष्ट रे ॥ ४ ॥ जिनधर्मना पग उपरे, आव्यो खीलो पग विंधाणो रे ॥ ते उपरे बिहु जण चढ्यां, करे आलिंगन अन्नाणो रे ॥ ५ ॥ मैथुन सेवे मोहशुं, तस ज्ञारे ज्ञेद्यो अत्यंत रे ॥ खीलो पेठो पृथिवीमां, जिनधर्मने

वेदना अनंत रे ॥ ६ ॥ कुशलबुद्धि तिहां चिंतवे, अहो विषय मुंजावे जीव रे ॥ शील जाये डुरगति पडे, तिहां डुःख सहे अतीव रे ॥ ७ ॥ धन्य मुनि सम सुख वस्या, दूरे बंड्या नारीना संग रे ॥ हुं तो न तजुं ए संगने, घरमां रह्यो राखुं रंग रे ॥ ० ॥ मित्र ने निज जार्या जणी, न करी शकुं जाव उपगार रे ॥ तो वीजानी शी वारता, आत्मजरी थाउं असारो रे ॥ ए॥ अहो अहो डुःख हेतु थयो, अहो मुज संगति पण एह रे॥ क्लिष्ट चेष्टा करे एहवी, इह लोके पण डुःख जेह रे ॥ १० ॥ परजव जाये डुर्गति, हुं शानो कल्याणमित्तो रे॥ कल्याणमित्र मंगल करे, ते तो हुं थयो एम अमित्तो रे॥ ११॥ चार नहीं मुज एहमां, तेणे समरुं पंच नवकार रे ॥ एम करी समरे तेहने, वली संजारे देव अणगार रे ॥ १२ ॥ पढमं हवइ मंगलं, कहेतां बुटा तस प्राण रे ॥ ब्रह्मलोकमां उपनो, प्रयुंजतो अवधिनाण रे ॥ १३ ॥ देवकृत्य कीधा विना, आव्यो करुणा मन आणी रे॥ मित्र नारी प्रतिबोधवा, करे एम विचार सुजाण रे॥ १४॥ राग अति एहने अबे, तस जय विण नहीं प्रतिबोध रे ॥ एम करी माया मूकतो, वेदना अति सुख विरोध रे ॥ १५ ॥ अहेवाणी विशूचिकाए, अशुचि चीकणुं जंबाल रे ॥ डुर्गंध अशुचि जक्षक जणी, पण लागे अति विकराल रे ॥१६॥ दोय पासां जेदाइआं, हाहा मरण लहुं बुं एम रे ॥ वलगे धनदत्तने वली, जंवाले खरडाये ते तेम रे ॥ १७ ॥ पाप परे लींपाइउं, महा अरति उपनी अंगे रे ॥ अहो अहो ए शुं वनी गयुं, एम चिंतवे मनने जंगे रे ॥ १० ॥ उंसरवा कांय मांडीयुं, सा चिंतवे नेहशुं ए तो रे ॥ बोले मरुं बहु वेदना, अंग जांगे डुःख समेतो रे ॥ १ए ॥ ते कहे हुं शुं करुं इहां, माहारो नहीं कांइ चारो रे ॥ सा कहे शरीर उंलाशीये, उंलांसे तव तिणी वारो रे ॥ २० ॥ कहे मुज हाथ चाले नहीं, कोइ मूर्त्तिमंत ए पाप रे ॥ ए सरिखुं तो दीतुं नहीं, अरते अहेवाणो आप रे ॥ २१ ॥ सा चिंते मुज पापथी, ए उदये आव्या रोग रे ॥ देव समो पति वंचीयो, कह्युं विरुद्ध उजय लोग रे ॥ २२ ॥ पामी संवेगने रोवती, हा आर्यपुत्र एम कहेती रे ॥ धनदत्त पण एम चिंतवे, अहो डुःख समुदाय वहेती रे ॥ ॥ २३ ॥ ए संसार असार बे, एह काया अशुचिजंडार रे ॥ प्रिय मित्र वयण ते सांजल्यां, सुख जोगव्यां तस उपगार रे ॥ २४ ॥ जेहवी में

चेष्टा करी, तेहनां फल हुंए पाम्यो रे ॥ रे मित्र में मातुं कत्थुं, एम कहेतां मोह कांइ वाम्यो रे ॥ २५ ॥ जाणी समय प्रतिबोधनो, शबपूजण मिष करी आयो रे ॥ सुर निज रूप प्रगट करी, पूजा करे शब निरमायो रे ॥ ॥ २६ ॥ दरिसण दीतुं दोय जणे, वेदना पण थइ उपशांत रे ॥ देखी देखी दोये वंदीआ, अहो शक्ति रूप ने कांति रे ॥ २७ ॥ पूछे स्वामी तुमे कोण छो, किम आव्या आणे ठाम रे ॥ ते कहे हुं सुर आवीयो, जिनधर्म बिंबपूजा काम रे ॥ २७ ॥ ते कहे किहां जिनधर्मनी, प्रतिमा तव तिणे देखाडी रे ॥ देखी चित्तमां चिंतवे, ए जीवरहित मानुं गामी रे ॥ २ए ॥ क्षोज लही कहे ए किशुं, इहां श्यो परमार्थ वखाणो रे ॥ सुर परमार्थ कहेतां थकां, पाय प्रणमे धरी बहु मानो रे ॥ ३० ॥ नवमे खंडे बारमी, कही पद्मविजय एम ढाल रे ॥ समरादित्यना रासमां, सुणो आगल वात रसाल रे ॥ ३१ ॥ सर्व गाथा ॥ ४३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूछे सुरने इणी परे, जिनधर्म किहां सुजाण; देव कहे थयो देवता, विंध्यो कील विआण ॥ १ ॥ दीठो तिमहीज दरूथी, कहे अहो कीध अकज्ज; मूर्छा बिहु जण पामीआं, सुर करतो वली सज्ज ॥ २ ॥ लघुता पाम्यां लाजथी, मरवाने उजमाल; देखी निवारे देवता, श्ये करो मरण संजाल ॥ ३ ॥ ते कहे जाणो सवि तुमे, अमशुं पूछो आम; सुर कहे मरण थकी सखुं, करो तस उपदेश काम ॥ ४ ॥ उपदेश योग्य अमे नहीं, ते कहे गया ते मित्त; सुर कहे योग्य अछो सखर, पश्चात्ताप पवित्त ॥ ॥ ५ ॥ पाप करे पण पापीआ, पश्चात्ताप न प्राय; क्लिष्टकर्मा तेहज कह्या, शास्त्रे सहु समजाय ॥ ६ ॥ जिनधर्म गया न जाणजो, तेहज हुं तुम पास; परिणति कर्मनी पामीने, वरते मोह विलास ॥ ७ ॥ धर्म शरण करो धसमसी, जिम नवि होये जंजाल; ते कहे करशुं तोहि पण, करशुं काल अकाल ॥ ७ ॥ आजथी तुम वचने अमे, जाण्युं अकारय जाम; किम जीवन धरीये कहो, निर्जर लही परिणाम ॥ ए ॥ जिनवरे जाख्यो जेणी परे, दीधो तिम उपदेश; सर्वविरति करी सामटी, अणसण कीध अशेष ॥ १० ॥ जवस्वरूप तिहां जावतां, संवेगे करी शुद्ध ॥ दुःकृत निंदा

दाखतां, अतिशय ते अवबुद्ध ॥ ११ ॥ अमर इहांथी उतपत्यो, कह्युं जे धार्युं काज ॥ सांजली लह्यो संवेगने, रुमी परे महाराज ॥ १२ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ शेठ सेनापति वार्द्धिको, पुरोहित ने परधान बे ॥

॥ केम न मूके कामिनी, सहस बत्रीश राजान बे ॥ ए देशी ॥

॥ राय कहे वत्स साचलुं, जवचेष्टा असराल बे ॥ जलकल्लोल परे देखीये, साची ए इंद्रजाल बे ॥ १ ॥ कुंअर संवेगे पूरीउं, पूरीउं बे दुःख चूरीयो बे ॥ कुं० ॥ ए आंकणी ॥ कल्याणमित्र ते दोहिला, एहवाने पण कीध बे ॥ एहवा गुणनी योग्यता, शिवसुख करतल दीध बे ॥ २ ॥ कुं० ॥ सहु कहे सत्य कह्युं तुमे, सहुए लह्यो वेराग बे ॥ नृप कहे उपजशे किहां, कहो कुंअर वमजाग बे ॥ ३ ॥ कुं० ॥ सौधर्मे सुरवर थशे, नृप कहे अणाचार बे ॥ कुमर कहे तो शुं थयुं, पश्चात्ताप अपार बे ॥ ४ ॥ कुं० ॥ विरति परिणाम एहना थया, तिणे दुर्गति नवि जाय बे ॥ जो अप्रमादथी आचरे, तो शुज परंपरा थाय बे ॥ ५ ॥ कुं० ॥ राय कहे एहवा जणी, किम ए होये जोग बे ॥ कुमर कहे विचित्रता, कर्मपरिणाम आजोग बे ॥ ६ ॥ कुं० ॥ एहनी प्रकृति अकुशल तणी, नहीं अति संक्लेश सार बे ॥ एक प्रवृत्तिमात्रज हतां, अनुबंध रहित विचार बे ॥ ७ ॥ कुं० ॥ आगमरीते चालीआ, लागो नहीं अतिचार बे ॥ नृप कहे साचुं ते विना, किम जवछेदन सार बे ॥ ८ ॥ कुं० ॥ कुमर कहे धार्युं खरुं, विनति करुं वली एक बे ॥ ए संसार अनर्थमां, आपद् छे अतिरेक बे ॥ ९ ॥ कुं० ॥ मन न रूचे इहां माहरुं, हरखे आपो आण बे ॥ गुरुआणाए प्रवृत्ततां, काम चढे परमाण बे ॥ १० ॥ कुं० ॥ तिणे आणा मुऊ आपीये, एम कही पमीउं पाय बे ॥ राय कहे वत्स सांजलो, आ सघलो समुदाय बे ॥ ११ ॥ ॥ कुं० ॥ सहुनां एह परिणाम छे, तिणे अमे दीधी आण बे ॥ अथवा अम गुरु छो तुमे, अद्भुत निरमल नाण बे ॥ १२ ॥ कुं० ॥ काम न पूछणनुं रह्युं, अम्ह तुम कीजे उचित बे ॥ कीध प्रसाद ते तातजी, कुमर कहे सुविदित बे ॥ १३ ॥ कुं० ॥ तुमे पण जुगतुं आदर्युं, एम कहेतां थयो जोर बे ॥ वाज्यां तूर प्रजातनां, वंदिजन करे सोर बे ॥ १४ ॥ कुं० ॥

तम गयुं ने रवि उगीउं, वाया प्रजातना वाय बे ॥ विरह टल्यो चक्रवाकनो, मलीआ अमात्य समवाय बे ॥ १५ ॥ कुं० ॥ कुमरचरित्र संजलावीयुं, नृपे कह्यो निज अजिप्राय बे ॥ ते पण हरख्या सांजली, घटतुं कीधुं राय बे ॥ १६ ॥ कुं० ॥ कुमर चिंतामणि सारिखा, जूप कहे एम बे ॥ विलंब न कीजे एहमां, उचित करो धरी प्रेम बे ॥ १७ ॥ ॥ कुं० ॥ आण प्रमाण करी तिणे, वरवरीआ घोषाय बे ॥ सहु देहरे पूजा रची, दान महा देवाय बे ॥ १७ ॥ कुं० ॥ पुरजनने सनमानीउं, बंदिवान मूकाय बे ॥ राज्य ठवे जाणेजने, मुनिचंद नाम सुहाय बे ॥ ॥ १ए ॥ कुं० ॥ गुरुजननी पूजा करी, शुज दिन करण मुहुत्त बे ॥ राय राणी मित्रवृंदशुं, नारी बिहु संजुत्त बे ॥ २० ॥ कुं० ॥ जट्ट पुरंदरशुं वली, पुरिजनने परधान बे ॥ बेठां शिबिकाए सहु, वली सामंत राजान बे ॥ २१ ॥ कुं० ॥ मंगल तूर बजावते, नाचंते वर पात्र बे ॥ बंदि बिरुद बोली जते, लोकने हर्ष अमात्र बे ॥ २२ ॥ कुं० ॥ अध्यवसाय वधते थके, विस्मय पामे लोक बे ॥ पापराशिने खपावतो, जोवे जन थोके थोक बे ॥ २३ ॥ कुं० ॥ बहु आरुंबरे नीकल्यो, नयरी बाहिर कुमार बे ॥ पुष्पकरंरू उद्यानमां, आवे बहु परिवार बे ॥ २४ ॥ कुं० ॥ नाम प्रजास सूरि तदा, पाउ धार्या तिणे वार बे ॥ चौनाणी चारित्रीआ, वंदे तिहां अणगार बे ॥ २५ ॥ कुं० ॥ सुरवर तस पूजा करे, विधिपूर्वक तस पास बे ॥ दीक्षा जिननी आदरे, पामी गुरुनो वास बे ॥ ॥ २६ ॥ कुं० ॥ इंद्रे तिहां पूजा करी, तिम मुनिचंद राजान बे ॥ पुरमां सहु देहरे करे, अठाई महोत्सव तान बे ॥ २७ ॥ कुं० ॥ परूह अमारि वजावीआ, हरख्या पुरिजन साथ बे ॥ समरादित्य प्रमुख सहु, आण पाले जगनाथ बे ॥ २ए ॥ कुं० ॥ नवमे खंडे तेरमी, ढाल अधिक उल्लास बे ॥ जाखी पद्मविजये इसी, समरादित्यने रास बे ॥ २ए ॥ कुं० ॥ सर्व गाथा ॥ ४७१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लोक प्रशंसा लख करे, सांजली ते गिरिसेण; कलुषित चित्त क्रोधे थयो, जाणे इणी परे जेण ॥ १ ॥ मूढलोक मानुं करे, मूरखनुं बहु मान; डुराचार ए देखीने, अधिकुं होय अजिमान ॥ २ ॥ मारुं एह-

ने मूलथी, तो सुख शाता थाय; हाथें माहरे ए हवे, निश्चय आवशे न्याय ॥ ३ ॥ ढानां खोले बिढ्ने, गिरिसेन ते गमार; मुनिवर संजम मालता, गुरुचरणे गुण धार ॥ ४ ॥ पूर्वाभ्यासपणे करी, अल्प काले अद्भुत; नणीआ द्वादशांगी नला, पूरव चौद प्रभूत ॥ ५ ॥ क्रियाकलाप सहु कस्या, वाचक पद ठावंत; विहार करंता मुनिवरु, ग्रामानुग्राम गमंत ॥ ६ ॥ साधुना समुदायथी, करता नवि उपगार; अयोध्या पुरी आवीआ, श्रावक साथे सार ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ टेक रही रे शहेर नरुचके मेदान ॥ ए देशी ॥

॥ मुनिवर आया रे, नयरी अयोध्या मेदान ॥ संघ सहु लाया रे, नमवा चैत्य निदान ॥ ए आंकणी ॥ शक्रावतार चैत्य मनोहार, रुषनदेव प्रतिमा अवधार, दीठुं ते उद्यान मझार, नयरी शोहे रे, इण देहरे निरधार ॥ उज्ज्वल दीपे रे, शंख कुंद अनुहार ॥ गगने अफीआ रे, ध्वजपट अतिहि विस्तार ॥ १ ॥ मुनि० ॥ दीसे मानुं देव विमान, तोरण मणिमय थंन सुवान, शालिनंजिका करती तान, रयण समूहे रे, बांध्युं कोटिम तास ॥ शोहे गंनारो रे, रयणना दीव प्रकाश ॥ सुरतरु फूले रे, पूज्या जिनवर खास ॥ २ ॥ मुनि० ॥ सेवा करवा सुरवर आय, तिम चारण जाणो रुषिराय, नारी मधुर स्वरे गीत गाय, कृष्णागरुना रे, धूप अतिशय थाय ॥ दश दिश व्यापे रे, मुनि करे स्तवना जिनराय ॥ सिद्धजन सुणतां रे, परमारथ निरमाय ॥ ३ ॥ मुनि० ॥ देखी मणिमय तिहां सोपान, चढीने वंदे जिन नगवान, लोकालोक जाणे जेह ज्ञान, वंदी बेठा रे, समरादित्य एक देश ॥ चारण मुनि रे, विद्याधर सुविशेष ॥ आवी नमीया रे, मुनिवर चरण अशेष ॥ ४ ॥ मुनि० ॥ इण अवसरे परसन्नचंद राय, स्वामी अयोध्यानो ते थाय, समरादित्य आव्या मुनिराय, जाणी राजा रे, लेइ निज परिवार ॥ वंदवा आवे रे, हैयडे हरख अपार ॥ प्रनुजी पूजी रे, आव्यो जिहां अणगार ॥ ५ ॥ ॥ मुनि० ॥ प्रणमी बेठो मुनिवर पास, पूछे प्रश्न धरी उल्लास, नानीनंदन इहां सुणीये वास, धर्मना चक्री रे, प्रथम कह्या ग्रंथे तेह ॥ तोशुं पहेलां रे, धर्म हतो नहीं एह ॥ जो हतो पहेलां रे, तो केम प्रथम कहेह

॥ ६ ॥ मुनि० ॥ मुनि कहे ज्ञरत क्षेत्रमां जोय, इणी अवसर्प्पिणी पहेलां होय, पण धर्म नहोतो मत लहो कोय, ठे अनादि रे, तीर्थंकर ज्ञगवंत ॥ तेहनो ज्ञाख्यो रे, धर्म अनादि वहंत ॥ ज्रूपति ज्ञाखे रे, ज्ञाखो करुणा रे वंत ॥ ७ ॥ मुनि० ॥ सहु खेत्रे अवसर्प्पिणी एम, मुनि कहे एहवुं कहीये केम, ज्ञरत ऐरवते पंचे नेम, महाविदेहे रे, ठे अवस्थित काल ॥ जिनपति नित्ये रे, षट जीउना प्रतिपाल ॥ अंतर नांहि रे, चक्री वासुबल ज्ञाली ॥ ८ ॥ मुनि० ॥ ज्ञरत ऐरवते अनियत काल, बार आरे कालचक्र विशाल, चढतो पमतो होय नरपाल, सागर वीश रे, होये तास प्रमाण ॥ अवसर्प्पिणी रे, ठ आरे करी जाण ॥ उत्सर्प्पिणी रे, तेहज रीति वखाण ॥ ए ॥ मुनि० ॥ अवसर्प्पिणीमां पहेलो जेह, चार कोमाकोमि सागर तेह, सुसम सुसमा नामे एह, सुसम बीजो रे, त्रण कोमाकोमि मान ॥ सुसम उसमा रे, बे कोमाकोमि मान ॥ त्रीजा आरा रे, केरुं ए अज्ञिधान ॥ १० ॥ मुनि० ॥ ऊणां बेंतालीश हजार, वरस सागर कोमाकोमि धार, उसम सुसमा इण परकार, पांचमो आरो रे, वरस सहस एकवीश ॥ उखमा नामे रे, ठठ्ठो पण ए वरीश ॥ उखम उखमा रे, महा उःखवंत मनीश ॥ ११ ॥ मुनि० ॥ पहेले आरे त्रण पल्य आय, त्रण गाउ उंची तस काय, कल्पवृक्ष मनवंठित दाय, दश ठे जाति रे, पहीला मत्तंग तरु ॥ मदिरा सघली रे, तिणहीज ठामे पसरु ॥ ज्रृंगमां दीसे रे, ज्ञाजननी विधि जरु ॥ १२ ॥ मुनि० ॥ त्रुटितांगे वाजित्र अनेक, दीपशिखा नामे वली एक, दीप परे दीपे सुविवेक, जोइस नामे रे, करता तेह उद्योत ॥ चित्रांग वृक्षे रे, फूलमाल सवि होत ॥ चित्र रसे जाणो रे, ज्ञोजनविधि सुख सोत ॥ १३ ॥ मुनि० ॥ मणि अंगमां होये अलंकार, ज्ञवन रुंखमां गेह प्रकार ॥ अनिगणमां सहु वस्त्र विचार, संज्ञा नांहि रे, धर्माधर्म विशेष ॥ आरानी आदि रे, जाणो एह अशेष ॥ घटतुं जाये रे, तिहांथी सहु लवलेश ॥ १४ ॥ मुनि० ॥ बीजे आरे दोय पल्य आय, दोय गाउनुं शरीर ते थाय, लक्षणवंताने निरमाय, घटतां आयु रे, वली प्रमाण शरीर ॥ त्रीजानी आदे रे, सांज्ञल तुं नरवीर ॥ एक पल्य आयु रे, एक गाउ तनु धीर ॥ १५ ॥ मुनि० ॥ तेहने अंते पहेलो राय, जगत तणी स्थिति सहु बतलाय, सुर असुरा सहु पूजनिक थाय, धर्मना चक्री

रे, पहेला अरिहा जिणंद ॥ चिहुं विधे धर्म रे, उपदेशे सुखकंद ॥ अनुक्रमे पामे रे, शिवसुख परम आणंद ॥ १६ ॥ मुनि० ॥ नवमे खंडे चौदमी ढाल, जाखे उत्तमविजयनो वाल, समरादित्यनो रास रसाल, सुणतां होवे रे, घर घर मंगलमाल ॥ सांजलो आगे रे, जविका थइ उजमाल ॥ जिम तुमे पामो रे, लीला लछी विशाल ॥ १७ ॥ मुनि० ॥ ॥ सर्व गाथा ॥ ४ए५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आरो चोथो आदि ते, पंचसें धनुष प्रमाण; काया आयु पूरव कह्युं, चुलसी लख पहिचाण ॥ १ ॥ वावरता अन्न वारीने, धर्माधर्म ते धार; तीर्थंकर चक्री तथा, वल वासुदेव तिवार ॥ २ ॥ पंचम आरो पामतां, आयु वरस शत एक; सातज हाथ शरीर छे, वारु धर्मविवेक ॥ ३ ॥ तीरथ अंतिम जिन तणुं, चाले रुडी चाल; छठे आरे छटकीयुं, शरीर आयु संजाल ॥ ४ ॥ वरष सोल आयु वधुं, उंचुं कर तनु एक; मांसाहारी अति मलिन, वली नहीं धर्मविवेक ॥ ५ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ सरवर सूकां वे लाल, हंसा डुःख धरे ॥
सरोवर उंरे वे लाल, जाइ चित्त धरे ॥ ए देशी ॥

॥ उलटी जाणो वे लाल, उत्सर्पिणी वली ॥ कालचक्र जाणो वे लाल, इणी परे दोय मली ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ दोय मली धारो मत विचारो, धर्म न हतो पूरवे ॥ मोह टाल्यो कस्यो अनुग्रह, जूप इणी परे विनवे ॥ २ ॥ इण समे आयो वे लाल, माहण एक जलो ॥ इंद्रशर्मा नामे वे लाल, मघव गुणनिलो ॥ ३ ॥ त्रु० ॥ गुणनीलो गरढो बुद्धिवंतो, वंदी पूछे इणी परे ॥ जगवान तुमचा शास्त्र माहिं, कर्म जाख्यां जिनवरे ॥ ४ ॥ ते कर्म वे लाल, बांधे किम कहो ॥ गुरु कहे सुणजो वे लाल, सुणीने सरदहो ॥ ॥ ५ ॥ त्रु० ॥ सरदहो नाणनी प्रत्यनीकता, उलवे करे अंतराय ए ॥ आशातना करे ज्ञानी उपरे, द्वेष करतो थाय ए ॥ ६ ॥ जाखे अवलुं वे लाल, ज्ञानावरणने ॥ बांधे कर्म वे लाल, नवि लहे करणने ॥ ७ ॥ ॥ त्रु० ॥ दरशन तणी प्रत्यनीकता एम, जाव अवलुं जाखतो ॥ दर्शनावरणी कर्म बांधे, चित्त थिर नवि राखतो ॥ ८ ॥ करे अनुकंपा वे लाल,

दुःख नवि आपतो ॥ शोक संताप बे लाल, परना कापतो ॥ ए ॥
॥ त्रु० ॥ कापतो परनी वली पीमा, बांधे शाता सुख जणी ॥ विपरी-
तथी अशात बांधे, वात सांजलो मोहणी ॥ १० ॥ क्रोध ने मान वे
लाल, माया लोहने ॥ मिथ्याचरण बे लाल, तीव्र करे मोहने ॥ ११ ॥
॥ त्रु० ॥ बांधे मोहनीकर्म इणी परे, हवे पंचिंदि वध करे ॥ आरंज
परिग्रह मद्दा मेले, मांस वली जे वावरे ॥ १२ ॥ नारक आयु बे लाल,
बांधे ते नरा ॥ माया अलीक बे लाल, वंचवा तत्परा ॥ १३ ॥ त्रु० ॥ त-
त्परा कूमां मान करवा, कूमां तोल करे घणां ॥ आयु तिरयंच केरुं बांधे,
दुःख तणी जिहां नहीं मणां ॥ १४ ॥ प्रकृति विनीत बे लाल, पश्चात्ता-
पीउ ॥ मत्सर न करे बे लाल, मनुजायु आपीउ ॥ १५ ॥ त्रु० ॥ बाल तप
अकाम निर्जर, सराग संजम जाणीये ॥ देशविरति थकी बांधे, देवआयु
ठाणीये ॥ १६ ॥ कायने जाव बे लाल, रुजुता जेहने ॥ अविसंवादन बे
लाल, योग होये तेहने ॥ १७ ॥ त्रु० ॥ तेहने बंध शुज नाम केरो, अशुज
विपरीत एहथी ॥ आठ जातिना मदे जे नीचज, गोत्र बांधे तेहथी ॥
॥ १८ ॥ जाति कुलने बे लाल, ॥ रूप ने तप तणो ॥ श्रुत बल लाज बे
लाल, ऐश्वर्य मद घणो ॥ १९ ॥ त्रु० ॥ मद एहनो जो करे नांहि, उंच
गोत्र बांधे सही ॥ दानादिक अंतराय करतो, अंतराय बांधे वही ॥ २० ॥
एणी परे बांधे बे लाल, जीव विशेषथी ॥ आठ प्रकारे बे लाल, कर्म
अशेषथी ॥ २१ ॥ त्रु० ॥ एम सुणी कहे इंद्रशर्मा, स्वामीजी साचुं कह्युं
॥ हवे मोक्षनुं बीज जाखो, तेह किम जाये लह्युं ॥ २२ ॥ पाठक बोले बे
लाल, बीज कहीजीये ॥ सुरमणि सरिखुं बे लाल, सम्यक्त्व लही-
जीये ॥ २३ ॥ त्रु० ॥ लिंग तेहनुं सम संवेगा, दिक ते टाले कर्मने
॥ हवे लहीये तेह सुणजो, सांजले जिनधर्मने ॥ २४ ॥ गुणीनी सं-
गति बे लाल, गुणपक्षपातीउ ॥ तथाजव्यता बे लाल, जोगे अघा-
तीउ ॥ २५ ॥ त्रु० ॥ अनुकंपादिक जावना करे, कर्मक्षय उपशमे
लहे ॥ इंद्रशर्मा कहे साचुं, जेह पाठकजी कहे ॥ २६ ॥ पण प्रजु
जाखो बे लाल, मोक्षमां सुख घणुं ॥ संजम दुःखथी बे लाल, किम
लहे ते पणुं ॥ २७ ॥ त्रु० ॥ किम लहे तव गुरु कहे, सांजल, जिम
औषधथी नीरोगता ॥ अथवा परमार्थे संजम, दुःखनी नहीं जोगता ॥

॥ २८ ॥ शुज परिणाम वे लाल, शुज लेश्या वली ॥ शास्त्रे जाखे वे लाल, संजम सुख केवली ॥ २९ ॥ त्रु० ॥ केवली जाखे वार मासह, चरण हूउं जेहनुं ॥ अनुत्तर विमान सुर जे, सुख उलंघे तेहनुं ॥ ३० ॥ यतः ॥ जे इमे अवताए समणा निग्गंथा, एएणं कस्स तेउलेसं ॥ विइवयंति, मास परिआए समणे निग्गंथे ॥ वाणमंतराणं देवाणं, तेउलेसं विइवयंति, एवं डुमास परिआए, समणे निग्गंथे ॥ असुरिंद वज्जिआणं जवणवासीणं देवाणं, तेउलेसं विइवयंति, तिमास परिआए, समणे निग्गंथे ॥ असुर कुमाराणं देवाणं,तेउलेसं विइवयंति ॥ चउमास परिआए,समणे निग्गंथे॥ गहगण नरकत्त तारारूवाणं, जोईसीयाणं ॥ तेउलेसं विइवयंति, पंचमास परिआए, समणे निग्गंथे ॥ चंदिम सूरियाणं, जोईसिंदाणं जोईसरायाणं ॥ तेउलेसं विइवयंति, बमास परिआए, समणे निग्गंथे ॥ सोहम्मीसाण देवाणं तेउलेसं विइवयंति ॥ सत्तमास परिआए समणे निग्गंथे, सणंकुमार माहिंदिंदाणं देवाणं तेउलेसं विइवयंति ॥ अठमास परिआए, समणे निग्गंथे ॥ बंज लोग लंतगाणं, देवाणं तेउलेसं विइवयंति ॥ नवमास परिआए, समणे निग्गंथे, महा सुक्कसहस्साराणं देवाणं तेउलेसं विइवयंति, दसमास परिआए, समणे निग्गंथे आरणच्चुआणं देवाणं तेउलेसं विइवयंति, इक्कारसमास परिआए समणे निग्गंथे, गेविज्जाणं देवाणं तेउलेसं विइवयंति, बारमास परिआए समणे निग्गंथे, अणुत्तरोववाइणं ॥ देवाणं तेउलेसं विइवयंति, तेण परं सुक्के सुक्काजिजाई जवित्ता, सिवई बुवई मुच्चई सवडुरकाणमंतं करेई, इति जगवतीसूत्रे" तेह उपरे वे लाल, शुक्क-सुख जाखीयुं ॥ शुक्काजिजात्य बे लाल, सुख एम दाखीयुं ॥ ३१ ॥ त्रु० ॥ दाखीउं तिणे मुनिराज सुखीआ, परमार्थे एम धारजे ॥ कहे इंद्रशर्मा तहत्ति स्वामी, कीधो अम उपगार जे ॥ ३२ ॥ इण अवसर वे लाल, पूर्वे आवीउं ॥ नाम चित्रांगद वे लाल, प्रणमे जावीउं ॥ ३३ ॥ त्रु० ॥ जावीउं कहे एम खंरु नवमे, ढाल पन्नरमी जली ॥ पद्म कहे ए सांजलीने, बुद्धि कीजे निरमली ॥ ३४ ॥ सर्व गाथा ॥ ५३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुण प्राणी थिति केटली, बांधे कतिविध बंध; पूछे प्रश्न एणी परे, सयल कहो संबंध ॥ १ ॥ समरादित्य कहे सुणो, आयु विना अव-

धारी; सात करम बांधे सदा, आठ बांधे जब आय ॥ २ ॥ बांधे मोह आयु विना, सूक्ष्म जे संपराय; बंध छनो बाकी रह्यो, एक बंध हवे आय ॥ ३ ॥ शाताबंध उपशांतने, मुनिवर जे क्षीणमोह; संयोगी पण शातने, बांधे एम पडिबोह ॥ ४ ॥ दाखी समय थिति जेहनी, नहीं कषाय जस नाम; शैलेशीगत साधुजी, अबंधी अभिराम ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु दाखीउं, कर्मपयडी अधिकार; जाणो सूत्र थकी जिके, वधतो थाये विस्तार ॥ ६ ॥ चित्रांगद लही चित्रने, मोह टल्यो महाराय; असने प्रभु अनुग्रह कर्यो, शिक्षा धरुं शिर ठाय ॥ ७ ॥ कालवेला थइ अनुक्रमे, प्रणमी गुरुना पाय; राय प्रमुख बहु रीझथी, ठावा पोहोता ठाय ॥ ८ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ जात्रा नवाणुं करीये ॥ विमल गिरि ॥ जात्रा० ॥ ए देशी ॥

॥ जिनशासनगति न्यारी ॥ नविक जन ॥ जिन० ॥ समरादित्य मुनिराज ज्जित निज, क्रिया करे अति सारी ॥ नवि० ॥ तेहज चैत्यमां बीजे दिवसे, बेठा आसन धारी ॥ १ ॥ नवि० ॥ अग्निभूति ब्राह्मण तिहां आयो, विधिशुं वंदनकारी ॥ नवि० ॥ चैत्य वांदी पाठकजी प्रणम्या, बेठो निज दुःख वारी ॥ २ ॥ नवि० ॥ विनय विशेषथी कहे मुज नाखो, देवविशेष निरधारी ॥ नवि० ॥ वली तेहनी सेवाविधि दाखो, तस फल कहो सुखकारी ॥ ३ ॥ नवि० ॥ गुरु कहे देव सुणो तुमे पहेलां, सर्वज्ञ परमोपगारी ॥ नवि० ॥ रागद्वेष वर्जित सुरपूजित, कृतकृत्य अनियत चारी ॥ ४ ॥ नवि० ॥ जन्म जरा नहीं महिमा अचिंतित, देशना घन अनुकारी ॥ नवि० ॥ जस वयणे नवसायर उतरे, श्रद्धावंत नर नारी ॥ ५ ॥ नवि० ॥ तेहनी सेवानो विधि सुणजो, अध्यवसाय शुन धरीये ॥ नविक जन, जिनसेवा एम करीये ॥ ए आंकणी ॥ यथाशक्ति निस्पृहता चित्ते, जिम आणाशुं करीये ॥ ६ ॥ नवि० ॥ तप करीये वली नावीये नावन, निरतिचार व्रत चरीये ॥ नवि० ॥ आणाखंडन कबहु न कीजे, तस फल कर्म विखरीये ॥ ७ ॥ नवि० ॥ देवमहर्द्धिक महा विमाने, अप्सराशुं परवरीये ॥ नवि० ॥ दिव्यनोग नोगवी उत्तम कुल, आवीने अवतरीये ॥ ८ ॥ नवि० ॥ रूप सुंदर विशिष्ट नोग वली, अनुक्रमे धर्म आदरीये ॥ नवि० ॥ केवलज्ञान लही हवे करमे, शैलेशीए

चरीये ॥ ए ॥ ज्ञवि० ॥ पण लघु अक्षर उच्चरण काले, शिवसुंदरी वर वरीये ॥ ज्ञवि० ॥ सांजली पाठकजीनां वयणां, हर्षे अग्निज्ञूति ज्ञरीये ॥ ॥ १० ॥ ज्ञवि० ॥ वली पूछे ते मध्यस्थ होवे, जेह थया वीतराग ॥ ज्ञविक जन, सांजलो तुमे महाज्ञाग ॥ ए आंकणी ॥ ते उपगार करे नहीं कोयने, केम सवि जीवहित लाग ॥ ११ ॥ ज्ञवि० ॥ गुरु कहे सुणो प्रज्ञु देशना देवे, तेहथी होये मोहत्याग ॥ ज्ञवि० ॥ एहथी उपकार कोइ न मोहोटो, कोइ जीवनो नहीं जाग ॥ १२ ॥ ज्ञवि० ॥ अग्निज्ञूति कहे किम उपगारह, उपदेशनी एक वाग ॥ ज्ञवि० ॥ गुरु कहे जो उपदेश करे तो, फल लहे ते वमज्ञाग ॥ १३ ॥ ज्ञवि० ॥ चिंतामणि मंत्र ने वली अग्नि, सेवन जो करे राग ॥ ज्ञवि० ॥ जतनाए सेवे फले तेहने, पण नवि दीये ते सराग ॥ १४ ॥ ज्ञवि० ॥ पण न दीधुं एम नवि कहेवाये, एम सुणी लह्यो वैराग ॥ ज्ञवि० ॥ कहे स्वामी मुज मोह गयो हवे, वाध्यो अधिक सोज्ञाग ॥ १५ ॥ ज्ञवि० ॥ इण अवसर एक अज्ञिनव श्रावक, साथे सखर परिवार ॥ ज्ञविक जन, जिनशासन शोहकार ॥ ए आंकणी ॥ धनरुद्धि नाम करे प्रज्ञुपूजा, द्रौपदी परे निरधार ॥ १६ ॥ ज्ञवि० ॥ बेठो वाचकजीने प्रणमी, पूछे प्रश्न उदार ॥ ज्ञवि० ॥ मुनि त्रिविध त्रिविधे व्रत पच्चरके, अनुमति पण परिहार ॥ १७ ॥ ज्ञवि० ॥ जब श्रावकने करावे थूलथी, अणुव्रतनो उच्चार ॥ ज्ञवि० ॥ तब मुनिने अनुमति किम नावे, ज्ञाखे तव अणगार ॥ १८ ॥ ज्ञवि० ॥ विधि देतां अनुमति नवि आवे, अविधि अनर्थज्ञंमार ॥ ज्ञवि० ॥ शेठ कहे विधि कहो गुरु मुजने, जिम होय मुज उपगार ॥ १ए ॥ ज्ञवि० ॥ गुरु कहे सुणी संवेग सार तुं, स्वरूप कहे संसार ॥ ज्ञवि० ॥ दुःखपरंपर कारण ज्ञव बे, ते दुःख टालणहार ॥ २० ॥ ज्ञवि० ॥ अक्षेपे शिवसुख वली लहीये, संजम एह प्रमाण ॥ ज्ञविक जन, जिनशासन मंमाण ॥ ए आंकणी ॥ प्रथमथी शुज्ञ ज्ञावनथी करीये, इणी परे चरण वखाण ॥ २१ ॥ ज्ञवि० ॥ असमरथ जो कदि तेहनो होये, कर्मउदय परिणाम ॥ ज्ञवि० ॥ अणुव्रत उच्चरवा उजमालह, जाणी अवसर जाण ॥ २२ ॥ ज्ञवि० ॥ उच्चरावे अणुव्रत ते जनने, जोइ प्रशस्त क्षेत्र गण ॥ ज्ञवि० ॥ आगारादिक शुद्ध धरावे, आप मध्यस्थ विनाण ॥ २३ ॥ ज्ञवि० ॥ सुणी कहे शेठ तोहि किम नावे,

अनुमति कहो महेरबाण ॥ नवि० ॥ तव गाथापति चोर दृष्टांते, गुरु करे उत्तरदाण ॥ २४ ॥ नवि० ॥ नवमे खंडे सोलमी ढाले, नाण उत्तम जिम जाण ॥ नवि० ॥ पद्मविजय कहे सुणतां होवे, श्रोताघर कल्याण ॥२५॥ ॥ नवि० ॥ सर्व गाथा ॥ ५६७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वसंतपुर वारु वसे, जितशत्रु राय सुजाण; धारणी शीलनी धारणी, मनहरणी महेराण ॥ १ ॥ नाटककला निरखी नृपे, वर दीधो सुविशेष; राणी कहे रुमी परे, लखी आपो वर लेख ॥ २ ॥ करीए महोत्सव कौमुदी, अंतेउर इछाय; आणा दीये अवनीपति, अनुक्रमे सो दिन आय ॥ ३ ॥ ईलापति उद्घोषणा, करे सुणजो सहु कोय; नर जे रहेशे नयरमां, जमघर जाशे सोय ॥ ४ ॥ दुर्लज आणा देखीने, पुरुषवर्ग पुर वहार; निर्णय करीने नीकल्यो, इण अवसर अवधार ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ मीठा मीठुं बोलीने शुं रीझवो रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुणो शेठजी वात सोहामणी रे, तेह नयरमां शेठ शिरोमणी रे ॥ सु० ॥ षट् पुत्र तेहने लायक घणा रे, व्यवहार करे सोहामणा रे ॥ १ ॥ सु० ॥ नवि नीकलीआ ते व्यग्रता रे, दरवाजा दीये वली शीघ्रता रे ॥ सु० ॥ नृपनयथी ते छाना रह्या रे, उछव कस्यो रयणीए उमह्या रे ॥ २ ॥ सु० ॥ बीजे दिन नृप आणा करे रे, जुउ रह्यो कोइ छे छानो घरे रे ॥ सु० ॥ जोइने ते पण आवी कहे रे, शेठना षट् पुत्र घरमां रहे रे ॥ ३ ॥ सु० ॥ नृप कोपे वध आणा दीये रे, नर आवी एम वदीजीये रे ॥ सु० ॥ वधथानक लेइ गया हवे रे, तस तात बीहीनो नृप विनवे रे ॥ ४ ॥ सु० ॥ अपराध खमो ए स्वामी तुमे रे, मूको पुत्र न फरी करीये अमे रे ॥ सु० ॥ वली दूजो पण करे एणी परे रे, तेणे नृप नवि मूके करगरे रे ॥ ५ ॥ ॥ सु० ॥ शेठ वार वार एम जाखतां रे, वडो पुत्र मूक्यो बहु आखतां रे ॥ सु० ॥ बहु मान्यो शेठे तेहने रे, बीजाने तो नरपति हणे रे ॥ ६ ॥ ॥ सु० ॥ शेठने तो सुत मास्या तणी रे, अंशे पण अनुमति नवि सुणी रे ॥ सु० ॥ दृष्टांत कह्यो उपनय सुणो रे, नृपति सम श्रावकने मुणो रे ॥ ७ ॥ सु० ॥ षट् पुत्र समा षट्काय छे रे, शेठ तुल्य मुनिवर थाय छे रे ॥ सु० ॥

नृप विनति सम मुनिदेशना रे ॥ नवि मुनिपणुं लीये शुभ वेशना रे ॥ ७ ॥ ॥ सु० ॥ तव श्रावक व्रत उच्चरावतां रे, नवि असंजम अनुमति भावतां रे ॥ सु० ॥ कह्यो अवधिदोष एणी परे रे, तिणे ज्ञानपूर्वक किरिआ करे रे ॥ ए ॥ सु० ॥ यतः "पढमं नाणं तउ दया, एवं चिठइ सव संजए ॥ अन्नाणी किंकाही, किंवा नाहिछेय पावगं ॥ १ ॥" धणऋद्धि शेठ हरखीने कहे रे, उपदेश तुम सुणी चित्त गहगहे रे ॥ सु० ॥ एक अशोकचंद नामे वली रे, पूर्वे आव्यो नमे लली लली रे ॥ १० ॥ सु० ॥ पूछे प्रश्न थोडे परमादथी रे, दारुण विपाक विषादथी रे ॥ सु० ॥ स्वामी ते तिम के वली अन्यथा रे, सुणीये छीये लोक मांहि यथा रे ॥ ११ ॥ सु० ॥ गुरु कहे जे आगममां कह्या रे, ते तेमहीज जाणो प्राणी लह्या रे ॥ सु० ॥ जे आगम बाह्य कहे घणा रे, ते तो याद्दच्छिक प्राणी सुण्या रे ॥ १२ ॥ ॥ सु० ॥ पण जिनवर जूठ बोले नहीं रे, कहे अशोकचंद सुणजो अहीं रे ॥ सु० ॥ केइ जीव घणी हिंसा करे रे, पापथानक सघलां आदरे रे ॥ १३ ॥ सु० ॥ तेहने धन संपदा सुंदरू रे, वली भोग आयु दीरघ धरू रे ॥ सु० ॥ नवि अनुबंध त्रुटे तेहनो रे, सहु वचन ते माने जेहनो रे ॥ १४ ॥ सु० ॥ अपराध अल्प एक प्राणीआ रे, सहु विपरीत वात दुःखखाणीआ रे ॥ सु० ॥ गुरु कहे सुणी कर्मविचित्रता रे, जस पापानुबंधी कर्मजुक्तता रे ॥ १५ ॥ सुं ॥ दुर्गतिगामी क्षुद्र सत्त्व छे रे, संसार मांहि एकत्व छे रे ॥ सु० ॥ अनरथ भाजन करी पापने रे, पापे भरे पूरण आपने रे ॥ १६ ॥ सु० ॥ तिणे इष्टलाभ लही जाय छे रे, दुर्गतिमां दुःख बहु थाय छे रे ॥ सु० ॥ विपरीतने विपरीत जाणीये रे, अशोकचंद भ्रम नाणीये रे ॥ १७ ॥ सु० ॥ कहे अशोकचंद स्वामी खरुं रे, तुमे भाख्युं ते अंगीकरुं रे ॥ सु० ॥ अज्ञान गयुं प्रभु माहरुं रे, नहीं अणजाण्युं कांइ ताहरुं रे ॥ १८ ॥ सु० ॥ इणे अवसरे पूरवे आवीउ रे, त्रिलोचन प्रणमे भावीउ रे ॥ सु० ॥ कर जोडीने प्रश्न पूछे हवे रे, प्रभु भाखो मुज संशय जवे रे ॥ १ए ॥ सु० ॥ ढाल सत्तरमी खंड नवमे कही रे, समरादित्य रास मांहे लही रे ॥ सु० ॥ कहे पद्मविजय सुणजो सवे रे, जे पूछे तस उत्तर हवे रे ॥ सु० ॥ २० ॥ ५ए२ ॥

॥ दोहा ॥

अनयदान एक आखीउं; उपष्टंन वली अन्य; एहमां कोण कहुं अवल, पाठक कहो कयपुण्य ॥ १ ॥ वाचकजी कहे परवडुं, प्रथम अनय परधान, चोर दृष्टांत सुणो चतुर, कहीये ते देइ कान ॥ २ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ उंधव माधवने कहेजो ॥ ए देशी ॥

॥ ब्रह्मपुर नयरे नरराय, कुलध्वज नामे विख्याय, कमलुआ पटराणी थाय के ॥ १ ॥ नवि तुमे अनयदान देजो, म हणो म हणो एम कहेजो ॥ नवि० ॥ ए आंकणी ॥ तारावली प्रमुखा राणी, बीजी पण रूपनी खाणी, क्रीडे ज्युं इंद्र इंद्राणी रे ॥ २ ॥ नवि० ॥ सहु राणीशुं एक दिन्न, बेठो गोंखे धरी मन्न, शोगठ पासे रमे धन्न के ॥ ३ ॥ नवि० ॥ चोर लाव्यो तिहां कोटवाल, बांध्यो गाढ बंधन जाल; कस प्रमुखे अति दुःखाल रे ॥ ४ ॥ नवि० ॥ विनति करे नृपने एम, परधन लीधुं इणे नेम, करीये स्वामी कहो तेम के ॥ ५ ॥ नवि० ॥ नूपति कहे एहने मारो, चाल्यो तलार तिणी वारो, तसकर रोयो दुःख नारो रे ॥ ६ ॥ नवि० ॥ प्रथम चोरी मार्यो जाउं, मनना मनोरथ नवि पाउं, एमज अधन्य जाये आउ रे ॥ ७ ॥ नवि० ॥ सुणी कहे राणीउं सुणो राय, चोरना मनोरथ नवि थाय, पण जो करो तुमे सुपसाय रे ॥ ८ ॥ नवि० ॥ एक राणी कहे मुज आज, आपो जेम पूरुं काज, ततक्षण आपे महाराज रे ॥ ९ ॥ नवि० ॥ सहस्रपाकथी मरदाव्यो, सुगंध उष्ण जले न्हवराव्यो, क्षौमजुगल तस पहेराव्यो रे ॥ १० ॥ नवि० ॥ दश सहस द्रव्य एहने लागो, एटलोज द्रव्य माहारे पागो, बीजीए तेड्यो धरी रागो के ॥ ११ ॥ नवि० ॥ कामित नोजन तेणे दीधुं, आसवपान वली सीधुं, जक्षकर्दम लेपन कीधुं के ॥ १२ ॥ नवि० ॥ आप्यो वली एक कंदोरो, कीधो वली तेहने मोहरो, एटलोज द्रव्य माहारे कोरो के ॥ १३ ॥ नवि० ॥ लेखे वीश सहस गणीउं, वली बीजीए पण एम नणीउं; आनूषणथी ततु मणीउं के ॥ १४ ॥ नवि० ॥ तंबोल आपे वली सारो, लाख द्रव्य इणे उवार्यो, एटलुं मुज बे अवधारो के ॥ ॥ १५ ॥ नवि० ॥ पटराणीने नृप नाषे, तुं कांइ नवि दीये श्ये आशे,

सा कहे कांय न मुज पासे के ॥ १६ ॥ जवि० ॥ राय कहे तुं पटराणी, जीव अधिक तुं मुज जाणी, ताहारे शी वातनी हाणि के ॥ १७ ॥ जवि० ॥ जे मागे ते तुज आपुं, ताहरुं वयण हृदय थापुं, कहे तेहनां डुःखमां कापुं के ॥ १८ ॥ जवि० ॥ सा कहे कीधो सुपसाय, आपुं एहने मन जाय, जेम सुख तिम करो कहे राय के ॥ १९ ॥ जवि० ॥ सा कहे चोरने सुण जाइ, उग्यां अकारय फूल आइ, दीठां कहो ए चित्त लाइ के ॥ २० ॥ जवि० ॥ पश्चात्तापथी कहे चोर, नवि करुं एहवुं कोइ ठोर, जिणथी डुःख होय घोर के ॥ २१ ॥ जवि० ॥ दीधुं अजय कहे देवी, नृप कहे को न करे एहवी, चोर कहे तुं मा जेहवी के ॥ २२ ॥ जवि० ॥ राणी हरखी ततखेव, बीजी तो हसती हेव, दान दीधुं बहु करी सेव के ॥ २३ ॥ जवि० ॥ राणी कहे किम करो हांसी, पूछो चोरने सुविलासी, कहे चोरने कहो विमासी के ॥ २४ ॥ जवि० ॥ चोर कहे में नवि जाण्युं, मरणना जयथी सुख ठाणुं, स्वस्थ थयो हवे परमाणु के ॥ २५ ॥ जवि० ॥ सांजली सहु राणी माने, ए उपनय कह्यो व्याख्याने, हरख्यो त्रिलोचन सुणी काने के ॥ २६ ॥ जवि० ॥ स्वामी सत्य कह्युं एह, एहमां कांय न संदेह, सहुए गया निज निज गेह के ॥ २७ ॥ जवि० ॥ नवमे खंडे ए ढाल, अढारमी कही सुविशाल, उत्तमविजय तणो बाल के ॥ २८ ॥ ॥ जवि० ॥ सर्व गाथा ॥ ६२२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देश देशे एम देशना, देता तेह दयाल; काल केतोएक अतिक्रम्यो, करुणावंत कृपाल ॥ १ ॥ अवंतीदेशे आवीआ, रेफवाह पुरसार; शिष्य संपदा सुगुणशुं, उद्याने अवधार ॥ २ ॥ एकांते जइ आदर्यो, अशोक वने अजिराम; काउस्सग्ग तिहां जावन करे, एकज आतमराम ॥ ३ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ टोडरमल्ल जींत्यो जी ॥ ए देशी ॥

॥ एकांते काउस्सग्ग रह्यो रे, तिहां आव्यो चंमाल ॥ मोहराय जींत्यो जी, जींत्यो जींत्यो वीर्यउल्लास ॥ मोह० ॥ जींत्यो जींत्यो चरणविलास ॥ मोह० ॥ जींत्यो जींत्यो नाणप्रकाश ॥ मोह० ॥ ए आंकणी ॥ गिरिसेन डुष्ट ते चिंतवे रे, कोपे थइ विकराल ॥ १ ॥ मो० ॥ मुज बहु दिन रजलावीयो

रे, आज दीठो नयणेण ॥ मो० ॥ इहां मारुं अवसर अछे रे, जिम मरे अति दुःखेण ॥ २ ॥ मो० ॥ लाव्यो जूनां लुगडां रे, विट्युं रुषिनुं अंग ॥ मो० ॥ अलसी तेल वली रेडीयुं रे, रौद्रध्यान एकंग ॥ ३ ॥ मो० ॥ जाणयुं अग्नि प्रजाल्यो तिहां किणे रे, मुनिवर ध्यानमां लीन ॥ मो० ॥ ध्याननो संपण नहीं चित्तमां रे, दाह थयो जब दीन ॥ ४ ॥ मो० ॥ ध्यानने संक्रम थयो तदा रे, चिंतवे तव मुनिराय ॥ मो० ॥ अहो ए शुं अनरथ तणो रे, हेतु थयो इण ठाय ॥ ५ ॥ मो० ॥ दुर्गति कारण तेहने रे, अहो दारुण परिणाम ॥ मो० ॥ अथवा ए चिंता किशी रे, समतानुं इहां काम ॥ ६ ॥ मो० ॥ सामायक छे माहरे रे, वलगा निर्मल ध्यान ॥ मो० ॥ क्षपकश्रेणी महा सामायक ऊपनुं रे, अपूर्वकरणे तान ॥ ७ ॥ मो० ॥ हणतो कर्मशत्रु प्रत्ये रे, तिहां उल्लसी रे, वाध्यो वीर्यउल्लास ॥ मो० ॥ ध्यान अनले मोह इंधणां रे, बाली संसारी दुःख तास ॥ ८ ॥ मो० ॥ विविध लब्धि तिहां ऊपनी रे, जोग महिमा ए कीधां राख ॥ मो० ॥ निर्मल थयो निज आतमा रे, घातीकर्म खपाय ॥ दाख ॥ ए ॥ मो० ॥ निर्मल थयो निज आतमा रे, समरादित्य रुषिराय ॥ १० ॥ मो० ॥ मो० ॥ केवलनाण ते पामीआ रे, कृतकृत्य थया अणगार ॥ मो०॥ उत्सव रंग सहु प्रयास सफलो थयो रे, कृतकृत्य थया अणगार ॥ ११ ॥ मो० ॥ मुनिवरना महिमा वधामणां रे, प्रगट्यां निज आगार ॥ मो० ॥ वेलंधर कुमारनुं रे, चलीयुं तिहां थकी रे, तेह क्षेत्र आसन्न ॥ मो० ॥ अवधिनाणथी जोइने रे, लेइ कुसुमनी राशि ॥ आसन्न ॥ १२ ॥ मो० ॥ अवधिनाणथी जोइने रे, आवे तिहां उल्लास ॥ १३ ॥ मो० ॥ मो० ॥ देव अनेकशुं परिवर्यो रे, आवे तिहां उल्लास ॥ मो० ॥ काढी नाख्यां प्रणमी कुसुमवृष्टि करे रे, ठलवे अग्निने ताम ॥ मो० ॥ क्रोधाणो गिरिसेन तदा चूथरां रे, करतो वली परणाम ॥ १४ ॥ मो० ॥ क्रोधाणो गिरिसेन तदा रे, ए श्यो वात विचार ॥ मो०॥ वेलंधर कहे पापीआ रे, रे रे दुष्ट आचार ॥ १५ ॥ मो० ॥ रे पुरुषाधम नीच तुं रे, तुं महाशोचण जोग ॥ मो० ॥ मुख नवि जोइये ताहरुं रे, होवे पाप संयोग ॥ १६ ॥ मो० ॥ एह काम तें शुं कर्युं रे, नहीं आरजनुं काम ॥ मो० ॥ इण अवसर तिहां आवीउ रे, मुनिचंद राय उद्दाम ॥ १७ ॥ मो० ॥ नर्मदा प्रमुखा राणीउ रे, साथे महा सामंत ॥ मो० ॥ भक्ति भाव धरी वंदीया रे, आणंद अंग अनंत ॥ १८ ॥ मो० ॥ वेलंधरने पूछीयुं रे, श्यो ए वात बनाव ॥ मो० ॥ वेलंधर

कहे पापीने रे, निज आतम दुःख दाव ॥ १ए ॥ मो० ॥ अमृतनूत शत्रु नहीं रे, मुनिने अगनि प्रयोग ॥ मो० ॥ प्राणांत अध्यवसायथी रे, नहीं एहने देवलोग ॥ २० ॥ मो० ॥ राय कहे मातुं कह्युं रे, कारण कहो इहां कांय ॥ मो० ॥ वात्सल्य सहु जंतु तणा रे, मोदहेतु मुनिराय ॥ २१ ॥ ॥ मो० ॥ पीमा न करे कोयने रे, शीतलता जिम चंद ॥ मो० ॥ नवि लहीये कारण कीशुं रे, कहे वेलंधर इंद ॥ २२ ॥ मो० ॥ नवमे खंडे ए कही रे, उंगणीशमी वर ढाल ॥ मो० ॥ विघ्न थयां सवि वेगलां रे, पद्मने मंगलमाल ॥ २३ ॥ मो० ॥ सर्व गाथा ॥ ६४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जाणुं अशुन्न उदय जिके, दुःखहेतु दुःखरूप; नव अनंत करवा नणी, कारण दुर्गतिकूप ॥ १ ॥ नृप कहे जुठुं नहीं जरा, पण पूछो मुनिपाय; वेलंधर कहे वर कह्युं, सुणजो सहु समवाय ॥ २ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ राग रामग्री ॥ चोसठ मणनुं मोती जगमगे रे ॥ ए देशी ॥

॥ सोहम इंदो आवे इणी समे रे, ऐरावण हाथी शिर बेठो तेह रे ॥ केवलज्ञानना महिमा कारणे रे, देवसमूहे परवरीउं वली जेह रे ॥ १ ॥ रुषिजी चरित्रे सहु जन मोहीउं रे ॥ ए आंकणी ॥ किन्नर गाय ने नाचे अप्सरा रे, हरषे आवी कीधो पृथवी शोध रे ॥ गंधोदक सिंची कुसुमे पूजतां रे, कनककमल ठवे करता विघ्न निरोध रे ॥ २ ॥ रुषि० ॥ देवता ने देवी आणंद्यां सहु रे, बेठा पद्मे समरादित्य मुणींद रे ॥ सोहम इंदो स्तवना एम करे रे, हे स्वामी तुम नाठो मोह नरिंद रे ॥ ३ ॥ ॥ रुषि० ॥ जीत्या कर्मशत्रु क्लेश दूरे गया रे, कृतारथ हुआ तुमो नगवान रे ॥ त्रोमी नववल्लि शिवपुर पामीया रे, उग्यो रवि जलहलतो केवलज्ञान रे ॥ ४ ॥ रुषि० ॥ सांनली एम स्तवना राय ने देवता रे, तिम सामंत प्रमुख वंदे मुनिना पाय रे ॥ अहो अहो मुनिवरनां कारय निपनां रे, अप्सरा नाचे किन्नर सुर गुण गाय रे ॥ ५ ॥ रुषि० ॥ जनपदनां लोक ते आव्यां सांनली रे, हरखित राणा वंदे मुनि महाराज रे ॥ गिरिसेन चिंते महानुनावना रे, अहो एहनी में कीधुं काम अकाज रे ॥ ६ ॥ रुषि० ॥ आक्षेप्युं बीज कुशल पक्षनुं रे, मोटानी संगति निष्फल नवि थाय रे ॥

पत्थर मारंतां आपे फल प्रत्ये रे, अंबादिक जे उत्तम वृक्ष कहाय रे ॥ ७ ॥ ॥ ऋषि० ॥ चंदन कापतां आपे वासना रे, मुनि अपकारे पाम्यो गुणनी राशि रे ॥ गिरिसेन चाल्यो हवे निज घर भणी रे, मुनिवरे जाण्यो देशनानो अवकाश रे ॥ ८ ॥ ऋषि० ॥ जीवने कर्मनो जोग अनादि छे रे, कनकोपल दृष्टांते तास विकार रे ॥ उपजे बहु जोनि पामे कदर्थना रे, वली संयोग विजोग तणो नहीं पार रे ॥ ९ ॥ ऋषि० ॥ जरा ने मरणनी मोहोटी आपदा रे, कुपथ्य सेवे न लहे हित अहित रे ॥ मूढता छांमो ते कारण भणी रे, तत्त्व विचारो कीजे सहु जन मित्त रे ॥ १० ॥ ऋषि० ॥ पूजो देव गुरुने दान विधे दीउं रे, पालो शील करो तप जप अभ्यास रे ॥ भावना भावो ध्याउं शुभ ध्याननें रे, छांडो कदाग्रह कर्ममेल करो नाश रे ॥ ११ ॥ ऋषि० ॥ कर्म अभावे निर्मल आतमा रे, तेहथी कांइ नवि पामे विकार रे ॥ पामे अव्याबाध सुख निज क्षेत्रमां रे, तेणे उद्यम कीजे निज तत्त्व विचार रे ॥ १२ ॥ ऋषि० ॥ देशना सुणीने गुण पाम्या घणा रे, वंदी पोहोता इंद्र ते निज आवास रे ॥ मुनिचंद राजा गुरुने विनवे रे, तुम उपसर्ग कस्यो कहो संबंध तास रे ॥ १३ ॥ ऋषि० ॥ हेतु तो दीसे स्वामी को नहीं रे, मुनि बोल्या मोहोटो अकुशल अनुबंध रे ॥ गुणसेन अग्निशर्मा भव थकी रे, मांमीने कीधो सघलो संबंध रे ॥ १४ ॥ ॥ ऋषि० ॥ सांभलीने राजा सामंत देवीउं रे, तिम वेलंधर लह्या संवेग रसाल रे ॥ चिंते सहु अहो अहो दोष अन्नाणनो रे, अज्ञाने दारुण दुःख लहे विशाल रे ॥ १५ ॥ ऋषि० ॥ वेलंधर पूछे आगल एहने रे, श्यो निपजशे स्वामीजी परिणाम रे ॥ केवली भाषे जाशे नरगमां रे, तीव्र वेदना भोगवशे ते ठाम रे ॥ १६ ॥ ऋषि० ॥ तिहांथी अनंतो संसार एहने रे, नरमदा राणी भाखे कहो प्रभु तेह रे ॥ नरक ते केहवां केहवी वेदना रे, मुनि कहे सांभल मांहि गोल ते एह रे ॥ १७ ॥ ऋषि० ॥ बाहिर चउरंसा घोर अंधारडुं रे, हेठल खुरप्प आकारे महादुर्गंध रे ॥ मेद वसा ने कर्दम रुधिरनो रे, अशुचि ने कर्कश फरस संबंध रे ॥ १८ ॥ ऋषि० ॥ वर्णव इत्यादिक बहु छे शास्त्रमां रे, ते तो कहेतां थाये अति विस्तार रे ॥ नारकी दुःखीआ वेदना अति सहे रे, आंख उघाडे नहीं सुख तेती वार रे ॥ १९ ॥ ऋषि० ॥ निरंतर बीहीता रोग घणा तनु रे, ताता तरु-

आनुं वली करावे पान रे ॥ लोहनी पंचाली ज्ञष्ण वाये दीये रे, केतां कीजे दुःखनां इहां व्याख्यान रे ॥ २० ॥ ऋषि० ॥ बीजे रे अंगे जाखी छे घणी रे, सांजली सघलुं धूजे आपणुं अंग रे ॥ तिहांथी जाणजो सांजली बोलती रे, सुलसमंजरी राणी धरी मनरंग रे ॥ २१ ॥ ऋषि० ॥ कहेवां विमान देवनां देवता रे, केहवा होय ते जाखो परम दयाल रे ॥ केवली जाखे पद्मविजये कही रे, नवमे खंडे एह वीशमी ढाल रे ॥ ॥ २२ ॥ ऋषि० ॥ सर्व गाथा ॥ ६७२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनि कहे सांजल धर्मिणी, विचित्र संठाण विमान; रत्नमयी अति निर्मलां, अमररक्षित असमान ॥ १ ॥ चंदन हाथा चरचीआ, तोरण द्वारे तब; चंदनघट थाप्या चतुर, ज्वले धूपघटी जब ॥ २ ॥ फूल वीछायां फूटरां, माल्य बहु महकाय; अद्भुत दीसे अप्सरा, शब्द त्रुटित सुखदाय ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ वीरमाता प्रीतिकारणी ॥ ए देशी ॥

॥ देवता अनुपम सुखधरा, विचित्र चिह्न धरनारा ॥ रूपवंता ने महर्द्धिका, मने काम करनारा ॥ १ ॥ दे० ॥ महावली महाप्रजावी कह्या, गले पहेरीआ हार ॥ बांहे बाजुबंध बहेरखा, कटक जमित मनोहार ॥ २ ॥ दे० ॥ कुंमल मुगट शिर शोहता, मुद्रा ने वली माला ॥ दिव्य वर वस्त्र पहेर्यां जिणे, घणुं हृदय विशाला ॥ ३ ॥ दे० ॥ मज्जन लेपन दिव्य ते, तनुजद्धि अति दीपे ॥ वरण गंध फरस संघयण ते, सहु तेजने जींपे ॥ ४ ॥ दे० ॥ दिव्यसंस्थान दिश दिश प्रत्ये, निज कांते अजुआले ॥ आंख मिंचे नहीं ते कदा, पूरवनो जव संजाले ॥ ५ ॥ दे० ॥ गीत वाजित्र नित्य नित्य होये, दिव्यजोग जोगवता ॥ रंगमां काल काढे सदा, अप्सराशुं जोगवतां ॥ ६ ॥ दे० ॥ धरणीथी च्यार अंगुल सदा, अधर ते इहां चाले ॥ कुसुममाला करमाये नहीं, तूठा वांछित आले ॥ ७ ॥ दे० ॥ आहार नहीं कवलनो तस कदा, नहीं हाम ने चाम ॥ ग्रंथमां वरणव बहु कर्यो, जोजो तुमे तेह ठाम ॥ ८ ॥ दे० ॥ राणी सुलोचना तव कहे, प्रजु सुर सुख एह ॥ सिद्धने सिद्ध सुख एहथी, किम छे अति रेह ॥ ए ॥ दे० ॥ गुरु कहे धर्मशीला सुणो, एह अंतरं

मोटुं ॥ देव तो कांइ सुखीआ नथी, सुख ते पण खोटुं ॥ १० ॥ दे० ॥ जेहने अंते मरवुं पडे, सुख ते केम कहीये ॥ बहु कषायी परवशपणुं, आर्त्तध्यान नित्य लहीये ॥ ११ ॥ दे० ॥ विषय तृष्णा अति आकरी, महामोह अज्ञान ॥ गर्दन्नी कुतरी प्रमुखना, आवे गर्न्नने गान ॥ १२ ॥ ॥ दे० ॥ थाये एकेंद्री वली पाधरो, ईर्ष्या घणी तास ॥ एम दुःख जेहथी पामीये, तेहने सुख किम वास ॥ १३ ॥ दे० ॥ यतः ॥ "कहं तं नणइ सुरकं, सुचिरेणवि जस्स दुक्कमल ॥ अईजं च मरणावसाणे, नव संसाराणुबंधं च ॥ १ ॥ "एहनुं जे सुख दाखीउं, गांधर्वादिक गान ॥ तेह परमार्थथी दुःख लहो, जे अथिरता मान ॥ १४ ॥ दे० ॥ यतः ॥ "सवं विलवियं गीयं, सवं नट्टं विरूंबियं ॥ सवे आन्नरणा नारा, सवे कामा दुहावहा ॥ १ ॥" खंम नवमे एकवीशमी, एह वरणवी ढाल ॥ श्री समरादित्यरासमां, कहे पद्म रसाल ॥ १५ ॥ दे० ॥ सर्व गाथा ॥ ६ए० ॥

॥ दोहा ॥

॥ परमारथथी पेखीये, सुंदर जाणो सिद्ध; सुख पण तेहनुं सहजनुं, रति जस आतम ऋद्धि ॥ १ ॥ ते सुख थाये तप थकी, जीरण मलक्षय जाय; तपीये तप ते कारणे, आतम शुद्ध उपाय ॥ २ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ तीरथपति अरिहा नमुं ॥ ए देशी ॥

॥ तपपद सेवीये नविजना, द्वादश नेद सुचंगा जी ॥ अणसण ने ऊणोदरी, वृत्तिसंक्षेप मनरंगो जी ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ मनरंगथी रसत्याग करीये, कायकिलेष संलीनता ॥ षट् नेद तपना बाह्य जाणो, कीजीये विणु दीनता ॥ २ ॥ अशननो त्याग अणसण कह्युं, तेहना दोय प्रकारो जी ॥ अल्पकालिक ने यावत् कथा, हवे ऊणोदरी धार जी ॥ ३ ॥ त्रु० ॥ धारीये त्रण नेद तेहना, पहेली उपगरणां तणी ॥ बीजी अशननी द्रव्यथी ए, नावे क्रोधादिक नणी ॥ ४ ॥ द्रव्य क्षेत्र काल नावथी, वृत्तिसंक्षेप चउ नेय जी ॥ नेद अनेक रसत्यागना, विगय प्रमुख जे अमेय जी ॥ ५ ॥ त्रु० ॥ अनेक वीरासनादिकथी, लोचादिक कायक्लेश ए ॥ संलीनता चउ नेद समजो, सुणो तेह विशेष ए ॥ ६ ॥ इंद्रियनी संलीनता, तिम वली योगनी जाणो जी ॥ एकांत थानक सेववुं, कषाय

लीनता वखाणो जी ॥ ७ ॥ त्रु० ॥ हवे कहुं अभ्यंतर भेद षट् तप, प्रायश्चित्त दश जाति ए ॥ बीजो विनय प्रकार भाख्यो, भेद तेहना सात ए ॥ ८ ॥ ध्यान ते दोयने वरजवां, आरत रोदर नामे जी ॥ धर्म शुक्ल दोय आदरो, वेयावच्च दश ठामे जी ॥ ९ ॥ त्रु० ॥ सफाय तेम पांचे प्रकारे, काउस्सग्ग हवे भाखीये ॥ द्रव्य भाव दुभेद द्रव्यथी, चार भेदे आखीये ॥ १० ॥ तनुउपधी गण आहारनो, काउस्सग्ग द्रव्यथी जाणो जी ॥ कर्म कषाय संसारथी, त्रिविध भाव मन आणो जी ॥ ११ ॥ त्रु० ॥ आणो द्वादश भेद तप ए, कर्म तपावे ते तप कह्यो ॥ कर्मक्षय कारणे करीये, एह परमारथ लह्यो ॥ १२ ॥ इह भव पण एह तपथकी, विघन ते नाठां जाय जी ॥ लक्ष्मी थिर थइने रहे, कीर्त्ति दश दिश थाय जी ॥ १३ ॥ त्रु० ॥ थाय कीर्त्ति सहज गुण ए, पण न तस अरथे करे ॥ चउ नाण संजुत तीर्थपति पण, कर्म खपवा आदरे ॥ १४ ॥ कर्म निकाचित नवि होये, तस उपक्रम कह्यो ग्रंथे जी ॥ जाय निकाचित पण जिके, साधंतां शिवपंथे जी ॥ १५ ॥ त्रु० ॥ शिवपंथ साधे तेह जाणे, मुफ अणाहारी धर्म ए ॥ आहार कलंक अनादि भवनुं, जेहथी बहु कर्म ए ॥ १६ ॥ दृढप्रहारी ने भीमजी, श्रीमानदेव सूरीशो जी ॥ श्रीजगच्चंद्र सूरि वली, गजसुकमाल मुनीशो जी ॥ १७ ॥ त्रु० ॥ ढंढणा मुनि तेम धना ऋषिजी, कुरगडू तिम जाणीए ॥ केइ बाह्य अंतर दोय करतां, केइ अभ्यंतर ठाण ए ॥ १८ ॥ केवल बाह्य न फल कह्युं, फल ते शमता सारो जी ॥ निर्वांछकताए जे करे, ते पामे भवपारो जी ॥ १९ ॥ त्रु० ॥ बहु लब्धि पामे अनुक्रमे एम, क्षपकश्रेणीमां चढे ॥ बहु वीर्यउल्लासे करीने, कर्मरिपु साथे वढे ॥ २० ॥ घाती चारनो क्षय करी, पामे केवलज्ञानो जी ॥ विहरीने महीमंमले, करे उपगार जिम भानो जी ॥ ॥ २१ ॥ त्रु० ॥ भानु परे उपगार करीने, आयु अंत आवे जदा ॥ योग रूंधी ध्यान तेहज, शैलेशी आवे तदा ॥ २२ ॥ पांच लघु अक्षर समो, काल रही कर्म चार जी ॥ वेदनी आयु नाम गोत्र जे, अंतसमय क्षयकार जी ॥ २३ ॥ त्रु० ॥ क्षय करी सिद्धि वस्या समये, नवमे खंडे ढाल ए ॥ बावीशमी ए पद्मविजये, सुणतां मंगलमाल ए ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ७१६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिद्धसरूप बहु शास्त्रमां, वचन अगोचर वात; तेहनो लव जाखुं तथा, जेहनुं सुख निज जात ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ चांदलीउने ऊग्यो रे, हरिणी आथमी रे ॥ ए देशी ॥

॥ जवि तुमे वंदो रे सिद्धस्वामी जणी रे, गुण प्रगटथा एकत्रीश ॥ ज्ञानावरणक्षये पण गुण थया रे, ज्ञान अनंत जगीश ॥ १ ॥ जवि० ॥ दरशनावरण क्षये गुण नव थया रे, वेदनी नाशथी दोय ॥ क्षायक दरशन चारित्र गुण तथा रे, मोहक्षये दोय होय ॥ २ ॥ जवि० ॥ आयु अजावे चउ गुण निपना रे, नाम ने गोत्रनो नाश ॥ दो दो गुण पण अंतराय क्षय करी रे, एम एकत्रीश गुणराशि ॥ ३ ॥ जवि० ॥ वरण गंध रस फरस अजावथी रे,गुण पण दोय पण आठ ॥ पांच संठाण गयाथी पण वली रे, ए पण आवश्यके पाठ ॥ ४ ॥ जवि० ॥ वेद गयाथी त्रण गुण पामीआ रे, वली अशरीर असंग ॥ अरुह थया एम एकत्रीश जाणीये रे, ध्यान करो रक्त रंग ॥ ५ ॥ जवि० ॥ अथवा सामान्ये गुण आठ छे रे, केवलज्ञान अनंत ॥ केवलदर्शन अव्याबाधने रे, क्षायिक समकितवंत ॥ ६ ॥ ॥ जवि० ॥ अक्षयस्थिति ने अरूपी जे थया रे, अगरुलघु अवगाह ॥ वीर्य अनंतुं विघ्न विनाशथी रे, कीजे एहज नाह ॥ ७ ॥ ॥ जवि० ॥ त्रण काल सुरसुख जेलुं करी रे, ठवीये नजप्रदेश ॥ एम सहु नजदेशे ठवी तेहनो रे, कीजे वर्ग विशेष ॥ ८ ॥ जवि० ॥ इणपरे वर्ग अनंत वेला करो रे, करीये सहु समुदाय ॥ पण अव्याबाध सुख अंशे नहीं रे, जेह बिजाति कहाय ॥ ए ॥ जवि० ॥ जिहां एक सिद्ध तणी अवगाहना रे, तिहां रहे सिद्ध अनंत ॥ फरसित वली निज देश प्रदेशने रे, असंख गुणा जगवंत ॥ १० ॥ जवि० ॥ पण नवि जीम होये ने पीमा नहीं रे, एह अरूप स्वजाव ॥ अविनाशी शाश्वत सुखनो धणी रे, न रमे जे परजाव ॥ ११ ॥ जवि० ॥ अजर अमर अकलंकी जे थया रे, सवि गुण आविरजाव ॥ नवि निज आतमदेशे परमाणुउ रे, रमता जेह स्वजाव ॥ १२ ॥ जवि० ॥ अचल अखंम अलेशी अरुज वली रे, जेह अजोगी अणाहार ॥ साध्य रूप सवि जविजन वृंदने रे, जवसायर लह्या

पार ॥ १३ ॥ नवि० ॥ शोग वियोग संयोग ते वेगला रे, अनंत चतुष्टयी धार ॥ आतम गुणनी पूरणता लह्या रे, प्रणमो तुमे वारंवार ॥ १४ ॥ नवि० ॥ थिरता पण निज गुण मांहे थइ रे, तिणे चारित्र स्थिर रूप ॥ अफूसमाण गति लोकाग्रे गया रे, सादि अनंत सरूप ॥ १५ ॥ नवि० ॥ वाच्य नहीं संठाण तिणे करी रे, कह्युं अनिछ संठाण ॥ सिद्ध अनंतर प्रथम समय कह्या रे, परंपर पछे वखाण ॥ १६ ॥ नवि० ॥ चरम नवे जे निज अवगाहना रे, तेहमां सुखिर पूराय ॥ त्रीजो नाग घटाडी घन कस्यो रे, प्रणमो तेहना पाय ॥ १७ ॥ नवि० ॥ बंधन छेदादिक कारण थकी रे, जावुं समये सात राज ॥ ज्योतिमां ज्योति मली जस निर्मली रे, पाम्या निज गुणराज ॥ १८ ॥ नवि० ॥ व्यवहारे लोकाग्र पदे रह्या रे, निश्चये आतम खेत ॥ सूक्ष्म बादर त्रस थावर नहीं रे, कर्म तणा ए संकेत ॥ ॥ १९ ॥ नवि० ॥ सिद्धशिलाथी जोजन छेहडे रे, जाजी नणसें तेत्रीश ॥ उत्कृष्टी जघन्य अवगाहना रे, अंगुल जास बत्रीश ॥ २० ॥ नवि० ॥ गुण अनंत अनंत छे जेहना रे, किम कही शकीये रे तेह ॥ जाणे केवली पण न कही शके रे, नवमां नव्यपुर जेह ॥ २१ ॥ नवि० ॥ नवमे खंडें त्रेवीशमी ढालमां रे, समरादित्यने स्वरूप कहे रास ॥ समरादित्य सिद्धनुं रे, पद्म कहे सुविलास ॥ २२ ॥ नवि० ॥ सर्व ॥ गाथा ॥ ७३९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सवर दृष्टांत इहां सुणो, शुद्ध करी शरधान; नहीं उपम त्रण नुवनमां, परगट को परधान ॥ १ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ दिल लगा रे वादल वरणी ॥ ए देशी ॥

॥ तुमे ध्याउं रे साहिब ध्यानमां ॥ ए आंकणी ॥ जेहना गुण न शके कही वयणे, ज्ञानी देखे पण ज्ञानमां ॥ १ ॥ तुमे० ॥ क्षितिप्रतिष्ठपुर जितशत्रु राजा, जयसीरी राणी प्रधानमां ॥ तुमे० ॥ एक दिन आहेडे नृप चाल्यो, अश्व हरी गयो रानमां ॥ २ ॥ तुमे० ॥ तुरग खलायो विषम प्रदेशे, एक सवर तिण ठाणमां ॥ तुमे० ॥ एम चिंते कोइ मोहोटो नर ए, दुःखमां पमीयो अचानमां ॥ ३ ॥ तुमे० ॥ उचित करुं उपचार हुं कांयक, चोकडुं ग्रहे तव पाणमां ॥ तुमे० ॥ जल उपकंठे अश्वने

लाव्यो, नृप उतस्यो तव शानमां ॥ ४ ॥ तुमे० ॥ नृप न्हायो अश्वने न्हवराव्यो, कदली जंबीर दीये खानमां ॥ तुमे० ॥ पाय प्रणमीने आहार कराव्यो, नृप चिंते निज मानमां ॥ ५ ॥ तुमे० ॥ नक्तिवंतोने सज्जन सुपुरिस, वश कस्यो मुऊ बहु मानमां ॥ तुमे० ॥ सांऊ समे कस्यो कुसुम साथरो, सूतो नूप ते टाणमां ॥ ६ ॥ तुमे० ॥ धनुष तीर लेइ थयो अंगरक्षक, तुरंगे चढ्यो सवारमां ॥ तुमे० ॥ खोलतां सेना आवी मली तव, राय चाल्यो असवारमां ॥ ७ ॥ तुमे० ॥ साथे सबर लेइ पुर आयो, आदर मान अपारमां ॥ तुमे० ॥ न्हावुं पहेरवुं उढवुं नोजन, निजशुं सबर श्रीकारमां ॥ ८ ॥ तुमे० ॥ सामंतादिक पूछे कुण ए, नृप कहे शिर उपकारमां ॥ तुमे० ॥ सहु प्रशंस्यो नृपे तस दीधी, राणीउ सेवाकारमां ॥ ए ॥ तुमे० ॥ धूपघटी ने मणिनी दीवीउ, शय्या उसीसां सारमां ॥ तुमे० ॥ द्राक्षादिक आसव बहु पाया, नाटक विविध प्रकारमां ॥ १० ॥ तुमे० ॥ पंच विषय सुख नोगवे एम नित्य, एक दिन चिंती विचारमां ॥ तुमे० ॥ रायने कहे जाशुं निज थानक, नृप कहे सहु परिवारमां ॥ ११ ॥ तुमे० ॥ जाउ बहु असवार पहोंचावो, सुखथी एहनी पालिमां ॥ तुमे० ॥ दीधुं बहु द्रव्य ने बहु मूलां, वस्तर थरमाशालिमां ॥ १२ ॥ तुमे० ॥ पहोतो अनुक्रमे निज पाले, मलीयो बालगोपालमां ॥ ॥ तुमे० ॥ सबर सहु मली पूछे तेहने, किहां गयाता आजकालमां ॥ ॥ १३ ॥ तुमे० ॥ केम रह्या शुं खाधुं शुं पाम्या, कह्युं सघलुं सुरसालमां ॥ तुमे० ॥ तव पूछे ते नयर केहवुं, राइ केहवो नूपालमां ॥ १४ ॥ तुमे० ॥ उपमा विण न शके कही रणमां, तोपण कहे निज चालमां ॥ तुमे० ॥ दरी सम गेह नोजन वनफल सम, जिलडी जुवती बालमां ॥ १५ ॥ तुमे० ॥ गुंजाहार आनरण देखाडे, गेरुलेपन कणयर मालमां ॥ तुमे० ॥ न कही शके पण जाणे मनमां, पुर गुण अति अविशालमां ॥ १६ ॥ तुमे० ॥ ते सुख नर सुर मांहि न क्यांहिं, जे सुख सहजाणंदमां ॥ तुमे० ॥ सुणी वेलंधर नहीं सिद्ध दीरघ, ह्रस्व वृत नहीं दंदमां ॥ १७ ॥ तुमे० ॥ त्र्यंस चोरंस परिमंडल नांहीं, नहीं कृष्णादि वर्ण वृंदमां ॥ तुमे० ॥ सुरनि डुरनि न तिक्तादिक रस, फरस न वेदना बंदमां ॥ १८ ॥ तुमे० ॥ संज्ञा उपमा नहीं जेह प्रज्ञुनी, किम करी कहीये

वाणमां ॥ तुमे० ॥ ढाल चोवीशमी नवमे खंडे, केवली कहे लही नाणमां ॥ १ए ॥ तुमे० ॥ सर्व गाथा ॥ ७ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ नहीं रूपी अरूपी नहीं, गंध अगंध न थाय; नहीं रस अरस कदा नहीं, नहीं फरसेतर न्याय ॥ १ ॥ आचार सूत्रे आखीउं, अपय ने पय नवि; सयल प्रपंच रहित सदा, अनंत ज्योति तस अवि ॥ २ ॥ पाम्या परमाणंदने, सांजली तेह सनाथ; सामंत राणी प्रमुख सवे, जलो मुनिचंद जूनाथ ॥ ३ ॥ करकज जोमीने कहे, अमने कस्यो उपगार; देइ धर्मनी देशना, स्वामीजी श्रीकार ॥ ४ ॥ चरित्र तुमारुं चित्त धरी, उपनो अम अजिलाष; चारित्ररस अमे चाखीये, जली बोले एम जाष ॥ ५ ॥

॥ ढाल पचीशमी ॥

॥ ते तरीआ रे जाइ ते तरीआ ॥ ए देशी ॥

॥ तुमे तरीआ रे जाइ तुमे तरीआ, एम समरादित्य उच्चरीआ रे ॥ जाव थकी तुमे चरण ते वरीआ, जवअटवी उतरीआ रे ॥ १ ॥ तुमे० ॥ जे करवुं ते सघलुं करीया, हवे द्रव्यथी करो किरिया रे ॥ ते कहे प्रजु अमने उपगरीया, आण अमे शिर धरीआ रे ॥ २ ॥ तुमे० ॥ वेलंधर एम चित्त अनुसरीआ, अहो धन्य एहना परिआ रे ॥ उचित उत्सव बहु हरखे जरीया, वेलंधर ठाकरीआ रे ॥ ३ ॥ तुमे० ॥ समरादित्य शिष्य ज्ञानना दरिया, शीलदेव जे ठरीया रे ॥ तेहना शिष्यपणे आदरीआ, संग सयल परिहरीआ रे ॥ ४ ॥ तुमे० ॥ कौतुक ने अनुकंपाए पूछे, वेलंधर सुरवरीआ रे ॥ ते अधम निज उपद्रवकारी, गिरिसेननी कहो चरिआ रे ॥ ५ ॥ तुमे० ॥ जव्य तथा अजव्य अछे ए, बीज लह्युं के नांहीं रे ॥ लेहेशे के नहीं ते पण जाखो, केवली कहे सुणो आंहीं रे ॥ ६ ॥ ॥ तुमे० ॥ जव्य अछे पण बीज न पाम्यो, पण लेहेशे ते सुणजो रे ॥ असंख पुजल परावर्त्त अतीते, शार्दूलसेन नृप मुणजो रे ॥ ७ ॥ तुमे० ॥ तेहनो अश्व प्रधान ए थाशे, तिहां समकित ए लाशे रे ॥ क्षय उपशम मिथ्यात्व लेहेशे, पातक दूर पलाशे रे ॥ ८ ॥ तुमे० ॥ चिंतवीयुं मुज उपरे एणे, अहो महानुजाव एह रे ॥ गुणपक्षपात परंपरा बीजक, समकित लहो एह रे ॥ ए ॥ तुमे० ॥ ते अश्व समकित पामी अनुक्रमे, जव अ-

संख्याता भमशे रे ॥ शंख नामे ब्राह्मण भव लेहेशे, तिहां चारित्र परिणमशे रे ॥१०॥ तुमे० ॥ क्षपकश्रेणीमां केवल लहीने, निज आतम ऋद्धि वरशे रे ॥ निज गुण शक्ति अनंती परगट, भावे एहज करशे रे ॥ ११ ॥ ॥ तुमे० ॥ एम सांभली वेलंधर हरख्या, प्रणमी मुनिवर पाया रे ॥ निज स्थानक पोहोतो हवे केवली, विचरे जे निरमाया रे ॥ १२ ॥ तुमे० ॥ हवे एक दिन गिरिसेन पकडाणो, चोरीमां तव मार्यो रे ॥ कुंभीपाके करी कर्मे पचार्यो, मुनिवर द्वेष जे धार्यो रे ॥ १३ ॥ तुमे० ॥ सातमी नरगे तेह दोषथी, उपनो दुःख अपारो रे ॥ विचरंता श्रीसमरादित्यजी, पहोता सिद्धगिरिद्वारो रे ॥ १४ ॥ तुमे० ॥ कर्म विषम स्थिति जाणी कीधो, केवलीनो समुद्घात रे ॥ शैलेशी पडिवजीया मुनिवर, जेह अयोगी विख्यात रे ॥ ॥ १५ ॥ तुमे० ॥ भवोपग्राही तिहां कर्म खपावे, वेदनी आयु गोत्र नाम रे ॥ देहपंजर छांडी हवे मूलथी, अफूसमाण गति नाम रे ॥ १६ ॥ तुमे० ॥ समय एके लोकाग्रे पहोता, परम ब्रह्मालय जेह रे ॥ जन्म जरा मरणे करी विरहित, अचल अरुज थया तेह रे ॥ १७ ॥ तुमे० ॥ सुरवर महोत्सव करे शिवपदनों, पूजे तेह शरीर रे ॥ अंग प्रधान ग्रहे ते तनुनां, पामवा भवजल तीर रे ॥ १८ ॥ तुमे० ॥ देवलोकमां जइ सुरने, संभलावे अवदात रे ॥ ते पण भक्के करी प्रणम्या, पूजा हर्षे भरात रे ॥ १९ ॥ ॥ तुमे० ॥ निज आतमहेते नित्य पूजे, सुरवर समकितवंता रे ॥ समरादित्य गिरिसेन वखाण्या, चमत्कार चित्त देता रे ॥ २० ॥ तुमे० ॥ समरादित्य गया शिवपुरमां, बीजाने संसार रे ॥ तिणे गुणिजन उपरे नवि मत्सर, कीजे सुणी अधिकार रे ॥ २१ ॥ तुमे० ॥ एक परके वयरे दुःख पाम्यो, बिहु परकनी शी वात रे ॥ वली अज्ञान कष्ट दुःख पामे, ए दृष्टांत पण ख्यात रे ॥ २२ ॥ तुमे० ॥ नवमे खंडे पचवीशमी ए, पद्मविजय कही ढाल रे ॥ श्रीसमरादित्य केवलीरासे, सुणतां मंगलमाल रे ॥ २३ ॥ ॥ तुमे० ॥ सर्व गाथा ॥ ७०७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ संक्षेपे ए सवि कह्यो, समरादित्यनो रास; श्रवणे पण होय सांभल्या, आणंद अंग उल्लास ॥ १ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥

॥ गिरुआ रे गुण तुम तणा ॥ ए ॥ देशी ॥

॥ समरादित्य मुनि गाइआ, आणी हर्ष अपारो रे ॥ मुजथी मंदबुद्धि तणो, कांय धारी चित्त उपगारो रे ॥ १ ॥ सम० ॥ शक्ति नहीं मुज एहवी, पण श्रीहरिनद्र सूरि वयणे रे ॥ चाले यष्टि अवलंबने, जिम शक्तिरहित जुवे नयणे रे ॥ २ ॥ सम० ॥ हरख हतो बहु दिन तणो, ते आज चढ्यो सुप्रमाणो रे ॥ उंछव रंग वधामणां, कांय घर घर कोडि कल्याणो रे ॥ ३ ॥ सम० ॥ पंडितजन किरपा करी, मुज उपरे शुद्ध करेजो रे ॥ अल्पबुद्धि मुज जाणीने, मत चित्तमां रीश धरेजो रे ॥ ४ ॥ सम० ॥ शक्तिरहित पण मुज नणी, मुनिगुणे बोलाव्यो प्राणे रे ॥ अंबमंजरी शक्ते लवे, कांय मधुर कोकिल मधुटाणे रे ॥ ५ ॥ सम० ॥ नीते खल जनने नमुं, जे अछतां दूषण काढे रे ॥ प्रीते सज्जनने नमुं, जे मेरुशिखर पर चाढे रे ॥ ६ ॥ सम० ॥ अल्पबुद्धि अणाभोगथी, कांय बोल्युं वचन विरुद्ध रे ॥ मिछाडुक्कम मुज हजो, जिणथी हुं थाउं शुद्ध रे ॥ ७ ॥ सम० ॥ सुरनव सहित नवे नवे, मुनि नव नव समता चढती रे ॥ नवमे नव पूरण थइ, कांय समता जेहनी वढती रे ॥ ८ ॥ ॥ सम० ॥ पहेले खंडे पन्नर कही, बीजे वर त्रेवीश ढाल रे ॥ त्रीजे चौद चोथे कही, ढाल अठ्ठावीश विशाल रे ॥ ए ॥ सम० ॥ ढाल पांचमे छठे कही, नली चोवीश ने चोवीश रे ॥ सातमे त्रेवीश आठमे, खंडे नाखी बावीश रे ॥ १० ॥ सम० ॥ नवमे खंडे ए कही, छवीशमी ढाल रसाल रे ॥ ए सर्व मलीने एकसो, कही नवाणुं वर ढाल रे ॥ ११ ॥ ॥ सम० ॥ अढार उंगणच्यालीशमां, कांय मांड्यो रास ए वरषे रे ॥ लिंबडी चोमासुं रही, कांय दिन दिन चढते हरषे रे ॥ १२ ॥ सम० ॥ वोहोरा कशला आदि दे, जिलोटा सहसमल्ल नामे रे ॥ तस आग्रहे प्रारंनीउं, वली निज आतम हितकामे रे ॥ १३ ॥ सम० ॥ तेणे वरषे तिहां संघमां, तप कीधां घर घर बार रे ॥ पंचोत्तर मासखमण ते, थयां जिनबिंब माननहार रे ॥ १४ ॥ सम० ॥ लुंपक घरे पण कीधलो, पण ते अज्ञानमां पेसे रे ॥ अग्निशर्मानी पेरे, आणा विणुं तप कोण कहेशे रे ॥ १५ ॥ सम० ॥ श्रीगुरु उत्तमविजयनी, किरपाए कीधो रास रे ॥ प-

भविजय कहे होय जो, कांय घर घर लीलविलास रे ॥ १६ ॥ सम० ॥
॥ सर्व गाथा ॥ ७०४ ॥

॥ कलश ॥

॥ तपगछ नंदन सुरतरु प्रगटथा ॥ ए देशी ॥

॥ शासननायक शिववधू लायक, वर्द्धमान जिनचंदा जी ॥ पंचम गणधर सोहम पटधर, जंबु तास मुणींदा जी ॥ १ ॥ प्रजवा पटधर पूरवधारी, सर्ज्जंजव सूरींदा जी ॥ मनक पिता जे पुत्रने अरथे, दशवैकालिक करंदा जी ॥ २ ॥ जशोजद्र सूरि तस पटधर, पूरव चौद जणिंदा जी ॥ संजूतिविजय ने जद्रबाहु गुरु, एकज पाट गणिंदा जी ॥ ३ ॥ थूलिजद्र जे सातमा पटधर, पूरव चौद धरिंदा जी ॥ ब्रह्मचारी शिरशेहर जणीये, कोशा प्रतिबोधंदा जी ॥ ४ ॥ आर्यमहागिरि आर्यसुहस्ती, दश पूरवधर इंदा जी ॥ अवंतीसुकमाल बूजव्यो, तेम संप्रति नरींदा जी ॥ ५ ॥ आठ पाट लगे इणी परे पहेलुं, निर्ग्रंथ नाम कहंदा जी ॥ सुस्थित सुप्रतिबद्ध एह बिहु, पटधर एक सुखकंदा जी ॥ ६ ॥ कोमि वार सुरिमंत्र जप्यो तिणे, कोटिक गण थप्पंदा जी ॥ श्रीइंद्रदिन्न सूरि तस पटधर, श्रीदिन्न सूरि हवंदा जी ॥ ७ ॥ सिंहगिरि सूरि तस पटधर, द्वाशमे गुणवृंदा जी ॥ जेहना शिष्य विनीत शिरोमणि, सघला जे गतदंदा जी ॥ ८ ॥ तस पट्टे श्रीवयर सूरीशर, जिनशासन शोहंदा जी ॥ चौदमे पाट वज्रसेन सूरि, निस्संग ज्युं अरविंदा जी ॥ ए ॥ पन्नरमे पट श्रीचंद्र सूरि, चंद्रगछ थया नाम जी ॥ त्रीजुं ए परसिद्धुं जगमां, सामंतजद्र तस ठाम जी ॥ १० ॥ वनवासी चोथुं थयुं अजिधा, तस पट्ट गुणमणि धाम जी ॥ श्रीवृद्धदेव सूरि परसिद्धा, पटधर तस अजिराम जी ॥ ११ ॥ श्रीप्रद्योतन सूरि विराजे, मानदेव सूरि ठाजे जी ॥ तस पट्ट मानतुंग आचारय, उद्योतक अति जाजे जी ॥ १२ ॥ वीर सूरि एकवीशमे पट्टे, जयदेव सूरि बावीश जी ॥ देवाणंद वली विक्रम सूरि, श्रीनरसिंह सूरीश जी ॥ १३ ॥ पट्ट छवीशमे समुद्र सूरिवर, मानदेव सूरि तास जी ॥ विबुधप्रज सूरि तस पाटे, श्री जयानंद सुवास जी ॥ १४ ॥ त्रीशमे पाटे रविप्रज सूरि, श्रीजशोदेव सूरि जास जी ॥ प्रद्युम्न सूरि बत्रीशमे पाटे, मानदेव तस खास जी ॥ १५ ॥ विमलचंद्र ने उद्योतन सूरि, तेह पांत्री-

शमे ठाणो जी ॥ वड तले आठ सूरिपद दीधां, तिहांथी वडगछ जाणो जी॥ १६॥ पांचमुं नाम ए पाट छत्रीशमे, सर्वदेव सूरीशो जी ॥ साडत्रीशमे पाटे देव सूरि, सर्वदेव अडत्रीशजी॥ १७॥ विहु गुरु चाइ हवे एक पाटे, जशोभद्र श्रीनेमिचंद जी ॥ तेहुने पाटे मुनिचंद सूरि, निरमल कीरतिचंद जी ॥ १८ ॥ अजितदेव सूरि तस पटधारी, विजयसिंह सूरि नमीये जी॥ सोमप्रभ सूरि मणिरत्न सूरि, नमतां पाप निगमीये जी॥ १९॥ ए दोय पाटे चौआलीशमे, श्रीजगच्चंद्र सूरि दीवो जी॥ करी किरिया उद्धार दीपाव्यो, मारग ते चिरंजीवो जी ॥ २० ॥ आघाटपुरे जिणे दिगपट जींत्या, राणा सभा हजूर जी ॥ हिरला नाम दीधुं तिहां राणे, तप कीधुं जिणे पूर जी ॥ २१ ॥ जावजीव आंबिल तप कीधुं, विरुद तपा तिहां पायुं जी ॥ तपगछ नाम छहुं एह गुणथी, नांहीं कदाग्रहे आयुं जी ॥ २२ ॥ देवेंद्र सूरि पटोधर तेहना, प्रकरण जिणे बहु कीधां जी ॥ धर्मघोष सूरीशर तेहना, विद्यामंत्र प्रसिद्धा जी॥ २३ ॥ सोमप्रभ सूरि सडतालीशमे, पाटे अतिवैरागी जी ॥ सोमतिलक सूरि देवसुंदर सूरि, जस पंच शिष्य सोभागी जी ॥ २४ ॥ सोमसुंदर सूरि तेहना पटोधर, मुनिसुंदर तस पाटे जी ॥ एकसो आठ हाथनो कागल, लखी मोकल्यो गुरु माटे जी ॥ २५ ॥ काली सरस्वती जे कहेवाता, संतिकरं जिणे कीधुं जी ॥ पाटवी तेहना रत्नशेखर सूरि, वावनमे परसिद्धुं जी॥ २६ ॥ लक्ष्मीसागर सूरि सुमति साधु सूरि, हेमविमल पणपन्न जी ॥ आणंदविमल सूरि छप्पनमे, पाटे तेह निप्पन्न जी ॥ २७ ॥ वंहु मारग लोपाणो जाणी, क्रियाशिथिल थया प्राणी जी ॥ संवत् पन्नर व्याशीए कीधो, क्रियाउद्धार मन आणी जी ॥ २८ ॥ बहु श्रेष्ठीसुतशत जिणे दीख्या, श्यां श्यां कीजे वखाण जी ॥ तस पट्टे विजयदान सूरिए, करी प्रतिष्ठा बहु ठाण जी ॥ २९ ॥ एम सत्तावन पाट वखाण्या, शेष पाट हवे कहीये जी ॥ पद्मविजय कहे पूरवसूरिना, गुण गातां सुख लहीये जी ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ ८३४ ॥

॥ हमचडीनी देशी ॥

॥ अठावनमे पाटे हुआ, विजयहीर सूरि राया ॥ मेघजी आचारय प्रतिबोधि, लुंपक मत छोडाया रे ॥ १ ॥ हमचडी ॥ अठावीश संयतशुं दीक्षा, लीधी जे गुरु पासे ॥ पातसाह अकबर प्रतिबोध्यो, जीव अमारी प्रकाशे

रे ॥ २ ॥ हम० ॥ सीरोही नकुलाइ पाटण, राजनगर खंनात ॥ जिणे बहु बिंब प्रतिष्ठा कीधी, गाम गाम विख्यात रे ॥ ३ ॥ हम० ॥ विजयसेन सूरि तस पाटे, पातसाहने आगे ॥ षट् दरिसणमां जयसीरी जेहने, वरी स्वयंवरा रागे रे ॥ ४ ॥ हम० ॥ सवाइ गुरु बिरुद लह्या तव, गीतारथ गुणरागी ॥ तस पाटे विजयदेव सूरीश्वर, कीरति चिहुं दिश जागी रे ॥ ५ ॥ हम० ॥ विजयप्रन्न सूरि तस पट्टे, सोन्नागी शिरदार ॥ विजयरत्न सूरि पाटे तेहने, विजयखिमा सूरि सार रे ॥ ६ ॥ हम० ॥ चोसठमे पाटे वली हुआ, विजयदया सूरिराय ॥ विजयधर्म सूरि जस राज्ये, प्रारंन्न रासनो थाय रे ॥ ७ ॥ हम० ॥ अढार एकताले कार्त्तिक वदिमां, स्वर्गे तेह सिधाया ॥ तस पट्टे श्री जिनेंद्र सूरीश्वर, पुण्ये पदवी पाया रे ॥ ॥ ८ ॥ हम० ॥ तस राज्ये ए पूरण कीधो, अढार बेंताला वरषे ॥ श्री कल्याण पास सुपसाये, वसंत पंचमी दिवसे रे ॥ ९ ॥ हम० ॥ श्री विजयदेव सूरीश पट्टोधर, श्री विजयसिंह सूरीश ॥ संवत् सोल एकाशीआ वर्षे, सूरिपदे सुजगीश रे॥ १० ॥ हम० ॥ राणो जगसिंह जिणे प्रतिबोध्यो, जस कीरति जग व्यापी ॥ जेहनी परषदमां बहु गीतारथ, कीधा आदर आपी रे ॥ ११ ॥ हम० ॥ वरष अठावीश आचारयपद, युवराजे जे पाली ॥ राजनगरमां स्वर्ग पधार्या, दुःख दोहग सवि टाली रे ॥ ॥ १२ ॥ हम० ॥ तेहना शिष्यसमूहमां शोहे, सत्यविजय पन्यास ॥ आचारय गुरु आणा पामी, कर्यो क्रिया अन्यास रे॥ १३ ॥ हम०॥ कपूरविजय पन्यास तेहना, खिमाविजय तस जाणो ॥ नंदिषेण परे देशना जेहनी, करे नवि व्रत पच्चक्काणो रे ॥ १४ ॥ हम० ॥ नंगी जंगी बहु प्रतिबोध्या, सोन्नागी शिरदार ॥ तस जिनविजय पन्यास कहाया, करता बहु उपगार रे॥ १५ ॥ हम० ॥ गीतारथ सज्ञान घणुं सुंदर, लक्षण लक्षित देह ॥ जेहनी मुद्रा देखी पूरव, मुनिवर सांनरे तेह रे ॥ १६ ॥ हम० ॥ तास शिष्यसमुदायमां जाणो, उत्तमविजय पन्यास ॥ ज्ञानी ध्यानी ने नहीं मानी, दश दिश कीरति जास रे ॥ १७ ॥ हम० ॥ पयन्नि पंचसंग्रह मुख ग्रंथा, जाणे तस आमनाय ॥ नद्रक उपगारी मुज मोहोटा, शांत दांत गुणराय रे॥ १८ ॥ हम० ॥ मुज सरिखा पत्थरनव पल्लव, कीधा अति हित आणी ॥ श्यो श्यो कहुं उपगार गुरुनो, वाणी जास प्रमाणी रे ॥ १९ ॥ हम० ॥

विशलनगर विराजे रुडुं, जिहां जिनचैत्य छे दोय ॥ जिहां अति ज-क्तिवंता वहु श्रावक, प्रजुपूजा घणी होय रे ॥ २० ॥ इम० ॥ ते गुरु उत्तमविजय पसाये, पद्मविजय लघु शिष्ये ॥ विशलनगर चोमास रहीने, जाख्यो विशवावीश रे ॥ २१ ॥ इम० ॥ जिहां लगे ग्रहगण तारा मेरु, चंद्र सूर्य परकाश ॥ तिहां लगे एह रास थिर रहेजो, जय जयकार विलास रे ॥ २२ ॥ इम० ॥ समरादित्यनो रास ए जणशे, लखशे जाग्य-विशाल ॥ तेह महोदय पदवी लेहेशे, होशे मंगलमाल रे ॥ २३ ॥ ॥ इम० ॥ सर्व गाथा ॥ ७५७ ॥

॥ इति श्रीसंविज्ञपक्षीय पंमितप्रवर श्रीमडुत्तमविजयगणि शिष्य पंमित श्री पद्मविजयगणिविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे समरादित्य-गिरिसेनयोः नवमो नरजवः समाप्तः ॥ तत्समाप्तौ च समाप्तोऽयं नवमः खंमः ॥ तत्समाप्तौ च समाप्तं श्रीसमरादित्यचरित्रं ॥ नवम खंडे ॥ सर्व गाथा ॥ ७५७ ॥ तथा काव्यादि जुदां जाणवां ॥ समग्र ढाल ॥१एए॥ ते ढालोमां प्रथम खंडे ॥ गाथा ॥ ४५१ ॥ द्वतीय खंडे ॥ गाथा ॥ ६६७ ॥ तृतीय खंडे ॥ गाथा ॥ ४६० ॥ चतुर्थ खंमे गाथा ॥ ७०६ ॥ पंचम खंडे ॥ ॥ गाथा ॥ ७४१ ॥ षष्ठ खंमे ॥ गाथा ॥ ७११ ॥ सप्तम खंडे गाथा ॥ ७२० ॥ अष्टम खंमे ॥ गाथा ॥ ७११ ॥ नवम खंमे ॥ गाथा ॥ ७५७ ॥ समग्र गाथा ॥ ६२२० ॥ शुजं जवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ ॥

॥ इति श्री संविज्ञपक्षीय पंमितवर्य श्री-मडुत्तमविजयगणि शिष्य पंमित श्री पद्मविजयजी विरचित श्री समरादि-त्यकेवलीनो रास समाप्त ॥

जाहेर खबर.

श्रीजैनकथा रत्नकोष भाग ४ थो

कर्ता आचार्य रत्नशेखरसूरि.

आ पुस्तकमां श्रावकना अतिचारोनुं निरूपण करतां ग्रंथकर्ताए अन्यदर्शनीओने बोध पमाडवा माटे घणां स्थले अनेक विषयोनां उदाहरणमां तेमना ग्रंथोना ठेकाणे ठेकाणे घणाएक श्लोको दाखल कीधा छे तेमज मिथ्यात्वी लोकोनां होली प्रमुख अनेक पर्वोथी उपजता दोष पण देखाड्या छे.

आ ग्रंथ वांचनारा साहेबोने व्रत लेवानी तथा लीधेलां व्रतने अतिचार रहित पालवानी पुष्टि करवानी साथे विचित्र प्रकारना नवनवा रसने उत्पन्न करनारी तथा पूर्वेना जमानामां थइ गयेला राजाओ अने व्यापारीओनी चालचलगत दर्शावनारी होवाथी अत्यंत आनंदनी साथे चमत्कार उपजावे एवी मोटी तथा नानी रसिक कथाओ सहित श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र अथवा वंदितासूत्र अपर नाम अर्थदीपिका ग्रंथ मूल तथा बालावबोध सहित छे. आ ग्रंथ वांचवाथी धर्मपुष्टि थवानी साथे बुद्धिनो विस्तार पण बहुज थशे. किमत रु. ३—०—०

श्री जैनकथा रत्नकोष भाग ५ मो ॥

मूल आ ग्रंथ पंडितवर्य श्री रूपविजयजीए संस्कृत भाषामां अगियार सर्गे करी रचेलो छे अने तेनुंज गुजराती भाषांतर करी छपाव्युं छे.

आ ग्रंथमां अत्युतम धर्मधुरी महाप्रतापी अने मोक्षगामी एवा पृथ्वीचंद्र अने गुणसागरना जीवो प्रथम भवमां शंखराजा अने कलावती राणीना भव पामीने त्यांथी एकवीशमे भवे पृथ्वीचंद्र अने गुणसागर थया तेओनुं चरित्र छे.

आ ग्रंथमां तेमना एकवीशे भवनी विस्तार सहित कथाओ लखवामां आवी छे. वली तेओ दरेक भवमां पूर्वोपार्जित पुण्यपुंजना उदयथी केवुं सुख अने संपत्ति पाम्या, कया कया भवमां केवां केवां श्रावकनां व्रत अने केवुं केवुं संयम पाल्युं, वली ते ते भवमां संयम पाली समाधिमरणथी स्वदेहनो त्याग करी कया कया देवलोकमां उत्पन्न थइने त्यां केवुं सुख अने केटलुं केटलुं आयुष्य भोगव्युं ए सघलुं सविस्तर वर्णवेलुं छे. आ ग्रंथमां मुख्य तो जीवने संसार उपर वैराग्य थवा माटे आपेलो उपदेश, संयमग्रहणथी थता लाभो, अरिहंत धर्ममहता वगेरे वर्णवेलुं छे. आ ग्रंथ वांचवथी केटलो आनंद उपजे छे ते आ ग्रंथ वांचवाथीज जाण थशे. कि. रु.३-४-०